ओ३म्

वेद प्रकाश

* ऋषि ऋण *

महाभारत में धर्मराज युधिष्ठर ने बाल ब्रह्मचारी भीष्म पितामह से प्रश्न किया कि संसार में दुःखी कौन है ? भीष्म जी ने उत्तर दिया कि जिस पर ऋषि का बोझ है वह दुःखी है !

प्रत्येक मनुष्य मातृ ऋण पितृ ऋण तथा ऋषि ऋण इन तीन ऋणों के बोझ से दबा हुआ है । इन तीनों ऋणों से मुक्त मनुष्य ही सुख का भागी अर्थात् मुक्ति को प्राप्त कर सकता है ।

प्रत्येक वैदिक धर्मी आर्य मात्र पर ऋषि दयानन्द का ऋण है । आर्य समाज में प्रवेश करते समय उसको प्रतिज्ञा करनी पड़ती है कि—"संसार का उपकार करना इस समाज का (अर्थात मेरा) मुख्य उद्देश्य है । साथ में, प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहकर सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये ।' यह महर्षि का आर्य समाज के नियम व उद्देश्यों द्वारा हम सबको आदेश है ।

इन दोनों आदेशों को हम सब तभी पालन कर सकते हैं, जब कि अन्यों में अपने उन्नत विचारों व लेखों का प्रचार करने में सहयोग देवें । इसी उद्देश्य से हमने

वेद प्रकाश मासिक पत्र को

आज से ६ वर्ष पूर्व आरम्भ किया आज वह अपने ६ वर्ष पूर्ण करके सातवें वर्ष में पदार्पण कर रहा है । गत ६ वर्ष के जीवन काल में, 'वेद प्रकाश' द्वारा देश विदेश में वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार किया गया आर्य समाज में जो ट्रेक्टों का सिलसिला कई वर्षों से बन्द हो गया था उसे आरम्भ किया गया इन ६ वर्षों में आर्य विद्वानों द्वारा लिखे लेखों को ट्रेक्टों के रूपमें प्रकाशित किया गया जिससे कि समाजों के उत्सवों पर प्रचार किया गया । इसके साथ ही हसाहित्य क्षेत्र में भी १. ऋषि दयानन्द ग्रन्थ संग्रह, २. बालमीकि रामायण, ३. सृष्टि का इतिहास ४. बृहदारण्यक उपनिषद कथा माला यह चार विशेषांकों के अतिरिक्त अनेक स्वाध्याय योग्य उत्तम पुस्तकें प्रकाशित हुई है ।

प्रत्येक व्यक्ति और समाजों से प्रार्थना

'वेद प्रकाश' के ग्राहक बनकर हमारा कार्य क्षेत्र विस्तृत करने में सहयोग प्रदान करें, जिससे हम भविष्य में आपके सहयोग से और भी उत्साह से कार्य करें ।

भविष्य की हमारी महत्वपूर्ण योजना

सत्यार्थ प्रकाश का वृहदाकार सटिप्पण संस्करण

(श्री पं० अ.. ...रसिंह जी आर्य पथिक अरनियाँ निवासी द्वारा सम्पादन का कार्य हो रहा है)

आर्य-पथिक ... लेखराम द्वारा लिखित ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र का हिन्दी अनुवाद का प्रकाशन । ... मूल वेदों का अनुक्रमणिका सहित सुन्दर संस्करण प्रकाशित करना, आशा है आप वेद प्रकाश ... के ग्राहक बनकर सहयोग प्रदान करेंगे । —गोविन्दराम हासानन्द

ग्राहकों को सूचना

आप वेदप्रकाश के कृपालु ग्राहक रहे हैं। इस अंक से वेद प्रकाश सातवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। जिस प्रकार आप पिछले वर्षों में हमें सहयोग देते रहे हैं उसी प्रकार आगे भी देंगे। ऐसी हम पूर्ण आशा है।

आपका ग्राहक नं०...१....है। आपका चन्दा...जुलाई... में समाप्त हो गया है। आप वेदप्रकाश का वार्षिक मूल्य २॥) तथा बृहदारण्यक उपनिषद् कथा माला का डाकखर्च सहित २॥) मिलाकर आज ही ५) भेज दें। यदि विशेषांक न मंगाना चाहें तो केवल २॥) ही भेज कर वेदप्रकाश के ग्राहक बने रहें। या वी. पी. भेजने का आदेश दें हम वी. पी. भेज देंगे।

गोविन्दराम हासानन्द

नई सड़क देहली।

आर्ष योग प्रदीपिका

व्यास भाष्य सहित पातञ्जल योग दर्शन का सरल सारगर्भित भाषानुवाद

लेखक श्री स्वामी ब्रह्ममुनि जी परिव्राजक

इस भाष्य में पातञ्जलि ऋषि के सूत्रों एवं व्यास ऋषि भाष्य का भाषानुवाद किया गया है। योग के सम्बन्ध में केवल ऋषियों के वचनों पर लेख होने से इसका नाम "आर्ष योग प्रदीपिका रखा गया है। यहां पातञ्जलि के सूत्रों का प्रथम अर्थ और किसी किसी क्लिष्ट सूत्र पर विवरण दिया गया है। पुनः व्यास भाष्य का अनुवाद किया गया है। कहीं कहीं उस पर आवश्यकतानुसार स्पष्टीकरण भी दिया गया है। आशा है स्वाध्यायी और योग विषयक वर्णन के जिज्ञासु जन इसका स्वागत करेंगे। लगभग २७५ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य ३॥)

मिलने का पता—गोविन्दराम हासानन्द

नई सड़क देहली।

वेदप्रकाश के चार अमूल्य विशेषांक रियायती मूल्य में

१. सचित्र दयानन्द ग्रन्थ संग्रह

जिसमें ऋषि की आत्मकथा सहित २० पुस्तकों का संग्रह है, प्रत्येक पुस्तक के साथ पुस्तक का रचना काल तथा परिस्थितियों का इतिहास भी है। साथ में ऋषि के ७ असली फोटो चित्र भी हैं सजिल्द ग्रन्थ का मूल्य ४॥) रियायती मूल्य ३॥) है।

२. सचित्र वाल्मीकि रामायण

धारावाही हिन्दी में मूल संस्कृत सहित प्रक्षिप्त भाग तथा अनावश्यक कथाओं को निकालकर आय-मर्यादानुकूल ग्रन्थ का संकलन किया गया है लगभग ६००० श्लोकों के साथ सरल भाषा में सजिल्द सुन्दर पुस्तक मूल्य १२) रियायती मूल्य ६) रु० मात्र है।

३. सृष्टि का इतिहास

आर्य पथिक पं० लेखराम कृत 'त्वारिखे दुनिया' का हिन्दी अनुवाद। जिसमें सृष्टि उत्पत्ति वेदादि सत्शास्त्रों का समय निर्धारण करते समय जो आधुनिक इतिहासकार, पाश्चात्यों का अनुकरण कर भूल करते हैं उनके लिए यह उपयुक्त मार्ग प्रदर्शक उत्तम पुस्तक है मूल्य २) रियायती मूल्य १॥)

४. बृहदारण्यक कथा माला

बृहदारण्यक उपनिषद् ब्राह्मण ग्रन्थ का एक भाग है, उसकी कथाओं के पाठ और श्रवण से वैदिक संस्कृति का अच्छा ज्ञान प्राप्त होगा पढ़ने योग्य उपयोगी पुस्तक है मूल्य ३) रियायती मूल्य २) है। प्रत्येक वेदप्रकाश के ग्राहकों को रियायती मूल्य में। डाकखर्च अलग।

गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क देहली

॥ ओ३म् ॥

वेद प्रकाश

सम्पादक—गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष—७ : श्रावण २०१५ अगस्त १९५८ : वार्षिक मूल्य २॥)
अंक—१ : दयानन्दाब्द १३४ श्रावण १८८० शाके : विदेशों से ५ शि०

वेद सुधा

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ॥ २ ॥ ४२७

पदानि—सं । गच्छध्वं । सं । वदध्वं । सं । वः । मनांसि । जानतां ।
देवाः । भागं । यथा । पूर्वे । संऽजानानाः । उपऽआसते ॥ २ ॥

अन्यवः—सं गच्छध्वम् । सं वदध्वम् । वः मनांसि सं जानताम् । यथा पूर्वे संजानाना देवाः भागं उपासते ।

अर्थः—(सं गच्छध्वं) मिलकर चलो, मिलकर अपनी हलचल करो, (सं वदध्वं) मिलकर वर्तालाप करो, (वः मनांसि) अपने मनों को आप सब (सं जानतां) मिलकर जानो, (यथा) जिस प्रकार (पूर्वे संजानानाः देवाः) पूर्व समय के एकमत से रहने वाले देव जन (भागं) भजनीय-सेवनीय कर्तव्य के भाग को (उपासते) मिलकर, एक स्थान पर बैठकर करते थे, [उसी प्रकार आप भी अपना कर्तव्य मिलकर करते रहो]।

भावार्थ—मिलकर चलो, मिलकर संभाषण करो, मिलकर अपने सब विचारों को जानो, सबकी एकता विचार, उच्चार, आचार में करो। जैसे प्राचीन काल के ज्ञानी जन अपना कर्तव्य कर्म मिलकर करते थे, वैसे ही तुम भी अपना कर्तव्य करते रहो।

देवता Subject of this stanza is "Agreement or Unanimity in assembly संज्ञानम्।

(सं गच्छध्वं) Assemble and (संवदध्वं) speak together. Let (वः) your (मनांसि) minds (सं जानतां) be all of one accord. (यथा) As (पूर्वे) ancient (देवाः) divines (संजानानाः) used to be unanimous, and (आसते) used to sit (उप) together for doing their appointed (भागं) share in work, [do ye accordingly.]

———

शराब निषेध

न पीना मित्रा ! हर्गिज आप शराब ।
डाक्टर वैद्य हकीम बताते, इसको सभी खराब ॥

१—शरारत का पानी है शराब इसे लीजे जान,
पीनें की सलाह नहीं देता कोई बुद्धिमान !
पापों की मां कहा इसको बाइबिल के दरमियान,
कर रहें निषेध पूर्ण, ग्रन्थ साहब और कुरान ।
वेदों ने भी बतलाया है दुःख व पापों की खान,
पादरी मुल्ला व पंडित सब का एक हीं बयान ।
लेकर धर्म-किताब ॥ न पीना० ॥

२—धर्म की ले आड इसको पीते हैं अनेक लोग,
लगाते अभागे देवी देवताओं तक को भोग ।
कोई कहता, इसको पीके सिद्धा हम करते योग,
कोई यों कहता है इस से मिटते हैं तमाम रोग ।
किन्तु है ये सारी बातें इन शरबियों के ढोंग,
कहते हैं विद्वान बढ़ते रोग विषय भोग ।
बनता क्रूर स्वभान ॥ न पीना० ॥

३—इंगलैन्ड के डाक्टर हाल कहते हैं कि यह शराब,
करती है मस्तिष्क और पेट को बहुत खराब ।
शराबी का किसी रोग से भी न होता बचाव,
हैजा और तपेदिक का होता शीघ्र ही प्रभाव ।
चरित्र भी जाता बिगड़, बनता है बुरा स्वभाव,
रे मनुष्यों ! इसको पीकर मोल क्यों लेते अजाब ।
दो यह मुझे जबाब ॥ न पीना० ॥

४—पी—पी के शराबियों में झगड़े हुए,
जूता और लाठी चले, खून से तर कपड़े हुए ।
जेल खाने ले के पहुंची पुलिस उनको पकड़े हुए,
हो कर के बेहोश हैं वे नालियों में पड़ें हुए ।
पानी और पेशाब बहते जिनके अन्दर सड़े हुए,
कर रहे हैं किसी के तो मुख के ऊपर खड़े हुए ।
कुत्ते भी पेशाब ॥ न पीना० ॥

५—जिस किसी मनुष्य ने भी इसका इस्तैमाल किया,
सब प्रकार से ही इसने उसका बुरा हाल किया ।
बड़े बड़े राज्यों को पलों में पामाल किया,
बड़े बड़े सेठ साहूकारों को कंगाल किया ।
शूर वीरता में था जिन वीरों ने कमाल किया,
"सिंह कवि" उन्हें भी इसने सिंह से श्रृगाल किया ।
अपना दिखा प्रभाव ॥ न पीना० ॥

रचियताः—
कवि कुंवर
जोरावर सिंह

वेद माता

(ले० श्री जगदीश चन्द्र विद्यार्थी आर्योपदेशक)

ओ३म् स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां-पावमानी द्विजानाम्।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्।
मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ॥ (अर्थव० १६।७१।१)

प्रभु आदेश देते हैं, हे मनुष्यो ! (मया) मैंने तुम्हारे लिये (वरदा) वर देनी वाली (वेद माता) वेदमाता (स्तुता) प्रस्तुत करदी है, उपदेश करदी। यह वेद माता (द्विजानां) द्विजों की, मनुष्यों को (पावमानी) पवित्र करने वाली है, अतः (प्रचोदयन्ताम्) इस का सर्वत्र प्रचार करो, समस्त भूमण्डल में फैलालो। वेद माता का स्वाध्याय (आयुः) आयु (प्राणम्) प्राण (प्रजाम्) सन्तान (पशुम्) पशु (कीतिम्) कीर्ति (द्रविणम्) धन (ब्रह्मवर्चसम्) ब्रह्म तेज, ज्ञानबल प्रदान करती है। वेद के स्वाध्याय से प्राप्त आयु आदि पदार्थों को (मह्यं) मुझे (दत्वा) देकर (ब्रह्मलोकम्) मोक्ष पद को (व्रजत) प्राप्त करो !

प्रभु उददेश देते हैं, हे संसार के लोगो ! तुम निराश और हताश मत होओ। मैंने तुम्हारे कल्याण के लिये कल्याणी वेदमाता का उपदेश कर दिया है। इसका अध्ययन करके तदनुसार आचरण करोगें तो तुम्हें निम्न वस्तुएं प्राप्त होंगी:—

आयुः—वेद के स्वाध्याय से आयु को लम्बा करने के साधन ज्ञात होंगे। प्राचीन काल मे जब लोग वेद का स्वाध्याय कर तदनुकूल आचरण करते थे तो भारत वासी दीर्घायु होते थे। महाभारत के युद्ध के समय भीष्म पितामह की आयु १७२ वर्ष थी और वे जवानों की भांति युद्ध करते थे। युद्ध के समय युद्धिष्ठर की आयु ७० वर्ष से अधिक थी। स्वर्गरोहण के समय पाण्डव लगभग १०० वर्ष के हो चुके थे और ये सब इस लिये शीघ्र वनों में गये कि इनको अपने सम्बन्धियों की मृत्यु का दुःख था। मृत्यु के समय धृतराष्ट्र की आयु १३५ वर्ष से भी अधिक थी, श्री कृष्ण की आयु १२५ वर्ष की थी। युद्ध के पश्चात् महर्षि व्यास ने महाभारत रचा। उस समय उनकी आयु १५० वर्ष से भी ऊपर थी। परन्तु अब दूसरे देशों की अपेक्षा हमारी औसत आयु (Average Life) बहुत कम है। इंगलैंड में औसत आयु ५४, अमरीका में ५८, न्यूजीलैंड में ६० और भारतवर्ष में केवल २६ वर्ष है और इसका कारण है वेद का स्वाध्याय न करना। वेद में मरने का उल्लेख नहीं है। अपितु वहां तो यह आदेश है:—

मृत्योः पदं योप यन्तो ॥ (ऋ०।१०।१८।२)
मृत्यु के पैर को परे धकेल दो।

हम प्रतिदिन सन्ध्या करते हुए प्रभु से प्रार्थना करते हैं "जीवेम् शरदः शतम्" हम सौ वर्ष तक जीते रहें और सौ वर्ष से पूर्व मरना पाप है क्योंकि प्रभु का आदेश है:—

इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नु गाद् परो अर्थमेतम्
शतं जीवन्तु शरदः पुरुचीरन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन ॥
(ऋ० १०।१८।४

प्रभु उपदेश देते हैं, मैं जीवनधारी मनुष्यों के लिये यह परिधि निश्चित करता हूं कि वे सब सौ वर्ष और उस भी अधिक जीवें। कोई भी इस परिधि का उलंघन न करे और सब अपने पुरुषार्थ के द्वारा मृत्यु को दूर भगा दें।

इस मृत्यु को दूर भगाने के लिये जिन साधनों से जीवन बनता है उनका अनुष्ठान करना होगा। वेद उन साधनों पर भी प्रकाश डालता है। वेद माता आदेश देती है:—

न देवानामति व्रतं शतात्मा चन जीवति ॥
(ऋ० १०।३३।२)

प्रभु के नियमों को तोड़कर कोई भी सौ वर्ष नहीं जी सकता। एक अन्य स्थान पर दीर्घायु प्राप्ति के लिये वेद माता कहती है:—

अग्ने तौलस्य प्राशान (अथर्व० १।७।२)

हे स्वास्थ्य के अभिलाषी ! तोलकर खाओ अर्थात् नियमित भोजन करो। जो वेद माता के इन आदेशों पर आचरण करेगा वह निश्चित रूप से दीर्घायु प्राप्त करेगा।

प्रणास:—मनुष्य की आयु तो लम्बी हो गई परन्तु यदि उस में प्राण शक्ति नहीं तो ऐसे जीवन से क्या ? यदि आयु के साथ प्राण शक्ति नहीं तो जीवन लुहार की धौंकनी के समान है इससे अधिक नहीं। प्राण शक्ति के द्वारा मनुष्य अद्भुत और आश्चर्यजनक कार्य कर डालता है। महर्षि दयानन्द नैपाल की तराई में विचरण करते हुए तन्त्र ग्रन्थों का आलोचन कर रहे थे। यहाँ बहुत से कपट मुनि महाराज के भक्त बन गये जब महर्षि वहां से चलने लगे तो उन्होंने ऋषि को रोक लिया। इनका विचार था कि दयानन्य सर्वाङ्ग हैं, इसकी बलि देवी के आगे चढ़ाना अत्यन्त उपयुक्त रहेगा। दुर्गाष्टमी का पर्व आ गया। स्वामी जी से मन्दिर में चलने के लिये कहा गया। स्वामी जी भी उनकी पूजा पद्धति को अपनी आंखों से देखनें के लिये मन्दिर में पहुंच गये। वहां पुजारी ने स्वामी जी को मूर्ति के आगे सिर झुकाने की प्रार्थना की। स्वामी जी ने कहा "मैं मूर्ति के आगे सिर नहीं झुकाऊंगा।" स्वामी जी के सिर न झुकाने पर तीन चार मनुष्यों ने बलात् उनका सिर झुकाने की चेष्टा की, उधर स्वामी जी ने देखा कि पुजारी उन पर वार करने के लिए तलवार लेकर खड़ा है तो उन्होंने एक हुंकार मारी और द्वार की ओर भागे, परन्तु वह पहले ही बन्द था। स्वामी जी ऊंची दीवार को कूद कर बाहर हो गये। भक्तों ने उनका पीछा किया परन्तु दुराचारी ब्रह्मचारी के सम्मुख कहाँ ठहर सकता है। उस दिन ऋषिवर को ३६ मील दौड़ना पड़ा। यह है प्राण शक्ति का प्रताप। प्राण शक्ति बढ़ती है प्राणायम से। वेद माता कहती है:—

न च प्राण रुणद्धि सर्वज्यानि जीयेत

(अथर्व० ११।३।५४)

जो प्राणायाम नहीं करता वह हानि उठाता है। प्राणायाम से बल आता है, वीर्य सचित होता है। वह वीर्य इंधन का कार्य देता है। प्राणायाम के बिना मनुष्य ब्रह्मचारी नहीं रह सकता। प्राणायाम न करनें वाले बुढ़ापे से पूर्व ही संसार को छोड़ जाते हैं। प्राण जीवन की ज्योति और शक्ति है। प्राण विद्या जानने वाला बड़े बड़े कष्टों से बचा रहता है। अतः प्राण की विद्या को जान कर प्रत्येक को प्राणायाम करना चाहिये।

प्रजाम्:—जब जीवन और जीवनीय शक्ति होगी तब ही श्रेष्ठ सन्तान उत्पन्न हो सकेगी। आज पिता और पुत्र का चित्र नहीं मिलता। कारण सन्तान बिना बुलाये आ रही है; सन्तान किसी उद्देश्य को दृष्टि में रखकर उत्पन्न नहीं की जाती। इसका प्रयत्न ही नहीं किया जाता कि सुसन्तान हो। आज तो बस संयोग किया और सन्तान आ गई और लोकाचार के कारण उसका पालन करते हैं। आज कुत्ते, गधे, घोड़े और वृक्षों की नसलों पर ध्यान दिया जाता है, इनकी नसलों को श्रेष्ठ बनाने का प्रयत्न किया जाता है परन्तु मनुष्य की नसल की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। वैदिक धर्म में सन्तति सुधार के लिए १६ संस्कारों का विधान है। गर्भाधान के समय बहुत बड़ा उत्सव रचा जाता था और आर्य लोग घोषणा पूर्वक गर्भाधान किया करते थे। योगेश्वर कृष्ण और रुकमणी ने १२ वर्ष तक ब्रह्मचर्य के कठोर नियमों का पालन करते हुए तब प्रद्युम्न को उत्पन्न किया था जो आकृति, रंग रूप, बल बुद्धि और विद्या आदि में कृष्ण के ही तुल्य था। आज कल लोग विवाह के उद्देश्य को ही भूल बैठे हैं। यही कारण है कि अब By Products उत्पन्न होने लगे हैं। न शरीर ही अच्छे बनते हैं और न बुद्धि ही ठीक है। जब नवागत शिशु के संस्कार होते थे तो उसपर इनका गहरा प्रभाव पड़ता था—क्योंकि जो कुछ हम बोलते या करते हैं—बच्चा उसका अनुकरण करता है। यदि हम यह चाहते हैं कि हमारी सन्तान उत्तम बने तो हमें संस्कारों पर विशेष ध्यान देना चाहिये। यह विद्या हमारे पास थी परन्तु न हमने स्वयं लाभ उठाया न औरों को उठाने दिया। उत्तम प्रजा के लिये स्वयं इनसे लाभ उठाओ और दूसरों को उठाने दो।

पशुम्:—दीर्घायु प्राण शक्ति, और उत्तम प्रजा के लिए पशु होने चाहिएं। पशुओं में गौ और घोड़े का स्थान

सब से ऊंचा है। वेद माता का भक्त घर में गौ की कामना करता हुआ प्रभु से प्रार्थना करता है।

उपहूताऽइह गावः (यजु० ३ । ४३)

हमारे घरों में गायें हों। प्राचीन काल में भारत वर्ष में असंख्य गोधन था। राजा महाराजा शुभावसरों पर ब्राह्मणों को लाखों गाए दान में दिया करते थे। पाण्डवों के पास १० हजार गो वर्ग थे। प्रत्येक वर्ग ८ लाख गायों का था। ये सभी गायें सुन्दर स्वस्थ और प्रभूत दूध देने वाली होती थीं। नौ लाख गाय वाला नन्द, दस लाख वाला लषभानु तथा एक करोड़ वाला नन्दराज कहलाता था। सिकन्दर यहाँ से चुनी हुई सुन्दर स्वस्थ एक लाख गायों को अपने साथ ले गया था। इन वर्णनों से यह स्पष्ट है कि प्राचीन भारत का गोवंश असंख्य था। परन्तु आज भारत में गोधन का ह्रास हो रहा है। सूर्य उदय होने से पूर्व हजारों गोओं के गले पर कटारी फेरदी जाती है। और इस प्रकार भारत का गोधन प्रतिदिन घटता जा रहा है। इस गोधन के ह्रास के कारण आज का दूध दूषित है। लोग अधिक दूध के लिए लीद तक भी खिला देते हैं। दूध दुहने से पहले पानी पिला देते हैं। पहले घरों में पशु रखे जाते थे परन्तु आज यह रिवाज समाप्त हो गया है। हमें गो चाहिये और गौ भी दोग्ध्री धेनुः (यजु० २२ । २२) बहुत अधिक दूध देने वाली। मोटर आदि यान इसी में आ जाते हैं। वैसे यानादि से प्राकृतिक पशु अच्छे हैं। चेतन और जड़ का स्वाभाविक अन्तर है।

कीर्तिम्—जो वेद को पढ़ता है, वेद का नित्य स्वाध्याय करता है। वह जैसे २ ज्ञान सम्पन्न होता जाता है। उसी प्रकार उसकी कीर्ति चन्द्रिका भी संसार में छिटकती जायेगी। जो इस वेद माता के रहस्यों को जितना अधिक जानने का प्रयत्न करेगा वह उतना ही अधिक यशस्वी होता जायेगा—आज महर्षि दयानन्द का जो यश है उसका बहुत अधिक श्रेय वेद के कारण ही है। स्वामी जी ने वेद का गम्भीर अध्ययन किया, प्रत्येक मन्त्र पर विचार और मनन किया और उसके पश्चात् वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि वेद में एक भी बात ऐसी नहीं है जो बुद्धि विरुद्ध अथवा सृष्टिनियम के विरुद्ध हो। इस निष्कर्ष पर पहुंचने के पश्चात् महर्षि ने उस वेद रूपी ज्ञान के भंडार को खोला और आज संसार स्वामी जी का यशो गान कर रहा है। संसार में कौन नहीं चाहता कि मैं यशस्वी बनूं ? सभी चाहते हैं कि हम यशस्वी बनें यह यश उसे ही मिल सकता है जो वेद का अध्ययन करे और अपने जीवनों को भीतदानुकूल बनाये।

द्रविणम्—वेद के स्वाध्याय से धन मिलता है। जहां और वस्तुएं भी जीवन के लिए उपयोगी हैं वहां धन अत्यन्त आवश्यक है। जब ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी और संन्यासियों का कार्य धन के बिना नहीं चल सकता तो गृहस्थियों का कैसे चल सकता है। संसार में धन सम्पत्ति जीवन निर्वाह के लिए अत्यन्त आवश्यक है। भोजन की वस्तुए, पहनने के लिए वस्त्र और निवास के लिए घर, ये तथा मनुष्य की अन्य आवश्यकताओं के लिए धन अत्यन्त आवश्यक है। अतः प्रभु से धन प्राप्ति के लिए प्रार्थना की गई है। धन का अर्थ मौत भी होता है। अतः यहां धन न कहकर प्रभु से 'द्रविणम्' की याचना की गई है। धनवान होकर भी हमारा हृदय ऐसा बने कि हम दूसरों के दुःखों में द्रवित हो जायें, पिघल जायें।

ब्रह्मवर्चसम्—एक व्यक्ति आयु, प्राण, प्रजा, पशु, कीर्ति तथा धन सब कुछ प्राप्त कर लेता है, परन्तु यदि वह ब्रह्म तेज प्राप्त नहीं करता तो उसका जीवन बेकार है। सब कुछ प्राप्त करते हुए उसने कुछ प्राप्त नहीं किया। जन्म से तो सभी शुद्र हैं। जीवन का लक्ष्य परमात्मा को प्राप्त करना है। यह मानव जीवन भोग विलास के लिए नहीं मिलता। भोग विलास तो पशु पक्षी भी करते हैं और मनुष्य से अधिक। ज्ञानी और पशु में अन्तर हैं। मनुष्य जितना अधिक ज्ञानी बनता है उतना ही वह दूसरी वस्तुओं पर अपना अधिकार जमता है। जितना अधिक ज्ञान सम्पन्न बनता है उतना ही अधिक ब्रह्मतेज की वृद्धि होती है। और यह सब भी वेद माता के स्वाध्याय और तदुनसार प्रभु के आराधन से।

जब ये सब वस्तुएं मिल गई तो ईश्वर सावधान करते हुए कहते हैं, ये मुझे दे दो, मेरे अर्पण कर दो। सब वस्तुओं का संचय करो और उन्हें मेरे अर्पण कर दो। प्रभु तो आप्त काम है, उसे तो किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है परन्तु यदि तुम उनसे छुटकारा पाना चाहते हो, तो जिस प्रकार प्रभु ने सारी सम्पत्ति प्रकृति जीवों के लिये प्रदान की हुई है इस प्रकार तुम भी इन वस्तुओं को जीवों के कल्याण के लिए दे डालो फिर वे मेरे अर्पण हो जायेंगी, और तुम मुक्ति के अधिकारी बनोगे। प्रभु करे कि हम उसकी सात वस्तुएं लेकर उसे वापस दे सकें।

इस मन्त्र में जो आरम्भ में दिया गया है वेद को माता कहा है। वस्तुतः वेद माता ही है। जिस प्रकार एक मां अपने पुत्र को शिक्षा देती है ठीक इसी प्रकार वेद माता भी अपने प्रिय पुत्रों के कल्याण के लिए कैसी सुन्दर सुन्दर और जीवन को उच्च बनाने वाली शिक्षाएं प्रदान करती है उनका तनिक अवलोकन कीजिये।

आज का नवयुवय जहाँ तनिक निराश और हताश हुआ वह कुतब मीनार से गिरकर, रेल की पटरी के नीचे सिर देकर अथवा नदी में छलांग लगाकर अपनी आत्म हत्या करता है। वेद माता अपने ऐसे पुत्र को शिक्षा देते हुए कहती है:—

असुर्य्या नाम ते लोकाऽअन्धेन तमसावृताः।
ताँस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः॥
(यजु० ४०।३)

जो लोग अपनी आत्मा का हनन करते हैं वे लोग मर कर अन्धकारमय अज्ञान से ढके हुए आसुरी योनि को प्राप्त होते हैं। अतः वेद माता कहती है तू आत्म हत्या मत कर।

संगठन में बड़ा बल है। संगठन द्वारा मनुष्य बड़े २ कार्यों को सहज में ही कर डालता है अतः वेद माता अपने पुत्रों को उपदेश देती है:—

सङ्गच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते॥
(ऋ० १०।१९१।२)

तुम सब मिलकर चलो, मिलकर कर बोलो और तुम सब के मन एक समान हों। जिस प्रकार पहले विद्वान् अपने कर्तव्य का पालन करते आये हैं तुम भी वैसे ही करते जाओ। वेद माता कहती है कि तुम्हारा जीवन तो ऐसा होना चाहिए कि तुम घोषणा पूर्वक कह सको:--

न किर्देवा मिनीमसि नकिरा योपयामसि मन्त्र श्रुत्यं चरामसि।
पक्षेभिरपिकक्षेभिरत्राभिः संरभामहे॥
(ऋ० १०।१३४।७।)

हे दिव्य गुण सम्पन्न विद्वानों। न तो हम हिंसा करते है और न ही फूट डालते है अपितु मन्त्र के अनुसार आचरण करते है। तिनके के समान तुच्छ साथियों के साथ भी, एक मत होकर, वेग पूर्वक कार्य करते हैं।

मानव जीवन का परमोद्देश्य है ईश्वर की प्राप्ति। वेद माता उस परम लक्ष्य की ओर संकेत करते हुए उपदेश देती है। :—

यस्तंन्न वेद किमृचा करिष्यति (ऋ० १।१६४।३९)

जो वेद को पढ़ता है परन्तु उस ईश्वर को नहीं जानता वह वेद से क्या करेगा। उनके ऊपर तो वही उक्ति चरितार्थ होती है:—

पठन्ति चतुरो वेदान् धर्मशास्त्राणि अनेकशः।
आत्मानं नैव जानन्ति दर्वी पाक रसं यथा॥

जो लोग चारों वेदों को पढ़ते हैं और अनेक धर्म शास्त्रों का भी अध्ययन करते हैं परन्तु आत्मा को नहीं जानते वे तो दर्वी-कड़छी के समान है जो सभी सागों में जाती है परन्तु उनके स्वाद और रस को नहीं जानती। अतः वेद माता कहती है:—

एंत जानाथ परमे व्योमन् देवाः सधस्था विदरूपमस्य
(यजु० १८।६०)

हे एक स्थान वाले विद्वानों ! तुम परमउत्तम आकाश में व्याप्त इस परमात्मा को जानो और उसके व्यापक सत्य चैतन्य मात्र आनन्दमय स्वरूप को जानो।

वेद माता अहिंसा का पाठ पढ़ाती है, और अहिंसा से भी ऊपर एक दूसरे से प्रेम करना सिखाती है। परन्तु

वेद माता महात्मा बुद्ध और महात्मा गांधी के समान कायर भीरु और डरपोक बनने का उपदेश नहीं देती। यदि कोई शत्रु देश पर आक्रमण करे तो वेद माता अपने वीर पुत्र को आदेश देती है:—

इन्द्र जहि पुमांसं यातुधानमुत स्त्रियं मायया शाशदानाम् ॥
विग्रीवासो मूरदेवा ऋदन्तु माते दृशन्त्सूर्य मुच्चरन्तम् ॥ (अथर्व ८। ४। २४)

हे अन्याय नाशक राजन् ! चालाकी से दुःख देने वाले आततायी स्त्री और पुरुष को मार दे। जो हिंसक है उनकी गर्दनों को काट कर उन्हें मार डालो, और आज ही जिस से वे कल उदय होते हुए सूर्य को न देखें।

गृहस्थियों को उपदेश देते हुए वेद माता कहती है:—

स्योनाद्योनेरधि बुध्यमानौ हसामुदौ महसा मोदमानौ
सुगू सुपुत्रौ सुगृहौ तराथो जीवावषसो विभातीः ॥
(अथर्व० १४।२।४३)

हे दम्पति ! तुम दोनों इस सुखदायक घर में अच्छी प्रकार जागते हुए, सचेत रहते हुए, प्रसन्नता के साथ बड़े प्रेम से आनन्द मनाते हुए, सुन्दर पुत्रों और सुन्दर गृहस्थी वाले होकर प्रकाश युक्त बहुत से प्रातः कालों को देखो अर्थात् बहुत काल पर्यन्त जीओ।

वैदिक साम्यवाद का उपदेश करते हुए वेद माता कहती है:—

समीना प्रपया सहवोऽन्नभागः समाने योक्त्र सहेवो युनज्मि ।
सम्यञ्चो ऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः ॥
(अथर्व० ३।३०।६)

तुम्हारा पानी पीने का स्थान एक हो, तुम्हारा भोजन एक हो—मैं तुम्हें एक जुए में जुड़ने की आज्ञा देता हूँ। ईश्वर की पूजा भी तुम सब मिल कर ही करो जैसे रथ की नाभि में अरे।

ये हैं वेद माता की कुछ शिक्षायें। यदि वेद की इन शिक्षाओं का प्रचार और प्रसार हो जायें तो मानव जीवन सुख और शान्तिमय बन जाये। अतः इस प्रभुप्रदत्त वेदमाता कल्याणी वाणी को स्वयं पढ़ो और दूसरों को पढ़ाओ क्योंकि "वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनानाआर्यों का परम धर्म है।"

विवाह और विवाहित जीवन

यह पुस्तक पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय कृत (Marriage and Married Life) का अविकल अनुवाद है अनुवादक है श्री पं० रघुनाथ प्रसाद जी पाठक।

इस पुस्तक की आरम्भ से ही हिन्दी जनता में बड़ी मांग थी उसी मांग को देख कर पुस्तक छापी गई है।

सार्वदेशिक मासिक लिखता है :—

'आधुनिकता के रंग में रंगा हुआ व्यक्ति विवाह के उद्देश्य के सम्बन्ध में घने अन्धकार में भटक रहा है। उसे प्रकाश दिखाने व शंकाओं का निवारण करने के लिए प्रस्तुत पुस्तक लिखी गई है। विवाह और विवाहित जीवन के जितने पहलू हैं उन सब का ही इस पुस्तक में समावेश है। आधुनिक तथा प्राचीन दोनों ही दृष्टिकोण से उन पर विचार करते हुए बड़े २ पाश्चात्य एवं पौर्वात्य ग्रन्थकारों की सम्मितियों के प्रकाश में विषय का प्रतिपादन किया है। पुस्तक विवाह आदि अवसरों पर भेंट देने योग्य है।" सुन्दर छपाई, बढ़िया कागज सुन्दर आवरण। मूल्य २॥)

गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क देहली।

श्री आनन्द स्वामी जी की नई पुस्तक

'आनन्द भगवत् कथा अर्थात् सत्यनारायण व्रत कथा'

पौराणिक पण्डित जो सत्यनारायण की कथा सुनाते हैं उसमें केवल यही सुनाते हैं कि इस कथा को सुनने से एक आदमी स्वर्ग गया और दूसरा आदमी जिसने नहीं सुनी उसको नर्क मिला। वह सत्यनारायण की कथा क्या है यह नहीं बताते।

श्री स्वामी जी ने वेद पुराण, उपनिषद्, गीता तथा अन्य कई धार्मिक ग्रन्थों को उद्धृत करते हुए सत्यनारायण की असली कथा लिखी है सत्यनारायण कौन है? उस कथा को सुनने से जो स्वर्ग मिलता है वह क्या है? सत्यनारायण का आदि और अन्त नहीं तब उसकी अनन्त कहानी क्या है? यह इस पुस्तक में आपको ऐसे मीठे और आकर्षक शब्दों में मिलेगी कि देर तक उसका चित्र हृदय से न मिट सकेगा। एक प्रति का मूल्य ॥=) मात्र है। १२ प्रतियों के लिए ७॥) भेजें।

श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज

तत्त्वज्ञान

वेदों, उपनिषदों, गीता और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका इत्यादि तथा अपने अनुभव के आधार पर कठिन विषयों को सरल शैली पर समझाने का सफल प्रयत्न किया गया है। पुस्तक सभी के लिए उपयोगी है। सभी विद्वानों में इस की प्रशंसा की है। पुस्तक की छपाई जिल्द सुन्दर और आकर्षक है मूल्य ३)।

एक ही रास्ता

इस पुस्तक में स्वामी जी की सात दिन की ओंकार की कथा है। प्राणायाम पर भी स्वामी जी ने अच्छी व्याख्या की है। पुस्तक रोचक है मूल्य ॥।)

प्रभुभक्ति

यह पुस्तक स्वामी जी ने अपने पूर्वाश्रम में जब वे महात्मा खुशहालचन्द थे हैदराबाद जेल में लिखी थी। पुस्तक बहुत सरल है, मोटे अक्षरों में छपी है। पुस्तक का यह आठवां संस्करण है इसी से इसकी उपयोगिता सिद्ध है। मूल्य १॥)।

आनन्द गायत्री कथा

आनन्द स्वामी जी की गायत्री पर सप्ताह भर की कथा जो कि रोचक शिक्षा प्रद दृष्टान्तों से युक्त पढ़ने पढ़ाने योग्य है पुस्तक रूप में छपी है एक बार पुस्तक हाथ में उठाकर समाप्त करनी ही पड़ती है पृष्ठ संख्या १३४ मूल्य ॥=)।

प्रभुदर्शन

प्रस्तुत पुस्तक प्रभुप्राप्ति के सम्बन्ध में विशेष प्रकाश डाला है। प्रभु दर्शन के लिए क्या क्या चाहिए और उसके साधकों को किन किन उपायों का अवलम्बन करना चाहिए आदि आदि। प्रस्तुत पुस्तक श्री आनन्द स्वामी जी के साधनामय जीवन का निचोड़ है। कागज उत्तम जिल्द बहुत ही आकर्षक मूल्य २॥)।

भगवान शंकर और दयानन्द

यह भी आनन्द स्वामी जी की सात दिन की कथा है बहुत ही रोचक और सरल है। इसमें स्वामी जी ने अद्वैतवाद का भी अच्छा निरुपण किया है। मू.।=)॥

गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क देहली—६

'वेद प्रकाश' का महत्वपूर्ण विशेषांक

बृहदारण्यक उपनिषद् कथा माला

वृहदारण्यक उपनिषद् शतपथ ब्राह्मण का एक भाग है, यह उपनिषद् अन्य सब उपनिषदों से बड़ा है। सर्व साधारण के लिए उपयोगी होवे इसलिए इसमें से वह स्थल जिसका आध्यात्मिकता से सम्बन्ध नहीं तथा कई पुनरुक्त कथाओं को छोड़ कर उपयोगी १६ कथाओं का सरल रीति से वर्णन किया है जो कि प्रत्येक स्वाध्याय प्रिय व्यक्ति के लिए उपयोगी एवं लाभप्रद है। कागज की महंगाई के समय में उत्तम कागज व सजिल्द उपहार देने योग्य पुस्तक का मूल्य ३) मात्र रखा है।

वेद प्रकाश के ग्राहकों को केवल २) में ही मिलेगा ॥) रजिस्ट्री खर्च अलग देना होगा जिससे सुरक्षित पुस्तक पहुंच जाये। आगामी वर्ष के वेद प्रकाश के चन्दे के साथ २॥) उपनिषद् कथा माला के मिला कर ५) शीघ्र भेज देवें।

स्वामी ब्रह्ममुनि जी आयजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् हैं, प्रस्तुत पुस्तक में उन्होंने अध्यात्मप्रेमी जिज्ञासुओं के लाभार्थ बृहदारण्यकोपनिषत् की १६ कथाओं पर मूल वाक्यों को उद्धृत करते हुए बड़ा उत्तम प्रकाश डाला है। उन कथाओं के तात्पर्य को अधिक स्पष्ट करने के लिए द्वितीय और तृतीय कथा की व्याख्या में स्वयं भी दो रोचक शिक्षाप्रद कथाएं उन्होंने बनाई हैं जिसमें कभी निराश न होने और सेवाभाव की शिक्षा दी गई है। इस प्रकार यह ग्रन्थ इन संवादादिरूप कथाओं के कारण न केवल अध्यात्म शिक्षाप्रद किन्तु रोचक भी हो गया है। आर्यसमाजों के सत्सङ्गों तथा अन्य अवसरों पर भी इस पुस्तक में सरल रीति से व्याख्यान कथाएं सर्वसाधारण को भी पर्याप्त लाभदायिनी हो सकेंगी ऐसा हमारा विश्वास है। महाविद्वान् स्वामी ब्रह्ममुनि जी का वेदों, उपनिषदों और दर्शनशास्त्रों को इस प्रकार के व्याख्यान ग्रन्थों द्वारा लोकप्रिय बनाने का यह प्रयत्न अत्यन्त अभिनन्दनीय है। चतुर्थ कथा की व्याख्या में 'अहं ब्रह्मास्मि' की प्रकरणानुसार ठीक व्याख्या करते हुए अद्वैतवाद विषयक भ्रम का उत्तमता से निराकरण किया गया है। दशम कथा की व्याख्या में भूत प्रेतादि विषयक भ्रम का निराकरण करते हुए 'गन्धर्व गृहोता' के वास्तविक अर्थ का निरूपण किया गया है। इस प्रकार यह कथा माला सब के लिए उपयोगिनी, रोचिका और लाभप्रदा बन गई है। हम इसके लिये विद्वान लेखक और उत्साही प्रकाशक का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। —पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड

दो और विद्वानों की सम्मतियें पढ़िये

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०

वृहदारण्यक-उपनिषद्-कथा माला स्वामी ब्रह्ममुनि रचित बहुत सुन्दर और उपयोगी पुस्तक है। जनता के पढ़ने और सुनने योग्य तथा असाधारण विद्वानों के मनन और मीमांसा करने योग्य। अध्यात्मक की भूखवालों के लिए यह स्वादिष्ट और पुष्टिकर भोजन है।

शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० अमरसिंह जी आर्य पथिक

कथा माला को मैंने देखा। कथाएं श्री स्वामी जी ने बहुत ही सुन्दर रीति से लिखी है। मेरी हार्दिक कामना है कि यह पुस्तक प्रत्येक घर में पहुंचे। और सब नर नारी इससे लाभ उठावें।

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क देहली

इच्छानुसार सन्तानोत्पत्ति

भारतीय स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण व चिरस्थायी बनाने के लिये आज भारत को कर्मवीर, बुद्धिमान् व शौर्य सम्पन्न युवकों की आवश्यकता है। उस आवश्यकता की पूर्ति आपके ही हाथों में है।

किस प्रकार ?

यह जानने के लिये तथा अपने कर्तव्य से परिचित होने के लिये "इच्छानुसार सन्तानोत्पत्ति" पुस्तक मंगा कर अवश्य पढ़िये। पुस्तक पढ़ कर आप अनुभव करेंगे कि "पुत्र या पुत्री, धर्मात्मा या पापी, शासक या चोर, जितेन्द्रिय या व्यभिचारी, गौर या श्याम् वर्ण की," सन्तान का निर्माण अपने ही हाथों में है।

क्या आप चाहते हैं कि आपकी सन्तान समाज में सम्मान को प्राप्त करें।

यदि हां ! तो उसके लिए प्रयत्न करना आपका कर्तव्य है।

वह किस प्रकार ?

यह जानने के लिए स्त्री व पुरुष दोनों के लिए पठनीय इस पुस्तक को आज ही मंगाइए।

इसकी महत्ता पढ़ने से ही विदित होगी।

नवदम्पति को भेंट देने योग्य अनुपम उपहार है।

मूल्य २॥) डाक व्यय पृथक।

प्राप्ति स्थानः—भगवान दास भूकल सरन

पत्रवाणिज्य, बाजार चौक मुरादाबाद।

जुलाइ अक से आगे

धर्म नगरी

(सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर एक मनोरञ्जक गाथा)

[लेखक—श्री मदन जित आर्य्य फिरोजपुर शहर]

प्रातःकाल जब यात्री और गृहस्थी नैत्यिक कर्म कर चुके तो यात्री ने जिज्ञासु भाव से प्रार्थना की, मेरी इच्छा कल वाले सप्तम द्वार के भीतर उस धर्म सम्मेलन वाले स्थान पर जाने की है क्योंकि वहां पर पण्डित जी अध्यात्म ज्ञान का उपदेश दे रहे थे। आज तो मेरी भी प्रबल इच्छा है कि उनसे कुछ प्रश्न करूं और स्व आत्मा को सन्तुष्ट करूं। गृहस्थी सहर्ष उसके साथ चल पड़ा। जब वह उस स्थान पर पहुँचे तो आज वहां कई महात्मा और पंडितगण विद्यमान थे जनता की भीड़ भी कल की अपेक्षा अधिक थी। उस समय पण्डित जी ईश्वर का स्वरूप बता रहे थे। यह दोनों महानुभाव चुपचाप बैठ गए। पण्डित जी ने कहा कि भाइयों ईश्वर निराकार ही है वह साकार कभी नहीं हो सकता इतने में एक वृद्ध भगत खड़े हो गये और कहने लगे कि भगवान कृष्ण ने जो गीता में यह श्लोक कहा है—

यदा २ हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

श्रीकृष्ण जी कहते हैं कि जब २ धर्म का लोप होता है तब तब मैं शरीर धारण करता हूं। अब इतने स्पष्ट प्रमाण के होते हुए आप कैसे कहते हैं कि ईश्वर साकार नहीं है। पण्डित जी ने गम्भीरता पूर्वक कहा कि प्रथम तो यह बात वेद विरुद्ध होने से प्रमाण नहीं। और ऐसा हो भी सकता है कि चूँकि योगेश्वर श्रीकृष्ण धर्मात्मा थे। और धर्म की रक्षा करना चाहते थे मैं युग २ में जन्म लेकर श्रेष्ठों की रक्षा और दुष्टों का नाश करूं और यह कोई दोष की बात भी नहीं है क्यों कि सज्जन तथा परोपकारी सत्पुरुषों का तन, मन, धन, दूसरों के उपकार के लिए होता है। इससे श्री कृष्ण महापुरुष, योगी राज तो हो सकते हैं परन्तु ईश्वर कदापि नहीं हो सकते। और जो संसार में उत्पन्न हुआ है उसकी मृत्यु भी अवश्य होगी। अतः ईश्वर की उत्पत्ति कभी नहीं होती भला तनिक विचार से आप सोचें कि जो ईश्वर उत्पत्ति, स्थिति प्रलय हर समय करता रहता है उसके लिए कंस, रावण आदि दुष्टों का नाश करना कौन सी कठिन बात है। इस उत्तर को सुन कर सब जनता चुप हो गई। पण्डित जी ने पुनः ऊंचें स्वर से कहा कि श्रोताओं में यदि ईश्वर विषयक कोई सन्देह हो तो वह आज ही संशय निवारण करलें। इस पर एक श्रद्धालु भक्त कहने लगा अच्छा महाराज जी यह तो बताइए कि ईश्वर अपने भक्तों के पाप तो अवश्य ही क्षमा कर देता होगा। पण्डित जी ने कहा कि कदापि नहीं यदि वह इस प्रकार क्षमा करने लगे तो उसका न्याय नष्ट हो जावेगा और सब मनुष्य पापी हो जावें क्योंकि जब लोगों को यह पता हो जावे कि जब ः भी हम कोई पाप करेंगे तो इधर ईश्वर से क्षमा मांग ली बस पाप का भी आनन्द ले लिया और दण्ड से भी बच गये।

यात्री भी बड़े ध्यान से सब वार्तालाप सुन रहा था अब उसके मन के भीतर भी एक शंका हुई अतः वह हाथ जोड़ कर खड़ा होकर नम्रता से बोला भगवन कृपया मेरी भी एक शंका का निवारण कर दीजिये कि क्या जीव स्वतन्त्र है या परतन्त्र ? पण्डित जी ने कहा वस्तुतः यह प्रश्न अति गम्भीर है। मैं अति संक्षेप से तुम्हें समझाता हूं कि जीव स्वधर्म करने में स्वतन्त्र तथा ईश्वर व्यवस्थानुसार कर्म फल के भोगने में परतन्त्र है जैसे कि पाणिनीय मुनि जी अपनी अष्टाध्यायी में लिखते हैं "स्वतन्त्र कर्त्ता" अर्थात् जीव और ईश्वर अपने २ कर्मों में दोनों स्वतन्त्र है।

जिज्ञासु ने पुनः फिर नम्रनिवेदन किया कि चूंकि ईश्वर त्रिकालदर्शी है अतः वह भविष्य की बातें जानता है। वह जैसा निश्चय करेगा जीव वैसा ही करेगा और इस लिये जीव वास्तविक रूप में स्वतन्त्र नहीं है जैसे

ईश्वर ने उसके लिये कर्म करने का निश्चय किया जीव ने वैसे ही कर दिया और इस प्रकार जीव को दण्ड भी नहीं मिलना चाहिये पण्डित जी ने कहा कि भाइयों ऐसा मत सोचो। ईश्वर को त्रिकाल दर्शी कहना ठीक नहीं क्योंकि जो होकर न रहे वह भूतकाल और न होके होवे वह भविष्यत् काल होता है, क्या ईश्वर को कोई ज्ञान होकर नहीं रहता तथा न होके होता है। परमेश्वर का ज्ञान सदा एक रस रहता है भूत भविष्य जीवों के लिए है प्रभु के लिए नहीं हां जीवों के कर्मों की अपेक्षा से ईश्वर में त्रिकालता हो सकती है। स्वतः नहीं। **जैसी स्वतन्त्रता से जीव कर्म करता है वैसी ही सर्वज्ञता से ईश्वर जानता है और जैसा ईश्वर जीव के सामर्थ्य विषय को जानता है वैसा ही जीव करता है।** इसके अतिरिक्त एक और बात का भी समाधान कर जाऊं अर्थात् कई लोग यह भी कहते हैं कि ईश्वर की इच्छा से ही यह जगत उत्पन्न होता है और जीव कर्म करता है। इसमें विचारने की यह बात है कि ईश्वर में जीव सदृश इच्छा नहीं क्योंकि इच्छा अप्राप्त की प्राप्ति तथा सुख विशेष की वांच्छा करना होता है। परमात्मा को कोई वस्तु भी अप्राप्त नहीं और न उससे कोई उत्तम और पूर्ण सुख युक्त होने से सुख की अभिलाषा ही है। इसलिए ईश्वर में इच्छा का तो सम्भव नहीं हां ईक्षण अर्थात् सब प्रकार की विद्या का दर्शन और सब सृष्टि का करना कहाता है। इन सुन्दर वाक्यों को सुनकर जनता का हृदय गद्गद हो गया और वह सब पण्डित जी महाराज को धन्यवाद देने लगे उपस्थित महात्मा सन्यासीगण न भी साधुवादरूपेण आर्शीवाद दिया।

वेद विचार

पण्डित जी अभी बैठे ही थे कि एक नवयुवक खड़ा हो गया और कहने लगा कि पण्डित जी, जब आप ईश्वर को निराकार मानते हैं तो वेद विद्या का उपदेश विना उच्चारण कैसे किया होगा। पण्डित जी ने कहा कि जिज्ञासु महोदय आपकी शंका साकार पदार्थों के लिए तो उपयुक्त हो सकती है परन्तु निराकार, सर्वशक्तिमान अन्तर्यामी ईश्वर के लिए इन अंगों की आवश्यकता नहीं है। वह प्रभु तो अपनी अनन्त वेद विद्या अग्नि वायु आदित्य और अंगिरा महर्षियों की आत्मा में प्रकाशित कर देता है और यह ऋषि अपने मुख से उच्चारण करके दूसरों को वह वेद ज्ञान सुना देते हैं। कई लोग यह भी शंका करते हैं कि वेद से ईश्वर के होने की कोई आवश्यकता नहीं क्यों कि मनुष्य लोग क्रमशः ज्ञान बढाते जाकर पश्चात् पुस्तक भी बना लेंगे। परन्तु इसमें विचारणीय बात यह है कि बिना कारण के कार्य होना असम्भव है जैसे कोई जंगली मनुष्य सृष्टि को देख कर भी विद्वान नहीं हो सकता जब तक कोई शिक्षक न मिल सके। इसलिए यदि परमात्मा आदि सृष्टि में इन ऋषियों को वेद विद्या न पढ़ाता और वे अन्य को न पढ़ाते तो संसार में सब मूर्ख ही रह जाते।

यह वेद प्रभु का नित्य ज्ञान है चूंकि प्रभु नित्य उसका ज्ञान भी नित्य है। किन्तु यह वेद की पुस्तकें नित्य नहीं है शब्द अर्थ और सम्बन्ध नित्य है।

इन प्रभावशाली शास्त्रोक्त विषय को सुन कर जनता अति तृप्त हो गई हमारे नायक यात्री महोदय भी अब उठ खड़े हुए और अपने घर जाने लगे। गृहस्थी ने यात्री को बताया कि आगामी बार तुम्हें इस धर्म नगरी के अष्टम द्वार का दिग्दर्शन कराऊंगा। क्रमशः

॥ ओ३म शम् ॥

शिक्षा

(१) इस देश की प्राचीन शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को मनुष्य अथवा उन्नत मनुष्य बनाना होता था। मनुष्य को उन्नत मनुष्य बनाने के लिये दो बातों की जरूरत होती है—शिक्षा और दीक्षा की—शिक्षा और दीक्षा को इसलिये, पहले समझ लेना चाहिये।

(२) शिक्षा कहते हैं आत्मिक शक्तियों के विकास को-उन शक्तियों के विकास का अर्थ उन्हें भीतर से बाहिर लाना है। इस के विपरीत दीक्षा कहते हैं विद्या अथवा ज्ञान को बाहर से भीतर ले जाने को। अर्थात् दीक्षा ज्ञान प्राप्त करना और शिक्षा प्राप्त-ज्ञान को कार्य में परिणित करने की शक्ति पैदा करना। इसी लिये वेद में कहा गया है:—

विद्या चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयंसह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते॥
(यजुर्वेद ४०। १४)

अर्थात् ज्ञान और कर्म को जो साथ साथ जानता (अर्थात् उन्हें काम में लाता) है वह कर्म से मृत्यु के पार हो जाता है और ज्ञान से अमरता प्राप्त कर लेता है।

मन्त्र का भाव यह है कि दीक्षा से ज्ञान प्राप्त करो और शिक्षा से उसे काम में लाओ। अंगरेजी भाषा के एजूकेशन (Education) और इन्स्ट्रक्षन (Instruction) जब लैटिन भाषा के आधार से बनाये गये थे तो इनका भी, इसी प्रकार का अभिप्राय था। एजूकेशन शब्द लैटिन भाषा के Educo धातु से बनाया गया था। "E" means out, "Duco" means to draw out (from within) अर्थात् एजूकेशन के अर्थ भीतर से बाहर लाना है। इसी प्रकार "इन्स्ट्रक्षन" शब्द In और Struo Instruo लैटिन शब्द से बना है, ("In" mean within Struo means to collect) अर्थात् To collect within (from without) बाहर से लाकर भीतर संग्रह करना।

(३) शक्ति विकास का अभिप्राय, आत्मिक, मानसिक और शारीरिक शक्ति विकास से है। ये तीनों प्रकार की शक्तियाँ, ब्रह्मचर्य से प्राप्त हुआ करती हैं। इसलिये दीक्षा के साथ ब्रह्मचर्य, प्राचीन शिक्षा-पद्धति का आवश्यक अंग था। यहां हम ब्रह्मचर्य की कार्य-प्रणाली का उल्लेख करना आवश्यक समझ कर, उसका उल्लेख कर देते हैं:—

भोजन अनेक परिवर्तनों के बाद दो प्रकार के रसों में परिवर्तित हो जाता है:—

[१] (१) प्रसाद=शुद्धरस, (२) मल—इन में से सं० २ तो मल-मूत्र होकर शरीर से निकल जाता है, परन्तु सं० १ व्यान वायु द्वारा शरीरस्थ रस में पहुंचता है वहां उसे शरीरस्थ अग्नि तपाकर ३ भागों में विभक्त कर देती है।

[२] (१) मल भाग=कफ, (२) स्थूल रस, (३) सूक्ष्म रस=रक्त। इनमें से सं० १ शरीर के कफ में और सं० २ शरीर के रस में मिल जाते हैं। सं० ३ व्यान वायु द्वारा रक्त के स्थान यकृत और प्लीहा (तिल्ली) में पहुंचता है और शरीर के रक्त की अग्नि उसे तपा कर फिर उसके ३ भाग कर देती है।

[३] (१) मल भाग (पित), (२) स्थूल भाग (रक्त) और (३) सूक्ष्म भाग—इनमें से १ और २ तो पित और रक्त में शामिल हो जाते हैं और सं० ३ फिर तप कर तीन भागों में विभक्त हो जाता है।

[४] (१) मल भाग (नासिका और नेत्र के मल) (२) स्थूल भाग (मांस) और (३) सूक्ष्म भाग । सं० ३ तप कर फिर ३ भागों में विभक्त होता है ।

[५] (१ मल भाग=स्वेद (पसीना), (२) स्थूल भाग=मेद (चरवी और (३) सूक्ष्म भाग । सं० ३ के फिर तप कर ३ भाग हो जाते हैं ।

[६] (१) मल भाग=केश, (२) स्थूलभाग (अस्थि, और (३) सूक्ष्म भाग=मज्जा । सं० ३ के फिर ३ भाग हो जाते हैं ।

[७] (१) नयन और त्वचा के स्नेह रूप में मल भाग, (२) स्थूल भाग=मज्जा, (३) सूक्ष्म भाग=वीर्य । सं० ३ के अब २ भाग होते हैं ।

[८] (१) स्थूल भाग=वीर्य, (२) सूक्ष्म भाग= ओज ।

[९] ओज दो प्रकार का होता है :—(१) पर= सूक्ष्म, (२) अपर=स्थूल—इनमें से सं० १ शरीर में केवल ८ बूंद होता है और सं० (२) दोनों हाथों से बनाई हुई अंजुली का आधा । इन में सं० १ का स्थान हृदय है । सं० २ उत्पादक अंगों में पाया जाता है ।

[१०] रजो गुण वीर्य्य में और सतो गुण ओज में रहता है ।

[११] १६ वर्ष से पहले पुरुष मे वीर्य और १२ वर्ष से पहले स्त्रियों में आर्तव (रज) नहीं होता १६ वर्ष से पहले पुरुष में जो श्वेत स्राव होता है वह वीर्य्य नहीं होता, अपितु अष्टीला ग्रंथि का स्राव होता है, या "एलव्युमन" आदि में से कुछ होता है उसमें शुक्राणु नहीं होते ।

(४) उल्लिखित ब्रह्मचर्य के पालन से मनुष्य के भीतर बहुमात्रा में शक्ति उत्पन्न होती है जिससे उपलब्धित-ज्ञान कार्य में परिणत किया जाकर उससे लाभ उठाया जाता है । उन्हीं शक्तियों में से मनुष्य की स्मृति, निर्णायक बुद्धि, संकल्प, अनुभव और तर्क की शक्तियां, मनुष्य के लिये ज्ञान और विचार का महल बनाती हैं । ये शक्तियां न केवल सामग्री और उपकरणों से सुसज्जित होनी चाहिये किन्तु उनमें यह अभ्यास भी होना चाहिये कि जिससे नईं सामग्री और उपकरण भी संग्रह कर सके, और जो मौजूद हैं उनका समुचित रीति से व्यय कर सकें । परन्तु पश्चिम के जड़-वादियों ने शिक्षा का काम केवल सामग्री संग्रह बतला कर यह बात विद्यार्थियों पर छोड़ी है कि वे उसके प्रयोग की विधि स्वयं जान कर काम में लावें* । परन्तु इसमें मौलिक भूल है । सामग्री संग्रह मेधा का आधार नहीं हो सकता, यह तो केवल उन साधनों का एक अंग हो सकता है जिनके आधार से ज्ञान परिपक्व हुआ करता और नई खोजों का केन्द्र बना करता है । एक विद्वान ने यह बिलकुल ठीक कहा है :—"An education that confines itself to imparting knowledge is no education".

(५) देश की वर्तमान शिक्षा केवल कुछ इधर उधर का ज्ञान (Tit bits of information) दे देती है, परन्तु यह ज्ञान चरित्र नहीं, चरित्र तो साहस की भित्ति पर बना करता है । इस ज्ञान से तो, जो आज स्कूल दे रहे हैं, विद्यार्थी पराधीन विचारधारा के बना करते हैं, साहसी और देशभक्त नहीं बन सकते । असलियत यह है कि पश्चिम के इन जड़वादियों ने शिक्षा की बुनियाद (Basis) में साधन (Source) को शामिल करके शिक्षा के सारे प्रोग्राम को दरहम बरहम कर डाला है । अन्यथा शिक्षा, चरित्र-निर्माण, आत्म-ज्ञान, आत्म-बल, श्रद्धा, विश्वास और समाज-प्रेम उत्पन्न करने के लिये दी जानी चाहिये और इस देश के प्राचीन काल में ऐसी ही शिक्षा दी जाया करती थी ।

(६) मनुष्य तीन प्रकार के परमाणुओं सत् रज

*School gives materials it is for the student to use them, यह आदर्श पश्चिमी शिक्षा संस्थाओं का है ।

और तम से बनता है। ये तीनों अनेक परिवर्तनों के बाद ज्ञान, मनोविकार (Passion) और अज्ञान का रूप धारण कर लिया करते हैं।

तम से मानसिक जड़ता (Mental enertia), सुस्ती, भूलना, आलस्य, अध्ययन से अरुचि और अज्ञान उत्पन्न हुआ करते हैं, और मनुष्य अच्छी बातों के ग्रहण करने और अपने मनुष्यत्व पैदा करने के अयोग्य हो जाता है।

रज से अनियंत्रित कर्तृत्व उत्पन्न होता है, और ज्ञान मनो-विकार में परिणत हो जाता है। आसक्ति, पक्षपात और पहले से बेसोचे समझे निर्णय करने का अभ्यास बन जाया करता है।

सत से वह प्रकाश उत्पन्न होता है जिससे अव्यक्त ज्ञान व्यक्त होकर अनुभव और स्मृति भण्डार में आ जाया करता है।

इसलिये मनुष्य को अच्छा बनने के लिये आवश्यक है कि तम को दूर करे, रज को नियंत्रित करे और सत का विकास होने दे। इनके साधन ये हैं :—

(क) तम के दूर करने के लिये दो बातों की जरूरत है:—(१) आचारिक शुद्धता को बलपूर्वक काम में लाना, (२) आलस्य और ढीलेपन का विरोध इस प्रकार करना जिससे इनकी वासना न बनने पावे और बनी हुई वासना नष्ट हो जावे।

(ख) रज को नियमित करने के लिये निम्न साधन प्रयुक्त होते हैं :—(१) आचारिक नियन्त्रण, (२) मन को शान्त, शुद्ध और इस प्रकार का रखना चाहिए जिस से सदाचार ग्रहण करने के लिए वह सदैव तय्यार रहे (३) विषयेच्छा और तार्किक बुद्धि की मन तक पहुंच न होने देनी चाहिए।

(ग) सत के प्रबोधन के लिए निम्न कार्य करने चाहियें :—(१) ओंकार का सार्थक जप, (२) चित्त की एकाग्रता का अभ्यास, (३) ईश्वरचिन्तन।

[नोट—जप से मस्तिष्क का अंकित करने वाला भाग (Recording part) शब्द से इस इच्छा के साथ भरा जाता है जिस से अर्थ भीतर से स्वयमेव निकलने लगें।]

(७) वर्त्तमान शिक्षा प्रणाली की त्रुटियों पर दृष्टि पात करने से प्रकट हो जाता है कि वह शिक्षा है। वासवानी जी ने ठीक कहा है :—"Much of what passes current as education is miseducation".

(८) इस देश की प्राचीन शिक्षा-पद्धति का आदर्श यह था कि "जीवित रहो, जब जीवित रहना धर्म हो, और मर जाओ जब मर जाना धर्म हो"+।

(९) शिक्षा के संबंध में कुछ एक मौलिक बातें हैं जिन्हें ध्यान में रखना चाहिए :—

(क) अध्यापक सहायक और पथ-प्रदर्शक हुआ करता है। उस का काम उपदेश (Suggest) करना है, विद्यार्थी के ऊपर बोझ लादना नहीं। वह विद्यार्थी के भीतर से ज्ञान और शक्ति निकाल नहीं सकता, वह केवल बतला सकता है कि विद्यार्थी किस प्रकार उन्हें भीतर से बाहर लावें।

(ख) मानसिक विकास किस प्रकार हो सकता है यह बात विद्यार्थियों के मनकी जांच करने से प्रकट होगी; उस की रुचि और प्रवृति की जांच करनी होगी। विद्यार्थी को मार पीट कर उस के भीतर ऐसी बात ठूंसना अशिष्टता और क्रूरता है।

(ग) समीप (वर्तमान) से दूर (भविष्य) पहुंचना, अथवा यों कहिये कि क्या है और क्या होगा, यह उद्देश्य पूरा करना शिक्षा का काम है। विद्यार्थी को भूतकाल का बालक, वर्तमान का स्वामी और भविष्य का निर्माता होना चाहिए।

+इस शिक्षा को "Old Samural Teachnig" इस लिए कहते हैं कि इस जाति वालों ने, इस देश का अनुकरण कर के, इस शिक्षा को अपना रखा था, जिस प्रकार जापान ने आज इस शिक्षा को अपना रखा है। 'Live when it is right to live; die, when it is right to die." जापान में फौजी शिक्षा देने के लिए एक समिति है जिस के २० लाख सदस्य हैं। इस समिति की शाखायें देश भर में फैली हुई हैं। (वैदिक मैगजीन नवम्बर १९२२ ई०)

अपनी अपनी बात

'आर्यमित्र' सं० २०१५-२-२८ के अंक में पार्श्व ६ पर श्री पं० भवानी लाल जी भारतीय एम० ए० का सुन्दर लेख श्री पं० शिवशंकर जी काव्य-तीर्थ की जीवनी पर छपा है। वस्तुतः विद्वानों का ही हृदय, स्वर्गीय विद्वानों के प्रति सविशेष कृतज्ञता पूर्ण होता है और वे अन्य भक्तों का भी समय-समय पर उद्बोधन करते हैं।

श्री भारतीय जी इस लेख के लिए धन्यवदार्ह हैं।

उपर्युक्त लेख के एक अंश से में सहमत न हो सका अतः अपने विचार आपके प्रतिष्ठित पत्र द्वारा आर्य जनता तक पहुंचाना चाहता हूँ। श्री भारतीय जी ने लिखा है—

"काशी निवासी पं० अम्बिकादत्त व्यास ने स्वामी जी के सिद्धान्तों के विरुद्ध बहुत कुछ कहा और लिखा है। ऋषिकृत 'संस्कृत वाक्य प्रबोध' की कुछ मुद्रण विषयक त्रुटियों की ओट में उन्होंने उसका, 'अबोध निवारण' नामक पुस्तक लिखकर, खण्डन प्रकाशित कराया। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इस बात से सहमत होना कठिन है कि पं० अम्बिकादत्त कभी स्वामी जी के प्रशंसक रहे होंगे और उन्होंने अपने शिष्य शिवशंकर के हृदय में, उनके प्रति श्रद्धा भावों का सूत्रपात किया होगा।"

उपर्युक्त पंक्तियों के द्वारा श्री भारतीय जी ने श्री पं० शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ विरचित 'ओंकार निर्णय' के श्री गोविन्दराम हासानन्द संस्करण के प्रारम्भ में श्री स्वा० अभेदानन्द जी प्रधान सार्वदेशिक सभा, तथा स्वर्गीय महामनीषी श्री स्वा० वेदानन्द जी तीर्थ लिखित ग्रन्थकार परिचय (पार्श्व २-३ तथा ६-१०) से मतभेद प्रकट किया है।

'मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्ना' में श्री भारतीय जी के उपर्युक्त मतभेद से सहमत नहीं हो सका हूं। मैं वेदानंद जी तथा अभेदानन्द जी के लेख को ही यथार्थ समझता हूं।

महर्षि के विरोधियों में अनेक बुधवर्य महर्षि की अप्रतिम विद्वत्ता, अखण्ड ब्रह्मचर्य, अतुल ईश्वर भक्ति अनुपम देशभक्ति आदि शतशः गुण तथा अवदात चरित्र से उनके पूर्ण भक्त थे, परन्तु अपनी जीविकावश उनका विरोध करते थे।

प्रसिद्ध काशी शास्त्रार्थ सं० १९२६ कार्तिक शुक्ला १२, भौम (१६-११-१८६९) को हुआ था। प्रतिपक्षी गृहस्थ पण्डितों में सर्वोच्च विद्वान् स्वीर्गीय बालशास्त्री थे। एक बार गोस्वामी घनश्यामदास, मुल्तान से, काशी गए थे। वहां वे पं० बालशास्त्री से मिले थे और उनसे पूछा था 'आपका और स्वामी दयानन्द का जो शास्त्रार्थ हुआ था उसमें किसकी जीत हुई थी।' तो प्रशंसित शास्त्री जी ने उत्तर देते हुए कहा था—'हम गृहस्थ हैं, और वे यति सन्यासी हमारे पूज्य। उनका हमारा शास्त्रार्थ कहां बन सकता है?' [पं० घासीराम संगृहीत महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र प्रथम भाग, द्वितीय वृत्ति पार्श्व १८२]

हम ऊपर लिख चुके हैं श्री बालशास्त्री ऋषि के संमुखीत गृहस्थ पण्डितों में प्रखुततम थे और उन्होंने यतिवर्य के परास्त करने को एक मास पर्यन्त तैयारी और शास्त्रार्थ के दिन सकल सामर्थ्य से प्रयत्न किया था। यदि उनके कार्य से अनुमान करें तो वे महर्षि के महा द्वेषी थे, पर वस्तुतः उनका यह सब विरोध जीविका व लौकिकी परिस्थिति मूलक था। हृदय में ऋषि के प्रति अगाध श्रद्धा का स्रोत प्रवाहित था।

उपर्युक्त बालशास्त्री के शिष्य श्री शिवकुमार शास्त्री अपने गुरुवर्य के समान पण्डित शिरोमणी थे और अपने समय के प्रमुखतम पण्डित थे। एक बार काशी की किसी सभा में सनातन धर्म के महामहोपदेशक स्वर्गीय पण्डित दीनदयालु व्याख्यान वाचस्पति ने महर्षि के विषय में हल्की वाणी का प्रयोग किया। इस पर श्री पं० शिवकुमार जी ने तेजस्विनी वाणी से कहा 'तुम स्वामी दयानन्द के पैर झाड़ने योग्य भी नहीं और ऐसे वचन बोलते हो। मैं ऐसी सभा में न बैठूंगा।' ऐसा कह कर वे उठने लगे। सभा ने आग्रह पूर्वक शिव कुमार जी को रोक लिया और दीनदयालु जी को बैठा दिया।

ऐसे अनेक उदाहरण हैं। विस्तारभय से नहीं लिखे जा सकते। जो लोग काशी में रहे हैं और जिन्हें वृद्ध पुरुषों से पुरावृत्त को जानने का अवसर प्राप्त हुआ है, वे जानते हैं कि काशी के अधिकांश उच्च विद्वान एकान्त में महर्षि की पर्याप्तिश्लाघा करते थे। हां जीविकादिवश सभास्थलों आदि में तो विरोध किसी न किसी रूप में करते ही रहते थे। हां अबोधछुट भैयों के पास सिवाय विरोध के और कोई कार्य न था।

मेरी सम्मति में ओंकार निर्णय के आरम्भ में विद्वद्द्वयी का लेख सर्वथा समञ्जस है।

विद्वद्वशंवद
भीमसेन शास्त्री

अपनी २ बात के अन्तर्गत जुलाई अंक में सत्याग्रह फिर? लेख के लेखक का नाम छपना रह गया था। उसके लेखक श्री पं० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय हैं। —सम्पादक

संसार का एक स्वतन्त्र राष्ट्र

जापान

[नीचे की पंक्तियों में हम एक सभ्य, अनुशासित और राष्ट्रीय गौरव अनुभव करने वाली जापानी जाति की ईमानदारी की एक सच्ची घटना प्रस्तुत कर रहे हैं। यह घटना सौराष्ट्र के भामाशाह श्री सेठ नानजी कालीदास मेहता के पुत्रों के साथ उनकी जापान यात्रा के समय घटी थी। सेठ जी के शब्दों में ही घटना को पढ़िये और विचारिए कि हम भी एक स्वतन्त्र देश के नागरिक हैं? क्या हममें इतनी शक्ति है]

—सम्पादक

सन् १९३७ में मेरे लड़के जापान की यात्रा पर गये थे। उस समय का एक दिलचस्प प्रसंग यहां पर देता हुं। वे हमारे मैनेजर के साथ घूमने गये थे। एक बार कोब्रे एक बगीचे में सब बैठे थे। किसी कार्य के लिये जेब से मनीबेग बाहर निकाला, वह भूल से बेञ्च पर पड़ा रह गया। वे होटल में चले गये। बाद में बटुवा बाग के रखवारे के हाथ में आया। वहां से रखवारे ने पुलिस को फोन किया 'किसी का बटुवा यहां बाग में पड़ा रह गया है। उसके अन्दर बहुत बड़ी रकम है।" पुलिस ने रखवारे को अज्ञा दी कि "यहां पर दे जावो"। रखवारे ने फौरन पुलिस थाने पर पाकेट पहुंचा दिया। पाकेट में नाम पता आदि थे। जापान में कोई भी परदेशीय आवे तो उसका उल्लेख पुलिस विभाग में होता है। समाचार पत्र में भी इसकी सूचना देने में आती है। पुलिस ने नाम स्थान देखकर उतरने का स्थान ढूंढ़ निकाला। और होटल के मैनेजर को फोन किया। होटल के मैनेजर ने पता लगाया तो लड़के सो गये थे। पुलीस को उत्तर दिया कि "ये गृहस्थ हमारे यहां हैं परन्तु सो गये हैं। सवेरे खबर दूंगा।" सवेरे लड़के उठे और चाय पीने बैठे तो वेटर ने पूछा 'आप का मनीबेग कहां है? जरा जेब देख लें।" लड़कों ने जेब देखी। पाकेट नहीं था। चिन्ता हुई। पाकेट मे ३५ हजार एन, थामस कूक का चेक, रिटर्न टिकिट और नोट थे। होटल के मैनेजर ने पुलिस को फोन किया। पुलिस ने उतर में पूछा कि "ये सज्जन यहां आकर ले जावेंगे कि पुलिस के साथ भेज दे?" "यहां आकर आप लोग दे जावें तो उपकार होगा।" पुलिस पाकेट लेकर आई। लड़के प्रसन्न हुये और पुरस्कार के रूप में सौ एन देने लगे। उस समय पुलीस ने कहा "आप का आभार मानता हूं, परन्तु हमें बख्शीश दे रहे हैं इससे हमारे देश का अपमान होता है। सेवा यह धर्म है फर्ज है। बाहर के यात्रियों के लिए सावधानी रखनी चाहिए— जिससे कोई हमारा दोष निकाल न सके। हमारे यहाँ किसी को तकलीफ पड़े ऐसा नही लगना चाहिए, यही हमारी देश सेवा है। हमारे देश की प्रतिष्ठा विदेशों में बढ़े यही देखना है।" ऐसा कहकर नमस्कार कर पुलिस चला गया।

इस प्रकार कोई वस्तु नाटकशाला अथवा सिनेमागृह में गुम हुई हो तो वह पुलिस के सुपुर्द होती है। महीनों पर्यन्त उसकी जाहिरात दी जाती है: "कृपा करके जिसकी हो वह लेजावे।" इसके लिए पृथक विभाग है। अल्मारी में नाम लिखकर रख रखते हैं—मालिक होना साबित करके ले जा सकता है। छः मास राह देखकर, ग्राहक न मिले तो पुलीस उसे नीलाम कर देती है और इस रकम को बाल-सेवा-गृह में भेज देती है।

योरोपियनों और अमेरिकनों ने जापानियों की परीक्ष लेने के लिए बाजार में नोटें फेकीं। गिन्नी, गहने और पैसे जहां तहाँ डाल इन्होंने मन में सोचा की जापानी लोग इन्हें उठा लेंगे। परन्तु इन्होंने चोरी का नाम तक भी सुना नहीं है। उन्हें जो पैसे मिले उसे पुलिस में सौंप

(शेष पृष्ठ १८ पर)

मैं आर्य समाजी कैसे बना ?

(ले० श्रीयुत् नरदेव शास्त्री वेद तीर्थ आचार्य महाविद्यालय, ज्वालापुर)

मेरा संक्षेप से यही उत्तर है कि मैं जन्म का आर्य समाजी हूं। क्योंकि जब हमारे पूज्य पिता स्वर्गीय पं० श्री निवास राव जी राव महोदय आर्य सामाजिक विचार के हुए थे, तब हमारा जन्म भी नहीं हुआ था। हमारे पिता जी बम्बई पुलिस फोर्स में एक बड़े अफसर थे। उनके दौरे की सीमा बम्बई से दक्षिण में रायपुर तक और उत्तर में अजमेर तक थी। वे प्रायः डाकुओं की देख भाल में रहते थे, इस दशा में कभी किसी अवसर पर जब वे उत्तर भारत में आये हुए थे, तब ठीक नहीं कह सकता, किस स्थान पर, किन्तु जयपुर अथवा अजमेर का अनुमान किया जा सकता है, स्वर्गीय पं० लेखराम जी आर्य मुसाफिर से भेंट हो गई थी। तभी से उनके विचार परिवर्तित हो गये। तभी से हमारे घर में आर्य समाज का प्रवेश समझिये। वैसे तो हमारे पिता जी कट्टर पौराणिक थे। सबसे बड़े भाई नारायण राव और उन के छोटे भाई भीम राव के यज्ञोपवीत संस्कार में ५०००) रुपया लगाया था और उस उत्सव में वैश्या नृत्य भी कराया था। पं० लेखराम जी से भेंट होने के पश्चात् हमारे पिता के विचारों में बहुत परिवर्तन हुआ। परन्तु हमारी माता श्रीमती कृष्णा बाई के विचार कभी नहीं बदले। मरणपर्यन्त उसने पूजा पाठ नहीं छोड़ा। यद्यपि पिता जी के विचार बदल गये थे, तथापि घर में उन्होंने माता जी के किसी कार्य में हस्तक्षेप नहीं किया और न मत परिवर्तन के लिए बल दिया। दुर्भाग्य से उन्हीं दिनों कई ऐसी दुर्घटनायें हुईं जिससे माता जी का यह विचार दृढ़ हो गया कि पिता जी के मत परिवर्तन के कारण ही ये दुर्घटनायें हुईं जैसे घर में बड़ी भारी चोरी का होना, बैंक में सहस्रों रुपयों का डूबना आदि।

पिता जी ने आर्य समाज के प्रायः सभी ग्रन्थ मंगा लिए थे। दृढ़ स्वाध्यायी थे। हमारा परिवार मधु सम्प्रदाय वैष्णव मत का था और मधु सम्प्रदाय द्वैत वादी सम्प्रदाय है और स्वामी जी भी द्वैत मानने वाले हैं। इसलिए पिता जी को अच्छा लगा कि वे द्वैत मत से बाहर नहीं जा रहे। यद्यपि हमारे पिता जी हृदय से आर्य समाजी हो गये थे परन्तु दक्षिण में जिस परिस्थिति और मण्डल में वे रहते थे, अकेले ही थे, तथापि अपनी चाल ढाल सब उधर के रूढि के अनुकूल ही थे। घर में जो भी आता उसको उत्तर भारत के समाचार पत्र सुनाना, कभी सत्यार्थ प्रकाश, कभी आर्याभिविनय और और कभी आर्योद्देश्यरत्नमाला आदि सुनाना यह उन का नित्य कर्म था।

जब मैं आठ नौ वर्ष का था, तभी उन्होंने मुझे हिन्दी पढ़ाना आरम्भ कर दिया। यही हिन्दी आगे जाकर हमारे बड़े काम की सिद्ध हुई। मातृभाषा मराठी के साथ हिन्दी का भी सम्पुट लगाने मे हम को बड़ा लाभ हुआ।

इस प्रकार हम जन्म के आर्य समाजी थे और बड़े होकर गुण और कर्म के आर्य समाजी बन गये। इस प्रकार हम जन्म और गुण से आर्य समजी हैं। जहां तक मेरा अध्ययन, स्वाध्याय और अनुभव है वहां तक मैं इस निश्चय पर पहुंचता हूं कि स्वामी दयानन्द जी ने कोई नई बात नहीं चलाई। और नाही उनका उद्देश्य किसी नये मत की स्थापना था हां उन्होंने प्राचीन बातों को नये रूप में, नये प्रकाश में, सम्पूर्ण बल के साथ प्रकट किया। कहीं कहीं कट्टर रिफारमर-सुधारक की भांति सर्वथा परले सिरे पर जा बैठे हैं। सभी रिफारमर परले सिरे पर जा बैठते हैं, तब कहीं जनता आधे मार्ग तक बढ़ा करती है। महात्मा गांधी ने हाथ के बुने और हाथ की कती खादी पर जब इतना बल दिया तब कहीं लोग स्वदेशी पर आये। यही दशा है। सब से बड़ा स्तुत्य और प्रसशा के योग्य आपका यह प्रयत्न रहा कि आर्यों के आदि मूलग्रन्थ वेदों को आप ने निष्कलंक सिद्ध करने का पूर्ण प्रयत्न किया है और उस में वे बहुत कुछ सफल भी हुए, उनके विचारों की विजय हुई।

(शेष पृष्ठ १७ का)

देते हैं। इस प्रकार जापान की ईमानदारी का उन्हें विश्वास हुआ।

अब भारतवर्ष की सुनिए

नई दिल्ली के एक सम्वादाता अपनी मोटर कनाट प्लेस में खड़ी करके अपने काम से कहीं चले गए। लौट कर आए तो देखा मोटर कोई ले जा चुका था। पुलिस मे रिपोर्ट लिखाई। एक सप्ताह बाद दूसरे थाने से मोटर मिल गई। वे थाने में लेने गये। मोटर देखी तो कितने ही कीमती पुर्जे गायब थे। खैर वैसी मोटर ले जाने के लिए भी तैयार हो गये। वापस लेने के लिए खाना पुरी करनी थी इसलिए रिपोर्ट लिखने वाले थाने में गए। लौट कर आए तो देखते हैं कि उनकी नई बैट्री जो अभी देख गये थे वह नहीं है उसके बदले पुरानी पड़ी है। पुलिस को कहा तो उसने कहा "हमें पता नहीं।" वे वैसी ही मोटर ले आए मोटर कारखाने के बाहर खड़ी थी मिस्त्री औजारादि लेने गया था लौटा तो देखता है कि मोटर म्युनिसिपल कमेटी वाले ले गए क्योंकि सड़क पर खड़ी थी। अब उन सम्वाददाता का कहना है कि पता नहीं मोटर पहिए और टायर सहित भी मिलेगी कि नहीं।

॥ ओ३म् ॥

सत्यार्थप्रकाश

बड़े अक्षर व बड़ी साइज का टिप्पणियों सहित संस्करण

टिप्पणियों के लेखक–आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् 'आर्य–सिद्धान्त--सागर' के यशस्वी लेखक

शास्त्रार्थ महारथी श्री ठा० अमरसिंह जी आर्य मुसाफिर

स्वनाम धन्य स्वर्गीय श्री स्वामी वेदानन्द जी ने जो टिप्पणियों सहित मोटे अक्षर और बड़ी साइज का सत्यार्थप्रकाश प्रकाशित किया था, वह प्रकाशित होते ही जो उसके ग्राहक बने थे उनको प्राप्त हो गया जिन को प्राप्त नहीं हुआ वे निराश हुए १५) की पुस्तक के २०) तक देने को तैयार हैं। इसपर भी मिलता नहीं।

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि हमने उससे भी कहीं अधिक टिप्पणियों सहित प्रकाशित करने का आयोजन किया है। टिप्पणियों के लिये उपरोक्त प्रशंसित पण्डित जी का सहयोग प्राप्त कर लिया है।

उसमें निम्न प्रकार की विशेषताएं होंगी

१. अजमेर वैदिक यन्त्रालय द्वारा प्रकाशित वर्तमान संस्करण के अनुकूल कुछ भी परिवर्तन किये बिना मोटे अक्षरों में मूल पाठ छापा जायगा।

२. पाद टिप्पणियों में वेदादि सत् शास्त्र, पुराण, जैन ग्रन्थ इंजील (बाइबिल) और कु़रान के प्रमाणों से ऋषि दयानन्द के दिये वाक्य तथा सिद्धान्तों की पुष्टि की जायेगी। जिससे अनेक शंकाओं का सामाधान हो जायेगा।

३. सत्यार्थप्रकाश में दिये प्रमाणों के पते जो ऋषि ने नहीं दिये वह भी यथाशक्ति इस संस्करण में दिये जायेंगे।

४. प्रत्येक विषय का पैराग्राफ़ अलग-अलग होगा।

५. प्रत्येक पृष्ठ पर विषय का निर्देश दिया जायेगा।

६. प्रत्येक समुल्लासों के विषयों के पैराग्राफ़ के नम्बर दिये जायेंगे जैसा कि ऋषि दयानन्द ने १३ वें और १४ वें समुल्लासों में दिये हैं जिस से उद्धरण देने में लेखकों तथा व्याख्याताओं को विशेष सहूलियत होगी, क्यों कि जितने भी संस्करण निकले हैं उन सब की पृष्ठ संख्या एक नहीं। इन नम्बरों से विशेष सहूलियत होगी जैसा कि वेद, शास्त्र, मनु० गीता आदि में नम्बर होते हैं।

७. पुस्तक के अन्त में अकारादि क्रम से प्रमाण सूची तथा विषय शब्दानुक्रमणिका दी जायेगी।

८. ऋषि की आत्म-कथा दी जायेगी जो कि उन्होंने पूना में अपने व्याख्यानों में तथा थियासोफिस्ट पत्र में लेखबद्ध करदी थी।

९. ऋषि के असली फोटो की प्रतिलिपियाँ भी इसमें विवरण वार जहाँ-जहाँ ऋषि भक्तों ने ऋषि के फोटो लिये थे, देंगे।

१०. मूल्य सर्वसाधारण के सहूलियत के लिये सुगम रहेगा। सुनहरी पूरे कपड़े की पक्की जिल्द होगी।

नये व पुराने ग्राहकों से निवेदन

आप "वेद प्रकाश" के बहुत दिनों से ग्राहक हैं। आप का "वेद प्रकाश" चालू हो या किसी कारण से बन्द हो गया हो।

वर्तमान समय में आर्य संस्कृति के प्रचार की विशेष आवश्यकता है और प्रचार के लिए पत्रों का अत्यधिक महत्व है। इस लिए आप से निवेदन है कि अगले वर्ष के लिए वेद प्रकाश का २॥) मूल्य भेजकर ग्राहक बनें व साथ ही अपने इष्ट मित्रों को भी ग्राहक बनावें। अबतक जो विशेषाँक निकल चुके हैं उनमें से जो भी चाहे रियायती मूल्य पर मगा सकते हैं— व्यवस्थापक

भवदीय

गोविन्दराम हासानन्द

स्वाध्याय योग्य उत्तमोत्तम पुस्तकें

वाल्मीकि रामायण, रियायती मू० ६)
दयानन्द ग्रन्थ संग्रह ,, ३॥)
सृष्टि का इतिहास १॥)
उपनिषद आर्यमुनि भाष्य ६)
श्वेताश्वरोपनिषद १)
प्रभु भक्ति (आनन्द स्वामीकृत) १॥)
प्रभु दर्शन ... २॥)
तत्व ज्ञान .... ३)
आनन्द गायत्री कथा ॥=)
एक ही रास्ता ।॥)
भगवान शंकर और दयानन्द ।=)॥
सत्यनारायण व्रतकथा ॥=)
ईश्वरीय नियम और मनुष्य धर्म ॥=)
वैदिक गृहस्थाश्रम (विश्वनाथ) ५)
ऋषि-गाथा महाकाव्य रियायता ४)
स्वाध्याय संग्रह (स्वा० वेदानन्द) २)
वेद परिचय ... ।=)
महर्षि दयानन्द (प्रो० इन्द्र) २)
आर्य समाज का इतिहास १।=)
ओंकार निर्णय (शिवशंकर) १॥)
वैदिक प्रार्थना (३१ प्रार्थनाएं) १॥)
सचित्र योगासन १॥)
बहनों की बातें (कवि सिद्धगोपाल) १।)
दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह २॥)
दयानन्द चित्रावली २।)
भारतीय संस्कृति (ओं-आर्य नमस्ते)॥)
आर्ष-योग प्रदीपिका सजिल्द ३॥)
कर्तव्य दर्पण (नारायण स्वामी) १।)
वैदिक सन्ध्या रहस्य ।=)
वैदिक यज्ञ रहस्य ।=)
संध्या, हवन प्रदीपिका ॥)
आर्य समाज क्या है (ना० स्वामी) ।)
सन्ध्याविनय (प्रि० नित्यानन्द) ॥)

प्रार्थना प्रदीप ॥)
संस्कार विधि विमर्श (अत्रिदेव) ३)
स्त्रियों का स्वास्थ्य और रोग ३)
विवाह और विवाहित जीवन २॥)
घर गृहस्थी ३॥)
सावित्री प्रकाश (वेदानन्द) १)
आर्य सिद्धान्त दीप १।)
गीत श्रद्धांजलि (भजन पुस्तक) १।)
सत्य हरिश्चन्द्र नाटक १।)
यज्ञोपवीत मीमाँसा ।॥)
आदर्श सुधारक दयानन्द ॥=)
गृहस्थाश्रम (स्वामी दयानन्द) ।=)
बाल शिक्षक ,, ।=)
आत्म कथा ऋषि दयानन्द ,, ।=)
आर्याभिविनय ,, ॥)
वेद विरुद्धमत खण्डन ।=)
शिक्षा पत्री ध्वान्त निवारण ,, ।=)
भ्रान्ति निवारण ,, ।=)
भ्रमोच्छेदन ,, ।)
हुगली शास्त्रार्थ ,, ।)
वेदों का महत्व (स्वामी दर्शनानन्द) ।)
ईश्वर प्राप्ति ,, ≡)
ईश्वर विचार ,, =)
जीवात्मा ,, =)
वेदों की आवश्यकता ,, –)
वेद किस पर प्रकट हुए ,, –)
बाल शिक्षा, धर्म शिक्षा ,, ≡)
वर्ण व्यवस्था (स्वामी दर्शनानन्द) –)
पित श्राद्धविचार ,, –)
स्वामी दयानन्द का उद्देश्य ,, –)
,, ,, लक्ष्य ,, –)
सत्यार्थ प्रकाश शंका समाधान ।)

स्वामी दयानन्द और वेद (श्री अरविन्द) ।)
भक्ष्याभक्ष्य विचार ≡)
वैदिक धर्म शिक्षा ≡)
आर्य सत्संग गुटका ।–)
विश्व विज्ञान परमात्म बोध ≡)
अखण्ड भारत (चन्द्र गुप्त) ॥)
मांस मदिरा निषेध ≡)
गायत्री व्याख्या ।)
गीता वचनामृत ।=)
गोरक्षा परम कर्त्तव्य ॥)
स्वास्थ्य विज्ञान ।–)
धार्मिक मंत्रों के चित्र सा. १४॥ × २२
संध्या मंत्र ।–)
प्रार्थना के ८ मंत्र अर्थ सहित ।–)
आर्य समाज के नियम ।–)
जीवन मृत्यु के प्रश्न ।–)
यम नियम व्याख्या सहित ।–)
संगठन सुक्त ।–)
मंत्रों के चित्र सहित ११ × १४ ॥)
ऋग्वेद का प्रथम मंत्र ≡)
यजुर्वेद का प्रथम ,, ≡)
सामवेद का प्रथम ,, ≡)
अथर्ववेद का प्रथम मंत्र ≡)
दीर्घ जीवन का मंत्र ≡
धर्मचर, सत्यंवद ≡)
मंत्रों के चित्र छोटे ७। × ५॥मू०–)॥
ओ३म्, नमस्ते, स्वागतम, विश्वानि-देव सहनाववतु, धृतिक्षमा, नमः शम्भवायच त्वमेव माता च पिता, नैनंछिन्दति अहिंसा परमो धर्म, आदि आदि।

महाभारतम् संस्कृत के विद्यार्थियों के लिए श्री आचार्य राजेन्द्र शास्त्री उपाध्यक्ष दयानन्द वेदविद्यालय देहली द्वारा रचित केवल संस्कृत गद्य में
मंगाकर संस्कृत में वार्तालाप करना सीखें। मूल्य सजिल्द का ३) रु०

गोविन्दराम हासानन्द ४४०८ नई सड़क देहली

श्रावणी (वेदसप्ताह) पर्व के उपलक्ष में प्रचारार्थ विद्वानों के ट्रैक्ट मंगावें

प्रत्येक का मूल्य -) सैकड़ा ४)

१ मनुष्य बन—ले० स्वामी वेदानन्द सरस्वती ।
२ गायत्री माता—जगदीशचन्द्र विद्यार्थी ।
३ ईश्वर सिद्धि—पं० रामचन्द्र जी देहलवी ।
४ आस्तिक नास्तिक संवाद—महर्षि दयानन्द ।
५ पितृ श्राद्ध विचार—स्वामी दर्शनानन्द ।
६ सुख का साधन—महात्मा आनन्द स्वामी ।
७ ईश्वरोपासना—पं० रामचन्द्र जी देहलवी ।
८ कल्याणी बन—पं० गणेशदत्त 'इन्द्र' ।
९ आर्यों का आदि देश—काशी नाथ जी शास्त्री ।
१० धर्म और अधर्म—पं० रामचन्द्र देहलवी ।
११ स्वामी श्रद्धानन्द—रामगोपाल विद्यालंकार ।
१२ तत्ववेत्ता दयानन्द—स्वामी श्रद्धानन्द जी ।
१३ पं० लेखराम—रामगोपाल जी विद्यालंकार ।
१४ सीता माता—सरस्वती देवी 'प्रभाकर' ।
१५ गौ माता—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
१६ दयानन्द दिग्विजय—श्री हरिशंकर जी शर्मा काव्यरत्न
१७ चोटी का महत्व—पं० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री ।
१८ गुरु विरजानन्द—रामगोपाल विद्यालंकार ।
१९ मांस खाना छोड़ दो—पाथथा गोरस ।
२० मर्यादा पुरुषोत्तम राम—प्रहलाद 'प्रभाकर' ।
२१ वेश सुधार होली—अंगनलाल आर्य ।
२२ मूर्तिपूजा विचार—महर्षि दयानन्द ।
२३ भक्ति के लाभ—आचार्य प्रियव्रत ।
२४ आर्य समाज के उद्देश्य—जगदीशचन्द्र ।
२५ वेदमाता ।
२६ श्रद्धामाता ।
२७ धरती माता ।
२८ धर्म की रक्षा करो—ब्र० प्रभुदत्त जी ।
२९ मनुष्य के कर्तव्य—म० नारायण स्वामी ।
३० सत्संग भजन ।
३१ ऋषि दयानन्द कृत वेदभाष्य का महत्व ।
३२ गोपाल दयानन्द ।
३३ भक्तिवाद की रूपरेखा ।
३४ वैदिक भक्तिवाद ।
३५ अंग्रेजी शिक्षा से हानि ।
३६ सत्य की महिमा—स्वामी सर्वदानन्द ।
३७ आर्य समाज की उन्नति का साधन श्री लालचन्द जी
३८ श्यामाप्रसाद मुकर्जी—श्री प्रेमचन्द ।
३९ वैदिक काल में तोप बन्दूक—शिव पूजन सिंह ।
४० पतिव्रत धर्म—एक विदुषी महिला ।
४१ ब्राह्मण समाज और मूर्ति पूजा—राजेन्द्र जी ।
४२ ईश्वरोपासक दयानन्द—भगवत शरण बी. ए. ।
४३ ईश्वरावतार—स्वामी नित्यानन्द जी ।
४४ कर्मयोगी श्री कृष्ण—प्रेमचन्द ।
४५ ईसाइयों का भयंकर षड़यन्त्र ।
४६ सामाजिक व्यवहार—श्री लालचन्द जी ।
४७ शिक्षा का उद्देश्य—श्री पूर्णचन्द जी ।
४८ ब्रह्मचर्य—जगदीशचन्द्र जी विद्यार्थी ।
४९ वर्ण व्यवस्था—स्वामी दर्शनानन्द ।
५० कर्मव्यवस्था " "
५१ वेदज्ञान—विष्णु दयाल जी ।
५२ तुलसी रामायण और आर्य समाज ।
५३ सत्य की खोज—काशीनाथ शास्त्री ।
५४ मुर्दा क्यों जलावें—प्रेम शरण जी ।
५५ स्वामी दयानन्द का उद्देश्य—स्वामी दर्शनानन्द ।
५६ स्वामी दयानन्द का लक्ष्य— "
५७ ब्राह्मण समाज और मृतक श्राद्ध—पं० राजेन्द्र जी ।
५८ श्रेय और प्रेय—प्रि. नित्यानन्द जी एम. ए. ।
५९ सच्ची पूजा—स्वामी सर्वदानन्द जी ।
६० झांसी वाली रानी ।
६१ महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त-रविवर्मा सि. शास्त्री ।
६२ जीवन की समस्यायें—पं० रामचन्द्र देहलवी ।
६३ देवताओं की कहानी—कैलाश बिहारी ।
६४ रोटी और कपड़ा—प्रेमकुमार पाण्डेय ।
६५ धूम्रपान— " "
६६ सिनेमा और हम— " "
६७ दयानन्द कौन—देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ।
६८ कृण्वन्तोस्वयमार्यम—प्रेमकुमार पाण्डेय ।
६९ चाय भयंकर विष—जगदीश चन्द्र ।
७० मुझे मेरा धर्म क्यों प्यारा है—ज. विद्याथी
७१ ईश्वर सब जगह है—विष्णु दयाल जी ।
७२ ईश्वर में अविश्वास क्यों—रामचन्द्र देहलवी ।
७३ चरित्र निर्माण—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
७४ यज्ञोपवीत महत्व—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
७५ सूर्य और चन्द्र ग्रहण—हरिदेव शास्त्री ।
७६ नास्तिकों को सन्देश—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
७७ वैदिक धर्म ही क्यों—हरिदेव शास्त्री ।
७८ विद्यार्थी और सदाचार—पं० रामचन्द्र देहलवी ।

गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क, देहली—६

कृषि सम्बन्धी देहात-सुधारक पुस्तकें

१. आधुनिक कृषि विज्ञान ६)
२. आलू की खेती ॥।)
३. टमाटर क
४. गोभी की
५. जीरा, धनि
अजवायन
६. तरकारियों
७. अच्छे बीज
८. अच्छी खाद २॥)
९. कपास की खेती १)
१०. फूल फुलवारी २।)
११. गन्ने की खेती ॥।)
१२. धान की खेती १॥)
१३. सन्तरे की बागवानी २॥)
१४ आम की बागवानी ३)
१५. तिलहन की खेती ॥।=)
१६. सोयाबीन खिसारी ।)
१७. खेती की तैयारी २।)
१८. फसल रक्षक औषधियां २।)
१९. फलव्याधियों की रोकथाम १॥)
२०. उन्नत सिंचाई २)
२१. भारतीय कृषि कहावतें ४)
२२. गेहूं की खेती ३)
२३. लाख की खेती ॥।=)
२४ प्याज खेतीकी खेती १)
२५. जौ की खेती ॥।=)
२६ मेंहदी की खेती ॥।)
२७. नीबू सन्तरा माल्टा २)
२८. मूंगफली की खेती १)
२९. मिर्च की खेती १)
३०. बीज की तैयारी १॥)
३१. ममालों की खेती २)
३२. तम्बाकू की खेती ॥)
३३. पपीते की खेती १॥)
४०. ट्रैक्टर प्राइमर १।)
४१. पशुओं का इलाज ६)
४२. पोल्ट्री फार्मिंग ४)
४३. कमर्शियल पोल्ट्री ४)
४४. पोल्ट्री सर्जन ४)
४५. फल संरक्षण २॥)
४६. मकई (मक्का) खेती १।)
४७ खीरा तरबूज की खेती १।)
४८. चाय की बागवानी १।)
४९. अफीम की खेती १॥)
५०. किसानी लोक कथायें २।)
५१. कलम पैवन्द लगाना १॥)
५२. हल्दी की खेती १॥)
५३. कत्थे की खेती १॥)
५४. पान की खेती १॥)
५५. चने की खेती १।)
५६. बाजरे की खेती १॥)
५७. मटर की खेती १॥)
५८. हैण्डबुक ऑफ पोल्ट्री १०)
५९. खेती और बागवानी ३)
६०. तोरी लौकी की खेती १॥)
६१. खीरा ककड़ी तरबूज खरबूजे की खेती १।)

१ जगदीश चन्द्र जी विद्यार्थी
C/o मुरारी ब्रादर्स 8. E कमलानगर
Delhi.

गवर्नमेंट एग्रीकल्चर इन्स्टि... यतों, स्कूललाइब्रे रियों। पुस्तकालयों वेसिक ट्रेनिंग सेन्टरों तथा अधिकांश संस्... संस्थाओं में खरीदा जाने वाला कृषि सम्बन्धी ६१ पुस्तकों का सेट...

वैज्ञानिक ढंग से अधिक खेती करके सरकारी इनाम प्राप्त करें

फलों की खेती (फलदार बागवानी) ले० राजेश गुप्त जिसमें हर प्रकार के फलदार पेड़ों जैसे आम, अमरूद, शहतूत, लोकाट, सतरा आदि सैकड़ों फलों के पेड़ों को लगाने के तथा उनसे अधिक फल पैदा करने के साइन्टिफिक ढंग लिखे गए हैं. मू० ३।) साढ़े तीन रु० डाक व्यय १)

अपने बंगले, कोठी, गुवाड़, खेत इत्यादि में हरी और ताजा सब्जी पैदा करें

शाक भाजी तरकारी की खेती

(लेखक राजेश गुप्त)

जिसमें देशी तथा विदेशी दोनों प्रकार की तरकारियों का बोना, जमीन की जाँच करना खाद से ज्यादा फसल तैयार करना बिना मौसम की तरकारी पैदा करन के साइन्टिफिक नियम फसलव्याधियों की रोक थाम के तरीके और हरप्रकार की सब्जी जैसे आलू, अदरक, अरबी, टिन्डे, बाकला, सीताफल, (पेठा) बन्दगोभी, मूली, बैंगन, भिन्डी, तोरी, घिया, प्याज, पालक, पोदीना टमाटर, धनियाँ खीरा, ककड़ी, तरबूज, फूल गोभी, चकन्दर, खरबूजा, जीरा, सिंघाड़ा, सौंफ, अजवायन, सेम शरदा शलगम, सकरकन्दी, करेला आदि सब्जी बोना और उसके लिए पूरी बातें इस पुस्तक में पढ़कर चाहे चाहे आप खेती करिये या माली को समझाइये।

मूल्य केवल ३॥। डाक व्यय १)

सावधान! जमीन सोना उगल रही है

आधुनिक कृषि विज्ञान

खेती बाड़ी, फल-फुलवाड़ी तथा बागवानी पर ७५२ पृष्ठों का ग्रन्थ (ले.- रामेश्वर अशांत)

इसमें अनाज दलहन, तिलहन फूल-फुलवाड़ी साग-भाजी तथा फलों की बागवानी के हर विषय जैसे जताई, सिंचाई, खाद व फसल संरक्षण आदि सभी आवश्यक बातों को अगणित छोटे-बड़े सुन्दर चित्रों द्वारा समझाया गया है यह भारत के किसान को मालदार बनाने के लिए तथा अधिक फसल उपजा कर सरकारी इनाम प्राप्त कराने वाली खोजपूर्ण पुस्तक है। मूल्य ६) छः रुपये डाक व्यय १॥) पृथक।

केवल डाक खर्च वास्ते चार आने (पच्चीस नये पैसों) का टिकट लिफाफे में भेजकर **हजारों पुस्तकों का बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगायें**

देहाती पुस्तक भण्डार (V. P.) चावड़ी बाजार दिल्ली फोन नं०- २००३०

नोट—पुस्तक खरीदते समय हमारा पता अवश्य देखलें।

गोविन्दराम हासानन्द द्वारा सम्पादित मुद्रक और प्रकाशक जय्यद प्रेस, बल्लीमारान देहली में छपवाकर वेदप्रकाश कार्यालय, नई सड़क, देहली से प्रकाशित किया।

ओ३म्

वेद प्रकाश

"वेदप्रकाश" मासिक की सेवा
और
साहित्य प्रकाशन का आदर करें

वेद प्रकाश का प्रकाशन गत ६ वर्ष से हो रहा है। आरम्भ से ही इसका वैदिक सिद्धान्तों के प्रचारार्थ उत्तम उत्तम पुस्तकों और ट्रैक्टों को प्रकाशित व प्रचारित कर समाज सेवा का लक्ष्य रहा है। तदनुसार आज तक प्रायः ८० ट्रैक्ट (जिनकी सूचि इसी अंक के अन्त में देखें) तथा चार वृहद ग्रन्थ विशेषांक के रूप में प्रकाशित किये। ट्रैक्ट तो समाजों के उत्सवों आदि पर प्रचार के लिए उपयोगी सिद्ध हुए हैं। तथा समाजें हजारों की संख्या में मंगा मंगा कर इससे प्रचार करती हैं।

भविष्य में भी इसी प्रकार प्रचार सामग्री तथा उपयोगी साहित्य प्रकाशन की नीति रहेगी।

इन सब कार्यों के लिए आवश्यकता है आप आर्य बन्धुओं की तथा समाज के सहयोग की। आशा है आप स्वयं तथा अपने मित्रों को वेद प्रकाश का ग्राहक बना कर हमें सहयोग देंगे। वेद प्रकाश का वार्षिक मूल्य २॥) है। वेद प्रकाश पहुंचते ही वार्षिक चन्दा तथा विशेषांकों में से जो भी आप चाहें रियायती मूल्य में मंगा सकते हैं। विशेषांकों की सूचि दूसरे पृष्ठ पर अंकित है।

भवदीय—गोविन्दराम हासानन्द

वेदप्रकाश कार्यालय, नई सड़क देहली।

हैजे इत्यादि भीषण संक्रामक रोगों से बचने के लिए

आर्ष प्रणाली द्वारा वैदिक रीत्यनुसार शास्त्रोक्त विधि से तय्यार की हुई रोग एवं कीटाणु नाशक आनंद फार्मेसी द्वारा निर्मित

शुद्ध हवन सामग्री
का प्रयोग कीजिये

यह सुगंधित हवन सामग्री देव पूजन के लिए पवित्र एवं उपयोगी है। इससे वायु शुद्ध होती है और दूषित रोगों के कीटाणु नष्ट होते हैं। उपयोग करने से सारा गृह सुवासित हो जाता है। विवाहों, यज्ञों, पर्वों, सामाजिक अधिवेशनों में व्यवहार करने के लिए सर्वोत्तम है नमूना मुफ्त मंगाइए। विस्तृत योजना नुसार शास्त्रोक्त प्रमाणित हवन सामग्री तय्यार करने का भारतवर्ष का सबसे बड़ा कारखाना

आनन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी
स्थान व पो० भोगांव, जिला-मैनपुरी।

R E कर्ण रोग नाशक तैल G D

कान की सभी बीमारियों से छुटकारा पाने के लिए 'कर्ण रोग नाशक तेल' प्रयोग करें। इससे कान बहना, शब्द होना, कम सुनना, दर्द होना, खाज आना, सांय-सांय होना, मवाद आना, सीटी सी बजना, आदि शीघ्र आराम हो जाते हैं एक बार अवश्य मंगाकर परीक्षा करके देखिए। मूल्य १ शीशी १।), पैकिंग पोस्टेज १॥), तीन दर्जन पर खर्चा फ्री और १५ शीशी कमीशन में अधिक देकर एजेन्ट बनाते हैं। कुछ निश्चित समय तक, चार शीशी एक साथ मंगाने से खर्चा फ्री, शीघ्रता कीजिये।

पता—कार्यालय 'कर्णरोग नाशक तैल'
२६३ संतो मालन मार्ग
नजीबाबाद (उ० प्र०)
NAJIBABAD U. P.

वेदप्रकाश के चार अमूल्य विशेषांक रियायती मूल्य में

१. सचित्र दयानन्द ग्रन्थ संग्रह

जिसमें ऋषि की आत्मकथा सहित २० पुस्तकों का संग्रह है, प्रत्येक पुस्तक के साथ पुस्तक का रचना काल तथा परिस्थितियों का इतिहास भी है। साथ में ऋषि के ७ असली फोटो चित्र भी हैं सजिल्द ग्रन्थ का मूल्य ४॥) रियायती मूल्य ३॥) है।

२. सचित्र वाल्मीकि रामायण

धारावाही हिन्दी में मूल संस्कृत सहित प्रक्षिप्त भाग तथा अनावश्यक कथाओं को निकालकर आर्य-मर्यादानुकूल ग्रन्थ का संकलन किया गया है लगभग ६००० श्लोकों के साथ सरल भाषा में सजिल्द सुन्दर पुस्तक मूल्य १२) रियायती मूल्य ६) रु० मात्र है।

३. सृष्टि का इतिहास

आर्य पथिक पं० लेखराम कृत 'त्वारिखे दुनिया' का हिन्दी अनुवाद। जिसमें सृष्टि उत्पत्ति वेदादि सत्शास्त्रों का समय निर्धारण करते समय जो आधुनिक इतिहासकार, पाश्चात्यों का अनुकरण कर भूल करते हैं उनके लिए यह उपयुक्त मार्ग प्रदर्शक उत्तम पुस्तक है मूल्य २ रियायती मूल्य १॥)

४. बृहदारण्यक कथा माला

बृहदारण्यक उपनिषद् ब्राह्मण ग्रन्थ का एक भाग है, उसकी कथाओं के पाठ और श्रवण से वैदिक संस्कृति का अच्छा ज्ञान प्राप्त होगा पढ़ने योग्य उपयोगी पुस्तक है मूल्य ३) रियायती मूल्य २) है। प्रत्येक वेदप्रकाश के ग्राहकों को रियायती मूल्य में। डाकखर्च अलग।

गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क देहली

॥ ओ३म् ॥

वेद प्रकाश

सम्पादक—गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष—७ : भाद्रपद २०१५	सितम्बर १९५८ : वार्षिक मूल्य २॥)
अंक—२ : दयानन्दाब्द १३४	भाद्रपद १८८० शाके : विदेशों से ५ शि०

वेद सुधा

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ॥ऋ१०।१९१।३॥

पदानि—समानः । मन्त्रः । संऽइतिः । समानी । समानं । मनः । सह । चित्तं । एषां ।
समान । मन्त्र । अभि । मन्त्रये । वः । समानेन । वः । हविषा । जुहोमि ॥३॥

अन्वयः—मन्त्रः समानः । समितिः समानी । मनः समानम् । एषां चित्तं सह । वः समानं मन्त्रं अभिमन्त्रये । वः समानेन हविषा जुहोमि ।

अर्थ—आप सब का (मन्त्रः) विचार (समानः) सब के लिए समान हो, आप सबकी (समितिः) सभा (समानी) सब के लिए समान हो, आप सबका (मनः समानं) मन समान हो, (एषां चित्तं) इन सब का चित्त (सह) साथ साथ, समान हो, (वः) आप सब के लिए (समानं मन्त्रं) एक ही समान विचार (अभि मन्त्रये) में निश्चिय पूर्वक देता हूँ । (वः समानेन हविषा) आप सब को में समान, एक ही हवि द्वारा (जुहोमि) हवन करनें का आदेश देता हूं ।

भावार्थ—आप सब का विचार सबके लिए एक जैसा हितकारी हो, कभी विरोधी न हो; आपकी सभामें सबकी समभाव सदा रहे, विषमता कभी न हो; आपके मन में यही समभाव सदा रहे, कभी विषम भाव न उठे, आप के साथ के लोगों का चित्त एक ही समान हितकारी विचार से भरा हो आपस में मतभेद होकर पक्ष भेद न बनें; आप सबको इस बात से मैं प्रेरित करता हूँ, ऐसे ही आप भी सबको एक ही विचार की प्रेरणा करते रहें, विरोध न खड़ा करें, आपके पास यज्ञ के समान साधन उपस्थित हों और सब के सब मिलकर एक ही यज्ञ में समिलित हों और सब मिलकर यज्ञ की पूर्णता करें ।

May your (मन्त्रः) idea be (समानः) common, your (समितिः) assembly be (समानी) common, your (मनः) mind be (समानं) common, so may (एषां) their (चित्तं) thoughts (समानं) be united. A (समानं) common (मन्त्रं) purpose (अभिमन्त्रये) do I lay before (वः) you, ye therefore (जुहोमि) worship with (वः) your (समानेन) common (हविषा) oblation.

एक करोड़ वर्ष पहले का वनमानुष मिला

मानव की तरह के किसी जीव का चार फुट लम्बा एक कंकाल बसी ने लो के पहाड़ी क्षेत्र की एक कोयला खान में मिला है। विश्वास किया जाता है कि अब तक मिले कंकाल में यह कंकाल का सबसे पुराना रहा होगा।

यह कंकाल 'ओरियोपिथीकस' का है जिसका अर्थ यूनान में पहाड़ा वनमानुष होता है। मानव शरीर शास्त्रियों का कहना है कि यह वनमानुष कम से कम एक करोड़ वर्ष पूर्व रहा होगा।

इस वनमानुष की खोज तीन राष्ट्रों के वैज्ञानिकों के एक दल ने दो वर्ष से अधिक सतत् परिश्रम के वाद की है। इस दल के नेता बेसल विश्वविद्यालय (स्वीटजरलैंड) के संग्रहाध्यक्ष डा० जोहान्स हर्जलर हैं। यह खोज मानव की उत्पत्ति के सम्बन्ध में एक नये सिद्धान्त की प्रामाणिकता सिद्ध करने की दृष्टि से की गयी थी। इस सिद्धान्त का प्रतिपादन प्रो. हर्जलर ने किया जिसका रहस्योदघाटन उन्होंने ढाई वर्ष पूर्व न्यूयार्क में वैज्ञानिकों की एक सभा में किया था।

डा. हर्जलर नें इटली के विभिन्न संग्रहालयों में वनमानुष के २६ भागों पर अध्ययन किया था और वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि यह वनमानुष ही का कंकाल होगा।

प्रो. हर्जलर के सिद्धान्त ने वैज्ञानिक जगत में एक खलबली मचा दी। पहले विचार था कि मानव की उत्पत्ति पृथ्वी पर दस लाख वर्ष पूर्व हुई। किसी ने इस बात की कल्पना भी नहीं की थी कि ऐसा भी कोई जीव एक करोड़ वर्ष पूर्व रहा होगा जिससे की उत्पत्ति सिद्ध हो सके।

यूनानी वनमानुष का कंकाल सात अगस्त को दो खनिकों को रात के दो बजे ६०० फुट नीचे कोयलों की एक खान में मिला। यह कंकाल पूरा है लेकिन इसकी खोपड़ी कोयले की पर्त से ढकी हुई है जिसको अब साफ किया जा रहा है।

डा. हर्जलर ने बताया कि वनमानुष की लम्बाई ५२ व ५६ इंच के बीच में है। उनका कहना है कि इस नयी खोज से डार्बिन का सिद्धान्त ही बदल जायेगा।

आर्य समाज के विद्वान् आरम्भ से ही डार्विन के मत का खण्डन करते रहे हैं। धीरे २ यूरोपीय विद्वान् भी इसका खण्डन करते जा रहे हैं। आज से ६५ वर्ष पूर्व श्री पं० लेखराम जी आर्य पथिक ने एक ग्रन्थ

सृष्टि का इतिहास

रचा था। उसमें उन्होंने सृष्टि उत्पत्ति मानव-उत्पत्ति का काल निश्चित किया है। काल निश्चित करते समय उन्होंने अपने प्राचीन ग्रन्थों के उद्धरणों के साथ कई यूरोपीय विद्वानों की भी सम्मतियों के आधार पर इस विषय पर एक सफल प्रकाश डाला है। धीरे धीरे सारा संसार आर्य समाज के सिद्धान्तों को मानने की ओर अग्रसर हो रहा है।

यह ग्रन्थ रत्न पिछले वर्ष वेद प्रकाश के विशेषांक में प्रकाशित हुआ था। जिन ग्राहकों ने इसका संग्रह नहीं किया है वे शीघ्र ही इसका मूल्य भेजकर मंगालें।

मूल्य २) वेदप्रकाश के ग्राहकों से १॥) रियायती मूल्य लिया जा रहा है।

गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क, देहली।

असुर कौन है ?

[श्री पं० मनोहर जी विद्यालंकार, देहली]

ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमानाः असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति ।
परा पुरो निपुरो ये भरन्त्याग्निष्टांल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात् ॥
प्रजापतिः ऋषिः । कव्यवाहनोऽग्निः—देवता । यजुः २ ३० ।

समाज के व्यवहार का आधार सत्य या यथार्थता है । जो जैसा है, उसे वैसा ही दिखना चाहिये । यदि मनुष्य अन्दर और बाहर से एक सा है, जैसा सोचता है, वैसा ही बोलता है या जो कहता है वही करता है—तो वह चरित्रवान् और आदर्श समझा जाता है । क्योंकि इस तरह के मनुष्यों के समाज में, व्यवहार सरल और सीधा हो जाता है । इसके विपरीत असत्य या अयथार्थ व्यवहार के कारण समाज में रहना बड़ा मुश्किल तथा जटिल हो जाता है । उदाहरण के लिये यूरोप में एक दाम की प्रथा वाले देश में खरीद बेच में व्यर्थ समय नष्ट नहीं होता । किन्तु सौदेबाजी की आदत वाले पूर्व के देशों में किसी भी चीज को खरीदने में दोनों का समय बर्बाद होता है और फिर भी मन में यही रहता है कि मैं ठगा तो नहीं गया ।

लेकिन कुछ लोग अन्दर से कुछ होते हैं, बाहर से अपने को कुछ प्रकट करते हैं । वास्तव में तो दूसरों के परिश्रम पर जीते हैं, लेकिन प्रकट यह करते हैं कि हम स्वयं कमाई करके अपना धारण कर रहे हैं । इस तरह लोग वास्तव में असुर होते हैं ।

ये असुर लोग अपने स्वार्थ के वश होकर दूसरों को हानि पहुँचा कर समाज के हित की उपेक्षा करके अधर्म कार्यों को करने में भी नहीं हिचकते । ये लोग अच्छे या गुणी व्यक्तियों से विमुख रहते हैं, और दुर्जन निकृष्ट स्वभाव के लोगों का पालन करते हैं । उनका पक्ष लेते हैं । इसका परिणाम यह होता है कि सारे समाज में अव्यवस्था फैल जाती है । धोखा, बेईमानी, रिश्वत, भ्रष्टाचार या परावलम्बिता के आधार पर होने वाले आराम और आमदनी को देखकर सत्यव्यवहारी तथा धर्म भीरु लोगों का मन भी डांवाडोल हो जाता है । वे भी इन अनुचित उपायों का अवलम्बन करने लगते हैं और इस प्रकार सर्वत्र भ्रष्टाचार का बोलबाला हो जाता है । बिल्कुल सत्यवादी या सत्याचारी व्यक्तियों का मिलना कठिन हो जाता है ।

ऐसे समय में लोक व्यवहार को ठीक मार्ग पर रखने का एक ही मार्ग है कि समाज या सरकार का नेता इस प्रकार के असुर व्यक्तियों को इस लोक से परे दूर धकेल दे । अर्थात मृत्यु दण्ड दे दे—देश निकाला दे दे या समाज बहिष्कृत कर दे । यदि उनको उचित अवसर पर दण्ड न दिया जाए तो अव्यवस्था अपनी चरम सीमा पर पहुँच कर क्रान्ति का रूप धारण करती है और नेता को ही परे धकेल कर नए नेता का निर्माण करती है ।

मन्त्र से निम्न बातें ध्वनित होती हैं—

१. निम्न व्यक्ति असुर श्रेणी में आते हैं—

    क. जो अपने स्वरूप को छोड़ कर दूसरे रूपों को धारण किये रहते हैं ।

    ख. जो असुर भोजन करते हुए दिखाते हैं कि हम पितृ भोजन कर रहे हैं ।

    ग. परावलम्बी होते हुए अपने को स्वावलम्बी प्रकट करते हैं ।

घ. अपने स्वार्थ के निमित्त अधर्म कार्य करते हैं।

ङ. निकृष्ट और दुष्ट स्वभाव वाले लोगों का पालन पोषण करते हैं।

२. प्रजापति—सन्तान, सेवक तथा प्रजा का पालन—तथा रक्षा करने वाले—पिता, स्वामी तथा राजा का कर्तव्य है कि वह अपने आश्रितों की असुरों से सदा रक्षा करे। असुरों से उन को सदा सचेत करता रहे।

३. अग्नि=नेता—परिवार, समाज तथा राष्ट्र के पिता, नेता या राजा का कर्तव्य है कि वह इस प्रकार के असुर को अपने घर से बाहर कर दे, पारिवारिक अधिकारों से वंचित कर दे, नेता को चाहिए कि वह ऐसे व्यक्ति को अपने समाज से बहिष्कृत कर दे। और राजा को चाहिए कि वह ऐसे व्यक्ति को देश निकाला दे दे, या मृत्यु दण्ड द्वारा इस लोक से परलोक में धकेल दे।

शब्दार्थ—(ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमानाः) जो अपने रूपों को छोड़कर (असुराः सन्तः) असुर होते हुए (स्वधया चरन्ति) स्वधा-पितृ भोजन या अपनें परिश्रम से कमाकर रहने वाले व्यक्तियों की तरह का आचरण करते हैं। तथा (परापुरः) स्वार्थ वश अधर्म कार्यों को करने वाले और (निपुरः) निकृष्ट दुष्ट स्वभाव वाले व्यक्तियों का (भरन्ति) भरण पोषण करते हैं, पक्ष लेते हैं (तान्) इन मनुष्यों को (अग्निः) नेता (अस्मात् लोकात्) इस लोक से (प्रणुदाति) परे धकेल देता है। (परापुरः) परागतानि स्व सुखर्थान्यधर्म कार्याणि पिपुरति ते (निपुरः) निष्कृटान् दुष्ट स्वभावन् पिपुरति ते। इति स्वामिदयानन्दः।

—●—

ब्रह्मचर्य और श्रद्धा

मैंने सौन्दर्य ढूंढा मुझे वह मिला
मैंने देखा वह रूप में ठहरा हुआ।
मैंने रूप के धाम का पूछा पता
मुझे यौवन उस का सुनाम मिला।
मैंने यौवन के मित्र की पूछ की
ब्रह्मचर्य के सङ्ग वह बैठा मिला।
ब्रह्मचर्य की अम्बा की जब खोज की
श्रद्धा की गोदी में हंसता मिला।

—श्री आत्मानन्द विद्यालङ्कार नई देहली

ऋषि ऋण

[श्री गनपति जी—श्री श्रीदयानन्द धाम योगाश्रम शकूर बस्ती देहली]

धर्म शास्त्रों में तीन ऋणों का उल्लेख है जिन से उऋण होना प्रत्येक आर्य का परम कर्तव्य है पहिला ऋण ऋषि ऋण है शास्त्र के अध्ययन अध्यापन से इस ऋण से द्विज मात्र उऋण हो पाता है परन्तु आज हम स्वाध्याय से विमुख होते चले जाते हैं आज ऋषि ग्रन्थों का—शास्त्रों का पठन पाठन लोप होता जा रहा है आर्ष ग्रन्थ मिट रहे हैं आज हमारे में अपनी धर्म पुस्तकों के प्रति श्रद्धा नहीं दीख पड़ती तो हम ऋषि ऋण से कैसे उऋण हो सकेंगे हम अपने को ऋषियों के फर्ज से कैसे छुटकारा दिला सकेंगे ? मुसलमान के घर में जब शादी होती है वह २००) रु० की इस्लामी किताबें खरीद कर अपने भाइयों में मुफ्त बाँटता है मुसलमान शादी के मौके पर अपनी मजहबी किताबें भेंट करता है इस्लाम का प्रचार करता है परन्तु हमारे घरों में जब शादियां होती हैं हम गन्दे रिकार्ड बजवाकर अपने धर्म का अपने धन का व्यर्थ नाश करते हैं हम बिजली पर अति अधिक व्यय करते हैं हम अपनी पुत्री को रेड़ियो देते हैं गन्दे रिकार्ड देते हैं फैशन की गैर जरूरी चीजें देते हैं हमें चाहिए हम दहेज में आर्य ग्रन्थ दें रामायण दें वेद दें वेदाँग दें उपनिषदें दें दर्शन और धर्म शास्त्र दें जिन से परिवारों में धर्म की ज्योति जगे जीवन का रुख सदाचार की ओर हो जाए सुख सम्पति बढ़े घरों में ऋद्धि सिद्धि और समृद्धि हो जाए घर स्वर्गधाम बन जाए परन्तु हम ऐसा नहीं करते आज विवाह बन्धन शिथल हो रहे हैं घरों में कलह बढ़ रहा है आर्य समाजों में कार्य कर्ता परस्पर नहीं मिलते द्वेष ईर्षा की भावनाएं बल पकड़ रही हैं सेवा के स्थान में पदों का प्रेम सवार हो रहा है इस का क्या कारण है ? आप को मानना पड़ेगा स्वाध्याय का अभाव हो गया है पहले युवा वृद्ध स्वाध्यायी थे आर्य ग्रन्थों के पाठ में प्रीति थी वृद्ध लोग अष्टाध्यायी तक पढ़ते थे सत्यार्थ-प्रकाश पढ़ते थे मनुस्मृति और योग दर्शन का पाठ करते थे आज अखबारें पढ़ कर अपने आप को कृतार्थ समझ लेते हैं पहले शास्त्र चर्चाएं होती थीं आज गन्दी चर्चाएं होती हैं लोगों की निन्दा स्तुति में समय नष्ट किया जाता है जब से हमने स्वाध्याय त्यागा है हमारा रास्ता बदल गया है हमने उल्टे रास्ते पर पांव रख लिया है आओ हम ऋषि ऋण उतारें ऋषियों के ग्रन्थ लेकर घर में रखें उन का पाठ करें उनका प्रवचन हो। मैं श्रीमान् गोविन्दराम हासानन्द को बधाई देता है जिनके प्रबल परिश्रम से आज आर्य ग्रन्थों के दर्शन बड़ी सुगमता से हो सकते हैं वह विपरीत परिस्थितियों के होते हुए भी धर्म ग्रन्थों का उत्तरोत्तर प्रकाशन करते चले जाते हैं यह इन की सच्चे आर्यत्व की निशानी है अन्य पुस्तक विक्रेता नावल छपवा कर अश्लील पुस्तकें प्रकाशित कर के माला माल होते चलें जाते हैं वहाँ वह महानुभाव आर्य ग्रन्थों की लग्न में लगे हुए ऋषि दयानन्द के आदेश का पालन करते चले जा रहे हैं और धन के लोभ में फंस कर अपना रास्ता नहीं त्यागते आज इनके प्रकाशनों के कारण हजारों नर नारियों के हृदयों में धर्म की ज्योति जग रही है हजारों भूले भटके नर नारी वैदिक धर्म में दीक्षित हो रहे हैं इनके प्रकाशन जहां आध्यात्मिक भावनाओं और धार्मिक विचारों से पूर्ण हैं वहाँ छपाई लिखाई भी अति सुन्दर तथा मनो मोहक है इस पर भी मूल्य बहुत सामान्य है मैं जब इन की पुस्तकों के मूल्य की तुलना थ्योसाफी की पुस्तकों के मूल्य से करता है अथवा श्री अरविन्द के प्रकाशनों से करता हूँ तो मुझे इन के प्रकाशन अत्यन्त ही सस्ते जान पड़ते हैं ऋषि ऋण में उऋण होने के लिये इन्होंने आर्य जनता का मार्ग सुगम कर दिया है

यह आर्य महानुभाव चिर जीवी हों इनका प्रकाशन विभाग आर्य जगत में अधिक २ चमके दमके और अद्वितीय हो और आर्य गण इनके प्रकाशन अपना कर अपने को ऋषि ऋण से उऋण कर सकने में समर्थ हो सकें यह मेरी हार्दिक भावना है।

इच्छानुसार सन्तानोत्पत्ति

भारतीय स्वतन्त्रता को अक्षुण्य व चिरस्थायी बनाने के लिये आज भारत को कर्मवीर, बुद्धिमान् व शौर्य सम्पन्न युवकों की आवश्यकता है। उस आवश्यकता की पूर्ति आपके ही हाथों में है।

किस प्रकार ?

यह जानने के लिये तथा अपने कर्तव्य से परिचित होने के लिये "इच्छानुसार सन्तानोत्पत्ति" पुस्तक मंगा कर अवश्य पढ़िये। पुस्तक पढ़ कर आप अनुभव करेंगे कि "पुत्र या पुत्री, धर्मात्मा या पापी, शासक या चोर, जितेन्द्रिय या व्यभिचारी, गौर या श्याम् वर्ण की ," सन्तान का निर्माण तथा वर्थकन्ट्रोल अपने ही हाथों में है।

क्या आप चाहते हैं कि आपकी सन्तान समाज में सम्मान को प्राप्त करें।

यदि हां ! तो उसके लिए प्रयत्न करना आपका कर्तव्य है।

वह किस प्रकार ?

यह जानने के लिए स्त्री व पुरुष दोनों के लिए पठनीय इस पुस्तक को आज ही मंगाइए।

इसकी महत्ता पढ़ने से ही विदित होगी।

नवदम्पति को भेंट देने योग्य अनुपम उपहार है।

मूल्य २॥) डाक व्यय पृथक।

प्राप्ति स्थानः—भगवान दास भूषन सरन

पत्रवाणिज्य, बाजार चौक मुरादाबाद।

गतांक से आगे

* धर्म नगरी *

[श्री मदनजित आर्य्य वैदिक धर्म विशारद फिरोजपुर शहर]

सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर एक मनोरञ्जक गाथा

प्रातः काल का सुन्दर समय था। यात्री ने अपने अतिथि के गृह में प्रातःकाल की दैनिक ईश वन्दना तथा यज्ञ हवन स्वाध्याय किया और अल्पाहार करके बाहर जाने की इच्छा से तैयार हो गया। उसकी आज बड़ी ही तीव्र इच्छा थी कि वह किसी गम्भीर विषय यथा जगत क्यों उत्पन्न हुआ, किसने पैदा किया और किस लिये दृश्य में आया इत्यादि पर विचार विनिमय करूं एतदर्थ वह आज अकेला ही इस धर्म नगरी के अष्टम द्वार की ओर चल पड़ा। थोड़ी दूर ही जाने पर उसको एक सुन्दर विस्तृत द्वार दृष्टि गोचर हुआ जिस पर यह स्थूलाक्षरों में लिखा हुआ था "सृष्टि उत्पत्ति, स्थिति, प्रलयादि विचार द्वार" इस द्वार के ऊपर अति सुलेखरूपेण वेद मंत्र खुदे हुये थे। जिनमें से ऐक का उल्लेख तो मैं यहां कर ही देता हूं।

ओ३म् इयं विसृष्टिर्यत आ बभूव यदि वा दधे यदि वा न यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्त्सो अंग वेद यदि वा न वेद ॥ ऋ १०।१२६। मंत्र १

हे मनुष्य। जिस से यह विविध सृष्टि प्रकाशित हुई है जो धारण और प्रलय करता है, जो इस जगत का स्वामी जिस व्यापक में यह सब जगत् उत्पत्ति स्थिति प्रलय को प्राप्त होता है। सो परमात्मा है उसको तू जान और दूसरे को सृष्टि कर्ता मत मान।

इस मंत्र को हमारा नायक यात्री बार बार मुग्ध रुपेण पढ़ता हुआ विस्मत सा हो रहा है। यद्यपि उस द्वार पर और भी बहुत से वेद मंत्र अंकित हो रहे हैं परन्तु वह इसी विचार में मग्न हैं, इतने में द्वार के पास एक जन समूह आता हुआ दिखाई दिया। कौतुहल वश उसने भी उसी भीड़ को देखना आरम्भ कर दिया। देखता क्या है कि बड़े २ दिग्गिज पंडित विद्वान अपने २ शिष्यों से कई २ पुस्तकों के बस्ते उठवाते हुये आ रहे हैं। यात्री ने पूछा आज क्या कोई शास्त्रार्थ यहाँ होगा, उत्तर मिला हाँ आज यहां अत्यन्त अभुत पूर्व वाद विवाद होगा देश के दोनों पक्षों के विद्वान पधार रहे हैं। और आज का विषय भी अति मनोरंजक होगा अर्थात् ईश्वर, जीव, प्रकृति के अनादित्व पर पहले विचार होगा और उसके साथ २ सृष्टि की उत्पत्ति पर भी विवाद चलेगा यात्री और वह सारा जन समूह एक अति विशाल मंडप की ओर चले गये वहां अति उत्तमता से राज्य की ओर से प्रबन्ध किया हुआ था अति मनोहारी दृश्य था एक ओर देवियों के बैठने का स्थान था और शास्त्रार्थ करने वाले दोनों पक्षों के मंच तो अति दीप्यमान थे। एक अति प्रभाव शाली व्यक्ति न्यायाधीश के रूप में बीच मे विराजमान थे।

सब से पहले ही यह प्रश्न पूछा गया कि यह जगत ईश्वर से बना है या किसी और से। श्री पं० वेद भानुजी इसका उत्तर देने के लिये खड़े हुए कि भाइयों एक बात ध्यान से पहले ही सुन लो कि सृष्टि के आदि में प्रभु द्वारा वेद ज्ञान के अनुसार हम यह स्वीकार करते हैं कि संसार में तीन वस्तु अनादि हैं ईश्वर जीव और प्रकृति जैसे ऋग्वेद में एक मंत्र आया है।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्ष परिषस्य जाते तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वल्यनश्नन्न्यो अभि चायशीति

परमात्मा और जीवात्मा दोनों चेतन सत्ताएं हैं और प्रकृति रूपी वृक्ष भी अनादि रूप से इन को आश्रय देता हुआ विद्यमान है। जीवात्मा संसार में आ कर कर्मों को करता है और ईश्वर उसके कर्मफलानुसार देता है। प्रभु इस सृष्टि का निमित्त कारण है उपादान कारण तो प्रकृति ही है। और वह भी जड होने के कारण से आप से आप न बन न विगड़ सकती है। जैसे मकान के भीतर सीमेंट ईंट, लकड़ी आदि सब सामान मौजूद है परन्तु मिस्त्री चेतन कार्यकर्त्ता न होने से वह जड पदार्थ कभी भी कुछ नहीं बना सकेंगे अतः सिद्ध हुआ कि बिना जीव और ईश्वर के कोई चीज स्वयं अपने आप बन नहीं सकती। इतने पर एक वृद्ध पण्डित उठ खड़े हुये और नम्र भाव से कहने लगे कि महाराज हमें इसमें एक शंका है कि हम तो यही सुनते आये हैं कि ब्रह्म ही केवल एक अनादि सत्ता है और उस से भिन्न और कुछ भी नहीं। और इसमें मुण्डकोपनिषद् का प्रमाण भी है कि यथोर्णनाभिः सृजते गृहणते च। अर्थात् जैसे मकड़ी बाहर से कोई पदार्थ न लेते हुये अपने में से ही तन्तु निकाल जाला बना कर आप उसमें रहतो है इसी भांति ब्रह्म भी अपने में से जगत को बना कर आप स्वयं उस में क्रीड़ा करता रहता है। इस पर पं० वेद भानु जी ने अति प्रेम से कहना आरम्भ किया कि यदि तुम्हारी बात मान ली जावे तो इस में यह दोष आयेगा कि ब्रह्म के सदृश ही यह सारा जगत होना चाहिये परन्तु हम प्रति दिन देखते है कि यह संसार के पदार्थ उत्पन्न होते हैं बढ़ते है और फिर नष्ट हो जाते हैं और इस जगत में भी जड़त्वादि भी गुण दृष्टि गोचर होते हैं क्या ब्रह्म में भी जड़त्व है। क्यों कि जिस वस्तु से कोई चीज बनाई जावे उसमें उसके गुण धर्म अवश्य आजाते हैं। और जो आपने मकड़ी का दृष्टान्त दिया वह भी तुम्हारे मत के प्रतिकूल है अर्थात मकड़ी प्रकृति तथा जीव दोनों के संयोग से ही बनती है उसका जो जड़ भाग वाला प्राकृतिक शरीर है उसमें से जाला आदि निकलता है एतदर्थ यदि हम ब्रह्म को भी जड़ प्रकृति संयुक्त मानलें तो जो वस्तु मिलती है उसका वियोग भी एक न एक दिन अवश्य ही हो जाता है। अतः सिद्ध हुआ कि परमात्मा ने जीव और प्रकृति दोनों अनादि पदार्थ से ही इस सृष्टि का निर्माण किया। और यह उस प्रभु का स्वाभाविक गुण ही है कि जगत की उत्पत्ति करके सब जींवों को असंख्य पदार्थ देकर परोपकार करता हुआ अपने न्याय और दया के गुणों को सार्थक कर रहा है। परमात्मा निराकार होता हुआ भी अपने स्वभाविकी ज्ञान और क्रिया से इस साकार जगत का निमित्त कारण रुपेण निर्माण करता रहता है। बिना कारण के कोई कार्य नहीं हो सकता और जो केवल कारण रूप होते हैं उनका कारण भी नहीं होता जैसे सांख्य दर्शन मे लिखा है" "मूले मूला भावादमूलं मूलम्" मूल का मूल अर्थात् कारण का कारण नही होता। इस पर सब पण्डित गण सन्तुष्ट हो गये पुनः पण्डित जी ने कहा कि कई लोग अभाव से भाव की उत्पति मानते हैं वह भी भूल में हैं क्यों कि वह कहते हैं कि जैसे बीज का मर्दन किये बिना अंकुर उत्पन्न नहीं होता और बीज को तोड़ने पर अंकुर का अभाव होता है परन्तु वस्तुतः उस बीजमें सूक्ष्म रूप से अंकुर का भाव होता है।

कई भाई कहते हैं कि ईश्वर कई कर्मों का फल देता है और कई कर्मों का फल नहीं भी देता अर्थात् यह ईश्वर स्वेच्छ ही है जीवों का कर्म करना ही अपेक्षित नहीं परन्तु यदि वह ध्यान से विचारें यह बात भी ठीक नहीं है। क्योंकि जो कर्म का कर्म फल ईश्वराधीन ही स्वीकार करलें तो बिना धर्म किए ईश्वर फल क्यों नहीं देता। इसलिए जैसा कार्य मनुष्य करता है वैसा ही फल ईश्वर देता है।

इस वाद विवाद को सुनकर हमारा यात्री नायक अति प्रसन्न होता है परन्तु एक जिज्ञासा उत्पन्न हो जाती है, खड़ा होकर पूछता है कि भगवन हम तो कई साधु महात्माओं से यह सुनते हैं कि यह जगत् स्वप्न की भांति मिथ्या है और ब्रह्म सत्य है इस में आपका क्या विचार है, पंडित जी अति प्रसन्नता से बोले कि जिज्ञासु महोदय! यह बात ठीक नहीं है और प्रत्यक्षादि प्रमाणों से भी विपरीत है क्योंकि स्वप्न तो प्रायः जाग्रत के देखे हुए पदार्थों के ही आते हैं और वह अज्ञानावस्था का सूचक होते हैं परन्तु उनका अभाव नहीं होता इसपर एक जैन भाई खड़े होगये और कहने लगे कि अनादि ईश्वर कोई

नहीं किन्तु जो योगाभ्यास से अणिमादि ऐश्वर्य को प्राप्त होकर सर्वज्ञादि गुण युक्त केवल ज्ञानी होता है वही जीव परमेश्वर कहाता है। इस पर पण्डित जी ने प्रसन्न मुद्रा से कहा कि जो अनादि ईश्वर जगत् का सृष्टा नहीं तो साधनों से सिद्ध होने वाले जीवों का आधार जीवन रूप जगत् शरीर और इन्द्रियों के गोलक कैसे बनते और इनके बिना जीव साधन नहीं कर सकता और जब साधन ही न हों तो सिद्ध कहाँ से होता। भाइयो तनिक विचारो कि जीव चाहे जैसा साधन कर सिद्ध होवे तो भी ईश्वर के तुल्य नहीं हो सकते। क्योंकि जीव का परम अवधि तक ज्ञान बढ़े तो भी परिमित ज्ञान और सामर्थ्य वाला होता है प्रभु अनन्त ज्ञान वाले के सदृश यह अल्पज्ञ जीव कभी भी बराबरी नहीं कर सकता इस पर वह युवक संतुष्ट हो बैठ गया।

सृष्टि उत्पत्ति

अब पण्डित जी ने कहा कि यह सृष्टि प्रभु ने कल्प कल्पान्तर से एक जैसी ही रची है जैसा कि तुम सन्ध्या के अघमर्षण मंत्र में प्रतिदिन पढ़ते हो "सूर्या चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्" परमात्मा ने जैसे पूर्व कल्प में सूर्य चन्द्र नक्षत्र पृथ्वा, अन्तरिक्ष बनाये हैं वैसे ही इस कल्प में बनाये हैं और वही परमात्मा सब का आदि कारण है। प्रभु ने सब से प्रथम (आज से एक अरब सतानवे करोड़ के लगभग) सृष्टि को उत्पन्न करते हुये पृथ्वी उत्पन्न की पुनः बनस्पती, औषधियाँ, फल, फूल, मनुष्य, पशु, पक्षी, का आहार बनाया। पुनः ५ वर्ष के पश्चात् युवा मनुष्य अमैथुनी रूप से उत्पन्न हुये, और यह प्रथम सृष्टि तिब्बत में हुई जो संसार में सब से ऊंचा स्थान है।

परमात्मा नें जीवों को उनके पिछले जन्म के कर्मों के अनुसार किसी को पशु किसी को पक्षी तथा किसी को स्त्री वा पुरुष बनाया। यह प्रभु की न्याय व्यवस्था के अनुसार ही होता है।

इस देश का नाम आर्यवर्त है जिसे आज कल भारत वर्ष भी कहते हैं। दुर्भाग्य से पाकिस्तान हम से पृथक हो गया) और यहाँ के निवासी लोगों को आर्य कहते हैं और राजा इक्ष्वाकु से लेकर कौरव पांडव तक यहां आर्यों का राज्य सब भूगोल में था अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य प्रमाद परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी किन्तु आर्यवर्त में भी आर्यों को अखड स्वतंत्र स्वाधीन निर्भय राज्य इस समय नहीं है...।

इतने में एक देवी ने खड़े होकर प्रश्न किया कि महाराज सुना है कि इस सृष्टि को तो शेष नाग ने धारण किया हुआ है यह कहाँ तक ठीक है। और कई भाई कहते हैं कि बैल के सींगों पर पृथ्वी खड़ी है। पण्डित जी ने हँसते हुए कहा कि बहन जी यह सब कपोल कल्पित बातें हैं। सच्ची बात तो यह है कि शेष रहने वाले परमात्मा के आश्रित ही यह पृथ्वी आदि सब लोकान्तर ठहरे हुए हैं।

इसी प्रकार सूर्य के आकर्षण ने पृथ्वी को धारण किया हुआ है और यह पृथ्वी आदि लोक सूर्य के चारों ओर घूमते हैं एसा वेद में लिखा है। इसके अतिरिक्त सूर्य नक्षत्र आदि वसुओं में भी प्रजा निवास करती है और यह हो सकता है कि इसमें मनुष्यादि का आकार भिन्न हो जैसे यहाँ इसी समय हिन्दुस्तानी अंग्रेज, चीन, अफरीका आदि मनुष्यों के रंग रूप में अन्तर होता है वैसे यहाँ भी समझना चाहिए हाँ एक बात अवश्य स्मरण रखें कि प्रभु का ज्ञान वेद अर्थात् प्रभु के राज्य की व्यवस्था रीति सब जगह एक जैसी ही होती है।

यात्री यह सब वाद विवाद सुनकर अति हर्षित हुआ और उसने पण्डित जी को नमस्कार किया। पण्डित जी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि कल पुनः इसी स्थान पर आना आप को सरस्वती देवी के दर्शन कराये जावेंगे अब यह सभा समाप्त होती है सबने मिलकर शान्ति पाठ किया और सभा विसर्जित हुई सब पण्डित गण भी संतुष्ट होकर अपने शिष्यों सहित चल पड़े। ओ३म्।

आचार्य भद्रसेन कृत जीवन को आदर्श तथा सुखमय बनाने वाला उच्च कोटि का–साहित्य

१—"योग और स्वास्थ्य" (सचित्र) मूल्य २॥)

यह शरीर को सदा स्वस्थ, बलवान् और निरोग बनाए रखने वाली, लगभग ७० यौगिक क्रियाओं के चित्रों सहित अपने विषय की अपूर्व पुस्तक है। समाचार पत्रों में तथा योगप्रेमी सज्जनों ने इस को मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। नमूनार्थ चन्द सम्मतियाँ पढ़िये—

१—योग और यौगिक चिकित्सा पर विश्वास रखने वालों को इससे अच्छी दूसरी पुस्तक शायद ही मिलेगी। 'नवभारत टाइम्स' देहली। २—आचार्य जी ने इस पुस्तक को लिख कर भारतीय जनता की महान् सेवा की है। 'वीर अर्जुन' देहली। ३—यदि आप शरीर के लुटे खजाने को पुनः पाना चाहते हैं और जीवन को सुखमय बनाना चाहते हैं तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़िये। 'आर्य प्रकाश' बम्बई।

२—"प्राणायाम" (सचित्र) मूल्य ॥।)

प्राणायाम के सम्बन्ध में आपने पर्याप्त पुस्तकें पढ़ी होंगी। किन्तु इस पुस्तक को पढ़कर आप एक नया जीवन प्राप्त करेंगे, तथा प्राणायाम सम्बन्धी उन रहस्यों तथा गुप्त विधियों को प्राप्त करेंगे। जिनसे आज तक आप सर्वथा अनभिज्ञ हैं।

सम्मति—प्राणायाम सीखने वालों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। 'नवभारत टाइम्स'

३—"योगासन" (सचित्र) मूल्य ॥=)

यह श्री आचार्य जी की प्रसिद्ध पुस्तक 'योग और स्वास्थ्य' का संक्षिप्त संस्करण है। ज सज्जन योग की अन्य क्रियायें न सीखकर केवल आसनों से ही लाभ उठाना चाहते हैं। उन के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है।

सम्मति—आचार्य जी ने योगासन की विधि तथा लाभों के साथ योगासनों के चित्र देखकर पुस्तक को अत्यन्त उपयोगी तथा सरल बना दिया है। 'नवभारत टाइम्स'

४—'योगासन चित्र पट' मूल्य ॥।)

पहला भाग ४५ योगासनों का उनके लाभों सहित दो रंगा आर्ट पेपर पर छपा सुन्दर चित्र पट है।

५—"प्रभु भक्त दयानन्द तथा उनके आध्यात्मिक उपदेश" मूल्य १॥)

ऋषि के भक्तिमय जीवन तथा उनके आध्यात्मिक उपदेशों को पढ़ कर आप गद्गद् हो जायेंगे, तथा अपने अन्दर एक अपूर्व शांति और आनन्द का अनुभव करेंगे।

सम्मति—लेखक ने इस पुस्तक को लिखकर आर्य जनता की पहली सेवा की है। आशा है आध्यात्मिक प्रेमी इस पुस्तक का अवश्य स्वाध्याय करेंगे। 'दैनिक हिन्दुस्तान'

६—"आदर्श की ओर" मूल्य १।)

अपने विषय की इस अनूठी पुस्तक पर 'आर्य प्रकाश' बम्बई में एक प्रसिद्ध विद्वान् की सम्मति पढ़िये—"इसे पढ़ते ही मरा जीवन जी उठता है। सोया जीवन जाग उठता है। और कुम्हलाई हुई मानस कली खिल उठी हैं।" 'आचार्य रुद्र मित्र'

७—"आर्य कर्त्तव्यादर्श" (सचित्र) मू० ।॥)

यह पुस्तक आर्य जीवन निर्माण के लिए अमृत तुल्य है। इसके अतिरिक्त हमारे यहां—'सत्यार्थ प्रकाश' आदि सभी धार्मिक के साहित्य हम से मंगाइए।

पता—आदर्श साहित्य निकेतन, केसर गंज, अजमेर।

आशा मत तजो

किसी गुजराती कवि ने कहा है :—

आशा तज नहीं पंछियडा जोई खड़ता पान।
ऋतु आवे फरी फुटशे, कूपन आ निदान॥
रवि उगे माथे तपे, पाछो आथमी जाय।
बीजे दिने फरी उगे, एवो आ जग नो न्याय॥

भावार्थः—हे मनुष्य आशा मत छोड़, वृक्ष के पत्ते पक कर गिर जाते हैं। ऋतु आनें पर फिर फूटते हैं यही नियम हैं सूर्य उगता है सिर माथे तपता है फिर अस्त हो जाता है। दूसरे दिन फिर उगता है यही जगत का न्याय और नियम है।

प्राय: लोग साधारण सा कष्ट या सन्ताप आने पर धैर्य छोड़ देते हैं मृत्यु के ग्रास बन जाते हैं आत्महत्या तक कर डालते हैं परीक्षा में उत्तीर्ण न हुए तो नदी में डूब मरना, रेल के नीचे कट जाना, घाटा पड गया तो विष खा लेना, प्रेमिका का या प्रेमी से विवाह सम्बन्ध न हुआ तो विष खाकर मर जाना भी कोई वीरता है. वीरता तो है मृत्यु को जीतना, परिश्रम न त्यागना, अन्त में सफल होना, खोई सम्पत्ति को पुनः कमाना, दूसरे को जीवन का साथी बना लेना, संसार में एक से एक बढ़कर रूपवान् और गुणवान् है यथायोग्य कामनीय की कमी नहीं है। निराश हो अमूल्य अलभ्य मानवजीवन को नष्ट नहीं करना चाहिए, न जानें समय आने पर मानव क्या से क्या बन जाये। इस सम्बन्ध में एक कथा प्रस्तुत करते हैं।

एक रामदास चर्मकार नदी के तट पर चमड़ा धो रहा था तो वहाँ कुछ बच्चे खेलने आए। उनमें से एक बालक नदी में डूब गया अन्य सब बच्चे डरकर उसे छोड़कर भाग आए। रामदास चर्मकार ने बच्चे को नदी में से निकाल लिया तथा उससे उसके पिता का नाम पूछा तो पं० रामदुलारे वाजपेयी बतलाया। वह उस बालक को उसके पिता के पास ले आया पं० रामदुलारे वाजपेयी रामदास पर बहुत प्रसन्न हुआ और कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा कि रामदास ! जब कभी मेरे योग्य कार्य हो तो मुझे बतलाना में अवश्य उसे पूरा करूँगा। दैव गति से रामदास शीतज्वर से आक्रान्त हो मरणासन्न हो गया अपने अन्त समय में पं० रामदुलारे वाजपेयी को सूचना भेजी तो वह तुरन्त आ गया तब मरते हुए रामदास अपने चार वर्ष के अकेले पुत्र को दिखला पं० रामदुलारे वाजपेयी से कहा कि यह मेरा पुत्र आपका पुत्र है इसे आपके सुपुर्द करता हूँ आप इसे अपना समझ कर पालें यह मेरी अन्तिम आकांक्षा है इतना कह रामदास ने तो प्राण त्याग दिये। पं० रामदुलारे वाजपेयी इसके पुत्र हरिदास बालक को घर ले आया पर विरादरी वालों ने थोड़े दिन में उस चमार बालक का न रखनें पर बल दिया और अन्ततः न रखने दिया। पं० रामदुलारे उसके पिता का कृतज्ञ था उसने किसी अन्य चमार के यहाँ उसे रखा दिया और उसका भोजन, वस्त्र व्यय देने लगा। वह दुष्ट चमार उस बालक के लिए दिए हुए खर्च को अपने काम में अधिक ले लेता और बालक को तंग रखता था। इसी बीच में पं० रामदुलारे वाजपेयी गम्भीर रोग में पड़ अतिरुग्ण हो गये और बालक के लिये कुछ दिनों से खर्च न भेज सके, उस चमार ने बालक को घर से निकाल दिया, बालक हरिदास उस समय आठ वर्ष का हो गया था। वह दुःखी बालक निराश हो उसी नदी में डूबने को उसके तट पर आ पहुँचा तो देखता क्या है कि कुछ लोग एक शवविमान लिये हुए नदी पर पहुंचे जब शव को स्नान कराकर दाह के निमित्त काष्ठचिता पर रखा तो हरिदास ने देखा कि यह तो वही महानुभाव पं० रामदुलारे वाजपेयी हैं जिनके सुपुर्द मेरे पिता ने अपने मरते समय मुझे किया था, इतना सोच दुःखभरी आह भर सुबकियाँ भरने लगा। जब सब लोग उसका दाहकर्म करके चले गये तो बालक अकेला रहा हुआ सोचने लगा कि पहिले पिता मर गये अब पिता तुल्य पालन करने वाले भी चल बसे हाय मेरा कोई न रहा, दुःख की लम्बी साँस ले डूबने को आंख बन्द कर नदी में कूद पड़ा। उधर से परमात्माशरण आर्य डी० ए० वी० स्कूल के मास्टर बड़े दयालु सन्ध्योपासनार्थ नदी तट पर आ पहुंचे उन्होंने बालक को डूबते देख तुरन्त वस्त्रों समेत उसे बचाने नदी में कूद पड़े और वेग से तैर बालक को नदी से बाहर निकाल लिया। पर बालक ने कहा मैं दुःखी चमार बालक हूँ बचपन में माता पिता मर गये पिता मुझे पं० रामदुलारे वाजपेयी को सौंप गये थे उन्होंने मेरा पालन करना स्वीकार किया था क्योंकि इसी नदी में

उनके डूबते हुए पुत्र को मेरे पिता ने बचाया था, पर पं० रामदुलारे को बिरादरी वालों ने तंग कर मुझे उनके घर से निकलवा दिया तथापि पं० रामदुलारे के खर्च से ही अब तक अन्य चमार के यहाँ मेरा पेट भरता रहा, हा ! आज वह भी संसार से चल बसे यह कह बालक सिसक २ कर रोने लगा और आगे कुछ न कह सका। पं० परमात्माशरण ने बालक को प्यार किया धैर्य दिया और कहा, बेटा ! मैं तेरा पालन करूँगा में आर्य हूँ हम छूत-छात नहीं करते, चलो मेरे घर। परमात्माशरण इस हरिदास बालक को घर ले आये, परमात्माशरण की धर्मपत्नी का नाम प्रभा देवी था वह बुद्धिमती विद्या से सम्पन्न थी पर सन्तानहीन थी उसने उस हरिदास चमार बालक को अपनी सन्तान मान लिया उसे अपने घर का दीपक बना लिया, ठीक है दीपक से ही तो प्रभा चमकती है। उसने हरिदास बालक का नाम हरिशर्मा रख दिया और वह डी० ए० वी० स्कूल में पढ़ने लगा। पुन: दो वर्ष पीछे परमात्माशरण के पुत्र उत्पन्न हो जाता है उसका नाम देवशर्मा रख दिया जाता है, यद्यपि परमात्माशरण और प्रभादेवी के निज पुत्र उत्पन्न हो गया था परन्तु हरिशर्मा पर वही प्रेम की दृष्टि रही। जब हरिशर्मा १६ वर्ष का हुआ तो देवशर्मा ६ वर्ष का हो गया था। इन दोनों में भीं सगे भाईयों जैसा अटूट प्रेम था। ६ वर्ष के बालक देवशर्मा को भी परमात्माशरण और प्रभादेवी ने यह पता न दिया कि हरिशर्मा तुम्हारा सगा भाई नहीं अन्य का बालक है। धन्य हो ऐसे दम्पति ! पर दैव की गति निराली है अभी हरिशर्मा दसवीं श्रेणी उत्तीर्ण ही हुआ था कि परमात्माशरण और प्रभादेवी का इन्फ्लुएंजा में प्राणान्त हो गया हरिशर्मा और देवशर्मा ही दो बालक घर में रह गये। देवशर्मा का मामा उसे मोटर लेकर लेने आया मोटर में घर की सम्पत्ति रखी और देवशर्मा को जब मोटर में बैठने को कहा तो देवशर्मा ने कहा कि भैया को साथ ले लो पर मामा ने हरिशर्मा को साथ न लिया तो देवशर्मा झपट कर हरिशर्मा से चिपट गया हरिशर्मा ने भी उसे छाती से लगा लिया, देवशर्मा ने कहा भैया के बिना न जाऊगा। कठोर मामा ने दोनों बच्चों पर कुठाराघात किया बलात् हरिशर्मा से देवशर्मा को छुड़ा लिया और मोटर में बिठा लिया, तब प्रेम के आंसू टपकाते हुए हरिशर्मा ने दौड़कर मोटर के आगे आना चाहा तो उस कठोर हृदय मामा ने उसे दण्डे से धक्का देकर मोटर दौड़ा दी। मोटर में बैठा देवशर्मा बालक कूक कूक कर रोता, तड़पता रहा निरन्तर रोते तड़पते हुए भैया भैया कहते हुए वह अचेत (बेहोश) हो गया, हृदय की मार्मिक चोट से ऐसा बेहोश हुआ कि फिर होश में आया ही नहीं। उधर हरिशर्मा निराश और उदास हो आंख से आंसू टपकाता हुआ घर आया वहां अब घर में स्कूल की पुस्तकों कुछ साधारण बर्तन कपड़ों के और क्या था ? सारा दिन रो रो बीता रात को अकेले नींद न आई प्रातः होते ही जंगल की राह ली। वह जंगल जंगल भटकता था और चाहता था कि कोई जंगली पशु उसे खा जावे इतने में एक रीछ आया उस पर झपटा तुरन्त दूसरी ओर से एक गर्जता हुआ सिंह भी पहुँच गया, यद्यपि सिंह की झपट थी हरिशर्मा के लिए परन्तु प्रतिद्वन्द्वी रीछ को देखकर वह रीछ पर ही कूद पड़ा। रीछ आगे सिंह पीछे दौड़ते हुए हरिशर्मा की आंखों से ओझल हो गये। पुन: हरिशर्मा ने आत्म-हत्या के लिये अपने को एक पहाड़ी के ऊपर से नीचे लुढका दिया लुढ़ते लुढ़ते चोटें खाते खाते अचेत हो एक सन्त की कुटिया के पास आ पड़ा। सन्त ने देखा आहत कुमार है उसे उठाकर कुटिया में ले जाकर गरम दूध में हरिद्रा और शिलाजीत पिलाया तो वह सचेत एंव स्वस्थ हो गया। सन्त ने वृत्तान्त पूछा उसने सब कह सुनाया, महात्मा ने उपदेश दिया कि तुम दसवीं पास युवक हो तुम्हें इस प्रकार निराश नहीं होना चाहिए अपने पैरों पर खड़े हो जाओ पुरुषार्थ करो पुरुषार्थ से सब सधता है, हरिशर्मा के अन्दर महात्मा का उपदेश बैठ गया और वहां से उठ एक मासिक पत्रिका के कार्यालय में पहुंच रात्रि की ड्यूटी ८) मासिक पर ले दिन में आयुर्वेदिक कौलिज में पढ़ने लगा, योग्य सिद्ध होने पर ७) मासिक राजकीय छात्रवृत्ति भी मिलने लगी, वैद्यों के साथ बाहिर भी जाने लगा वहाँ से भी कुछ मिल जाता था परिश्रम से प्रथम संख्या में अन्तिम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ स्वर्णपदक प्राप्त किया तुरन्त १५०) का राज्य में वैद्य हो गया और अधिक यश पाकर राजपरिवार में ५००) को वैद्य तथा पुरोहित बन गया। यह सब कुछ पुरुषार्थ का फल है निराशा की घटाओं को पुरुषार्थ विद्यु त्प्रहार छिन्न भिन्न कर देता है। अस्तु !

'बृहदारण्यक उपनिषद कथामाला से उद्‌धृत।

'वेद प्रकाश' का महत्वपूर्ण विशेषांक
बृहदारण्यक उपनिषद् कथा माला

बृहदारण्यक उपनिषद् शतपथ ब्राह्मण का एक भाग है, यह उपनिषद् अन्य सब उपनिषदों से बड़ा है। सर्व साधारण के लिए उपयोगी होवे इसलिए इसमें से वह स्थल जिसका आध्यात्मिकता से सम्बन्ध नहीं तथा कई पुनरुक्त कथाओं को छोड़ कर उपयोगी १६ कथाओं का सरल रीति से वर्णन किया है जो कि प्रत्येक स्वाध्याय प्रिय व्यक्ति के लिए उपयोगी एवं लाभप्रद है। कागज की महंगाई के समय में उत्तम कागज व सजिल्द उपहार देने योग्य पुस्तक का मूल्य ३) मात्र रखा है।

वेद प्रकाश के ग्राहकों को केवल २) में ही मिलेगा ॥) रजिस्ट्री खर्च अलग देना होगा जिससे सुरक्षित पुस्तक पहुंच जाये। आगामी वर्ष के वेद प्रकाश के चन्दे के साथ २॥) उपनिषद् कथा माला के मिला कर ५) शीघ्र भेज देवें।

विद्वानों की सम्मतियें पढ़िये

स्वामी ब्रह्ममुनि जी आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् हैं, प्रस्तुत पुस्तक में उन्होंने अध्यात्मप्रेमी जिज्ञासुओं के लाभार्थ बृहदारण्यकोपनिषत् की १६ कथाओं पर मूल वाक्यों को उद्धृत करते हुए बड़ा उत्तम प्रकाश डाला है। उन कथाओं के तात्पर्य को अधिक स्पष्ट करने के लिए द्वितीय और तृतीय कथा की व्याख्या में स्वयं भी दो रोचक शिक्षाप्रद कथाएं उन्होंने बनाई हैं जिसमें कभी निराश न होने और सेवाभाव की शिक्षा दी गई है। इस प्रकार यह ग्रन्थ इन संवादादिरूप कथाओं के कारण न केवल अध्यात्म शिक्षाप्रद किन्तु रोचक भी हो गया है। आर्यसमाजों के सत्सङ्गों तथा अन्य अवसरों पर भी इस पुस्तक में सरल रीति से व्याख्यान कथाएं सर्वसाधारण को भी पर्याप्त लाभदायिनी हो सकेंगी ऐसा हमारा विश्वास है। महाविद्वान् स्वामी ब्रह्ममुनि जी का वेदों, उपनिषदों और दर्शनशास्त्रों को इस प्रकार के व्याख्यान ग्रन्थों द्वारा लोकप्रिय बनाने का यह प्रयत्न अत्यन्त अभिनन्दनीय है। चतुर्थ कथा की व्याख्या में 'अहं ब्रह्मास्मि' की प्रकरणानुसार ठीक व्याख्या करते हुए अद्वैतवाद विषयक भ्रम का उत्तमता से निराकरण किया गया है। दशम कथा की व्याख्या में भूत प्रेतादि विषयक भ्रम का निराकरण करते हुए 'गन्धर्व गृहीता' के वास्तविक अर्थ का निरूपण किया गया है। इस प्रकार यह कथा माला सब के लिए उपयोगिनी, रोचिका और लाभप्रदा बन गई है। हम इसके लिये विद्वान लेखक और उत्साही प्रकाशक का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। —पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०

बृहदारण्यक-उपनिषद्-कथा माला स्वामी ब्रह्ममुनि रचित बहुत सुन्दर और उपयोगी पुस्तक है। जनता के पढ़ने और सुनने योग्य तथा असाधारण विद्वानों के मनन और मीमांसा करने योग्य। अध्यात्मक की भूखवालों के लिए यह स्वादिष्ट और पुष्टिकर भोजन है।

शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० अमरसिंह जी आर्य पथिक

कथा माला को मैंने देखा। कथाएं श्री स्वामी जी ने बहुत ही सुन्दर रीति से लिखी है। मेरी हार्दिक कामना है कि यह पुस्तक प्रत्येक घर में पहुंचे। और सब नर नारी इससे लाभ उठावें।

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क देहली

मैं आर्य समाजी कैसे बना ?

[श्री पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा देहरादून]

मैं एक छोटे से ग्राम फतहवाल में उत्पन्न हुआ। बलहड़वाल में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की। वहां मौलवी इब्राहीम साहब बड़े सज्जन अध्यापक थे। अपने सम्प्रदाय के बड़े भक्त थे। वे हिन्दुधर्म के व्रत और कृष्ण-लीला आदि की निन्दा करते और "रोजा" आदि की प्रसंशा किया करते थे। मेरे हृदय पर इन बातों का प्रभाव पड़ा। जब एक बार घर में मुझ से दुर्गाष्टमी का व्रत रखने के लिये कहा गया तो मैंने कह दिया था कि दिन भर आहार न करूंगा। यह क्या व्रत है कि व्रत का नाम रख कर उत्तम उत्तम पदार्थों से पेट भर लिया जाय। उस समय यह विचार न था कि इस विचार से रोजा भी लाभदायक नहीं, क्योंकि दो वार दिन को न खाकर रात्रि को खा लिया। इसमें कमी तो कुछ भी नहीं हुई।

कुछ समय पश्चात् मैं हिन्दु सभा हाई स्कूल अमृतसर में पढ़ने के लिये आया। श्री मान मास्टर आत्माराम जी अमृतसरी हमें इतिहास पढ़ाया करते थे। जब इतिहास में यह वर्णन आया कि पुराने आर्य लोग गडरियों की भांति रहते थे। मांस सेवन करते थे। तब उन्होंने कहा कि ये बातें अशुद्ध हैं। वास्तव में वह यग इस समय से अच्छा था। फिर जब यह वर्णन आया कि ऋग्वेद सब से पुरानी पुस्तक है और तीन सहस्र वर्ष हुए जब यह लिखी गई थी तब उन्होंने बतलाया कि वेद वास्तव में ईश्वरीय ज्ञान है। और सृष्टि के आदि में इसका होना आवश्यक है। मैं अपने सहपाठी लाला धनीराम जी से अधिक मिलता था। क्यों कि वे हम रे ग्राम के समीप के रहने वाले थे। मैंने उनसे पूछा "ये अध्यापक महोदय तो बड़ी अद्भुत बातें बनाते हैं।" उन्होंने कहा, ये आर्य समाजी हैं, आर्य समाज में बड़ी अच्छी अच्छी बातें होती हैं, वहां प्रत्येक रविवार को चलना चाहियें।" मूर्ति पूजा से मुसलमान अध्यापक ने ही कुछ हटा दिया था। पता लगा कि आर्य समाज मूर्ति पूजा भी नहीं करता है वहां सन्ध्या की जाती है। प्राणायाम किया जाता है। प्राणायाम से स्वास्थ्य ठीक बनता है, बुद्धि और स्मरण शक्ति भी बढ़ती है और एकाग्रता प्राप्त होती है। फिर क्या था, जो मैं अन्तःकरण से ढूंढ रहा था वही मुझे मिल गया। मैं ने आर्य समाज में जाना आरम्भ किया। और उस दिन से आज तक आर्य समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द को सच्चा मार्ग दर्शक समझता हूं। जब तक अमृतसर में पढ़ता रहा, निरन्तर आर्य समाज का कार्य करता रहा। स्कूल में, आर्य समाजों में Debating club वाद-विवाद सभा बनाई। बाहर उत्सवों में भी जाया करता अध्यापक प्रायः आर्य विचारों के थे उनकी ओर से उत्साह मिलता था। सब प्रेम और आदर करते थे। मेरे आर्य समाजी बनने की कहानी अध्यापकों के शिष्यों पर प्रभाव का एक उदाहरण हैं।

(अनुवादकः—जगदीश चन्द विद्यार्थी)

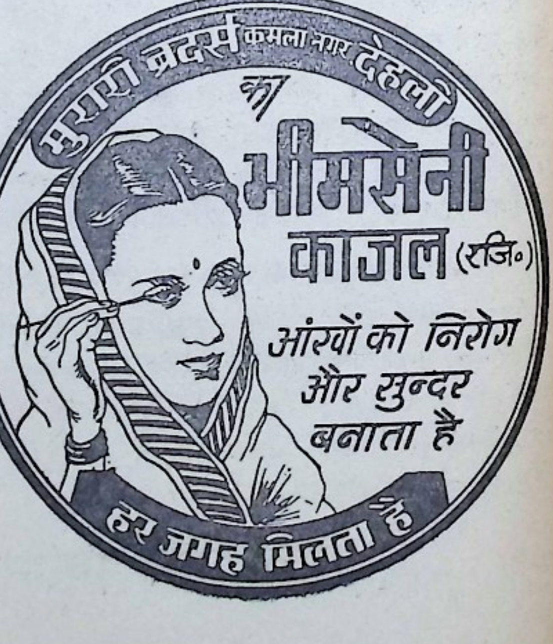

स्वर्ग में—

भगवान कृष्ण के नाम

—एक भक्त का पत्र

[लेखक—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी विद्यावाचस्पति]

भगवन् !

आप भक्तवत्सल हैं, भक्तों के तारक और उद्धारक हैं, उनके कष्ट निवारक हैं। आप की प्रतिज्ञा है: —

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
(गीता ४।७)

जब जब धर्म की हानि होती है, अत्याचार, अनाचार, अधर्म और पापाचार बढ़ जाता है, तब तब मैं अवतार लेकर संसार में आता हूँ।

नाथ ! ऐसा प्रतीत होता है कि आप अपनी प्रतिज्ञा को भूल गए हैं, क्यों कि संसार में अधर्म और पाप बढ़ता जा रहा है और आप आने का नाम तक नहीं लेते।

भगवन् ! आप हैं तो घट घट वासी। परन्तु आज पता लगा कि आपको मृत्युलोक का तो कुछ भी ज्ञान ही नहीं है। लो ऋषियों की भारत भूमि में क्या कुछ हो रहा है इसका दिग्दर्शन मैं कराता हूं।

संसार का गुरु कहलाने वाला भारत आज अधोगति को प्राप्त हो रहा है। आज जहां देखो, जिधर देखो छल, फरेब, धोकेबाजी, मक्कारी, बेइमानी, दम्भ, घूसखोरी, चोरबाजारी का बोल बाला है। सत्य, सदाचार, सेवा सयंम आदि दैवी सम्पत्ति का ह्रास हो रहा है और आसुरी सम्पत्ति बढ़ रही है। ७-७ वर्ष की लड़कियों की सन्तान होने लगी है। भ्रूण हत्यायें और गर्भपात होते हैं। मातायें अपने हृदय के टुकड़ों को समाज के भय से गाड़ियों और गली मुहल्लों में डाल देतो हैं। बाजार में सामान खरीदने जायं तो कोई वस्तु शुद्ध नहीं मिलती प्रत्येक वस्तु में मिलावट है, हर वस्तु नकली है, यहां तक कि विष भी नकली मिलता है, मसाले, दाल आदि की मिलावट का तो कहना ही क्या ?

गोपाल ! अपनी प्यारी गौओं की सुध लेना भी तू भूल गया। जिन गौओं को तू बड़े प्रेम से चराया करता था आज तेरी उन्हीं गौओं के जीवन पर भारी संकट है। सूर्योदय होने से पूर्व हजारों गौओं के गले पर आरा फेर दिया जाता है। तेरे प्यारे बच्छड़ों की खाल को कुरम बनाने के लिए जो यन्त्रणा दी जाती है उस को लिखते हुए लेखनी कांपती है और हृदय थर्राता है। गोपाल ! इस भोषण गोवध के कारण उस भारत के बालक, जहां घी और दूध की नदियां बहती थी, पानी के स्थान पर दूध पिलाया जाता था, आज घी और दूध को तरसते हैं। डालडा के प्रयोग से न उनके शरीर का निर्माण होता है और न बुद्धि ही परिपक्व और विकसित होती है। इस प्रकार भगवन् ! जिधर देखें अन्धकार ही अन्धकार दिखाई देता है।

वर्णाश्रम मर्यादा नष्ट हो चुकी है। संसार के त्याग का दम भरने वाले सन्यासी बड़े बड़े महल बना कर उन में विलासिता का जीवन बिताते हैं। इतना ही नहीं भोली-भाली नारी जाति को अपने चुंगुल में फंसा कर दम्भ, पाखण्ड और गुरुडम का प्रचार करते हैं।

भक्तवत्सल ! सत्ययुग और त्रेता मे जब धर्म अपने चार और तीन पावों पर खड़ा था, जब न यह दम्भ था

न पाखण्ड उस समय आपने अनेकों अवतार लिए परन्तु इस कलियुग में जब धर्म के तीन चरण टूट चुके हैं, पाप और अधर्म बढ़ता जा रहा है, अब ताप एक भी अवतार लेने के लिए तैयार नहीं होते मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि आप अपनी प्रतिज्ञा को भूल गये हैं। परन्तु नाथ ! यदि आप ही भूलने लगें तो हम संसारी जीवों की क्या गति होगी ?

लिखने के लिए बातें तो बहुत हैं परन्तु उन सब बातों को यहां लिखने का अवकाश कहां ? जितना लिखा है इससे ही आप और सब कुछ जान लेंगे ऐसी पूर्ण आशा और दृढ़ विश्वास है। हाँ अन्त में इतना निवेदन अवश्य करना है कि अब आप शीघ्रातिशीघ्र अवतार लें तथा अपने भक्तों के कष्टों को दूर करें।

आपका परमप्रिय

एक भक्त

भगवान् का उत्तर

प्रिय भक्त !

तुम्हारा पत्र आज की डाक द्वारा प्राप्त हुआ। स्वर्ग निवासी ऋषि दयानन्द, पं० लोकमान्य तिलक, श्री मालवीय जी और महात्मा गान्धी जी आदि की उपस्थिति में पत्र पढ़ा। पत्र पढ़ कर मैं तो अवाक् रह गया। यह तो ठीक है कि अर्जुन को युद्ध में प्रवृत्त करने के लिये गीता उपदेश तो मैंने अवश्य दिया था, परन्तु मैंने कदापि नही कहा कि 'यदा यदाहि धर्मस्य' जब जब धर्म की हानि होती है मैं अवतार लेता हूं। यह तो मेरे नाम से किसी वाममार्गी अथवा अवतार वादी ने प्रचलित किया होगा और न ही मैंने कभी भगवान् होने की घोषणा की थी। तुम्हें भी तो अपनी बुद्धि से कुछ विचार करना चाहिये था, जो सर्वव्यापक है, प्रत्येक स्थान पर है, वह कहां से और किस प्रकार उतर सकता है। और यदि दुर्जन तोष न्याय वश इसे ठीक भी मान लिया जाये तो मैंने यह भी तो कहा था :—

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ॥

(गीता २।४७)

तेरा कर्म करने में अधिकार है, फल की प्राप्ति में नहीं। स्वयं तो कर्म करते नहीं हो, तुम तो अपनी स्त्रियों के घाघरों में छिपे बैठे रहो और मुझे बुलाते हो। सुन, ओ भक्त ! ध्यान पूर्वक सुन, तुम में महान शक्ति है, तुम संसार में उथल पुथल मचा सकते हो। ब्लैक मार्कीट घूंस खोरी, अनाचार, अत्याचार पाखण्ड और दम्भ को दूर करने की तुम में पूर्ण शक्ति और सामर्थ्य है। परन्तु तुम तो हाथ के ऊपर हाथ रक्खे निठल्ले बैठे हुए मेरे आने की प्रतीक्षा कर रहे हो। मेरे आने की आशा छोड़ दो और स्वयं कर्म करो, पुरुषार्थ करो, फिर आप समस्त अन्याय और अधर्म को दूर करने में समर्थ होंगे।

तुम स्वयं तो भैंस का दूध पीते हो और मुझ से गो रक्षा की बातें करते हो। स्वयं गोपाल बनो, गो दुग्धपान करो, तब अविलम्ब ही गो रक्षा भी हो जायेगी और वह दिन दूर नहीं, जब भारत वर्ष पुनः संसार का सिर मौर बनेगा।

मुझे मत बुलाओ। यदि मैं सुदर्शन चक्र लेकर आ गया तो समस्त संसार का सफाया हो जायेगा कारण मुझे तो सभी अधर्मात्मा और पापी दिखाई दे रहे हैं। अतः मेरे अवतार लेने की आशा छोड़ कर स्वयं उद्योग करो, कर्म करते जाओ इसका फल अवश्य मिलेगा। आप के पुरुषार्थ से जहाँ आप को यश मिलेगा वहां संसार का भी कल्याण होगा अतः उठो, और संसार के उद्धार के लिये कमर कस लो। मेरा यह संदेश भारत के एक एक बच्चे को दे दो। मेरा आशीर्वाद आपके साथ है।

आशा है थोड़े में ही सब कुछ समझ लोगे और स्वयं अपने बाहुबल से नीचे पड़े भारत को ऊंचा उठाने का प्रयत्न शीघ्र ही आरम्भ कर दोगे।

तुम्हारा मंगलाभिलाषी

कृष्ण

वैदिक सूक्ति सुधा

(लेखक जगदीश चन्द्र विद्यार्थी विद्यावाचस्पति)

ओ३म्

१. ओ३म् खं ब्रह्म । (यजु० ४०।१७)
ओ३म् नामी प्रभु सर्वव्यापक है ।

२. ओ३म् प्रतिष्ठ । (यजु० २।१३)
ओ३म् की उपासना करो ।

३. ओ३म् क्रतो स्मर । (यजु० ४०।१५)
हे कर्मशील ! ओ३म् का स्मरण कर ।

४. ओ३म् वर्मीव धृष्णवा रुज । (सा० ५८५)
ओ३म् नामी प्रभु सब कष्टों से कवच की भांति बचाता है ।

प्रभु महिमा

५. ईशा वास्यमिदꣳ सर्वम् । (यजु० ४०।१)
यह सब कुछ ईश्वर से आच्छादित है ।

६. न क्येवं यथा त्वम् । (साम २०३)
प्रभो ! तुझ जैसा कोई नहीं ।

७. न त्वामिन्द्राति रिच्यते । (ऋ० ८।६२।२२)
हे इन्द्र ! आप से कोई श्रेष्ठ भी नहीं है ।

८. न हि त्वा कश्च न प्रति । (सा० १३५५)
प्रभो ! तेरा कोई प्रतिनिधि भी नहीं ।

९. विश्वदेवो महाँ असि । (सा० १०२६)
विश्वदेव परमात्मन् ! तू महान् है ।

१०. नहि ते अन्तः शवसः (ऋ० १।५४।१)
प्रभो ! तेरे बल का अन्त नहीं ।

११. विश्वेषामिज्जनिता ब्रह्मणामसि । (ऋ० २।२३।२)
सम्पूर्ण विद्याओं का आदिमूल तू है ।

१२. स ओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु । (यजु० ३२।८)
वह सर्व व्यापक प्रभु सब में ओत प्रोत है ।

१३. स नो बन्धुर्जनिता । (यजु० ३२।१०)
वह परमेश्वर हमारा बन्धु और उत्पादक है ।

१४. न त्वाँवा अस्ति देवता विदानः (ऋ०१।१६५।६)
आप के तुल्य न कोई पूज्य है, न कोई विद्वान् है ।

१५. देवो देवानामसि । (ऋ० १।९४।१३)
तू देवों का देव है ।

१६. एक एव नमस्यो विक्ष्वीड्यः । (अथर्व० २।२।१)
एक परमेश्वर ही पूजा के योग्य है ।

१७. विश्वमेको अभि चष्टे शचीभिः ।
(ऋ० १ १६४।४४)
एक ईश्वर ही अपनी शक्ति द्वारा सब ओर देख रहा है ।

१८. स एष एक एकवृदेक एव । (अ० १३।४।२०)
वह ईश्वर एक है, निश्चय से एक ही है ।

१९. एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति । (ऋ० १।१६४।४६)
एक ही ईश्वर को विद्वान् अनेक नामों से पुकारते हैं ।

२०. य एक इत्तमु ष्टुहि । (ऋ० ६।४५।१६)
जो अद्वितीय प्रभु है, उसी की स्तुति कर ।

२१. न तस्य प्रतिमा अस्ति । (यजु० ३२।३)
उस प्रभु की कोई प्रतिमा नहीं है ।

२२. तवेद्धि सख्यमस्तृतम् । (ऋ० १।१५।५)
प्रभो ! आप की मित्रता अमृत है ।

२३. देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे (सा० १०२७)
ऐश्वर्यशालिन् ! विद्वान् तेरी मित्रता के लिये यत्न करते हैं ।

२४. मा न इन्द्र परा वृणक् । (सा० २६०)
इन्द्र ! हमें न त्याग ।

२५. त्वमस्माकं तव स्मसि । (ऋ० ८।६२।३२)
प्रभो ! तू हमारा है और हम तेरे हैं ।

२६. मा नो अति ख्य आ गहि । (सा० १०८६)
प्रभो ! हमारी उपेक्षा न कर ।

२७. सोम नो मृड। (सा० १३१८)
शान्तिवर्षक ! हमें सुखी कर।

२८. उत्सो देव हिरण्ययः। (अ० २०।११८।२)
प्रभो ! तू सम्पत्ति का झरना है।

२९. अस्माकमस्तु केवलः। (अ० २०।६०।१६)
प्रभो ! हमारे तो केवल आप हीं हैं।

३०. त्वे विश्वे अमृता मादयन्ते। (ऋ० १।५९।१)
तुझ में सब भक्त आनन्द पाते हैं।

३१. गायन्ति त्वा गायत्रिणः (ऋ० १।१०।१)
गवैये आप के ही गीत गाते हैं।

३२. इन्द्रो विश्वस्य राजति। (सा० ४५६)
ऐश्वर्य शाली परमात्मा विश्व का शासक है।

३३. उतास्मिन्नल्प उदके निलीनः। (अ० ४।१६।३)
प्रभु पानी की छोटी सी बून्द में भी छिपा बैठा है।

३४. संख्याता अस्य निमिषो जनानाम्।
प्रभु ने मनुष्य के पलक झपकने भी गिने हुए हैं।

३५. यत्र सोमः सदमित् तत्र भद्रम्। (अ० ७।१८।१८)
जहां प्रभु है वहां ही कल्याण हैं।

प्रार्थना

३६. अग्न आ याहिवीतये। (सा० १)
प्रभो ! ज्ञान प्रकाश के लिए तू सब ओर से आ।

३७. अग्ने वर्चस्विनं कृणु। (अ० ३।२२।३)
उन्नति साधक प्रभो ! मुझे तेजस्वी बना।

३८. अग्ने रक्षाणो अंहसः। (सा० २४)
देव ! पाप से हमारी रक्षा कर।

३९. पाहिमाम्। (यजु० २।६)
प्रभो मेरी रक्षा करो।

४०. पावक श्रुधी हवम्। (सा० २९)
हे पावक ! हमारी पुकार सुन।

४१. उरुष्या णो अघायतः समस्मात्। (यजु० ३।२६)
पाप निवारक ! हमें समस्त पापों से बचा।

४२. देव त्वष्टर्वर्धय सर्वसातये। (अ० ६।३।३)
प्रभो ! हमें इतना समृद्ध कर कि सब कुछ पालें।

४३. इषं स्तोतृभ्य चा भर। (सा० ९७१)
ऐश्वर्यशालिन् ! स्तोताओं के लिये धन दे।

४४. द्युमन्तं शुष्ममा भर। (सा० १३२५)
हे बलदातः ! दीप्तिमय बल प्रदान कर।

४५. विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत्। (यजु० २१।३)
प्रभो ! हम से सब दोषों को दूर कर दे।

४६. विश्वा ह्यग्ने दुरिता तर त्वम्। (अ० ।२।६।५)
हे प्रभो ! सब पाप आचरणों से हमें दूर कर।

४७. विश्वम्भर विश्वेन मा भरसा पाहि। (अ० २।१६।५)
प्रभो ! अपनी शक्ति से मेरी रक्षा कर।

४८. स नो वसून्या भर। (अ० ६। ६३। ४)
प्रभो हमें धन धान्य प्राप्त करा।

४९. वर्चसा मां समनक्त्वग्निः। (अ० १८।३।११)
हे तेजोमय प्रभो ! मुझे तेज से चमका दे।

५०. नो वेद आभर। (अथर्व० २०।५६।६।)
प्रभो ! हमें वेद ज्ञान प्रदान कर।

५१. स नो रास्व सुवीर्यम् (अ० २०।१०८।३)
शक्तिदातः ! हमें वीरता प्रदान कर।

५२. यद्यद्यामि तदाभर (अ० २०।११८।२)
प्रभो ! जो जो मांगूं वह वह प्रदान कर।

५३. इन्द्र मा स्तेन ईशत् (अ० २०।१२७।१३)
भगवान् ! चोर हम पर शासन न करे।

५४. स्तोतुर्मघवन्कामसमा पृण। ऋ० १।५७।५)
भगवान् ! भक्त की कामनाओं को पूर्ण कर।

मंगल कामना

५५. अहं सूर्य इवाजनि। (सा० १५२)
मैं सूर्य के समान तेजस्वी होऊं।

५६. मेधामयासिषम्। (सा० १७१)
मैं मेधा बुद्धि प्राप्त करूं।

५७. मन्त्र श्रुत्यं चरामसि। (सा० १७६)
हम वेद मन्त्रों के अनुसार चलें।

५८. प्रबुद्धे नः पुनस्कृधि। (यजु ४।१४)
प्रभो ! हमें फिर प्रबुद्ध करे।

५९. अग्निर्नः पातु दुरितादवद्यात्। (यजु ४।१५)
प्रकाशस्वरूप प्रभो ! हमें बुराई और निन्दा से बचाओ।

६०. माते रिषन्नुपसत्तारो अग्ने (अ० २। ६। २)
प्रभो ! आप के उपासक दुःखित न हों।

६१. एनो मा नि गाम्। (अथर्व० ५.३.४)
मैं पापी न बनूं।

६२. अनागसो अदितये स्याम। (अ० ७.८३।३)
ईश्वर के प्रति हम निष्पाप हों।

६३. मो अहं द्विषते रधम्। (ऋ० १.५०।१३)
मैं द्वेषी के प्रति भी अहित न करूँ।

६४. कृधि मा देववन्तम्। (ऋ० ६ ४७ १०)
प्रभो ! मुझे आस्तिक बना।

दुर्गुण त्याग

६५. मा हृणीयथाः। (साम० २२६)
क्रोध मत कर।

६६. आरे बाधस्व दुच्छुनाम्। (साम० ६२७)
दुष्ट कुत्तों—काम क्रोधादि को दूर हटा।

६७. यवयास्मद् द्वेषो यवयाराती र्दिवे (यजु० ५।२६।
हम से द्वेष के भाव तथा कृपणता दूर हों।

६८. छिद्रं पृण। (यजु० १२। ४५)
अपने दोषों को दूर कर।

६९. दुरितानि परा सुव। (यजु० ३०।३)
भगवान् ! हमारे द्वेषों को दूर कर।

७०. अव मा पाप्मन्त्सृज। (अ० ६।२६।१)
ओ पाप ! मुझे छोड़ दे।

७१. परोऽपेहि मनस्पाप। (अ० ६।४५।१)
ओ मन के पाप ! दूर भाग।

७२. मा क्रुधः। (अ० ११।२।२०)
क्रोध मत कर।

७३. वियात विश्मत्रिणम्। (ऋ० १.८६.१०)
सम्पूर्ण घातक भावों को मिटा दो।

७४. आरे स्याम दुरिताद्भीके। (ऋ० २३।३६।७)
हम बुराइयों से अत्यन्त दूर रहें।

७५. परा दुःष्वप्न्यं सुव। (ऋ० ।५।८२।४)
दुष्ट विचारों को त्याग।

अहिंसा

७६. मा रिषण्यत। (सा० २४२)
हिंसा मत करो।

७७. न स्रेधन्तं रयिर्नशत्। (सा० ८६८)
हिंसक को धन की प्राप्ति नहीं होती।

७८. मा हिंसीरेकशफम्। (यजु० १३.४८)
एक खुर वाले प्राणियों को मत मार।

७९. गां मा हिंसीः। (यजु० १३।४३)
गो को मत मार।

८०. मा नो द्विक्षत कश्चन। (अ० १२।१।१८)
हमसे कोई भी द्वेष करने वाला न हो।

८१. वि मृधो नुदस्व। (अ० १३।१।२७)
हिंसक को निकाल दो।

८२. न वै त्वा द्विष्मः। (अ० ६।१४।१)
सचमुच मैं तुम से द्वेष नहीं करता।

८३. मा नो मर्ता अभि द्रुहन्। (ऋ० १।५।१०)
मनुष्य परस्पर द्वेष न करें।

८४. बृहस्पते चयस इत्पियारुम्।
महान् देव ! तू हिंसक को अवश्य मारता है।

८५. मा स्रेधत। (ऋ० ७।३२।९)
हिंसा मत करो।

८६. नकिर्देवा मिनीमसि। (ऋ० १०।१३४।७)
भगवान् ! हम हिंसा नहीं करते।

निर्भयता

८७. नो अभयं कृधि। (सा० २७४)
प्रभो ! हमें निर्भय कर।

८८. मा भेर्मा संविक्था। (यजु० १।२३)
मत डर, मत बेचैन हो।

८९. अभयं नः पशुभ्यः। (यजु० ३६।२२)
हमारे पशुओं के लिये निर्भयता हो।

९०. मे प्राण मा बिभेः। (अ० २।१५।१)
ऐ मेरे प्राण ! भयभीत मत हो।

९१. मा बिभेर्न मरिष्यसि। (अ० ५।३०।८)
डर मत तू मरेगा नहीं।

९२. अभयं सोमः सविता नः कृणोतु। (अ० ६।४०।१)
सूर्य और चन्द्र हमें निर्भयता की शिक्षा दें।

९३. अशत्रुरिन्द्रो अभयं नः कृणोतु। (अ० ६।४०।२)
प्रभो ! हम अशत्रुता और निर्भयता दो।

९४. स्वस्ति नो अभयं च नः। (अ० ११।२।३१)
हमें सुख मिले तथा हम निर्भय हों।

९५. मा व्यथिष्ठा। (अ० १२।३।२२)
व्यथित न हो।

९६. अभयं नो अस्तु। (अ० १९।८।७)
हमें निर्भयता प्राप्त हो।

९७. असपत्नाः प्रदिशो मे भवन्तु। (अ० १९।१४।१)
सब दिशायें मेरे लिये शत्रुओं से रहित हों।

९८. अभयं मित्रादभयममित्रात्। (अ० १९।१५।६)
हमें मित्र और शत्रुसे भय न हो।

९९. मा भेम शवसस्पते। (ऋ० १।११।२)
हे शक्तिपते ! हम किसी से न डरें।

१००. बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु। (ऋ० १०।१३१।६)
द्वेषियों को दूर कर और हमें भय रहित कर।

मधुरता

१०१. उग्रं वचो अपावधीः। (सा० ३५३)
कठोर वचन त्याग दो।

१०२. जिह्वाया अग्रे मधु मे। (अ० १।३४।२)
मेरी जिह्वा के अग्रभाग में मधुरता हो।

१०३. मधुमन्मे निक्रमणम्। (अ० १।३४।३)
मेरा जाना मधुर हो।

१०४. मधुमन्मे परायणम्। (अ० १।३४।३)
मेरा लौट कर आना भी मधुर हो।

१०५. वाचा वदामि मधुमद्। (अ० १।३४।३)
मैं वाणी से मधुर बोलूं।

१०६. भूयासं मधु संदृशः। (अ० १।३४।३)
मैं शहद जैसा मधुर होऊं।

१०७. गोसनिं वाचमुदेयम्। (अ० ३।२०।१०)
मैं गोदूध जैसी मीठी वाणी बोलूं।

१०८. यद् वदामि मधुमत तद् वदामि। (अ० १२।१।५८)
मैं जो कुछ बोलूं मीठा बोलूं।

१०९. मधुमतीं वाचमुदेयम्। (अ० १६।२।२)
मैं मीठी वाणी बोलूं।

श्रद्धा

११०. श्रत् ते दधामि। (सा० ३७१)
मैं तेरे प्रति श्रद्धा रखता हूं।

१११. श्रद्धया सत्यमाप्यते। (यजु० १९।३०)
श्रद्धा से सत्य प्राप्त होता है।

११२. एतं लोकं श्रद्धानाः सचन्ते। (अ० १२।३।७)
श्रद्धालु जन ही स्वर्ग=सुख विशेष प्राप्त करते हैं।

११३. श्रदस्मै धत्त। (अ० २०।३४।५)
परमेश्वर में श्रद्धाधारण करो।

११४. श्रद्धां भगस्य मूर्धनि। (ऋ० १०।१५१।१)
श्रद्धा ऐश्वर्यों की मूर्धास्थानी है।

११५. प्रियं श्रद्धे ददतः। (ऋ० १०।१५१।२)
श्रद्धा से देने वाले का कल्याण होता है।

११६. श्रद्धया विन्दते वसु (ऋ० १०।१५१।४)
श्रद्धा से धन प्राप्त होता है।

मित्रता

११७. सखा सख्युर्न प्र मिनाति संगिरम्। (सा० ५५७)
मित्र मित्र के कथन को नहीं टालता।

११८. मित्रेणाग्ने मित्रधेये यतस्व। (यजु० २७।५)
ज्ञानन् ! मित्र के साथ मित्रता रखने का यत्न कर।

११९. सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु। (अ० ७।५१।१)
मित्र को मित्र की भलाई करनी चाहिये।

१२०. सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु। (अ० १९।१५।६)
सब दिशायें मेरी मित्र हों।

१२१. देवानां सख्यमुप सेदिमा वयम्। (ऋ०१।८९।२)
हम विद्वानों से मित्रता करें।

१२२. न म इन्द्रेण सख्यं वियोषद्। (ऋ० २।१८८)
प्रभु से मेरी मित्रता न टूटे।

१२३. शिवा नः सख्या सन्तु भ्रात्राग्ने। (ऋ० ४।१०।८)
प्रभो ! भाइयों से हमारी मित्रतायें कल्याण कारी हों।

१२४. मित्रस्य यायां पथा। (ऋ० ५।६४।३)
हम मित्रपन के मार्ग पर चलें।

१२५. सखा सखायमतरद्विषूचोः। (ऋ० ७।१८।६)
मित्र मित्र को संकट से बचाता है।

१२६. न स सखा यो न ददाति सख्ये।
(ऋ० १०।११७।४)
जो मित्र की सहायता नहीं करता वह मित्र नहीं है।

वैदिक सूक्ति सुधा

(लेखक जगदीश चन्द्र विद्यार्थी विद्यावाचस्पति)

ओ३म्

१. ओ३म् खं ब्रह्म। (यजु० ४०।१७)
ओ३म् नामी प्रभु सर्वव्यापक है।

२. ओ३म् प्रतिष्ठ। (यजु० २।१३)
ओ३म् की उपासना करो।

३. ओ३म् क्रतो स्मर। (यजु० ४०।१५)
हे कर्मशील ! ओ३म् का स्मरण कर।

४. ओ३म् वर्मीव धृष्णवा रुज। (सा० ५८५)
ओ३म् नामी प्रभु सब कष्टों से कवच की भांति बचाता है।

प्रभु महिमा

५. ईशा वास्यमिदꣳ सर्वम्। (यजु० ४०।१)
यह सब कुछ ईश्वर से आच्छादित है।

६. न क्येवं यथा त्वम्। (साम २०३)
प्रभो ! तुझ जैसा कोई नहीं।

७. न त्वामिन्द्राति रिच्यते। (ऋ० ८।९२।२२)
हे इन्द्र ! आप से कोई श्रेष्ठ भी नहीं है।

८. न हि त्वा कश्च न प्रति। (सा० १३५५)
प्रभो ! तेरा कोई प्रतिनिधि भी नहीं।

९. विश्वदेवो महाँ असि। (सा० १०२६)
विश्वदेव परमात्मन् ! तू महान् है।

१०. नहि ते अन्तः शवसः (ऋ० १।५४।१)
प्रभो ! तेरे बल का अन्त नहीं।

११. विश्वेषामिज्जनिता ब्रह्मणामसि। (ऋ० २।२३।२)
सम्पूर्ण विद्याओं का आदिमूल तू है।

१२. स ओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु। (यजु० ३२।८)
वह सर्व व्यापक प्रभु सब में ओत प्रोत है।

१३. स नो बन्धुर्जनिता। (यजु० ३२।१०)
वह परमेश्वर हमारा बन्धु और उत्पादक है।

१४. न त्वाँवा अस्ति देवता विदानः (ऋ०१।१६५।९)
आप के तुल्य न कोई पूज्य है, न कोई विद्वान् है।

१५. देवो देवानामसि। (ऋ० १।९४।१३)
तू देवों का देव है।

१६. एक एव नमस्यो विक्ष्वीड्यः। (अथर्व० २।२।१)
एक परमेश्वर ही पूजा के योग्य है।

१७. विश्वमेको अभि चष्टे शचीभिः।
(ऋ० १ १६४।४४)
एक ईश्वर ही अपनी शक्ति द्वारा सब ओर देख रहा है।

१८. स एष एक एकवृदेक एव। (अ० १३।४।२०)
वह ईश्वर एक है, निश्चय से एक ही है।

१९. एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति। (ऋ० १।१६४।४६)
एक ही ईश्वर को विद्वान् अनेक नामों से पुकारते हैं।

२०. य एक इत्तमु ष्टुहि। (ऋ० ६।४५।१६)
जो अद्वितीय प्रभु है, उसी की स्तुति कर।

२१. न तस्य प्रतिमा अस्ति। (यजु० ३२।३)
उस प्रभु की कोई प्रतिमा नहीं है।

२२. तवेद्धि सख्यमस्तृतम्। (ऋ० १।१५।५)
प्रभो ! आप की मित्रता अमृत है।

२३. देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे (सा० १०२७)
ऐश्वर्यशालिन् ! विद्वान् तेरी मित्रता के लिये यत्न करते हैं।

२४. मा न इन्द्र परा वृणक्। (सा० २६०)
इन्द्र ! हमें न त्याग।

२५. त्वमस्माकं तव स्मसि। (ऋ० ८।९२।३२)
प्रभो ! तू हमारा है और हम तेरे हैं।

२६. मा नो अति ख्य आ गहि। (सा० १०८९)
प्रभो ! हमारी उपेक्षा न कर।

२७. सोम नो मृड। (सा० १३१८)
शान्तिवर्षक ! हमें सुखी कर।

२८. उत्सो देव हिरण्ययः। (अ० २०।११८।२)
प्रभो ! तू सम्पत्ति का झरना है।

२९. अस्माकमस्तु केवलः। (अ० २०।६०।१६)
प्रभो ! हमारे तो केवल आप हीं हैं।

३०. त्वे विश्वे अमृता मादयन्ते। (ऋ० १।५९।१)
तुझ में सब भक्त आनन्द पाते हैं।

३१. गायन्ति त्वा गायत्रिणः (ऋ० १।१०।१)
गवैये आप के ही गीत गाते हैं।

३२. इन्द्रो विश्वस्य राजति। (सा० ४५६)
ऐश्वर्य शाली परमात्मा विश्व का शासक है।

३३. उतास्मिन्नल्प उदके निलीनः। (अ० ४।१६।३)
प्रभु पानी की छोटी सी बून्द में भी छिपा बैठा है।

३४. संख्याता अस्य निमिषो जनानाम्।
प्रभु ने मनुष्य के पलक झपकने भी गिने हुए हैं।

३५. यत्र सोमः सदमित् तत्र भद्रम्। (अ० ७।१८।१८)
जहां प्रभु है वहां ही कल्याण हैं।

प्रार्थना

३६. अग्न आ याहिवीतये। (सा० १)
प्रभो ! ज्ञान प्रकाश के लिए तू सब ओर से आ।

३७. अग्ने वर्चस्विनं कृणु। (अ० ३।२२।३)
उन्नति साधक प्रभो ! मुझे तेजस्वी बना।

३८. अग्ने रक्षाणो अंहसः। (सा० २४)
देव ! पाप से हमारी रक्षा कर।

३९. पाहिमाम्। (यजु० २।६)
प्रभो मेरी रक्षा करो।

४०. पावक श्रुधी हवम्। (सा० २६)
हे पावक ! हमारी पुकार सुन।

४१. उरुष्या णो अघायतः समस्मात्। (यजु० ३।२६)
पाप निवारक ! हमें समस्त पापों से बचा।

४२. देव त्वष्टर्वर्धय सर्वसातये। (अ० ६।३।३)
प्रभो ! हमें इतना समृद्ध कर कि सब कुछ पालें।

४३. इषं स्तोतृभ्य चा भर। (सा० ९७१)
ऐश्वर्यशालिन् ! स्तोताओं के लिये धन दे।

४४. द्युमन्तं शुष्ममा भर। (सा० १३२५)
हे बलदातः ! दीप्तिमय बल प्रदान कर।

४५. विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत्। (यजु० २१।३)
प्रभो ! हम से सब दोषों को दूर कर दे।

४६. विश्वा ह्यग्ने दुरिता तर त्वम्। (अ० ।२।६।५)
हे प्रभो ! सब पाप आचरणों से हमें दूर कर।

४७. विश्वम्भर विश्वेन मा भरसा पाहि। (अ० २।१६।५)
प्रभो ! अपनी शक्ति से मेरी रक्षा कर।

४८. स नो वसून्या भर। (अ० ६।६३।४)
प्रभो हमें धन धान्य प्राप्त करा।

४९. वर्चसा मां समनक्त्वग्निः। (अ० १८।३।११)
हे तेजोमय प्रभो ! मुझे तेज से चमका दे।

५०. नो वेद आभर। (अथर्व० २०।५६।६।)
प्रभो ! हमें वेद ज्ञान प्रदान कर।

५१. स नो रास्व सुवीर्यम् (अ० २०।१०८।३)
शक्तिदातः ! हमें वीरता प्रदान कर।

५२. यद्याचामि तदाभर (अ० २०।११८।२)
प्रभो ! जो जो मांगूँ वह वह प्रदान कर।

५३. इन्द्र मा स्तेन ईशत् (अ० २०।१२७।१३)
भगवान् ! चोर हम पर शासन न करे।

५४. स्तोतुर्मघवन्काममा पृण। ऋ० १।५७।५)
भगवान् ! भक्त की कामनाओं को पूर्ण कर।

मंगल कामना

५५. अहं सूर्य इवाजनि। (सा० १५२)
मैं सूर्य के समान तेजस्वी होंऊं।

५६. मेधामयासिषम्। (सा० १७१)
मैं मेधा बुद्धि प्राप्त करूं।

५७. मन्त्र श्रुत्यं चरामसि। (सा० १७६)
हम वेद मन्त्रों के अनुसार चलें।

५८. प्रबुद्धे नः पुनस्कृधि। (यजु ४।१४)
प्रभो ! हमें फिर प्रबुद्ध करे।

५९. अग्निर्नः पातु दूरितादवद्यात्। (यजु ४।१५)
प्रकाशस्वरूप प्रभो ! हमें बुराई और निन्दा से बचाओ।

६०. माते रिषन्नुपसत्तारो अग्ने (अ० २।६।२)
प्रभो ! आप के उपासक दुःखित न हों।

६१. एनो मा नि गाम्। (अथर्व० ५।३।४)
मैं पापी न बनूं।

६२. अनागसो अदितये स्याम। (अ० ७।८३।३)
ईश्वर के प्रति हम निष्पाप हों।

६३. मो अहं द्विषते रधम्। (ऋ० १।५०।१३)
मैं द्वेषी के प्रति भी अहित न करूँ।

६४. कृधि मा देववन्तम्। (ऋ० ६।४७।१०)
प्रभो! मुझे आस्तिक बना।

दुर्गुण त्याग

६५. मा हृणीयथाः। (साम० २२६)
क्रोध मत कर।

६६. आरे बाधस्व दुच्छुनाम्। (साम० ६२७)
दुष्ट कुत्तों—काम क्रोधादि को दूर हटा।

६७. ययवयास्मद् द्वेषो ययवयारातीर्दिवे (यजु० ५।२६)
हम से द्वेष के भाव तथा कृपणता दूर हों।

६८. छिद्रं पृण। (यजु० १२।४५)
अपने दोषों को दूर कर।

६९. दुरितानि परा सुव। (यजु० ३०।३)
भगवान्! हमारे द्वेषों को दूर कर।

७०. अव मा पाप्मन्त्सृज। (अ० ६।२६।१)
ओ पाप! मुझे छोड़ दे।

७१. परोऽपेहि मनस्पाप। (अ० ६।४५।१)
ओ मन के पाप! दूर भाग।

७२. मा क्रुधः। (अ० ११।२।२०)
क्रोध मत कर।

७३. वियात विश्वमत्रिणम्। (ऋ० १।८६।१०)
सम्पूर्ण घातक भावों को मिटा दो।

७४. आरे स्याम दुरितादभीके। (ऋ० २३।३९।७)
हम बुराइयों से अत्यन्त दूर रहें।

७५. परा दुःष्वप्न्यं सुव। (ऋ० ।५।८२।४)
दुष्ट विचारों को त्याग।

अहिंसा

७६. मा रिषण्यत। (सा० २४२)
हिंसा मत करो।

७७. न स्रेधन्तं रयिर्नशत्। (सा० ८६८)
हिंसक को धन की प्राप्ति नहीं होती।

७८. मा हिंसीरेकशफम्। (यजु० १३।४८)
एक खुर वाले प्राणियों को मत मार।

७९. गां मा हिंसीः। (यजु० १३।४३)
गौ को मत मार।

८०. मा नो द्विक्षत कश्चन। (अ० १२।१।१८)
हमसे कोई भी द्वेष करने वाला न हो।

८१. वि मृधो नुदस्व। (अ० १३।१।२७)
हिंसक को निकाल दो।

८२. न वै त्वा द्विष्मः। (अ० ६।१४।१)
सचमुच में तुम से द्वेष नहीं करता।

८३. मा नो मर्ता अभि द्रुहन्। (ऋ० १।५।१०)
मनुष्य परस्पर द्वेष न करें।

८४. बृहस्पते चयस इत्पियारुम्!
महान् देव! तू हिंसक को अवश्य मारता है।

८५. मा स्रेधत। (ऋ० ७।३२।९)
हिंसा मत करो।

८६. नकिर्देवा मिनीमसि। (ऋ० १०।१३४।७)
भगवान्! हम हिंसा नहीं करते।

निर्भयता

८७. नो अभयं कृधि। (सा० २७४)
प्रभो! हमें निर्भय कर।

८८. मा भेर्मा संविक्था। (यजु० १।२३)
मत डर, मत बेचैन हो।

८९. अभयं नः पशुभ्यः। (यजु० ३६।२२)
हमारे पशुओं के लिये निर्भयता हो।

९०. मे प्राण मा बिभेः। (अ० २।१५।१)
ऐ मेरे प्राण! भयभीत मत हो।

९१. मा बिभेर्न मरिष्यसि। (अ० ५।३०।८)
डर मत तू मरेगा नहीं।

९२. अभयं सोमः सविता नः कृणोतु। (अ० ६।४०।१)
सूर्य और चन्द्र हमें निर्भयता की शिक्षा दें।

९३. अशत्रुरिन्द्रो अभयं नः कृणोतु। (अ० ६।४०।२)
प्रभो! हम अशत्रुता और निर्भयता दो।

९४. स्वस्ति नो अभयं च नः। (अ० ११।२।३१)
हमें सुख मिले तथा हम निर्भय हों।

९५. मा व्यथिष्ठा। (अ० १२।३।२३)
व्यथित न हो।

९६. अभयं नो अस्तु। (अ० १६।८।७)
हमें निर्भयता प्राप्त हो।

९७. असपत्नाः प्रदिशो मे भवन्तु। (अ० १६।१४।१)
सब दिशायें मेरे लिये शत्रुओं से रहित हों।

९८. अभयं मित्रादभयममित्रात्। (अ० १६।१५।६)
हमें मित्र और शत्रुसे भय न हो।

९९. मा भेम शवसस्पते। (ऋ० १।११।२)
हे शक्तिपते ! हम किसी से न डरें।

१००. बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु। (ऋ० १०।१३।६)
द्वेषियों को दूर कर और हमें भय रहित कर।

मधुरता

१०१. उग्रं वचो अपावधीः। (सा० ३५३)
कठोर वचन त्याग दो।

१०२. जिह्वाया अग्रे मधु मे। (अ० १।३४।२)
मेरी जिह्वा के अग्रभाग में मधुरता हो।

१०३. मधुमन्मे निक्रमणम्। (अ० १।३४।३)
मेरा जाना मधुर हो।

१०४. मधुमन्मे परायणम्। (अ० १।३४।३)
मेरा लौट कर आना भी मधुर हो।

१०५. वाचा वदामि मधुमद्। (अ० १।३४।३)
मैं वाणी से मधुर बोलूँ।

१०६. भूयासं मधु संदृशः। (अ० १।३४।३)
मैं शहद जैसा मधुर होऊं।

१०७. गोसनिं वाचमुदेयम्। (अ० ३।२०।१०)
मैं गोदूध जैसी मीठी वाणी बोलूँ।

१०८. यद् वदामि मधुमत तद् वदामि। (अ० १२।१।५८)
मैं जो कुछ बोलू मीठा बोलू।

१०९. मधुमतीं वाचमुदेयम्। (अ० १६।२।२)
मैं मीठी वाणी बोलू।

श्रद्धा

११०. श्रत् ते दधामि। (सा० ३७१)
मैं तेरे प्रति श्रद्धा रखता हूं।

१११. श्रद्धया सत्यमाप्यते। (यजु० १६।३०)
श्रद्धा से सत्य प्राप्त होता है।

११२. एतं लोकं श्रद्धानाः सचन्ते। (अ० १२।३।७)
श्रद्धालु जन ही स्वर्ग=सुख विशेष प्राप्त करते हैं।

११३. श्रदस्मै धत्त। (अ० २०।३४।५)
परमेश्वर में श्रद्धाधारण करो।

११४. श्रद्धां भगस्य मूर्धनि। (ऋ० १०।१५१।१)
श्रद्धा ऐश्वर्यों की मूर्धास्थानी है।

११५. प्रियं श्रद्धे ददतः। (ऋ० १०।१५१।२)
श्रद्धा से देने वाले का कल्याण होता है।

११६. श्रद्धया विन्दते वसु (ऋ० १०।१५१।४)
श्रद्धा से धन प्राप्त होता है।

मित्रता

११७. सखा सख्युर्न प्र मिनाति संगिरम्। (सा० ५५७)
मित्र मित्र के कथन को नहीं टालता।

११८. मित्रेणाग्ने मित्रधेये यतस्व। (यजु० २७।५)
ज्ञानन् ! मित्र के साथ मित्रता रखने का यत्न कर।

११९. सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु। (अ० ७।५१।१)
मित्र को मित्र की भलाई करनी चाहिये।

१२०. सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु। (अ० १६।१५।६)
सब दिशायें मेरी मित्र हों।

१२१. देवानां सख्यमुप सेदिमा वयम्। (ऋ०१।८६।२)
हम विद्वानों से मित्रता करें।

१२२. न म इन्द्रेण सख्यं वियोषद्। (ऋ० २।१८।८)
प्रभु से मेरी मित्रता न टूटे।

१२३. शिवा नः सख्या सन्तु भ्रात्राग्ने। (ऋ० ४।१०।८)
प्रभो ! भाइयों से हमारी मित्रतायें कल्याणकारी हों।

१२४. मित्रस्य यायां पथा। (ऋ० ५।६४।३)
हम मित्रपन के मार्ग पर चलें।

१२५. सखा सखायमतरद्विषूचोः। (ऋ० ७।१८।६)
मित्र मित्र को संकट से बचाता है।

१२६. न स सखा यो न ददाति सख्ये। (ऋ० १०।११७।४)
जो मित्र की सहायता नहीं करता वह मित्र नहीं है।

श्रावणी (वेदसप्ताह) पर्व के उपलक्ष में प्रचारार्थ विद्वानों के ट्रैक्ट मंगावें

प्रत्येक का मूल्य -) सैकड़ा ४)

१ मनुष्य बन—ले० स्वामी वेदानन्द सरस्वती ।
२ गायत्री माता—जगदीशचन्द्र विद्यार्थी ।
३ ईश्वर सिद्धि—पं० रामचन्द्र जी देहलवी ।
४ आस्तिक नास्तिक संवाद—महर्षि दयानन्द ।
५ पितृ श्राद्ध विचार—स्वामी दर्शनानन्द ।
६ सुख का साधन—महात्मा आनन्द स्वामी ।
७ ईश्वरोपासना—पं० रामचन्द्र जी देहलवी ।
८ कल्याणी बन—पं० गणेशदत्त 'इन्द्र' ।
९ आर्यों का आदि देश—काशी नाथ जी शास्त्री ।
१० धर्म और अधर्म—पं० रामचन्द्र देहलवी ।
११ स्वामी श्रद्धानन्द—रामगोपाल विद्यालंकार ।
१२ तत्ववेत्ता दयानन्द—स्वामी श्रद्धानन्द जी ।
१३ पं० लेखराम—रामगोपाल जी विद्यालंकार ।
१४ सीता माता—सरस्वती देवी 'प्रभाकर' ।
१५ गौ माता—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
१६ दयानन्द दिग्विजय—श्री हरिशंकर जी शर्मा कविरत्न
१७ चोटी का महत्व—पं० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री ।
१८ गुरु विरजानन्द—रामगोपाल विद्यालंकार ।
१९ मांस खाना छोड़ दो—पायथा गोरस ।
२० मर्यादा पुरुषोत्तम राम—प्रहलाद 'प्रभाकर' ।
२१ देश सुधार होली—अंगनलाल आर्य ।
२२ मूर्तिपूजा विचार—महर्षि दयानन्द ।
२३ भक्ति के लाभ—आचार्य प्रियव्रत ।
२४ आर्य समाज के उद्देश्य—जगदीशचन्द्र ।
२५ वेदमाता ।
२६ श्रद्धामाता ।
२७ धरती माता ।
२८ धर्म की रक्षा करो—ब्र० प्रभुदत्त जी ।
२९ मनुष्य के कर्तव्य—म० नारायण स्वामी ।
३० सत्संग भजन ।
३१ ऋषि दयानन्द कृत वेदभाष्य का महत्व ।
३२ गोपाल दयानन्द ।
३३ भक्तिवाद की रूपरेखा ।
३४ वैदिक भक्तिवाद ।
३५ अंग्रेजी शिक्षा से हानि ।
३६ सत्य की महिमा—स्वामी सर्वदानन्द ।
३७ आर्य समाज की उन्नति का साधन श्री लालचन्द जी
३८ श्यामाप्रसाद मुकर्जी—श्री प्रेमचन्द ।
३९ वैदिक काल में तोप बन्दूक—शिव पूजन सिंह ।
४० पतिव्रत धर्म—एक विदूषी महिला ।
४१ ब्राह्मण समाज और मूर्ति पूजा—राजेन्द्र जी ।
४२ ईश्वरोपासक दयानन्द—भगवत शरण बी. ए. ।
४३ ईश्वरावतार—स्वामी नित्यानन्द जी ।
४४ कर्मयोगी श्री कृष्ण—प्रेमचन्द ।
४५ ईसाइयों का भयंकर षड़यन्त्र ।
४६ सामाजिक व्यवहार—श्री लालचन्द जी ।
४७ शिक्षा का उद्देश्य—श्री पूर्णचन्द जी ।
४८ ब्रह्मचर्य—जगदीशचन्द्र जी विद्यार्थी ।
४९ वर्ण व्यवस्था—स्वामी दर्शनानन्द ।
५० कर्मव्यवस्था " "
५१ वेदज्ञान—विष्णु दयाल जी ।
५२ तुलसी रामायण और आर्य समाज ।
५३ सत्य की खोज—काशीनाथ शास्त्री ।
५४ मुर्दा क्यों जलावें—प्रेम शरण जी ।
५५ स्वामी दयानन्द का उद्देश्य—स्वामा दर्शनानन्द ।
५६ स्वामी दयानन्द का लक्ष्य— "
५७ ब्राह्मण समाज और मृतक श्राद्ध—पं० राजेन्द्र जी ।
५८ श्रेय और प्रेय—प्रि. नित्यानन्द जी एम. ए. ।
५९ सच्ची पूजा—स्वामी सर्वदानन्द जी ।
६० झांसी वाली रानी ।
६१ महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त-रविवर्मा सि. शास्त्री ।
६२ जीवन की समस्यायें—पं० रामचन्द्र देहलवी ।
६३ देवताओं की कहानी—कैलाश विहारी ।
६४ रोटी और कपड़ा—प्रेमकुमार पाण्डेय ।
६५ धूम्रपान— " "
६६ सिनेमा और हम— " "
६७ दयानन्द कौन—देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ।
६८ कृण्वन्तोस्वयमार्यम—प्रेमकुमार पाण्डेय ।
६९ चाय भयंकर विष—जगदीश चन्द्र ।
७० मुझे मेरा धर्म क्यों प्यारा है—ज. विद्याथा
७१ ईश्वर सब जगह है—विष्णु दयाल जी ।
७२ ईश्वर में अविश्वास क्यों—रामचन्द्र देहलवी ।
७३ चरित्र निर्माण—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
७४ यज्ञोपवीत महत्व—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
७५ सूर्य और चन्द्र ग्रहण—हरिदेव शास्त्री ।
७६ नास्तिकों को सन्देश—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
७७ वैदिक धर्म ही क्यों—हरिदेव शास्त्री ।
७८ विद्यार्थी और सदाचार—पं० रामचन्द्र देहलवी ।

गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क देहली—६

कृषि सम्बन्धी देहात-सुधारक पुस्तकें

१.	आधुनिक कृषि विज्ञान	६)	३२.	तम्बाकू की खेती	।।)
२.	आलू की खेती	।।।)	३३.	पपीते की खेती	१।।)
३.	टमाटर की खेती	।।)	३४.	खेती बाड़ी	१।।)
४.	गोभी की खेती	।।)	३५.	फलों की खेती	३।।)
५.	जीरा, धनियाँ, अजवायन	।।।)	३६.	तरकारी सागभाजी खेती	३।।)
६.	तरकारियों की खेती	१।।)	३७.	खेती और ट्रैक्टर	६)
७.	अच्छे बीज	।।)	३८.	किचन गार्डन	१।।।)
८.	अच्छी खाद	२।।	३९.	ट्यूब वैल गाइड	३।।)
९.	कपास की खेती	१)	४०.	ट्रैक्टर प्राइमर	१।)
१०.	फूल फुलवारी	२।)	४१.	पशुओं का इलाज	६)
११.	गन्ने की खेती	।।।)	४२.	पोल्ट्री फार्मिंग	४)
१२.	धान की खेती	१।।)	४३.	कमर्शियल पोल्ट्री	४)
१३.	सन्तरे की बागवानी	२।।)	४४.	पोल्ट्री सर्जन	४)
१४	आम की बागवानी	३)	४५.	फल संरक्षण	२।।)
१५.	तिलहन की खेती	।।=)	४६.	मकई (मक्का) खेती	१।)
१६.	सोयाबीन खिसारी	।)	४७.	खीरा तरबूज की खेती	१।।)
१७.	खेती की तैयारी	२।)	४८.	चाय की बागवानी	१।।)
१८,	फसल रक्षक औषधियां	२।)	४९.	अफीम की खेती	१।।)
१९.	फलव्याधियों कीरोकथाम	१।।)	५०.	किसानी लोक कथायें	२।।)
२०.	उन्नत सिंचाई	२)	५१.	कलम पैबन्द लगाना	१।।)
२१.	भारतीय कृषि कहावतें	४)	५२.	हल्दी की खेती	१।।)
२२.	गेहूं की खेती	३)	५३.	कत्थे की खेती	१।।)
२३.	लाख की खेती	।।।=)	५४.	पान की खेती	१।।)
२४.	प्याज खेतीकी खेती	१।)	५५.	चने की खेती	१।।)
२५.	जौ की खेती	।।।=)	५६.	बाजरे की खेती	१।।)
२६.	मेंहदी की खेती	।।।)	५७.	मटर की खेती	१।।)
२७.	नीबू सन्तरा माल्टा	२।)	५८.	हैण्डबुक ऑफ पोल्ट्री	१०)
२८.	मूंगफली की खेती	१)	५९.	खेती और बागवानी	३)
२९.	मिर्च की खेती	१।)	६०.	तोरी लौकी की खेती	१।।)
३०.	बीज की तैयारी	१।।)	६१.	खीरा ककड़ी तरबूज खरबूजे की खेती	१।।)
३१.	मसालों की खेती	२)			

गवर्नमेंट एग्रीकल्चर इन्स्टीटयूटों, ग्राम पंचायतों, स्कूललाइब्र रियों। पुस्तकालयों बेसिक ट्रेनिंग सैन्टरों तथा अधिकांश सरकारी लाइब्र रियों संस्थाओं में खरीदा जाने वाला कृषि सम्बन्धी

६१ पुस्तकों का सैट

वैज्ञानिक ढंग से अधिक खेती करके सरकारी इनाम प्राप्त करें

फलों की खेती (फलदार बागवानी) ले० राजेश गुप्त जिसमें हर प्रकार के फलदार पेड़ों जैसे आम, अमरूद, शहतूत, लौकाट, सतरा आदि सैकड़ों फलों के पेड़ों को लगाने के तथा उनसे अधिक फल पैदा करने के साइन्टिफिक ढंग लिखे गए हैं मू० ३।।) साढ़े तीन रु० डाक व्यय १)

अपने बंगले, कोठी, गुवाड़, खेत इत्यादि में हरी और ताजा सब्जी पैदा करें

शाक भाजी तरकारी की खेती

(लेखक राजेश गुप्त)

जिसमें देशी तथा विदेशी दोनों प्रकार की तरकारियों का बोना, जमीन की जाँच करना खाद से ज्यादा फसल तैयार करना बिना मौसम की तरकारी पैदा करने के साइन्टिफिक नियम फसलव्याधियों की रोक थाम के तरीके और हरप्रकार की सब्जी जैसे आलू, अदरक, अरबी, टिन्डे, बाकला, सीताफल, (पेठा) बन्दगोभी, मूली, बैंगन, भिन्डी, तोरी, घिया, प्याज, पालक, पोदीना टमाटर, धनियाँ खीरा, ककड़ा, तरबूज, फूल गोभी, चुकन्दर, खरबूजा, जीरा, सिंघाड़ा, सौंफ, अजवायन, सेम शरदा शलगम, सकरकंदी, करेला आदि सब्जी बोना और उसके लिए पूरी बातें इस पुस्तक में पढ़कर चाहे चाहे आप खेती करिये या माली को समझाइयें।

मूल्य केवल ३।।) डाक व्यय १)

सावधान! जमीन सोना उगल रही है

आधुनिक कृषि विज्ञान

खेती बाड़ी, फूल-फुलवाड़ी तथा बागवानी पर ७५२ पृष्ठों का ग्रन्थ (ले.- रामेश्वर अशांत)

इसमें अनाज दलहन, तिलहन फूल-फुलवाड़ी साग-भाजी तथा फलों की बागवानी के हर विषय जैसे जुताई, सिंचाई, खाद व फसल संरक्षण आदि सभी आवश्यक बातों को अगणित छोटे-बड़े सुन्दर चित्रों द्वारा समझाया गया है यह भारत के किसान को मालदार बनाने के लिए तथा अधिक फसल उपजा कर सरकारी इनाम प्राप्त करने वाली खोजपूर्ण पुस्तक है। मूल्य ६) छः रुपये डाक व्यय १।।) पृथक।

केवल डाक खर्च वास्ते चार आने (पच्चीस नये पैसों) का टिकट लिफाफे में भेजकर

हजारों पुस्तकों का बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगायें

देहाती पुस्तक भण्डार (V. P.) चावड़ी बाजार दिल्ली

फोन नं०- २००३०

नोट—पुस्तक खरीदते समय हमारा पता अवश्य देखलें।

गोविन्दराम हासानन्द द्वारा सम्पादित मुद्रक और प्रकाशक जय्यद प्रेस, बल्लीमारान देहली में छपवा कर वेदप्रकाश कार्यालय, नई सड़क, देहली से प्रकाशित किया।

ओ३म्

वेद प्रकाश

वेद प्रचार के सम्बन्ध में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब
का आर्य समाजों व आर्य संस्थाओं को

विशेष आदेश

आर्य समाजों तथा संस्थाओं को चाहिये कि
ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों की एक-एक
प्रति अपने वाचनालयों (लायब्रेरियों)
में अवश्य रखें।

निम्न ऋषि कृत ग्रन्थ हम से मंगावें,

ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका	२॥)
सत्यार्थ प्रकाश	१।=)
संस्कार विधि	॥=)

'दयानन्द ग्रन्थ संग्रह' जिसमें उपरोक्त तीन पुस्तकें छोड़कर
बाकी ऋषिकृत २० पुस्तकें संगृहित हैं मूल्य ४॥)

आर्य साहित्य की सभी पुस्तकें हमारे यहां मिलती हैं
जो आवश्यक हों मंगावें, बड़ा सूचीपत्र बिना मूल्य मंगावें

गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क देहली

हैजे इत्यादि भीषण संक्रामक रोगों से

बचने के लिए

आर्ष प्रणाली द्वारा वैदिक रीत्यनुसार शास्त्रोक्त विधि से तय्यार की हुई रोग एवं कीटाणु नाशक आनंद फार्मेसी द्वारा निर्मित

शुद्ध हवन सामग्री

का प्रयोग कीजिये

यह सुगंधित हवन सामग्री देव पूजन के लिए पवित्र एवं उपयोगी है। इससे वायु शुद्ध होती है और दूषित रोगों के कीटाणु नष्ट होते हैं। उपयोग करने से सारा गृह सुवासित हो जाता है। विवाहों, यज्ञों, पर्वों, सामाजिक अधिवेशनों में व्यवहार करने के लिए सर्वोत्तम है नमूना मुफ्त मंगाइए। विस्तृत योजना नुसार शास्त्रोक्त प्रमाणित हवन सामग्री तय्यार करने का भारतवर्ष का सबसे बड़ा कारखाना

आनन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी

स्थान व पो० भोगांव, जिला-मैनपुरी।

R/E कर्ण रोग नाशक तैल G/D

कान की सभी बीमारियों से छुटकारा पाने के लिए 'कर्ण रोग नाशक तेल' प्रयोग करें। इससे कान बहना, शब्द होना, कम सुनना, दर्द होना, खाज आना, सांय-सांय होना, मवाद आना, सीटी सी बजना, आदि शीघ्र आराम हो जाते हैं एक बार अवश्य मंगाकर परीक्षा करके देखिए। मूल्य १ शीशी १।), पैकिंग पोस्टेज १॥), तीन दर्जन पर खर्चा फ्री और १५ शीशी कमीशन में अधिक देकर एजेन्ट बनाते हैं। कुछ निश्चित समय तक, चार शीशी एक साथ मंगाने से खर्चा फ्री, शीघ्रता कीजिये।

पता—कार्यालय 'कर्णरोग नाशक तैल'

२६३ संतो मालन मार्ग

नजीबाबाद (उ० प्र०)

NAJIBABAD U. P.

श्री आनन्द स्वामी जी की नई पुस्तक
'आनन्द भगवत् कथा अर्थात् सत्यनारायण व्रत कथा'

पौराणिक पण्डित जो सत्यनारायण की कथा सुनाते हैं उसमें केवल यही सुनाते हैं कि इस कथा को सुनने से एक आदमी स्वर्ग गया और दूसरा आदमी जिसने नहीं सुनी उसको नर्क मिला। वह सत्यनारायण की कथा क्या है यह नहीं बताते।

श्री स्वामी जी ने वेद पुराण, उपनिषद्, गीता तथा अन्य कई धार्मिक ग्रन्थों को उद्धृत करते हुए सत्यनारायण की असली कथा लिखी है सत्यनारायण कौन है? उस कथा को सुनने से जो स्वर्ग मिलता है वह क्या है? सत्यनारायण का आदि और अन्त नहीं तब उसकी अनन्त कहानी क्या है? यह इस पुस्तक में आपको ऐसे मीठे और आकर्षक शब्दों में मिलेगी कि देर तक उसका चित्र हृदय से न मिट सकेगा। एक प्रति का मूल्य ॥=) मात्र है। १२ प्रतियों के लिए ७॥) भेजें।

श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज

लेखक की अन्य पुस्तकें—तत्त्वज्ञान मूल्य ३), प्रभुभक्ति मूल्य १॥), प्रभुदर्शन मूल्य २॥) । एक ही रास्ता मू० ॥।), आनन्द गायत्री कथा मू० ॥=), भगवान शंकर और दयानन्द मू. ।=

गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क देहली

॥ ओ३म् ॥

वे द प्र का श

सम्पादक—गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष—७ : आश्विन २०१५ अक्तूबर १९५८ : वार्षिक मूल्य २॥)
अंक—३ : दयानन्दाब्द १३४ आश्विन १८८० शाके : विदेशों से ५ शि०

वेद सुधा

समानी व आकूतिः
समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो
यथा वः सुसहासति ॥ ऋ० १०।१९१।४॥

पदानि—समानी । वः । आऽकूतिः । समाना । हृदयानि । वः ।
समानं । अस्तु । वः । मनः । यथा । वः । सुऽसह । असति ॥४॥

अन्वयः—वः आकूतिः समानी । वः हृदयानि समाना [समानानि] । वः मनः समानं अस्तु । तथा वः सुसह असति ।

अर्थ—[वः आकूतिः] आपका संकल्प [समानी] समान हो [वः हृदयानि समाना= समानानि] आपके अन्तःकरण समान हों । [वः मनः समानं] आपका मन समान [अस्तु] हो, [यथा] जिससे [वः] आप सब [सु-सह] उत्तम प्रकार से साथ साथ [असति] मिलकर रह सकें—एक बन कर कार्य कर सकें ।

भावार्थ—सब का सब के लिए समान हितकारी निश्चित प्रस्ताव हो, उसमें किसी प्रकार की विषमता न रहे । आपके हृदय समान रीति से परस्पर हितकारी विचार करते रहें, कभी विरोधी भाव न उठें । आपका मन सबका हित करने का समान विचार सदा धारण करे, विरोधी विचार वहां न रहें । इस प्रकार आप सब की एकता सुगमता से हो और आपस में कभी विरोध न हो ।

★ श्राद्ध मीमांसा ★

(ले० जगदीशचन्द्र विद्यार्थी, देहली)

श्राद्ध क्या है ? श्राद्ध का अर्थ है सत्य का धारण करना अथवा जिसको श्रद्धा से धारण किया जाये। श्रद्धापूर्वक मन में प्रतिष्ठा रख कर विद्वान, अतिथि, माता, पिता, आचार्य आदि की सेवा करने का नाम श्राद्ध है।

श्राद्ध जीवित माता पिता, आचार्य, गुरु आदि पुरुषों का ही हो सकता है। मृतकों का नहीं। मृतकों का श्राद्ध तो पोपों की लीला है। वैदिक युग में तो मृतक श्राद्ध का नाम भी नहीं था। मृतक श्राद्ध का इतिहास बहुत अर्वाचीन है। महाभारत के अनुशासन पर्व के अध्याय ९१ व में इस सम्बन्ध में एक अख्यायिका का उल्लेख है जिससे यह स्पष्ट रूप से प्रमाणित हो जाता है कि यह प्रथा महाभारत काल से आरम्भ हुई। आख्यायिका इस प्रकार है—

महाराज युधिष्ठर ने भीष्म पितामह से प्रश्न किया कि मृतक श्राद्ध को कब और किसने चलाया। उन्होंने उत्तर दिया कि दत्तात्रेय निमी का बड़ा सौभाग्यशाली श्रीमान नामक पुत्र हुआ। बहुत वर्ष का दुष्कर तप करके उसका पुत्र मर गया। शास्त्र मर्यादा के अनुसार निमी राजा ने शौच स्नान करके भी पुत्र के लिये अत्यन्त शोक किया। फिर उसने अपने मन से श्राद्ध की सामग्री कल्पना करके अमावस्या के दिन ब्राह्मण भोजन कराया तथा अपने पुत्र के नाम गोत्र आदि कह कर पिण्डदान भी किया। परन्तु इस अवसर पर उसने धर्म भंग देख कर पश्चाताप किया कि—

अकृतं मु नभिः पूर्वं किं मयेदमनुष्ठितम्।
कथं नु शापेण न मां देहयुर्ब्राह्मणाइति॥

पहले मुनियों ने ऐसा कभी नहीं किया, मैंने यह क्या कर दिया ? कहीं ब्राह्मण मुझे अपने शाप से न जला डालें।

इस आख्यायिका से स्पष्ट सिद्ध है कि मृतक श्राद्ध की प्रथा निमी के समय से प्रचलित हुई। अतः यह प्रथा सर्वथा अर्वाचीन और अवैदिक है क्योंकि चारों वेदों में श्राद्ध शब्द कहीं भी नहीं है।

वेद तो बड़े स्पष्ट शब्दों में माता पिता, गुरु तथा बड़ों की सेवा का आदेश देता है, यथा—

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः
(अथर्व ३।३०।२)

पुत्र पिता के अनुकूल कर्म करने वाला और माता के साथ उत्तम मन से रहने वाला हो।

मृतक के लिये बर्तन देने चाहिएं और वे वहां पहुंच जायेंगे, मृतक का श्राद्ध होना चाहिये तथा इस प्रकार होना चाहिए और वह वहां पहुँच जायगा ऐसा किसी भी वेद मन्त्र में विधान नहीं है।

श्राद्ध जीवितों का ही हो सकता है, मृतकों का नहीं। पितर संज्ञा भी जीवितों की ही होती है मृतकों को नहीं। वैदिक धर्म की इस सत्यता को सिद्ध करने के लिए सबसे पहले पितर शब्द पर विचार किया जाता है।

पितर 'पा रक्षेण' धातु से बनता है अतः पितर का अर्थ पालक पोषक, रक्षक तथा पिता होता है। जीवित माता पिता ही रक्षण और पालन पोषण कर सकते हैं। मरा हुआ दूसरों की रक्षा तो क्या करेगा उससे अपनी रक्षा भी नहीं हो सकती। अतः मृतकों को पितर मानना मिथ्या

तथा भ्रममूलक है। वेद, रामायण, महाभारत, गीता, पुराण, ब्राह्मण ग्रन्थ तथा मनुस्मृति आदि शास्त्रों के अवलोकन से यह स्पष्ट विदित हो जाता है कि पितर संज्ञा जीवितों की है मृतकों की नहीं। कुछ प्रमाण यहां उद्धृत किये जाते हैं—

आच्या जानु दक्षिणतो निषद्य दं नो हविरभिगृणन्तु विश्वे ॥ (अथर्व १८।१।५२)

हे पितरो ! आप घुटने टेक कर और दाहनी ओर बैठ कर हमारे इस अन्न को ग्रहण करें। इस मन्त्र का अर्थ करते हुए सायण, महोधर उव्वट और ग्रिफिथ साहब सब घुटने झुका कर वेदी के दक्षिण ओर बैठना बता रहे हैं। क्या मुर्दों के घुटने होते हैं ? इस वर्णन से भली भांति प्रकट हो जाता है कि जीवित प्राणियों की पितर संज्ञा है।

अपहूता पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु। तऽआगमन्तु तऽइह श्रुव-त्वधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ॥ (यजु० १९।५७)

हमारे द्वारा बुलाये जाने पर सोमरस का पान करने वाले पितर प्रतिकारक यज्ञों तथा हमारे कोशों में आयें। वे पितर लोग हमारे वचनों को सुने, हमें उपदेश दें तथा हमारी रक्षा करें। इस मन्त्र में महीधर तथा उव्वट ने इस बात को स्वीकार किया है कि पितर जीवित होते हैं, मृतक नहीं, क्योंकि मृतक न आ सकते हैं, न सुन सकते हैं, न उपदेश कर सकते हैं और न रक्षा कर सकते हैं।

शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्र नश्चक्रा जरसंतनुनाम् । पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो सध्यारी-रिषतायुर्गन्तो ॥ ऋ० १।८९।९

माता पिता कहते हैं जहां हमारे बुढ़ापे में हमारे पुत्र पितर हो जायें तब तक हे परमात्मन् आप हमारी आयु का नाश न कीजिये अर्थात् जब तक हमारे पुत्र पितर हों तब तक हम जीवित रहें। अब तनिक विचार कीजिये के संसार में ऐसे कौन से अभागे माता पिता हैं जो प्रभु से ये प्रार्थना करें कि हमारे पुत्र हमारी आंखों के आगे मर जायें। अतः इस मन्त्र से सिद्ध होता है कि पुत्र हो जाने पर पुत्रों की भी पितर संज्ञा होती है।

वेद के प्रमाणों से अपने कथन की सिद्धि करने के पश्चात् इसकी पुष्टि के लिये अन्य शास्त्रों से कुछ और प्रमाण दिये जाते हैं—

मृत्याः पितरः (शतपथ २।१।३।४)
मनुष्य पितर हैं।

विशः पितरः (शतपथ १३।४।३।६)
प्रजायें ही पितर हैं।

गृहणां हि पितरः ईशते (शतपथ २।६।१।४०)
घरों के स्वामी पितर हैं।

देवा वा ऐते पितरः (गोपथ ३।१।२४)
विद्वान ही पितर हैं।

बाल्मीकि रामायण, गीता तथा पुराणों से भी यही सिद्ध होता है कि जीवितों का नाम पितर है मृतकों का नहीं।

ज्येष्ठो भ्राता पिता वापियश्च विद्यां प्रयच्छति।
त्रयस्ते पितरो ज्ञेयाः धर्मे चपथि वर्तिनः ॥
[बाल्मीकि रामायण]

धर्म पथ पर चलने वाला बड़ा भाई, पिता और विद्या देने वाला, ये तीनों पितर जानने चाहिएं।

विद्या दातान्नदाता भयस्त्राता च जन्मदः।
कन्या दाता च वेदोक्ता नराणं पितर स्मृताः ॥
[ब्रह्म० वै० ग ३।८]

विद्या देने वाला, अन्न देने वाला, जन्मदाता, कन्या देने वाला तथा भय से रक्षा करने वाला ये मनुष्यों के पितर कहलाते हैं।

चाणक्य नीति में भी ऐसा ही वर्णन है—

जनिता चोपनेता च यस्तुविद्यां प्रयच्छति ।
अन्नदाता भयस्त्राता पञ्चैता पितरः स्मृता ॥

इस सम्बन्ध में गीता का एक श्लोक भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है जिस समय दोनों सेनाएं युद्ध के लिए मोर्चा लगाये हुए खड़ी थी उस समय अर्जुन ने योगेश्वर कृष्ण से कहा, "मेरा रथ दोनों सेनाओं के बीच में खड़ा कर दो।" अर्जुन के ऐसा कहने पर कृष्ण ने अर्जुन का रथ दोनों सेनाओं के बीच में खड़ा कर दिया, तब—

तत्रा पश्यत्स्थितान्पार्थ पितृनथ पिता महान् ॥
[गीता० १।२६]

अर्जुन ने वहां खड़े हुए पितर और पितामहों को देखा। यहां तो महर्षि व्यास ने पौराणिक मण्डल का कमर ही तोड़ दी है, क्योंकि जीवित पितर ही खड़े हो सकते हैं, मरे नहीं।

श्वेताश्वतरोपनिषद् के इस कथन के अनुसार—

नैव स्त्री न पुंमानेष न चैवायं नपुंसकः ।
यद्यच्छरीर मादत्ते तेन तेन स रक्ष्यते ॥
[५।१०]

यह आत्मा न स्त्री है न पुरुष है और नहीं यह नपुंसक है किन्तु जिस-जिस शरीर को ग्रहण करता है उससे लक्षित किया जाता है।

मरने के पश्चात इसको पितर संज्ञा कैसे सम्भव हो सकती है।

इस सम्बन्ध में मनुस्मृति का निम्न श्लोक भी विशेष महत्व का है—

वसून्वदन्ति तु पितृन्रूद्रांश्चैव पिता महान् ।
प्रपितामहाश्चादित्या न्श्रुतिरेषा सनातनी ॥
(३।२८४)

वसुओं को पितर कहते हैं, रुद्रों को पितामह और आदित्यों को प्रतिपितामह कहते हैं।

इस प्रकार के और भी अनेक प्रमाण हैं। इनसे यह स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि मृतकों की पितर संज्ञा नहीं हो सकती।

श्राद्ध में कैसे व्यक्तियों को भोजन खिलाना चाहिए, इस विषय पर विचार करने पर पता चलता है कि मृतक श्राद्ध हो ही नहीं सकता।

उदाहरणार्थ—

यावतो ग्रसते ग्रासान् हव्यकव्येष्वमन्त्रवित् ।
तावतो ग्रसते प्रेत्य शूल ऋषि अयोगुडान ॥
(मनु० ३।१३३)

वेद के न जानने वालों को जो भोजन खिलाता है अथवा जो खाता है उन दोनों के मुख में उतने ही गर्म लोहे के शूल ठूंसे जायेंगे।

चिकित्सकान्देवलान्मांसविक्रयिणस्तथा ।
विपणेन च जीवन्तो वर्ज्याः स्युर्हव्यकव्ययोः ॥
(मनु० ३।१५२)

वैद्य, पुजारी, मांस का बेचने वाला वाणिज्य से जीने वाला, इनको श्राद्ध में भोजन नहीं खिलाना चाहिये।

इसी प्रकार एक लम्बी लिस्ट दी हुई है जिसके अनुसार पुजारी, वैद्य, ज्योतिषि, वेद न जानने वाले, दुकानदार दस्तकार आदि को भोजन खिलाने का निषेध ही नहीं अपितु खिलाने तथा खाने वालों को दण्ड का विधान किया गया है। मृतक श्राद्ध करने वाले पौराणिकों को चाहिये कि दण्ड से बचने के लिए इस तर्कशून्य वेद शास्त्र विरुद्ध अवैदिक मर्यादा को सर्वथा त्याग दें। एक तो श्राद्ध करना और उसके फलस्वरूप फिर दण्ड भोगना यह कहां की बुद्धिमता है।

यदि दुर्जनतोष न्यायवश मृतक श्राद्ध को स्वीकार कर लिया जाये तो इसमें अनेक दोष

होंगे। सबसे पहला दोष कृत हानि का होगा। कर्म कोई करे और फल किसी को मिले उसको कृत हानि कहते हैं। पुत्र तो बी० ए० की परीक्षा दे और डिगरी बाप को मिल जाये! परिश्रम कोई करे और फल किसी को मिले। दान पुत्र करे और फल माता पिता को मिले तो कृत हानि का दोष आयेगा।

दूसरा दोष अकृताभ्यागम का होगा। कर्म किया नहीं और फल प्राप्त हो जाये उसे अकृताभ्यागम् कहते हैं। मनुष्य के न्याय में तो ऐसा हो सकता है कि कर्म कोई करे और फल किसी को मिल जाये परन्तु परमात्मा के न्याय में ऐसा नहीं हो सकता। पौराणिक कहते हैं कि फल को अर्पण करने के कारण दूसरे को मिल जाता है। परन्तु यह बात ठीक नहीं। बेटा किसी व्यक्ति को मार कर उसका फल पिता को अर्पण कर दे तो क्या पिता को फांसी हो जायगी। यदि ऐसा होने लग जाये तब तो लोग पाप का संकल्प भी पौराणिक पण्डितों को ही कर दिया करेंगे। इन दोषों के कारण भी मृतक श्राद्ध सिद्ध नहीं होता।

अब प्रश्न यह है कि मृत पितरों को भोजन कैसे पहुंचता है। मरकर जीव कहीं जन्म लेता है, जैसा गीता में कहा गया है—

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।

तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देहि॥ (गीता २।२२)

जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को छोड़ कर नये वस्त्रों को ग्रहण कर लेता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीर को छोड़ कर नयें शरीरों को प्राप्त होता है।

अब विचारणीय बात यह है कि उन्हें भोजन किस प्रकार मिलेगा। भोजन वहां पहुंचता है या पितर लोग यहां करने आते हैं। यदि यह कहो कि वहीं पहुँचाता है तो प्रत्यक्ष के विरुद्ध है, क्योंकि तृप्ति ब्राह्मण की होती है। यदि भोजन पितरों को पहुँच जाता तब तो वह सैकड़ों घरों में भोजन कर सकता था। मान लो भोजन वहां जाता है तो प्रश्न यह है कि वही सामान पहुँचता है जो पण्डित जी को खिलाया जाता है या पितर जिस योनि में हों उसके अनुरूप मिलता है। यदि वही सामान हो और पितर हो चींटी तो दब कर मर जायगी और यदि पितर हाथी हो तो उसके क्या असर होगा यदि योनि के अनुसार मिलता है तब यदि पितर मर कर सुअर बन गया हो तो क्या उसको विष्ठा के रूप में भोजन मिलेगा? यह कितना अन्याय और अनाचार है। ब्राह्मणों को खीर और पूरी खिलानी पड़ती है और उसके बदले मिलता है मल। इस सिद्धान्त के अनुसार श्राद्ध करने वालों को चाहिए कि कभी ब्राह्मणों को घास खिलाये कभी मांस कभी कंकर पत्थर और कभी अग्नि क्योंकि चकोर का यही भोजन है। योनियां अनेक हैं, और प्रत्येक का भोजन भिन्न-भिन्न होता है। अतः बदल-बदल कर खाना खिलाना चाहिये क्योंकि पता नहीं पितर किस योनि में हैं।

अब दूसरे पक्ष पर भी कुछ विचार कर लें। पितर भोजन करने यहां आते हैं। जब मरे हुए मनुष्य का सम्बन्धी ब्राह्मण को निमन्त्रण देता है तो पितर प्रसन्न होते हैं और वे ब्राह्मण के पेट में आकर बैठ जाते हैं।

उदरस्थः पिता तस्य वाम पार्श्वेपितामहः।
प्रपितामहो दक्षिणतः पृष्ठठः पिण्ड भक्षकः॥

श्राद्ध करने वाले का पिता पेट में बैठ कर,

दादा बाईं कोख में बैठ कर परदादा दाईं कोख में बेठ कर और पिण्ड खाने वाला पीठ में बैठ कर भोजन करता है। पौराणिको। यह भोजन कराने का क्या तरीका है? पहले पितर खाते हैं या ब्राह्मण? झूठा कौन खाता है? क्या पितर ब्राह्मण के मल और खून का भोजन करते हैं?

एक बात और पितर शरीर सहित आते हैं या बिना शरीर के? यदि शरीर के साथ आते हैं तब तो पेट में उतनी जगह नहीं कि सब उसमें बैठ जायं और साथ आते किसी ने देखा भी नहीं। अतः शरीर को छोड़ कर ही आते होंगे। पितरों के आने जाने में, भोजन परोसने में तथा खाने आदि में समय तो लगता ही है पितर वहां जो शरीर छोड़ कर आये हैं उसको भस्म कर दिया जायगा, इस प्रकार सृष्टि बहुत जल्दी नष्ट हो जायगी। मनुष्यों की आयु दो तीन मास से अधिक नहीं होगी जब क्वार का महीना आयेगा तभी मृत्यु हो जायगी। अतः श्राद्ध कदापि नहीं करना चाहिये।

इस प्रकार यह स्पष्ट सिद्ध है कि श्राद्ध जीवित माता पिता का ही हो सकता है। महर्षि दयानन्द का भी यही अटल सिद्धान्त है। मृतक श्राद्ध अवैदिक और अशास्त्रीय है। यह तर्क से सिद्ध नहीं होता। यह स्वार्थी टका पंथी और पौराणिकों का माया जाल है। सावधान! पौराणिक लैटर बक्स में छोड़ा हुआ पार्सल अपने स्थान पर नहीं पहुँचता। अन्त में मुझे कविवर 'शंकर' की एक कविता याद आ रही है, जिसे लिखे बिना नहीं रहा जाता—

जीवन बिताय जाय बैठत हैं जीव जहां,
'शंकर' वहां की अकथ कहानी है।
रेल की न रेल पेल तार तड़का को नाय,
डाक डाकियन की न जानी है न आनी है॥
भेजत हो पिण्डपट पानी भूत प्रेतन को,
ऐसो रोति आपने पुरोहित जी जानी है।
सोई विधि हमेहु बताओ महाराज आज,
व्यास जी के पास एक पतिया पठानी है॥

॥ समाप्त ॥

———

★ वृहदारण्यक उपनिषद् कथामाला ★

स्वाध्याय के लिए उत्तम पुस्तक है। मूल्य ३) रुपये केवल, वेदप्रकाश के ग्राहकों को डाक खर्च सहित केवल २॥) रुपये में अवश्य मंगाकर स्वाध्याय करें।

गोविन्दराम हासानन्द आर्य साहित्य भवन, नई सड़क देहली।

आचार्य चतुरसेन शास्त्री मुकदमा हार गये

सेशन में अपील भी नामन्जूर

हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक, देहली शहादरा निवासी आचार्य चतुरसेन शास्त्री अनेक पुस्तकों के लेखक तथा साहित्य क्षेत्र में प्रसिद्ध हैं। प्रकाशकों से उनका कैसा व्यवहार है? इनके सम्पर्क में जो भी प्रकाशक आया होगा वे अवश्य जानते होंगे। शायद ही कोई प्रकाशक बचा हो जिस पर इसने मामला मुकदमा न किया हो। एक ताजा मामले की कहानी सुनिये।

दिल्ली के प्रसिद्ध साहित्य प्रकाशक श्री लाला हरनामदास जी गुप्त मालिक "साहित्य प्रकाशन मण्डल" ने आज से प्राय: ३५-४० वर्ष पूर्व से जब चतुरसेन को कोई जानता भी नहीं था इन्होंने चतुरसेन की कई पुस्तकें प्रकाशित कर हिन्दी जगत् में इनको प्रसिद्धि प्राप्त कराई। अब जब कि चतुरसेन की पुस्तकें और प्रकाशक भी प्रकाशित करने को तैयार हुए तो वे पुस्तकें भी जिसके साधिकार प्रकाशक लाला हरनामदास जी थे दूसरों से रुपये लेकर प्रकाशित कराने लगे।

१९४९ में दिल्ली के गौतम बुक डिपो ने अनेक पुस्तकों के साथ "धर्म के नाम पर" का आठवां संस्करण प्रकाशित किया इधर हरनामदास जी ने भी उन्हीं दिनों इसी पुस्तक का ८वां संस्करण प्रकाशित किया। क्योंकि उनके पास भी इसका अधिकार था। इस पुस्तक की कुछ प्रतियों के मुख्य पृष्ठ पर हरनामदास जी ने "पुस्तक मिलने का पता—गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क देहली" पर छाप दिया। बस इसी को आधार मान कर १९५५-५६ में पुस्तक प्रकाशन के ६-७ वर्ष बाद मुकदमा दायर किया कि गोविन्दराम हासानन्द ने लाला हरनामदास गुप्ता से साथ मिल कर साजिश करके बिना मेरी आज्ञा के और बिना कुछ लायलटी दिये यह पुस्तक छापी है" मुकदमा दो वर्ष तक चलता रहा, आखिर मुकदमा खारिज हो गया बाद इसके चतुरसेन ने सेशन में अपील की वहां भी वर्ष १॥ वर्ष चक्कर लगाते-लगाते गत ता० २४-९-५८ को सेशन जज श्री साहनी साहब ने "अपील नामन्जूर" कर दी।

सटिप्पण सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध में सूचना

—❀—

श्री पं० अमरसिंह जी द्वारा जो सम्पादन कार्य हो रहा है उस सम्बन्ध में स्वयं प्रसंशित पण्डित जी ने सूचित किया है कि—

"यह जो कुछ लिखा गया है यह सटिप्पण सत्यार्थ प्रकाश नहीं सत्यार्थ प्रकाश मण्डल और सत्यार्थ प्रकाश भाष्य है। मैंने हृदय खोल कर वह प्रमाण इसमें रख दिये हैं जिन्हें बहुत से व्याख्याता और पण्डित तो जानते ही नहीं हैं और यदि कोई उनमें से कुछ प्रमाणों को जानते भी हैं तो किसी को बताना नहीं चाहते हैं।

११वें समुल्लास (भाष्य-टिप्पण) लिखने को शेष है। आशा है शीघ्र छपना आरम्भ करदेंगे।

पुस्तक मोटे टाईप में सुन्दर छपेगी, कागज साईज, पुस्तक का आकार, जिल्द वगैरह सब सुन्दर होगा, शीघ्रता का कार्य नहीं, प्रतिक्षा करिये।

भवदीय

गोविन्दराम हासानन्द

मैं आर्य समाजी कैसे बना ?

श्रीयुत ला० रामप्रसाद जी बी० ए०

मेरा आर्य समाजी होना पारिवारिक प्रभाव का पुण्य पुरस्कार है। मेरे स्वर्गीय भ्राता बाबू मदन सिंह जी आर्य समाज लाहौर तथा आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री थे। जब डी० ए० वी० कालिज की स्थापना हुई तो इसके मन्त्री भी ये ही बने इस कारण हमारे गृह पर सामाजिक नेताओं का आना जाना रहता था। मैं भी पास बैठा हुआ वार्तालाप सुना करता था। इस प्रकार शनै-शनै सामाजिक बातों में मेरी रुचि हो गई। मैं डी० ए० वी० हाई स्कूल का सबसे पुराना विद्यार्थी हूँ। जिस दिन स्कूल खुला था मैं भी उसी दिन प्रविष्ट हो गया था। श्री लाला छबील-दास जी रईस हिसार का शुभ नाम पहला था, मेरा सातवां था। क्योंकि प्रारम्भ से मैंने डी० ए० वी० स्कूल में शिक्षा ग्रहण की इसलिये इस शिक्षा का भी मेरे जीवन पर प्रभाव पड़ा। भाई मदनसिंह जी के प्रभाव से हमारा पारिवारिक धर्म ही वैदिक धर्म हो गया था। इसलिये हमारा सामाजिक बनना स्वाभाविक था। मेरे पिता जी बड़े धर्म निष्ठ थे परन्तु चूंकि उन दिनों में समाज का प्रारम्भ ही था इसलिये वे वैष्णव धर्म के अनुयायी थे। मैं चूंकि लाहौर में अपने भाई के पास रहा करता था इसलिये मेरे जीवन पर भाई साहब का तथा डी० ए० वी० स्कूल की शिक्षा का ही प्रभाव पड़ा, पिता जी का नहीं।

पं० सिद्धगोपाल साहित्य वाचस्पति

की

सुप्रसिद्ध पुस्तक
बहिनों की बातें

का

पुरुष वर्ग के लिए रूपान्तर

मित्रों की बातें

प्रकाशित हो गई

"बहिनों की बातें" का आर्य जगत् ने अच्छा स्वागत किया था। विद्वानों ने मुक्त कंठ से इसकी प्रसंशा की थी। कन्या पाठशालाओं और गुरुकुलों के पाठ्य क्रम में निर्धारित रहती है। इसके आठ संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं इसी पुस्तक को पुलिंग में संशोधित करके पुरुष वर्ग के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं।

लड़कों को पुरस्कार में देने योग्य और उनको पाठ्यक्रम में पढ़ाने योग्य पुस्तक है। आज ही मंगावें। मूल्य १।)

गोविन्दराम हासानन्द

४४०८ नई सड़क, देहली।

आर्य समाजी ही मनुष्य है

[श्री राजेन्द्रजी , अतरोली, अलीगढ़]

श्री पं० रिक्खन लाल जी वानप्रस्थी, जिनका कि गत २६ अप्रैल १९५८ को अपने निवास स्थान बुलन्दशहर में देहावसान हो गया, आर्य समाज के दीवाने और ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त थे। आपके पिता ने ऋषि दयानन्द के दर्शन किये थे। जिनके उपदेशों से प्रभावित होकर वह वैदिक धर्मावलम्वी बन गये थे। अतएव पं० रिक्खन लाल को वैदिक धर्म की शिक्षा-दीक्षा पैत्रिक सम्पत्ति के रूप में उपलब्ध होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उनका जीवन सरल, सात्विक त्यागपूर्ण और तपोमय था। उनकी मृत्यु ८६ वर्ष की परिपक्वावस्था में हुई। अपनी एक मास की रुग्णावस्था से पूर्व वह सूर्योदय तक अपने नित्य नैमितिक संध्या, यज्ञादि कृत्यों से निवृत्त हो जाते थे। उनका अधिक समय स्वाध्याय और ईश्वर चिन्तन में ही व्यतीत होता था। वानप्रस्थ लेकर यद्यपि वह अपने पुत्र-पौत्रों के साथ ही रहे तथा उनकी गृह कार्यों में सर्वथा अनासक्ति रही। अपने पुत्र-पौत्रों की आलोचना वह विना किसी लाग लपेट के निःसंकोच होकर करते थे। वे जहां भी होते, आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों, वार्षिकोत्सवों एवं पर्वों में नियमित रूप से सम्मिलित होते थे।

मेरे निकट सम्बन्धी होने के कारण जब कभी मुझ से मिलते, बार-बार यही कहते—"पंडित जी! आर्य समाजी ही मनुष्य है।" यद्यपि इस वाक्य में दूसरों को संकुचित मनोवृत्ति व और साम्प्रदायिकता की गंध आयेगी, परन्तु है यह एक कटु सत्य उनके यह शब्द आज भी मेरे कानों में गूंज रहे हैं। जिसने आर्य समाज के पवित्र वैदिक सिद्धान्तों को हृदयंगम कर लिया है और तदनुकूल आचरण करता है, वास्तव में वही मनुष्य कहलाने का अधिकारी है—अन्य नहीं।"

उनका जीवन जैसा त्यागपूर्ण और तपोमय था, उनकी मृत्यु भी उसी के अनुरूप हुई। लगभग एक मास की गम्भीर रुग्णावस्था में निराहार रह कर उन्होंने कभी किसी शारीरिक कष्ट का अनुभव नहीं किया। मृत्यु से ३-४ दिन पूर्व तो उनके चेहरे पर बार-बार मुस्कराहट और कभी-कभी हास्य दृष्टिगोचर होता था। वेद पाठ और 'ओम् स्मरण' वाक्य उनके कर्णगोचर होते थे तो मधुर मुस्कान के साथ अट्टहास भी करते थे।

मृत्यु जीवन की कसौटी है जो इस परीक्षा में खरा उतरता है, वही खरा है। जिस विद्यार्थी ने पूरे वर्ष अपने पठन-पाठन में अनियमितता नहीं की उसको परीक्षा का क्या भय? उसे तो ऊपर की कक्षा में पहुँचने की प्रसन्नता ही होती है। ठीक इसी प्रकार जिस मनुष्य ने अपना जीवन धर्मानुकूल व्यतीत किया है, उसे मृत्यु का क्या भय? उसके लिए मृत्यु कष्ट का कारण न होकर सुख और प्रसन्नता की घड़ी है। पुराने जीर्ण शीर्ण शरीर को छोड़ कर नवीन शक्ति ग्रहण करने में दुख और किस लिए? अन्तिम घड़ियों में दुखी वही होते हैं, जिनका जीवन सांसारिक माया मोह में लिप्त रह कर धर्म विहीन रहा है। जिन्होंने धर्म का आश्रय लेकर अपने जीवन को पवित्र बनाया है, जिन्होंने संसार को साध्य न समझ कर अपवर्ग का साधन मात्र मान कर उसका उपभोग किया है, उनको मृत्यु से क्या भय?

स्वर्गीय पं० रिक्खन लाल जी ऐसी ही साधु वृति के तपस्वी थे, जिनकी मृत्यु एक पथ-प्रदीप के समान अपनी जीवन यात्रा को सुन्दर सुखद बनाने में हमारी सहायक हो सकती है।

ऐसी देव दुर्लभ-मृत्यु जिनके भाग्य में है, वे ही धन्य हैं और उन्हीं का जीवन सफल है। आइये हम ऐसी शिक्षाप्रद अन्तिम घड़ियों से कुछ सीखें।

गताङ्क से आगे—

॥ धर्म नगरी ॥

[श्री मदनजित आर्य्य वैदिक धर्म विशारद फिरोजपुरशहर]

सत्यार्थ प्रकाश के नवें समुल्लास केआधार पर एक मनोरञ्जक गाथा

आज हमारे जिज्ञासु महोदय की प्रसन्नता का कोई पारावार नहीं क्योंकि आज उसने मनुष्य जन्म के वास्तविक उद्देश्य विद्या अविद्या बन्ध मोक्षादि गम्भीर विषयों के ऊपर विचार सुनने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। अतः वह प्रातः ही अपनी तैयारी में लग गया। शीघ्र तैयार हो कर नवें "सरस्वती द्वार" की ओर चल पड़ा। इस द्वार का दृश्य तो अति मनोहारी था। विद्या की देवी सरस्वती का काल्पनिक चित्र विराजमान था। द्वार के ऊपर की ओर अति स्थूल अक्षरों में यह वेद मंत्र अंकित था—

विद्यां चाऽविद्यां च यस्तद्वेदोभय ँ सह।
अविधया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते॥
(यजु० ४०।१४)

जो मनुष्य विद्या तथा अविद्या दोनों को साथ ही साथ जानता है वह धर्मोपासना से मृत्यु को तर कर यथार्थ ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। इस वाह्य सुन्दर लेख को पढ़ कर हमारा नायक यात्री अति प्रफुल्लित हो जाता है। और भीतर प्रवेश करने के लिये अग्रसर हो जाता है। आगे क्या देखता है कि इस द्वार के भीतर वड़ी सभा लगी हुई है जिसमें विद्वान पण्डित श्रोताओं के प्रश्नों का उत्तर दे रहे हैं। यात्री भी मौन साध कर एक कोने में बैठ गया। जब इस प्रकार विद्या के लक्षण पण्डित वेद भानु जी समझा रहे थे तो एक उतावला व्यक्ति खड़ा होकर पूछने लगा कि पण्डित जी कृपया अविद्या के लक्षण तो बताइये। पण्डित जी हँसकर कहने लगे कि भाई मैं तो स्वयं ही यह बताने वाला ही था अच्छा हुआ कि आपने पूछ ही लिया। सुनो योग दर्शन में महर्षि पातञ्जल मुनि ने लिखा है। 'अनित्याशुचि दुःखानात्मसु नित्य शुचि सुखात्मस्यातिरविद्या" अर्थात् अनित्य अशुचि, दुख, अमात्मा यह चार प्रकार का विपरीत ज्ञान अविद्या है। जिज्ञासु ने पुनः खड़े होकर प्रश्न किया कि महाराज तनिक इसको विस्तार से समझाइये। पण्डित जी ने कहा देखो भाइयों जो मनुष्य अनित्य संसार और देहादि में नित्य अर्थात् जो कार्य जगत देखा सुना जाता है, सदा रहेगा, सदा ही है और योगबल से यही देवों का शरीर सदा रहता है वैसी विपरीत बुद्धि होना अविद्या का पहला भाग "अनित्य" है। अशुचि=मलमय शरीर, मिथ्या भाषण आदि अपवित्र को पवित्र समझना, अत्यन्त विषय सेवन दुःख को सुख समझना तथा जड़ में चेतन समझना यह अनात्मा को आत्मा समझना अविद्या है। इनसे उल्टे को नाम विद्या कहते हैं।

कर्म उपासना को अविद्या इस लिए कहते हैं कि यह वाह्य और अन्तर क्रिया विशेष तो है ज्ञान

विशेष नहीं है। अर्थात् बिना शुद्ध कर्म और परमेश्वर की उपासना के बिना मृत्यु दुःख से कोई पार नहीं होता। अब यहां एक प्रश्न उत्पन्न होता है कि जो जीव अधर्म अज्ञान में फंसा हुआ है वही वद्ध होता है और यह निमित्त से होता है स्वभाव से नहीं होता क्योंकि यदि स्वभाव से ही वद्ध होता तो यह कदापि मुक्त नहीं हो सकता। और जो नवीन वेदान्ती लोग ब्रह्म को ही सब कुछ जान कर यह कहते हैं कि वास्तविक रूप में जीव का शरीर में आना, कर्म करना इत्यादि स्वप्न की तरह मिथ्या है यह ठीक नहीं है क्योंकि जीव का स्वरूप अल्प होने से ही परमात्मा की व्यवस्थानुसार शरीर के साथ प्रकट होना, पापरूप कर्मों के फल भोग रूप बंधन में फंसना, दुःख से छूटने की इच्छा करना और मोक्ष की प्राप्ति करने की चेष्टा करना है, और जो लोग यह समझते हैं कि यह सब देह और अन्तः करण के धर्म है आत्मा के नहीं वह भी गलत समझते हैं क्योंकि देह और अन्तः करण जड़ है इसको दुःख सुख की प्राप्ति नहीं होती जैसे कि मृतक शरीर को जलाना या पानी में फेंकने से कोई सुख दुःख का भास नहीं होता। हाँ जीवात्मा के भीतर होने से ही इन में भी चेतनता आ जाती है। जीव कर्मों का कर्ता है यह शरीर तो साधन मात्र है जैसे तलवार दोषी नहीं होती चलाने वाला ही दोषी होता हैं। कर्मों का साक्षी तो परमात्मा है और जीव कर्त्ता भोक्ता है।

कई भाई यह भी कहते हैं कि जीव तो ब्रह्म का प्रतिबिम्ब मात्र है वह भूल जाते हैं कि प्रतिबिम्ब तो साकर पदार्थ का ही हो सकता है निराकार का नही। जल के भीतर जो आकाश का नीलां २ रङ्ग दिखाई पड़ता है यह भी निराकार आकाश नहीं है अपितु अग्नि, वायु, पृथ्वी के रेणु ही दिखाई देते हैं।

सर्व व्यापक निराकार ब्रह्म कभी खण्डित नहीं होता और यदि एक क्षण के लिए मान भी लिया जावे तो भी सर्वज्ञादि गुण भी जीवात्मा के भीतर आ जाने चाहिये जो नहीं होते। अतः ब्रह्म सत्य स्वरूप, सत्य काम, सत्य से कल्पादि से युक्त है वह कदापि मिथ्या नहीं हो सकता। यदि केवल जीव वाला अंश ही मिथ्यावादी हो जावे तो अनंत ब्रह्म ही वैसा मिथ्याचारी हो जावे। इसलिए जीव ब्रह्म का अंश नहीं है परन्तु स्वयं सत्ता युक्त है। ब्रह्म सर्व व्यापक और सर्वज्ञ है। यह कभी भी वंध में नहीं गिरता—

मुक्ति बंध

हमारे यात्री के मन में कौतुहल हुआ कि यह संसार में जब मनुष्य आता है तो इसका उद्देश्य भी कोई होना चाहिए इसलिए यह प्रश्न पूछने के लिये खड़ा हो गया और हाथ जोड़ कर प्रार्थना की कि भगवन यह मुक्ति क्या वस्तु है? और बंध क्या है? कृपया इसका ठीक २ विवेचन कीजिये। पं० जी ने कहा कि दुःखों से छूटने का नाम मुक्ति है और वह परमेश्वर की आज्ञा पालने, अधर्म अविद्या, कुसङ्ग, कुसंस्कार, बुरे व्यसनों से अलग रहने और सत्य भाषण, परोपकार पक्षपात रहित न्याय धर्म, ईश्वर की भक्ति करने आदि सुकर्मों से ही मुक्ति होती है। और मुक्ति में जीवात्मा का लय नहीं होता और वह मुक्त जीव सर्व व्यापक ब्रह्म में ही स्वेच्छाचारी होकर सर्वत्र विचरते हैं यद्यपि जीवात्मा यह पञ्चभौतिक शरीर नहीं होता परन्तु फिर भी वह शक्ति, स्वभाविक गुण सामर्थ्य, सत्य संकल्पादि से मुक्ति के आनन्द को भोगता रहता है। वेदान्त शास्त्र में स्पष्टतया लिखा है कि मुक्त जीव दुःखों से छूट कर आनन्द स्वरूप सर्वव्यापक अनन्त परमेश्वर में स्व

मन के साथ आनन्दित रहता है दूसरे शास्त्र भी इसी प्रकार हो मानते हैं।

कई लोग यह मानते हैं कि जब एक बार जीव मुक्त हो गया तो वह सर्वदा के लिए ही मुक्त हो गया परन्तु यह वेदादिशास्त्रों तथा युक्तियों के प्रतिकूल हैं। ऋग्वेद के पहले मण्डल के २४वें सूक्त के मन्त्र १-२ में कहा है कि वह परमातमा ही हमको मुक्ति के आनन्द भुगता कर पुनः पृथ्वी पर माता पिता का दर्शन कराता है। युक्ति इसमें यह है कि सान्त कर्मों का फल अनन्त नहीं हो सकता अनन्त आनन्द को भोगने का असीम सामर्थ्य कर्म और साधन जीवों में नहीं। दूसरे यदि मुक्ति भी जीव लौट कर न आवे तो संसार को ही उच्छेद हो जावे। और जो लोग यह कहते हैं कि प्रभु जितने जीव मुक्त हों जावें उतने और बना देवे तो यह भी ठीक नहीं कारण यह कि इस प्रकार जीव अनित्य हो जावे क्योंकि जिसकी उत्पत्ति होती है उसका नाश अवश्य हो जाता है। और इस प्रकार मुक्ति पाकर भी विनष्ट हो जावे। मुक्ति अनित्य हो गई। और मुक्ति के स्थान में बहुतसा भीड़ भड़ाका हो जावेगा क्योंकि आगे अधिक को कुछ भी न होने से वढ़ती का पारावार न रहेगा एक और युक्ति भी है कि यदि ईश्वर अनन्तफल वाले कर्मों का अनन्त फल देवे तो उसका न्याय नष्ट हो जाय।

मुक्ति का समय

मुक्ति का समय ३६००० वार उत्पति और प्रलय का जितना समय होता है उतने समय पर्यन्त जीव मुक्ति के आनन्द को भोगता है। और उसका साधन सत्यासत्य विवेकादि जानता है स्व शरीर के भीतर पञ्च कोषों से कर्म, उपासना तथा ज्ञानादि का व्यवहार करे जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, अवस्था, स्थूल, सूक्ष्म, कारण शरीर तथा तुरीय शरीर का ज्ञान करे। परन्तु यह स्मरण रहे कि जीव इन सब से पृथक ही होता है। क्योंकि जब किसी की मृत्यु हो जाती है तो सब लोग यही कहते हैं कि जीव निकल गया। विना जीव के यह शरीर शव है। दूसरा साधन वैराग्य तीसरा साधन षटक-सम्पत्ति है अर्थात् ६ प्रकार के कर्म करना एक शम अर्थात् आत्मा तथा अन्तः करण को अधर्म से हटाकर धर्म से में प्रवृत्त होना, दम जितेन्द्रियता, उपरति बुरे कर्मों से उपराय, तितिक्षा द्वन्द सहन, श्रद्धा सत्य शास्त्र तथा आप्त पुरुषों के वचनों पर विश्वास, समाधान चित्त की एकाग्रता। चौथा साधन मुमुक्षत्व मुक्ति में ही तल्लीन रहना। इन चार साधनों तथा चार अनुबंध और श्रवण चतुष्टय (श्रवण, मनन, निदिध्यासन तथा साक्षात्कार) के द्वारा ही एक जीव मुक्त हो सकता है। इसके अतिरिक्त पांच प्रकार के क्लेशों से पृथक रहे वह पांच क्लेश योग शास्त्रानुसार यह हैं। अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश। इन पांच क्लेशों को योगाभ्यास विज्ञान से छुड़ा के ब्रह्म को प्राप्त होके मुक्ति के परमानन्द को भोगना चाहिए। सब श्रोतागण पण्डित जी के इस मार्मिक तथा हृदय ग्राही भाषण को सुनकर कृत् कृत्य हो गये। इसी अवसर में एक वृद्ध महानुभाव खड़े हो गये और कहने लगे कि पण्डित जी कृपया एक शङ्का मेरी भी निवारण कर दें। अर्थात् जब जीवों के अनेक जन्म दे तो उनको पिछले जन्मों के संस्कार क्यों नहीं स्मरण रहते। पण्डित जी ने कहा कि चूँकि जीव अल्पज्ञ है त्रिकालदर्शी नहीं हैं। इसलिए स्मरण नहीं रहता। जिस मन से ज्ञान करता है वह भी एक समय में दो ज्ञान नहीं कर सकता। इसके अतिरिक्त यदि पूर्व जन्म का ज्ञान हो जावे तो कई झगड़े उत्पन्न हो जावेंगे। हां वर्तमान में

जो दुःख सुख हमें प्राप्त होते हैं वह पूर्व जन्म के आधार पर हो होते हैं। क्योंकि प्रभु न्यायकारी है। और वह जीव के कर्मानुसार ही फल देता है। इसी कर्म फल की व्यवस्थानुसार मनुष्य तथा पशुवादि के शरीर में जीव एक से होते हैं परन्तु पाप पुन्य के योग से मलिन और पवित्र होते हैं। अर्थात् जब पाप बढ़ जाता है पुण्य न्यून होता है। तब जीव पश्वादि नीच शरीर और जब धर्म अधिक तथा अधर्म न्यून होता है तब देव अर्थात् विद्वानों का शरीर मिलता है और जब पाप पुण्य बराबर होने से मनुष्य शरीर में आता है।

हां यह भी ध्यान से सुन लो कि मुक्ति अनेक जन्मों में होती है। औंर मुक्ति में भी जीव की सत्ता ईश्वर से पृथक ही रहती है कारण यदि साथ मिल जाय तो मुक्ति का आनन्द सुख कौन भोगे। मुण्डकोपनिषद में लिखा है—

भिद्यते हृदय ग्रन्थि श्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे।

अब इस जीव के हृदय की अविद्या अज्ञान रूपी गांठ कट जाती है सब संशय दिल ही जाते हैं और दुष्ट कर्म क्षय को प्राप्त होते हैं तभी उस परमात्मा जो कि अपने आत्मा के भीतर और बाहर व्याप रहा है उसमें विकास करता है।

जिज्ञासु ने नम्र भाव से प्रश्न किया कि महाराज जी शेष तो सब बातें हमारी समझ में आ गई हैं परन्तु एक शंका और रह गई है कृपया वह समझा है। अर्थात् यह त्रिविध दुःख कौन से हैं जिस के छूटने के लिए मनुष्य प्रयत्न करता है।

पं० जी ने अति प्रेम से समझाते हुए यह कहा कि अध्यात्मिक अर्थात् शरीर सम्बन्धी पीड़ा अधिभौतिक जो दूसरे प्राणियों से दुखित होना, अधिदैविक जो अतिवृष्टि, अति ताप अति शीत मन इन्द्रियों को चंचलता से होता है। इस त्रिविध दुख को छुड़ाकर मुक्ति पाना अत्यन्त पुरुषार्थ है। कथा समाप्त हुई।

यात्री महोदय ने उठ कर पण्डित जी को नमस्ते की और आज्ञा लेकर घर पर आ गया।

॥ ओ३म् शम् ॥

आर्य परिवार

वेद प्रकाश के जुलाई अंक में एक नया स्तम्भ इस शोर्षक से दिया था। इसका उद्देश्य यही है कि आर्य परिवारों के पुत्र तथा पुत्रियों का विवाह आर्य परिवारों में ही हो। यह स्तम्भ निशुल्क है। यहां उन्हीं सज्जनों का परिचय दिया जावेगा जो न दान दहेज मांगेंगे और ना ही योग्य वर वधु मिलने पर जाति पाति का विचार करेंगे।

सुयोग्य कन्या की आवश्यकता।

वर की आयु ३० वर्ष, आय ३००) मासिक, एम० ए० पास, दिल्ली में कार्य करता है।

पता—श्री शान्तिनारायण जी
ब्लाक नं० १ एफ० क्वार्टर नं० १५६
लाजपत नगर नई दिल्ली

इक्कीसवीं वार प्रकाशित हो गया

हर घर, समाज और पुस्तकालय में रखने योग्य
देश-विदेश में प्रसिद्ध स्त्री-शिक्षा का ग्रन्थ

नारायणी-शिक्षा अर्थात् गृहस्थाश्रम

[लेखक—स्व० श्री चिम्मनलाल वैश्य]

इस पुस्तक के बीस एडीशन अब तक निकल चुके हैं। इस सचित्र सजिल्द, सर्व विषय विभूषित ५२५ पृष्ठों के इक्कीसवें संशोधित संस्करण का मूल्य ५) है। डाक व्यय पृथक। अपनी प्रति के लिए आज ही लिखिये—

चिम्मनलाल एण्ड संस

तिलहर कुंज, महेन्द्रनगर, पो० अलीगढ़ (यू०पी०)

सन्त वाणी

१. अहिंसा का नियम है कि मर्यादा पर कायम रहना चाहिये, अभिमान नहीं करना चाहिये, नम्र होना चाहिये।

२. शान्ति तलवार के जोर से नहीं, प्रेम के जोर से हो। प्रेम से बढ़कर जोड़ने वाली चीज दुनिया में दूसरी कोई नहीं है।

३. अपने प्रेम का घेरा हमें इतना बढ़ाना चाहिये कि उसमें सारा गाँव आ जाय। गांव से जिला, जिला से प्रान्त—यों हमारे प्रेम का घेरा संसार तक फैल जाना चाहिये।

४. गलती तब मिटती है जब दुरुस्ती कर लेते हैं उसे जब दवा देते हैं तब फोड़े जैसे फूटती है और भयंकर स्वरूप लेती है।

५. अन्धा वह नहीं जिसकी आंख फूट गई है अन्धा वह है जो अपने दोष ढकता है।

६. अध्यात्मिक सम्पत्ति बढ़ाने के लिये उपवास बहुत प्रसिद्ध उपाय है।

७. भावना का स्थान हृदय में है। अगर हम हृदय शुद्ध न रखेंगे तो भावना हमें गलत रास्ते ले जायेगी।

८. अगर कोई गाली देता है तो उसका जवाब हम प्रेम से दें। झूठ के सामने सचाई का प्रयोग करें। और कोई बेहूदापन और नीचपन करे तो उसके साथ हम उदार भाव से बरतें।

१०. दरिद्र वह है जिसमें शुद्ध प्रेम की बूँद तक नहीं है। धनवान वह, जिसके प्रेम में जन्तु से लेकर मस्त हाथी तक समा सकता है।

—महात्मा गान्धी

चरित्र को ऊँचा उठाने वाली कुछ पुस्तकें

महात्मा आनन्द स्वामी कृत उत्तम पुस्तकें—

आनन्द गायत्री कथा	।।=)
धर्म, अर्थ काम, मोक्ष का एक ही रास्ता	।।।)
भगवान शंकर और दयानन्द	।=)।।
प्रभु भक्ति सजिल्द	१।।)
प्रभु दर्शन	२।।)
तत्त्व ज्ञान	३)
वैदिक सत्यनाराकरण व्रत कथा	।।=)

(परिव्राजक स्वामी ब्रह्ममुनि के प्रवचन)

बृहदारण्यक उपनिषद कथा माला	३)

बाल्मीकि रामायण—धारावाही, हिन्दी तथा मूल संस्कृत सहित, वैदिक मर्यादा के अनुकूल संशोधित संस्करण मूल्य। १२) मात्र

उपनिषद्-आर्य-भाष्य—ईश, केन कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय तौत्तिरीय, आठ उपनिषदों का, पद पदार्थ सहित सरल भाषा टीका भाष्यकार महामहोपाध्याय पं० आर्य मुनि जी, मूल्य ६) मात्र।

दयानन्द ग्रन्थ संग्रह—महर्षि दयानन्द कृत २० पुस्तकों का अपूर्व संग्रह इसमें ऋषि की आत्म कथा, तथा ऋषिकृत अनेक शिक्षाप्रद लघु पुस्तकें तथा कई शास्त्रार्थों का संग्रह है। आरम्भ में ऋषि के कई असली फोटो (चित्र) भी दिये हैं। मूल्य सजिल्द ग्रन्थ का ४।।)

गोविन्दराम हासानन्द

४४८८ नई सड़क, देहली।

सूचना—जिन ग्राहकों के वेदप्रकाश के मुख पृष्ठ पर × लाल निशान लगा है उनका वार्षिक मूल्य २।।) न आने पर अगले मास से नहीं भेजा जावेगा। मनिआर्डर करते समय ग्राहक नम्बर अवश्य लिखें। —व्यवस्थापक

पुस्तकें क्यों पढ़ें ?

ऋषि कहते हैं—

ऋतं च स्वाध्याय प्रवचने च।
सत्यं च स्वाध्यायप्रवचने च।
तपश्च स्वाध्याय प्रवचने च।
दमश्चस्वाध्याय प्रवचने च।
शमश्चस्वाध्याय प्रवचने च।
अग्रश्चस्वाध्याय प्रवचने च।
अग्निहोत्रञ्च स्वाध्याय प्रवचने च।
अतिथपश्चस्वाध्याय प्रवचने च।
मानुषंच स्वाध्यायप्रवचने च।
प्रजा च स्वाध्यायप्रवचने च।
प्रजनश्चस्वाध्याय प्रवचने च।
प्रजापतिश्च स्वाध्याय प्रवचने च।

(तैत्तिरियोपनिषद)

भावार्थ—यथार्थ आचरण से, सत्याचार से तप अर्थात् धर्मानुष्ठान से, बाह्य इन्द्रियों की बुरे आचरणों से रोक के, मन की वृत्ति की सब प्रकार के दोषों से हटाके, अग्नि और विद्युत् आदि विज्ञान को जान के, अग्निहोत्र करते हुए, अतिथियों की सेवा करते हुए, मनुष्य सम्बन्धी व्यवहारों को यथायोग्य करते हुए सन्तान और राज्य पालन करते हुए, वीर्य की रक्षा और वृद्धि करते हुए अपने सन्तान और शिक्षा का पालन करते हुए। आलस्य रहित होकर सदा पढ़ें पढ़ावें और सुने सुनावें।

ऋषि दयानन्द ने अपने जगत् विख्यात "सत्यार्थ प्रकाश" के तृतीय समुल्लास में तैतिरिय उपनिषद के ऋषि वाक्य उद्दृत करके पठन पाठन के सम्बन्ध में उपरोक्त आदेश प्रत्येक मनुष्य के लिए लिखे हैं। इसी पुस्तक में एक स्थल पर लिखते हैं कि निरन्तर पढ़ने से मनुष्य पण्डित बन जाता है।

महात्मा गांधी लिखते हैं—

"उत्तम पुस्तक मनुष्य को सत्य पथ पर चलाती है।"

पाश्चात्य विद्वानों के विचार

वे पुस्तकें बेकार हैं, जिनमें जीवन का ज्ञान नहीं होता—

सेमुएल जानसेन

वे ही पुस्तकें सहायक होती हैं, जो मनुष्य को ज्यादा सोचने का कार्य प्रदान करती हैं।

—थियोडर पारकर

मनुष्य का अध्ययन पुस्तकों द्वारा किया जा सकता है। —हक्सले

पुस्तकें सच्चे मित्र का कार्य करती हैं।

—रावर्टसवे

पुस्तकें जलती हुई मशाल के तुल्य है (जो सदा प्रकाश देती हैं) इसलिये सदा हाथ में रखनी चाहिये। —रिचार्ड डी० वेरी

पुस्तकें मनुष्य का चरित्र बिगाड़ सकती हैं। लेकिन ऐसी भी पुस्तकें हैं जो उत्तम चरित्र निर्मित करती हैं। (इसलिये चरित्र उत्तम बनाने वाली ही पुस्तकें पढ़नी चाहिये) —अज्ञात

प्राप्ति स्वीकार

आर्य रत्न मंजूषा

सम्पादक व प्रकाशक—पं० अवधबिहारीलाल ३७।१ ए० गरचा रोड़ कलकत्ता-१९ मूल्य ॥)

प्रार्थना पुस्तक

सम्पादक व प्रकाशक उपरोक्त मूल्य १)

समालोचना

बिवृति का वेदाङ्क

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण, हैदराबाद का मासिक पत्र।

आकार २०×३०।८ ७६ पृष्ठ

पत्र का वार्षिक मूल्य क्या है यह पत्र में कहीं नहीं लिखा। वेदाङ्क का मूल्य ।।।) है।

आर्य पर्वों में श्रावणी का महत्वपूर्ण स्थान है। श्रावणी पर वेद की विशेष रूप से पठन-पाठन करने और कराने का विधान है। इसी पुनीत और पावन पर्व पर "विवृति" ने अपने पाठकों को वेदाङ्क प्रदान किया है। इस अंक में आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वानों के १५ लेख हैं वेद की दो समस्यायें, वेदों का दर्शन, पूंजीवाद समाजवाद और वेद, ऋग्वेद के ऋषि और उनके दर्शन, वैदिक कर्म मीमासा, महर्षि दयानन्द की वेदार्थ विषयक क्रांति और उसका निष्पक्ष विद्वानों पर प्रभाव, वैदिक सभ्यता का आधार, साम्प्रदाय और वेद, मुक्ति और वैदिक ज्ञान, मुक्ति मार्ग का प्रेरक श्रावणी उपाकर्म पर्व आदि उत्तम लेखों का संग्रह इस अंक में है। सारे ही लेख बहुत महत्वपूर्ण और पठनीय हैं। कागज, मुद्रण और गेटअप सुन्दर और आकर्पक हैं। प्रत्येक वेद प्रेमी को अवश्य स्वाध्याय करना चाहिये।

अनमोल मोती

लेखक—श्री जगदीशचन्द्र विद्यार्थी विद्यावाचस्पति

प्रकाशक—आर्यकुमार सभा किंग्जवे दिल्ली—९

आकार २०×३०।१६ पेजी पृष्ठ संख्या ६६

बढ़िया कागज उत्तम छपाई और कलापूर्ण गेटअप। मूल्य ।=)

आर्य जगत के उदीयमान लेखक और उपदेशक श्री जगदीशचन्द्र विद्यार्थी ने चारों वेदों से छोटी-छोटी सुन्दर और प्रभावोत्पादक सूक्तियों का संग्रह कर उनकी हृदयग्राही व्याख्या की है। अनमोल मोती वास्तव में मोतियों का संग्रह है। मोती तो सब पुरातन और अनमोल हैं ही उनके रखने का ढंग भी मनोरंजक एवं आकर्षक है।

जैसा क लेखक की भूमिका से प्रतीत होता है यह पुस्तक विशेष कर नवयुवक और नवयुवतियों के लिये लिखी गई है। अतः हम नवयुवक और नवयुवतियों में इसका विशेष रूप से प्रचार चाहते हैं। आर्य विद्यालयों में इसे धार्मिक पाठ्य क्रम में निर्धारित करना चाहिये और वार्षिकोत्सवों में यह पुरस्कार में दी जानी चाहिये।

इस सुन्दर और उपयोगी प्रकाशन के लिये हम लेखक और प्रकाशक दोनों को धन्यवाद देते हैं। —सम्पादक

मानव धर्म

लेखक तथा प्रकाशक—डाक्टर मक्खन लाल शर्मा

प्राप्ति स्थान—डाक्टर मक्खन लाल शर्मा, ग्राम डरौर, पत्रालय सांखनी जिला बुलन्दशहर (उत्तर प्रदेश)

पृष्ठ संख्या १,२ सल्य १।)

प्रस्तुत पुस्तक में जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है "मानव धर्म" का विवेचन किया है। पुस्तक चार अध्यायों में विभक्त है प्रथम अध्याय में मनुष्य जीवन का उद्देश्य और जीवन में धर्म के स्थान का महत्व प्रकाशित करते हुए धर्म की परिभाषा और तत्पश्चात् धर्म के लक्षणों का वर्गीकरण किया गया है। दूसरे अध्याय में वेद, मनुस्मृति, योगदर्शन, भगवत्गीता और भागवत् पुराण के आधार पर धर्म का विस्तरित विवेचन है। तीसरे अध्याय में विशेष धर्म, वर्णाश्रमधर्म, स्त्री धर्म और राजधर्म पर प्रकाश डाला गया है चौथे अध्याय में निषेधात्मक धर्मों की चर्चा की गई है। प्रत्येक बात की पुष्टि के लिये मनुस्मृति आदि से प्रमाण दिये हैं। मुद्रण की अशुद्धियों के लिये अन्त में शुद्धि पत्र दे दिया है। धर्म जिज्ञासुओं के पुस्तक से लाभ उठाना चाहिये।

गतांक से आगे

वैदिक सूक्ति सुधा

[लेखक—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी विद्यावाचस्पति]

—◉—

तप

१२७. अनप्ततनून तदामो अश्नुते । (सा० ५६५)
तपस्या रहित कच्चा मनुष्य प्रभु को नहीं पा सकता ।

१२८. दिवमारुहत् तपसा तपस्वी । (अ० १३.२।२५)
तपस्वी तप से ऊपर उठता है ।

१२९. तपसा युजा वि जहि शत्रून् । (ऋ० १०।८३।३)
तप से सम्पूर्ण विघ्न बाधाओं को जीत ।

१३०. त्वं तपः परितप्याजयः स्वः । (ऋ० १०।१६७।१)
तू तप तप कर स्वर्ग की प्राप्ति कर ।

सत्संग

१३१. मा कीं ब्रह्मद्विषं वनः । (सा० ७३२)
ईश्वर और वेद द्वेषियों का संग मत कर ।

१३२. दूरे पूर्णेन वसति । (अ० १०।८।१५)
पूर्ण के साथ रहने से मनुष्य उन्नत होता है ।

१३३. दूर ऊनेन हीयते । (अ० १०।८।१५)
बुरी संगत से मनुष्य अवनत होता है ।

१३४. यजाम देवान्यदि शक्नवाम । (ऋ० १।२७।१३)
यदि कर सकें तो विद्वानों का संग करें ।

१३५. जुषस्वेन्द्र पुरुतमस्य कारोः । (ऋ० ३।३९।७)
हे मनुष्य ! श्रेष्ठ और कर्म योगी पुरुष का संग कर ।

१३६. जानता सं गमेमहि । (ऋ० ५।५१।१५)
हम विद्वानों का सत्संग करें ।

यज्ञ

१३७. ब्रह्म यज्ञं च वर्धय । (सा० १५०५)
ज्ञान और यज्ञ को बढ़ाओ ।

१३८. यज्ञेन यज्ञमजयन्त देवाः । (यजु० ३१।१६)
विद्वान् यज्ञ के द्वारा भगवान् की पूजा करते हैं ।

१३९. अयज्ञियो हतवर्चा भवति । (अ० १२।२।३७)
यज्ञ हीन ही तेज हीन होता है ।

१४०. ईजानाः स्वर्गं यन्ति लोकम् । (अ०१८।४।२)
यज्ञ करने वाले सुख को प्राप्त होते हैं ।

१४१. अयज्वानः सनकाः प्रेतिमीयुः । (ऋ० १।३३।४)
अयज्ञशील और दरिद्र प्रवास कर जायें ।

१४२. अध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये । (ऋ० १।७४।१)
यज्ञ में भगवान् के प्रति मन्त्र बोलें ।

१४३. यज्ञध्वं हविषा तना गिरा । (ऋ० २।२।१)
श्रद्धा, शरीर और वाणी से यज्ञ करो ।

१४४. ऊर्ध्वं कृण्वन्त्वध्वरस्य केतुम् । (ऋ० ३।८।८)
ऊंचा रक्खो यज्ञ का झण्डा ।

सत्य

१४५. ऋतस्य पथ्या अनु । (सा० १५७७)
ऋत के मार्ग पर चल ।

१४६. अहमनृतात् सत्यमुपैमि । (यजु० १.५)
मैं असत्य को छोड़ कर सत्य को प्राप्त करता हूं ।

१४७. वाचः सत्यमशीय । (यजु० ३९।४)
वाणी से मैं सत्य बोलूं ।

१४८. सत्यं च ऋतं च चक्षुषी । (अ० ६।५।२१)
सत्य और ऋत ये दो सच्ची आंखें हैं ।

१४९. सत्येनोत्तभिता भूमिः । (अ० १४।१।१)
भूमि सत्य से टिकी हुई है ।

१५०. सं किर सत्रा वाजम् (अ० २०।६८।२)
सत्य पर धन लुटा ।

१५१. ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु। (ऋ० १।१२४।३)
सज्जन सत्य के मार्ग पर चलते हैं।

१५२. ऋतमिच्चिकिद्धि। (ऋ० ५।१२।२)
सत्य की ही चाहना कर।

१५३. सुगा ऋतस्य पन्थाः (ऋ० ८।३१।१३)
सत्य का मार्ग सरल होता है।

१५४. ऋतस्य गोपा न दभाय सुक्रतुः (ऋ० ८।७३।८)
सदाचारी तथा सत्य का रक्षक दबाया नहीं जा सकता।

१५५. ऋतं वदन्नृतद्युम्न। (ऋ० ६।११३।४)
ऋतवादी ऋत से चमक उठता है।

१५६. सत्यं वदन्त्सत्यकर्मन्। (ऋ० ६।११३।८)
सत्यकर्मन् ! सत्य बोल।

१५७. सत्यं वद्यामि नानृतम्। (अ० ४।६।७)
मैं सत्य बोलता हूं असत्य नहीं।

१५८. सा मा सत्योक्तिः परिपातु। (ऋ० १०।३७।२)
वह सत्यवाणी मेरी रक्षा करे।

१५९. सत्यामाशिषं कृणुता। (ऋ० १०।६७।११)
इच्छा भी सच्ची हो।

१६०. आकूतिः सत्या मनसो मे अस्तु।
(ऋ० १०।१२८।४)
मेरे मन के संकल्प सच्चे हों।

गोपालन

१६१. अहं गोपतिः स्याम् (सा० १८३५)
मैं गोओं का स्वामी बनूं।

१६२. गोस्तु मात्रा न विद्यते। (यजु० २३।४८)
गो का मूल्य नहीं है।

१६३. पुष्ट्यै गोपालम् (यजु० ३०।११)
पुष्टि के लिये गोपालक बनो।

१६४. अन्तकाय गोघातम्। (यजु० ३०।१८)
गो हत्यारे को मार दो।

१६५. शिवो वो गोष्ठो भवतु। (अ० ३।१४।५)
तुम्हारी गोशाला कल्याणमयी हो।

१६६. गावो भगो गाव इन्द्रो मे। (अ० ४।२१।५)
गोएं ही मेरा भाग्य और गोएं ही मेरा ऐश्वर्य हैं।

आगे बढ़ो

१६७. अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु। (सा० १८५८)
हमारे वीर आगे बढ़ें।

१६८. प्रेतजयता नर। (सा० १८६२)
हे मनुष्य ! आगे बढ़ विजय प्राप्त कर।

१६९. दिवं पृथिव्या अध्यारुहाम। (यजु० ८।५२)
हम पृथिवी से द्यौ पर चढ़ें।

१७०. ऊर्ध्वामारोह। (यजु० १०।१४)
ऊपर को चढ़।

१७१. उदग्ने तिष्ठ प्रत्यातनुष्व। (यजु० १३।१२)
तेजस्विन् ! उठ सब ओर फैल जा।

१७२. प्रति तिष्ठोर्ध्वः। (अ० ४।१२।६)
उन्नत हो कर प्रतिष्ठित हो।

१७३. आरोहणमाक्रमणं जीवतो जीवतोऽयनम्।
(अ० ५।३०।७)
ऊपर उठना, आगे बढ़ना प्रत्येक जीव का लक्ष्य है।

१७४. उत्क्रामातः पुरुष माव पत्था। (अ० ८।१।४)
हे मनुष्य ! ऊपर उठ, नीचे मत गिर।

१७५. उद्यानं ते पुरुष नावयानम्। (अ० ८।१।६)
हे पुरुष ! तेरा उत्थान ही हो, पतन नहीं

१७६. आ रोह तमसो ज्योतिः। (अ० ८।१।८)
अन्धकार से प्रकाश की ओर चल।

१७७. उत्तिष्ठत सं नह्यध्वम्। (अ० ११।६।२)
वीरो ! कमर कस लो।

१७८. आ रोहत दिवमुत्तमाम्। (अ० १८।३।६४)
उच्चतम द्युलोक पर चढ़ो।

१७९. आ रोह वय उन्मृजानः। (अ० १८।३।७३)
जीवन को पवित्र करता हुआ ऊपर चढ़।

१८०. प्रेह्यभीहि धृष्णुहि। (ऋ० १।८०।३)
आगे बढ़, सामने डट, परास्त कर।

१८१. प्र जिगात बाहुभिः। (ऋ० १।८५।६)
बलशालियों से आगे बढ़।

१८२. अप्रतीतो जयति सं धनानि । (ऋ० ४।५०।९)
पीछे न हटने वाला सम्पदाओं को प्राप्त करता है।

शारीरिक उन्नति

१८३. उग्रा वः सन्तु बाहवो । (सा० १८.३)
तुम्हारी भुजायें बलशाली हों।

१८४. अश्मा भवतु नस्तनूः । (यजु० २९।४९)
हमारे शरीर पत्थर के समान दृढ़ हों।

१८५. अशोणा दन्ता । (अ० १९।६०।१)
हमारे दांत निर्मल हों।

१८६. अरिष्टाः स्याम तन्वा सुवीराः।
(अ० ५।३।५)
हम शरीर से निरोग और पुष्ट बनें।

१८७. उदायुरुद् बलम् । (अ० ५।९।८)
आयु और बल को बढ़ाओ।

१८८. मा पुरा जरसो मृथाः । (अ० ५।३०।१७)
बुढ़ापे से पूर्व मत मर।

१८९. खुदत वाजसातये । (अ० २०।१३७।२)
बल प्राप्ति के लिये खेलो, व्यायाम करो।

१९०. देवा भवत वाजिनः । (ऋ० १।२३।१९)
हे विद्वानों ! बलवान् बनो।

१९१. मा सं सृज वचसा । (ऋ० १.२३.२३)
मुझे तेज से युक्त कर।

१९२. बलं धेहि तनूषु नो । (ऋ० ३।५३।१८)
भगवन् ! हमारे शरीरों में बल दो।

१९३. इदं वपुर्निवचनम् । (ऋ० ५।४७।५)
यह शरीर बहुत ही प्रसंशनीय है।

ऐश्वर्य

१९४. नो वर्द्धया रयिम् । (यजु० ३।१४)
हमारे ऐश्वर्य को बढ़ा।

१९५. द्युमत्तमꣳ रयिं दाः । (यजु० ३।२५)
प्रभो ! उज्ज्वलतम ऐश्वर्य प्रदान कर।

१९६. भगस्य नावमा रोह । (अ० २।३६।५)
ऐश्वर्य की नौका पर चढ़।

१९७. राया वयं सुमनसः स्याम । (अ० १४।२।३६)
ऐश्वर्य पाकर हमारा मन शुभ रहे।

गृहस्थ

१९८. वर्द्धमानꣳ स्वे दमे । (यजु० ३।२३)
अपने घर में उन्नति करो।

१९९. गृहा मा बिभीत । (यजु० ३।४१)
हे गृहस्थो ! मत डरो।

२००. अथो अन्नस्य कीलाल उपहूतो गृहेषु नः।
(यजु० ३।४३)
हमारे घर में अन्न के ढेर हों।

सन्तान

२०१. सुप्रजाः प्रजाभिः स्याम् । (यजु० ३।३७)
हम उत्तम सन्तान वाले हों।

२०२. आ वीरोऽत्र जायतां । (अ० ३।२३।२)
वीर सन्तान उत्पन्न कर।

२०३. मर्यादे पुत्रमा धेहि । (अ० ६।८१।२)
सन्तान को मर्यादा में लगाओ।

२०४. आ वां प्रजां जनयतु । (अ० १४।२।४०)
हम दोनों (पति पत्नी) सन्तान उत्पन्न करें।

२०५. आप्यायमानाः प्रजया धनेन।
(अ० १८।३।१६)
हम सन्तान और धन से फलें फूलें।

२०६. मदेम शतहिमाः सुवीराः । (अ० २०।६३।३)
हमारी सन्तानें वीर हों।

२०७. बहु प्रजा निर्ऋतिमा विवेश।
(ऋ० १ ।१६४।३२)
बहुत सन्तान वाले बहुत कष्ट उठाते हैं।

२०८. जनया दैव्यं जनम् । (ऋ० १०।५३।६)
उत्तम सन्तान पैदा कर।

२०९. वावृधे सूनृताभिः (ऋ० १०।६१।२१)
उत्तम सन्तान से बढ़ो।

सृष्टि का इतिहास

आर्य पथिक पं० लेखराम कृत 'त्वारिखे दुनिया' का हिन्दी अनुवाद। जिसमें सृष्टि उत्पत्ति वेदादि सत्शास्त्रों का समय निर्धारण करते समय जो आधुनिक इतिहासकार, पाश्चात्यों का अनुकरण कर भूल करते हैं उनके लिए यह उपयुक्त मार्ग प्रदर्शक उत्तम पुस्तक है मूल्य २) रियायती मूल्य १॥)

इच्छानुसार सन्तानोत्पत्ति

भारतीय स्वतन्त्रता को अक्षुण्य व चिरस्थायी बनाने के लिये आज भारत को कर्मवीर, बुद्धिमान् व शौर्य सम्पन्न युवकों की आवश्यकता है। उस आवश्यकता की पूर्ति आपके ही हाथों में है।

किस प्रकार ?

यह जानने के लिये तथा अपने कर्तव्य से परिचित होने के लिये "इच्छानुसार सन्तानोत्पत्ति" पुस्तक मंगा कर अवश्य पढ़िये। पुस्तक पढ़ कर आप अनुभव करेंगे कि "पुत्र या पुत्री, धर्मात्मा या पापी, शासक या चोर, जितेन्द्रिय या व्यभिचारी, गौर या श्याम् वर्ण की ," सन्तान का निर्माण तथा वर्थकन्ट्रोल अपने ही हाथों में है।

क्या आप चाहते हैं कि आपकी सन्तान समाज में सम्मान को प्राप्त करें।

यदि हां ! तो उसके लिए प्रयत्न करना आपका कर्तव्य है।

वह किस प्रकार ?

यह जानने के लिए स्त्री व पुरुष दोनों के लिए पठनीय इस पुस्तक को आज ही मंगाइए।

इसकी महत्ता पढ़ने से ही विदित होगी।

नवदम्पति को भेंट देने योग्य अनुपम उपहार है।

मूल्य २॥) डाक व्यय पृथक।

प्राप्ति स्थान:—भगवान दास भूकन सरन

पत्रवाणिज्य, बाजार चौक मुरादाबाद।

विजयादशमी के उपलक्ष में प्रचारार्थ विद्वानों के ट्रैक्ट मंगावें

प्रत्येक का मूल्य -) सैकड़ा ४)

१ मनुष्य बन—ले० स्वामी वेदानन्द सरस्वती ।
२ गायत्री माता—जगदीशचन्द्र विद्यार्थी ।
३ ईश्वर सिद्धि—पं० रामचन्द्र जी देहलवी ।
४ आस्तिक नास्तिक संवाद—महर्षि दयानन्द ।
५ पितृ श्राद्ध विचार—स्वामी दर्शनानन्द ।
६ सुख का साधन—महात्मा आनन्द स्वामी ।
७ ईश्वरोपासना—पं० रामचन्द्र जी देहलवी ।
८ कल्याणी बन – पं० गणेशदत्त 'इन्द्र' ।
९ आर्यों का आदि देश—काशी नाथ जी शास्त्री ।
१० धर्म और अधर्म – पं० रामचन्द्र देहलवी ।
११ स्वामी श्रद्धानन्द—रामगोपाल विद्यालंकार ।
१२ तत्ववेत्ता दयानन्द—स्वामी श्रद्धानन्द जी ।
१३ पं० लेखराम—रामगोपाल जी विद्यालंकार ।
१४ सीता माता – सरस्वती देवी 'प्रभाकर' ।
१५ गौ माता—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
१६ दयानन्द दिग्विजय – श्री हरिशंकर जी शर्मा कविरत्न
१७ चोटी का महत्व – पं० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री ।
१८ गुरु विरजानन्द—रामगोपाल विद्यालंकार ।
१९ मांस खाना छोड़ दो—पायथा गोरस ।
२० मर्यादा पुरुषोत्तम राम – प्रहलाद 'प्रभाकर' ।
२१ देश सुधार होली—अंगनलाल आर्य ।
२२ मूर्तिपूजा विचार—महर्षि दयानन्द ।
२३ भक्ति के लाभ—आचार्य प्रियव्रत ।
२४ आर्य समाज के उद्देश्य—जगदीशचन्द्र ।
२५ वेदमाता ।
२६ श्रद्धामाता ।
२७ धरती माता ।
२८ धर्म की रक्षा करो—ब्र० प्रभुदत्त जी ।
२९ मनुष्य के कर्तव्य—म० नारायण स्वामी ।
३० सत्संग भजन ।
३१ ऋषि दयानन्द कृत वेदभाष्य का महत्व ।
३२ गोपाल दयानन्द ।
३३ भक्तिवाद की रूपरेखा ।
३४ वैदिक भक्तिवाद ।
३५ अंग्रेजी शिक्षा से हानि ।
३६ सत्य की महिमा—स्वामी सर्वदानन्द ।
३७ आर्य समाज की उन्नति का साधन श्री लालचन्द जी
३८ श्यामाप्रसाद मुकर्जी—श्री प्रेमचन्द ।
३९ वैदिक काल में तोप बन्दूक—शिव पूजन सिंह ।
४० पतिव्रत धर्म—एक विदूषी महिला ।
४१ ब्राह्मण समाज और मूर्ति पूजा—राजेन्द्र जी ।
४२ ईश्वरोपासक दयानन्द—भगवत शरण बी. ए. ।
४३ ईश्वरावतार—स्वामी नित्यानन्द जी ।
४४ कर्मयोगी श्री कृष्ण—प्रेमचन्द ।
४५ ईसाइयों का भयंकर षड़यन्त्र ।
४६ सामाजिक व्यवहार—श्री लालचन्द जी ।
४७ शिक्षा का उद्देश्य—श्री पूर्णचन्द जी ।
४८ ब्रह्मचर्य—जगदीशचन्द्र जी विद्यार्थी ।
४९ वर्ण व्यवस्था—स्वामी दर्शनानन्द ।
५० कर्मव्यवस्था " "
५१ वेदज्ञान – विष्णु दयाल जी ।
५२ तुलसी रामायण और आर्य समाज ।
५३ सत्य की खोज—काशीनाथ शास्त्री ।
५४ मुर्दा क्यों जलावें—प्रेम शरण जी ।
५५ स्वामी दयानन्द का उद्देश्य—स्वामा दर्शनानन्द ।
५६ स्वामी दयानन्द का लक्ष्य— "
५७ ब्राह्मण समाज और मृतक श्राद्ध—पं० राजेन्द्र जी ।
५८ श्रेय और प्रेय – प्रि. नित्यानन्द जी एम. ए. ।
५९ सच्ची पूजा – स्वामी सर्वदानन्द जी ।
६० झांसी वाली रानी ।
६१ महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त-रविवर्मा सि. शास्त्री ।
६२ जीवन की समस्यायें—पं० रामचन्द्र देहलवी ।
६३ देवताओं की कहानी—कैलाश बिहारी ।
६४ रोटी और कपड़ा—प्रेमकुमार पाण्डेय ।
६५ धूम्रपान – " "
६६ सिनेमा और हम— " "
६७ दयानन्द कौन – देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ।
६८ कृण्वन्तोस्वयमार्यम—प्रेमकुमार पाण्डेय ।
६९ चाय भयंकर विष—जगदीश चन्द्र ।
७० मुझे मेरा धर्म क्यों प्यारा है—ज. विद्याथा
७१ ईश्वर सब जगह है – विष्णु दयाल जी ।
७२ ईश्वर में अविश्वास क्यों—रामचन्द्र देहलवी ।
७३ चरित्र निर्माण—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
७४ यज्ञोपवीत महत्व—जगरीश चन्द्र विद्यार्थी ।
७५ सूर्य और चन्द्र ग्रहण—हरिदेव शास्त्री ।
७६ नास्तिकों को सन्देश—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
७७ वैदिक धर्म ही क्यों—हरिदेव शास्त्री ।
७८ विद्यार्थी और सदाचार—पं० रामचन्द्र देहलवी ।

गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क देहली—६

कृषि सम्बन्धी देहात-सुधारक पुस्तकें

१. आधुनिक कृषि विज्ञान ६)
२. आलू की खेती ।।।)
३. टमाटर की खेती ।।)
४. गोभी की खेती ।।)
५. जीरा, धनियाँ, अजवायन ।।।)
६. तरकारियों की खेती १।।)
७. अच्छे बीज ।।।)
८. अच्छी खाद २।।)
९. कपास की खेती १)
१०. फूल फुलवारी २।।)
११. गन्ने की खेती ।।।)
१२. धान की खेती १।।)
१३. सन्तरे की बागवानी २।।)
१४. आम की बागवानी ३)
१५. तिलहन की खेती ।।।=)
१६. सोयाबीन खिसारी ।)
१७. खेती की तैयारी २।)
१८, फसल रक्षक औषधियां २।)
१९. फलव्याधियों कीरोकथाम१।।)
२०. उन्नत सिंचाई २)
२१. भारतीय कृषि कहावतें ४)
२२. गेहूं की खेती ३)
२३. लाख की खेती ।।।=)
२४. प्याज खेतीकी खेती १।)
२५. जौ की खेती ।।।=)
२६. मेंहदी की खेती ।।।)
२७. नीबू सन्तरा माल्टा २।)
२८. मूंगफली की खेती १)
२९. मिर्च की खेती १।)
३०. बीज की तैयारी १।।)
३१. मसालों की खेती २)
३२. तम्बाकू की खेती ।।)
३३. पपीते की खेती १।।)
३४. खेती बाड़ी १।।)
३५. फलों की खेती ३।।)
३६. तरकारी सागभाजी खेती ३।।)
३७. खेती और ट्रैक्टर ६)
३८. किचन गार्डन १।।।)
३९. ट्यूब वैल गाइड ३।।)
४०. ट्रैक्टर प्राइमर १।)
४१. पशुओं का इलाज ६)
४२. पोल्ट्री फार्मिंग ४)
४३. कर्मशियल पोल्ट्री ४)
४४. पोल्ट्री सर्जन ४)
४५. फल संरक्षण २।।)
४६. मकई (मक्का) खेती १।)
४७. खीरा तरबूज की खेती १।।)
४८. चाय की बागवानी १।।)
४९. अफीम की खेती १।।)
५०. किसानी लोक कथायें २।।)
५१. कलम पैंबन्द लगाना १।।)
५२. हल्दी की खेती १।।)
५३. कत्थे की खेती १।।)
५४. पान की खेती १।।)
५५. चने की खेती १।।)
५६. बाजरे की खेती १।।)
५७. मटर की खेती १।।)
५८. हैण्डबुक ऑफ पोल्ट्री १०)
५९. खेती और बागवानी ३)
६०. तोरी लौकी की खेती १।।)
६१. खीरा ककड़ी तरबूज खरबूजे की खेती १।।)

गवर्नमेंट एग्रीकल्चर इन्स्टीट्यूटों, ग्राम पंचायतों, स्कूललाइब्रेरियों। पुस्तकालयों बेसिक ट्रेनिंग सैन्टरों तथा अधिकांश सरकारी लाइब्रेरियों संस्थाओं में खरीदा जाने वाला कृषि सम्बन्धी **६१ पुस्तकों का सैट**

वैज्ञानिक ढंग से अधिक खेती करके सरकारी इनाम प्राप्त करें

फलों की खेती (फलदार बागवानी) ले० राजेश गुप्त जिसमें हर प्रकार के फलदार पेड़ों जैसे आम, अमरूद, शहतूत, लौकाट, सतरा आदि सैकड़ों फलों के पेड़ों को लगाने के तथा उनसे अधिक फल पैदा करने के साइन्टिफिक ढंग लिखे गए हैं, मू० ३।।) साढ़े तीन रु० डाक व्यय १)

अपने बंगले, कोठी, गुवाड़, खेत इत्यादि में हरी और ताजा सब्जी पैदा करें

साग भाजी की खेती

(लेखक राजेश गुप्त)

जिसमें देशी तथा विदेशी दोनों प्रकार की तरकारियों का बोना, जमीन की जाँच करना खाद से ज्यादा फसल तैयार करना बिना मौसम की तरकारी पैदा करने के साइन्टिफिक नियम फसलव्याधियों की रोक थाम के तरीके और हरप्रकार की सब्जी जैसे आलू, अदरक, अरबी, टिन्डे, वाकला, सीताफल, (पेठा) बन्दगोभी, मूली, बैंगन, भिन्डी, तोरी, घिया, प्याज, पालक, पोदीना टमाटर, धनियाँ खीरा, ककड़ा, तरबूज, फूल गोभी, चुकन्दर, खरबूजा, जीरा, सिंघाड़ा, सौंफ, अजवायन, सैम शरदा शलगम, सकरकंदी, करेला आदि सब्जी बोना और उसके लिए पूरी बातें इस पुस्तक में पढ़कर चाहे चाहे आप खेती करिये या माली को समझाइये।

मूल्य केवल ३।।) डाक व्यय १)

सावधान ! जमीन सोना उगल रही है

आधुनिक कृषि विज्ञान

खेती बाड़ी, फूल-फुलवाड़ी तथा बागवानी पर ७५२ पृष्ठों का ग्रन्थ (ले.- रामेश्वर अशांत)

इसमें अनाज दलहन, तिलहन फूल-फुलवाड़ी साग-भाजी तथा फलों की बागवानी के हर विषय जैसे जुताई, सिंचाई, खाद व फसल संरक्षण आदि सभी आवश्यक बातों को अगणित छोटे-बड़े सुन्दर चित्रों द्वारा समझाया गया है यह भारत के किसान को मालदार बनाने के लिए तथा अधिक फसल उपजा कर सरकारी इनाम प्राप्त करने वाली खोजपूर्ण पुस्तक है। मूल्य ६) छः रुपये डाक व्यय १।।) पृथक।

केवल डाक खर्च वास्ते चार आने (पच्चीस नये पैसों) का टिकट लिफाफे में भेजकर **हजारों पुस्तकों का बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगायें**

देहाती पुस्तक भण्डार (V. P.) चावड़ी बाजार दिल्ली

फोन नं०- २००३०

नोट—पुस्तक खरीदते समय हमारा पता अवश्य देखलें।

गोविन्दराम हासानन्द द्वारा सम्पादित मुद्रक और प्रकाशक जय्यद प्रेस, बल्लीमारान देहली में छपवा कर वेदप्रकाश कार्यालय नई सड़क, देहली से प्रकाशित किया।

॥ ओ३म् ॥

वेद प्रकाश

★ ऋषि का गुणगान ★

—[श्री हरिशङ्कर शर्मा कविरत्न]—

दयानन्द ऋषि का गुण-गान,
 है सब का कर्त्तव्य महान्
सह-सह संकट क्लेश अपार,
 किया देश का पुनरुद्धार।
निर्भयता के थे अवतार,
 समझे गये सत्य साकार।
जो कुछ कहा, किया वह काम,
 थे, पर स्वयम् निपट निष्काम
कभी देह पर प्रबल प्रहार,
 कभी हुआ प्राणों पर वार।
क्रूरों का कुत्सित व्यवहार,
 अनाचार या अत्याचार।
सब को सहा धैर्य ध्रुव धार,
 किया सत्य का सदा प्रचार।
भय से क्यों होता वह भीत,
 धारा जिसने पुण्य पुनीत।
विषदाता घातक अति दुष्ट,
 पकड़ा गया एक अघ पुष्ट।
ऋषि ने कुछ भी दिया न ध्यान,
 कहा छोड़ दो; है नादान।

—"महर्षि-महिमा से"

—●—

हैजे इत्यादि भीषण संक्रामक रोगों से

बचने के लिए

आर्ष प्रणाली द्वारा वैदिक रीत्यनुसार शास्त्रोक्त विधि से तय्यार की हुई रोग एवं कीटाणु नाशक आनंद फार्मेसी द्वारा निर्मित

शुद्ध हवन सामग्री

का प्रयोग कीजिये

यह सुगंधित हवन सामग्री देव पूजन के लिए पवित्र एवं उपयोगी है। इससे वायु शुद्ध होती है और दूषित रोगों के कीटाणु नष्ट होते हैं। उपयोग करने से सारा गृह सुवासित हो जाता है। विवाहों, यज्ञों, पर्वों, सामाजिक अधिवेशनों में व्यवहार करने के लिए सर्वोत्तम है नमूना मुफ्त मंगाइए। विस्तृत योजना नुसार शास्त्रोक्त प्रमाणित हवन सामग्री तय्यार करने का भारतवर्ष का सबसे बड़ा कारखाना

आनन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी

स्थान व पो० भोगांव, जिला-मैनपुरी।

R/E **कर्ण रोग नाशक तैल** G/D

कान की सभी बीमारियों से छुटकारा पाने के लिए 'कर्ण रोग नाशक तेल' प्रयोग करें। इससे कान बहना, शब्द होना, कम सुनना, दर्द होना, खाज आना, सांय-सांय होना, मवाद आना, सीटी सी बजना, आदि शीघ्र आराम हो जाते हैं एक बार अवश्य मंगाकर परीक्षा करके देखिए। मूल्य १ शीशी १।), पैकिंग पोस्टेज १॥), तीन दर्जन पर खर्चा फ्री और १५ शीशी कमीशन में अधिक देकर एजेन्ट बनाते हैं। कुछ निश्चित समय तक, चार शीशी एक साथ मंगाने से खर्चा फ्री, शीघ्रता कीजिये।

पता—कार्यालय 'कर्णरोग नाशक तैल'

२६३ संतो मालन मार्ग

नजीबाबाद (उ० प्र०)

NAJIBABAD U. P.

श्री आनन्द स्वामी जी की नई पुस्तक

'आनन्द भगवत् कथा अर्थात् सत्यनारायण वृत कथा'

पौराणिक पण्डित जो सत्यनारायण की कथा सुनाते हैं उसमें केवल यही सुनाते हैं कि इस कथा को सुनने से एक आदमी स्वर्ग गया और दूसरा आदमी जिसने नहीं सुनी उसको नर्क मिला। वह सत्यनारायण की कथा क्या है यह नहीं बताते।

श्री स्वामी जी ने वेद पुराण, उपनिषद्, गीता तथा अन्य कई धार्मिक ग्रन्थों को उद्धृत करते हुए सत्यनारायण की असली कथा लिखी है सत्यनारायण कौन है? उस कथा को सुनने से जो स्वर्ग मिलता है वह क्या है? सत्यनारायण का आदि और अन्त नहीं तब उसकी अनन्त कहानी क्या है? यह इस पुस्तक में आपको ऐसे मीठे और आकर्षक शब्दों में मिलेगी कि देर तक उसका चित्र हृदय से न मिट सकेगा। एक प्रति का मूल्य ॥=) मात्र है। १२ प्रतियों के लिए ७॥) भेजें।

श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज

लेखक की अन्य पुस्तकें—तत्त्वज्ञान मूल्य ३), प्रभुभक्ति मूल्य १॥), प्रभुदर्शन मूल्य २॥), एक ही रास्ता मू० ॥।), आनन्द गायत्री कथा मू० ॥=), भगवान शंकर और दयानन्द मू० ।=)

गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क देहली

॥ ओ३म् ॥

वेद प्रकाश

सम्पादक—गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष—७ : कार्तिक २०१५ नवम्बर १९५८ : वार्षिक मूल्य २॥)
अंक—४ : दयानन्दाब्द १३४ कार्तिक १८८० शाके : विदेशों से ५ शि०

वेदसुधा

सहृदयं सांमनस्यमस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या ॥अ० ३।३०।१।७॥

पदानि—सऽहृदयस् । साम्ऽमनस्यम् । अविऽद्वेषस । कृणोमि । वः ।
अन्यः । अन्यम । अभि । हर्यंत । वत्सम् । जातम्ऽइव । अघ्न्या ॥१॥

अन्वयः—वः सहृदयं, सांमनस्यं अविद्वेषं कृणोमि । अन्यः अन्यं (तथा) अभि
अर्यंत, अघ्न्या जातं वत्सं इव ॥

अर्थ—(वः) आप सब को (सहृदयं) समान अन्तःकरण, और (सांमनस्यं) समान मन धारण करने का तथा (अ-वि-द्वेषं) परस्पर विद्वेष न करने का उपदेश (कृणोमि) करता हूँ। आप में से (अन्यः) प्रत्येक (अन्यं) दूसरे के साथ ऐसा (अभि हर्यत) प्रेम पूर्वक व्यवहार करे कि (इव) जैसी (अ-घ्न्या) गौ (जातं वत्सं) जन्मे हुए बच्चे के साथ प्रेम करती है।

भावार्थ—आप सब परस्पर के व्यवहार में हृदय में शुभ भाव तथा मन में शुद्ध सङ्कल्प धारण करें और कभी परस्पर द्वेष न करें। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के प्रति ऐसा प्रेम करे, कि जैसे गौ अपने नवजात बछड़े पर प्रेम करती है।

ऊपर उठ, नीचे मत गिर

(ले०—सत्यभूषण, वेदालङ्कार, एम. ए., नई-दिल्ली)

उत्क्रामातः पुरुष मावपत्था मृत्योः पड्वीश मवमुञ्चमानः । माच्छित्था अस्माल्लोकादग्नेः सूर्य्यस्य संदृशः । अ० ८।१।४।

"हे मनुष्य ! प्रगतिशील मानव ! तू वर्तमान अवस्था से ऊपर उठ। उन्नति कर, नीचे मत गिर। मृत्यु-पाश को छुड़ाता हुआ इस लोक से अग्नि तथा सूर्य के संदर्शन से मत छूट।"

वर्तमान युग ही क्या, प्रत्येक युग नहीं-नहीं, मानव-जीवन का एक-एक क्षण वैदिक वाणी के अनुसार उन्नति के लिये है। अवनत होकर, शत-शत ठोकरें खाकर भी मानव उन्नति, प्रगति की ओर चरण बढ़ाए हैं। इसी संघर्ष में उत्थान, पतन, आशा-निराशा के विकट किन्तु परिवर्तनशील जीवन में ही मानव का विकास हो रहा है। वेद का यह अमूल्य संदेश सृष्टि के आदि काल से अब तक कोटि-कोटि प्राणियों को अनुप्राणित करता आ रहा है—" मानव ! तू आगे बढ़, ऊपर उठ। सूर्य अग्नि के समान प्रगति कर।

सामान्य लोगों में यह धारणा है, कि आजकल कलियुग है, अतः जो कुछ करो ठीक है। परन्तु हमारे विचार में प्रमाद, आलस्य का काल ही कलियुग है। कहा भी है—

"कलिः शयानो भवति, संजिहानस्तु द्वापरः।
उत्तिष्ठंस्त्रेता भवति, कृतं संपद्यते चरन्॥
"ऊंघ रहा ही तो कलि, "द्वापर" की अंगड़ाई।
त्रेता उठकर खड़ा, किन्तु ले रहा जंभाई॥
सतयुग तो चलता जाता है॥

श्री भर्तृहरि महाराज ने ठीक ही लिखा है—

"कदर्थित स्यापि हि धैर्यवृत्तेः
न शक्यते धैर्य गुणः प्रमार्ष्टुम्।
अधोमुख स्यापि तनूनपातः।
नाधः शिखा याति कदाचिदेव॥

पीड़ित जन धैर्यशाली हो, तो उसके धैर्य के गुण को मिटाना संभव नहीं। जैसे प्रदीप्त अग्नि को यदि उल्टा कर दें, तो भी उसकी ज्वाला ऊपर को ही रहती है। भारतीय इतिहास में उच्च आदर्श पर पर्वत को चट्टान के समान सीतादेवी का चरित्र इस विषय में अनुकरणीय है। जब लंकाधिपति रावण ने सीता को लेजाकर अशोक-वाटिका में कैद कर दिया और उसके सम्मुख साम, दाम आदि नीतियों से परास्त होकर दण्ड का आश्रय लेकर घोषणा की:—

द्वाभ्यामूर्ध्वं तु मासाभ्यां भर्तारं मामनिच्छती।
मम त्वा प्रातराशार्थे सूदाश्छेत्स्यन्ति खण्डशः॥

"यदि तू दो मास तक मुझे अपना पति नहीं

बनाना चाहेगी, तो तुझे मेरे प्रातराश (कलेवा) के लिये पाचक टुकड़े-टुकड़े करके काट देंगे।" तब महारानी सीता ने निर्भीक होकर जो उत्तर दिया वह चिरस्मरणीय रहेगा—

न मानुषी राक्षसस्य भार्या भवितुमर्हति ।
कामं खादत मां सर्वा न करिष्यामि वो वचः ।
दीनो वा राज्यहीनो वा यो मे भर्त्ता स मे गुरुः ॥

"मैं मानवी पत्नी न लंकाराज की हूँगी कभी ।
हे दासियों पट रानियो ! खाओ मुझे कितना सही।
हों दीन राज्य विहीन पति, मेरे गुरू केवल वही ।
अनुरक्त उनमें हूँ सदा, ज्यों सूर्य अनु किरणें चली ॥

इतना ही नहीं वेद आगे इससे भी बढ़ कर कहता है:—

उद्यानं ते पुरुष नावयानं जीवातुं ते दक्षतातिं कृणोमि ।

आ हि रोहेममम् तं सुखं रथमथ जिर्विर्विदथमावदासि ॥ अ० ८।१।६

प्रगति करो, इस जीवन पथ पर,
बढ़ते जाना लक्ष्य सहा है ।
नीचे जाना, अवनत होना,
यह तो दुर्भाग्य रहा है ॥
प्रभु ने तुमको दक्ष किया है
अवसर बढ़ने का स्वर्णिम हैं।
कायिक रथ पर आरोहित हो,
ज्ञानार्जन करना उत्तम है ॥

यह है मानव-मात्र के लिए वेद का आदर्श। पर प्रगति, उन्नति हो कैसे। प्रगति के तीन साधन वेद ने बतलाए हैं।

(१) सतत जागरुकता

जो जागत है सो पावत है। वेद के अनुसार **यो जागार तमृचः कामयन्ते, यो जागार तमु सामानि यन्ति । यो जागार तमयं सोम आह, तवाह मस्मि सख्येन्योकः ॥ ऋ० ५।४४।१४ ॥**

"जो जागता है, चाहतीं उसको ऋचाएं सभी ।
जो जागता है साम उसको प्राप्त होते हैं सभी ॥
जो जागता संसार का सुख प्राप्त है करता वही ।
सुख वास्तविक उसको मिला, जो नर रहा अति उद्यमी ॥

(२) मन की एकाग्रता

किसी भी कार्य की सिद्धि के लिए मनोनिग्रह परमावश्यक है। वेद कहता है।

"सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिनऽइव । हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ यजु० ३४ । ६ ॥

ज्यों सुशारिथ वेगमय अश्वों को ले जाय,
रखकर ठीक लगाम को तनिक नहीं घबराय।
इसी तरह हैं वेगयुत मन की भी यह बात,
होवे शिवसंकल्प यह विनय यही दिन रात ॥

(३) स्वावलंबन, कार्यकुशलता ।

"स्वयं वाजिस्तन्व कल्पयस्व, स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व । महिमा तेऽन्येन न संनशे । य० २३।१५॥

"हे ज्ञानी ! तू स्वयं शक्तिमय होकर कर पुरुषार्थ ।
यज्ञ भाव से सदा कर्म कर, सेवन कर सुख पाय ॥
अपनी महिमा, आप ही प्राप्त करेगा जान,
अपने कर्मों से बने भाग्य सदा पहचान ।
यह है वेद का आशा मंगलप्रद सन्देश ।
उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ॥

॥ इति ॥

★ वृहदारण्यक उपनिषद् कथामाला ★

स्वाध्याय के लिए उत्तम पुस्तक है। मूल्य ३) रुपये केवल, वेदप्रकाश के ग्राहकों को डाक खर्च सहित केवल २॥) रुपये में अवश्य मंगाकर स्वाध्याय करें ।
गोविन्दराम हासानन्द आर्य साहित्य भवन, नई सड़क देहली ।

गताङ्क से आगे

धर्म नगरी

(सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर एक मनोरंजक गाथा)

[लेखक—श्री मदनजित् आर्य्य वैदिक धर्म विशारद फिरोजपुर शहर]

प्रातः काल का सुन्दर समय था गृहस्थी के घर में आज कोई पर्व था इसलिये बहुप्रकार के भोजन की सामग्री पड़ी थी उसके हृदय में विचार उत्पन्न हुआ कि चलो आज इस धर्मनगरी का दसवां द्वार ही देखें और वहां पण्डित जी महाराज से कुछ खान पान आचार अनाचार की बातें ही पूछेंगे, एतर्थ वह अकेला ही उस द्वार की ओर चल पड़ा। वहां जाकर क्या देखा कि द्वार बहुत ही सुन्दर बेल बूटों वनस्पतियों से सजा हुआ है नाना प्रकार के फल फूलों से युक्त नाना प्रकार की लतायें अपनी पृथक २ शोभा दिखा रही है। द्वार के ऊपर आचार अनाचार भक्ष्याभक्ष्य अक्षर अति स्थूल रूप से दृष्टिगोचर हो रहे थे। सदाचार सम्मेलन भीतर हो रहा था नाना धर्मों को मानने वाले शतशः स्त्री पुरुष वहां एकत्रित हो रहे थे। सभापति का आसन स्वयं महाराजधिराज श्री देव जी ने संभाला था। जब हमारे हीरो (अतिथि) वहां पहुँचे तो सभा की कार्रवाई आरम्भ हो चुकी थी, सभापति ने अति प्रभावशाली शब्दों में कहा कि भाइयों। मनुष्य धर्म संसार में सबसे उत्तम ग्रहण करने की वस्तु है और यह वेद का आदेश है कि ए मानव तू वेदोक्त धर्म का आचरण कर यह निष्काम कर्म साथ भाषणादि व्रत यम नियम रूपी धर्म सब के लिये सामान्य है। देखो जब कोई मिथ्या भाषण चोरी आदि की इच्छा करता है तभी उसके आत्मा में भय शंका, लज्जा अवश्य उत्पन्न होती है इसलिये यह धर्म करने योग्य नहीं हैं। क्योंकि जो लोग इस न्याय युक्त वेद धर्म के अनुकूल अपना आचरण करता है उसकी इस लोक में कीर्ति और भव्य सर्वोत्तम सुख को प्राप्त होता है। मनुस्मृति में धर्म के चार लक्षण बतायें हैं वेद, स्मृति, सत्पुरुषों का आचार और अपने आत्मा के ज्ञान से अविरूद्ध प्रियाचरण करना। मनुष्यों का यही मुख्य आचार है कि जो इन्द्रियां चित्त को हरण करने वाले विषयों में प्रवृत्त कराती है उनको रोकने में प्रयत्न करे जैसे घोड़े का सारथि रोक का शुद्ध मार्ग में चलाता है। यह बात पक्की अपने मन में धारण करली कि जैसे अग्नि में इन्धन और घी डालने से उसकी वृद्धि होती है उसी भान्ति कामों को उपभोग से काम

शान्ति कभी नहीं होती अपितु बढ़ती ही जाती है। इस लिये पंचकर्मेन्द्रियों तथा पंचज्ञानेन्द्रियो और ग्यारवें मन को वश में करके युक्त आहार विहार से स्व शरीर की रक्षा करनी प्रत्येक नर नारी का कर्त्तव्य है।

आचारः प्रथमो धर्मः श्रुत्युक्तः स्मृति एवच जो सत्य भाषणादि कर्मों का आचरण करना है वही वेद और स्मृति में कहा हुआ आचार है। कई लोग इस में शंका करते हैं कि आर्यवर्त देशवासियों का बाहर दूसरे देशों में जाने से तो आचार नष्ट नहीं हो जाता महाराज जी ने कहा कि यह बात मिथ्या है क्योंकि जो बाहर भीतर की पवित्रता करनी सत्य भाषणादि आचरण करना है वह जहां कहीं करेगा आचार और धर्म भ्रष्ट कभी न होगा। इसमें महाभारत शान्तिपर्व का प्रमाण है एक समय व्यास जी अपने पुत्र शुक और शिष्य सहित पाताल अर्थात जिसको इस समय "अमेरिका" कहते हैं उसमें निवास करते थे शुक्राचार्य ने अपने पिता से एक प्रश्न पूछा कि हे पिता जी क्या आत्म विद्या इतनी ही है जितना आपने उपदेश दिया है। या इससे अधिक और भी है व्यास जी ने अपने पुत्र को प्रेम से कहा कि हे पुत्र! तू मिथिलापुरी में जा कर यही प्रश्न जनक राजा से कर वह इसका यथा योग्य उतर देगा। पिता का आदेश पाकर वह पाताल से मिथिलापुरी की ओर चले। और वह हरिवर्ष (यूरोप) हूण (यहूदी) आदि देशों से होकर चीन में आये और वहां से भारत वर्ष में पधारे। इसी भान्ति हमारे देश के महामान्य योगेश्वर कृष्ण अर्जुन को साथ लेकर पाताल में स्थित उद्धालक ऋषि को महाराजा युधिष्ठिर के अश्वमेध यज्ञ कराने के लिये लाये थे। धृतराष्ट्र का विवाह गांधार (कंधार) की राजपुत्री से हुआ। माद्री पाण्डु की स्त्री ईरान के राजा की कन्या थी। जो देश देशान्तर, द्वीप द्विपान्तर में न जाते होते तो यह सब बातें क्यों कर हो सकती थी। और आजकल छूतछात और धर्म नष्ट होने की शंका है वह केवल मूर्खों के बहकाने और अज्ञान वढ़ने से है जो महाभ्रष्ट म्लेच्छकुलोत्पन्न वेश्यादि के समागम से आचार भ्रष्ट धर्म हीन नहीं होते किन्तु देश देशान्तर के उत्तम पुरुषों के साथ समागम में दोष और छूत मानते हैं यह केवल मूर्खता की बात है।

हां इतना कारण तो है कि जो लोग मांस भक्षण और मद्यपान करते हैं उनके शरीर और वीर्यादि धातु भी दुर्गन्धादि से दूषित होते हैं इसलिये उनका संग करने से आर्यों को भी यह कुलक्षण न लग जाये यह तो ठीक है परन्तु इनसे व्यवहार और गुण ग्रहण करने में कोई भी दोष वा पाप नहीं है। किन्तु इनके मद्यपानादि दोषों को छोड़ गुणों को ग्रहण करें तो कुछ भी हानि नहीं। महाराज जी ने बड़े जोरदार शब्दों में यह घोषण की कि **"धर्म हमारे आत्मा और कर्त्तव्य के साथ है।"**

इतना कहके महाराज जी ने अपना भाषण समाप्त किया। इसके उपरान्त पण्डित वेद मित्र जी स्टेज पर पधारे और आते ही महाराज जी के भाषण का अनुमोदन करते हुए कहा कि जो मूर्ख लोग भोजन छादन में बखेड़ा डालते हैं उनका भाव वस्तुतः यही होता है कि वह इनको मूर्ख रखकर ठग लेवें और अपने जाल में फंसायें रखें। पण्डित जो ने कहा कि हां इतना अवश्य चाहिए कि **मद्य मांस का गृहण कदापि भूल कर भी न करें**। परन्तु यह लोग जो चोका करके रसोई करने को कहते हैं वह भी समय समय की बात है

शान्ति की अवस्था में घर गृहस्थ में अवश्य पवित्रता रखें परन्तु युद्ध में तो एक हाथ से तलवार चलाते जाना और दूसरे हाथ से रोटी भी खाते जाना उचित है। क्योंकि अपनी विजय करना ही **आचार** और पराजित होना ही **अनाचार** है। इसी समय की न पहचान से मूढ लोगों ने चौका लगाते विरोध करते कराते सब स्वातन्त्रय, आनन्द, धन, राज्य विद्या, और पुरुषार्थ पर चौका लगा कर हाथ पर हाथ धर बैठे हैं और इच्छा करते हैं कि कुछ पदार्थ मिलें तो पका कर खायें। हां जब भोजन कर उस स्थान को धोने, लेपन करने, झाड़ू लगाने, कूड़ा कर्कट दूर करने में प्रयत्न अवश्य करना चाहिए। न कि मुसलमानों, इसाइयों के सदृश भ्रष्ट पाकशाला करना। पण्डित जी के व्याख्यान सुन कर सब गद्गद् होगए हमारे यात्री महोदय ने खड़े होकर एक प्रश्न किया कि पण्डित जी कृपया यह बता दें कि क्या द्विज अपने हाथ की रसोई खावें या शूद्र के हाथ की भी बनाई हुई खाले। पण्डित जी ने गम्भीरता पूर्वक कहा कि भाइयों वैदिक धर्म किसी विशेष जाति को शूद्र स्वीकार नहीं करता अपितु जो विद्या न पढ़ सके तथा क्षात्र धर्म और वैश्य का काम न कर सके वह शूद्र है वह अपनी सेवा द्वारा ही कार्य करे। अधिकार तो समान है परन्तु योग्यता के अनुसार ही कार्य विभाग होते हैं तो इसलिए शूद्र के हाथ का भोजन करने में कोई दोष नहीं है। हां वह शूद्र शूद्रता और पवित्रता को अवश्य रखें। हां जो मांसाहारी व्यभिचारी मद्यपानादि दोषों से युक्त हैं उनके गृह का भोजन तो आपत् काल के बिना कदापि न खावें। क्योंकि उनके साथ खाने पीने से यह दोष आर्यो को न लग जावें। बस केवल यही सावधानी रहे। आपस में भोजन करने से प्रेम तो बढ़ता है परन्तु जब तक एक मत एक हानि, लाभ एक सुख-दुःख परस्पर न माने तब तक उन्नति होना बड़ा ही कठिन है। केवल खाने पीने ही से सुधार नहीं हो सकता परन्तु जब तक बुरी बातें नहीं छोड़ोगे तब तक सिद्धि प्राप्त नहीं होगी। **विदेशों के आर्यवर्त्त में राज्य होने के कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना पढ़ाना बालावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयाशक्ति मिथ्या भाषणादि कुलक्षण, वेद विद्या का अप्रचार आदि कुधर्म है। जब आपस में भाई भाई लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है।** देखो महाभारत युद्ध में देश विदेश के लोग यहां आकर परस्पर खाते पीते रहे हैं।

भक्ष्य तथा अभक्ष्य

पण्डित जी ने पुनः श्रोताओं से कहा कि भक्ष्य तथा अभक्ष्य के दो प्रकार है एक धर्म शास्त्रोक्त दूसरा वैद्यक शास्त्रोक्त मद्य, मांस, गांजा, भांग, अफीम आदि के सेवन से बुद्धि नष्ट हो जाती है अर्थात् ऐसा अलजी बिगड़ा हुआ है। दुर्गन्धयुक्त सढ़ा हुआ अच्छी प्रकार न पका हो और मद्य मांस कभी न खावे इससे स्वास्थ्य बिगड़ता है। गाय के दूध का सेवन करो और पुष्ट होवो। सतोगुणी अन्न का सेवन करने से बल बुद्धि बढ़ती है। देखो बिना पशुओं को मारे मांस प्राप्त नहीं होता अतः इन उपकारी पशुओं की हत्या करना महा पाप है जब से विदेशी मांसाहारी इस देश में आके गौ आदि उपकारी पशुओं को मार कर खाने लमें तब से ही आर्य्यों के दुख की बढ़ती

होती जाती है । यहां पर एक प्रश्न्न उत्पन्न होता है कि जो हिंसक जानकर हो क्या उनकी भी हत्या न की जावे । इसका उत्तर यह है कि यह राज पुरुषों का काम है कि ऐसे हानि कारक पशु व मनुष्यों को दण्ड देवे । उनका मांस फैंक दो या जो कोई कुत्ते आदि मांसाहारियों को खिला दो हां यह बात सत्य है कि उस मनुष्य का स्वभाव मांसाहारी होकर हिंसक हो जाता है । और वह चोरी विश्वसघात छल कपटादि दोषों से युक्त हो जाता है । किसी को अपना जूठन न दो और न ही स्वयं उच्छिष्ट खाओ । स्त्री पुरुष भी एक दूसरे की जूठ न खावे । क्योंकि प्रत्येक शरीर की प्रकृति भिन्न २ होती है कहीं एक दूसरे के दोष न लग जावे इसमें स्वास्थ्य की दृष्टि से कहा गया है । एक चौका गोबर के लगाने से स्थान शुद्ध पवित्र हो जाता है देखने में सुन्दर लगता है । यहां बैठकर भोजन करना रुचि कर होता है । भोजन निरामिष होना चाहिए । इतना कहने पर पण्डित जी ने कहा कि भाइयों अब मैंने तुम्हें आचार-अनाचार भक्ष्याभक्ष्य विषय में सब कुछ समझा दिया है संक्षेप से यदि मैं कह दूँ कि धर्म शास्त्रोक्त खाना वह हैं जिनमें अहिंसा टपके । और स्वास्थ्य की दृष्टि से जो वलयुक्त स्वास्थ्य बर्धक हो अतः भोजन खाते समय ये तीन शब्द याद रखें—

ऋत भुक्त—हित भुक्त—मित भुक्त

॥ ओ३म् शम् ॥

पं० सिद्धगोपाल साहित्य वाचस्पति

की

सुप्रसिद्ध पुस्तक

बहिनों की बातें

का

पुरुष वर्ग के लिए रूपांतर

मित्रों की बातें

प्रकाशित हो गई

"बहिनों की बातें" का आर्य जगत् ने अच्छा स्वागत किया था । विद्वानों ने मुक्त कंठ से इसकी प्रसंशा की थी । कन्या पाठशालाओं और गुरुकुलों के पाठ्य क्रम में निर्धारित रहती है । इसके आठ संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं इसी पुस्तक को पुलिंग में संशोधित करके पुरुष वर्ग के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं ।

लड़कों को पुरस्कार में देने योग्य और उनको पाठ्यक्रम में पढ़ाने योग्य पुस्तक है । आज ही मंगावें । मूल्य १।)

गोविन्दराम हासानन्द ४४०८ नई सड़क, देहली ।

स्वामी दयानन्द की महानता

यहां महर्षि दयानन्द और उनके प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' के सन्बन्ध में विभिन्न विद्वानों द्वारा समय-समय पर प्रकट की गई सम्मतियों का संकलन किया गया है, जिससे उनकी महत्ता का दिग्दर्शन मात्र हो सकता है—

❀ दयानन्द का चरित्र मेरे लिए ईर्ष्या और दुःख का विषय है।.........

ऋषि दयानन्द हिन्दुस्तान के आधुनिक ऋषियों में, सुधारकों में श्रेष्ठ पुरुषों में एक थे।

उनके जीवन का प्रभाव हिन्दुस्तान पर बहुत अधिक पड़ा है।

—महात्मा मोहनदास कर्मचन्द गांधी

❀ मेरा सादर प्रणाम हो उस महान् गुरु दयानन्द को, जिसकी दृष्टि ने भारत के अध्यात्मिक इतिहास में सत्य और एकता को देखा और जिसके मन ने भारतीय जीवन के सब अङ्गों को प्रदीप्त कर दिया। जिस गुरु का उद्देश्य भारतवर्ष को अविद्या, आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्व के अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता की जागृति में लाना था, उसे मेरा बारम्बार प्रणाम है।

......मैं आधुनिक भारत के मार्ग-दर्शक उस दयानन्द को आदरपूर्वक श्रद्धांजलि देता हूँ, जिसने देश जी पतितावस्था में भी हिन्दुओं को प्रभु की भक्ति और मानव-समाज की सेवा के सीधे व सच्चे मार्ग का दिग्दर्शन कराया।

—डा० रवीन्द्रनाथ ठाकुर

❀ वह दिव्य ज्ञान का सच्चा सैनिक, विश्व को प्रभु की शरण में लाने वाला योद्धा, और मनुष्य व संस्थाओं का शिल्पी तथा प्रकृति द्वारा आत्मा के मार्ग में उपस्थित की जाने वाली बाधाओं का वीर विजेयता था और इस प्रकार मेरे समक्ष आध्यात्मिक क्रियात्मकता की एक शक्ति-सम्पन्न मूर्ति उपस्थित होती हैं। इन दो शब्दों का जो कि हमारी भावनाओं के अनुसार एक दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं, मिश्रण ही दयानन्द की उपयुक्त परिभाषा-प्रतीत होती हैं। उसके व्यक्तित्व की व्याख्या यों की जा सकती है—एक मनुष्य, जिसकी आत्मा में परमात्मा है, चर्म चक्षुओं में दिव्य तेज है और हाथों में इतनी शक्ति है कि जीवन-तत्व से अभीष्ट स्वरूप वाली मूर्ति गढ़ सके तथा कल्पना को क्रिया में परिणित कर सके। वह स्वयं दृढ़ चट्टान थे। उनमें दृढ़ शक्ति थी कि चट्टान पर घन चला कर पदार्थों को सुदृढ़ व सुडोल बना सकें। प्राचीन सभ्यता में विज्ञान के गुप्त भेद

विद्यमान हैं, जिनमें से कुछ को अर्वाचीन विद्याओं ने ढूंढ़ लिया है, उनका परिवर्धन किया है और उन्हें अधिक समृद्ध या स्पष्ट कर दिया है, किन्तु दूसरे अभी तक निगूढ़ ही बने हुए हैं। इसलिए दयानन्द की इस धारणा में कोई अवास्तविकता नहीं है कि वेदों में विज्ञान-सम्मत तथा धार्मिक सत्य निहित हैं।

वेदों का भाष्य करने के बारे में मेरा विश्वास है कि चाहे अन्तिम पूर्ण अभिप्राय कुछ भी हो, किन्तु इस बात का श्रेय दयानन्द को ही प्राप्त होगा कि उसने सर्वप्रथम वेदों की व्याख्या के लिए निर्दोष मार्ग का आविष्कार किया था। चिर-कालीन अव्यवस्था और अज्ञान-परस्पर के अन्धकार में से सूक्ष्म और मर्म भेदी दृष्टि से उसी ने सत्य को खोज निकाला था। जंगली लोगों की रचना कही जाने वाली पुस्तक के भीतर उसके धर्म पुस्तक होने का वास्तविक अनुभव उन्होंने ही किया था। ऋषि दयानन्द ने उन द्वारों की कुंजी प्राप्त की है, जो युगों से बन्द थे और उसने पटे हुए झरनों का मुख खोल दिया।

......"ऋषि दयानन्द के नियम-बद्ध कार्य ही उनके आत्मिक शरीर के पुत्र हैं, जो सुन्दर सुदृढ़ और सजीव हैं तथा अपने कर्ता की प्रत्याकृति हैं। वह एक ऐसे पुरुष थे जिन्होंने स्पष्ट और पूर्ण रीति से जान लिया था कि उन्हें किस कार्य के लिए भेजा गया है।

—श्री अरविन्द घोष

ऋषि दयानन्द ने भारत के शक्ति शून्य शरीर में अपनी दुर्धर्ष शक्ति, अविचलता तथा सिंह-पराक्रम फूंक दिए हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती उच्चतम व्यक्तित्व के पुरुष थे। यह पुरुष-सिंह उनमें से एक था जिन्हें यूरोप प्रायः उस समय भुला देता है जब कि वह भारत के सम्बन्ध में अपनी धारणा बनाता है। किन्तु एक दिन यूरोप को अपनी भूल मान कर उसे याद करने के लिए बाधित होना पड़ेगा, क्योंकि उसके अन्दर कर्मयोगी, विचारक और नेता के उपयुक्त प्रतिभा का दुर्लभ सम्मिश्रण था।

दयानन्द ने अस्पृश्यता व अछूतपन के अन्याय को सहन नहीं किया और उससे अधिक उनके अपहृत अधिकारों का उत्साही समर्थक दूसरा कोई नहीं हुआ। भारत में स्त्रियों की शोचनीय दशा को सुधारने में भी दयानन्द ने बड़ी उदारता व साहस से काम लिया। वास्तव में राष्ट्रीय भावना और जन-जागृति के विचार को क्रियात्मक रूप देने में सबसे अधिक प्रबल शक्ति उसी की थी। वह पुनर्निर्माण और राष्ट्र-संगठन के अत्यन्त उत्साही पैगम्बरों में से था।

—फ्रेंच लेखक रोम्यां रोलां

हमें वेदों के अध्ययन को प्रबल प्रोत्साहन देने और यह सिद्ध करने में कि मूर्तिपूजा वेद-सम्मत नहीं है, स्वामी दयानन्द के महान् उपकार को अवश्य स्वीकार करना चाहिए। आर्यसमाज के प्रवर्तक वर्तमान जाति-भेद की मूर्खता और उसकी हानियों के विरुद्ध अपने अनु-यायियों को तैयार करने के अतिरिक्त यदि और कुछ भी न करते तो भी वह वर्तमान भारत के बड़े नेता के रूप में अवश्य सन्मान पा जाते।

—जर्मन प्रोफेसर डा० विण्टरनीज

मेरे निर्बल शब्द ऋषि की महत्ता का वर्णन करने में अशक्त हैं। ऋषि के अप्रतिम ब्रह्मचर्य, सत्य-संग्राम और घोर तपश्चर्या के लिए अपने हृदय के पूज्य भावों से प्रेरित होकर मैं उनकी वन्दना करता हूँ।

में ऋषि को शक्ति-सुत अर्थात् कर्मवीर योद्धा समझकर उनका आदर करता हूँ। उनका जीवन राष्ट्र-निर्माण के लिए स्फूर्तिदायक, बलदायक और मननीय है।

दयानन्द उत्कट देशभक्त थे, अतः मैं राष्ट्रवीर समझकर उनकी वन्दना करता हूँ।

—साधु टी० एल० वास्वानी

❀ स्वामी दयानन्द निःसन्देह एक ऋषि थे। उन्होंने अपने विरोधियों द्वारा फके गये ईंट-पत्थरों को शान्तिपूर्वक सहन कर लिया। उन्होंने अपने में महान् भूत और महान् भविष्य को मिला दिया। वह मर कर भी अमर हैं। ऋषि का प्रादुर्भाव लोगों को कारागार से मुक्त करने और जाति-बन्धन तोड़ने के लिए हुआ था। ऋषि का आदेश है—आर्यावर्त, उठ जाग; समय आ गया है, नये युग में प्रवेश कर, आगे बढ़।

—पाल-रिचर्ड (प्रसिद्ध फ्रेंच लेखक)

❀ स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू-धर्म के सुधार का बड़ा कार्य किया, और जहां तक समाज सुधार का सम्बन्ध हैं, वह बड़े उदार-हृदय थे। वे अपने विचारों को वेदों पर आधारित और उन्हें ऋषियों के ज्ञान पर अवलम्बित मानते थे। उन्होंने वेदों पर बड़े बड़े भाष्य किये, जिससे मालूम होता है कि वे पूर्ण अभिज्ञ थे। उनका स्वाध्याय बड़ा व्यापक था।

—प्रो० एफ० मैक्समूलर

❀ स्वामी दयानन्द के सिद्धान्त उनके सत्यार्थ प्रकाश में निहित हैं। यही सिद्धान्त वेदभाष्य-भूमिका में हैं। स्वामी दयानन्द एक धार्मिक सुधारक थे। उन्होंने मूर्तिपूजा से अविराम युद्ध किया।

—सर वेलण्टाइन चिरोल

❀ आर्यसमाज समस्त संसार को वेदानुयायी बनाने का स्वप्न देखता है। स्वामी दयानन्द ने इसे जीवन और सिद्धान्त दिया। उनका विश्वास था कि आर्य जाति चुनी हुई जाति, भारत चुना हुआ देश और वेद चुनी हुई धार्मिक पुस्तक है..."

—ब्रिटेन के (स्व०) प्रधानमंत्री रेमजे मैकडॉनल्ड

❀ स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुयायी उन्हें देवता-तुल्य जानते थे, और वह निस्सन्देह इसी योग्य थे। वह इतने विद्वान और अच्छे आदमी थे कि वे प्रत्येक धर्म के अनुयायियों के लिए सम्मान के पात्र थे। उनके समान व्यक्ति समूचे भारत में इस समय कोई नहीं मिल सकता। अतः प्रत्येक व्यक्ति का उनकी मृत्यु पर शोक करना स्वाभाविक है।

—सर सैयद अहमदखां

❀ मेरी सम्मति में स्वामी दयानन्द एक सच्चे जगत् गुरु और सुधारक थे।

—मि० फौक्स पिट्
(जनरल सेक्रेटरी मोरल एजूकेशन लीग लण्डन)

❀ स्वामी दयानन्द सरस्वती उन महापुरुषों में से थे, जिन्होंने आधुनिक भारत का निर्माण किया और जो उसके आचार-सम्बन्धी पुनरुत्थान तथा धार्मिक पुनरुद्धार के उत्तरदाता हैं। हिन्दू-समाज का उद्धार करने में आर्यसमाज का बहुत बड़ा हाथ है। रामकृष्ण मिशन ने बंगाल में जो कुछ किया, उससे कहीं अधिक आर्यसमाज ने पंजाब और संयुक्तप्रान्त में किया। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण न होगा कि पंजाब का प्रत्येक नेता आर्य-समाजी है। स्वामी दयानन्द को मैं एक धार्मिक और सामाजिक सुधारक तथा कर्मयोगी मानता हूँ। संगठन-कार्यों के सामर्थ्य और प्रसार की दृष्टि से आर्यसमाज अनुपम संस्था है।

—श्री सुभाषचन्द्र बोस

❀ उनकी मृत्यु से भारत ने अपने योग्यतम पुत्रों में से एक को खो दिया।

—कर्नल अलकाट
(थियासोफिकल सोसायटी के प्रेसीडेन्ट)

❀ स्वामी दयानन्द सरस्वती राष्ट्रीयता, सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से भारत का एकी- [illegible] चाहते थे। भारत-वासियों को राष्ट्रीयता के सूत्र में ग्रथित करने के लिए उन्होंने देश को विदेशी दासता से मुक्त करना आवश्यक समझा था।...

—श्री रामानन्द चटर्जी (सम्पादक 'माडर्न रिव्यू')

❀ जब भारत के उत्थान का इतिहास लिखा जायेगा तो नंगे फकीर दयानन्द सरस्वतो को उच्चासन पर बिठाया जायेगा।

—सर यदुनाथ सरकार

❀ स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं, मैंने संसार में केवल उन्हीं को गुरु माना है। वह मेरे धर्म के पिता हैं और आर्यसमाज मेरी धर्म की माता है। इन दोनों की गोद में मैं पला। मुझे इस बात का गर्व है कि मेरे गुरु ने मुझे स्वतन्त्रतापूर्वक विचार करना, बोलना और कर्तव्य-पालन करना सिखाया तथा मेरी माता ने मुझे एक संस्था में बद्ध होकर नियमानुवर्तिता का पाठ दिया।

—पंजाब केसरी ला० लाजपतराय

❀ स्वामी दयानन्द के उच्च व्यक्तित्व और चरित्र के विषय में निस्सन्देह सर्वत्र प्रशंसा की जा सकती है। वे सर्वथा पवित्र तथा अपने सिद्धान्तों के अनुसार आचरण करने वाले महानुभाव थे। वह सत्य के अत्यधिक प्रेमी थे।

—रेवरेण्ड सी. एफ. एण्डरूज

❀ इसका श्रेय केवल स्वामी दयानन्द को ही है कि हिन्दू लोग आधी शताब्दि में ही रूढ़िवाद और पौराणिक देवी-दवताओं की पूजा छोड़ कर एक अत्यन्त शुद्ध ईश्वरवाद को मानने लगे हैं।

—प्रिन्सिपल एस. के. रुद्र

❀ महर्षि दयानन्द ने भारत और संसार मात्र की जो सेवा की है, उसे मैं भली भांति जानता हूँ। वह भारतवर्ष के सर्वोत्तम महापुरुषों में से थे। स्वामी जी ने मातृ-भूमि की सब से बड़ी सेवा यह की है कि उसमें जातीय शिक्षा का विचार पैदा कर दिया है।

—श्री जी. एस. अरुण्डेल

❀ ऋषि दयानन्द ने हिन्दू समाज के पुनरुत्थान में इतना अधिक हाथ बटाया है कि उन्हें २० वीं शताब्दी का प्रमुखतम हिन्दू समझा जायेगा।

श्री तारकनाथ दास एम० ए०
पी० एच० डी० (म्यूनिच)

❀ स्वामी दयानन्द भारतवर्ष के उन धार्मिक महापुरुषों में से एक हैं, जिनका गुणानुवाद करने में ही जीवन समाप्त हो सकता है।

उन्होंने मन, वचन और कर्म की स्वतन्त्रता का सन्देश दिया तथा मानव मात्र की समानता का उपदेश दिया। वह अपने जीवन और मृत्यु में महान् ही रहे।

—श्रीमती सरलादेवी चौधरानी

❀ महर्षि दयानन्द भारत-माता के उन प्रसिद्ध और उच्च आत्माओं में से थे जिनका नाम संसार के इतिहास में सदैव चमकते हुए सितारों की तरह प्रकाशित रहेगा। वह भारत-माता के उन सपूतों में से हैं, जिनके व्यक्तित्व पर जितना भी अभिमान किया जाय थोड़ा है। नैपोलियन और सिकन्दर जैसे अनेक सम्राट् एवं विजेता संसार में हो चुके हैं; परन्तु स्वामी उन सबसे बढ़ कर थे।

—खदीजा बेगम एम० ए०

❀ ईसाइयत और पश्चिमी सभ्यता के मुख्य हमले से हिन्दुस्तानियों को सावधान करने का सेहरा यदि किसी व्यक्ति के सिर बांधने का सौभाग्य प्राप्त हो तो स्वामी दयानन्द जी की ओर इशारा किया जा सकता है। १९वीं सदी में स्वामी दयानन्द जी ने भारत के लिए जो अमूल्य काम किया है, उससे हिन्दू जाति के साथ-साथ मुसलमानों तथा दूसरे धर्मावलम्बियों को भी बहुत लाभ पहुँचता है।

—पीर मुहम्मद यूनिस

❀ स्वामी दयानन्द ही पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने "हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानियों के लिए" का नारा लगाया था।......आर्यसमाज के लिए मेरे हृदय में शुभ इच्छाएं हैं और उस महान् पुरुष के लिए, जिसका आप आर्य आदर करते हैं, मेरे हृदय में सच्ची पूजा की भावना है।

—श्रीमती एनी बीसेण्ट

❀ स्वामी दयानन्द जी पर संकीर्णता का दोष लगाना भ्रमात्मक और मिथ्या है।......उनकी शिक्षाओं का प्रमुख लक्ष्य एकता रहा और इस्लाम का आंतक हिन्दुओं को जाति-भेद की उपेक्षा करके संगठित होने में बहुत सहायक सिद्ध हुआ। उनके प्रयत्नों से आर्य या हिन्दू एक जाति और वेदों का आदर्श पारस्परिक एकसूत्रता के साधन बन गये।

—श्री नृसिंह चिन्तामणि केलकर

'सत्यार्थप्रकाश' के प्रति श्रद्धाञ्जलियां

❀ मैंने सत्यार्थप्रकाश को कम से कम १८ बार पढ़ा। जितनी बार मैं उसे पढ़ता हूँ, मुझे मन और आत्मा के लिए कुछ नवीन भोजन मिलता है। पुस्तक गूढ़ सचाइयों से भरी पड़ी है।

स्व० पं० गुरुदत्त विद्यार्थी एम० ए०

❀ हिन्दू जाति की ठण्डी रगों में उष्ण रक्त का संचार करने वाला यह ग्रन्थ अमर रहे, यही मेरी कामना है। 'सत्यार्थप्रकाश' का विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मज़हब की शेखी नहीं मार सकता।

—श्री विनायक दामोदर सावरकर

❀ भारत में अंग्रेजों के प्रभुत्व और पाश्चात्य शिक्षा के प्रवेश के कारण यह खतरा उत्पन्न हो गया था कि एक दिन देश का जीवन और दृष्टिकोण राष्ट्रीयता से शून्य हो जायेगा। यह भी भय हुआ कि प्रतिक्रिया के तौर पर पुरानी रूढ़ियों और पद्धतियों के प्रति उत्पन्न अन्ध-श्रद्धा राष्ट्रीय जीवन और चरित्र की उचित उन्नति को रोकने का कारण बन जाय। जाति के जीवन की ऐसी नाजुक घड़ी में कार्यक्षेत्र में अवतीर्ण होकर आत्म-रक्षा का मार्ग दिखाने वाले महापुरुषों में महर्षि दयानन्द का स्थान बहुत ऊंचा है।

निस्सन्देह यह परम सन्तोष की बात है कि महर्षि के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी आर्यसमाज ने धर्म के क्षेत्र में अपना दरवाजा सदा खुला रखा है।

महर्षि ने अपने ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' में देश की राजनीतिक दशा पर भी स्पष्टतया भाषा में अपना अभिमत प्रकट कर दिया है—

"......कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रहरहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर पिता माता के समान कृपा न्याय और दया के साथ भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं है।" क्या हमारी राजनीतिक दासता का इससे अधिक विशद तथा साहसपूर्ण विश्लेषण सम्भव है?

......ऋषि ने अपने देशवासियों तथा समस्त विश्व को सत्यार्थप्रकाश के रूप में जो अविनश्वर वसीयत दी है, वह उसकी प्रकाण्ड प्रतिभा का का प्रतीक है। इस ग्रन्थ में वह हमारे सम्मुख एक उत्पादक कलाकार, समीक्षक, संहारक तथा निर्माता के रूप में प्रकट हुआ है।

......ऋषि ने अपने महान् दर्शन 'सत्यार्थप्रकाश' में एक ऐसे स्वतन्त्र भारत वर्तमान परिस्थितियों तथा अवस्थाओं में स्वकीय संस्कृति तथा सभ्यता की अमूल्य परम्पराओं के साथ सम-स्वर करके हो निर्माण कर सकता है।

—श्री श्यामाप्रसाद मुखर्जी

❀ 'सत्यार्थप्रकाश' स्वामी दयानन्द का ज्ञान-कोष है। इसमें वैदिक धर्म का सर्वथा क्रियात्मक स्वरूप वर्णित है। यह दक्षिण भारत में प्रचलित विभिन्न मतवादों और धार्मिक विश्वासों के कारण वहां अत्यधिक उत्यधिक उपयोगी सिद्ध होगा।

—(स्व०) श्री ए० रंगास्वामी आयंगर
एम० एल० ए०
['हिन्दू' व 'स्वदेशमित्रन्' मद्रास के सम्पादक]

❀ मैं अपनी जनता को महर्षि दयानन्द के महान् ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' पढ़ने का परामर्श दूंगा। यह उन्हें वेदों की महतीं और स्थायी सत्यता का ज्ञान देगा। उन्होंने स्त्रियों के अधिकारों का जैसा पक्ष ग्रहण किया है, वैसा प्रगतिशील समर्थन संसार में कहीं नहीं मिलेगा।

—(स्व०) श्री सत्यमूर्ति एम० एल० ए०

❀ संसार में जितने धर्म-ग्रन्थ हैं, उनमें केवल सत्यार्थ-प्रकाश ही ऐसी पुस्तक है जिसमें सभी धर्म-मतों की निष्पक्ष आलोचना और सच्चे धर्म की मीमांसा है। पक्षपातहीन, सत्यप्रेमी धर्म-सुधारक खुले तौर से तुलनात्मक धर्म-मतों की निष्पक्ष आलोचना और सच्चे धर्म की मीमांसा है। पक्षपातहीन, सत्यप्रेमी धर्म-सुधारक खुले तौर से तुलनात्मक धर्म-विचार करते और सब मत-मतान्तरों से सत्य का ही ग्रहण करते हैं।

......ऋषि दयानन्द ने अपने सत्यार्थप्रकाश में एक ओर तो युक्ति-प्रमाणों से वैदिक सिद्धान्त की स्थापना की और दूसरी ओर विविध मत-मतान्तरों की न्यायपूर्ण युक्तियुक्त समीक्षा भी की। तुलनात्मक और निष्पक्ष धार्मिक विचार का आदर्श ही स्वामी दयानन्द थे। सत्यार्थप्रकाश से जो लोग चिढ़ते हैं और इसके लिए आर्यसमाज को कोसते हैं वे यह भूल जाते हैं कि यह युग तुलनात्मक विचार का ही है। सत्यार्थप्रकाश ने धार्मिक जगत् में क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। सत्यार्थप्रकाश संसार का दिग्दर्शक यन्त्र है।

—प्रो० रमेशचन्द्र बनर्जी एम० ए०

......मेरा विश्वास है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती महान् आत्मा थे और हमारे उद्धार के लिए ही उनका जन्म हुआ था।

......यदि कोई सत्य का प्रेमी सत्यार्थप्रकाश के उन समुल्लासों से रुष्ट हो, जिसमें स्वामी जी ने अन्तर्दृष्टि और उपयुक्त भाषा में सब धर्मों व मतों के रूढ़ीवादों और अन्ध-परम्पराओं की अपने दृष्टिकोण से आलोचना की है, तो मुझे खेद होगा। कोई धर्म व समाज-सुधारक साथ-साथ कोमल और प्रभावशाली नहीं हो सकता।

—सर सीताराम
(युक्तप्रान्तीय कौंसिल के अध्यक्ष)

साहित्य-परिचय

[समालोचना के लिए पुस्तक की दो प्रतियां आनी आवश्यक हैं]

नैसर्गिक नारी सौन्दर्यः—

प्रस्तुत पुस्तक की लेखिका सुप्रसिद्ध पं० आत्माराम अमृतसरी की सुपुत्री हैं। वर्षों तक लेखिका आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा की आचार्या रह चुकी है।

यह पुस्तक इस उद्देश्य से लिखी गई है कि जो स्वास्थ्य दीर्घ काल तक कैसी सुरक्षित रखे और जो दुर्बल व अस्वस्थ हैं वे इस पुस्तक में दिये गये उपायों से स्वास्थ्य को पुनः प्राप्त कर सकते हैं। इसके साथ २ प्रत्येक अंग प्रत्यंग को सुडौल बनाने के लिये किन २ योगासनों को करना चाहिए भी इस पुस्तक में वर्णित है। साथ ही अनेक आसनों के चित्र भी दिये गये हैं। प्रत्येक नारी के लिए पठनीय व संग्रहणीय पुस्तक है।

सनातन शुद्धि शास्त्रः—

लेखक—गोविन्द प्रसाद शास्त्री

प्रकाशक—स्टुडेन्ड बुकडिपो रोशनपुरा देहली

मूल्य २) पृष्ठ २१६

इस पुस्तक में शुद्धि का सारा इतिहास दिया हुआ है। प्राचीन काल से आर्य लोग शुद्धि किया करते थे और विभिन्न देशों में भी शुद्धि पताका लेकर गये थे। मनन करने योग्य पुस्तक है।

संस्कार पुष्पाञ्जलि–

प्रकाशक उपरोक्त मूल्य ।–) पृष्ठ सं. ३२

इस संग्रह में प्रत्येक संस्कारों पर गाये जाने योग्य भजन है।

गीता में ईश्वर का स्वरूप–

लेखक:—पं. अमरसिंह जी आर्य पथिक

प्रकाशक—उपरोक्त पृष्ठ सं. १८ मूल्य =)

पंडित जी ने अपनी अपनी अकाट्य युक्तियों द्वारा गीता से सिद्ध कर दिया है श्री कृष्ण ने गीता में निराकार ईश्वर का प्रतिपादन किया साकार का नहीं।

रामायण सार–

लेखक:—स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

प्रकाशक—उपरोक्त, पृष्ठ सं. १६ मूल्य =)

रामायण सार स्वामी दर्शनानन्द जी का लिखा काफी प्रचारित ट्रैक्ट है।

प्राप्ति स्वीकार

आर्य रत्न मंजूषा–

संग्रह कर्त्ताः—श्री पं. अवधबिहारी लाल जी

प्रकाशक:—स्वयं द्वारा आर्य प्रादेशिक सभा बंगाल आसाम, कलकत्ता

प्रार्थना–

संग्रहकर्त्ता व प्रकाशक उपरोक्त।

महर्षि दयानन्द की ७५वीं निर्वाण दिवस की

स्मृति में

श्रीमद्दयानन्द चित्रावली

का नया

संस्करण छपकर तैयार हो गया

इस संस्करण में स्वामी जी के सात असली फोटो भी दिये गये हैं। इसके साथ गुरु विरजानन्द के भी दो चित्र छपे हैं जिन्हें आप शायद पहली बार ही देखेंगे। ३० से अधिक चित्र रंग विरंगी स्याहियों में बहुत ही सुन्दर रूप में छपे हैं। साथ ही महर्षि के जीवन की मुख्य मुख्य घटनायें भी मोटे २ अक्षरों में छापी गई हैं। कागज, छपाई की मंहगाई होने पर भी इसका मूल्य २॥) मात्र रखा गया है। थोड़ी ही प्रतियां छपी हैं। महर्षि की स्मृति को बनाए रखने के लिए प्रत्येक आर्य परिवार में होनी चाहिये।

—गोविन्दराम हासानन्द

नई सड़क, देहली।

इक्कीसवीं वार प्रकाशित हो गया

हर घर, समाज और पुस्तकालय में रखने योग्य
देश-विदेश में प्रसिद्ध स्त्री-शिक्षा का ग्रन्थ

नारायणी-शिक्षा अर्थात् गृहस्थाश्रम

[लेखक—स्व० श्री चिम्मनलाल वैश्य]

इस पुस्तक के बीस एडीशन अब तक निकल चुके हैं। इस सचित्र सजिल्द, सर्व विषय विभूषित ५२५ पृष्ठों के इक्कीसवें संशोधित संस्करण का मूल्य ५) है। डाक व्यय पृथक। अपनी प्रति के लिए आज ही लिखिये—

चिम्मनलाल एण्ड संस

तिलहर कुंज, प्रिमियरनगर, पो० अलीगढ़ (यू.पी.)

श्रीमद्दयानन्द चित्रपट

प्रस्तुत चित्र २०×३० साइज के बड़े कलैण्डर साइज पर बढ़िया आर्ट पेपर पर छपा है। चि
की सजावट और सुन्दरता हर घर में पवित्र वातावरण को उत्पन्न करती है। प्रत्येक घर तथा सम
को सजाने योग्य यह चित्र है मूल्य ॥) १२ मंगाने पर ४॥) अधिक से अधिक मंगाकर प्रचार करें
डाक तथा पैंकिग खर्च ३ चित्रों पर १) ६ चित्रों पर १॥) १२ चित्रों पर २) पृथक् लगेगा।

मिलने का पता—**गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, देहली**

गतांक से आगे

वैदिक सूक्ति सुधा

[लेखक--जगदीश चन्द्र विद्यार्थी विद्यावाचस्पति]

—●—

उपदेश

२१०. व्रतं कृणुत । (यजु० ४।११)
व्रत धारण करो ।

२११. मांसं...नाश्नीयात् । (अ० ६।६।३६)
मांस नहीं खाना चाहिये ।

२१२. परा देहि शामुल्यम् । (अ० १४।१।२५)
मलिनता दूर कर ।

२१३. मा मृत्योरुदगा वशम् । (अ० १६।२७।८)
मृत्यु के वश में मत आ ।

२१४. मा गृधः (यजु० ४०।१)
लालच मत कर ।

२१५. सखायः क्रतुमिच्छत । (ऋ० ८।७०।१३)
मित्रो ! कर्म करने की इच्छा करो ।

२१६, संजीवा स्थ । (अ० १६ । ६६ ।३)
मिल कर जीओ ।

२१७ केतुं कृण्वन्न केतवे । (अ० २० । ४७ । १२)
अज्ञानियों को ज्ञान दो ।

२१८. जम्भया कृकदाश्वम् । (ऋ० १ । २९ । ७)
दुःख देने वाले को मिटा दो ।

२१९. न दुरुक्ताय स्पृहयेत् । (ऋ० १ । ४१ । ९)
कुभाषी के प्रति स्नेह न करो ।

२२०. पदाभि तिष्ठ तपुषिम् । (ऋ० १ । ४२ । ४)
सताने वालों को पांव से कुचल ।

२२१. धीतिमश्याः । (ऋ० २ । ३१ । ७)
धैर्य धारण कर ।

२२२. ज्योतिर्वृणीत तमसो विजानन् ।
(ऋ० ३ । ३९ । ७)
ज्ञानिन् ! अन्धकार को त्याग कर प्रकाश प्राप्तकर

२२३. अक्षैर्मा दीव्यः । (ऋ० १० । ३४ । १३)
जुआ मत खेलो ।

२२४. वृह माया । (ऋ० ६ । ४५ । ९)
मायाओं को काट डाल ।

२२५. जही न्यत्रिणं पणिं वृको हि षः ।
(ऋ० ६ । ५१ । १४)
बनिये को मार दे क्योंकि वह भेड़िया है ।

२२६. मा चिदन्यद्वि शंसत । (ऋ० ८ । १ ।१)
ईश्वर के अतिरिक्त और किसी को मत पूजो ।

२२७. अधः पश्यस्व मो परि । (ऋ० ८ । ३३ । १९)
हे नारी ! नीचे देख, ऊपर नहीं ।

२२८. विश्वा अप द्विषो जहि । (ऋ० ९ । १३ । ८)
सब द्वेषियों को मार दे ।

२२९. मनुर्भव । (ऋ० १० । ५३ । ६)
मनुष्य बन ।

२३०. व्रजं कृणुध्वम् । (ऋ० १० । १०१ । ८)
गोशाला बनाओ ।

मेधा

२३१. दैवीं धियं मनामहे । (यजु० ४।११)
हम दिव्य बुद्धियां माँगते हैं ।

२३२, अग्ने मेधाविनं कुरु । (यजु० ३२।१२)
हे ज्योतिस्वरूप ! मुझे मेधावी बना ।

२३३. धियो यो नः प्रचोदयात् । (यजु० ३६।३)
प्रभो ! हमारी बुद्धियों को शुभ प्रेरणा कर ।

२३४. त्वं नो मेधे प्रथमा । (अ० ६।१०८।१)
बुद्धि तू हमारे लिए सर्वश्रेष्ठ वस्तु है ।

२३५. अहं सुमेधा वर्चस्वी । (अ०१६।४०।२)
में बहुत बुद्धिमान् और वर्चस्वी बनू ।

२३६. अस्मे धेहि श्रवो बृहद् । (अ० २०।७१।१४)
हे प्रभो ! मुझे बुद्धिमान् बना ।

२३७. विश्वाप भूतु दुर्मतिः । (ऋ० १।१३१।७)
हमारी सब दुष्ट बुद्धि दूर ह

२३८. धियो वाजेभिराविथ । (ऋ ६।११)
प्रभो हमारी बुद्धियों को निर्मल

२३९. धिय आ तनुध्वम् । (ऋ० १०।१ ।२)
बुद्धियों का विस्तार करो ।

२४०. मनीषिणः प्र भरध्वं मनीषाम् ।
(ऋ० १०।१११।१)
बुद्धिमानो ! बद्धियों को खूब बढ़ाओ ।

जीवन का उद्देश्य

२४१. इयं ते यज्ञिया तनूः । (यजु० ४।१।५)
तेरा शरीर प्रभु प्राप्ति के लिये है ।

२४२. अमृतस्य तन्तुं विततं दृशेकम् । (अ० २।१।५)
मनुष्य जीवन का उद्देश्य ईश्वर साक्षात्कार है ।

२४३. यूयमिन्द्रमवृणीध्वम् । (यजु० १।१३)
तुम ईश्वर को प्राप्त करो ।

२४४. राघसे जज्ञिषे । (ऋ० ५।३५।४)
जीव ! तू सिद्धि के लिये उत्पन्न हुआ है ।

सदाचार

२४५. इन्द्रो वृत्राणि जिघ्नते । (अ० २०।५।२)
प्रभु दुराचारियों को दण्ड देता है ।

२४६. परि माग्ने दुश्चरिताद्बाधस्वा मा सुचरिते भज । (यजु० ४।२८)
प्रभो ! मुझे दुश्चरित से बचा कर सुचरित में स्थापित कीजिये ।

२४७. ईमैंवतेन्यविशन्त केपयः । (अ० २०।६४।४६)
दुराचारी यहां ही टिके रहें ।

२४८. धियं वनेम ऋतया सपन्तः । (ऋ० २।११।१२)
सदाचार से प्रेम करते हुए हम बुद्धि प्राप्त करें ।

२४९. मा दुरेवा उत्तरं सम्नमुन्नशन् । (ऋ०२।२३।८)
दुराचारी उत्तम सुख न पायें ।

२५०. मा शिश्नदेवा अपि गुर्ऋतं नः (ऋ० ७।२१।५
व्यभिचारी लोग हमारे यज्ञ में न आयें ।

२५१. सत्यस्य नावः सुकृतमपीपरन् । (ऋ० ६।७३।
सदाचारी को सत्य की नौका पार लगाती है ।

२५२. आर्या व्रता विसृजन्तो अधि क्षमि ।
(ऋ० १०।६५।
देवता पृथ्वी पर सदाचार फैलाते हैं ।

शत्रुदमन

२५३. श्येनो भूत्वा परापत । (यजु० ४।३४)
बाज बन कर झपट ।

२५४. प्रमृणीहि शत्रून् । (यजु० १३।१३)
शत्रुओं को कुचल डाल ।

२५५. जहि रक्षसः पर्वतेन । (अ० ८।४।१६)
राक्षसों को वज्र से मार दे ।

२५६. भियामित्रान्त्सं सृज । (अ० ११।६।१२)
शत्रुओं को भयभीत कर दे ।

२५७. दस्यूनव धूनुष्व । (अ० १६।४६।२)
दस्युओं को धुन डाल ।

२५८. व्याघ्रः शत्रूनभितिष्ठ सर्वान् । (अ० १६।४
वाघ बन कर शत्रुओं को परास्त कर ।

२५९. विश्वंसमत्रिणं दह । (ऋ० १।३६।१४)
हमारे सब घातकों को जला डाल ।

२६०. रक्षसो दह प्रति । (ऋ० १।७६।६)
राक्षसो को भस्म कर दे ।

२६१. विध्यता विद्युता रक्षः । (ऋ० १।८६।६)
शत्रुओं को बिजली के प्रयोग से नष्ट कर ।

२६२. भिन्धि विश्वा अपद्विषः । (ऋ० ८।४५।४०)
समस्त शत्रुओं को छिन्न भिन्न कर ।

२६३. भियं दधाना हृदयेषु शत्रवः (ऋ० १०।८४।
शत्रु के हृपय में भय उत्पन्न कर दो ।

कर्म

२६४. कृत ꣳ स्मर । (यजु० ४०।१५)
हे मनुष्य ! अपने किये हुए को याद कर ।

२६५. कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहि
(अ० ७।५०
कर्म मेरे दांये हाथ में है और विजय बायें हाथ

२६६. पक्तारं पक्वः पुनरा विशाति। (अ० १२।३।४८)
मनुष्य जैसा पकाता है वैसा खाता है।

२६७. भद्रम्भद्रं क्रतुमस्मासु धेहि। (ऋ० १।१२३।१३)
प्रभो ! हमें सुख और उत्तम कर्म धारण कराओ।

२६८. जम्भयाता अनप्नसः। (ऋ० २।२३।६)
कर्महीन नष्ट हो जाते हैं।

२६९. अकर्मा दस्युः ! (ऋ० १०।२२।८)
कर्म न करने वाला ही दस्यु है।

२७०. स्वेन क्रतुना सं वदेत। (ऋ० १०।३१।२)
हम कर्म द्वारा अपने अभिप्राय को प्रकट करें।

२७१. मन्द्रा कृणुध्वम्। (ऋ० १०।१०१।२)
मधुर कर्म करो।

पवित्रता

२७२. मनस्त आप्यायताम्। (यजु ६।१५)
तेरा मन पवित्र हो।

२७३. वाक् त आप्यायताम्। (यजु० ६।१५)
तेरी वाणी पवित्र हो।

२७४. चक्षुस्त आप्यायताम्। (यजु० ६।१५)
तेरी दृष्टि पवित्र हो।

२७५. केतपूः केतन्नः पुनातु। (यजु० ११।७)
ज्ञान से पवित्र ! हमारे ज्ञान को पवित्र कर।

२७६. पुनन्तु मा देवजनाः। (यजु० १९।३९)
देवजन मुझे पवित्र करें।

२७७. जातवेदः पुनीहि मा। (यजु० १९।३९)
पतितपावन प्रभु मुझे पवित्र करे।

२७८. यः पोता स पुनातु मा। (यजु० १९।४२)
जो पवित्र है वह मुझे पवित्र करे।

२७९. मां पुनीहि विश्वतः। (यजु० १९।४३)
मुझे सर्वतः पवित्र कर।

२८०. पुनन्ति धीराः। (ऋ० ३।८।५)
धीर लोग पवित्र जरते हैं।

२८१. आयुः पवत आयवे। (ऋ० ९।६७।८)
जीवन के लिये आयु को पवित्र बनाओ।

२८२. पवित्रवन्तः परि वाचमासते। (ऋ० ९।७३।३)
पवित्रता के इच्छुक वेद का आश्रय लेते हैं।

२८३. वाचं पुनन्ति कवियो मनीषिणः। (ऋ० ९।७३।७)
ज्ञानी पुरुष अपनी वाणी को पवित्र करते हैं।

दिव्य भावना

२८४. ओजिष्ठोऽहं मनुष्येषु भूयासम्। (यजु० ८।३९)
मैं मनुष्यों में ओजस्वीतम होऊं।

२८५. अपैतु सर्वं मत पापम्। (अ० १०।१।१०)
सब प्रकार के पाप मुझ से दूर हो जायें।

२८६. मा ते हृदयमर्पिपम्। (अ० १२।१।३५)
मैं तेरे हृदय को न दुःखाऊं।

१८७. अहं भूयासमं सवितेव चारुः। (अ० १३।१।३८)
मैं सूर्य के समान तेजस्वी बनूं।

२८८. मूर्धाहं रयीणाम्। (अ० १६।३।१)
मैं धनिकों का शिरोमणी बनूं।

२८९. मूर्धा समानानां भूयासम्। (अ० १६।३।१)
मैं अपने समान वालों में शिरोमणी बनूं।

२९०. नाभिरहं रयीणाम्। (अ० १६।४।१)
मैं धनों का केन्द्र बनूं।

२९१. अङ्गिरसो भवेमाद्रि रूजेम। (ऋ० ४।२।१५)
हम अंगारे हों और पर्वत को तोड़ डालें।

जागृति

२९२. वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः। (यजु० ९।२३)
हम राष्ट्र में सावधान होकर नेता बनें।

२९३. स्वे गये जागृह्यप्रयुच्छन्। (यजु० २७।३)
अपने घर में आलस्य रहित होकर जाग।

२९४. भूत्यै जागरणम्। (यजु० ३०।१७)
जागना कल्याण के लिये है।

२९५. अभूत्यै स्वप्नम्। (यजु० ३०।१७)
सोना नाश के लिये है।

२९६. प्राता रत्नं प्रातरित्वा दधाति (ऋ० १।१२५।१)
प्रातः जागने वाला प्रभात में रत्नधारण करता है।

२९७. दिवा नक्तं च जागृविः। (अ० ५।३०।१०)
दिन रात जागरूक बने रहो।

[क्रमशः]

इच्छानुसार सन्तानोत्पत्ति

भारतीय स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण व चिरस्थायी बनाने के लिये आज भारत को कर्मवीर, बुद्धिमान् व शौर्य सम्पन्न युवकों की आवश्यकता है। उस आवश्यकता की पूर्ति आपके ही हाथों में है।

किस प्रकार ?

यह जानने के लिये तथा अपने कर्तव्य से परिचित होने के लिये "इच्छानुसार सन्तानोत्पत्ति" पुस्तक मंगा कर अवश्य पढ़िये। पुस्तक पढ़ कर आप अनुभव करेंगे कि "पुत्र या पुत्री, धर्मात्मा या पापी, शासक या चोर, जितेन्द्रिय या व्यभिचारी, गौर या श्याम् वर्ण की ." सन्तान का निर्माण तथा बर्थकन्ट्रोल अपने ही हाथों में है।

क्या आप चाहते हैं कि आपकी सन्तान समाज में सम्मान को प्राप्त करें।

यदि हां ! तो उसके लिए प्रयत्न करना आपका कर्तव्य है।

वह किस प्रकार ?

यह जानने के लिए स्त्री व पुरुष दोनों के लिए पठनीय इस पुस्तक को आज ही मंगाइए।

इसकी महत्ता पढ़ने से ही विदित होगी।

नवदम्पति को भेंट देने योग्य अनुपम उपहार है।

मूल्य २॥) डाक व्यय पृथक।

प्राप्ति स्थानः—भगवान दास भूकन सरन

पत्रवाणिज्य, बाजार चौक मुरादाबाद।

दीपावली के उपलक्ष में प्रचारार्थ विद्वानों के ट्रैक्ट मंगावें

प्रत्येक का मूल्य -) सैकड़ा ४)

१ मनुष्य बन—ले० स्वामी वेदानन्द सरस्वती ।
२ गायत्री माता—जगदीशचन्द्र विद्यार्थी ।
३ ईश्वर सिद्धि—पं० रामचन्द्र जी देहलवी ।
४ आस्तिक नास्तिक संवाद—महर्षि दयानन्द ।
५ पितृ श्राद्ध विचार—स्वामी दर्शनानन्द ।
६ सुख का साधन—महात्मा आनन्द स्वामी ।
७ ईश्वरोपासना—पं० रामचन्द्र जी देहलवी ।
८ कल्याणी बन—पं० गणेशदत्त 'इन्द्र' ।
९ आर्यों का आदि देश—काशी नाथ जी शास्त्री ।
१० धर्म और अधर्म—पं० रामचन्द्र देहलवी ।
११ स्वामी श्रद्धानन्द—रामगोपाल विद्यालंकार ।
१२ तत्ववेत्ता दयानन्द—स्वामी श्रद्धानन्द जी ।
१३ पं० लेखराम—रामगोपाल जी विद्यालंकार ।
१४ सीता माता—सरस्वती देवी 'प्रभाकर' ।
१५ गौ माता—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
१६ दयानन्द दिग्विजय—श्री हरिशंकर जी शर्मा कविरत्न
१७ चोटी का महत्व—पं० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री ।
१८ गुरु विरजानन्द—रामगोपाल विद्यालंकार ।
१९ मांस खाना छोड़ दो—पायथा गोरस ।
२० मर्यादा पुरुषोत्तम राम—प्रहलाद 'प्रभाकर' ।
२१ देश सुधार होली—अंगनलाल आर्य ।
२२ मूर्तिपूजा विचार—महर्षि दयानन्द ।
२३ भक्ति के लाभ—आचार्य प्रियव्रत ।
२४ आर्य समाज के उद्देश्य—जगदीशचन्द्र ।
२५ वेदमाता ।
२६ श्रद्धामाता ।
२७ धरती माता ।
२८ धर्म की रक्षा करो—ब्र० प्रभुदत्त जी ।
२९ मनुष्य के कर्तव्य—म० नारायण स्वामी ।
३० सत्संग भजन ।
३१ ऋषि दयानन्द कृत वेदभाष्य का महत्व ।
३२ गोपाल दयानन्द ।
३३ भक्तिवाद की रूपरेखा ।
३४ वैदिक भक्तिवाद ।
३५ अंग्रेजी शिक्षा से हानि ।
३६ सत्य की महिमा—स्वामी सर्वदानन्द ।
३७ आर्य समाज की उन्नति का साधन श्री लालचन्द जी
३८ श्यामाप्रसाद मुकर्जी—श्री प्रेमचन्द ।
३९ वैदिक काल में तोप बन्दूक—शिव पूजन सिंह ।
४० पतिव्रत धर्म—एक विदूषी महिला ।
४१ ब्राह्मण समाज और मूर्ति पूजा—राजेन्द्र जी ।
४२ ईश्वरोपासक दयानन्द—भगवत शरण बी. ए. ।
४३ ईश्वरावतार—स्वामी नित्यानन्द जी ।
४४ कर्मयोगी श्री कृष्ण—प्रेमचन्द ।
४५ ईसाइयों का भयंकर षड़यन्त्र ।
४६ सामाजिक व्यवहार—श्री लालचन्द जी ।
४७ शिक्षा का उद्देश्य—श्री पूर्णचन्द जी ।
४८ ब्रह्मचर्य—जगदीशचन्द्र जी विद्यार्थी ।
४९ वर्ण व्यवस्था—स्वामी दर्शनानन्द ।
५० कर्मव्यवस्था " "
५१ वेदज्ञान—विष्णु दयाल जी ।
५२ तुलसी रामायण और आर्य समाज ।
५३ सत्य की खोज—काशीनाथ शास्त्री ।
५४ मुर्दा क्यों जलावें—प्रेम शरण जी ।
५५ स्वामी दयानन्द का उद्देश्य—स्वामी दर्शनानन्द ।
५६ स्वामी दयानन्द का लक्ष्य— "
५७ ब्राह्मण समाज और मृतक श्राद्ध—पं० राजेन्द्र जी ।
५८ श्रेय और प्रेय—प्रि. नित्यानन्द जी एम. ए. ।
५९ सच्ची पूजा—स्वामी सर्वदानन्द जी ।
६० झांसी वाली रानी ।
६१ महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त-रविवर्मा सि. शास्त्री ।
६२ जीवन की समस्यायें—पं० रामचन्द्र देहलवी ।
६३ देवताओं की कहानी—कैलाश बिहारी ।
६४ रोटी और कपड़ा—प्रेमकुमार पाण्डेय ।
६५ धूम्रपान— " "
६६ सिनेमा और हम— " "
६७ दयानन्द कौन—देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ।
६८ कृण्वन्तोऽदयमार्यम—प्रेमकुमार पाण्डेय ।
६९ चाय भयंकर विष—जगदीश चन्द्र ।
७० मुझे मेरा धर्म क्यों प्यारा है—ज. विद्यार्थी
७१ ईश्वर सब जगह है—विष्णु दयाल जी ।
७२ ईश्वर में अविश्वास क्यों—रामचन्द्र देहलवी ।
७३ चरित्र निर्माण—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
७४ यज्ञोपवीत महत्व—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
७५ सूर्य और चन्द्र ग्रहण—हरिदेव शास्त्री ।
७६ नास्तिकों को सन्देश—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
७७ वैदिक धर्म ही क्यों—हरिदेव शास्त्री ।
७८ विद्यार्थी और सदाचार—पं० रामचन्द्र देहलवी

गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क देहली—६

कृषि सम्बन्धी देहात-सुधारक पुस्तकें

१.	आधुनिक कृषि विज्ञान	६)	३२.	तम्बाकू की खेती	॥)
२.	आलू की खेती	।॥)	३३.	पपीते की खेती	१॥)
३.	टमाटर की खेती	॥)	३४.	खेती बाड़ी	१॥)
४.	गोभी की खेती	॥)	३५.	फलों की खेती	३॥)
५.	जीरा, धनियाँ, अजवायन	।॥)	३६.	तरकारी सागभाजी खेती	३॥)
६.	तरकारियों की खेती	१॥)	३७.	खेती और ट्रैक्टर	६)
७.	अच्छे बीज	।॥)	३८.	किचन गार्डन	१।॥)
८.	अच्छी खाद	२॥)	३९.	ट्यूब वैल गाइड	३॥)
९.	कपास की खेती	१)	४०.	ट्रैक्टर प्राइमर	१)
१०.	फूल फुलवारी	२॥)	४१.	पशुओं का इलाज	६)
११.	गन्ने की खेती	।॥)	४२.	पोल्ट्री फार्मिंग	४)
१२.	धान की खेती	१॥)	४३.	कमर्शियल पोल्ट्री	४)
१३.	सन्तरे की बागवानी	२॥)	४४.	पोल्ट्री सर्जन	४)
१४.	आम की बागवानी	३)	४५.	फल संरक्षण	२॥)
१५.	तिलहन की खेती	।॥=)	४६.	मकई (मक्का) खेती	१)
१६.	सोयाबीन खिसारी	।)	४७.	खीरा तरबूज की खेती	१॥)
१७.	खेती की तैयारी	२।)	४८.	चाय की बागवानी	१॥)
१८.	फसल रक्षक औषधियां	२।)	४९.	अफीम की खेती	१॥)
१९.	फलव्याधियों कीरोकथाम	१॥)	५०.	किसानी लोक कथायें	२॥)
२०.	उन्नत सिंचाई	२)	५१.	कलम पैवन्द लगाना	१॥)
२१.	भारतीय कृषि कहावतें	४)	५२.	हल्दी की खेती	१॥)
२२.	गेहूं की खेती	३)	५३.	कत्थे की खेती	१॥)
२३.	लाख की खेती	।॥=)	५४.	पान की खेती	१॥)
२४.	प्याज खेतीकी खेती	१।)	५५.	चने की खेती	१॥)
२५.	जौ की खेती	।॥=)	५६.	बाजरे की खेती	१॥)
२६.	मेंहदी की खेती	।॥)	५७.	मटर की खेती	१॥)
२७.	नीबू सन्तरा माल्टा	२।)	५८.	हैण्डबुक ऑफ पोल्ट्री	१०)
२८.	मूंगफली की खेती	१)	५९.	खेती और बागवानी	३)
२९.	मिर्च की खेती	१।)	६०.	तोरी लौकी की खेती	१॥)
३०.	बीज की तैयारी	१॥)	६१.	खीरा ककड़ी तरबूज खरबूजे की खेती	१॥)
३१.	मसालों की खेती	२)			

गवर्नमेंट एग्रीकल्चर इन्स्टीटूयूटों, ग्राम पंचायतों, स्कूललाइब्रेरियों। पुस्तकालयों बेसिक ट्रेनिंग सैन्टरों तथा अधिकांश सरकारी लाइब्रेरियों संस्थाओं में खरीदा जाने वाला **कृषि सम्बन्धी ६१ पुस्तकों का सैट**

वैज्ञानिक ढंग से अधिक खेती करके सरकारी इनाम प्राप्त करें

फलों की खेती (फलदार बागवानी) ले० राजेश गुप्त जिसमें हर प्रकार के फलदार पेड़ों जैसे आम, अमरूद, शहतूत, लौंकाट, संतरा आदि सैकड़ों फलों के पेड़ों को लगाने के तथा उनसे अधिक फल पैदा करने के साइन्टिफिक ढंग लिखे गए हैं, मू० ३॥) साढ़े तीन रु० डाक व्यय १)

अपने बंगले, कोठी, गुवाड़, खेत इत्यादि

हरी और ताजा सब्जी पैदा करें

साग भाजी की खेती

(लेखक राजेश गुप्त)

जिसमें देशी तथा विदेशी दोनों प्रकार की तरकारियों का बोना, जमीन की जाँच करना खाद से ज्यादा फसल तैयार करना बिना मौसम की तरकारी पैदा करने के साइन्टिफिक नियम फसलव्याधियों की रोक थाम के तरीके और हरप्रकार की सब्जी जैसे आलू, अदरक, अरबी, टिन्डे, बाकला, सीताफल, (पेठा) बन्दगोभी, मूली, बैंगन, भिन्डी, तोरी, घिया, प्याज, पालक, पोदीना टमाटर, धनियाँ खीरा, ककड़ी, तरबूज, फूल गोभी, चुकन्दर, खरबूजा, जीरा, सिंघाड़ा, सौंफ, अजवायन, सेम शरदा शलगम, सकरकंदी, करेला आदि सब्जी बोना और उसके लिए पूरी बातें इस पुस्तक म पढ़कर चाहे चाहे आप खेती करिये या माली को समझाइये।

मूल्य केवल ३॥) डाक व्यय १)

सावधान ! जमीन सोना उगल रही है

आधुनिक कृषि विज्ञान

खेती बाड़ी, फूल-फुलवाड़ी तथा बागवानी पर ७५२ पृष्ठों का ग्रन्थ (ले.- रामेश्वर अशांत)

इसमें अनाज दलहन, तिलहन फूल-फुलवाड़ी साग-भाजी तथा फलों की बागवानी के हर विषय जैसे जुताई, सिंचाई, खाद व फसल संरक्षण आदि सभी आवश्यक बातों को अगणित छोटे-बड़े सुन्दर चित्रों द्वारा समझाया गया है यह भारत के किसान को मालदार बनाने के लिए तथा अधिक फसल उपजा कर सरकारी इनाम प्राप्त करने वाली खोजपूर्ण पुस्तक है। मूल्य ६) छः रुपये डाक व्यय १॥) पृथक।

केवल डाक खर्च वास्ते चार आने (पच्चीस नये पैसों) का टिकट लिफाफे में भेजकर **हजारों पुस्तकों का बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगायें**

देहाती पुस्तक भण्डार (V. P.) चावड़ी बाजार दिल्ली

फोन नं०- २००३०

नोट—पुस्तक खरीदते समय हमारा पता अवश्य देखलें।

गोविन्दराम हासानन्द द्वारा सम्पादित मुद्रक और प्रकाशक [illegible] जय्यद प्रेस, बल्लीमारान देहली में छपवा कर वेदप्रकाश कार्यालय नई [illegible] से प्रकाशित किया।

॥ ओ३म् ॥

वेद प्रकाश

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द

जन्म सन् १८५६ ई०

एक आततायी यवन द्वारा

गोली के शिकार २३ दिसम्बर

१६२६ ई०

हिन्दू संगठन क्यों और कैसे

लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द जी

भूमिका लेखक—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

हिन्दू-आर्य संगठन से ही वैदिक आर्य संस्कृति की रक्षा होगी महान् नेता के विचार पढ़िये मूल्य २) से घटा कर अधिक प्रचार उद्देश्य से १) रु० कर दिया है। पांच पुस्तकें एक साथ मंगाने पर डाक खर्च माफ—

गोविन्दराम हासानन्द

नई सड़क देहली।

स्वाध्याय योग्य उत्तमोत्तम पुस्तकें

बाल्मीकि रामायण, रियायती मू०	६)
दयानन्द ग्रन्थ संग्रह ,,	३॥)
सृष्टि का इतिहास	१॥)
उपनिषद आर्यमुनि भाष्य	६)
श्वेताश्वरोपनिषद	१)
प्रभु भक्ति (आनन्द स्वामीकृत)	१॥)
प्रभु दर्शन ...	२॥)
तत्व ज्ञान	३)
आनन्द गायत्री कथा	॥=)
एक ही रास्ता	॥।)
भगवान शकर और दयानन्द	।=)॥
सत्यनारायण व्रतकथा	॥=)
ईश्वरीय नियम और मनुष्य धर्म	॥=)
वैदिक गृहस्थाश्रम (विश्वनाथ)	५)
ऋषि-गाथा महाकाव्य रियायता	४)
स्वाध्याय संग्रह (स्वा० वेदानन्द)	२)
वेद परिचय ...	।=)
महर्षि दयानन्द (प्रो० इन्द्र)	२)
आर्य समाज का इतिहास	१।=)
ओंकार निर्णय (शिवशंकर)	१॥)
वैदिक प्रार्थना (३१ प्रार्थनाएं)	१॥)
सचित्र योगासन	१॥)
बहनों की बातें (कवि सिद्धगोपाल)	१।)
दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह	२॥)
दयानन्द चित्रावली	२।)
भारतीय संस्कृति (ओं-आर्य नमस्ते)	॥)
आर्ष-योग प्रदीपिका सजिल्द	३॥)
कर्तव्य दर्पण (नारायण स्वामी)	१।)
वैदिक सन्ध्या रहस्य	।=)
वैदिक यज्ञ रहस्य	।=)
संध्या, हवन प्रदीपिका	॥)
आर्य समाज क्या है (ना० स्वामी)	॥)
सन्ध्याविनय (प्रि० नित्यानन्द)	॥)

प्रार्थना प्रदीप	॥)
संस्कार विधि विमर्श (अत्रिदेव)	३)
स्त्रियों का स्वास्थ्य और रोग	३)
विवाह और विवाहित जीवन	२॥)
घर गृहस्थी	३॥)
सावित्री प्रकाश (वेदानन्द)	१)
आर्य सिद्धान्त दीप	१।)
गीत श्रद्धांजलि (भजन पुस्तक)	१।)
सत्य हरिश्चन्द्र नाटक	१।)
यज्ञोपवीत मीमाँसा	॥।)
आदर्श सुधारक दयानन्द	॥=)
गृहस्थाश्रम (स्वामी दयानन्द)	।=)
बाल शिक्षक ,,	।=)
आत्म कक्षा ऋषि दयानन्द ,,	।=)
आर्याभिविनय ,,	॥)
वेद विरुद्धमत खण्डन	।=)
शिक्षा पत्री ध्वान्त निवारण ,,	।=)
भ्रान्ति निवारण ,,	।=)
भ्रमोच्छेदन ,,	।)
हुगली शास्त्रार्थ ,,	।)
वेदों का महत्व (स्वामी दर्शनानन्द)	।
ईश्वर प्राप्ति ,,	≡)
ईश्वर विचार ,,	=)
जीवात्मा ,,	=)
वेदों की आवश्यकता ,,	–)
वेद किस पर प्रकट हुए ,,	–)
बाल शिक्षा, धर्म शिक्षा ,,	≡)
वर्ण व्यवस्था (स्वामी दर्शनानन्द)	–)
पित श्राद्धविचार ,,	–)
स्वामी दयानन्द का उद्देश्य ,,	–)
,, ,, लक्ष्य ,,	–)
सत्यार्थ प्रकाश शंका समाधान	।)

स्वामी दयानन्द और वेद (श्री अरबिन्द)	।)
भक्ष्याभक्ष्य विचार	≡)
वैदिक धर्म शिक्षा	≡)
आर्य सत्संग गुटका	।–)
विश्व विज्ञान परमात्म बोध	≡)
अखण्ड भारत (चन्द्र गुप्त)	॥)
मांस मदिरा निषेध	≡)
गायत्री व्याख्या	।)
गीता वचनामृत	।=)
गोरक्षा परम कर्त्तव्य	॥)
स्वास्थ्य विज्ञान	।–)
धार्मिक मंत्रों के चित्र सा. १४॥ × २२	
संध्या मंत्र	।–)
प्रार्थना के ८ मंत्र अर्थ सहित	।–)
आर्य समाज के नियम	।–)
जीवन मृत्यु के प्रश्न	।–)
यम नियम व्याख्या सहित	।–)
संगठन सुक्त	।–)
मंत्रों के चित्र सहित ११ × १४	॥)
ऋग्वेद का प्रथम मंत्र	≡)
यजुर्वेद का प्रथम ,,	≡)
सामवेद का प्रथम ,,	≡)
अथर्ववेद का प्रथम मंत्र	≡)
दीर्घ जीवन का मंत्र	≡
धर्मचर, सत्यंवद	≡)
मंत्रों के चित्र छोटे ७। × ५॥ मू०	–)॥

ओ३म्, नमस्ते, स्वागतम, विश्वानि-देव सहनाववतु, धृतिक्षमा, नमः शम्भवायच, त्वमेव माता च पिता, नैनंछिन्दति अहिंसा परमो धर्म, आदि आदि।

महाभारतम् संस्कृत के विद्यार्थियों के लिए श्री आचार्य राजेन्द्र शास्त्री उपाध्यक्ष दयानन्द वेदविद्यालय देहली द्वारा रचित केवल संस्कृत गद्य में मंगाकर संस्कृत में वार्तालाप करना सीखें। मूल्य सजिल्द का ३) रु०

गोविन्दराम हासानन्द ४४०८ नई सड़क देहली

॥ ओ३म् ॥

वेद प्रकाश

सम्पादक—गोविन्दराम हासानन्द

ं—७ : मार्गशीर्ष २०१५ दिसम्बर १९५८ : वार्षिक मूल्य २॥)
क—५ : दयानन्दाब्द १३४ मार्गशीर्ष १८८० शाके : विदेशों से ५ शि०

वेद सुधा

अनुव्रतः पितुः पुत्रो
माता भवतु संमनाः ।
जाया पत्ये मधुमतीं
वाचं वदतु शन्तिवाम् ॥४३१॥

पदानि—अनुऽव्रतः । पितुः । पुत्रः । माता । भवतु । सम्ऽमनाः । जाया । पत्ये । मधुऽमतीम् । वाचम् । वदतु । शन्तिऽवाम् ॥२॥

अन्वयः—पुत्रः पितुः अनुव्रतः भवतु । (पुत्रः) मात्रा संमनाः (भवतु) । जाया पत्ये मधुमतीं शन्तिवां वाचं वदतु ।

अर्थ—(पुत्रः) लड़का (पितुः) पिता के (अनुव्रतः) अनुकूल कार्य करने वाला (भवतु) हो तथा पुत्र (मात्रा) अपनी माता के साथ (संमनाः) मिलते जुलते मन वाला हो । (जाया) पत्नी (पत्ये) अपने पति के साथ (मधुमतीं) मीठा और (शन्तिवां) शान्तियुक्त (वाचं) वचन (वदतु) बोले ॥

भावार्थ—पुत्र अपने माता-पिता की इच्छा के अनुकूल कार्य करे, उनका विरोध न करे। पत्नी अपने पति से मीठा और शान्ति बढ़ाने वाला भाषण करे, न लड़े ।

महर्षि दयानन्द की ७५ वीं निर्वाण दिवस की

स्मृति में

श्रीमद्दयानन्द चित्रावली

का नया

संस्करण छपकर तैयार हो गया

इस संस्करण में स्वामी जी के सात असली फोटो भी दिये गये हैं । इसके साथ गुरु विरजान[illegible] के दो चित्र छपे हैं जिन्हें आप शायद पहली बार ही देखेंगे । ३० से अधिक चित्र रंग बिरंगी स्याहियों [illegible] बहुत ही सुन्दर रूप में छपे हैं । साथ ही महर्षि के जीवन की मुख्य मुख्य घटनायें भी मोटे २ अक्षरों में छाप गई हैं । कागज, छपाई की मंहगाई होने पर भी इसका मूल्य २।।) मात्र रखा गया है। थोड़ी ही प्रति[illegible] छपी हैं । महर्षि की स्मृति को बनाए रखने के लिए प्रत्येक आर्य परिवार में होनी चाहिये ।

—गोविन्दराम हासानन्द

नई सड़क, देहली ।

आर्य परिवार

वेद प्रकाश जुलाई अंक में एक नया स्तम्भ इस शीर्षक से दिया था । इसका उद्देश्य यही है कि आर्य परिवारों के पुत्र तथा पुत्रियों का विवाह आर्य परिवारों में ही हो । यह स्तम्भ निशुल्क है । यहाँ उन्हीं सज्जनों का परिचय दिया जावेगा जो न दान दहेज मांगेंगे और ना ही योग्य वर वधु मिलने पर जाति पाति का विचार करेंगे ।

योग्य वर की आवश्यकता

कन्या, पूरा मैट्रिक, प्रभाकर बी० ए० पास, आयु २० वर्ष आर्य निरमिष भोजी, गृह कार्य में निपुण ।

पता—कोटराम गुप्त बी० ए० बी० टी०
६ डब्ल्यु–१७ पटेलनगर नई देहली

अजमेर ऋषि मेले की झाँकी

[गोविन्दराम हासानन्द]

ऋषि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा अजमेर ने ऋषि के ७५वें निर्वाण दिवस के उपलक्ष में ऋषि मेले का आयोजन अजमेर में आना सागर के तट पर श्रीमद्दयानन्द बाग में ऋषि निर्वाण दिवस दीपावली के अवसर पर ता० ९ से १२ नवम्बर को किया था, इसमें प्रमुख कार्यक्रम ता० ११-१२ नवम्बर का था।

इस उत्सव के प्रचार के लिये कई महीनों से सभा के प्रधान महाशय कृष्ण के पत्र "वीर अर्जुन और प्रताप" में होता रहा, महाशय जी ने कई लेख परोपकारिणी सभा तथा वैदिक यन्त्रालय और वैदिक पुस्तकालय के विषय में भी लिखे।

मेला निश्चित तारीखों में आरम्भ हुआ और समाप्त भी हो गया। समाप्ति पर मेले का विवरण जो महाशय जी की लेखनी से "वीर अर्जुन और प्रताप" में प्रकाशित हुआ है, उस लेख में महाशय जी स्वयं स्वीकार करते हैं, कि मेला सफल नहीं हुआ। इसका कारण महाशय जी स्वयं लिखते हैं कि, मेले को सफल बनाने में प्रचार के लिये समय नहीं था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि कुछ समय पहले मेले का आयोजन होता। और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा अन्य प्रान्तीय सभायें योगदान करतीं और अपने-अपने उपदेशकों द्वारा प्रान्त भर में प्रचार कार्य करातीं तो मेला सफल हो जाता। इसमें सन्देह नहीं कि आर्य जगत् में प्रचार कार्य के लिये समयाभाव था, किन्तु राजस्थान तथा अजमेर के निकटवर्ती स्थानों के लिये तो पर्याप्त समय था, अपने प्रान्त में भी राजस्थान प्रतिनिधि सभा ने प्रचार कार्य नहीं किया। राजस्थान प्रान्त में तो क्या स्वयं अजमेर नगर में भी पर्याप्त प्रचार कार्य नहीं किया गया।

भारतवर्ष की अनेक छोटी-मोटी समाजों ने इस दिवस के लिये अपनी शक्ति अनुसार अपने २ शहरों में कई दिन पहले से प्रभात फेरियां, विज्ञापनों द्वारा प्रचार कार्य किया इतना तो अजमेर नगर की समाजें तथा परोपकारिणी सभा के अधिकारीगण कर सकते थे। शहर के अनेक आर्य जनों के मुख से सुना गया कि "हमें पता ही नही चला।"

देहली का "वीर अर्जुन" 'प्रताप' बड़ौदे का गुजराती 'आर्य सन्देश", जालन्धर का "आर्य जगत" लखनऊ का 'आर्य मित्र' आदि अनेक पत्रों में अजमेर ऋषि मेले की सूचनायें छपी अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों तथा संस्थाओं को निमंत्रण पत्र भेजे गये, तदनुसार मेरे पास भी परोपकारिणी के अधिकारियों ने कृपा कर निमन्त्रण पत्र भेजा, मैंने सपत्नि वहां ऋषि मेले में जाने का निश्चय किया तथा वहां के कार्याध्यक्ष को सूचना दे दी जिससे कि ठहराने के प्रबन्ध में उन्हें सहूलियत होवे।

ता० १० नवम्बर की रात्रि को दिल्ली मेल में रवाना हुआ, ता० ११ की प्रातः ८॥ बजे ट्रेन अजमेर स्टेशन पर पहुँचीं उसी गाड़ी से सभा के उप प्रधान श्री हंसराज जी गुप्त तथा अन्य माननीय कई प्रतिष्ठित पण्डित गण भी थे। गाड़ी पहुंचने

पर स्टेशन पर मेले के प्रबन्धकों की ओर से कोई स्वयं सेवक नहीं था।

अजमेर के आर्य प्रेमी हकीम वीरुमल जी उन के सुपुत्र चि० मोहनलाल जी तथा कई कर्मचारियों के साथ उपस्थित थे, मेरे वहां पहुँचने की उन्हें सूचना मिल गई थी वे मुझे अपने निवास स्थान पर ले गये और बड़े प्रेम और भक्ति भाव से ठहराया।

स्नानादि से निवृत होकर श्री मद्दयानन्द बाग ऋषि मेले में गया, जहां एक छोटा सा पण्डाल बनाया गया था। सरस्वती भवन पर महाशय कृष्ण जी के हाथों झण्डा लहराया गया। दिन का कोई विशेष कार्यक्रम नहीं था, पण्डाल में दो एक स्कूलों के लड़के और लड़कियों के व्यायाम आदि के खेल हो रहे थे जिसमें कि दर्शक रूप से एक सौ व्यक्तियों से अधिक नहीं होंगे।

सरस्वती भवन में जो प्रदर्शनी थी उसमें ऋषि दयानंन्द की पादुका, दवात, कलम आदि के अतिरिक्त, सत्यार्थप्रकाश की हस्त लिखित प्रति भी थी जो कि एक कांच के बक्स में वन्द थी, उसके अतिरिक्त ऋषि के चित्र भी थे ये चित्र प्रायः मेरे प्रकाशित ऋषि दयानन्द के चित्रपट जिसमें ऋषि के सात असली फोटो चित्र कहे जाते हैं वह थे और दयानन्द चित्रावली में से चित्र काट-काट कर टांगे गये थे। रात्रि को सरस्वती भवन पर रोशनी भी की गई थी और रात्रि को महाशय कृष्ण, श्री ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु तथा और एक दो विद्वानों के भाषण के अतिरिक्त कुवंर जोरावर सिंह के भजन, आर्य कन्या महाविद्यलय बड़ौदा की कन्याओं के व्यायामादि के अतिरिक्त आर्य जगत के प्रसिद्ध प्रो० हासानन्द के जादू के खेल भी हुए, प्रोफेसर साहब के हाथ सफाई के खेलों को देखकर जनता मुग्ध होती थी।

उत्सव रात्रि के १०॥ बजे समाप्त हु... सारे पण्डाल में ७-८ सौ से अधिक व्यक्ति... होंगे, रात्रि के १०॥ बजे २॥-३ मील शहर... दूर दयानन्द बाग से शहर में जाने के ... सवारी का कोई प्रबन्ध नहीं, घर पहुंचते प... रात्रि को १२ बज गये दूसरे दिन थकावट... कारण प्रातः के कार्यक्रम में शायद ही कोई ... का व्यक्ति पहुँचा हो। दूसरे दिन अर्थात् ओ... दिन विशेष आग्रह से रात्रि को लौटने के ... २-१ बसों का प्रबन्ध करा दिया गया।

उत्सव के ही दिनों में ११-१२ तारीख... परोपकारिणी सभा की अंतरंग का अधिवेशन... सभा के कई सदस्य उपस्थित थे। ऐसा सुअ... देखकर मैंने निम्न आशय का एक पत्र लि... सभा प्रधान के सम्मुख रक्खा।

१. ऋषि की निर्वाण अर्द्ध शताब्दी जो आज... २५ वर्ष पूर्व इसी भूमि में हुई थी, ... ७५ वीं निर्वाणोत्सव उसके आगे सतांश... बराबर भी नहीं है।

२. अर्द्धशब्दी के समय ऋषि दयानन्द लि... सब पुस्तकें उपलब्ध थीं जब कि आज ... पुस्तकें नहीं मिलती, विशेष कर वेद भा... ऋग्वेद के ६ खण्डों में से ५ मिलते हैं... खण्ड बीच के नहीं मिलते, यजुर्वेद के ... भागों में से प्रथम द्वितीय भाग नहीं मि... अन्तिम ३-४ भाग मिलते हैं यजुर्वेद भा... भाष्य आज वर्षों से समाप्त है सर्वसाधार... के वेद स्वाध्याय की उत्तम पुस्तक हैं जो... तीन-चार महिनों में छप कर तैयार... सकती है यह सब ग्रन्थ इस मन्द ग... छप रहे हैं कि न मालूम कितने वर्षों में... होवें।

३. सभा के पास पुस्तक प्रकाशन के लिए पर्याप्त साधन हैं अर्थात् प्रेस, और कागजों की एजेंसी फिर क्यों मन्दगति से कार्य हो रहा है।

४. आज ७५वें वर्ष की निर्वाण तिथि मनाई जा रही है, इन ७५ वर्षों में ऋषि शैली का वेद-भाष्य परोपकारिणी सभा तैयार कराती तो आज संसार में किसी अन्य के वेद भाष्य की मान्यता नहीं होती।

५. सभा ऋषि कृत ग्रन्थों को शीघ्रता से प्रकाशित कराने का प्रबन्ध करे। प्रकाशन के प्रबन्ध में मेरी सेवा की आवश्यकता हो तो मैं तीन वर्ष तक अपनी निस्वार्थ भाव से सेवायें देने को उद्यत हूँ।

मेरे इस पत्र पर विचार के समय सभा में उपस्थित होने की प्रधान जी ने आज्ञा प्रदान की मेरा वक्तव्य सुन कर मुझे आदेश दिया गया कि कार्यकारी प्रधान श्री हंसराज जी गुप्त से दिल्ली में मिलकर अपनी योजना प्रस्तुत करें। फिर जैसा होगा विचारा जायगा।

मेरे निवेदन के उपरांत श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने एक छपा हुआ प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसमें सभा से साग्रह निवेदन था कि, अष्टाध्यायी ऋषि दयानन्द कृत भाष्य जो सभाने ३ अध्याय प्रकाशित किये है चौथा अध्याय भो तैयार है उसे भी प्रकाशित करें, अथवा सभा हमें अधिकार प्रदान करें तो हम श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट से प्रकाशित करें, इस पर सभा प्रधान महाशय कृष्ण ने कहा हम सधन्यवाद आपको अधिकार देते हैं। आप प्रकाशित करें, सभा छापना नहीं चाहती" इस पर मैंने श्री ब्रह्मदत्त जी को कहा कि पंडित जी अष्टाध्यायी के २ भागों में प्रथम भाग भी सभा के पुस्तकालय में समाप्त है। उसे कौन छापेगा सभा तो छापने की नहीं उसे भी आप ही छापिये।

"वीर अर्जुन" और "प्रताप" में महाशय कृष्ण जी के कई लेख परोपकारिणी सभा की स्थिति के विषय में लिखें जिसमें बताया कि वैदिक यन्त्रालय ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों के प्रकाशन का अधिकार परोपकारिणी सभा को है। कानून की दृष्टि से वह अधिकार समाप्त हो चुके हैं। और व्यक्ति और सभायें भी सत्यार्थ प्रकाशादि छाप रहीं हैं। किन्तु अच्छी नहीं छापती सभा के पास पैसे नहीं उसके आमदनी के साधन समाप्त हो गए हैं। पहले रेलवे का काम प्रेस को मिलता था अब स्वयं रेल वालों ने अपना प्रेस लगा लिया है इसका काम नहीं मिलना। कागज की ऐजन्सी है। किन्तु जिस बेजा तरीके से कागज और एजेन्ट लेते हैं और मंगाते हैं वह हम नहीं कर सकते।

"आर्य जनता "गीता प्रेस गोरखपुर" से सबक सीखे जिसे हिन्दू जनता लाखों का दान देती है। ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों के लिए भी जिसे ७५ वर्ष पूरे हो गये हैं ऋषि दयानन्द के भक्त करोड़ों की संख्या में हैं। श्रद्धापूर्वक सभा को दान देवे जिस सो सहज में ७५ लाख पूरे हो जावें तभी ७५ वें वर्ष का निर्वाण दिवस सफल समझा जावेगा।" इस अपील पर कितना धन आया यह सभा वालों ने प्रकाशित नहीं किया। मेरा अनुमान है कि, महाशय कृष्ण की अपील बहरे कानों तक ही पहुँची है।

इस अपील के सम्बन्ध में मुझे सर्वसाधारण का एक भ्रम दूर करना है, वह यह कि "गीता प्रेस" कोई दान विशेप की अपेक्षा नहीं करता। आरम्भ काल में दान लिया हो तो लिया हो, अब वह अपने ही साधनों से कार्य कर रहा है।

ऋषि दयानन्द ने वैदिक यन्त्रालय वेदादि

सशास्त्रों के प्रकाशन के लिए ही स्थापित किया था। और उसका कार्य संचालन के लिए परोपकारिणी सभा स्थापित को थी जिसके अधिकारी कर्नल महाराज प्रतापसिंह इडर नरेश, महाराजा जोधपुर, शाहपुराधीश, महाराजा बड़ौदा जैसे ऋषि के श्रद्धावान पुरुष थे। परोपकारिणी सभा में गीता प्रेस के श्री महावीर प्रसाद पोद्दार जैसे कर्मठ और लग्नवान कोई ऋषि भक्त आर्य पुरुष होता तो ऋषि कृत ग्रन्थों के साथ चारों वेद, छहों शास्त्र, उपनिषदें, ब्राह्मण ग्रन्थ आदि आर्ष ग्रन्थ प्रकाशित होते, सभा के पास आज लाखों नहीं करोड़ों की सम्पत्ति होती।

वर्तमान वैदिक यन्त्रालय को देखने पर ज्ञात हुआ कि प्रेस में दो मशीनें बड़ी हैं, एक औटोमेटिक जो है वह घण्टे में ४-५ हजार इम्प्रेशन देती हैं, बहुत अच्छी हैं, ब्लाक बनाने की मशीनें हैं, अपनी टाइप फाउन्ड्री है। टीटा गढ़ पेपर मिल के कागजों का पर्याप्त भण्डार देखा, समझ में नहीं आया फिर क्यों कर प्रेस को घाटा होता होगा। टाइप-फाउन्ड्री के कार्य का पता लगा कि, इनकम टैक्स के कारण टाइप फाउन्ड्री का टाईप बाहर नहीं बेचा जाता, अनेक टाइप फाउन्ड्रियें सिर्फ टाइप बनाकर बेचने का कार्य करती है और हजारों रुपये पैदा करती है।

आशा है वर्तमान अधिकारी तथा कार्य कर्ता गण इस ओर ध्यान देकर प्रेस की आय का स्रोत बढ़ावेंगे।

अजमेर के ही आर्य साहित्य मण्डल लिमिटेड के पास राजस्थान सरकार के प्रकाशन विभाग का बहुत काम है उसको अपना आर्य साहित्य छापने का अवकाश ही नहीं मिलता।

अजमेर में आर्य समाज केसरगंज बहुत पुरानी समाज है जिसका भव्य मन्दिर है डी० ए० वी० हायर सेकेन्ड्री स्कूल है, उसी समाज के कर्मठ श्री पं० जीयालाल जी के आधीन आर्य अनाथालय है जिसमें सैंकड़ों लड़के लड़कियां पलती हैं, शहर से २-२॥ मील दूरी पर दयानन्द कालेज है, जिसमें ८-९ सौ विद्यार्थी पढ़ते हैं १५-२० लाख की सम्पत्ति है मीलों में विस्तार की भूमि है। केसरगंज समाज में श्री पं० जीयालाल जी ने ऋषि के ६ विशाल काय चित्र तैयार कराये हैं जो कि ऋषि के जीवन घटनाओं के साथ सम्बन्ध रखते हैं। प्रभावशाली और प्रदर्शनी में रखने योग्य थे। खेद है कि किसी सिद्धान्तों को लेकर नहीं, व्यक्तिगत कारणों से परोपकारिणी के कार्य कर्ता और पण्डित जीयालाल जी का परस्पर मेल नहीं।

दोनों ही दलों के व्यक्ति ऋषि दयानन्द के भक्त होने के नाते उत्सव आदि मिलकर किया करें जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ सकता है। लाहौर में गुरुकुल और कालेज विभागों में सैद्धान्तिक मतभेद होते हुए, वार्षिक उत्सवों पर दोनों पार्टियों का सम्मिलित नगर कीर्तन निकलता था, अब भी अनेक सार्वजनिक कार्य सम्मिलित रूप से होतें है आशा है आगामी वर्ष के लिये ऋषि की हीरक जयन्ती मनाने का जो प्रस्ताव हो रहा है, उसे सार्वदेशिक सभा अन्य प्रान्तीय प्रतिनिधि सभायें तो योगदान करेंगी ही, साथ में अजमेर के सब आर्य भाई सब भेदभाव को प्रथक रखकर ऋषि का हीरक जयन्ती विशाल रूप से मनावें, यही प्रार्थना है।

❀ ओ३म् ❀

ऋषि का कार्य कैसे पूरा हो ?

ऋषि दयानन्द के तीन कार्य मुख्य हैं—

१—चारों वेदों का ऋषि शैली का भाष्य पूरा करना।

२—गो रक्षा अर्थात् गोकृषि रक्षिणी सभाओं की स्थापना जैसा कि महर्षि ने "गौकरुणानिधि" तथा सत्यार्थ प्रकाश के १० वें समुल्लास में भक्ष्याभक्ष्य विषयक प्रकरण में लिखा है।

३—भारत में अवैदिक सम्प्रदायों को मिटाकर सत्य वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार करना।

इन तीनों में दूसरे, तीसरे नम्बर के कामों को आर्य समाजों को विशेष रूप से करना चाहिये।

वेदों के सम्बन्ध में निवेदन है कि इस कार्य की पूर्ति के लिये ऋषि ने स्वयं "वैदिक यंत्रालय" स्थापित किया था जो कि परोपकारिणी सभा अजमेर के आधीन है।

ऋषि के निर्वाण के बाद परोपकारिणी के उत्साही कार्यकर्ताओं के ऋषि कृत वेद भाष्य तथा अन्य पुस्तकें प्रकाशित कीं साथ २ वैदिक यंत्रालय को भी उन्नत किया, बाहर के कार्यों से यंत्रालय की आय में वृद्धि होती रही, ऋषिकृत पुस्तकें भी छपती रहीं, इधर कुछ वर्षों से जब से श्री हरबिलास जी शारदा का देहान्त हुआ है। उसके उत्तराधिकारी अधिकारियों ने नतो प्रेस का कार्य नाहीं ऋषि कृत वेद भाष्य तथा अन्य आवश्यक आर्य ग्रन्थों के प्रकाशन की ओर ध्यान दिया, इसका परिणाम यह हुआ कि प्रेस की आमदनी घटी, और ऋषि कृत ग्रन्थ जो विक्रयार्थ प्रस्तुत थे वे भी समाप्त होते गये इस समय ऋग्वेद, यजुर्वेद भाषा के बड़े-बड़े ५-६ खण्ड नहीं मिलते, और भी कई ग्रन्थ नहीं मिलते।

ऋषि दयानन्द के भाष्य की महत्ता संसार के मनस्वी विचारवान विद्वान् स्वीकार कर चुके हैं। अब ऋषि के वेद भाष्य की अत्यन्त आवश्यकता है सब काम छोड़कर परोपकारिणी सभा को इस कार्य को पूरा करना चाहिये।

अजमेर ऋषि मेले के अवसर पर वैदिक यंत्रालय का निरीक्षण करने पर मुझे ज्ञात हुआ है कि इस कार्य को पूरा करने का यन्त्रालय के पास पर्याप्त साधन हैं।

श्री पं० भगवान स्वरूप जी योग्य प्रबन्धकर्त्ता यन्त्रालय में हैं। आवश्यकता है उन्हें साधिकार आदेश देने की कि जैसे भी हो शीघ्र से शीघ्र वे वेद भाष्य को प्रकाशित कर दें।

श्री पं० आनन्द प्रिय जी तथा दूसरे स्वर्गीय श्री चान्दकरण जी शारदा के सुपुत्र चिरंजीव श्री करण जी शारदा जी को यन्त्रालय के संयोजकों में साधिकार, परोपकारिणी सभा नियुक्त करें। जिससे यन्त्रालक को आवश्यकताओं को दोनों युवक पूरा करेंगे ऐसी मुझे आशा है।

विनीत—गोविन्दराम हासानन्द

★ टंकारा में ऋषि मेले की तैयारी ★

आर्य समाज के पूज्य प्रवर्तक ऋषि दयानन्द के जीवन में तीन स्थान विशेष महत्व रखते हैं। टंकारा, जहां उनका जन्म हुआ और जहां उन्हें ज्ञान हुआ। मथुरा जहां उन्होंने स्वामी विरजानन्द से मनुष्य मात्र की सेवा की दीक्षा ली और अजमेर, जहां उन्होंने मर कर संसार को जीना सिखाया। मथुरा में उनकी जन्मशताब्दी मनाई जा चुकी है और अजमेर में उनकी निर्वाण अर्ध-शताब्दी। और यद्यपि उच्च स्तर पर नहीं फिर भी उनकी ७५ वीं निर्वाण तिथि पिछले दिनों अजमेर में मनाई गई। टंकारा में अभी तक उच्च स्तर पर कोई समारोह नहीं हुआ परन्तु अब उनकी तैयारियां हो रही हैं। सेठ नान जी कालिदास मेहता ने डेढ़लाख रु० में राजा साहब मौरवी का महल खरीदकर टंकारा ट्रस्ट को सौंप दिया है। एक सुझाव यह भी है कि आगामी शिवरात्रि पर टंकारा में उच्च स्तर पर उत्सव मनाया जाये। यह उत्सव तीन वर्ष से होता आ रहा है परन्तु छोटे स्तर पर। यदि ट्रस्ट ने आगामी शिवरात्रि पर उत्सव मनाने का निश्चय कर लिया तो इसका अर्थ यह होगा कि आर्य जगत को पहली बार अपने आचार्य की जन्मभूमि के दर्शनों का अवसर प्राप्त होगा।

अजमेर मेले पर कर्मवीर श्री आनन्द प्रिय जी ने पूर्ण रूप से आश्वासन दिया कि टंकारा में शिवरात्रि पर मेला बड़ी धूम धाम से होगा।

राजस्थान की तरह बम्बई प्रदेश में भी दो दल हैं जो विशेष रूप से आर्य समाज का कार्य कर रहे हैं दो प्रतिनिधि सभायें है एक बम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा दूसरी बड़ौदे की आर्य प्रादेशिक सभा दोनों सभाओं के कार्यकर्ताओं से विशेष कर श्री पं० आनन्द प्रिय जी तथा श्री वेणी भाई से प्रार्थना है कि ऋषि की जन्म भूमि टंकारा दोनों के लिये विशेष महत्व रखती है प्रसिद्ध आर्यदानी सेठ नान जी भाई कालीदास ने ऋषि स्मारक के लिए जो १॥ लाख की राशि प्रदान की है उस स्मारक के लिये और भी १॥-२ लाख की आवश्यकता है, उसकी पूर्ति के लिये गुजरात काठियावाड़ के प्रत्येक आर्य भाईयों को विशेष रूप से प्रयत्न करना चाहिये। तथा तथा मेला आकर्षक तथा महत्वपूर्ण होवे इसके लिये सबको प्रयत्न करना चाहिये। टंकारा में वैदिक अनुसन्धानशाला, साहित्य प्रकाशन के लिये प्रेस तथा स्मृति बनाने की योजना है जिसके लिये लाखों रुपयों की आवश्यकता है स्मारक ट्रस्ट ने दस-दस रुपयों की रसीदें छपाई है प्रत्येक आर्य को ऋषि स्मारक फण्ड में अधिक अधिक दान देना चाहिये।

इस फण्ड में रुपये भेजने के लिये 'वेदप्रकाश' कार्यालय में रसीद बही आ गई है, ऋषि प्रेमी सज्जन अपने कर्तव्य समझ कर कम से कम १०)-१०) अवश्य भेज कर रसीद प्राप्त करें, रुपये, महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा, कार्यालय आत्माराम पथ, बड़ौदा को भी भेजा जा सकते है।

गतांक से आगे

धर्म नगरी

(सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर एक मनोरंजक गाथा)

आज हमारे यात्री का मन अति प्रफुल्लित हो रहा है क्योंकि उसके हृदय में आर्य्यव्रत के अनेक मत मतान्तरों के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है एतदर्थ वह प्रातः ही एकादश द्वार की ओर चल पड़ा जहां उसने अति सुन्दर दृश्य देखा कि द्वार पर आर्य्यव्रत का सुन्दर चित्र अंकित है। और नाना प्रकार की चित्रकारी दृष्टिगोचर हो रही है। उस चित्र को देख कर यात्री के मन में इस स्वर्ण भूमि का विचार आ गया जो रत्नों को उत्पन्न करने वाली है। जिसको विदेशी छूते ही धनाढ्य बन जाते हैं। इस पवित्र भूमि पर आदि सृष्टि से लेकर महाभारत के समय तक मांडलिक राजा राज्य करते रहे हैं। संसार भर के लोग चरित्र की शिक्षा और विद्याभ्यास करने के लिए आया करते थे। युधिष्ठिर जी के राजसूय यज्ञ में अमेरिका का बभ्रुवाहन और यूरोप का विडालाक्ष चीन का भगदत्र, ईरान का शल्य, यूनान का यवनादि पधारे थे। और महाराज की आज्ञानुसार कार्य करते थे। रघुगण राजा के आधीन रावण सदृश पराक्रमी राजा भी थे परन्तु रामचन्द्र जी के समय में उसके विरुद्ध होने पर उसको मार कर आधीन किया गया। पाण्डव राजा पर्यन्त तो आर्य्यों का चक्रवर्त्ती राज्य रहा परन्तु जब इनमें परस्पर ईर्षा, द्वेष, अभिमान अन्यायादि अधिक हो गया तो इनके राज्य का ह्रास होने लगा। और यह संसार की स्वाभाविक प्रवृत्ति ही है कि जब बहुत सा धन आवश्यकता से अधिक होता है तब आलस्य पुरुषार्थ हीनता, ईर्षा, द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है उससे देश में सुशिक्षा नष्ट होकर दुर्गुण और दुष्ट व्यसन बढ़ जाते हैं, जैसे कि मद्य मांस सेवन, बाल्यावस्था में विवाह और स्वेच्छाचारादि दोष बढ़ जाते हैं। इस प्रकार के विचारों से युक्त होकर वह इस द्वार के भीतर प्रवेश कर जाता है। वहां क्या देखता है कि नाना मत वाले आज एकत्रित हो रहें हैं ज्ञात होता है कि आज सर्व धर्म सम्मेलन का आयोजन है। थोड़ी ही देर में धर्म देव जी महाराज स्वयं पधारे और सभापति के आसन को ग्रहण करते हुए जनता को सम्बोधन किया कि भाइयों आज हम प्राचीन भारत के अस्त्र शस्त्रों के सम्बन्ध में विचार करेंगे ताकि यह ज्ञात हो जाये कि इस पुण्य भूमि में उस समय कैसे २ हथियार थे : और आधुनिक तोप बन्दूकादि विद्यमान थे या नहीं। इस पर प० विद्युतजल्व जी खड़े होकर बोलने लगे कि महाराज उस समय में पदार्थ विद्या पूर्ण-रूपेण से थी। आग्नेयास्त्र ,वायव्यास्त्र, वारुणास्त्र आदि सब कुछ था। और कई लोगों के मन में जो यह बात है कि प्राचीन काल में मन्त्रों के

उच्चारण मात्र से सब काम सिद्ध हो जाते थे यह बात यूं है कि मन्त्र नाम विचार का है जैसे राजमन्त्री, गृहमन्त्री इत्यादि, क्योंकि मन्त्र तो केवल शब्द मात्र ही होता है यदि शब्द उच्चारण से ही किसी का नाश हो जावे तो प्रथम वक्ता का मुख और हृदय भी जल जावेगा। अतः यह सिद्ध हुआ कि यह सब अस्त्र विस्फोटक पदार्थों के मेल से हीं बनाया जाया करते थे। जैसे नशे की कोई चीज डाल कर मोहनास्त्र बना लिया करते थे जिससे शत्रु उसके धुएं मात्र से ही मूर्छित हो जाया करते थे। तोप और बन्दूक शब्द तो विदेशी भाषा के हैं। परन्तु हमारे यहां उनके ही पर्यायवाची शब्द शतघ्नी और भूशुण्डी थे। वस्तुतः कितनी विद्या भूगोल में फैली है वह सब आर्य्य वर्त्त देश से मिश्रवालों, उससे यूनानी, उनसे रूस और उनसे यूरपदेश में, उनसे अमेरिका आदि देश में फैली है।

इतने में एक भाई उठ खड़े हुए और कहने लगा कि महाराज जर्मनी देश के विद्वान मोक्षमूलर संस्कृत विद्या के प्रकाण्ड पण्डित थे हमारे देश में तो इसकी कमी थी। पण्डित जी ने कहा कि "निरस्तपादये देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते" अर्थात् जिस देश में कोई वृक्ष नहीं होता उस देश में अरिण्ड को ही प्रधानता होती है। यूरोप और जर्मनी देश में संस्कृत विद्या का प्रचार होने से मोक्षमूलरादि सज्जन ने थोड़ी सी संस्कृत विद्या पढ़ कर पण्डित बन गये। इसका प्रमाण फ्रांस देश निवासी जैकालयट साहब ने स्वपुस्तक "बायबिल इन इण्डिया" में लिखा है कि सब विद्याओं का भण्डार आर्य्यवर्त देश है। दारा शिकोह बादशाह ने भी संस्कृत विद्या की उन्नता को स्वीकार किया है। और काशी में "मान मन्दिर" एक शिशुमार चक्र बना हुआ है यद्यपि इसकी पूरी रक्षा अभी तक नहीं हो रही परन्तु फिर भी उससे खगोल का बहुत सा वृतान्त विदित होता है।

विनाश काले विपरीति बुद्धि इस चाणक्य के वचनानुसार जब नाश होने का समय निकट आता है। तब उल्टी बुद्धि होकर उल्टे काम करते हैं जब महाभारत के युद्ध में बड़े २ विद्वान राजा महाराजा ऋषि महर्षि मारे गये तो वेदोक्त धर्म तथा विद्या का लोप हो गया। ब्राह्मणों ने पठन-पाठन छोड़ दिया और जन्म के आधार पर यह घोषित करने लगे कि जो तुम हमारी सेवा न करोगे तो घोर नरक में पड़ोगे। स्वयं मूर्ख रह कर लोगों को बहकाने लगे कि 'ब्रह्म वाक्यजनार्दनः' हमारे ब्राह्मणों के मुख से वो शब्द निकलता है वह जानो साक्षात भगवान के मुख से ही निकला है। वर्ण व्यवस्था को भी जन्म पर मान लिया। और मृतक पर्यन्त दान लेते रहते हैं। अपने आप को भूखे कहते हैं। उनकी सेवा के बिना किसी को देव लोक नहीं मिल सकता। यदि उनसे कोई पूछे कि तुम किस लोक में जावोगे क्योंकि तुम्हारे कर्म तो घोर नरक वाले हैं कीट पतंग बनोगे क्रोधित होकर 'शाप' देने की धमकी देते हैं। क्योंकि "ब्रह्म द्रोही विनश्यति' ऐसा भय उत्पन्न करने वाले शब्द उच्चारण कर देते हैं। वस्तुतः ब्राह्मण वह होता है जो ईश्वर और वेद को जाने और धर्मात्मा परोपकारी हो। तुम तो ठग पोप हो यह पोप लोग युरोप में अपने चेलों को मरते समय ईसा मसीह के नाम हुंडी दे देते थे और हजारों रुपया ठग लेते थे। वैसे तुम भी छल कपट द्वारा साधु ब्राह्मण का रूप धारण करके भोली भाली जनता को ठग लेते हो। ऋषि मुनियों के नाम पर लूटते रहे। प्रमाद और आलस्य के आधीन हो गये।

वाम मार्ग

उपरोक्त कथनानुसार जब देश में ऐसे अविद्वानों मूर्खों की भरमार हो गई तो गुरु चेलों की परिपाटी जारी हुई। सत्य उपदेश कोई रहा नहीं, उन धूर्तों ने विषयासक्त होकर मांस मद्य का सेवन गुप्त २ करने लगे और वही लोग वाम मार्ग से विख्यात हुये शिव, पार्वती, भैरव उवाच के तंत्र रचे और ऐसे २ अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिये ग्रन्थ रचना आरम्भ कर दिया। जिसमें स्पष्टता मद्य, मांस, मीन, मुद्रा, मैथुन पांच मघार बतायें। इनके सेवन को महान् पुण्य माना। शास्त्रों में तो रजस्वला स्त्री के छूने का निषेध लिखा है परन्तु इन मूर्खों ने उसको अति पवित्र माना है। भिन्न २ जाति की स्त्रियों से समागम करने का नाम तीर्थ रख दिया। मद्य का नाम तीर्थ और मांस का नाम शुद्धि और मच्छी नाम पुण्य, मुद्रा का नाम चतुर्थी ? और मैथुन का पञ्चमी रख दिया यह इसलिये लीला की कि अन्य लोग समझ न सकें और अपने से भिन्न का कंटक विमुख नाम दे दिया। भैरवी चक्र में उलट पुलट बातें करनी आरम्भ कर दी। देवी देवताओं के पवित्र नाम को कलंकित किया। मद्य में मस्त होकर कुकर्म करते हैं और आपस में लड़ते मारते पीटते भी हैं और इनका मुखिया वह होता है जो शराब की बोतल पर बोतल चढ़ा रण्डियों के घर में जाकर उनसे कुकर्म करे और जो पूरा निशंक होकर निर्लज्ज होवे वह ही वाम मार्गियों में सर्वोपरि राजा के समान समझा जाता है। वेद शास्त्रों आदि सत शास्त्रों को तो यह स्वीकार नहीं करते बल्कि वेद विरुद्ध मत खड़ा कर दिया गया है। यज्ञ में मांस खाने में दोष नहीं। ऐसे पामर पन की बातें इन्होंने चलाई हैं। उनसे पूछना चाहिये कि वो वैदिकी हिंसा हिंसा न हो तुम्हें और तुम्हारे कुटम्ब को मार कर होम कर डालें तो क्या तुम्हें कोई चिन्ता न होगी भाइयों! मांस भक्षण करने, मद्य पान तथा पर स्त्री गमन महा दोष है। और सब ग्रन्थों में इनका निषेध ही लिखा है। हां इनके अपने बनाये हुए ग्रन्थ इनका भले ही पोषण करें। ऋषि मुनियों के पवित्र नाम पर स्वयं रचे गोमेध, अश्वमेध आदि शब्दों के अर्थों को न जानकर गौ और अश्व के मारने का अनर्थ करने लगे। वस्तुतः इनके यथार्थ यह है।

गौमेध—अन्न, इन्द्रियां, पृथ्वी आदि को पवित्र रखना।

अश्वमेध—राजा न्यांय धर्म से प्रजा का पालन करे, अग्नि होम करे, विद्या का दान करे।

नरमेध—जब मनुष्य मर जावे तो उसके शरीर का विधि पूर्वक दाह करना चाहिये।

कई मूर्ख लोग यह जनता में भ्रम फैलाते हैं कि यज्ञ करने से पशु और यजमान स्वर्ग गामी हो जाते थे और मृत पशु को वह दोबारा जीवित कर देते थे। यह बात नितान्त मिथ्या है। और कोरी गप्प है सत्य तो यह तब होगा जब कि अपने माता पिता को मार कर पुनः उसको जीवित कर लेवें और वेद मंत्रों के अर्थ जो यह ऐसे २ यज्ञों में लगाते हो वह भी एक महान् अनर्थ इन्होंने किया क्योंकि वेदादि पवित्र शास्त्रों को इन्होंने बदनाम किया। जिससे वेद शास्त्रों के निन्दक जैन बौद्ध आदि मत प्रचलित हो गये। इनकी शाखा रूप चारवाक मत उत्पन्न हो गया जिन्होंने इस प्रकार के श्लोक बनाये हैं।

पशुश्चेन्निहितः स्वर्गं ज्योतिष्टोमे गमिष्यति।
स्वपिता यजमानेन तत्र कस्मान्न हिंस्यते ॥१॥

मृतानामिह जन्तूनां श्राद्धं चेतृप्ति कारणम् ।
गच्छतामिह जन्तूनां व्यर्थं पाथेय कल्पनम् ।।२।।

जो पशु मारकर अग्नि में होम करने से पशु स्वर्ग को जाता है तो यजमान अपने पिता आदि को मार के स्वर्ग में क्यों नहीं भेजते ।१। जो मरे हुए मनुष्यों की तृप्ति के लिये श्राद्ध और तर्पण होता है तो विदेश में जाने वाले मनुष्य को मार्ग का खर्च खाने पीने के लिये बांधना व्यर्थ है क्योंकि अब मृतक को श्राद्ध तर्पण से अन्न जल पहुँचता है तो जीते हुए परदेश में रहने वाले वा के मार्ग में चलने वाले को घर की रसोई क्यों नहीं पहुंचती ? ऐसे उनके उपदेशों से वाम मार्गियों के चेलों के भीतर हलचल मच गई और बहुत से लोग उनके अनुयायी बन गये । कई राजा लोग भी उनके शिष्य हो गये । पोप जी भी अब इनकी ओर झुक गये क्योंकि इधर अधिक मिलने की आशा थी और कई इनमें जैन भी बनने लगे । उन्होंने यज्ञोपवीत, वेदादि पठन तथा अन्य वैदिक धर्मों की निन्दा की । ऋषभ देव से लेकर महावीर पर्यन्त अपने तीर्थंकरो की प्रतिष्ठा और वेद मार्गियों का अपमान करना और उनको दुख देना प्रारम्भ कर दिया । अपने तीर्थंकरो की बड़ी २ मूर्तियां बनानी आरम्भ की । और उनकी पूजा प्रचलित हुई । ऐसे तीन सौ वर्ष पर्यंत आर्यावर्त में जैनों का राज्य रहा । प्रायः सभी वेदार्थ ज्ञान से शून्य हो गये थे । इस बात को अनुमान से अढाई सहस्र वर्ष व्यतीत हुए होंगे ।

शंकराचार्य

बाइस सौ वर्ष हुए कि एक शंकराचार्य द्रविड़ देशोत्पन्न ब्राह्मण ब्रह्मचारी से व्याकरणादि सब शास्त्र पढ़कर सोचने लगे कि अहह ! सत्य आस्तिक वेद मत का छूटना और जैन नास्तिक मत का चलना बड़ी हानि की बात हुई है । इसको किसी प्रकार हटाना चाहिये । अतः उन्होंने सुधन्वा राजा जो संस्कृत विद्या का विद्वान था उनसे प्रार्थना की कि अपनी राजधानी उज्जैन नगरी में मेरा शास्त्रार्थ जैनी पण्डितों से कराओ । जो कोई इसमें हार जावे दूसरे का मत स्वीकार करे । इसी भांति दूर २ से जैनी पंडितों को बुलाकर शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ तो कई दिनों तक चलता रहा । जैन मतानुसार सृष्टि का कर्ता अनादि ईश्वर कोई नहीं यह जगत और जीव अनादि हैं । इन दोनों की उत्पत्ति और नाश कभी नहीं होता इसके विरुद्ध शंकराचार्य का मत अनादि ईश्वर जगत का कर्ता, जगत जीव झूठा है परमेश्वर ने अपनी माया से सब कुछ बनाया है यह जीव और प्रपंच स्वप्नवत है । इसी भांति कई दिनों के शास्त्रार्थ उपरान्त जैनी हार गये और सुधन्वा राजा तथा पंडितों ने शंकराचार्य का मत स्वीकार कर लिया । सुधन्वा राजा ने कई अन्य राजाओं को लिखकर शंकराचार्य का शास्त्रार्थ कई जैनी पंडितों में कराया । जैन पराजित होते गये । और वेद मत की स्थापना पुनः हो गई । यज्ञोपवीत होने लगे ।

(शेष आगामी अंक में)

लेखक—श्री महाशय मदनजित जी फीरोजपुर

मैं आर्य समाजी कैसे बना ?

(ले०—पं अमर सिंह जी आर्य मुसाफिर)

मैं आर्य समाजी कैसे बना ? पुराणों को पढ़ने से ।

पेशावर से कलकत्ता तक लम्बी जाने वाली सड़क पर जिला बुलन्दशहर में खुरजा से नौ मील अलीगढ़ की ओर अरनियां नामक एक छोटा सा ग्राम है, उस में हमारा जन्म हुआ ।

हमारे पिता ठाकुर टीकम सिंह जी ने अनूपशहर जिला बुलन्दशहर में गंगा स्नान के पर्व के अवसर पर महर्षि दयानन्द जी महाराज को व्याख्यान देते हुए देखा । कुछ गुण्डों ने महर्षि के ऊपर झोली में भर कर धूल फैंकी । महर्षि के भक्त राजपूतों ने उनको पकड़ कर मारना पीटना चाहा महर्षि ने कहा, "ये बच्चे हैं, मारो मत" । राजपूतों ने कहा, "महाराज ये सब दाढ़ी मूंछों वाले जवान और बूढ़े बूढ़े भी हैं, बच्चे नहीं है, हम इनको दण्ड देंगे ।" ऋषिवर थे कहा, "चाहे बूढ़े हों, कम समझ होने से बालक ही हैं, इसलिए कदापि मत मारो । पिता जी ने ये शब्द अपने कानों से सुने, पर स्वामी जी का उपदेश नहीं सुना था । उन्होंने लोगों से पूछा, "यह स्वामी कौन है और क्या प्रचार करते हैं ?" तो कई लोगों ने कहा कि यह स्वामी दयानन्द हैं और ईसाइयों का प्रचार करते हैं कहते हैं कि चारों वेदों में मूर्तियों और गंगा आदि की पूजा कहीं नहीं लिखी । स्वामी जी महाराज के कुछ शब्दों को सुन कर पिता जी को सुनने के लिए श्रद्धा उत्पन्न हुई परन्तु यह ठीक-ठीक पता न लगा कि उनका वास्तविक उद्देश्य क्या है ।

चानौख ग्राम से हमारे यहां एक बारात आई । चानौख के ठाकुर अवैतनिक न्यायधीश श्री महावीर सिंह जी ऋषि के परम भक्त और कट्टर आर्य समाजी थे । उनके भतीजे श्री ठाकुर गुरुवर सिंह जी भी कट्टर आर्य थे । उन लोगों ने जिले भर में आर्य समाज का बड़ा प्रचार किया । और उनके प्रयत्नों से समीपवर्ती जिलों में भी बहुत प्रचार हुआ । उन्हीं के कुल से बारात हमारे यहां आई थी और ये दोनों सज्जन इसमें विद्यमान थे । उन्होंने आर्य समाज के सिद्धान्तों पर व्याख्यान दिए । हमारे ग्राम के राजपूतों ने धावा बोल दिया और उनके सब हथियार छीन लिए । पीछे कठिनता से शान्ति हुई । फिर हमारे घर के वृद्ध पुरुष चानौख से बालखा में गये तो वहां से सत्यार्थप्रकाश, ठाकुर गुरुवर सिंह की बनाई दो पुस्तकें पाप प्रदीप और जगत् हितैषी, पं० मुरारी लाल शर्मा का भजन पचासा इन पुस्तकों को ले आये

और पहले पहले गांव के पांच आदमी आर्य बने। एक मेरे पिता के सगे छोटे भाई मेरे चाचा मुन्शी सावन सिंह जी, चचा ठाकुर चैतराम सिंह जी, चचा ठाकुर बलवन्त सिंह जी, पटवारी जहौरीमल जी, ला० बलवन्त राम जी जरगर पश्चात् दो और बने चचा नारायण सिंह जी और चचा ठाकुर चेतराम सिंह जी और हमारे पिता जी भी आर्य बने परन्तु वे दूसरे ग्राम रकनपुर में रहते थे। अरनियाँ में आर्य समाज स्थापित हो गया। वार्षिकोत्सव धूमधाम से होने लगे। कई शास्त्रार्थ भी हुए पं० मुरारी लाल जी शर्मा गुरुकुल सिकन्दराबाद ने प्रान्तभर में प्रचार की धूम मचा रखी थी। यहां उनका बहुत आना जाना था। उन्होंने हमारे यहां बहुत प्रचार किया। चचा मुन्शी सावनसिंह जी सारे इलाके में प्रचार करते थे तथा ग्राम में सत्यार्थ प्रकाशादि की कथा प्रतिदिन रात्रि को करते और कराते थे। शंका समाधान और वादविवाद भी कराया करते थे। भाई साहब ठाकुर सरदार अमर सिंह जी राजपूत सभा के उपदेशक हुए और भाई साहब कुंवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर गुरुकुल सिकन्दराबाद में कई वर्ष काम करने के पश्चात् आर्य मिशन आगरा का कार्य श्रीमान् पं० भोजदत्त जी के साथ करने लगे। इन दिनों हमारा सारा परिवार आर्य्यसमाजी बन चुका था और मैं अकेला सनातन धर्मी था। चचा सावन सिंह जी जो वादविवाद कराया करते थे मैं उस में विशेष रूप से भाग लेता था और आर्य समाज के सारे सिद्धान्तों के विरुद्ध बोलता था। हमारी समाज के सभासद् मुझे समझाते और हराने का अपार प्रयत्न करते पर मुझे न हरा सके न समझा सके। मुन्शी वेद राम जी हमारे क्षेत्र में एक प्रसिद्ध आर्य थे उन से भी वादविवाद हुआ परन्तु मैं वश में न आया ठाकुर देवी सिंह जी रईस रकनपुर हमारे क्षेत्र के माने हुए और समझदार व्यक्ति थे। समस्त क्षेत्र में उनका बड़ा आदर था। वे ब्राह्मण थे परन्तु राजपूतों के इतिहास से उन्हें विशेष प्रेम था। स्वयं वीर थे इसलिए ब्राह्मण होते हुए भी ठाकुर कहाते थे। मेरे पिता के साथ उनका ऐसा प्रेम था कि दोनों सगे भाईयों से भी अधिक प्रेम से रहते थे। मैं उनको ताऊजी कहता था। उनको मेरा कट्टर सनातनी होना बहुत खटकता था। उन्होंने मुझे पं० मुरारी लाल जी शर्मा और आर्य प्रतिनिधि सभा यू० पी० के कई उपदेशकों को सौंपा परन्तु वे मुझे आर्य न बना सके। मैं अधिक पढ़ना चाहता था। भाई कुंवर सुख लाल जी आर्य मुसाफिर के साथ मैं आर्य मुसाफिर विद्यालय में पढ़ने के लिए इस विचार से चला गया कि वहां अधिक पढ़ कर आर्य समाज का खण्डन किया जा सकेगा। मेरा विवाह १३-१४ वर्ष की आयु में हो चुका था। मुझे आगरा पहुँच कर यह पता लगा कि विद्यालय में विवाहित लड़के प्रविष्ट नहीं किये जाते। मैंने विद्यालय के उन कार्यों में भाग लेना आरम्भ किया जो प्रति दिन वहां के विद्यार्थियों से कराई जाती थी। श्री पं० भोजदत्त जी के सुपुत्र श्री डा० लक्ष्मीदत्त जी आर्य मुसाफिर और पं० तारादत्त जी बी० ए० एल० एल० बी० वकील आर्य मुसाफिर विद्यालय और मुसाफिर पत्र को चलाते थे। डा० महोदय शास्त्रार्थ महारथी थे। मेरी तर्क शक्ति उन्हें बहुत पसन्द आई। यद्यपि वह तर्क शक्ति उस समय समाज के विरुद्ध प्रयुक्त होती थी परन्तु दूर दर्शी डाक्टर महोदय और वकील महोदय यह ताड़ गये कि इस शक्ति को अच्छे मार्ग में भी प्रयुक्त किया जा सकता है उन्होंने मुझे विद्यालय में इस नियम पर प्रविष्ट कर लिया कि पाठ्यक्रम पूरा न होने तक घर नहीं

जाऊंगा या ऐसे समय में जा सकूंगा जब धर्म-पत्नी घर पर न होगी । मैं प्रसन्नता पूर्वक विद्यालय में प्रविष्ट हो गया । इन दिनों एक पौराणिक पंडित हमें संस्कृत पढ़ाते थे । उन से मैंने भागवत पुराण को पढ़ा जैसे जैसे मैं उसे पढ़ता गया मुझे अपने पुराने पौराणिक विचारों से घृणा होने लगी । फिर पं० बिहारी लाल जी शास्त्री काव्य तीर्थ हमारे विद्यालय के अध्यापक और आचार्य बने । तब तो श्रीमत्भागवतादि पुराणों को पढ़ कर मेरे विचार पौराणिकता से हट कर आर्य समाजिक बने । इस पर सान चढ़ने लगी और आर्य समाज के एक दो सिद्धान्त पर मेंरा ऐसा विश्वास जमा जैसा दो और दो चार पर दृढ़ विश्वास होता है ।

अब तो मैंने पुराणों की बहुत खोज कर ली है । कितने ही शास्त्रार्थ पुराणों पर पौराणिक दल के सेनापतियों, दिग्गजों से बड़े बड़े शास्त्रार्थ करके उन्हें परास्त किया और दावा है कि संसार भर का कोई बड़े से बड़ा पौराणिक पंडित पुराणों को प्रमाणिक सिद्ध नहीं कर सकता और मेरा खुला चैलेंज है कि जिस को हिम्मत हो वह मेरे सामने पुराणों को मानने योग्य सिद्ध करे ।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि जब तक हिन्दु इन अट्ठारह पुराणों को मानते रहेंगे तब तक कदापि उन्नति नहीं कर सकेंगे और किसी भी सभ्यमत के समक्ष हिन्दु खड़े नही हो सकते । इसलिए मैंने अपने उद्देश्यों में पुराणों का खंडन करना भी विशेष उद्देश्य बना लिया है । मैं पुराणों को पढ़ कर आर्य समाजी बना हूँ, जो भी पक्षपात छोड़कर पुराणों को पढ़ेंगे वे अवश्य आर्य समाजी बन जाएंगे । परमेश्वर पौराणिकों को सुबुद्धि दे जिससे वे उन्हें पढ़ कर उन से बचें ।

(अनुवादक जगदीश चन्द्र विद्यार्थी)

पं० सिद्धगोपाल साहित्य वाचस्पति

की

सुप्रसिद्ध पुस्तक

बहिनों की बातें

का

पुरुष वर्ग के लिए रूपातर

मित्रों की बातें

प्रकाशित हो गई

"बहिनों की बातें" का आर्य जगत् ने अच्छा स्वागत किया था । विद्वानों ने मुक्त कंठ से इसकी प्रसंशा की थी । कन्या पाठशालाओं और गुरुकुलों के पाठ्य क्रम में निर्धारित रहती है । इसके आठ संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं इसी पुस्तक को पुलिंग में संशोधित करके पुरुष वर्ग के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं ।

लड़कों को पुरस्कार में देने योग्य और उनको पाठ्यक्रम में पढ़ाने योग्य पुस्तक है । आज ही मंगावें । मूल्य १।)

गोविन्दराम हासानन्द ४४०८ नई सड़क, देहली ।

उपयोगी पदार्थ-मूली

होमियोपैथी में रैफेनस का प्रयोग अफारे में अक्सर किया जाता है पेट में अफारा हो वायु न ऊपर से निकले न नीचे से, नाभी के पास दर्द भी हो, पेट तना हुआ व सख्त मालूम ही तो रैफेनस देने से तुरन्त लाभ होता है।

यह रैफेनस आपकी मूली है, मूली भारत के सब भागों में होती है। यह रोचक, पाचक और गर्म होती है। पाचक होने से इसका इस्तेमाल ऐसे लोगों के लिए बहुत लाभदायक है जिनका हाज्मा कमजोर हो। कच्ची मूली खाई जाय तो कभी कभी पेट में भारीपन व चुभन पैदा कर देती है। मगर दूसरी चीजों को हजम कर देती है। नमक के साथ मूली खाई जाय तो न भारी पन पैदा करती है, न दर्द। इस लिए जाड़ों में कच्ची मूली नमक के साथ खाना बहुत लाभदायक है।

एक कहावत प्रसिद्ध है कि प्रातःकाल के समय कच्ची मूली एक रुपये की भी मिले तो लेकर खाओ ! दोपहर को भी खालो। मगर रात को कोई एक रुपया भी दे तो मत खाओ, खैर, मतलब यह कि रात को मूली न खावें, दिन को नमक के साथ या भाजी बनाकर खावें। भाजी बनाने में मूली के पत्तों को फेंकना नहीं चाहिये। इनमें बहुत विटेमिन होती है। खासकर के विटेमिन बी० मूली व उसके पत्तों में बहुत होती है।

कच्ची मूली खाने से स्वर भंग-गला बैठना ठीक हो जाता है। गले को साफ करती व आवाज को ठीक करती है।

जिगर और तिल्ली के लिए मूली बहुत लाभदायक है। इसका या इसके पत्तों का रस थोड़ा नमक मिला के पिलाने से बढ़ी हुई तिल्ली कटती है और जिगर ठीक होता है।

बवासीर के रोगियों के लिए मूली का सेवन बहुत लाभकारी है। मूली खूब खानी चाहिए यह अच्छी सब्जी है। इसके पत्ते व इसके फल अर्थात् मोगरी या सेंगरी सब ही लाभदायक हैं। इसके बीज आदि भी दवा के काम आते हैं।

इसके बीजों की फंकी देने से मासिक धर्म की रुकावट मिटती है और खुल कर महीना हो जाता है।

ये बीज मूत्रवर्द्धकहै। मूत्राशय की पथरी को गलाते हैं। मूली का रस पिलाने से पथरी गलती है। व गुर्दों में पेशाब बनना शुरू हो जाता है। मूली, इसके पत्ते व बीज सभीमें एक से गुण हैं और एक दूसरे की जगह प्रयोग किए जा सकते हैं। पेशाब में चिनक मूली या पत्तों का रस मिटाता है। बीजों की मात्रा चार माशे से ६ माशे तक दी जा सकती है। सिरके में मूली को डाल के कुछ दिनों के बाद खाना चाहिए। हर तरह फायदा करती है।

इसके बीजों को तेल में औटा के इन्द्री पर मर्दन करने से शिथिलता मिटती है। आयुर्वेद के मतानुसार उपयुक्त प्रयोगों के अतिरिक्त और भी बहुत से प्रयोग ग्रन्थों में वर्णित है।

कहते हैं इसके बीजों को बकरी के दूध में पीसकर लेप करने से कंठ माला मिटती है। इसके पत्रों को छाया में सुखाकर पीस छान बराबर बुरा मिलाकर ४० दिन तक लगातार फक्की लेने से बवासीर मिटती है। मूली के टुकड़े पर नमक लगाकर बिच्छूकाटे की जगह लगाने से जहर उतर जाता है ! इसके पत्तों का रस जलोदर व जिगर के रोगों में लाभ पहुँचाता है। मूली पेट के कीड़ों को मारती है। (होमियोपैथिक सन्देश से)

गतांक से आगे

वैदिक सूक्ति सुधा

[लेखक—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी विद्यावाचपस्ति]

—●—

२९८. विशि राष्ट्रे जागृहि। (अ० १३।१।९)
प्रजा में और राष्ट्र में जागता रह।

२९९. जागृवांसः समिन्धते। (ऋ० ३।१०।९)
जागरूक ही प्रकाश करते हैं।

३००. उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः।
(ऋ० १०।१०१।१)
हे समान विचार के मित्र जनो ! उठो जागो।

उद्योग

३०१. उत्क्राम महते सौभगाय। (यजु० ११।२१)
महान् सौभाग्य के लिये यत्न कर।

३०२. वीरयध्वं प्र तरता सखायः (अ० २।२।२६)
वीरो उद्यम करो, पार हो जाओ।

३०३. यन्ति प्रमादमतन्द्राः। (अ० २०।१८।३)
पुरुषार्थी परमानन्द को पाते हैं।

३०४. महः पार्थिवे सदने यतस्व। (ऋ० १।१६९।६)
विशाल पार्थिव सदन में पुरुषार्थ कर।

३०५. ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः।(ऋ० ४।३३।११)
परिश्रम के बिना देव किसी के मित्र नहीं होते।

३०६. वावृधुः सौभगाय। (ऋ० ५।६०।५)
पुरुषार्थ करके सौभाग्य शाली बनो।

३०७. इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तम्। (ऋ० ८।२।१८)
देव पुरुषार्थी को पसन्द करते हैं।

३०८. विश्वे देवास इह वीरयध्वम्।
(ऋ० १०।१२८।५)
सब बुद्धिमानों को चाहिये कि संसार में परिश्रम करें।

दान

३०९. वाजमुक्थयं दधसि दाशुषे। (यजु० १२।१०६)
प्रभो ! तू दानशील के लिये बल प्रदान करता है।

३१०. दत्तान्मा यूषम्। (अ० ६।१२३।४)
मैं दान देना कभी न छोड़ूं।

३११. न पापत्वाय रासीय। (अ० २०।८२।१)
मैं पाप कर्म के लिए कभी दान न दूं।

३१२. सहस्रहस्त सं किर। (अ० ३।२४।५)
हजारों हाथों से बांट।

३१३. वि भजा भूरि ते वसु। (ऋ० १।८१।६)
बांट तेरा धन बहुत है।

३१४. दक्षिणावन्तो अमृतं भजन्ते। (ऋ० १।१२५।६)
दान देने वाले अमर पद प्राप्त करते हैं।

३१५. मा प्रणन्तो दुरितमेन आरन्। (ऋ० १।१२५।७)
दान देने वालों पर दुःख दारिद्रय कभी न पड़े।

३१६. भद्रा राति। (ऋ० ८।१९।१९)
इन्द्र ! हमारा दान श्रेष्ठ हो।

३१७. उच्चा दिवि दक्षिणावन्तो अस्थुः।
(ऋ० १०।१०७।२
दानी संसार में बहुत ऊंचा स्थान पाते हैं।

३१८. दक्षिणावान्प्रथमो हूत एति। (ऋ० १०।१०७।५)
दानी पहले बुलाया जाता है।

३१९. उतो रयिः पृणतो नोप दस्यति।
(ऋ० १०।११७।१,
दाता का धन नष्ट नहीं होता।

३२०. अपृणन्मर्डितारं न विन्दते। (ऋ० १०।११७।३,
अदानी अपने लिये सहायक नहीं पाता।

३२१. न तद्ोको अस्ति। (ऋ० १०।११७।४)
अदाता का घर घर नहीं है।

३२२. पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान्।
(ऋ० १०।११७।५)
याचक को प्रसन्न करना ही चाहिये।

संगठन

३२३. अनु संरभध्वम् । (यजु० १७।३८)
मिलकर कार्य करो ।

३२४. समानी प्रपा । (अ० ३।३०।६)
तुम्हारी प्याऊ एक हो ।

३२५. सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यत । (अ० ३।३०।६)
सब मिलकर ईश्वर की उपासना करो ।

३२६. सहभक्षाः स्याम । (अ० ६।४७।१)
हम मिलकर खान-पान करने वाले हों ।

३२७. सं जानीध्वं सं पृच्यध्वम् । (अ० ६।६४।१)
सहमत बनों और मिल जाओ ।

३२८. समानमस्तु वो मनो । (अ० ६।६४।३)
तुम्हारे मन एक हों ।

३२९. सहस्रं साकमर्चत । (ऋ० १।८०।६)
हजारों इकठ्ठे मिलकर ईश्वर की पूजा करो ।

३३०. सङ्गच्छध्वम् । (ऋ० १०।१९१।२)
मिल कर चलो ।

३३१. सं वदध्वम् । (ऋ० १०।१९१।२)
मिल कर बोलो ।

३३२. समानी व आकूतिः । (ऋ० १०।१९१।४)
तुम्हारी संकल्प शक्ति एक समान हो ।

३३३. समाना हृदयानि वः । (ऋ० १०।१९१।४)
तुम्हरे हृदय समान हों ।

वाणी

३३४. वाग्यज्ञेन कल्पताम् । (यजु० १८।२९)
वाणी को सत्कर्म में लगाओ ।

३३५. वाचमस्मे नि यच्छ देवायुवम् ।
(यजु० ३७।१६)
प्रभो ! हमें विद्वानों से मेल करने वाली वाणी दो

३३६. पयस्वन्मामकं वचः । (अ० ३।२४।१)
मेरी वाणी दूध जैसी रसीली हो ।

३३७. वाचं वदतु शान्तिवाम । (अ० ३।३०।२)
शान्ति देने वाली वाणी बोलो ।

३३८. वाचं वदत भद्रया । (अ ३ ३०।३)
वाणी से मधुर बोलो ।

३३९. अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त । (अ० ३।३०।५)
परस्पर प्रिय वचन बोलो ।

३४०. वाचं जुष्टां मधुमतीमवादिषम् । (अ० ५।७।४)
में प्रतियुक्त मीठी वाणी बोलूं ।

३४१. भर्गस्वतीं वाचमावदानि । (अ० ६।६९।२)
में तेजोमयी वाणी बोलूं ।

३४२ निर्दुरमण्य ऊर्जा मधुमती वाक् ।
(अ० १६।२।१)
वाणी शुद्ध मीठी और बलवती हो ।

३४३. सुमङ्गलो भद्रवादी वदेह (ऋ० २।४२।२)
हे मनुष्य ! मंगल और कल्याण कारक वचन बोल ।

स्वावलम्बन

३४४. स्वं महिमानमायजताम् । (यजु० २१।४७)
अपना महिमा को बढ़ाओ ।

३४५. स्वयं वाजिँस्तन्वं कल्पयस्व । (यजु० २३।१५)
हे ज्ञानिन् ! स्वयं अपने शरीर को बलवान् बना ।

३४६. महिमातेऽन्येन न सन्नशे । (यजु० २३।१५)
तेरी महिमा दूसरों द्वारा प्राप्त नहीं की जा सकती ।

३४७. स्वयं यजस्व । (ऋ० १०.७।६)
स्वयं यज्ञ कर ।

व्यवहार

३४८. सूक्तवाकाय सूक्ता ब्रूहि । (यजु० २१।६१)
सुवाची के प्रति सुवचन बोल ।

३४९. अनुव्रतः पितुः पुत्रो । (अ० ३।३०।२)
पुत्र पिता का आज्ञा कारी हो ।

३५०. मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् (अ० ३।३०।३)
भाई भाई से द्वेष न करे ।

३५१. मायाभिर्मायिन सक्षदिन्द्रः । (ऋ० ५।३०।६)
मायावियों को माया से मार डाल ।

मृत्यु विजय

३५२. परं मृत्यो अनु परेहि । (यजु० ३५।७)
मृत्यु को परे धकेल दो ।

३५३. अन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन । (यजु० ३५।१५)
अकाल मृत्यु को पुरुषार्थ से कुचल दो ।

३५४. उदेहि मृत्योः । (अ० ५.३०।११)
मृत्यु से ऊपर उठ ।

३५५. मृत्योः पड्बीशमवमुञ्चमानः। (अ० ८।१।४)
मौत की बेड़ियों को काट डाल।

धर्म

३५६. धर्मासि सुधर्मा (यजु० ३८।१४)
तू धर्मात्मा है, सुधर्मा है।

३५७. धर्म प्र यज्ञा। (ऋ० ३।१७।५)
सावधान हो कर धर्ममार्ग पर चल।

३५८. धा अध्वरं देववीतौ। (ऋ० ३।१७।५)
देवत्व प्राप्ति के लिये धर्माचरण कर।

३५९. शुभं यातामनु रथ अवृत्सत। (ऋ० ५।५५।१)
धर्म पर चलने वाले के पीछे रथ घूमा करते हैं।

३६०. धर्मणस्पर्यरिष्टः सर्व एधते। (ऋ० ८।२७।१६)
धर्म से हानि न उठाता हुआ मनुष्य उन्नत होता है।

यश

३६१. यशः श्रीः श्रयतां मयि। (यजु० ३९।४)
मुझ में यश और ऐश्वर्य हो।

३६२. यशसः स्याम।'(अ० ६।३९।२)
हम यशस्वी हों, बनें।

३६३. अहमस्मि यशस्तमः। (अ० ६।३९।३)
मैं सब से बढ़ कर यशस्वी होऊं।

३६४. वयं सर्वेषु यशसः स्याम। (अ० ६।५८।२)
हम सब से बढ़ कर यशस्वी हों।

३६५. मयि वर्चो अथो यशो। (अ० ६।६९।३)
मुझ में तेज और यश दोनो हों।

३६६. यशो गृहीत्वा पृथिवीमनु सं चरेम। (अ० १९।५८।३)
हम यशस्वी होकर पृथिवी पर विचरें।

३६७. अस्मे श्रवांसि धारय। (ऋ० ९।६३।१)
प्रभो! हमें यशस्वी बनाओ।

वेद

३६८. सं श्रुतेन गमेमहि। (अ० १।१।४)
हम वेदानुसार आचरण करें।

३६९. मा श्रुतेन विराधिषि। (अ० १।१।४
हम वेदाज्ञा के विरुद्ध न चलें।

३७०. पावका नः सरस्वती। (ऋ० १।३।१०)
वेद वाणी हमें पवित्र करे।

३७१. देवदत्तं ब्रह्म गायत। (ऋ० १।३७।४)
ईश्वरीय ज्ञान वेद का गान करो।

३७२. मिमीहि श्लोकमास्ये। (ऋ० १।३८।१४)
वेद मन्त्रों को मुख में भरले।

३७३. सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्। (ऋ० १।८९।३)
वेदवाणी हमें सुख तथा ऐश्वर्य देती है।

३७४. गामा मावृक्त मर्त्यो दभ्रचेताः (ऋ० ८।१०१।१६)
अल्पज्ञ वेद का त्याग न करे।

दीर्घायु

३७५. शतं जीव शरदो वर्धमानः। (अ० ३।११।४)
बढ़ता हुआ सौ वर्ष तक जीवित रह।

३७६. आ रोहतायुर्जरसं वृजाना। (अ० १२।२।१४)
हे मनुष्य! आयु की सीढ़ी पर बहुत ऊँचा चढ़।

३७७. दीर्घं न आयुः सविता कृणोतु (अ०।१४।१।४७)
प्रभु तेरी आयु लम्बी करे।

३७८. भद्रंजीवन्तो जरणामशीमहि। (अ० १०।३७।६)
कल्याण मार्ग पर चलते हुए हम पूर्ण जीवन को प्राप्त करें।

आत्म शक्ति

३७९. बृहस्पतिर्म आत्मा। (अ० १६।३।५)
मेरा आत्मा महान् है।

३८०. अयुतोऽहं सर्वः। (अ० १९।५१।१)
मैं सर्वथा निर्दोष हूं।

३८१. अहमिन्द्रो न पराजिग्य। (ऋ० १०।४८।५)
मैं आत्मा हूं, मैं कभी हार नहीं सकता।

३८२. हस्तेषु खादिश्च कृतिश्च सं दधे। (ऋ० १।१६८।३)
मैं अपने हाथ में अधिकार और कर्तव्य दोनों को धारण करता हूं।

प्रेम

३८३. अन्यो अन्यमभि हर्यत। (अ० ३।३०।१)
परस्पर एक दूसरे से प्रेम करो। (क्रमशः)

इच्छानुसार सन्तानोत्पत्ति

भारतीय स्वतन्त्रता को अक्षुण्य व चिरस्थायी बनाने के लिये आज भारत को कर्मवीर, बुद्धिमान् व शौर्य सम्पन्न युवकों की आवश्यकता है। उस आवश्यकता की पूर्ति आपके ही हाथों में है।

किस प्रकार ?

यह जानने के लिये तथा अपने कर्तव्य से परिचित होने के लिये "इच्छानुसार सन्तानोत्पत्ति" पुस्तक मंगा कर अवश्य पढ़िये। पुस्तक पढ़ कर आप अनुभव करेंगे कि "पुत्र या पुत्री, धर्मात्मा या पापी, शासक या चोर, जितेन्द्रिय या व्यभिचारी, गौर या श्याम वर्ण की," सन्तान का निर्माण तथा बर्थकन्ट्रोल अपने ही हाथों में है।

क्या आप चाहते हैं कि आपकी सन्तान समाज में सम्मान को प्राप्त करें।

यदि हां ! तो उसके लिए प्रयत्न करना आपका कर्तव्य है।

वह किस प्रकार ?

यह जानने के लिए स्त्री व पुरुष दोनों के लिए पठनीय इस पुस्तक को आज ही मंगाइए।

इसकी महत्ता पढ़ने से ही विदित होगी।

नवदम्पति को भेंट देने योग्य अनुपम उपहार है।

मूल्य २॥) डाक व्यय पृथक।

प्राप्ति स्थानः—**भगवान दास भूकन सरन**

पत्रवाणिज्य, बाजार चौक मुरादाबाद।

दीपावली के उपलक्ष में प्रचारार्थ विद्वानों के ट्रैक्ट मंगावें

प्रत्येक का मूल्य -) सैकड़ा ४)

१ मनुष्य बन—ले० स्वामी वेदानन्द सरस्वती।
२ गायत्री माता—जगदीशचन्द्र विद्यार्थी।
३ ईश्वर सिद्धि—पं० रामचन्द्र जी देहलवी।
४ आस्तिक नास्तिक संवाद—महर्षि दयानन्द।
५ पितृ श्राद्ध विचार—स्वामी दर्शनानन्द।
६ सुख का साधन—महात्मा आनन्द स्वामी।
७ ईश्वरोपासना—पं० रामचन्द्र जी देहलवी।
८ कल्याणी बन—पं० गणेशदत्त 'इन्द्र'।
९ आर्यों का आदि देश—काशी नाथ जी शास्त्री।
१० धर्म और अधर्म—पं० रामचन्द्र देहलवी।
११ स्वामी श्रद्धानन्द—रामगोपाल विद्यालंकार।
१२ तत्ववेत्ता दयानन्द—स्वामी श्रद्धानन्द जी।
१३ पं० लेखराम—रामगोपाल जी विद्यालंकार।
१४ सीता माता—सरस्वती देवी 'प्रभाकर'।
१५ गो माता—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी।
१६ दयानन्द दिग्विजय—श्री हरिशंकर जी शर्मा कविरत्न
१७ चोटी का महत्व—पं० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री।
१८ गुरु विरजानन्द—रामगोपाल विद्यालंकार।
१९ मांस खाना छोड़ दो—पायथा गोरस।
२० मर्यादा पुरुषोत्तम राम—प्रहलाद 'प्रभाकर'।
२१ देश सुधार होली—अंगनलाल आर्य।
२२ मूर्तिपूजा विचार—महर्षि दयानन्द।
२३ भक्ति के लाभ—आचार्य प्रियव्रत।
२४ आर्य समाज के उद्देश्य—जगदीशचन्द्र।
२५ वेदमाता।
२६ श्रद्धामाता।
२७ धरती माता।
२८ धर्म की रक्षा करो—ब्र० प्रभुदत्त जी।
२९ मनुष्य के कर्तव्य—म० नारायण स्वामी।
३० सत्संग भजन।
३१ ऋषि दयानन्द कृत वेदभाष्य का महत्व।
३२ गोपाल दयानन्द।
३३ भक्तिवाद की रूपरेखा।
३४ वैदिक भक्तिवाद।
३५ अंग्रेजी शिक्षा से हानि।
३६ सत्य की महिमा—स्वामी सर्वदानन्द।
३७ आर्य समाज की उन्नति का साधन श्री लालचन्द जी
३८ श्यामाप्रसाद मुकर्जी—श्री प्रेमचन्द।
३९ वैदिक काल में तोप बन्दूक—शिव पूजन सिंह।
४० पतिव्रत धर्म—एक विदूषी महिला।
४१ ब्राह्मण समाज और मूर्ति पूजा—राजेन्द्र जी।
४२ ईश्वरोपासक दयानन्द—भगवत शरण बी. ए.।
४३ ईश्वरावतार—स्वामी नित्यानन्द जी।
४४ कर्मयोगी श्री कृष्ण—प्रेमचन्द।
४५ ईसाइयों का भयंकर षड़यन्त्र।
४६ सामाजिक व्यवहार—श्री लालचन्द जी।
४७ शिक्षा का उद्देश्य—श्री पूर्णचन्द जी।
४८ ब्रह्मचर्य—जगदीशचन्द्र जी विद्यार्थी।
४९ वर्ण व्यवस्था—स्वामी दर्शनानन्द।
५० कर्मव्यवस्था " "
५१ वेदज्ञान—विष्णु दयाल जी।
५२ तुलसी रामायण और आर्य समाज।
५३ सत्य की खोज—काशीनाथ शास्त्री।
५४ मुर्दा क्यों जलावें—प्रेम शरण जी।
५५ स्वामी दयानन्द का उद्देश्य—स्वामी दर्शनानन्द।
५६ स्वामी दयानन्द का लक्ष्य— "
५७ ब्राह्मण समाज और मृतक श्राद्ध—पं० राजेन्द्र जी।
५८ श्रेय और प्रेय—प्रि. नित्यानन्द जी एम. ए.।
५९ सच्ची पूजा—स्वामी सर्वदानन्द जी।
६० झांसी वाली रानी।
६१ महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त-रविवर्मा सि. शास्त्री।
६२ जीवन की समस्यायें—पं० रामचन्द्र देहलवी।
६३ देवताओं की कहानी—कैलाश बिहारी।
६४ रोटी और कपड़ा—प्रेमकुमार पाण्डेय।
६५ धूम्रपान— " "
६६ सिनेमा और हम— " "
६७ दयानन्द कौन—देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय।
६८ कृण्वन्तोस्वयमार्यम—प्रेमकुमार पाण्डेय।
६९ चाय भयंकर विष—जगदीश चन्द्र।
७० मुझे मेरा धर्म क्यों प्यारा है—ज. विद्यार्थी
७१ ईश्वर सब जगह है—विष्णु दयाल जी।
७२ ईश्वर में अविश्वास क्यों—रामचन्द्र देहलवी।
७३ चरित्र निर्माण—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी।
७४ यज्ञोपवीत महत्व—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी।
७५ सूर्य और चन्द्र ग्रहण—हरिदेव शास्त्री।
७६ नास्तिकों को सन्देश—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी।
७७ वैदिक धर्म ही क्यों—हरिदेव शास्त्री।
७८ विद्यार्थी और सदाचार—पं० रामचन्द्र देहलवी

गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क देहली—६

कृषि सम्बन्धी देहात-सुधारक पुस्तकें

१. आधुनिक कृषि विज्ञान	६)	३२. तम्बाकू की खेती	।।)
२. आलू की खेती	।।।)	३३. पपीते की खेती	१।।)
३. टमाटर की खेती	।।)	३४. खेती बाड़ी	१।।)
४. गोभी की खेती	।।)	३५. फलों की खेती	३।।)
५. जीरा, धनियाँ, अजवायन	।।।)	३६. तरकारी सागभाजी खेती	३।।)
६. तरकारियों की खेती	१।।)	३७. खेती और ट्रैक्टर	६)
७. अच्छे बीज	।।।)	३८. किचन गार्डन	१।।।)
८. अच्छी खाद	२।।)	३९. ट्यूब वैल गाइड	३।।)
९. कपास की खेती	१)	४०. ट्रैक्टर प्राइमर	१।)
१०. फूल फुलवारी	२।।)	४१. पशुओं का इलाज	६)
११. गन्ने की खेती	।।।)	४२. पोल्ट्री फार्मिंग	४)
१२. धान की खेती	१।।)	४३. कमर्शियल पोल्ट्री	४)
१३. सन्तरे की बागवानी	२।।)	४४. पोल्ट्री सर्जन	४)
१४. आम की बागवानी	३)	४५. फल संरक्षण	२।।)
१५. तिलहन की खेती	।।।=)	४६. मकई (मक्का) खेती	१।)
१६. सोयाबीन खिसारी	।)	४७. खीरा तरबूज की खेती	१।।)
१७. खेती की तैयारी	२।)	४८. चाय की बागवानी	१।।)
१८. फसल रक्षक औषधियां	२।)	४९. अफीम की खेती	१।।)
१९. फलव्याधियोंकीरोकथाम	१।।)	५०. किसानी लोक कथायें	२।।)
२०. उन्नत सिंचाई	२)	५१. कलम पैवन्द लगाना	१।।)
२१. भारतीय कृषि कहावतें	४)	५२. हल्दी की खेती	१।।)
२२. गेहूं की खेती	३)	५३. कत्थे की खेती	१।।)
२३. लाख की खेती	।।।=)	५४. पान की खेती	१।।)
२४. प्याज खेतीकी खेती	१।)	५५. चने की खेती	१।।)
२५. जौ की खेती	।।।=)	५६. बाजरे की खेती	१।।)
२६. मेंहदी की खेती	।।।)	५७. मटर की खेती	१।।)
२७. नीबू सन्तरा माल्टा	२।)	५८. हैण्डबुक ऑफ पोल्ट्री	१०)
२८. मूंगफली की खेती	१)	५९. खेती और बागवानी	३)
२९. मिर्च की खेती	१।)	६०. तोरी लौकी की खेती	१।।)
३०. बीज की तैयारी	१।।)	६१. खीरा ककड़ी तरबूज खरबूजे की खेती	१।।)
३१. मसालों की खेती	२)		

गवर्नमैंट एग्रीकल्चर इन्स्टीट्यूटों, ग्राम पंचायतों, स्कूललाइब्रेरियों। पुस्तकालयों ब्लॉक ट्रेनिंग सैन्टरों तथा अधिकांश सरकारी लाइब्रेरियों संस्थाओं में खरीदा जाने वाला कृषि सम्बन्धी

६१ पुस्तकों का सैट

वैज्ञानिक ढंग से अधिक खेती करके सरकारी इनाम प्राप्त करें

फलों की खेती (फलदार बागवानी) ले० राजेश गुप्त जिसमें हर प्रकार के फलदार पेड़ों जैसे आम, अमरूद, शहतूत, लौकाट, संतरा आदि सैकड़ों फलों के पेड़ों को लगाने के तथा उनसे अधिक फल पैदा करने के साइन्टिफिक ढंग लिखे गए हैं, मू० ३॥) साढ़े तीन रु० डाक व्यय १)

अपने बंगले, कोठी, गुवाड़, खेत इत्यादि हरी और ताजा सब्जी पैदा करें

साग भाजी की खेती

(लेखक राजेश गुप्त)

जिसमें देशी तथा विदेशी दोनों प्रकार की तरकारियों का बोना, जमीन की जाँच करना खाद से ज्यादा फसल तैयार करना बिना मौसम की तरकारी पैदा करने के साइन्टिफिक नियम फसलव्याधियों की रोक थाम के तरीके और हरप्रकार की सब्जी जैसे आलू, अदरक, अरवी, टिन्डे, बाकला, सीताफल, (पेठा) बन्दगोभी, मूली, बैंगन, भिन्डी, तोरी, घिया, प्याज, पालक, पोदीना टमाटर, धनियाँ खीरा, ककड़ी, तरबूज, फूल गोभी, चुकन्दर, खरबूजा, जीरा, सिंघाड़ा, सौंफ, अजवायन, सेम शरदा शलगम, सकरकंदी, करेला आदि सब्जी बोना और उसके लिए पूरी बातें इस पुस्तक म पढ़कर चाहे चाहे आप खेती करिये या माली को समझाइये।

मूल्य केवल ३॥) डाक व्यय १)

सावधान ! जमीन सोना उगल रही है

आधुनिक कृषि विज्ञान

खेती बाड़ी, फूल-फुलवाड़ी तथा बागवानी पर ७५२ पृष्ठों का ग्रन्थ (ले.- रामेश्वर अशांत)

इसमें अनाज दलहन, तिलहन फूल-फुलवाड़ी साग-भाजी तथा फलों की बागवानी के हर विषय जैसे जुताई, सिंचाई, खाद व फसल संरक्षण आदि सभी आवश्यक बातों को अगणित छोटे-बड़े सुन्दर चित्रों द्वारा समझाया गया है यह भारत के किसान को मालदार बनाने के लिए तथा अधिक फसल उपजा कर सरकारी इनाम प्राप्त करने वाली खोजपूर्ण पुस्तक है। मूल्य ६) छः रुपये डाक व्यय १।।) पृथक।

केवल डाक खर्च वास्ते चार आने (पच्चीस नये पैसों) का टिकट लिफाफे में भेजकर

हजारों पुस्तकों का बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगायें

देहाती पुस्तक भण्डार (V. P.) चावड़ी बाजार दिल्ली

फोन नं०- २००३०

नोट—पुस्तक खरीदते समय हमारा पता अवश्य देखलें।

गोविन्दराम हासानन्द द्वारा सम्पादित मुद्रक और प्रकाशक जयंयद प्रेस, बल्लीमारान देहली में छपवा कर वेदप्रकाश कार्यालय नई सड़क, देहली से प्रकाशित किया।

॥ ओ३म् ॥

वेद प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश का सुन्दर और उपयोगी संस्करण

टिप्पणियों सहित बृहद् आकार

टिप्पणियों के लेखक आर्य जगत् के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी–

श्री पं० अमरसिंह जी आर्य पथिक

अरनियां (बुलन्दशहर) निवासी।

स्वनाम धन्य स्वर्गीय श्री स्वामी वेदानन्द जी द्वारा सम्पादित तथा प्रकाशित टिप्पणियों के
संस्करण से आर्य जनता बहुत प्रभावित तथा आकर्षित हुई है; स्वामी जी द्वारा प्रकाशित संस्करण
छपते ही समाप्त हो गया। आर्य जनता के आग्रह से हमने उक्त शास्त्रार्थ महारथी के सहयोग से इस
संस्करण का आयोजन किया है।

स्वामी वेदानन्द जी ने अपने प्रकाशित ग्रन्थ में लिखा है कि सत्यार्थप्रकाश के अनेक स्थानों
पर टिप्पणियां लिखी जायं तो वह एक प्रकार से सत्यार्थ प्रकाश का भाष्य बन जायगा। इसलिए सब
स्थानों पर (स्वामी वेदानन्द जी ने) टिप्पणियां विस्तार भय से नहीं लिखी।

पं० अमरसिंह जी ने स्वामी जी द्वारा लिखी टिप्पणियों से लाभ उठाते हुए और भी अनेक
स्थानों पर टिप्पणियां लिखीं हैं, इससे एक प्रकार का सत्यार्थ प्रकाश का भाष्य समझना चाहिए।

आर्यों के इस महाग्रन्थ की छपाई, आकार प्रकार सब उत्तम होगा, नमूने का एक पृष्ठ छपवाकर
तैयार किया है ग्रन्थ में जो विशेषता होगीं वह भी एक विज्ञप्ति पत्र में छपा है जो देखना चाहें देख
सकते हैं कागजों की मंहगाई और प्राप्ति की कठिनाई के समय में मूल्य लागत मात्र रखा है। अर्थात्
१५) । अग्रिम ग्राहकों से १३) । जो अग्रिम भी न दे सकें वे २) मात्र पेशगी देकर ग्राहकों में नाम
लिखावें बाकी रुपये बाद में लिये जायेंगे।

प्रियजनों को भेंट करने योग्य ग्रन्थ होगा।

—गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क देहली।

श्री आनन्द स्वामी जी की नई पुस्तक

'आनन्द भगवत् कथा अर्थात् सत्यनारायण व्रत कथा'

पौराणिक पण्डित जो सत्यनारायण की कथा सुनाते हैं उसमें केवल यही सुनाते हैं कि इस कथा को सुनने से एक आदमी स्वर्ग गया और दूसरा आदमी जिसने नहीं सुनी उसको नर्क मिला। वह सत्यनारायण की कथा क्या है यह नहीं बताते।

श्री स्वामी जी ने वेद पुराण, उपनिषद्, गीता तथा अन्य कई धार्मिक ग्रन्थों को उद्धृत करते हुए सत्यनारायण की असली कथा लिखी है सत्यनारायण कौन है? उस कथा को सुनने से जो स्वर्ग मिलता है वह क्या है? सत्यनारायण का आदि और अन्त नहीं तब उसकी अनन्त कहानी क्या है? यह इस पुस्तक में आपको ऐसे मीठे और आकर्षक शब्दों में मिलेगी कि देर तक उसका चित्र हृदय से न मिट सकेगा। एक प्रति का मूल्य ॥≈) मात्र है। १२ प्रतियों के लिए ७॥) भेजें।

लेखक की अन्य पुस्तकें—तत्त्वज्ञान मूल्य ३), **प्रभुभक्ति** मूल्य १॥), **प्रभुदर्शन** मूल्य २॥)। **एक ही रास्ता** मू० ॥।), **आनन्द गायत्री कथा** मू० ॥≈), **भगवान शंकर और दयानन्द** मू० ।≈)

गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क देहली

वेदप्रकाश के चार अमूल्य विशेषांक रियायती मूल्य में

१. सचित्र दयानन्द ग्रन्थ संग्रह

जिसमें ऋषि की आत्मकथा सहित २० पुस्तकों का संग्रह है, प्रत्येक पुस्तक के साथ पुस्तक का रचना काल तथा परिस्थितियों का इतिहास भी है। साथ में ऋषि के ७ असली फोटो चित्र भी हैं।

२. सचित्र वाल्मीकि रामायण

धारावाही हिन्दी में मूल संस्कृत सहित प्रक्षिप्त भाग तथा अनावश्यक कथाओं को निकालकर आर्य-मर्यादानुकूल ग्रन्थ का संकलन किया गया है लगभग ६००० श्लोकों के साथ सरल भाषा में सजिल्द सुन्दर पुस्तक मूल्य १२) रियायती मूल्य ६) रु० मात्र है।

३. सृष्टि का इतिहास

आर्य पथिक पं० लेखराम कृत 'त्वारिखे दुनिया' का हिन्दी अनुवाद। जिसमें सृष्टि उत्पत्ति वेदादि सत्शास्त्रों का समय निर्धारण करते समय जो आधुनिक इतिहासकार, पाश्चात्यों का अनुकरण कर भूल करते हैं उनके लिए यह उपयुक्त मार्ग प्रदर्शक उत्तम पुस्तक है मूल्य २) रियायती मूल्य १॥)

४. बृहदारण्यक कथा माला

बृहदारण्यक उपनिषद् ब्राह्मण ग्रन्थ का एक भाग है, उसकी कथाओं के पाठ और श्रवण से वैदिक संस्कृति का अच्छा ज्ञान प्राप्त होगा पढ़ने योग्य उपयोगी पुस्तक है मूल्य ३) रियायती मूल्य २) है। प्रत्येक वेदप्रकाश के ग्राहकों को रियायती मूल्य में। डाकखर्च अलग।

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क देहली।

॥ ओ३म् ॥

वेद प्रकाश

सम्पादक—गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष—७ : पोष २०१५ जनवरी १९५९ : वार्षिक मूल्य २॥)
अंक—६ : दयानन्दाब्द १३४ पोष १८८० शाके : विदेशों से ५ शि०

वेद सुधा

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्
मा स्वसारमुत स्वसा ।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा
वाचं वदत भद्रया ॥४३२॥

पदानि—मा । भ्राता । भ्रातरम् । द्विक्षत् । मा । स्वसारम् । उत । स्वसा । सम्यञ्चः । सऽव्रताः । भूत्वा । वाचम् । वदत । भद्रयां ॥ ३ ॥

अन्वयः—भ्राता भ्रातरं मा द्विक्षत् । उत वसा स्वसारं मा (द्विक्षत्) । (सर्वे) सभ्यञ्चः सवृताः भूत्वा, भद्रया वाचं वदत ॥

अर्थ—(भ्राता) भाई (भ्रातरं) भाई से (मा) न (द्विक्षत्) द्वेष करे । (उत) और (स्वसा) बहिन (स्वसारं) बहिन से (मा) न (द्विक्षत्) द्वेष करे । सब (सम्यञ्चः) मिलजुल कर (सव्रताः) एक कार्य करने वाले (भूत्वा) होकर, (भद्रया) कल्याण करक (वाचं) भाषण (वदत) बोलो ॥

भावार्थ—भाई, बहन आपस में किसी का द्वेष न करें, भाई-भाई, बहिन-बहिन भी आपस में न झगड़ें । सब मिल कर आनन्द से रहें, एक कार्य करते जाएँ और आपस में कल्याण करने वाला भाषण करें॥

ऋषि गुण-गान

दयानन्द ऋषिराज तुम्हारे, गुणगान मैं कैसे गाऊं ?
उनका कहीं अन्त नहीं पाता, नहिं तुम सा जन मैं पाऊं ॥ १ ॥

त्याग, तपस्या सत्य आदि में, तुमसा कोई नहीं दीखे ।
जिसको देव तुम्हारी तुलना, में मानस पट पर लाऊं ॥ २ ॥

बाल्यकाल में शिवरात्री पर, उदित हुई जो जिज्ञासा ।
घोर तपस्या से वह पूरी, हुई नहीं क्यों मोद मनाऊं ? ॥ ३ ॥

ज्ञान-कर्म शुभ भक्तियोग का, मेल तुम्हारा अनुपम था ।
ऐसा मेल महात्माओं में, भी खोजूं पर नहिं पाऊं ॥ ४ ॥

दयानन्द तुम करुणासागर, अद्भुत गुणगण आकर थे ।
परउपकार परायण निशिदिन, सविनय तुमको मैं ध्याऊं ॥ ५ ॥

धर्म वेदि पर बलि दे करके, अमर धाम तुमने पाया ।
तुम पर श्रद्धा-कुसुम-भक्ति से, क्यों नहिं नित्य चढ़ाऊं ? ॥ ६ ॥

वीतराग संन्यासी थे पर, तुम ही नवयुगनिर्माता ।
तुम स्वराज्य के मन्त्रविधाता, तुमको सादर शीश नमाऊं ॥ ७ ॥

तुमने सोता देश जगाया, हिन्दी अपनाना सिखलाया ।
प्रजातन्त्र का पाठ पढ़ाया, तुम सा यती नहिं पाऊं ॥ ८ ॥

"तुमने अच्छी लीला की प्रभु, पूर्ण तुम्हारी इच्छा हो ।"
यह कह कर पूर्णाहुति देदी, कैसे इसे भुलाऊं ? ॥ ९ ॥

विषदाता के प्राण बचाये, उसके रक्षोपाय बताये ।
नास्तिक आस्तिकवर बन पाये, अद्भुत शक्ति तुम्हारी पाऊं ॥१०॥

—धर्मदेव विद्यामार्तण्ड

अन्न-दान परम-कर्तव्य

(योग राज शारदा "आर्य" श्रीनगर, कश्मीर)

समौ चिद्धस्तौ न समं विविष्टः सम्मातराचिन्न समं दुहाते । यमयोश्चिचन्न समा वीर्याणि ज्ञातौ-चित्सन्तौ न समं पृणीतः ॥ ऋ० १०।११७।६ ॥

(समौ चित्—हस्तौ समं न विविष्टः) एक जैसे हाथ भी कार्य में समान प्रवेश नहीं करते (सम्मातरां चित्—न समं दुहाते) बच्चे का एक जैसा निर्माण करने वाली दो धायायें समानरूप में दूध नहीं पिलातीं (यमयोः—चित् समा वीर्याणि न) दो जुड़वां बच्चों के कार्य करने में भी समान बल नहीं होता एवं (ज्ञाती चित् सन्तौ न समं पृणीतः) परस्पर सम्बन्धी एक वंशीय दो बन्धु होते हुए भी समान अन्न धन सम्पत्ति के अधिकारी याचक को समान रूप में तृप्ति नहीं करते ॥

साधन सम्पन्न व्यक्ति अधिकारी याचक और भूखे पेट को तृप्त करे, भरे पेट को देना न सच्चा दान है और न देने वाला ही सच्चा दाता है । जल रही अग्नि के ऊपर यदि घृत छोड़ा जावेगा तो वह तीव्र होगी, यदि हम शान्त हुई अग्नि के ऊपर घृत छोड़ेंगे तो वह धूआं देगी । धनी व्यक्ति यह कभी न सोचे कि अमुक व्यक्ति के पास मेरे से अधिक धन है यदि वह भूखे प्यासे और दरिद्रों की धन तथा अन्न से तृप्ति नहीं करता तो मैं क्यों दूं ? ऐसा कहना और सोचना उचित नहीं क्योंकि दान देना धन सम्पत्ति पर निर्भर नहीं है वह तो आन्तरिक गुण या सद्भावना पर निर्भर है । धन सम्पत्ति के तीन ही अन्त हैं—भोग, विनाश और दान । भोग कूकर और गधा भी तो कर लेता है, अपना पेट तो एक गन्दी नाली का कीड़ा भी भर लेता है । विनाश का भी तो कोई लाभ नहीं, इस लिए दान देना परम आवश्यक कर्तव्य है । दान का महत्त्व दर्शाते हुये वेद भगवान ने कहा है:—(कृषन्—इत् फालः आशितं कृणोति) खेत जोता हुआ फाल—फालयुक्त हल किसान को अन्न भोक्ता—अन्न खाने में अधिकारी समर्थ बनाता है, अपने अन्न को उपजाता है । एक किसान दो सेर बीज भूमि में डालता है और दो तीन मन अन्न पाता है, ऐसे ही दान करने वालों को लाभ होता है ।

अन्न पात्र का वर्णन करते हुए शास्त्रों में कहा है कि:—(कृशाय कृतविद्याय वृत्तिक्षीणाय सीदते । अपहन्यात् क्षुधां यस्तु न तेन पुरुषः समः) जो मनुष्य कृषः—निर्बल के लिए, विद्यावान के लिए, वृत्तिक्षीण दरिद्र के लिए, व्यथित पीड़ित के लिए अपनी भूख को मार ले अर्थात् स्वयं प्रथम खाए बिना इन्हें खिलावे उसके तुल्य कोई श्रेष्ठ पुरुष नहीं । माननीय पं० शिवकुमार जी शास्त्री एक कथा सुनाया करते हैं कि:—धर्मराज युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ पर श्री कृष्ण भगवान ने देखा कि एक न्योला, जिसका शरीर आधा सोने का है और

आधा चमड़े का है, इधर-उधर यज्ञ पात्रों में मुँह मार रहा है। उन्होंने न्योले को आश्चर्य से देखते हुए, प्रश्न किया, हे न्योले हम ने पूर्व कभी ऐसा नहीं देखा कि किसी का शरीर आधा सोने का और आधा चमड़े का हो, दूसरे तुम हर यज्ञ पात्र को जूठा क्यों कर रहे हो। न्योले ने उत्तर दिया, महाराज, एक गृहस्थ ने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि अथिति-यज्ञ किये बिना भोजन न किया करूँगा। उसके कुछ काल पश्चात्, देश में दुर्भिक्ष पड़ गया, प्राणी भूख से तड़प २ कर मरने लगे। सात दिन तक उस गृहस्थ को अन्न का दाना तक न मिला। आठवें दिन उसको कहीं से थोड़ा सा अन्न मिला गृहणि ने, जब भोजन तैयार हो गया, आवाज दी, स्वामी, आकर भोजन ग्रहण कर लें। गृहस्थ के मन में विचार आया, यदि सुख में अतिथि सेवा बिना भोजन न ग्रहण करने का व्रत लिया था तो उस व्रत को दुःख में भी निभाना चाहिए। क्योंकि किसी ने कहा—

दुख में सुमरण सब कोई करें, सुख में करे न कोय।
यदि सुख में सुमरण करें, दुख काहे को होय॥

इस विचार को आते ही उसने आवाज दी घर में भोजन तैयार है कोई इच्छुक हो तो आकर खा लेवे। दुर्भिक्ष में भूखों की क्या कमी थी, एक मनुष्य ने अन्दर प्रवेश किया। गृहस्थ ने आदर सहित, उसको मुहँ हाथ धुलाकर आसन पर बिठाया। भोजन परोसा गया परन्तु वह एक क्षण में सब खा गया। गृहस्थ ने पूछा और खाओगे, उसने हां में सिर हिला दिया। गृहणी ने अपना भाग का भोजन उसको परोसा। वह उसे भी खा गया, परन्तु उसकी तृप्ति न हुई, तब पुत्र व उसकी पुत्र-वधू का भाग परोसा गया, जिससे वह तृप्ति हो गई। वह अतिथि जब प्रसन्न हो कुल्ला कर रहा था तो उसके कुल्ले का पानी मेरे आधे शरीर पर पड़ने से मेरी यह अवस्था हुई। मैंने उससे प्रार्थना की, महाराज मुझे पूर्ण सोने का या पूर्ण चमड़े का बना दो इस अवस्था में मत रखो। अतिथि ने उत्तर दिया, यह गृहस्थ के तप का प्रभाव है उसने स्वयं सह परिवार भूखे रह कर मुझ को भोजन से तृप्त किया है। यदि कोई अन्य मनुष्य ऐसा ही श्रद्धा और तप से यज्ञ करेगा तो तुम उसके यज्ञ पात्र में स्नान करना तब तुम पूर्ण सोने के हो जाओगे। भगवन्, इसी कारण मैं यज्ञ का नाम सुनकर इतनी दूर से चल कर आया हूँ परन्तु मेरा सब परिश्रम निष्फल रहा इस यज्ञ में श्रद्धा का नाम मात्र नहीं है सब ढोङ्ग है वरण मेरी हार्दिक कामना पूर्ण होती अर्थात् मैं पूर्ण सोने का होकर मरता।

न वा उ देवाः क्षुधमिद् वधं ददुरुताशितमुपगच्छन्ति मृत्यवः। उतो रयिः पृणतो नोपदस्यत्युतापृणन् मर्डितारं न विन्दते ॥ऋ० १०।११७।१॥

विद्वानों ने ही भूख को ही निश्चय से बध-नाश नहीं धारण किया—माना। क्योंकि खा चुके हुए—भरे पेट वाले मनुष्य के पास भी मृत्युयें जाती हैं। दूसरे को निज अन्न आदि धन से तृप्त करते हुए का अन्न आदि धन क्षीण नहीं होता अपितु दूसरे की तृप्ति बुभुक्षा शान्ति न करता हुआ जन सुख देने वाले परमात्मा को प्राप्त नहीं करता।

संसार में भूखे ही मरते हैं ऐसा नहीं, भरे पेट मनुष्य भी तो मर जाते हैं, वहुतेरे तो अधिक खाने से ही मर जाते हैं। मृत्यु से कोई भी बच नहीं सकता, अतः अपने भरे पेट होने का अभिमान न करना चाहिये। अपने भोजन में से कुछ दूसरे को देने से कोई मरता नहीं वस्तुतः मरता वह है जो दूसरे की तृप्ति नहीं करता, जीते हुये भी

उसका अन्तः स्थल मरा सा जीवन रहित पाषाण समान हो जाता है। कवि के शब्दों में :—

दुखिया पास पड़ा है तेरे, तू ने मौज उड़ाई तो क्या।
भूखा प्यासा पड़ा पड़ौसी, तू ने रोटी खाई तो क्या॥

दान देना श्रेष्ठ है पर पात्र अपात्र देख कर देना अच्छा है, आवश्यकता वाले को उस वस्तु के इच्छुक को देना चाहिए। पाखण्डी साधू, दुराचारी भिखारी और भरे पेट वाले मनुष्य को दिया हुआ अन्न धन सच्चा दान है और न ही दान देने वाला सच्चा दाता है।

एक चोर का कार्य था पशु चोरी। ग्रीष्म ऋतु में एक दिन वह किसी गांव में पहुंचा। दो बजे रात वह गांव से चार भैंसें खोलने में सफल हुआ। भैंसे लेकर कुछ दूर ही गया होगा कि सूर्य का प्रकाश होने लगा। उसने विचार किया कि भैंसों के स्वामी पीछा कर रहे होंगे मुझे मिल जायेंगे तो भैंसे भी छीन लेंगे और ताड़ना भी अच्छी करेंगे। क्यों न ? भैंसों को जङ्गल में हरे २ घास पर छोड़ स्वयं साधु का रूप धारण कर नदी किनारे बैठ जाऊं। ऐसा विचार कर उस ने नदी में स्नान किया और सारे शरीर पर भस्म रमा कर स्वांग रचा वहां बैठ गया। बार २ आंखें खोल भैंसों की ओर भी देख लेता। पास के गांव से एक बुढ़िया नदी पर स्नान करने आई जब उसकी दृष्टि साधु पर पड़ी तो उसके मन में विचार आया कैसा त्यागी महात्मा है जो सब चिन्ता मिटा जङ्गल में आ बैठा है। बुढ़िया ने साधु को प्रणाम कर, कहा, महाराज आप को भूख लगी होगी यदि आज्ञा हो तो आपके लिए भोजन ले आऊं। वह बोला तुम्हारी इच्छा। बुढ़िया शीघ्र ही गांव से भोजन ले आई। साधू भोजन करते हुए बोला, माई तुम कितनी श्रद्धालू हो, परन्तु बुढ़िया तो चारों ओर देखने में मस्त थी। "बुढ़िया ने मुझे पकड़वाने की चाल न की हो", ऐसा विचार वह बोला, माई तुम चारों ओर क्या देख रही हो ? शीघ्र कहो। बुढ़िया ने कहा मैंने कल कथा में सुना था जो श्रद्धा से भूखे साधु को अन्न से तृप्त करता है उसे धर्मराज विमान भेज स्वर्ग मंगवा लेता है इसीलिए जीवन में प्रथम बार मैंने किसी भूखे को अन्न-दान दिया है। भोजन तो समाप्त होने को है परन्तु विमान आते कहीं दीखते नहीं हैं। साधु हंस कर बोला, तुम्हारे जैसे दाता और मेरे जैसे पशु-चोर साधु संन्यासी हूँगे तो धर्मराज के विमान अवश्य ही स्वर्ग से आयेंगे। किसी ने कहा भी है—"नेकी कर दरिया में डाल" अर्थात् अन्न धन दान दो परन्तु प्रतिक्रिया की भावना मन में न आने दो। भूखे, दरिद्र और विद्वान् को अन्न धन आदि से तृप्त करने वाले का अन्न धन आदि क्षीण नहीं होता उसे भी अवसर आने पर कहीं से मिल ही जाता है अतः पात्र को दान देना परम आवश्यक कर्तव्य है, ऐश्वर्य-प्राप्ति का यह परम फल है, अदाता प्रभु का प्यारा नहीं बन सकता, अकेले खाने वाला निश्चित पापी है, मानवता से गिरा हुआ है, व्यर्थ अन्न धन आदि को प्राप्त किए हुए हैं। अतः जब भी धन प्राप्त हो उसका सदुपयोग कर यशोरूप दूध को दुह लेना चाहिए अन्यथा बिना दूध की गौ के समान सदुपयोग रहित धन भारमात्र है उसके स्वामी बनना मिथ्या स्वामी बनना है भार उठाना मात्र है।

फुट नोट:—यह कथा, भूखे को अन्न-दान देने का महत्व दर्शाने को कही गई है।

घोर प्रतिक्रिया के पुजारी

(श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति)

नई दिल्ली के प्रधान मन्त्री भवन से श्रीमती इन्दिरागांधी की कृपा से एक पुस्तक प्राप्त हुई है। पुस्तक की छपाई, कागज, आकार प्रकार आदि का क्या कहना है ? भारत के प्रकाशनों में सर्वोत्कृष्ट कोटि का कह सकते हैं। पुस्तक 'जनहित निधि' नाम की संस्था की ओर से प्रकाशित हुई है। प्रतीत होता है कि यह हमारे प्रतिभासम्पन्न प्रधान मन्त्री जी की क्रियाशीलता का नवीनतम परिणाम है।

पुस्तक में सरदार के० एम० पानिक्कर का एक लेख प्रकाशित हुआ है जिसका शीर्षक है "प्रति क्रिया का खतरा"। किसी विद्यमान क्रिया अथवा गति का विरोध करने के लिये जो क्रिया अथवा गति की जाती है अथवा होती उसे प्रतिक्रिया कहते हैं। सरदार पानिक्कर ने प्रतिक्रिया के जो दृष्टान्त दिये हैं उन्हें पढ़ कर यह आश्चर्य होता है कि उन्होंने जिन्हें प्रतिक्रिया कहा है वे प्रतिक्रियायें हैं अथवा पानिक्कर साहब का अपना लेख प्रतिक्रियाओं का पुलिन्दा है।

सरदार पानिक्कर ने देश की जिन बातों को प्रतिक्रिया का नाम दिया है वे ये हैं। अ.प लिखते हैं कि इन दकियानूसी विचारों में से सब से मुख्य अपनी जाति के किसी बीते हुए स्वर्णीय युग का विश्वास है। पानिक्कर साहब की राय है कि जो लोग यह मानते हैं कि उन का भूतकाल सुन्दर था वे भविष्य को कभी सुन्दर नहीं बना सकते। भूतकाल के स्वर्णयुग में विश्वास रखने के परिणामों के बारे में सरदार पानिक्कर की अद्भुत राय है। आप लिखते हैं कि हाथकी कारीगरी पुराने दवादारू, खद्दर आदि के सब आंदोलन प्राचीनतावाद के ही परिणाम हैं। सरदार साहब की राय में ग्रामों की दशा पर अधिक ध्यान देना भी प्रतिक्रियावाद का परिणाम है।

आगे चलकर आप लिखते हैं कि हमारे प्राचीनतावाद का एक बड़ा खतरनाक पहलु यह है कि आध्यात्मिकता को भारत का विशेष गुण माना जाय। आपकी राय है भारत की दरिद्रता और दासता का कारण आध्यात्मिकता की श्रेष्ठता में विश्वास ही है। प्रतिक्रियावाद का एक भयानक दृष्टान्त सरदार पानिक्कर की राय में शराबबन्दी का आन्दोलन है। गौ के लिए पूजा का भाव शराबबन्दी से भी अधिक दोषयुक्त है क्योंकि वह आर्थिक दृष्टि से हानिकारक है। यह स्थापना कर के सरदार पानिक्कर ने इस बात पर बहुत दुःख प्रकट किया है कि भारत में गोमांस के खाने को बुरा माना जाता है। आपका मत है कि मनुष्य जाति में गोमांस का भक्षण बहुत प्रचलित है उसे बुरा मानना निरी मूर्खता है।

आगे चल कर पानिक्कर साहब लिखते हैं कि

दो और बहुत विस्तृत भ्रमात्मक वस्तुओं की ओर निर्देश कर देना भी यहां जरूरी है, वे हैं—(१) ज्योतिष और (२) आयुर्वेद ! उनकी राय में ये दोनों अव्वल दर्जे के बहम हैं। 'नेशनल' नाम से सरदार पानिक्कर को बहुत चिढ़ है। आयुर्वेद से सब से बड़ी शिकायत उन्हें यह है कि उसे 'नैशनल सिस्टम ऑफ मेडीसन' समझा जाता है। इस प्रकरण के अन्त में वे लिखते हैं कि आयुर्वेदिक का सुधार करने की बात उठाना भी केवल राष्ट्रीय हिमाकत का परिणाम है। क्योंकि सुधार होने के पश्चात् आयुर्वेद 'एलोपेथी' में ही समा जायेगा। प्रतिक्रियावाद के अन्य दृष्टान्तों में सरदार पानिक्कर ने देश की कई अन्य भावनाओं को सम्मिलित कर दिया है यथा संन्यासियों तथा पण्डितों के लिए आदर का भाव, त्याग की प्रशंसा कल कारखानों की उन्नति से भय आदि। हिन्दू-समाज के पतिभक्ति और पत्नीव्रत आदि के आदर्शों का उपहास करते हुए नवीनता के इस पुजारी ने उन्हें भी प्रतिक्रियावाद का नमूना बताया है।

अन्त में सरदार पानिक्कर ने लिखा है कि हमारे देश में सब से अधिक खतरनाक प्रवृत्ति यह हो रही है कि शिक्षा को राष्ट्रीय बनाया जाये। वे इस प्रवृत्तिको लम्बी राजनीतिक दासता का परिणाम मानते हैं। उनकी राय में यह भी घोर प्रतिक्रियावाद का फल है कि शिक्षा मातृभाषा द्वारा दी जाय। राम और कृष्ण के प्रति भक्ति की भावना को पानिक्कर महोदय मानसिक दासता की पराकाष्ठा समझते हैं।

हम गेंद को दीवार की ओर फेंकते हैं। गेंद दीवार की ओर क्रिया करती है। दीवार से टकरा कर वापिस लौटती है तब उस की गति को प्रतिक्रिया कहते हैं। भारत सदियों तक राजनीतिक और मानसिक दासता में ग्रस्त रहा। उसे हम नीचे की ओर गति या क्रिया कह सकते हैं। समय ने पल्टा खाया और हमारे देश ने दासता की चट्टान से टकरा कर ऊपर की ओर उठना आरम्भ किया। राष्ट्रीय चेतना आरम्भ हुई जिसकी सहायता से हम ने अपने आप को समझा, अपने व्यतीतकाल के महत्त्व को पहचाना और तब स्वाधीनता प्राप्त कर लीं। यह दासता की ओर क्रिया की प्रतिक्रया थी।

आत्मज्ञान और स्वाधीनता का प्रारम्भ प्रतिक्रिया के रूप में हुआ था पर जब हमने उसे प्राप्त कर लिया तब वह प्रतिक्रिया न रही, 'स्वयं क्रिया' बन गई। सरदार पानिक्कर ने आत्मज्ञान और राष्ट्रीयता को प्रतिक्रिया बतलाया है परन्तु यदि सत्य के दृष्टिकोण से विचार किया जाय, सरदार पानिक्कर के विचारों का परीक्षण किया जाय तो प्रतीत होगा कि वही स्वयं प्रतिक्रियावादी हैं। क्योंकि देश में बढ़ती हुई स्वात्माभिमान और स्वाधीनता की प्रवृत्तियों से डर कर वे उसे पश्चिम की दलदल में घसीटना चाहते हैं। यदि सरदार पानिक्कर के दृष्टिकोण से देखा जाय तो महात्मा गांधी सब से बड़े प्रतिक्रियावादी थे। यदि उनके सब विचार इतने हानिकारक थे जितने सरदार पानिक्कर उन्हें समझते हैं तो उनसे बचने का शायद एक ही उपाय है कि भारत की किश्ती को इंग्लैंड या रूस के जहाज के पीछे बांध दिया जाय। स्वाधीन भारत में तो कुछ न कुछ भारतीयता रहेगी ही और भारतीयता से पानिक्कर साहब को चिढ़ है। स्वाधीनता प्राप्त होने के पश्चात् देश के अनेक पाश्चत्य विचारों के पुजारियों में यह भावना पैदा हो गई है कि कहीं सचमुच हमें भारतीय हो न बनना पड़े। इस भय ने जो प्रति-क्रिया पैदा की है सरदार पानिक्कर का लेख उसका एक नमूना है। लेख में विचारों की उलझन इतनी स्पष्ट है कि उसे सिद्ध करने के लिए युक्ति की आवश्यकता नहीं—आश्चर्य ही है कि यह लेख श्रीमती इन्दरागांधी द्वारा संपादित और प्रधान मन्त्री के भवन से प्रकाशित ग्रन्थ में संपादकीय टिप्पणी के बिना कैसे प्रकाशित हो गया।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का
५० वर्षीय स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

सर्वसाधारण को यह समाचार पढ़ कर बड़ी प्रसन्नता होगी कि उनके प्रिय गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का ५० वर्षीय स्वर्ण जयन्ती महोत्सव विशाल आयोजन के साथ आगामी अप्रैल मास सन् १९५९ में वैशाखी के शुभपर्व पर ९ अप्रैल से १५ अप्रैल तक बड़े समारोह के साथ गुरुकुल की पुण्य भूमि में मनाया जाना निश्चित हुआ है। इस शुभ अवसर पर ९ अप्रैल सन् १९५९ को प्रातः ६॥ बजे से एक बृहद्यज्ञ आरम्भ हो रहा है। जिसकी पूर्णाहुति १५ अप्रैल को प्रातः १० बजे समाप्त होगी, इस यज्ञ को सफल बनाने के लिये परम याज्ञिक, कर्मकाण्ड परायण वैदिक आर्य विद्वानों को आमन्त्रित किया गया है। १० अप्रैल को मध्याह्नोत्तर ३ बजे से एक विशाल नगर कीर्तन निकलेगा, जो महाविद्यालय गुरुकुल से आरम्भ होकर ज्वालापुर हरिद्वार स्टेशन रोड से घूमता हुआ ज्वालापुर की पुण्य वीथिका में होकर सीताराम स्कूल गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (मोटर स्टैण्ड) नगर पालिका चौकी पर समाप्त होगा इसके साथ साथ उत्सव को सफल बनाने के लिये विविध सम्मेलनों का भी आयोजन किया गया है! जिनमें से मुख्य ये हैं:— १—वेद सम्मेलन २—आर्य सम्मेलन ३—शिक्षा सम्मेलन ४—गुरुकुल सम्मेलन ५—कवि सम्मेलन ६—महिला सम्मेलन ७—आयुर्वेद सम्मेलन ८—संगीत सम्मेलन।

१४ अप्रैल को दीक्षान्त समारोह होगा, समस्त विद्या प्रेमी धर्म पिपासु आर्य जनता से प्रार्थना है कि वह उत्सव पर अधिक संख्या में पधार कर धर्म लाभ उठावें। यह उत्सव देखने योग्य होगा। उत्सव की सफलता के लिए १, ५, १०, २५, ५०, १०० रुपयों के नोट-पत्र छप गए हैं जो सज्जन या आर्य समाज, संस्था मंगाना चाहें वे कार्यालय में मंगा कर सहायता के कार्य में मनोयोग से लग जायं। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की सफलता आर्य जगत् की अपनी सफलता है। यह संस्था आर्य-तीर्थ है यहां ५० वर्ष से विद्या-सत्र निरतन्त्र चल रहा है। जो इस यज्ञ में अपने शाकल्य की आहुति प्रदान करेगा वह अवश्य पुण्य और यश का भागी होगा।

जो महानुभाव श्रद्धा-भक्ति और प्रेम से अपना भाग इस यज्ञ में अन्न, वस्त्र, धन जिस रूप में भी देना चाहेंगे वह सहर्ष सधन्यवाद स्वीकिया जायगा। उत्सव के दिनों में निरन्तर "दर्शनानन्द लंगर" (भोजन भण्डार) चलेगा उसमें, अन्न, चावल, दाल, घृत, मीठा आदि आवश्यक सामान जो देना चाहें उनके लिये हमारी झोली सदा खुली हुई है। उनका स्वागत है।

आपका अपना ही

नन्दकिशोर शास्त्री

मुख्याधिष्ठाता

❀ ओ३म् ❀

ऋषि जन्मभूमि-टंकारा-महाशिवरात्रि (ता० ६, ७, ८ मार्च)

—को—

आयोजित आर्य महासम्मेलन में चलने की तैयारी करिये

ऋषि दयानन्द के भक्त स्वर्गीय श्री राजरत्न मास्टर आत्माराम जी अमृतसरी के सुपुत्र श्री आनन्दप्रिय जी जिन्होंने उगती जवानी में बी० ए० एल एल० बी० पास करके राज्य में "मैजिस्ट्रेट" का पद छोड़ कर हिन्दू-आर्य जाति की सेवा का व्रत लिया, ईसाई, मुसलमानों के चंगुल से छुड़ाकर लाखों भीलों में आर्य संस्कृति का भाव भरा, आर्य कन्या महाविद्यालय वड़ौदा का सफल संचालन कर रहे हैं, उन्हीं के पुरुषार्थ और प्रयत्न से पोरबन्दर (सौराष्ट्र) के अद्वितीय दानी सेठ श्री नानजी भाई कालीदास के दान से मोरवी राज्य का राजमहल जो कि वर्तमान समय में १० लाख से कम मूल्य का नहीं है, केवल १॥ लाख में खरीदा गया है। सेठ जी आगामी शिवरात्रि को उक्त महल ऋषि दयानन्द स्मारक समिति को अर्पण करेंगे। स्मारक समिति की उक्त स्थान में कई योजनायें चालू करने की है। यथा ऋषि स्मारक के अनुकूल एक मीनार खड़ा करना, वैदिक अनुसन्धान विभाग, विद्वान और श्रद्धालुओं के लिए वानप्रस्थाश्रम (निवासस्थान) दयानन्द बाग, पाठशाला आदि आदि।

जिस प्रकार "वौद्धगया" में बुद्ध के अनुयायी भारत से तथा दूर देशों के निवासी ब्रह्मा, चीन, जापान के श्रद्धालु भक्त पधारते हैं, मुसलमान मक्के और मदीने हर वर्ष यात्रा को जाते हैं। हिन्दू हरिद्वार, मथुरा, वृन्दाबन तथा राम के भक्त अयोध्या नगरी की श्रद्धापूर्वक यात्रा करते हैं। जिस प्रकार ऋषि जन्म शताब्दी मथुरा में लाखों आर्यों ने आज से ३० वर्ष पूर्व अपनी ऋषि भक्ति का परिचय देकर ऋषि के प्रति श्रद्धा और भक्ति का परिचय संसार को दिया, आशा है उसी प्रकार आगामी शिवरात्रि के उक्त महामेले में भी चलने की तैयारी कर ऋषि जन्म भूमि तथा सेठ नानजी भाई कालीदास के दान से प्राप्त महाराजा मोरबी का राजमहल ऋषि दयानन्द के स्मारक में परिवर्तित होता देख कर तथा विद्वानों के प्रवचनों को सुनकर धर्म लाभ उठावेगें।

टंकारा के भावी यात्रा के लिए अभी से निश्चय करके निम्नस्थान पर अपना नाम लिखाइये महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट (टंकारा) के लिए जो दान देना चाहें वह भी भिजवा दें।

गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, देहली।

सूचना—पर्याप्त संख्या में नाम आने पर स्पेशल ट्रेन की व्यवस्था का प्रयत्न किया जायगा।

हिंदु सङ्गठन क्यों और कैसे ?

स्वामी श्रद्धानन्द जी की लिखी हुई स्फूर्ति दायक पुस्तक अवश्य पढ़ें। मूल्य २) से घटा कर १) कर दिया गया है। ५ प्रतियां एक साथ मंगाने पर डाक खर्च माफ।

—गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क देहली।

यज्ञों में मन्त्रोच्चारण

(श्री पं० विद्यानन्द जी वेदालंकार, पुरोहित आर्य समाज, सागर)

१. **वैदिक साहित्य में स्वर**—स्वर वैदिक वाङ्मय में १४ प्रकार के होते हैं। इन के दो विभाग हैं। साहित्य के स्वर, वर्णमाला के स्वरों से भिन्न होते हैं। अतः गान विद्या के स्वर और शब्दोच्चारण के स्वर, वर्णोंच्चारण के स्वरों से भिन्न हैं। साहित्य के दोनों विभागों में सात-सात स्वर होते हैं।

२. **गान विद्या के स्वर**—वेदों की मुद्रित सभी पुस्तकों में—"ऋषि, देवता, छन्द और स्वर" सभी मन्त्रों के साथ लिखे जाते हैं। इनमें अर्थों के रहस्य को जानने में यदि ऋषि और देवता का ज्ञान आवश्यक हैं तो गान के लिए छन्द और स्वर आवश्यक हैं। यहां स्वर का अभिप्राय गानविद्या के स्वरों से है।

३. **गान-विद्या के सात स्वर**—गान विद्या के स्वर सात होते हैं। उनके नाम षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पञ्चम, धैवत और निषाद हैं। उन्हीं के संक्षिप्त संकेत 'सा, रे, ग, म, प, ध और नि, हैं। गान विद्या की संकेत लिपि (नोटेशन) इन्हीं स्वर संकेतों के अनुसार होती है। यह आज विश्वविश्रुत हैं। सर्वत्र गान विद्या के आधार होते जा रहे हैं।

४. **शब्दोच्चारण के स्वर**—इनमें तीन मुख्य हैं, अर्थात् उदात्त, अनुदात्त और स्वरित। किन्तु उच्चारण के तारतम्य से उनके भी भेद हो जाते हैं। उदात्त ऊंचा बोला जाता है, अनुदात्त धीमा बोला जाता है और स्वरित मध्यम। जब तीनों उच्चारण बिना किए मन्त्रोच्चारण किया जाता है तो उसे एकश्रुति कहते हैं।

यहां यह ध्यान देने की बात है कि ये उच्चारण भेद ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत से भिन्न है। ह्रस्वादि का सम्बन्ध बोलने के समय की मात्रा से है, स्वरों के उतार चढ़ाव से नहीं। तेज, धीमा या मध्यम स्वर, समय की मात्रा की जगह; ध्वनि के उतार चढ़ाव पर निर्भर है। यह सामान्य शब्दोच्चारण का उतार चढ़ाव है, लय और तान आदि का नहीं है। उतार चढ़ाव के बिना भी शब्द एकश्रुति में बोले जा सकते हैं। इसी प्रकार शब्दोच्चारण उतार चढ़ाव के तारम्य एवं अभाव की दृष्टि से, सात प्रकार का हो जाता है, उसे सात स्वरों में बोला जाता है; अर्थात् उदात्त, उदात्ततर अनुदात्त, अनुदात्तर, स्वरितोदात्तर और एकश्रुति हैं। अतः संस्वर और एक श्रुति (बिना स्वर) का भेद; मन्त्रों को (६) स्वरों में बोलना या उनके बिना (एक श्रुति) बोलना कहा जाता है।

५. सस्वर मन्त्रोच्चारण का विधान—उदात्तादि स्वरों का ज्ञान वेदार्थ के लिए तो आवश्यक है ही किन्तु संस्कृत और हिन्दी के उच्चारण और अर्थ ज्ञान के लिए भी आवश्यक है। हिन्दी विषयक चर्चा को छोड़ भी दें, तो भी संस्कृत शब्दों को अपनाने के साथ ही हमारी हिन्दी स्वरज्ञान से सम्बन्धित भी हो ही जाती है जैसे क्षय अद्युदात्त का अर्थ घर हैं और अन्तोदात्त का नाश है। अब नाश या घर किस अर्थ में शब्द बोला जाय, यह उच्चारण पर निर्भर करता है, न कि शब्द पर। अतः हिन्दी में भी उच्चारणज्ञान बिना ही शब्दज्ञान की शिक्षा मूर्खतापूर्ण है। प्रश्न, स्वीकार, उपमा, सम्मति, आज्ञा आशीर्वाद आदि तो बहुत प्रचलित शब्द हैं। परन्तु इनके साथ स्वर ज्ञान आवश्यक है। परन्तु हमारा विषय मन्त्रोच्चारण व्यवस्था का है। अतः हम इस चर्चा को छोड़ रहे हैं।

६. यज्ञों में मन्त्रोच्चारण—क्षेत्र की दृष्टि से मन्त्रोच्चारण के तीन भेद हैं--**(क) यज्ञों में, (ख) वेदों का पाठ (ग) अर्थ एवं भाव बोधक मन्त्रों का पाठ** अतः इन तीनों पर क्रमशः विचार करते हैं। प्रथम क्षेत्र यज्ञों में है। सस्वर वेदपाठी पं० वीरसेन जी संहिता के कई प्रकार के पाठ जानते हैं। जैसे—अनुलोम, विलोम संहिता पाठ, मण्डूकप्लुति की तरह अनुलोम, विलोमपाठ, एवं विवृत्ति पाठ, इसके अलावा पद, क्रम, जटा, दण्ड, घन, ध्वज, रथ, शिखा रेखा, क्रममाला, पुष्पमाला और पंचसंधिपाठ। उनके तप निष्ठा एवं स्मृति शक्ति के प्रभाव से सस्वर वेदपाठ की आवश्यकता कौन नहीं अनुभव करेगा। मैं तो उन्हें वरेण्य देवता की तरह स्वीकार करता हूँ। उनका उत्साह सस्वर वेदपाठियों को पैदा करने में सफल हो। परन्तु "यज्ञों में सस्वर मन्त्रोच्चारण हो" यह मन्त्रोच्चारण सस्वर सीखने के लिए युक्ति सराहनीय तो है परन्तु माननीय नहीं। यज्ञों के प्रति श्रद्धा और सम्बन्ध की दृष्टि से लोग सस्वर उच्चारण की महत्ता इसी युक्ति से अधिक जल्दी समझते हैं। यह स्वीकार करके भी यह शास्त्र सम्मत एवं ऋषि दयानन्द सम्मत युक्ति है, यह स्थापना गलत है, यह स्पष्ट है।

महर्षि दयानन्द एवं महर्षि पाणिनि का मत—महर्षि पाणिनि की अष्टाध्यायी के सूत्र १।२।३४ पर भाष्य करते हुए महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं—"यज्ञकर्म अर्थात् होम करने में जो मन्त्र पढ़ते हैं वहां उदात्त अनुदात्त, और स्वरित की एकश्रुति हो, अर्थात् पृथक २ श्रवण न हो" उदाहरण देते हुए—हवन के दो मन्त्र उद्धृत करके लिखते हैं—"समिधाग्नि इत्यादि मंत्र यज्ञ में स्वर भेद के बिना ही पढ़े जाते हैं। तीनों स्वरों के विभाग से वेद मन्त्रों का पाठ होता है। इसी कारण यज्ञकर्म में भी पृथक २ उच्चारण प्राप्त था। इस (प्राप्त आदेश सस्वर मन्त्रोच्चारण के निषेध के कार्य के) लिए इस सूत्र का आरम्भ (महर्षि पाणिनि ने) किया है।" ऋषि दयानन्द कृत अष्टाध्यायी भाष्य पृष्ठ १२५।

स्वामी जी के अन्य वाक्य—जैसे स्वामी जी सत्यार्थ प्रकाश में पंचमहायज्ञ विधि का विधान करते हुए, अपने इस विषय पर लिखे ग्रन्थ के निर्णय को ही प्रमाण मानने को कहते हैं; वैसे ही सर्वत्र उनका भाव समझना चाहिये।

१. संस्कार विधि में—"सब संस्कारों में मधुर स्वर से मन्त्रोच्चारण यजमान ही करे…… जैसा जिस वेद का उच्चारण हो वैसा करे।" यहां मधुर स्वर से उच्चारण कैसा करे—इसका उत्तर स्वामी जी ने स्वतः दिया था जैसा "जिस वेद का उच्चारण हो।" अतः किस वेद का कैसा

उच्चारण होता है—इस पर ऋषि दयानन्द जी का मत लिखते हैं।

२. **वेद पाठ विधि**—महर्षि पाणिनि के सूत्र "विभाषा छन्दसि" १।२।३७ पर भाष्य करते हुए महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं—'वेद मंत्रों के सामान्य उच्चारण करने में उदात्त, अनुदात्त और स्वरित को विकल्प करके एकश्रुति स्वर होता है। जहां एक श्रुति स्वर होना है, वहां उदात्त अनुदात्त और स्वरित का उच्चारण भिन्न २ नहीं होता और एक पक्ष में सब का भिन्न २ उच्चारण होता हैं। सो ये दो पक्ष तीन वेदों में घटते हैं। सामवेद में सर्वत्र तीनों स्वर भिन्न २ उच्चारण किये जाते हैं। क्योंकि "यज्ञकर्मण्यजप० १।२।३४। इस सूत्र से सामवेद में एक श्रुति होने का निषेध किया है। परन्तु जयादित्य पंडित ने यह बात नहीं जानी कि सामवेद में एक श्रुति स्वर नहीं होता। क्योंकि उन्होंने इस सूत्र के विकल्प में चारों वेदों के उदाहरण दिये हैं।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द जी का मत महर्षि पाणिनि के अनुसार निम्न हैं—१. यज्ञों में सस्वर मन्त्रोच्चारण न हो, (२) तीन वेदों के मन्त्रों का सामान्य उच्चारण सस्वर और एक श्रुति दोनों प्रकार कर सकते हैं (३) सामवेद के मन्त्रों का सदा सस्वर उच्चारण हो।

इस प्रकार वेद पाठ विधि और यज्ञों में मन्त्रोच्चारण पर ऋषियों की अनुमोदित प्रणालि के अनुसार स्वामी जी ने स्पष्ट भिन्न २ दो विधान किये हैं। तीन वेदों का सस्वर या एक श्रुति कैसा भी उच्चारण करें। परन्तु निम्न काल सम्बन्धी मात्रा पर अवश्य ध्यान दें।—

१. ऋग्वेद और अथर्ववेद के मन्त्रों का उच्चारण एक मात्रा काल।

२. यजुर्वेद का द्विमात्राकाल और सामवेद का गायन के एवं सामान्य स्वरों के साथ।

३. अर्थ एवं भाव ज्ञापक स्वर होते हैं महाभाष्यकार की इस युक्ति को स्वामी जी भी स्वीकार करते हैं अतः अर्थ एवं भावबोधक मन्त्रों के पाठ पर भी व्यवस्था देते हैं। "न सुब्रह्मण्यायां ॥१।२।३६ के अनुसार इन मन्त्रों का सस्वर पाठ आवश्यक बताते हैं। अतः "इमं मत्रं पत्नी पठेत्" आदि निर्देशों के बाद मन्त्रपाठ सस्वर करना चाहिए।

इस प्रकार स्पष्ट हैं—कि वेदपाठ में सस्वर उच्चारण-यदि छोड़ भी सकते हैं- तो-अर्थबोधक एवं निर्दिष्टभावबोधक मन्त्रों का उच्चारण सस्वर होना ही उचित है।

शतपथ की कंडिका की व्यवस्था के लिए नियम बना कर महर्षि पाणिनी सर्वत्र के लिए भी सामान्य नियम को बता देते हैं। स्वामी जी भी इसे स्वीकार करते हैं।

"यज्ञों में मन्त्रोच्चारण सस्वर होने चाहिए।" "जिस प्रकार वेदमन्त्र परमात्मप्रदत्त हैं, उसी प्रकार उनके स्वर भी परमात्मप्रदत्त हैं।" ये दोनों युक्ति पं० वीरसेन जी की है। इनमें स्वर और वेद के प्रति गहरी श्रद्धा है। पर वह सत्य पर आधारित नहीं है। यज्ञों में सस्वर मन्त्रपाठ आधुनिक रीति है। कुछ सस्वर पाठी विद्वान महर्षि पाणिनि को नहीं मानते, वे यज्ञों के ब्रह्मा सस्वर पाठ के कारण बनते हैं। यह शायद पद लोभ महर्षि का तिरस्कार है। दूसरी युक्ति साकार ईश्वरवादी है। उसे आर्य समाज कैसे माने? महर्षि दयानन्द जी ने सौवर लिखा—पर यह युक्ति नहीं दी। "उदात्तादि स्वरज्ञान के बिना अर्थ भ्रांति नहीं छूटती।" अर्थ बोध के लिए स्वरज्ञान पाणिनी की तरह स्वामी दयानन्द जी भी मानते हैं। शुद्ध और प्रिय उच्चारण गौण बात है।

—:०:—

॥ ओ३म् ॥

महर्षि दयानन्द और सस्वर मंत्रोच्चारण

(श्री वीरसेन जी वेदश्रमी, वेद सदन, महारानी रोड, इन्दौर)

सामान्य रूप से आर्य समाज में यह समझा जाता है कि महर्षि दयानन्द जी ने सस्वर वेद मन्त्र पाठ की आवश्यकता अनुभव नहीं की जिस से उन्होंने इस प्रणाली को अपनाने की ओर संकेत नहीं किया है अतः यह प्रणाली अनावश्यक है।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने "यज्ञकर्मण्य जपन्यूखसामसु" एवं "विभाषाछन्दसि" के भाष्य में सस्वर वेद पाठ की सर्वत्र अनिवार्यता का निषेध भी किया है! अतः केवल मात्र वेद मन्त्रों का उच्चारण एक श्रुति रूप में करना ही पर्याप्त और संगत है। तथा—

सृष्टि के आदि में परमात्मा ने वेद मन्त्र स्वर रहित दिये थे। स्वर बाद को ऋषियों ने लगा दिये हैं। यदि वेद मन्त्रों के साथ स्वर भी परमात्मा ने दिये हैं तो ईश्वर साकार हो जायगा जो कि हमारे सिद्धान्त के प्रतिकूल है।

इत्यादि कतिपय युक्तियां एवं विचार स्वर रहित वेद पाठ की अनिवार्यता के लिये प्रस्तुत की जाती हैं। परन्तु महर्षि दयानन्द जी के ग्रन्थों का अवलोकन किया जावे तो उपरोक्त धारणायें भ्रान्त ही प्रतीत होंगी।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी सर्वत्र ही सस्वर वेद पाठ के लिये लिखते हैं जैसाकि उन्होंने सौवर तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में "**दुष्टः शब्दः स्वरतो वर्णतो वा०**" का प्रमाण उद्धृत करके शुद्ध एवं सस्वर मन्त्रोच्चारण की अनिवार्यता प्रकट की है। सौवर की भूमिका में महर्षि अपना मत व्यक्त करते हैं। भूमिका में जो मत व्यक्त किया है वह उन का मत होने से तथा उसके अनुसार आचरण एवं व्यवहार करने का आदेश होने से वही पक्ष उनका है और हमें भी मान्य करना चाहिये। ऐसी स्थिति में अष्टाध्यायी या अन्य इसी प्रकार के ग्रन्थ में सूत्रों का भाष्य करते हुए किसी सूत्र में यदि पाणिनि का मत महर्षि के आदेश के विपरीत भी होगा तो भी हमें अर्थात् आर्यजनों को वही मत मान्य करना होगा जिसे महर्षि ने हमें मान्य करने का आदेश दिया है। अन्यथा नहीं।

उदाहरणार्थ—**"आपोजुषाणो वृष्णो वर्षिष्ठे"** सूत्र का भाष्य करते हुए सन्धिविषय में **"वर्षिष्ठे अधिना के"** यह उदाहरण लिखा है। सूत्र के अनुसार यही रूप होता है। यह तो सूत्र में प्रतिपादित शब्दों के अनुसार अर्थ ठीक है। परन्तु महर्षि इस प्रयोग को वेद में प्राचीन समय से यही पाठ ठीक है ऐसा मानते हैं और हमें भी मानना चाहिये ऐसा प्रतिपादन महर्षि के मत से अशुद्ध होगा। महर्षि यह पाठ नहीं मानते हैं और वेद में **"वर्षिष्ठेऽधिनाके"** इसी पाठ को लिखते हैं एवं मान्य करते हैं।

इसका तात्पर्य यह है कि किसी मानुषी ग्रन्थ का भाष्य करना पृथक् बात है। उसे भाष्य कर्ता का मत मान लेना यह असंगत है। भाष्य कर्त्ता उससे सहमत है या नहीं यह विषय पृथक् है। किसी सूत्र या श्लोक का भाष्य करते हुए जो लिखा जावेगा, वह उसी का मत

माना जावेगा न कि भाष्य कर्त्ता का। अतः इस भ्रान्ति में नहीं पड़ना चाहिये कि किसी सूत्र का अर्थ उसके शब्द से ही करना पड़ेगा और वह मत उस सूत्र या श्लोक कर्त्ता का होगा महर्षि ने का ऐसा भाष्य किया है तो वही उनका भी मत है यह तब तक नहीं माना जा सकता जब तक कि वह स्वयं अपने मत का निरुपण करते हुए उसको प्रमाण रूप में उपस्थितन करे। सस्वर मन्त्रोंच्चारण के प्रति महर्षि ने अपना मत सौवर की भूमिका में देते हुए सस्वर मन्त्रोच्चारण की अनिवार्यता के लिये **"दुष्टः शब्दः स्वरतो वर्णतो वा०"** को प्रमाण रूप में उपस्थित किया है अतः यही मत महर्षि का होने से हम सब को भी मान्य है।

यदि केवल अर्थ कर देने मात्र से अर्थकर्त्ता का मत मान लिया जावे तब तो यदि कोई हमारा शास्त्रार्थ महारथी कुरान की एक आयत का भाष्य करता है और उसमें खुदा सातवें आसमान में रहता है ऐसा कहता है तो क्या वह मत उस अर्थ करने वाले का भी हो गया? परन्तु यह नितान्त असंगत एवं भ्रान्ति युक्त होगा। अतः महर्षि ने जो अष्टाध्यायी का भाष्य किया है उसी के किसी अंश को लेकर उनका मत मान लेना असंगत है। वह मत पाणिनि का माना जा सकता है और यह बहुत अंशों में युक्ति युक्त भी हो सकता है, सर्वांश में नहीं। क्योंकि महामुनि पाणिनि ने उनके समय में प्रचलित वाङ्मय के व्याकरण को सूत्र बद्ध करने का प्रयत्न किया है।

महर्षि दयानन्द जी तो स्पष्ट सर्वत्र सस्वर वेद पाठ का ही प्रतिपादन करते हैं। यह प्रतिपादन उनके द्वारा रचित सिद्धान्त ग्रन्थ, कर्मकाण्ड के ग्रन्थ, वेदांग प्रकाश के ग्रन्थों की भूमिका तथा वेद भाष्य से ही ज्ञात होता।

सिद्धान्त प्रतिपादक ग्रन्थों में सत्यार्थ प्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका प्रमुख हैं। परन्तु इन दोनों में सस्वर वेद पाठ का कहीं भी निषेध नहीं किया है। न उस प्रकार की 'एकश्रुति' का ही विधान किया है जिसको कुछ व्यक्ति स्वच्छन्द पाठ या अशुद्ध पाठ में प्रयुक्त करते हैं। सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में **"इमं मन्त्रं पत्नी पठेत्"** को प्रमाण रूप में उद्धृत करते हुये महर्षि लिखते हैं कि **"जो (स्त्रियां) वेदादि शास्त्रों को न पढ़ी होवें तो यज्ञों में स्वर सहित मन्त्रों का उच्चारण और संस्कृत भाषण कैसे कर सकें"**। यह वाक्य स्पष्ट प्रतिपादन कर रहा है कि महर्षि यज्ञों में सस्वर वेद पाठ को आवश्यक ही मानते हैं।

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के वेद विषयक प्रकरण में सस्वर उच्चारण की अनिवार्यता को प्रकट करने के लिये **यथेन्द्रशत्रुः स्वर तो पराधात्"** का प्रमाण दिया है। इतने पर भी "विभाषा छन्दसि" या "यज्ञकर्मण्य जपन्यूख सामसु" को महर्षि का मत प्रकट करना, महर्षि के मत की अवहेलना ही है। महर्षि ने वहां विकल्प वृत्ति या अन्यथा रूप से समझी जाने वाली एकश्रुति पाठ का भी प्रतिपादन नहीं किया है।

वेदांग प्रकाश के ग्रन्थों में विशेष रूप से सौवर ग्रन्थ की भूमिका में महर्षि ने अत्यन्त बल पूर्वक सस्वर वेद मन्त्र पाठ के ही पक्ष को मान्य किया है और इसके विपरीत पाठ को त्याज्य माना है जैसा कि निम्न वाक्य से स्पष्ट है—

(१) **"उदात्तादि स्वर बोध के बिना वेद मन्त्रों का गान और उच्चारण भी यथार्थ नहीं हो सकता (सौवरः)।**

(२) "इसी प्रकार वेदादि ग्रन्थों में भी स्वर और वर्णों का उच्चारण यत्न से होना चाहिये और जो उलटा उच्चारण किया जाता है वह दुःख देने वाला और झूठ समझा जाता है।" (सौवरः)

कर्मकाण्ड के ग्रन्थ संस्कार विधि में लिखा है कि—"जैसा कि जिस वेद का उच्चारण है करे।" यह वाक्य वेदों के पृथक पृथक उच्चारण से सम्बन्धित है और पृथक पृथक वेद से पृथक पृथक उच्चारण का विधान ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में बताया हुआ है। किन्हीं व्यक्तियां ने महर्षि की उक्त भाषा परिवर्त्तित करके जनता में प्रस्तुत की है। यह कार्य अनुचित है। उन्होंने "जैसा कि जिस वेद का उच्चारण है करे" के स्थान पर "जैसा कि जिस वेद का उच्चारण हो वैसा करे" ऐसा छाप दिया है।

वेद भाष्य के अवलोकन से प्रतीत होता है कि ऋग्वेद के भाष्य में महर्षि लिखते है कि:—

"विद्वद्भिर्विद्या प्रचाराय सर्वेभ्यो मनुष्येभ्यो नित्यं सांगाः सार्थाः सरहस्याः सस्वर हस्तक्रिया वेदा उपदेष्टव्याः"

यहां पर सस्वर वेद के नित्य ही उपदेश के लिये महर्षि ने लिखा है। नित्य को क्या अनित्य और विकल्प भी माना जाना उचित एवं संगत हो सकेगा ?

यह सोचना कि केवल अर्थ प्रदर्शन के लिये ही स्वरों का उपयोग है ऐसा महर्षि का मत तो यज्ञादि में स्वर रहित मन्त्रों के पाठ से उनकी अर्थहीनता प्रकट होगी। अर्थ हीन मन्त्रों का यज्ञ में प्रयोग करके किस फल की प्राप्ति होगी? इसलिये यही मान कर चलना होगा कि यज्ञों में मन्त्रोच्चारण अर्थ शून्य नहीं सार्थक ही होना चाहिये और अर्थ के द्योतनार्थ सस्वर मन्त्र पाठ ही करना चाहिये।

अर्थ मात्र या भाव बोधन के लिए ही सस्वर मन्त्रों का उच्चारण हो अन्यत्र न हो यह कल्पना भी तो "विभाषा छन्दसि" से विपरीत है। विकल्प ऐच्छिक होता है। उस दशा में स्वर रहित मन्त्रों से अर्थ बोध न होने से विकल्प निरर्थक हो जायगा।

महर्षि दयानन्द ने ईश्वर-स्तुति-प्रार्थनोपासना के मन्त्रों को अर्थ पाठ सहित पढ़ने का संस्कारों में लिखा है। ऐसी दशा में जो स्वरों को केवल अर्थ प्रदर्शन के लिए मानते हैं उन्हें विश्वानिदेव० इत्यादि प्रार्थना के मन्त्र सस्वर ही उच्चारण करने पड़ेंगे। पुनः वहीं "विभाष छन्दसि" की विकल्प वृत्ति की हानि होगी और एक श्रुति का वहां फल अर्थ के उद्बोधन के लिए नहीं होगा। अतः ऐसी समस्त युक्तियां भ्रान्त एवं त्याज्य हैं। इससे यही सिद्ध होता है कि महर्षि सस्वर वेदपाठ को सर्वत्र ही मानते हैं और उन्होंने इस विषय में पाणिनि के मत को मान्य नहीं किया है। अन्य भी ऐसे अनेक सूत्र हैं जिनके अनुसार महर्षि का यही मत प्रकट होता है कि वे कर्मकाण्ड में महर्षि पाणिनि के मत का पूर्णरूप से अनुसरण नहीं करते हैं और न ऐसा करने का आदेश ही देते हैं।

कुछ लोग एक श्रुति के अर्थ को न समझ कर जनता में यह भ्रम फैलाते हैं कि जैसा मन में आवे वैसे मन्त्रों का उच्चारण करना ठीक है परन्तु सस्वर मन्त्रोच्चारण ठीक नहीं। उन्हें यह समझना चाहिए कि एकश्रुति, स्वच्छन्द पाठ या गड़बड़ पाठ का नाम नहीं है अपितु वह तो

स्वरित का एक भेद ही हैं। यही मत महर्षि दयानन्द जी और याज्ञवल्क्य महर्षि का है।

इसी प्रकार यह युक्ति भी बड़ी हास्यास्पद है कि यदि वेदमन्त्रों के स्वर भी परमात्मा ने दिये है तो परमात्मा साकार मानना पड़ेगा। इसका तात्पर्य यह हुआ कि वेद मन्त्रों के स्वर बाद को ऋषियों ने लगाये हैं तथा अब भी उनको बदला जा सकता है। आर्यवैदिक विद्वान् तो ऐसा नहीं मानते हैं और न प्राचीन ऋषि ही ऐसा मानते हैं। महर्षि पतंजलि इस विषय में लिखते हैं:—

"स्वरो नियत आम्नाये "वर्णानुपूर्वी खल्वप्याम्नाये नियता" अर्थात् वेद मन्त्रों का यथावत् क्रम और उनके स्वर नियत ही हैं। जब वेद मन्त्रों के स्वर नित्य ही है या नियत ही हैं तो उन स्वरों के साथ ही मन्त्रों का देने वाला परमात्मा ही हुआ। इसमें ईश्वर की साकारता की कल्पना कहां आ जाती है।

इन बातों से प्रकट होता है कि महर्षि सस्वर वेद पाठ को सर्वत्र मानते हैं और उसी के अनुसार व्यवहार करने का हमें भी आदेश दिया है और यही मत प्राचीन ऋषियों का भी है।

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट-टंकारा

दान सूची

१०) श्री विद्याप्रसाद जी आर्य, बरौली
१०) ,, जगदीश जी विद्यार्थी देहली
१०) ,, महाशय उदयसिंह जी ,,
१०) ,, रत्नसिंह जी ,,
१०) ,, भगवानदास बुक बाइन्डर ,,
१०) ,, मती यशोदा देवी गोविन्दराम देहली

दस दस रुपये की छपी हुई रसीदें वेदप्रकाश कार्यालय में आई हुई हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त को कम से कम एक रसीद अवश्य लेनी चाहिए।

—गोविन्दराम हासानन्द ४४०८ नई सड़क देहली

पं० सिद्धगोपाल साहित्य वाचस्पति
की

सुप्रसिद्ध पुस्तक
बहिनों की बातें
का
पुरुष वर्ग के लिए रूपांतर

प्रकाशित हो गई

"बहिनों की बातें" का आर्य जगत् ने अच्छा स्वागत किया था। विद्वानों ने मुक्त कंठ से इसकी प्रसंशा की थी। कन्या पाठशालाओं और गुरुकुलों के पाठ्य क्रम में निर्धारित रहती है। इसके आठ संस्करण प्रकाशित हो चुका हैं इसी पुस्तक को पुलिंग में संशोधित करके पुरुष वर्ग के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं।

लड़कों को पुरस्कार में देने योग्य और उनको पाठ्यक्रम में पढ़ाने योग्य पुस्तक है। आज ही मंगावें। मूल्य १।)

गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, देहली

यजुर्वेद के ४० वें अध्याय का स्वाध्याय

(ईशोपनिषद्)

(भाष्यकार :—महर्षि दयानन्द सरस्वती)

ईशावास्यमित्यस्य दीर्घतमा ऋषिः । आत्मा देवता । अनुष्टुप्छन्द : धैवतः स्वरः ॥

अब चालीसवें अध्याय का आरम्भ है इसके प्रथम मन्त्र में मनुष्य ईश्वर को जानके क्या करें इस वि० ॥

ईशा वास्यमिदꣳ सर्वं यत्किं च जगत्यां जगत् । तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ॥ १ ॥

पदार्थः—हे मनुष्य ! तू (यत्) जो (इदम्) प्रकृति से लेकर पृथिवीपर्य्यन्त (सर्वम्) सब (जगत्याम्) प्राप्त होने योग्य सृष्टि में (जगत्) चरप्राणीमात्र (ईशा) सम्पूर्ण ऐश्वर्य से युक्त सर्वशक्तिमान् परमात्मा से (वास्यम्) आच्छादन करने योग्य अर्थात् सब ओर से व्याप्त होने योग्य है (तेन) उस (त्यक्तेन) त्याग किये हुए जगत् से (भुञ्जीथाः) पदार्थों के भोगने का अनुभव कर किन्तु (कस्य, स्वित्) किसी के भी (धनम्) वस्तुमात्र की (मा) मत (गृधः) अभिलाषा कर ॥१॥

भावार्थः—जो मनुष्य ईश्वर से डरते हैं कि यह हम को सदा सब ओर से देखता है यह जगत् ईश्वर से व्याप्त और सर्वत्र ईश्वर विद्यमान है इस प्रकार व्यापक अन्तर्यामी परमात्मा का निश्चय करके भी अन्याय के आचरण से किसी का कुछ भी द्रव्य ग्रहण नहीं किया चाहते वे धर्मात्मा होकर इस लोक के सुख और परलोक में मुक्तिरूप सुख को प्राप्त करके सदा आनन्द में रहें ॥१॥

कुर्वन्नित्यस्य दीर्घतमा ऋषिः । आत्मा देवता । भुरिगनुष्टुप छन्दः । धैवतः स्वरः ॥

अब वेदोक्त कर्म की उत्तमता अ० ॥

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳ समाः । एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥२॥

पदार्थः—मनुष्य (इह) इस संसार में (कर्माणि) धर्मयुक्त वेदोक्त निष्काम कर्मों को (कुर्वन्) करता हुआ (एव) ही (शतम्) सौ (समाः) वर्ष (जिजीविषेत्) जीवन की इच्छा करे (एवम्) इस प्रकार धर्मयुक्त कर्म में प्रवर्त्तमान (त्वयि) तुझ (नरे) व्यवहारों को चलाने हारे जीवन के इच्छुक होते हुए (कर्म) अधर्मयुक्त अवैदिक काम्य कर्म (न) नहीं (लिप्यते) लिप्त होता (इतः) इस से जो और प्रकार से (न, अस्ति) कर्म लगाने का अभाव नहीं होता है ॥२॥

भावार्थः—मनुष्य आलस्य को छोड़ के सब देखने हारे न्यायाधीश परमात्मा और करने योग्य उसकी आज्ञा को मानकर शुभ कर्मों को छोड़ते हुए ब्रह्मचर्य के सेवन से विद्या और अच्छी शिक्षा को पाकर उपस्थ इन्द्रिय के रोकने से पराक्रम को बढ़ाकर अल्पमृत्यु को हटावें, युक्त आहार विहार से सौ वर्ष की आयु को प्राप्त होवें जैसे २ मनुष्य सुकर्मों में चेष्टा करते हैं वैसे २ ही पापकर्म से बुद्धि की निवृत्ति होती और विद्या, अवस्था और सुशीलता बढ़ती है ॥२॥

असुर्य्या इत्यस्य दीर्घतमा ऋषिः । आत्मा देवता । अनुष्टुप् छन्दः । गान्धारः स्वरः ॥

अब आत्मा के हननकर्ता अर्थात् आत्मा को भूले हुए जन कैसे होते हैं इस वि० ॥

असुर्या नाम ते लोका ऽ अन्धेन तमसावृताः । ताँस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः ॥३

पदार्थः—जो (लोकाः) देखने वाले लोग (अन्धेन) अन्धकाररूप (तमसा) ज्ञान का श्रवण करने हारे अज्ञान से (आवृताः) सब ओर से ढंपे हुए (च) और (ये) जो (के) कोई (आत्महनः) आत्मा के विरुद्ध आचरण करने हारे (जनः) मनुष्य हैं (ते) वे (असुर्य्याः) अपने प्राण पोषण में तत्पर अविद्यादि दोषयुक्त लोगों के सम्बन्धी उनके पाप कर्म करने वाले (नाम) प्रसिद्ध में होते हैं (ते) वे (प्रेत्य) मरने के पीछे (अपि) और जीते हुए भी (तान्) उन दुःख और अज्ञानरूप अन्धकार से युक्त भोगों को (गच्छन्ति) प्राप्त होते हैं ॥३॥

भावार्थः—वे ही मनुष्य असुर, दैत्य, राक्षस तथा पिशाच आदि हैं जो आत्मा में और जानते वाणी से और बोलते और करते कुछ और ही हैं वे कभी अविद्यारूप दुःखसागर से पार हो आनन्द को नहीं प्राप्त हो सकते । और जो आत्मा मन वाणी और कर्म निष्कपट एकसा आचरण करते हैं वे ही देव आर्य्य सौभाग्यवान् सब जगत् को पवित्र करते हुए इस लोक और परलोक में अतुल सुख भोगते हैं ॥३॥

अनेजदित्यस्य दीर्घतमा ऋषिः । ब्रह्म देवता । निचृत्त्रिष्टुप्छन्दः धैवतः स्वरः ॥
कैसा जन ईश्वर को साक्षात् कहता है इस वि० ॥

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवा ऽ आप्नुवन्पूर्वमर्शत् । तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति ॥ ४ ॥

पदार्थः—हे विद्वान मनुष्यो ! जो (एकम्) अद्वितीय (अनेजत्) नहीं कंपने वाला अर्थात् अचल अपनी अवस्था से हटना कंपन कहाता है उससे रहित (मनसः) मन के वेग से भी (जवीयः) अति वेगवान् (पूर्वम्) सब से आगे (अर्षत्) चलता हुआ अर्थात् जहां कोई चलकर जावे वहां प्रथम ही सर्वत्रव्याप्ति से पहुँचता हुआ ब्रह्म है (एनत्) इस पूर्वोक्त ईश्वर को (देवाः) चक्षु आदि इन्द्रिय (न) नहीं (आप्नुवत्) प्राप्त होते (तत्) वह परब्रह्म अपने आप (तिष्ठत्) स्थिर हुआ अपनी अनन्त व्याप्ति से (धावतः) विषयों की ओर गिरते हुए (अन्यान्) आत्मा के स्वरूप से विलक्षणमन वाणी आदि इन्द्रियों का (अति, एति) उल्लंघन कर जाता है (तस्मिन्) उस सर्वत्र अभिव्याप्त ईश्वर की स्थिरता में (मातरिश्वा) अन्तरिक्ष में प्राणों को धारण करने हारे वायु के तुल्य जीव (अपः) कर्म व क्रिया को (दधाति) धारण करता है यह जानो ॥४॥

भावार्थः—ब्रह्म के अनन्त होने से जहां २ मन जाता है वहां २ प्रथम से ही अभिव्याप्त पहिले से ही स्थिर ब्रह्म वर्तमान है उसका विज्ञान शुद्ध मन से होता है चक्षु आदि इन्द्रियों और अविद्वानों से देखने योग्य नहीं है। वह आप निश्चल हुआ सब जीवों को नियम से चलाता और धारण करता है । उसके अति सूक्ष्म इन्द्रियगम्य न होने के कारण धर्मात्मा विद्वान् योगी को ही उसका साक्षात् ज्ञान होता है अन्य को नहीं ॥४॥

तदेजीतत्यस्य दीर्घतमा ऋषिः । आत्मा देवता । निचृदनुष्टुप्छन्दः । गान्धारः स्वरः ॥

विद्वानों के निकट और अविद्वानों के ब्रह्म दूर है इस वि० ॥

तदेंजति तन्नैजंति तद्दूरे तद्वंन्तिके । तदुन्तरंस्य सर्वस्य तदु सर्वंस्यास्य बाह्यतः ॥ ५ ॥

पदार्थः—हे मनुष्यो ! (तत्) वह ब्रह्म (एजति) मूर्खों की दृष्टि से चलायमान होता (तत्) (न, एजति) अपने स्वरूप से न चलायमान और न चलाया जाता (तत्) वह (दूरे) अधर्मात्मा अविद्वान् अयोगियों से दूर अर्थात् करोड़ों वर्ष में भी प्राप्त नहीं होता (तत्) वह (उ) ही (अन्तिके) धर्मात्मा विद्वान् योगियों के समीप (तत्) वह (अस्य) इस (सर्वस्य) सब जगत् वा जीवों के (अन्तः) भीतर (उ) और (तत्) वह (अस्य, सर्वस्य) इस प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप जगत् के (बाह्यतः) बाहर भी वर्तमान है ॥५॥

भावार्थः—हे मनुष्यो ! वह ब्रह्म मूढ़ की दृष्टि में कम्पता जैसा है वह आप व्यापक होने से कभी नहीं चलायमान होता जो जन उसकी आज्ञा से विरुद्ध हैं वे इधर उधर भागते हुए भी उसको नहीं जानते और जो ईश्वर की आज्ञा का अनुष्ठान करने वाले हैं वे अपने आत्मा में स्थित अति निकट ब्रह्म को प्राप्त होते हैं जो ब्रह्म सब प्रकृति आदि के बाहर भोतर अवयवों में अभिव्याप्त हो के अंतर्यामिरूप से सब जीवों के सब पाप पुण्यरूप कर्मों को जानता हुआ यथार्थ फल देता है वही सब को ध्यान में रखना चाहिये और उसी से सब को डरना चाहिये ॥५॥

यस्त्वित्यस्य दीर्घतमा ऋषिः । आत्मा देवता । निचृदनुष्टुप्पछन्दः । गान्धारः स्वरः ॥
अब ईश्वर वि० ॥

यस्तु सर्वांणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यंति । सर्वंभूतेषुं चात्मानं ततो न वि चिंकित्सति ॥ ६ ॥

पदार्थः—हे मनुष्यो ! (यः) जो विद्वान् जन (आत्मन्) परमात्मा के भीतर (एव) ही (सर्वाणि) सब (भूतानि) प्राणी अप्राणियों को (अनु) (पश्यति) विद्या धर्म और योगाभ्यास करने पश्चात् ध्यान दृष्टि से देखता है (तु) और जो (सर्वभूतेषु) सब प्रकृत्यादि पदार्थों में (आत्मानम्) आत्मा को (च) भी देखता है वह विद्वान् (ततः) जिस पीछे (न) नहीं विचिकित्सति) संशय को प्राप्त होता ऐसा तुम जानो ॥६॥

भावार्थः—हे मनुष्यो ! जो लोग सर्वव्यापी न्यायकारी सर्वज्ञ सनातन सब के आत्मा अन्तर्यामी सब के द्रष्टा परमात्मा को जानकर सुख दुःख हानि लाभों में अपने आत्मा के तुल्य सब प्राणियों को जानकर धार्मिक होते हैं वे ही मोक्ष को प्राप्त होते हैं ॥६॥

यस्मिन्नित्यस्य दीर्घतमा ऋषिः । आत्मा देवता । निचृदनुष्टुप्छन्दः । गान्धारः स्वरः॥
अब कौन अविद्यादि दोषों को त्यागते हैं इस वि० ॥

यस्मिुन्त्सर्वांणि भूतान्यात्मैवाभूंद्विजानतः । तत्र को मोहुः कः शोकं ऽ एकुत्वमंनुपश्यंतः ॥ ७ ॥

पदार्थः—हे मनुष्यो ! (यस्मिन्) जिस परमात्मा, ज्ञान, विज्ञान वा धर्म में (विजानतः) विशेष कर ध्यान दृष्टि से देखते हुए को (सर्वाणि) सब (भूतानि) प्राणीमात्र (आत्मा, एव) अपने तुल्य ही सुख दुःख वाले (अभूत) होते हैं (तत्र) उस परमात्मा आदि में (एकत्वम्) अद्वितीय भाव को (अनु, पश्यतः) अनुकूल योगाभ्यास से साक्षात् देखते हुए योगी जन को (कः) कौन (मोहः) मूढ़ावस्था और (कः) कौन (शोकः) शोक वा क्लेश होता है ? अर्थात् कुछ भी नहीं ॥७॥

भावार्थः—जो विद्वान् संन्यासी लोग परमात्मा के सहचारी प्राणिमात्र को अपने आत्मा के तुल्य जानते हैं अर्थात् जैसे अपना हित चाहते वैसे ही अन्यों में भी वर्तते हैं। एक अद्वितीय परमेश्वर के शरण को प्राप्त होते हैं उनको मोह शोक और लोभादि कदाचित् प्राप्त नहीं होते। और जो लोग अपने आत्मा को यथावत् जान कर परमात्मा को जानते हैं वे सुखी सदा होते हैं ॥ ७ ॥

स पर्य्यगादित्यस्य दीर्घतमा ऋषिः। आत्मा देवता। स्वराड्जगती छन्दः। निषादः स्वरः ॥

फिर परमेश्वर कैसा है इस वि० ॥

स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳ शुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥ ८ ॥

पदार्थः—हे मनुष्यो! जो ब्रह्म (शुक्रम्) शीघ्रकारी सर्वशक्तिमान् (अकायम्) स्थूल सूक्ष्म और कारण से रहित (अव्रणम्) छिद्ररहित और नहीं छेद करने योग्य (अस्नाविरम्) नाड़ी आदि के साथ सम्बन्ध रूप बन्धन से रहित (शुद्धम्) अविद्यादि दोषों से रहित होने से सदा पवित्र और (अपापविद्धम्) जो पापयुक्त पापकारी और पाप में प्रीति करने वाला कभी नहीं होता (परि,-अगात्) सब ओर से व्याप्त है जो (कविः) सर्वत्र (मनीषी) सब जीवों के मनों की वृत्तियों को जानने वाला (परिभूः) दुष्ट पापियों का तिरस्कार करने वाला और (स्वयम्भूः) अनादि-स्वरूप जिस की संयोग से उत्पत्ति वियोग से विनाश माता पिता गर्भवास जन्म वृद्धि और मरण नहीं होते वह परमात्मा (शाश्वतीभ्यः) सन्तान अनादिस्वरूप अपने २ स्वरूप से उत्पत्ति और विनाश रहित (समाभ्यः) प्रजाओं के लिये (याथातथ्यतः) यथार्थ भाव से (अर्थान्) वेद द्वारा सब पदार्थों को (व्यदधात्) विशेष कर बनाता है वही परमेश्वर तुम लोगों को उपासना करने के योग्य है ॥८॥

भावार्थः—हे मनुष्यो! जो अनन्तशक्ति युक्त अजन्मा निरन्तर सदामुक्त न्यायकारी निर्मल, सर्वज्ञ, सब का साक्षी नियन्ता अनादि स्वरूप ब्रह्म कल्प के आरम्भ में जीवों को अपने कहे वेदों से शब्द अर्थ और उनके सम्बन्ध को जनाने वाली विद्या का उपदेश न करे तो कोई विद्वान् न होवे और धर्म अर्थ काम और मोक्ष के फलों के भोगने को समर्थ हो इसलिये इसी ब्रह्म की सदैव उपासना करो ॥८॥

अन्धन्तम इत्यस्य दीर्घतमा ऋषिः। आत्मा देवता। अनुष्टुप्छन्दः। गान्धारः स्वरः ॥

कौन मनुष्य अन्धकार को प्राप्त होते हैं इस वि०॥

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते। ततो भूयऽइव ते तमो यऽउ सम्भूत्याꣳ रताः ॥ ९ ॥

पदार्थः—(ये) जो लोग परमेश्वर को छोड़ कर (असम्भूतिम्) अनादि अनुत्पन्न सत्व रज और तमोगुणमय प्रकृतिरूप जड़ वस्तु को (उपासते) उपास्यभाव से जानते हैं वे (अन्धम्, तमः) आवरण करने वाले अन्धकार को (प्रविशन्ति) अच्छे प्रकार प्राप्त होते और (ये) जो (सम्भूत्याम्) महत्तत्वादि स्वरूप से परिणाम को प्राप्त हुई सृष्टि में (रताः) रमण करते हैं (ते) वे (उ) वितर्क के साथ (ततः) उससे (भूय, इव) अधिक जैसे वैसे (तमः) अविद्यारूप अन्धकार को प्राप्त होते हैं ॥९॥

भावार्थः—जो मनुष्य समस्त जड़ जग के अनादि नित्य कारण को उपासना भाव से स्वीकार करते हैं वे अविद्या को प्राप्त होकर क्लेश को प्राप्त होते और जो उस कारण से उत्पन्न स्थूल सूक्ष्म कार्य कारणाख्य अनित्य संयोगजन्य कार्य जगत् को इष्ट उपास्य मानते हैं वे गाढ़ अविद्या को पाकर अधिकतर क्लेश को प्राप्त होते हैं इसलिये सच्चिदानन्दस्वरूप परमात्मा की ही सब सदा उपासना करें ॥९॥

दीपावली के उपलक्ष में प्रचारार्थ विद्वानों के ट्रैक्ट मंगावें

प्रत्येक का मूल्य -) सैकड़ा ४)

१ मनुष्य बन—ले० स्वामी वेदानन्द सरस्वती ।
२ गायत्री माता—जगदीशचन्द्र विद्यार्थी ।
३ ईश्वर सिद्धि—पं० रामचन्द्र जी देहलवी ।
४ आस्तिक नास्तिक संवाद—महर्षि दयानन्द ।
५ पितृ श्राद्ध विचार—स्वामी दर्शनानन्द ।
६ सुख का साधन—महात्मा आनन्द स्वामी ।
७ ईश्वरोपासना—पं० रामचन्द्र जी देहलवी ।
८ कल्याणी बन—पं० गणेशदत्त 'इन्द्र' ।
९ आर्यों का आदि देश—काशी नाथ जी शास्त्री ।
१० धर्म और अधर्म—पं० रामचन्द्र देहलवी ।
११ स्वामी श्रद्धानन्द—रामगोपाल विद्यालंकार ।
१२ तत्ववेत्ता दयानन्द—स्वामी श्रद्धानन्द जी ।
१३ पं० लेखराम—रामगोपाल जी विद्यालंकार ।
१४ सीता माता—सरस्वती देवी 'प्रभाकर' ।
१५ गौ माता—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
१६ दयानन्द दिग्विजय—श्री हरिशंकर जी शर्मा कविरत्न
१७ चोटी का महत्व—पं० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री ।
१८ गुरु विरजानन्द—रामगोपाल विद्यालंकार ।
१९ मांस खाना छोड़ दो—पायथा गोरस ।
२० मर्यादा पुरुषोत्तम राम—प्रहलाद 'प्रभाकर' ।
२१ देश सुधार होली—अंगनलाल आर्य ।
२२ मूर्तिपूजा विचार—महर्षि दयानन्द ।
२३ भक्ति के लाभ—आचार्य प्रियव्रत ।
२४ आर्य समाज के उद्देश्य—जगदीशचन्द्र ।
२५ वेदमाता ।
२६ श्रद्धामाता ।
२७ धरती माता ।
२८ धर्म की रक्षा करो—ब्र० प्रभुदत्त जी ।
२९ मनुष्य के कर्तव्य—म० नारायण स्वामी ।
३० सत्संग भजन ।
३१ ऋषि दयानन्द कृत वेदभाष्य का महत्व ।
३२ गोपाल दयानन्द ।
३३ भक्तिवाद की रूपरेखा ।
३४ वैदिक भक्तिवाद ।
३५ अंग्रेजी शिक्षा से हानि ।
३६ सत्य की महिमा—स्वामी सर्वदानन्द ।
३७ आर्य समाज की उन्नति का साधन श्री लालचन्द जी
३८ श्यामाप्रसाद मुकर्जी—श्री प्रेमचन्द ।
३९ वैदिक काल में तोप बन्दूक—शिव पूजन सिंह ।
४० पतिव्रत धर्म—एक विदूषी महिला ।
४१ ब्राह्मण समाज और मूर्ति पूजा—राजेन्द्र जी ।
४२ ईश्वरोपासक दयानन्द—भगवत शरण बी. ए. ।
४३ ईश्वरावतार—स्वामी नित्यानन्द जी ।
४४ कर्मयोगी श्री कृष्ण—प्रेमचन्द ।
४५ ईसाइयों का भयंकर षड़यन्त्र ।
४६ सामाजिक व्यवहार—श्री लालचन्द जी ।
४७ शिक्षा का उद्देश्य—श्री पूर्णचन्द जी ।
४८ ब्रह्मचर्य—जगदीशचन्द्र जी विद्यार्थी ।
४९ वर्ण व्यवस्था—स्वामी दर्शनानन्द ।
५० कर्मव्यवस्था " "
५१ वेदज्ञान—विष्णु दयाल जी ।
५२ तुलसी रामायण और आर्य समाज ।
५३ सत्य की खोज—काशीनाथ शास्त्री ।
५४ मुर्दा क्यों जलावें—प्रेम शरण जी ।
५५ स्वामी दयानन्द का उद्देश्य—स्वामी दर्शनानन्द ।
५६ स्वामी दयानन्द का लक्ष्य— "
५७ ब्राह्मण समाज और मृतक श्राद्ध—पं० राजेन्द्र जी ।
५८ श्रेय और प्रेय—प्रि. नित्यानन्द जी एम. ए. ।
५९ सच्ची पूजा—स्वामी सर्वदानन्द जी ।
६० झांसी वाली रानी ।
६१ महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त-रविवर्मा सि. शास्त्री ।
६२ जीवन की समस्यायें—पं० रामचन्द्र देहलवी ।
६३ देवताओं की कहानी—कैलाश बिहारी ।
६४ रोटी और कपड़ा—प्रेमकुमार पाण्डेय ।
६५ धूम्रपान— " "
६६ सिनेमा और हम— " "
६७ दयानन्द कौन—देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ।
६८ कृण्वन्तोस्वयमार्यम—प्रेमकुमार पाण्डेय ।
६९ चाय भयंकर विष—जगदीश चन्द्र ।
७० मुझे मेरा धर्म क्यों प्यारा है—ज. विद्यार्थी
७१ ईश्वर सब जगह है—विष्णु दयाल जी ।
७२ ईश्वर में अविश्वास क्यों—रामचन्द्र देहलवी ।
७३ चरित्र निर्माण—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
७४ यज्ञोपवीत महत्व—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
७५ सूर्य और चन्द्र ग्रहण—हरिदेव शास्त्री ।
७६ नास्तिकों को सन्देश—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
७७ वैदिक धर्म ही क्यों—हरिदेव शास्त्री ।
७८ विद्यार्थी और सदाचार—पं० रामचन्द्र देहलवी

गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क देहली—६

कृषि सम्बन्धी देहात-सुधारक पुस्तकें

१. आधुनिक कृषि विज्ञान	६)	३२. तम्बाकू की खेती	॥)
२. आलू की खेती	।॥)	३३. पपीते की खेती	१॥)
३. टमाटर की खेती	॥)	३४. खेती बाड़ी	१॥)
४. गोभी की खेती	॥)	३५. फलों की खेती	३॥)
५. जीरा, धनियाँ, अजवायन	।॥)	३६. तरकारी सागभाजी खेती	३॥)
६. तरकारियों की खेती	१॥)	३७. खेती और ट्रैक्टर	६)
७. अच्छे बीज	।॥)	३८. किचन गार्डन	१।॥)
८. अच्छी खाद	२॥)	३९. ट्यूब वैल गाइड	३॥)
९. कपास की खेती	१)	४०. ट्रैक्टर प्राइमर	१)
१०. फूल फुलवारी	२॥)	४१. पशुओं का इलाज	६)
११. गन्ने की खेती	।॥)	४२. पोल्ट्री फार्मिंग	४)
१२. धान की खेती	१॥)	४३. कमर्शियल पोल्ट्री	४)
१३. सन्तरे की बागवानी	२॥)	४४. पोल्ट्री सर्जन	४)
१४. आम की बागवानी	३)	४५. फल संरक्षण	२॥)
१५. तिलहन की खेती	।॥=)	४६. मकई (मक्का) खेती	१)
१६. सोयाबीन खिसारी	।)	४७. खीरा तरबूज की खेती	१॥)
१७. खेती की तैयारी	२।)	४८. चाय की बागवानी	१॥)
१८. फसल रक्षक औषधियां	२।)	४९. अफीम की खेती	१॥)
१९. फलव्याधियों की रोकथाम	१॥)	५०. किसानी लोक कथायें	२॥)
२०. उन्नत सिंचाई	२)	५१. कलम पैबन्द लगाना	१॥)
२१. भारतीय कृषि कहावतें	४)	५२. हल्दी की खेती	१॥)
२२. गेहूं की खेती	३)	५३. कत्थे की खेती	१॥)
२३. लाख की खेती	।॥=)	५४. पान की खेती	१॥)
२४. प्याज खेतीकी खेती	१।)	५५. चने की खेती	१॥)
२५. जौ की खेती	।॥=)	५६. बाजरे की खेती	१॥)
२६. मेंहदी की खेती	।॥)	५७. मटर की खेती	१॥)
२७. नीबू सन्तरा माल्टा	२।)	५८. हैण्डबुक ऑफ पोल्ट्री	१०)
२८. मूंगफली की खेती	१)	५९. खेती और बागवानी	३)
२९. मिर्च की खेती	१।)	६०. तोरी लौकी की खेती	१॥)
३०. बीज की तैयारी	१॥)	६१. खीरा ककड़ी तरबूज खरबूजे की खेती	१॥)
३१. मसालों की खेती	२)		

गवर्नमेंट एग्रीकल्चर इन्स्टीट्यूटों, ग्राम पंचायतों, स्कूलों लाइब्रेरियों। पुस्तकालयों ... सैन्टरों तथा अधिकांश सरकारी लाइब्रेरियों संस्थाओं में खरीदा जाने वाला कृषि सम्बन्धी

६१ पुस्तकों का सैट

वैज्ञानिक ढंग से अधिक खेती करके सरकारी इनाम प्राप्त करें

फलों की खेती (फलदार बागवानी) ले० राजेश गुप्त जिसमें हर प्रकार के फलदार पेड़ों जैसे आम, अमरूद, शहतूत, लौंकाट, संतरा आदि सैकड़ों फलों के पेड़ों को लगाने के तथा उनसे अधिक फल पैदा करने के साइन्टिफिक ढंग लिखे गए हैं, मू० ३॥) साढ़े तीन रु० डाक व्यय १)

अपने बंगले, कोठी, गुवाड़, खेत इत्यादि
हरी और ताजा सब्जी पैदा करें

साग भाजी की खेती

(लेखक राजेश गुप्त)

जिसमें देशी तथा विदेशी दोनों प्रकार की तरकारियों का बोना, जमीन की जाँच करना खाद से ज्यादा फसल तैयार करना बिना मौसम की तरकारी पैदा करने के साइन्टिफिक नियम फसलव्याधियों की रोक थाम के तरीके और हरप्रकार की सब्जी जैसे आलू, अदरक, अरबी, टिन्डे, बाकला, सीताफल, (पेठा) बन्दगोभी, मूली, बैंगन, भिन्डी, तोरी, घिया, प्याज, पालक, पोदीना टमाटर, धनियाँ खीरा, ककड़ा, तरबूज, फूल गोभी, चुकन्दर, खरबूजा, जीरा, सिंघाड़ा, सौंफ, अजवायन, सेम शरदा शलगम, सकरकंदी, करेला आदि सब्जी बोना और उसके लिए पूरी बातें इस पुस्तक म पढ़कर चाहे चाहे आप खेती करिये या माली को समझाइये।

मूल्य केवल ३॥) डाक व्यय १)

सावधान ! जमीन सोना उगल रही है

आधुनिक कृषि विज्ञान

खेती बाड़ी, फूल-फुलवाड़ी तथा बागवानी पर ७५२ पृष्ठों का ग्रन्थ (ले.- रामेश्वर अशांत)

इसमें अनाज दलहन, तिलहन फूल-फुलवाड़ी साग-भाजी तथा फलों की बागवानी के हर विषय जैसे जुताई, सिंचाई, खाद व फसल संरक्षण आदि सभी आवश्यक बातों को अगणित छोटे-बड़े सुन्दर चित्रों द्वारा समझाया गया है यह भारत के किसान को मालदार बनाने के लिए तथा अधिक फसल उपजा कर सरकारी इनाम प्राप्त करने वाली खोजपूर्ण पुस्तक है। मूल्य ६) छः रुपये डाक व्यय १॥) पृथक।

केवल डाक खर्च वास्ते चार आने (पच्चीस नये पैसों) का टिकट लिफाफे में भेजकर

हजारों पुस्तकों का बड़ा सूचीपत्र

मुफ्त मंगायें

देहाती पुस्तक भण्डार (V. P.) चावड़ी बाजार दिल्ली

फोन नं०- २००३०

नोट—पुस्तक खरीदते समय हमारा पता अवश्य देखलें।

... द्वारा सम्पादित मुद्रक और प्रकाशक जयदेव प्रेस, बल्लीमारान देहली में छपवा कर

॥ ओ३म् ॥

वेद प्रकाश

वेदामृत गीत

ओं हन्तो तु किमाससे प्रथमं नो रथं कृधि ।
उपमं वाजयुश्रवः ॥ ऋग्० ८. ८०. ५ ।

शब्दार्थ—

[हन्तो] तो फिर [इन्द्र] हे इन्द्र ! तुम [नु] अब [किम्] क्यों [आससे] बैठे हो ? [नः] हमारे [रथम्] रथ को [प्रथमम्] सब से आगे, प्रथम स्थान पर [कृधि] कर दो। [वाजयुः] वाज–बल और ज्ञान चाहता हुआ [श्रवः] ऐश्वर्य तो [उपमम्] तुम्हारे पास विद्यमान ही है।

हे देव ! मेरे देव ।
कब से मैं तुम को रहा टेर
टुक सोचो कितनी हुई देर ।
अब तो न रहो यो उदासीन
अब तो देखो इस ओर हेर ।
हे देव ! मेरे देव ॥ १ ॥

कितने मुझ से पहुंचे आगे
कितने जाते आगे भागे ।
पर अब भी तुम होते न सजग
जागो, सोई किस्मत जागे ।
हे देव ! मेरे देव ॥ २ ॥

तुम शक्तिमान्, तुम ज्ञानवान्
तुम ऐश्वर्यों की सकल खान ।
भर दो धर दो मुझ में अपनी
सबकी सब जो निधियाँ महान् ।
हे देव ! मेरे देव ॥ ३ ॥

अब उठो न जिस से और यहां
मैं रहूँ मुझे ले चलो वहां ।
सब से पहले निज रथ पाऊं
सब से आगे मैं शीघ्र जहां—
हे देव ! मेरे देव ॥ ४ ॥

मैं जिससे मानव-धर्म पाल
सब तोड़ विश्वबन्धन कराल ।
बन राम, कृष्ण जगती में
तुम में लय हो जाऊं कृपाल ।
हे देव ! मेरे देव ॥ ५ ॥

श्री महावीर प्रसाद 'निरीह' ।

★

श्री आनन्द स्वामी जी की नई पुस्तक

'आनन्द भगवत् कथा अर्थात् सत्यनारायण वृत कथा'

पौराणिक पण्डित जो सत्यनारायण की कथा सुनाते हैं उसमें केवल यही सुनाते हैं कि इस कथा को सुनने से एक आदमी स्वर्ग गया और दूसरा आदमी जिसने नहीं सुनी उसको नर्क मिला। वह सत्यनारायण की कथा क्या है यह नहीं बताते।

श्री स्वामी जी ने वेद पुराण, उपनिषद्, गीता तथा अन्य कई धार्मिक ग्रन्थों को उद्धत करते हुए सत्यनारायण की असली कथा लिखी है सत्यनारायण कौन है? उस कथा को सुनने से जो स्वर्ग मिलता है वह क्या है? सत्यनारायण का आदि और अन्त नहीं तब उसकी अनन्त कहानी क्या है? वह इस पुस्तक में आपको ऐसे मीठे और आकर्षक शब्दों में मिलेगी कि देर तक उसका चित्र हृदय से न मिट सकेगा। एक प्रति का मूल्य ॥=) मात्र है। १२ प्रतियों के लिए ७॥) भेजें।

लेखक की अन्य पुस्तकें—तत्त्वज्ञान मूल्य ३), प्रभुभक्ति मूल्य १॥), प्रभुदर्शन मूल्य २॥)।

एक ही रास्ता मू० ॥।), आनन्द गायत्री कथा मू० ॥=), भगवान शंकर और दयानन्द मू. ।=)

गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क देहली

वेदप्रकाश के चार अमूल्य विशेषांक रियायती मूल्य में

१. सचित्र दयानन्द ग्रन्थ संग्रह

जिसमें ऋषि की आत्मकथा सहित २० पुस्तकों का संग्रह है, प्रत्येक पुस्तक के साथ पुस्तक का रचना काल तथा परिस्थितियों का इतिहास भी है। साथ में ऋषि के ७ असली फोटो चित्र भी हैं।

२. सचित्र बाल्मीकि रामायण

धारावाही हिन्दी में मूल संस्कृत सहित प्रक्षिप्त भाग तथा अनावश्यक कथाओं को निकालकर आर्य-मर्यादानुकूल ग्रन्थ का संकलन किया गया है लगभग ६००० श्लोकों के साथ सरल भाषा में सजिल्द सुन्दर पुस्तक मूल्य १२) रियायती मूल्य ६) रु० मात्र है।

३. सृष्टि का इतिहास

आर्य पथिक पं० लेखराम कृत 'त्वारिखे दुनिया' का हिन्दी अनुवाद। जिसमें सृष्टि उत्पत्ति वेदादि सत्शास्त्रों का समय निर्धारण करते समय जो अधुनिक इतिहासकार, पाश्चात्यों का अनुकरण कर भूल करते हैं उनके लिए यह उपयुक्त मार्ग प्रदर्शक उत्तम पुस्तक है मूल्य २) रियायती मूल्य १॥)

४. बृहदारण्यक कथा माला

बृहदारण्यक उपनिषद् ब्राह्मण ग्रन्थ का एक भाग है, उसकी कथाओं के पाठ और श्रवण से वैदिक संस्कृति का अच्छा ज्ञान प्राप्त होगा पढ़ने योग्य उपयोगी पुस्तक है मूल्य ३) रियायती मूल्य २) है। प्रत्येक वेदप्रकाश के ग्राहकों को रियायती मूल्य में। डाकखर्च अलग।

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क देहली।

ॐ ओ३म् ॐ

★ वेद प्रकाश ★

सम्पादक—गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष—७ : माघ २०१५ फरवरी १९५९ : वार्षिक मूल्य २॥)
अंक—७ : दयानन्दाब्द १३४ माघ १८८० शाके : विदेशों से ५ शि०

वेद सुधा

येन देवा न वियन्ति
नो च विद्विषते मिथः।
तत्कृण्मो ब्रह्म वो गृहे
संज्ञानं पुरुषेभ्यः ॥अथर्व ३-३०-४

पदानि—येन । देवाः । न । विऽयन्ति । नो इति । च । विऽद्विषते । मिथः ।

तत् । कृण्मः । ब्रह्म । वः । गृहे । सम्ऽज्ञानम् पुरुषेभ्यः

अन्वयः—येन देवाः न वियन्ति । मिथः च नो विद्विषते । तत् संज्ञानं ब्रह्म वः गृहे पुरुषेभ्यः कृण्मः ।

अर्थ--(येन) जिससे (देवाः) दिव्य जन (न वियन्ति) विरोध नहीं करते, तथा (मिथः) परस्पर (नो विद्विषते) द्वेष भी नहीं करते (तत्) उ (सं-ज्ञानं ब्रह्म) उत्तम ब्रह्मज्ञान का उपदेश (वः गृहे) आपके घर के (पुरुषेभ्यः) सब मनुष्यों को (कृण्मः) करते हैं।

भावार्थ—जिस ज्ञान से आपका विरोध नहीं बढ़ता और जिससे परस्पर वैर घटता है, वह ब्रह्मज्ञान ही है। वह ज्ञान घर में ग्राम में, राष्ट्र में और विश्व में रहने वाले स्त्री पुरुषों को होना चाहिए, जिससे विश्व में शान्ति रहेगी और कलह नहीं होंगे।

॥ ओ३म् ॥

सत्यार्थप्रकाश

बड़े अक्षर व बड़ी साइज का टिप्पणियों सहित संस्करण

टिप्पणियों के लेखक—आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् 'आर्य-सिद्धान्त-सागर' के यशस्वी लेखक,

शास्त्रार्थ महारथी श्री डा० अमरसिंह जी आर्य मुसाफिर

स्वनाम धन्य स्वर्गीय श्री स्वामी वेदानन्द जी ने जो टिप्पणियों सहित मोटे अक्षर और बड़ी साइज का सत्यार्थप्रकाश प्रकाशित किया था, वह अब अप्राप्त है।

स्वामी वेदानन्द जी ने अपने प्रकाशित ग्रन्थ में लिखा है कि सत्यार्थप्रकाश के अनेक स्थानों पर टिप्पणियां लिखी जायं तो यह एक प्रकार से सत्यार्थ प्रकाश का भाष्य बन जावेगा। इसलिए सब स्थानों पर (स्वामी वेदानन्द जी ने) टिप्पणियां विस्तार भय से नहीं लिखीं।

पं० अमरसिंह जी ने स्वामी जी द्वारा लिखी टिप्पणियों से लाभ उठाते हुए और भी अनेक स्थानों पर टिप्पणियां लिखी हैं। इसे एक प्रकार से सत्यार्थ प्रकाश का भाष्य समझना चाहिए।

कैसा होगा, क्या साइज व कैसे अक्षर होंगे, कैसी उपयोगी टिप्पणियां होंगी, इसके लिए नमूने की प्रति बिना मूल्य मंगाकर अथवा लेजाकर देख सकते हैं।

निम्न प्रकार की विशेषताएं होंगी

१. अजमेर वैदिक मन्त्रालय द्वारा प्रकाशित वर्तमान संस्करण के अनुकूल कुछ भी परिवर्तन किये बिना मोटे अक्षरों में मूल पाठ छापा जायगा।

२. पाद टिप्पणियों में वेदादि सत् शास्त्र, पुराण, जैन ग्रन्थ इंजिल (बायबल) और कुरान के प्रमाणों से ऋषि दयानन्द के दिये वाक्य तथा सिद्धान्तों की पुष्टि की जायेगी। जिससे अनेक शंकाओं का समाधान हो जायेगा।

३. सत्यार्थप्रकाश में दिये प्रमाणों के पते जो ऋषि ने नहीं दिये वह भी यथा-शक्ति इस संस्करण में दिये जायेंगे।

४. प्रत्येक विषय का पैराग्राफ अलग २ होगा।

५. प्रत्येक समुल्लासों के विषयों के पैराग्राफ के नम्बर दिये जायेंगे जैसा कि ऋषि दयानन्द ने १३ वें और १४ वें समुल्लासों में दिये हैं जिस से उद्धरण देने में लेखकों तथा व्याख्याताओं को विशेष सहूलियत होगी, क्यों कि जितने भी संस्करण निकले हैं उन सब की पृष्ठ संख्या एक नहीं। इन नम्बरों से विशेष सहूलियत होगी जैसा कि वेद, शास्त्र, मनु० गीता आदि में नम्बर होते हैं।

७. पुस्तक के अन्त में अकारादि क्रम से प्रमाण सूची तथा विषय शब्दानुक्रमणिका दी जायेगी।

८. ऋषि की आत्म-कथा दी जावेगी जो कि उन्होंने पूना में अपने व्याख्यानों में तथा थियासोफिस्ट पत्र में लेखबद्ध कर दी थी।

९. ऋषि के असली फोटो की प्रतिलिपियां भी इसमें विवरण वार जहां जहां ऋषि भक्तों ने ऋषि के फोटो लिये थे देंगे।

१०. मूल्य सर्वसाधारण के सहूलियत के लिए सुगम रहेगा। अर्थात् सुनहरी पूरे कपड़े की पक्की जिल्द का मूल्य १५) रु० प्रति पुस्तक होगा, डाक खर्च व पैकिंग खर्च पृथक् होगा।

जो सज्जन अग्रिम ग्राहक बनेंगे उनसे १३) लिए जा रहे हैं। आप भी १३) भेज कर अपनी प्रति सुरक्षित करा लें। या २) भेज कर अपनी प्रति सुरक्षित करा लें।

प्रत्येक समाज के मंत्री एवं अधिकारी वर्ग से प्रार्थना है कि अपने सदस्यों को इस संस्करण की सूचना देकर ग्राहक बनाकर सहयोग प्रदान करें।

भवदीय— **गोविन्दराम हासानन्द** वेदप्रकाश कार्यालय, नई सड़क, दिल्ली।

वैदिक आचार का विवरण

वेद प्रतिपादित वैदिक आचार का विवरण इस प्रकार है :—

(१) आस्तिकवाद—परमात्मा के लिये शिक्षा यह है कि वह सब की माता, पिता और सखा है। इसलिए मनुष्यमात्र भाई भाई हैं।

(२) परमेश्वर एक है और कर्मफल दाता सर्वज्ञ, सर्वाधार, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान् है।

(३) आत्मा नित्य, ज्ञान और कर्म स्वभाव वाला और अजर और अमर हैं। शरीर में रहते हुए वह अन्तः और बहिःकरणों का अधिष्ठाता हुआ करता है।

(४) मुक्ति परम स्वतन्त्रता का नाम है। छोटी स्वतन्त्रताओं को प्राप्त करते हुए अंत में इस महान् स्वतन्त्रता को प्राप्त कर लेना मनुष्य जीवन का मुख्योद्देश्य है।

(५) मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र और फल भोगने में परतन्त्र है।

(६) उपनिषद् के पवमान सूत्रों को जीवन में घटाने के लिए यत्नवान् होना चाहिए।

(क) असतो मा सद्गमय, (ख) तमसो मा ज्योतिर्गमय, (ग) मृत्योर्मा अमृतं गमयेति।

(७) व्यक्ति समाज का ऋणी होता है—उसके चुकाने के लिये, आवश्यकता होने पर सर्वस्व समाज के अर्पण करना चाहिए।

(८) मनुष्य को सब की भलाई में अपनी भलाई समझनी चाहिए।

(९) ईश्वर सत्य और सत्य ही में प्रतिष्ठित है इसलिए उस सत्य को सब कुछ खोकर भी नहीं छोड़ना चाहिए।

(१०) ईश्वर को अपना सखा और अपने हृदय में प्रतिष्ठित समझते हुए मनुष्य को सदैव निर्भीक होना चाहिए।

जीवन को अग्निमय होना चाहिये

(१) एक स्थान पर ऋग्वेद में लिखा है:—

स्वग्नयो हि वार्यं देवासो दधिरे च नः।
स्वग्नयों मनामहे ॥ (ऋग्वेद १।६।२६।८)

अर्थात् (स्वग्नयः) उत्तम अग्नियुक्त (देवासः) दिव्य गुण वाले विद्वान्, (नः) हमारे लिए (वार्यं) गृह्णीय (स्वग्नयः) उत्तम अग्नि को (दधिरे) धारण करते हैं (च) और [उसे] (मनामहे) हम भी जानें [और धारण करें]॥

अग्नि का आशय यह है कि देश के (अग्रणी) नेताओं को तेजस्वी और अग्नियुक्त होना चाहिए। अनुयाइयों का धर्म है कि वे उनका अनुकरण करें।

(२) अथर्ववेद में कहा गया है "अग्निः प्राणान् सन्दधाति"॥ (अथर्व० ३।३१।६)

अर्थात् अग्नि प्राणों को धारण करती है। जीवन का कारण अग्नि है। अग्नि न रहने से शरीर ठंडा और निस्तेज हो जाता है। संसार में गति का कारण अग्नि ही है। अग, अगि गत्यर्थक धातु से अग्नि बनता है। टिंडल ने लिखा है कि अग्नि गति का एक प्रकार है।

(३) शतपथ में "अग्निः रक्षसां अपहन्ता।" अग्नि, राक्षस=रोगाणुओं का नाशक होता है। मनुष्य में इस गुण के आने से वह भी आततायी नाशक हो जाता है।

(४) अग्नि की ऋग्वेद की पहली ऋचा ही में परिभाषा की गई है :—

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम् ॥ (ऋग्वेद १।१।१)

अर्थात् अग्नि की स्तुति=परिभाषा की जाती है। वह (पुरोहित) सर्वोपकारक (यज्ञस्य देवम्) यज्ञ=शुभ कर्मों का करने वाला, (ऋत्विजम्) ऋतुओं को उत्पन्न और अनुकूल बनाने वाला, (होतारम्) लेकर अधिक देने वाला और (रत्नधातमम्) रत्नों का धारण करने वाला है।

मनुष्य के अग्निमय होने का अर्थ यह है कि वह इन गुणों को क्रियात्मक जीवन में धारण करे।

(५) छान्दोग्योपनिषद में इन्द्र और विरोचन कीआख्यायिका में कहा गया है:—"**तस्मादप्यद्येहाददानम् अश्रद्दधानम्, अयजमानम्, आहुरोसरोवत इति।**"

अर्थात् अब भी जो दान न देने, श्रद्धा न रखने, और यज्ञ=शुभ कर्म न करने वाले हैं उन्हें असुर ही कहा जाता है। ये गुण मनुष्य में अग्नि के गुण, आने ही से, आया करते हैं।

[शेष पृष्ठ ७ का]

गुजरात की आर्य संस्थाएं विशेष रूप से आमंत्रित की गई हैं। अनेक कार्यक्रमों की व्यवस्था भी होगी। इस अवसर पर टूर्नामेन्ट तथा व्यायामादि की स्पर्धाएं भी रखी गई हैं।

नये रूप में वृहद्-सौराष्ट्र-प्रादेशिक सभा के तत्त्वावधान में एक हाई स्कूल खोला जायगा।

ट्रस्ट की ओर से एक विद्वान् पंडित जो टंकारा में रहकर प्रतिदिन कथा प्रवचनादि करें इसकी व्यवस्था को जावेगी।

इस अवसर पर राजमहल से बाहर नदी के तट पर, शिवमन्दिर के समीप दो बीघा जमीन में महर्षि दयानन्द उद्यान का भी निर्माण होगा।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट अखिल भारतीय स्मारक उद्घाटन उत्सव आयोजन कर रहा है।

ऋषि भक्त इस अवसर पर, अधिक से अधिक संख्या में पधार कर ऋषि ऋण से उऋण हों और उत्सव को सफल करने में चार चांद लगादें।

महर्षि दयाननंद स्मारक ट्रस्ट टंकारा के

दानदाताओं की सूची

७. मास्टर कोटूराम देहली १०)
८. विजय कुमार गोविन्दराम देहली १०)
९. राजाराम आर्य सामग्री वाले देहली १०)
१०. कृष्णचन्द्र आर्य देहली १०)

वेद प्रकाश कार्यालय में इस दान की रसीद वही आई हुई है जो दाता दान देना चाहें शीघ्र इस पते पर भिजवा दें—

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, देहली।

वेद प्रकाश के ग्राहकों के लिए

॥ आनंद दायक सूचना ॥

ग्राहकों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि वेद प्रकाश का आगामी वर्ष का पहला अंक एक विशेषाङ्क होगा और यह जान कर अधिक प्रसन्नता होगी कि १०० पृष्ठ के लगभग का यह विशेषांक ग्राहकों को बिना अतिरिक्त मूल्य के मिलेगा। विशेषांक क्या होगा? इस बारे में अगले अंकों में देखिये:

—व्यवस्थापक वेद प्रकाश

वेदों की विभूति

श्री हरिशंकर जी शर्मा, लोहामंडी, आगरा

है वैदिकता का गौरव परम पुरातन,
वैदिक शिक्षा अति पुण्यमयी-अति पावन
ऋषि-मुनि वेदामृत पान किया करते थे,
वेदों पर प्यारे प्राण दिया करते थे।
उस दिव्य-ज्योति का ज्ञान उजाला करिए
वेदों की विमल विभूति विश्व में भरिये ॥१॥

वह मानवता का अविचल अटल सहारा,
सब जीव जन्तुओं पर नित प्रेम पसारा ।
कल्याण-त्राण, तप-त्याग मय ध्रुव धारा,
वसुधा कुटुम्ब का भव्य भाव विस्तारा ।
वैदिकता के बल से भवसागर तरिए—
वेदों की विमल विभूति विश्व में भरिये ॥२॥

अघयुक्त अशान्त भावना भभक रही है,
अन्याय-स्वार्थ की ज्वाला धधक रही है ।
मानव मानव पर वज्र-वाण बरसाता,
हा, एक दूसरे को जीते जी खाता ।
वैदिक वाणी से सब के संकट हरिए—
वेदों की विमल विभूति विश्व में भरिये ॥३॥

मन, वचन कर्म में वैदिकता आएगी,
जन-जीवन में नैतिकता छा जाएगी ।
नित ओ३म् पताका घर-घर फहराएगी,
सब सृष्टि वेद की गुण गरिमा गाएगी ।
सद्धर्म्म-धारण धन्य ध्यान में धरिए—
वेदों की विमल विभूति विश्व में भरिए ॥४॥

जो तत्त्व 'अभ्युदय' निःश्रेयस साधक है,
जो व्यष्टि-समष्टि परम प्रभु आराधक है।
जिसने मानव-मंगल की ज्योति जगाई,
जो प्राणि-मात्र के लिये सदा सुखदाई ।
वह श्रेयस्कर है, सदा उसे अनुसरिए—
वेदों की विमल विभूति विश्व में भरिए ॥५॥

जो युक्ति, तर्क, दर्शन से शुद्ध हुआ है,
वैदिकता का बल पाय प्रबुद्ध हुआ है ।
जो नित्य, सत्य, सिद्धान्त-रूप में आया,
ज्ञानी-गुणियों ने धर्म्म-रूप अपनाया ।
उस को जीवन में धार, विनम्र विचरिए—
वेदों की विमल विभूति विश्व में भरिए ।।६।।

वर वेद पूज्य कल्याण-त्राण दाता है,
सद् ज्ञान-भानु प्रेरक, पथ-निर्माता हैं ।
जब तक वेदों की ज्योति जगी जीवन में,
शुचिता-समता थी, ममता रही न मन में ।
वेदों के लिये जिओ, वेदों पर मरिए—
वेदों की विमल विभूति विश्व में भरिए ।।७।।

[२०वें पृष्ठ का शेष]

पूषन्नेकर्षे यम सूर्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन्समूह ।
तेजो यत्ते रूपं कल्याण तमं तत्ते पश्यामि
योऽसावसौ पूरुषः सोऽहमस्मि ।। १८ ।।*

पूषन् (हे पालक, पोषक), एकर्षे=अद्वितीय (एक एव ऋषति गच्छति इति एकर्षिः), यम (नियामक), सूर्य (प्रकाश स्वरूप), प्राजापत्य प्रजा का पालक), रश्मीन् (किरणों को), व्यूह विगमय (दूर कर फैला दे), समूह (एकीकुरु, एकत्रित कर, य (जो तेरा) कल्याणतमम् (अत्यन्त कल्याणकारी) रूपम् (रूप है), तत् ते (उस तेरे रूप को) पश्यामि (देखता हूँ), यः (ज), असौ-असौ (वह-वह), असौ (प्राण में), असौ (आदित्य में), पुरुषः (पुरुष), सः (वह), अहम् (मैं) अस्मि (हूँ) ।

हे पालक, पोषक प्रभो ! तू अद्वितीय है, इस ससार को नियम में रखने वाला है तथा प्रकाश स्वरूप है । तू मेरी अस्तव्यस्त हुई वृत्तियों को एक स्थान पर केन्द्रित करने की कृपा कर, ताकि मैं तेरे अत्यन्त कल्याणकारी रूप को देख सकूं । जो पुरुष तेरे सम्मुख खड़ा है, वह तेरा अनन्यभक्त मैं ही हूँ ।

*यह मन्त्र ईशोपनिषद् का मन्त्र है । यजुर्वेद के ४०वें अध्याय में यह मंत्र नहीं है । यह यजुर्वेद का ४० वें अध्याय का स्वाध्याय के साथ ईशोपनिषद् भी लिखा है। इसलिए इस मन्त्र को देना आवश्यक हो गया ।

यजुर्वेद के ४० वें अध्याय तथा ईशोपनिषद के मन्त्रों का क्रम भी भिन्न है । यह अठारवां मंत्र ईशोपनिषद में १६वां मन्त्र है । —प्रकाशक

टंकारा ट्रस्ट की महत्वपूर्ण कार्यवाही

आर्यजगत् को यह संवाद सुनकर प्रसन्नता होगी कि टंकारा का मौरवी महाराजा का राज-प्रासाद (जो कि लगभग २५ हजार गज चौरस भूमि पर स्थित है।) अब ट्रस्ट को सौंप दिया गया है। महाराज के कर्मचारियों ने सौंपने की विधि की। और ट्रस्टी श्री मगनभाई जोशी भूत पूर्व स्पीकर विधान सभा सौराष्ट्र ने ओ३म् ध्वज महल के शिखर पर फहरा दिया।

ट्रस्ट की ओर से एक चौकीदार रख लिया गया है जेतपुर मुनिसपलिटी के भूतपूर्व चेयरमैन श्री अम्बालाल पटेल, जिन्होंने अपनी सेवायें अवैतनिक रूप से ट्रस्ट को प्रदान की हैं, वहां व्यवस्थापक के रूप में रहेंगे। इनके अधीन एक रसोइया, माली आदि भी रख लिया जावेगा, इस प्रकार महर्षि स्मारक के लिये मकान की व्यवस्था कर देने की सेठ श्री नान जी भाई कालिदास मेहत्ता की प्रतिज्ञा पूर्ण हुई। अब वहां क्या कार्य करना है इसकी व्यवस्था और निर्णय आर्यजगत् को करना है।

ट्रस्ट के मंत्री पं० श्री आनन्द प्रिय जी ने बारह सौ आर्य व्यक्तियों से प्रार्थना की है कि ऋषि ऋण से उऋण होने के लिये एक बार सौ सौ रुपये देवें अथवा दस वर्ष तक प्रति वर्ष दस २ रुपये की आहुति प्रदान कर वहां के कार्य संचालन में सहायक बनें।

"ट्रस्ट की एक सभा पोरबन्दर में सेठ नान जी कालिदास महिला कालिज के भव्य भवन में सेठ श्री नानजी भाई के प्रधानत्व में हुई, उसमें ट्रस्टियों के अतिरिक्त अनेक आर्य महानुभाव निमन्त्रण से उपस्थित थे जिनमें "वेद प्रकाश" के मालिक श्री गोविन्दराम जी हासानन्द जी का नाम (जो कि देहली से आये थे) विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

ट्रस्ट ने कई महत्वपूर्ण निर्णय किये—सर्व प्रथम महल के आउट हाऊसिस की मरम्मत के लिये पन्द्रह हजार रुपया स्वीकार कर, उस कार्य को शीघ्र करने के लिये श्री अम्बालाल जी पटेल के नेतृत्व में एक समिति बनाई।

ट्रस्ट ने महाशिव रात्रि के समय जो उद्घाटन उत्सव हो वह डाक्टर राधाकृष्णन् से कराया जाय और उस उत्सव का अनुमानिक खर्च पन्द्रह हजार स्वीकृत किया।

उत्सव के अनुमानिक अनेक समितियां बनाई गई। यथा—भोजन समिति, अतिथि-सत्कार समिति, स्वयं सेवक समिति, कार्यक्रम समिति, आमंत्रण समिति, तथा प्रकाशन समिति इत्यादि।

महाशिव रात्रि पर महर्षि दयानन्द टावर का शिलान्यास होगा जिसका निर्माण सेठ श्री नान जी भाई कर रहे हैं। सात दिन तक पंडित ब्रह्मदत्त जी को ब्रह्मा बनाकर यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा। उत्सव के साथ साथ आर्य संस्था सम्मेलन आर्य युवक सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन, आर्य सम्मेलन आदि अनेक सम्मेलन होंगे।

महर्षि के ग्रन्थों का प्रदर्शन होगा आर्य साहित्य के लिये पुस्तकालय का निर्माण होगा। आर्यजगत् के प्रमुख नेताओं एवं सन्यासी महात्माओं को पधारने का निमन्त्रण दिया जावेगा।

[शेष पृष्ठ ४ पर]

नवदम्पति को भेंट देने योग्य अनुपम

उपहार

भारतीय स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण व चिरस्थायी बनाने के लिये
आज भारत को कर्मवीर, बुद्धिमान् व शौर्य-सम्पन्न
युवकों की आवश्यकता है। उस आवश्यकता
की पूर्ति आपके हाथों में है।

क्या आप चाहते हैं कि आपकी सन्तान समाज में सम्मान प्राप्त करे यदि हां !
तो उसके लिए प्रयत्न करना आपका कर्त्तव्य है।

किस प्रकार ?

यह जानने तथा अनेक कर्त्तव्य से परिचित होने के लिए,

इच्छानुसार सन्तानोत्पत्ति

यह पुस्तक मँगा कर अवश्य पढ़िये। पुस्तक पढ़कर आप अनुभव करेंगे कि "पुत्र या पुत्री, धर्मात्मा या पापी, शासक या चोर, जितेन्द्रिय या व्यभिचारी, गौर या श्याम वर्ण की" सन्तान का निर्माण तथा वर्थ कन्ट्रोल अपने ही हाथों में है।

इसकी महत्ता पढ़ने से ही विदित होगी

सजिल्द मूल्य २॥) डाक व्यय पृथक—

लेखक:—

वीरेन्द्र गुप्त

प्राप्ति स्थान—**वीरेन्द्रनाथ अश्विनी कुमार**

प्रकाशन मँदिर, बाजार चौक, मुरादाबाद।

दिसम्बर अंक से आगे]

धर्म नगरी

(सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर एक मनोरञ्जक गाथा)

[लेखक—श्री मदनजित् आर्य्य वैदिक धर्म विशारद फिरोजपुर शहर]

हमारे जिज्ञासु महोदय को आज रात्रि भर निद्रा ही नहीं आई। कारण उसके हृदय में कौतुहल हो रहा था कि अब शंकराचार्य जी महाराज वेद मत की स्थापना कैसे करते हैं। अतः वह प्रातः ही नित्य कर्मों से निवृत्त होकर शीघ्र ही धर्म सभा में पहुँच गया। आज कल की अपेक्षा उपस्थिति बहुत अधिक थी अतः वह सब से प्रथम ही बैठ गया। समयानुसार धर्मराज जी महाराज पधारे और उनके आदेशानुसार सभा की कार्यवाही आरम्भ हुई। पण्डित जी महाराज ने कहा कि सुधन्वा राजा ने शंकराचार्य के साथ कई नौकर चाकर रख दिये। वह स्थान २ पर जाकर वेद का प्रचार करने लगे। उनके समय में जैनियों ने अपनी मूर्तियों को जमीन के भीतर दबा दिया। स्वामी शंकर शैव मत, और वाममार्ग का भी साथ-साथ खण्डन करते रहे। जब इस प्रकार जैन मत का बहुत ह्रास हुआ तो दो जैनी ऊपर से वेद मत अनुयायी बनकर तथा भीतर से कट्टर जैन बन कर आचार्य जी की सेवा करने लगे। समय पाकर उन्होंने शंकराचार्य को विष युक्त वस्तु खिलाई जिससे उन की क्षुधा बन्द हो गई और उनकी मृत्यु हो गई। इसके पश्चात् उनके शिष्यों ने कुछ २ प्रचार करना आरम्भ किया। और चार मठ स्थापित किये।

शंकराचार्य का निज मत जीव ब्रह्म की एकता और जगत मिथ्या है या यह कोई अच्छा मत नहीं था क्योंकि नवीन वेदान्ति रज्जु में सर्प, जगत स्वप्नवत, सीप में चांदी इत्यादि जो मानते हैं वह ठीक नहीं क्योंकि सर्प और रज्जु दोनों वस्तु ही हैं वस्तु को अवस्तु मानना बुद्धिमत्ता नहीं है। स्वप्न में भी जिसका भान होता है उसका भी संस्कार आत्मा में पूर्व विद्यमान होता है। और जो तुम यह कहते हो कुछ अंधकार और प्रकाश के मेल में रज्जु को देखकर सर्प का भान होता है। तो पूरा प्रकाश होने पर यह भ्रम भी मिट जावेगा। उस प्रकाश रूप ब्रह्म में जो तुम अज्ञान मानते हो तो यह अज्ञान भी अनादि काल से ब्रह्म में होगा और इसको ही तुम अविद्या कहते हो तो तुम्हारे मत अनुसार यह सिद्ध हुआ कि ब्रह्म के साथ यह अज्ञान भी अनादि काल से है। और इस प्रकार ब्रह्म अपने स्वरूप को आप ही भूल जाता है। अब जो तुम्हारे

मतानुसार एक अनन्त सर्वज्ञ चेतन के दूसरा कोई चेतन है ही नहीं। तो अल्पज्ञ कहां से आया। यदि अल्पज्ञ चेतन ब्रह्म से भिन्न मानो तो ठीक है। जब ब्रह्म के एक भाग में अज्ञान हो तो सर्वत्र अज्ञान फैल जावेगा। जैसे शरीर में फोडे की पीड सब शरीर के अवयवों को निकम्मा कर देती है। इसी प्रकार ब्रह्म भी एक देश में अज्ञानी और क्लेश युक्त हो तो सब ब्रह्म भी अज्ञानी और पीडा युक्त हो जावेगा अर्थात् जो गुण या अवगुण काल में होता है वैसा ही उसके प्रत्येक भाग में होता है। और जो किसी अंश में होगा वही उसके कुल में होगा। कई नवीन वेदान्ती भाई इस अविद्या की उपाधि का जड़ वा चेतन, सत्य वा असत्य है तो वह इसको अनिर्वचनीय कहकर अपना पीछा छुड़ा लेते हैं। और कई तो यहां तक कह दिया करते हैं कि ब्रह्म अज्ञानियों को पृथक २ प्रतीत होता है वस्तुतः नहीं। इसमें वह कठोपनिषद का यह प्रमाण भी दे देते हैं कि जैसे अग्नि प्रत्येक पदार्थ में व्यापक होकर तदाकार दीखता है और उनसे पृथक है वैसे सर्व व्यापक परमात्मा अन्तःकरण में व्यापक होके अन्तः करणाकार ही रहा है। परन्तु उनसे अलग है। यह उनका कहना भी व्यर्थ है क्योंकि हमारे मन में तो ब्रह्म और जीव प्रकृति तीनों पृथक २ हैं। परन्तु वह केवल ब्रह्म को ही एक मात्र मानते हैं यदि ब्रह्म स्वयं ही व्यापक अन्य अन्तःकरणों में ही रहा है तो वह अन्तःकरण दूसरी वस्तु होनी चाहिये। और इस कठोपनिषद के मंत्र में भी अग्नि और दूसरे पदार्थ भिन्न २ दिखाये गये हैं। और जो नवीन वेदान्ती सूर्य और जल के कुण्ड का दृष्टान्त देते हैं यह भी साकार पदार्थों में ही घट सकता है। यदि यह ब्रह्म और जीव को पृथक २ न मानेंगे तो जहां २ अन्तःकरण चला जायगा वहां २ के ब्रह्म को अज्ञानी और जिस २ देश को छोड़ेगा वहां २ के ब्रह्म को ज्ञानी कर देवेगा।

कई भाई यह भी कहते हैं कि निराकार का भी आभास होता है। जैसा कि दर्पण या जल में आकाश का आभास पड़ता है। परन्तु वह यह भूल जाते हैं कि जब आकाश में रूप ही नहीं तो उसको आंख से कैसे देख सकता है। साकार वस्तु ही दीख सकता है। आकाश का आकार कोई नहीं यह जो रूप दिखाई पड़ता है यह तो पृथवी जल और अग्नि के त्रसरेणु हैं।

अब यह हमारे भाई ब्रह्म को ही सर्वज्ञ और अल्पज्ञ कहते हैं और यह भी उपाधि भेद से, तनिक ध्यान से देखा जावे तो यह ब्रह्म में ही उपाधि को स्वीकार करते हैं। और यह कल्पना मिथ्या है तो सिद्ध हुआ कि इनके मतानुसार सत्य और असत्य भी कल्पित हुआ। अब जब यह अपनी बात को ही मिथ्या कहें तो उनको दूसरे सत्य कैसे स्वीकार कर लेंगे। क्योंकि संसार में प्रमाणिक वह होता है जो सत्य माने, सत्य बोले और सत्य ही करे।

नवीन वेदान्तियों की माया

हमारे यह भोले भाई माया को अनादि ब्रह्म के आश्रय और ब्रह्म को ही आवरण करने वाली मानते हैं। माया का अर्थ वह यह करते हैं कि जो वस्तु न हो परन्तु भासे, तो इस बात को वही मानेगा जिसके हृदय की आंख फूट गई होगी क्योंकि जो वस्तु नहीं उसका भासमान होना असम्भव है जैसे वन्ध्या का पुत्र होना।

वसिष्ठ, शंकराचार्य और निश्चलदास

योग वसिष्ठ जिसने बनाया है वह तो आधुनिक वेदान्ती था वह रामचन्द्र जी के गुरु वसिष्ठ

अथवा बाल्मीकि ऋषि आदि का यह मत न था क्योंकि वह तो पूर्ण रूपेण वेदानुयायी थे। और शंकराचार्य जी ने जैनियों के खण्डन हेतु यह मत स्वीकार किया था ऐसा अनुमान है। क्योंकि जीव ईश्वर की एकता, जगत मिथ्या आदि सिद्धान्त वेदादि शास्त्रों के विरुद्ध होने से अप्रमाणिक हैं। श्री निश्चलदास जी ने वृत्त प्रभाकर में जीव ब्रह्म की एकता के लिए यह अनुमान प्रमाण लिखा है कि चेतन होने से जीव ब्रह्म से अभिन्न है। यह बात ठीक नहीं क्योंकि साधर्म मात्र से एक दूसरे के साथ एकता नहीं होती, वैधर्म्म भेदक होता है। जैसे कोई कहे कि पृथिवी "जलाऽभिन्ना जडत्वात्" जड के होने से पृथिवी जल से अभिन्न है। जैसे यह वाक्य संगत नहीं वैसे ही निश्चलदास का मत है इतने में एक वृद्ध सज्जन खड़े होकर हाथ जोड़कर कहने लगे महाराज आप की सब बातें समझ में आ गई परन्तु मैं ने वेदान्त दर्शन एक बाबा सन्त महात्मा से सुना था वह कहते हैं कि उस में लिखा है कि जीव पहले ब्रह्मस्वरूप था और वह अपने स्वरूप को प्राप्त होकर प्रकट होता है। योगी एश्वर्य सहित अपने ब्रह्म रूप को प्राप्त होकर ब्रह्म स्वरूप से मुक्ति में स्थित रहता है। पण्डित जी ने अति प्रेम से कहा कि पूज्य श्री मान जी आपको वेदान्त दर्शन का अभिप्राय ठीक नहीं बताया है वास्तव में उसके अर्थ यह है कि जब तक जीव अपने स्वकीय शुद्ध रूप को प्राप्त सब मलों से रहित होकर पवित्र नहीं होता तब तक योग से ऐश्वर्य को प्राप्त होकर अंतर्यामि ब्रह्म भी प्राप्त होके आनन्द में स्थित नहीं हो सकता। और यह अवस्था पापों से रहित होने पर ही प्राप्त हो सकती है। जब योगी का सत्य संकल्प होता है तब स्वयं परमेश्वर को प्राप्त होकर मुक्ति सुख को पाता है। मुक्ति में सब एक समान ही रहते हैं। हां जीव और ब्रह्म भिन्न भिन्न रहे ऐसा व्यास ऋषि जी स्पष्टतया मानते हैं। जीव ब्रह्म की एकता में एक युक्ति भी है कि एक ही ब्रह्म स्वयं मुक्ति आनन्द दाता और स्वयं ही प्रति ग्रहीता कैसे हो सकता है। अतः सिद्ध हुआ कि निर्विकार, अपरिणामि, शुद्ध, सनातन, तिर्भ्रान्तिवादि गुणों से युक्त उत्पति कदापि नहीं हो सकती।

शंकराचार्य के पश्चात् देश की अवस्था

शंकराचार्य के ३०० वर्ष के पश्चात् उज्जैन नगरी में विक्रमादित्य प्रतापी राजा हुआ जिसने देश की शान्ति की सुन्दर व्यवस्था बनाई। तत्पश्चात् भर्तृहरि विद्वान् राजा हुए उसने वैराग्यवान् होकर राज्य को छोड़ दिया। विक्रमादित्य के पांच सौ वर्ष पश्चात् राजा भोज हुए जिसने विद्या का बहुत प्रचार किया उसके राज्य में कालिदास नामी अति विद्वान् हुआ जिसने रघुवंश जैसा काव्य लिखा। उसके पास कोई विद्वान् उत्तम श्लोक बना कर लाता तो उसको बहुत सा धन देता और प्रतिष्ठा करता था उसके पश्चात् राजाओं ने पढ़ना छोड़ दिया जिस से अविद्या की वृद्धि होगी और वाम मार्ग तथा अन्य शैवादि मतों का प्रचार होना आरम्भ हो गया वाम मार्ग वेद विरोधी हैं। उनका सिद्धान्त यह है जिसके कपाल में भस्म और कण्ठ में रुद्राक्ष नहीं है उसको धिक्कार है। इनके साथ शैव वाले भी मिल गये और उन्होंने भगलिंग को स्थापित किया और उसकी पूजा करने लगे। जैनियों की देखा-देखी मूर्तियों की स्थापना करनी आरम्भ कर दी। स्वार्थवश अपने चेलों को ऐसा उपदेश देने लगे कि मलेच्छ भाषा मुख से नहीं बोलनी जैन मन्दिर में नहीं जाना इत्यादि। मार्कण्डेय पुराण

को प्रमाण मानते। उसी काल में ऋषि मुनियों के नाम पर पुराणादि ग्रन्थ बनने आरम्भ हो गये जिस में स्व स्व मत के पोषक मंत्र लिखे। कहां राजा भोज का समय जिसमें ऐसे २ शिल्पी लोग थे कि जिन्होंने विद्युत के घोड़े को बनाया जो एक घण्टे में साढ़े सताइस कोस जाता था। एक वायु का पंखा भी बनाया था जो बिना मनुष्य के चलता था यदि यह पदार्थ आज तक बने रहते तो यूरोपियन इतने अभिमान में न चढ़ जाते।

इन पोपों ने अपने जाल में फंसाने के लिये अपने ही अवतार, मन्दिर मूर्तादि बनाने आरम्भ किये। जैनियों के २४ तीर्थकरों सदृश अपने चौबीस अवतार बनाये। और १८ पुराण बनाये वैष्णव मत के पश्चात् शठ कोप नामक कंजर वर्ण ने अपना मत चलाया पुनः यवनाचार्य ने अपनी लीला रचाई। यह पुराण ऋषि मुनियों के नाम पर इसलिये बनाये गये ताकि लोग इस को प्रमाण मानें।

देवी भागवत पुराण में श्री नाम की देवी स्त्री से जगत की उत्पत्ति बड़े विचित्र ढंग से लिखी है। अर्थात् देवी की इच्छानुसार हाथ में छाला उत्पन्न हुआ उससे ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई। और उससे विवाह करने की प्रार्थना की उसने उत्तर दिया कि तू मेरी माता है मैं यह पाप कभी नहीं कर सकता ऐसा सुन माता को क्रोध चढ़ा और इसको भस्म कर दिया। दूसरी बार पुनः हाथ घिसने से विष्णु जी की उत्पत्ति हुई उससे भी इसी प्रकार पाप करने के लिये प्रेरणा की। जब उसने भी न माना तो उसको भी भस्म कर दिया पुनः तीसरी वार तीसरे लड़के को उत्पन्न किया उससे भी वही प्रस्ताव किया पर लड़के ने कहा कि तू दूसरा शरीर धारण कर तब विवाह करूंगा। उसने ऐसा ही किया पुनः उसने वह राख की ढेरी के विषय में प्रश्न किया कि यह क्या है? देवी ने कहा कि यह तुम्हारे भाई हैं। उसने कहा कि मैं अकेला क्या करूंगा। इनको भी जिला दो और दो स्त्रियां उत्पन्न कर दो ताकि इनका भी विवाह हो जावे देवी ने वैसा ही किया अब देखो इस देवी भागवत के बनाने वाले की बुद्धि कि माता से विवाह न करके बहनों से विवाह करा दिया। कोई विद्वान् इनसे पूछे कि देवी के माता पिता कौन थे। और उसने पुत्र कैसे पैदा किये जो कहो कि वह अनादि थी तो जो संयोग जन्म वस्तु है वह अनादि कभी भी नहीं हो सकती। इसी प्रकार अन्य पुराणों में भी सृष्टि नियम विरुद्ध कई असम्भव बातें लिखी हैं।

वेद मंत्रों के अर्थों का अनर्थ भी इसी प्रकार इन ग्रन्थों में किया है यथा 'त्रयायुषं जमदग्ने' यजुर्वेद के मंत्र को भस्म धारण करने का विनियोग कर दिया है। परन्तु इसका वास्तविक अर्थ तो यह है। हे परमेश्वर मेरे नेत्र की ज्योति (त्रयायुषम्) तिगुना अर्थात् तीन सौ वर्ष पर्यन्त रहे और मैं भी ऐसे धर्म के काम करूं कि जिससे दृष्टि नाश न हो। इत्यादि। और भी ध्यान से सुन लो कि परमेश्वर के सृष्टि क्रम को कोई अन्यथा नहीं कर सकता अर्थात् जैसे जिस वृक्ष का बीज परमात्मा ने रचा है। उसी से वह वृक्ष उत्पन्न हो सकता है। जो रुद्राक्ष भस्म धारण से यमराज के दूत डरते हैं तो पुलिस के सिपाही भी डरते होंगे। यह सब ही गपौड़े हैं।

वाम मार्गी शिवों के अतिरिक्त वैष्णव सम्प्रदाय भी वेद विरोधी होने से बुरा है। क्योंकि यह सब रुद्र, शिव, विष्णु, गणपति, सूर्यादि परमेश्वर के ही नाम हैं। इन्होंने इस यथार्थ बात को न जान कर अपना २ सम्प्रदाय चला लिया है

और वेद में इन शब्दों के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ लिया है। अपने २ मत के कई चिन्ह बना लिये हैं अर्थात् शंख, चक्र, गदा और पद्म चिन्हों के अग्नि में तपा के भुजा के मूल में दाग देकर पश्चात् दुग्ध युक्त पात्र में बुझाते हैं। और कोई उस दूध को पी भी लेते हैं देखिये कितनी पागलपन की बातें यह करते हैं ऐसे २ कर्मों से ईश्वर को प्राप्त होने की आशा करते हैं। इनके पाखंड मय श्लोक का नमूना भी देख लेवें।

बाना बड़ा दयाल का, तिलक छाप और माल
यम डरपे कालू कहे, भय मौत भूपाल

मूर्ति पूजा

प्यारे भाइयों! यह मूर्ति पूजा जैनियों ने अपनी मूर्खता से चलाई है। यह लोग कहते हैं कि शान्त ध्यान स्थित बैठी हुई मूर्ति देख के अपने जीवन का भी शुभ परिणाम वैसा ही होता है। परन्तु यह बात ठीक नहीं है क्योंकि जीव चेतन मूर्ति जड़ है। क्या मूर्ति के सदृश वह जड़ हो जायेगा। यह पाखंड है। पौराणिकों में शाक आदि मत वालों ने जैनियों के विरुद्ध शृंगार युक्त स्त्री के सहित रंग राग भोग विषयासक्ति सहिताकार खड़ी और बैठी हुई बनाई है। उसके साथ घण्टे घड़ियाल कोलाहल का सामान भी रख दिया है। मूर्तियों के स्थापना के विषय में इन्होंने एक अद्भुत लीला को स्वयं ही मूर्ति बना कर पहाड़ या जंगल की गुफा में दबा दिया और नगर में आकर यह घोषणा कर दी कि मुझे अमुक देवी या देवता ने दर्शन दिये हैं और कहा है कि हम अमुक स्थान पर स्थित हैं। हम को वहां से लाकर मन्दिर में स्थापना करो और तू हमारा पुजारी बन जाना। अब आंख के अंधे और गांठ के पूरे पोप जी की यह लीला सुनकर उनके साथ वहां जाते हैं और उन मूर्तियों को अति सन्मान से लाकर मन्दिर बनवा कर उसमें स्थापना करते हैं और इस प्रकार अपनी जीविका के साथ २ छल कपट के साथ मूर्ति पूजा आरम्भ किया।

इतना भाषण सुनने पर धर्म राज जी ने पण्डित जी को कहा कि पण्डित जी आज समय बहुत हो गया है अतः कृपया इस मूर्ति पूजा के विषय में विस्तार से आगामी बैठक में प्रकाश डालें। जनता ने भी इसका अनुमोदन किया और सब लोग वहां से प्रस्थान कर गये।

आर्य हवन सामग्री

हर्ष सूचना

विश्व के समस्त वैज्ञानिकों को डाक्टर, वैद्य, और हकीमों को तथा सभी यज्ञ प्रेमी भाई बहिनों को एवं विश्व की समस्त आर्य समाजों को सहर्ष सूचित किया जाता है कि हमारी विश्व विख्यात आर्य हवन सामग्री निर्माण शाला में सर्व रोगनाशक सुगन्धित हवन सामग्री का निर्माण वैदिक विज्ञान के आधार पर पूर्ण वैज्ञानिक रीति से किया जाता है।

आर्य महात्माओं और नेताओं व विद्वानों द्वारा प्रसंशित सर्व रोग नाशक आर्य हवन सामग्री से ही नित्य यज्ञ करें और यज्ञमय जीवन बनाकर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त करें।

विश्व के समस्त नगरों में आर्य हवन सामग्री के स्थाई ग्राहकों और विक्रेताओं और एजेण्टों की अविलम्ब आवश्यकता है। देश और विदेशों में हमारी एजेन्सियां स्थापित हो रही हैं। एजेन्सियों के लिये आज ही लिखें।

नं. १ मेवा युक्त सामग्री का भाव ८०) मन।
नं. २ सुगन्धित सामग्री का भाव ५०) मन है।

निवेदक—
वेदपथिक धर्मवीर आर्य झंडाधारी व्याख्यान भूषण
अध्यक्ष आर्य हवन सामग्री निर्माणशाला
सराय रुहेला, नई देहली ५

क्या महर्षि बाल्मीकि जी भंगी थे ?

[लेखक:—वैदिक गवेषक शिव पूजन सिह कुशवाहा 'पथिक' बी० ए०, साहित्यालंकार, कानपुर]

दैनिक हिन्दी पत्र "हिन्दुस्तान" दिल्ली, वर्ष २६, अक्तूबर २८ सन् १९५८ ई०, अंक २९८-३, पृष्ठ ८ में निम्नांकित समाचार प्रकाशित हुआ था।

"महर्षि बाल्मीकि जन्मोत्सव का जलूस रविवार को हरिजन कार्यकर्ताओं के संरक्षण में घूमधाम से निकाला गया जो लालकिले से आरम्भ होकर चांदनी चौक, फतहपुरी, सदर बाजार कुतुब रोड, चूनामंडी, पहाड़गंज होता हुआ बाल्मीकि मन्दिर रीडिंग रोड पर समाप्त हुआ।

इसमें दिल्ली प्रदेश की लगभग ५० हजार बाल्मीकी जनता ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। जलूस लगभग तीन मील लम्बा था। जलूस में रंग विरंगी झांकियां भी थीं, जिनमें लव कुश के वाण विद्या व सीता जी का ऋषि आश्रम में रहने सम्बन्धो झांकियां दर्शनीय थीं।"

इस समाचार से यह प्रकट होता है कि महर्षि बाल्मीकि भंगी थे, और उनके आश्रम में सीता जी ने निवास किया था और लव कुश ने वाण विद्या सीखी थी।

क्या महर्षि बाल्मीकि भंगी थे। क्या उसी हरिजन महर्षि के आश्रम में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी की धर्मपत्नी थीं और उनके प्रतापी यमज पुत्रों ने वहीं शिक्षा पायी थी।

मेरी सम्मति में महर्षि बाल्मीकि भंगी नहीं थे और न ही बाल्मीकिय रामायण से यह प्रकट होता है। पता नहीं किस प्रमाण के आधार पर हरिजन वर्ग उन्हें अपना पूर्वज मानता है। क्या उनके के पास कोई प्रमाण है।

इस लेख में अनेकानेक ग्रन्थों के आधार पर विचार किया जाता है कि महर्षि बाल्मीकि भंगी नहीं थे वरन् ब्रह्माण थे।

'बाल्मीकि रामायण' के निर्माता बाल्मीकिजी एक प्रतिष्ठित महर्षि एवं मर्यादा पुरुषोतम श्रीरामचन्द्र जी के समकालीन थे। उन्हीं के आश्रम में सीता जी ने निवास किया और यमज पुत्र कुश लव को जन्म दिया।

दाक्षिणात्य पाठ के एक प्रक्षेप में राम, लक्षमण तथा सीता चित्रकूट के निकट बाल्मीकि से भेंट करते हैं।

"इति सीतां च रामश्च लक्ष्मणश्च कृतांजलिः।
अभिगम्याश्रमं सर्वे वाल्मीकिमभिवादयन् ॥१६॥
तान्महर्षिः प्रमुदितः पूजयामास धर्मवित्।
आस्यतामिति तोवाच स्व.गतं तं निवेद्य च ॥१७॥

(वा० रामा०, अयोध्याकांड २,५६)

गौड़ीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठों में इस घटना का कोई उल्लेख नहीं मिलता है

उत्तरकांड के अनुसार वाल्मीकि दशरथ के परम सखा थे।

"राज्ञो दशरथस्यैव पितु में मुनिपुंगवः। सखा परमको विप्रो वाल्मीकिः सुमहायशाः॥
(७ । ४७ । १६-७.)

वाल्मीकि रामायण के अन्त में कहा है। **"कृतवान् प्रचेतसः पुत्रस्तद् ब्रह्माप्यन्वमन्यत"** ७।१११।११ इसमें रामायण के प्रणेता श्री-वाल्मीकि को प्रचेता का पुत्र कहा गया है। इसलिए इन्हें 'प्राचेतस' कहते हैं जैसा कि **"मुनिः प्राचेतसस्तदा"** (वा० रा० ७।९३।१६)।

श्री रामचन्द्र जी के अश्वमेध यज्ञ करने पर जब श्री वाल्मीकि ऋषि सीता जी को साथ लाये, तब उन्होंने अपना परिचय दिया कि **"प्रचेतसोऽहं दशम पुत्रो राघव नन्दन। न स्मराम्यनृतं वाक्यम्"** ७। ९६। १८ यही श्लोक, आध्यात्म रामायण, ७। ७। ३१ में भी मिलता है। इसमें वाल्मीकि जी ने अपने आपको प्रचेता का दशवां पुत्र कहा है। इससे ब्राह्मण सिद्ध होते हैं।

वाल्मीकियस्य चरितं चक्रे भार्गवसत्तमः"
(मत्स्य पुराण १२। ५१)

यहां बाल्मीकि जी को भार्गव कहा गया है।

"ऋक्षोऽभूद्भार्गवस्तस्माद् वाल्मीकियोंभिधीयते"
(विष्णुपुराण ३ य अंश, ३ य अध्याय)

'भार्गव' शब्द पर बाल्मीकिय रामायण के रामाभिरामी टीकाकार लिखते हैं:—**"प्राचेत सत्वेन अस्यापि भार्गवत्वम्, भृगोर्वरुण पुत्रत्वाद्, भृगोर्भ्राता भार्गव इत्यन्ये"** (७। ९४। २५)

प्रचेता वरुण को कहते हैं, इधर भृगु वरुण का पुत्र है। भृगु के भ्राता होने से बाल्मीकि को भार्गव कहते हैं।

स्कन्द पुराण ५। १। २४ में बाल्मीकि जी सुमति नामक ब्राह्मण के पुत्र तथा ब्रह्मर्षि कहे गये हैं।

"आध्यात्म रामायण" में बाल्मीकि की कुसं-गति आदि का वर्णन हैं कि—

"अहं पुरा किरातेषु किरातैः सह वर्द्धितः। जन्ममात्रं द्विजत्वं में शूद्राचाररतः सदा" अयोध्या कांड ६। ६५ यहां पर बाल्मीकि जी ने श्रीराम को स्वयं बताया है कि—

"मैं जन्ममात्र से ब्राह्मण हूँ, छोटी आयु में मैं किरातों में रहा, मेरे शूद्रों के समान आचार रहे।"

इससे स्पष्ट हुआ कि बाल्मीकि जी जन्म के ब्राह्मण थे, परन्तु कुसंगति में पड़ कर शूद्रों के काम करने लगे।

डा० शान्तिकुमार नानूराम व्यास भी लिखते हैं कि:—"अध्यात्म रामायण के अनुसार बाल्मीकि ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए थे।"※

'अध्यात्म रामायण' की यह कथा 'आनन्द रामायण' में भी मिलती है, राज्य कांड: अध्याय १४।

कृत्तिवास कृत, रामायण, में इसका किंचित् परिवर्तित रूप पाया जाता है कि वाल्मीकि का नाम 'रत्नाकर' था और वह च्यवन का पुत्र था—

'च्यवन मुनिर पुत्र नाम रत्नाकर'—(कृत्ति-**वासी रामायण पृ० २)**×

सात मुनियों के स्थान पर उनकी भेंट ब्रह्मा तथा नारद से होती है। वैराग्य उत्पन्न होने के बाद रत्नाकर राम नाम जप करने में असमर्थ

※रामायणकालीन समाज, प्रथम संस्करण, पृष्ठ ५।

×रेवरेन्ड फादर कामिल बुल्के एस० जे०, एम० ए०, डि फिल्० कृत "रामकथा" प्रथम संस्करण, पृष्ठ ४०।

हैं। इस पर नारद, मरा, मरा, जपने का आदेश देते हैं।"

परन्तु इस कथा को विद्वान् प्रामाणिक नहीं मानते हैं।

पं० राम लग्न त्रिपाठी, व्याकरणाध्यापक, बी० एन० मेहता संस्कृत विद्यालय, प्रतापगढ़ इस कथा की आलोचना करते हुए लिखते हैं:—

"......यह कथा कहीं लिखी नहीं है और न तो विश्वास के योग्य ही है। राम नाम का महत्व बढ़ाने के लिए किसी राम भक्त ने इस कथा को प्रचलित किया होगा। उसके कथन में कुछ भी आप्त प्रमाण नहीं है। राम नाम तथा अन्य मन्त्रों के जप से मनुष्य का पाप छूट सकता है वह तपस्वी हो सकता है तथा उसके कार्यों की सिद्धि हो सकती है परन्तु रत्नाकर ऐसा मूर्ख उस जप के प्रभाव से वाल्मीकि सरीखे विद्वान् नहीं हो सकता है और न तो वह रामायण ऐसा ग्रन्थ ही बना सकता है। करोड़ों राम नाम के जपने वाले मनुष्य जड़ के जड़ ही हैं। महर्षि बालमीकि ने अपनी विद्वता के प्रभाव से रामायण की रचना गायत्री के अक्षरों पर की है इससे सिद्ध होता है कि बालमीकि गायत्री मन्त्र का जप करते थे जो त्रैवर्णिक विद्वानों के लिए उचित है। यदि राम नाम का जप किए होते तो अवश्य अपने रामायण में कहीं न कहीं राम नाम की प्रशंसा किये होते। शोक है कि बालमीकि ऐसे पवित्र जगत्पूज्य महर्षि के विषय में ऐसी अनर्गल कथा जिस पुस्तक में लिखी गई है उसकी प्रशंसा तथा बाजारों में बिक्री है।"

'वाल्मीकि तुलसी भयो' यह भक्तमाल का कथन ठीक नहीं है।※"

इन उपर्युक्त प्रमाणों के आधार पर महर्षि वाल्मीकि ब्राह्मण सिद्ध होते हैं और उन्हीं के आश्रम में कुश लव ने शिक्षा पायी थी।

गृहस्थाश्रम पर दो अद्वितीय पुस्तकें

विवाह और विवाहित जीवन

लेखकः—गंगाप्रसाद उपाध्याय

आधुनिकता के रंग में रंगा हुआ व्यक्ति विवाह के उद्देश्य के सम्बन्ध में घने अन्धकार में भटक रहा है। उसे प्रकाश दिखाने व शंकाओं का निवारण करने के लिए विद्वान् लेखक ने पुस्तक लिखी है। प्रत्येक युवक गृहस्थ को यह पुस्तक पढ़नी ही चाहिए। मूल्य २॥)

वैदिक गृहस्थाश्रम

लेखकः—विश्वनाथ विद्यालंकार

पण्डित जी वेदों के अच्छे विचारक विद्वान् है वैदिक गृहस्थाश्रम उनके परिपक्व वेदानुशीलन का परिणाम है। वैदिक सूक्तों के प्राय ३०० मंत्रों की श्रृंखलाबद्ध व्याख्या के द्वारा इसमें गृहस्थ सम्बन्धी सभी कर्तव्यों का निर्देश दिया गया है। नये पुराने सभी गृहस्थों के लिए यह अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है। मूल्य ५)

दोनों पुस्तकें एक साथ मंगाने पर डाक खर्च माफ।

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, देहली।

※"रामायण प्रदीप, अर्थात् बालमीकि रामायण की समालोचना" प्रथम खण्ड, प्रथम संस्करण पृष्ठ ३।

गतांक से आगे

॥ ओ३म् ॥

यजुर्वेद के ४०वां अध्याय का स्वाध्याय

[भाष्यकार—महर्षि दयानन्द सरस्वती]

ईशोपनिषद्

अन्यदित्यस्य दीर्घतमा ऋषिः । आत्मा देवता । अनुष्टुप् छन्दः । गान्धारः स्वरः ॥

फिर मनुष्य क्या करें इस वि० ॥

अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात् । इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे ॥ १० ॥

पदार्थः—हे मनुष्यो ! जैसे हम लोग (धीराणाम्) मेधावि योगी विद्वानों से जो वचन (शुश्रुम) सुनते हैं (ये) जो वे लोग (नः) हमारे प्रति (विचचक्षिरे) व्याख्यान-पूर्वक कहते हैं वे लोग (सम्भवात्) संयोगजन्य कार्य्य से (अन्यत्, एव) और ही कार्य वा फल (आहुः) कहते (असम्भवात्) उत्पन्न नहीं होने वाले कारण से (अन्यत्) और (आहुः) कहते हैं (इति) इस बात को तुम भी सुनो ॥१०॥

भावार्थः—हे मनुष्यो ! जैसे विद्वान् लोग कार्य्यकारण रूप वस्तु से भिन्न २ वक्ष्यमाण उपकार लेते और लिवाते हैं तथा उन कार्य कारण के गुणों को जानकर जनाते हैं । ऐसे ही तुम लोग भी निश्चय करो ॥१०॥

सम्भूतिमित्यस्य दीर्घतमा ऋषिः । आत्मा देवता । अनुष्टुप्छन्दः । गान्धारः स्वरः ॥

फिर मनुष्य को कार्य कारण से क्या २ सिद्ध करना चाहिये इस वि० ॥

सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयꣳ सह । विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्यामृतमश्नुते ॥ ११ ॥

पदार्थः—हे मनुष्यो ! (यः) जो विद्वान् (सम्भूतिम्) जिस में सब पदार्थ उत्पन्न होते उस कार्य रूप सृष्टि (च) और उसके गुण, कर्म, स्वभावों को तथा (विनाशम्) जिसमें पदार्थ नष्ट होते उस कारण रूप जगत् (च) और उसके गुण, कर्म, स्वभावों को (सह) एक साथ (उभयम्) दोनों (तत्) उन कार्य और कारण स्वरूपों को (वेद) जानता है वह विद्वान् (विनाशेन) नित्य स्वरूप जाने हुए कारण के साथ (मृत्युम्) शरीर छूटने के दुःख से (तीर्त्वा) पार होकर (सम्भूत्या) शरीर इन्द्रिय और अन्तःकरण रूप उत्पन्न हुई कार्यरूप धर्म में प्रवृत्त कराने वाली सृष्टि के साथ (अमृतम्) मोक्ष सुख को (अश्नुते) प्राप्त होता है ॥११॥

भावार्थः—हे मनुष्यो ! कार्य्य कारण रूप वस्तु निरर्थक नहीं है किन्तु कार्य कारण के गुण कर्म और स्वभावों को जान कर धर्म आदि मोक्ष के साधनों में संयुक्त करके अपने शरीरादि के कार्य कारण को नित्यत्व से जान के मरण का भय छोड़ कर मोक्ष की सिद्धि करो । इस प्रकार कार्य्यकारण से अन्य ही फल सिद्ध करना चाहिये इन कार्य्यकारण का निषेध परमेश्वर के स्थान में जो उपासना उस प्रकरण में करना चाहिये ॥११॥

अन्धन्तम इत्यस्य दीर्घतमा ऋषिः । आत्मा देवता । निचृदनुष्टुप्छन्दः । गान्धारः स्वरः ॥

अब विद्या अविद्या की उपासना का फल कहते हैं ॥

अन्धन्तमः प्र विशन्ति येऽविद्यामुपासते । ततो भूयऽइव ते तमो यऽउ विद्यायांरताः ॥१२॥

पदार्थः—(ये) जो मनुष्य (अविद्याम) अनित्य में नित्य, अशुद्ध में शुद्ध, दुःख में सुख और अनात्मा शरीरादि में आत्मबुद्धि रूप अविद्या उस की अर्थात् ज्ञानादि गुणरहित कारण रूप परमेश्वर से भिन्न जड़ वस्तु की (उपासते) उपासना करते हैं वे (अन्धम, तमः) दृष्टि को रोकने वाले अन्धकार और अत्यन्त अज्ञान को (प्रविशन्ति) प्राप्त होते हैं और (ये) जो अपने आत्मा को पण्डित मानने वाले (विद्यायाम्) शब्द, अर्थ और इनके सम्बन्ध के जानने मात्र अवैदिक आचरण में (रताः) रमण करते (ते) वे (उ) भी (ततः) उस से (भूय, इव) अधिकतर (तमः) अज्ञान-रूपी अन्धकार में प्रवेश करते हैं ॥१२॥

भावार्थः—इस मन्त्र में उपमाल०—जो २ चेतन ज्ञानादि गुण युक्त वस्तु है वह जानने वाला जो अविद्या रूप है वह जानने योग्य है और जो चेतन ब्रह्म तथा विद्वान् का आत्मा है वह उपासना के योग्य है जो इस से भिन्न है वह उपास्य नहीं है किन्तु उपकार लेने योग्य है । जो मनुष्य अविद्या अस्मिता राग द्वेष और अभिनिवेश नामक क्लेशों से युक्त हैं वे परमेश्वर को छोड़ इससे भिन्न जड़ वस्तु की उपासना कर महान् दुख सागर में डूबते हैं और जो शब्द अर्थ का अन्वयमात्र संस्कृत पढ़ कर सत्य भाषण पक्षपात रहित न्याय का आचरण रूप धर्म नहीं करते अभिमान में आरूढ़ हुए विद्या का तिरस्कार कर अविद्या को ही मानते हैं वे अत्यन्त तमोगुण रूप दुःख सागर में निरन्तर पीड़ित होते हैं ॥१२॥

अन्यदित्यस्य दीर्घतमा ऋषिः । आत्मा देवता। अनुष्टुप्छन्दः । गान्धारः स्वरः ॥

अब जड़ चेतन का भेद कहते हैं ॥

अन्यदेवाहुर्विद्यायाऽअन्यदाहुरविद्यायाः । इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे ॥ १३ ॥

पदार्थः—हे मनुष्यो ! जो विद्वान् लोग (नः) हमारे लिये (विचचक्षिरे) व्याख्या पूर्वक कहते थे (विद्यायाः) पूर्वोक्त विद्या का (अन्यत्) अन्य ही कार्य वा फल (आहुः) कहते थे (अविद्यायाः) पूर्व मन्त्र से प्रतिपादन की अविद्या का (अन्यत्) अन्य फल (आहुः) कहते हैं इस प्रकार उन (धीराणाम्) आत्मज्ञानी विद्वानों से (तत्) उस वचन को हम लोग (शुश्रुम) सुनते थे ऐसा जानो ॥१३॥

भावार्थः—अनादि गुण युक्त चेतन से जो उपयोग होने योग्य है वह अज्ञान युक्त जड़ से कदापि नहीं और जो जड़ से प्रयोजन सिद्ध होता है वह चेतन से नहीं। सब मनुष्यों को विद्वानों के संग, योग, विज्ञान और धर्माचरण से इन दोनों का विवेक करके दोनों से उपयोग लेना चाहिये ॥१३॥

विद्यामित्यस्य दीर्घतमा ऋषिः । आत्मा देवता । स्वराडुष्णिक् छन्दः । ऋषभः स्वरः ॥

फिर उसी वि० ॥

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयंसह । अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते ॥ १४ ॥

पदार्थः—(यः) जो विद्वान् (विद्याम्) पूर्वोक्त विद्या (च) और उस के सम्बन्धी साधन उपसाधन (अविद्याम्) पूर्व कही अविद्या (च) और इसके उपयोगी साधन समूह को और (तत्) उम ध्यानगम्य मर्म (उभयम्) इन दोनों को (सह) साथ ही (वेद) जानता है वह (अविद्यया) शरीरादि जड़ पदार्थ समूह से किये पुरुषार्थ से (मृत्युम्) मरण दुःख के भय को

(तीर्त्वा) उल्लंघन कर (विद्यया) आत्मा और शुद्ध अन्तःकरण के संयोग में जो धर्म उस से उत्पन्न हुए यथार्थ दर्शनरूप विद्या से (अमृतम्) नाशरहित अपने स्वरूप वा परमात्मा को (अश्नुते) प्राप्त होता है ॥ १४ ॥

भावार्थः—जो मनुष्य विद्या और अविद्या को उनके स्वरूप से जानकर इन के जड़ चेतन साधक हैं ऐसा निश्चय कर सब शरीरादि जड़ पदार्थ और चेतन आत्मा को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि के लिए साथ ही प्रयोग करते हैं वे लौकिक दुःख को छोड़ परमार्थ के सुख को प्राप्त होते हैं जो जड़ प्रकृति आदि कारण वा शरीरादि कार्य्य न हो तो परमेश्वर जगत् की उत्पत्ति और जीव कर्म उपासना और ज्ञान के करने को कैसे समर्थ हों ? इससे न केवल जड़ न केवल चेतन से अथवा न केवल कर्म से तथा न केवल कर्म से तथा न केवल ज्ञान से कोई धर्मादि पदार्थों की सिद्धि करने में समर्थ होता है ॥ १४ ॥

वायुरित्यस्य दीर्घतमा ऋषिः। आत्मा देवता। स्वराडुष्णिक् छन्द ऋषभः स्वरः ॥

अब देहान्त के समय क्या करना चाहिये इस वि०॥

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तꣳ शरीरम्। ओ३म् क्रतो स्मर। क्लिबे स्मर। कृतꣳ स्मर ॥ १५ ॥

पदार्थः—हे (क्रतो) कर्म करने वाले जीव तू शरीर छूटते समय (ओम्) इस नाम वाच्य ईश्वर को (स्मर) स्मरण कर (क्लिबे) अपने सामर्थ्य के लिये परमात्मा और अपने स्वरूप का (स्मर) स्मरण कर (कृतम्) अपने किये का (स्मर) स्मरण कर। इस संस्कार का (वायुः) धनंजयादिरूप वायु (अनिलम्) कारण रूप वायु को (अमृतम्) अविनाशी कारण को धारण करता (अथ) इसके अनन्तर (इदम्) यह (शरीरम्) नष्ट होने वाला सुखादि का आश्रय शरीर (भस्मान्तम्) अन्त में भस्म होने वाला होता है। ऐसा जानो ॥१५॥

भावार्थः—मनुष्यों को चाहिये कि जैसी मृत्यु समय में चित्त की वृत्ति होती है और शरीर से आत्मा को पृथक होना होता है वैसे ही इस शरीर की जलाने पर्य्यन्त क्रिया करें। जलाने पश्चात् शरीर का कोई संस्कार न करें। वर्तमान समय में एक परमेश्वर की ही आज्ञा का पालन उपासना और अपने सामर्थ्य को बढ़ाया करें। किया हुआ कर्म निष्फल नहीं होता ऐसा मानकर धर्म में रुचि और-अधर्म में अप्रीति किया करें ॥ १५ ॥

अग्ने नयेत्यस्य दीर्घतमा ऋषिः। आत्मा देवता। निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः ॥

ईश्वर किन मनुष्यों पर कृपा करता है इस वि० ॥

अग्ने नय सुपथा राये ऽअस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम ॥ १६ ॥

पदार्थः—हे (देव) दिव्य स्वरूप (अग्ने) प्रकाश स्वरूप करुणामय जगदीश्वर ! जिससे हम लोग (ते) आप के लिए (भूयिष्ठाम्) अधिकतर (नम उक्तिम्) सत्कार पूर्वक प्रशंसा का (विधेम) सेवन करें। इससे (विद्वान्) सब को जानने वाले आप (अस्मत्) हम लोगों से कुटिलता रूप (एनः) पापाचरण को (युयोधि) पृथक कीजिये (अस्मान्) हम जीवों को (राये) विज्ञान धन वा धन से हुए सुख के लिये (सुपथा) धर्मानुकूल मार्ग से (विश्वानि) समस्त (वयुनानि) प्रशस्त ज्ञानो को (नय) प्राप्त कीजिये ॥ १६ ॥

भावार्थः—जो सत्यभाव से परमेश्वर की उपासना करते यथा शक्ति उसकी आज्ञा का पालन करते और सर्वोपरि सत्कार के योग्य परमात्मा को मानते हैं उनको दयालु ईश्वर पापाचरण मार्ग से पृथक कर धर्मयुक्त मार्ग में चला के विज्ञान देकर धर्म अर्थ काम और मोक्ष को सिद्ध करने के लिये समर्थ करता है इससे एक अद्वितीय ईश्वर को छोड़ किसी की उपासना कदापि न करें ॥ १६ ॥

हिरण्मयेनेत्यस्य दीर्घतमा ऋषिः । आत्मा देवता । अनुष्टुप् छन्दः । गान्धारः स्वरः ॥

अब अंत में मनुष्यों को ईश्वर उपदेश करता है ।

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् । योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम् । ओ३म् खं ब्रह्म ॥ १७ ॥

पदार्थः—हे मनुष्यो ! जिस (हिरण्मयेन) ज्योति स्वरूप (पात्रेण) रक्षक मुझ से (सत्यस्य) अविनाशी यथार्थ कारण के (अपिहितम्) आच्छादित (मुखम्) मुख के तुल्य उत्तम अंग का प्रकाश किया जाता (यः) जो (असौ) वह (आदित्ये) प्राण वा सूर्य मण्डल में (पुरुषः) पूर्ण परमात्मा है (सः) वह (असौ) परोक्ष रूप (अहम्) मैं (खम्) आकाश के तुल्य व्यापक (ब्रह्म) सब से गुण कर्म और स्वरूप करके अधिक हूं (ओ३म्) सब का रक्षक जो मैं उसका (ओ३म्) ऐसा नाम जानो ॥१७॥

भावार्थः—सब मनुष्यों के प्रति ईश्वर उपदेश करता है कि हे मनुष्यो ! जो मैं यहां हूं वही अन्यत्र सूर्य्यादि लोक में, जो अन्य स्थान सूर्य्यादि लोक में हूं वही यहां हूं सर्वत्र परिपूर्ण आकाश के तुल्य व्यापक मुझ से भिन्न कोई बड़ा नहीं मैं ही सब से बड़ा हूं । मेरे सुलक्षणों से युक्त पुत्र के तुल्य प्राणों से प्यारा मेरा निज का नाम "ओ३म्" यह है जो मेरा प्रेम और सत्याचरण भाव से शरण लेता उसकी अन्तर्यामी रूप से मैं अविद्या का विनाश कर उसके आत्मा का प्रकाश करके शुभ गुण कर्म स्वभाव वाला कर सत्य स्वरूप का आवरण स्थिर कर योग से हुए विज्ञान को दे और सब दुःखों से अलग करके मोक्ष-सुख को प्राप्त करता हूँ । इति ॥१७॥

इस अध्याय में ईश्वर के गुणों का वर्णन, अधर्म त्याग का उपदेश, सब काल में सत् कर्म के अनुष्ठान की आवश्यकता, अधर्माचरण की निन्दा, परमेश्वर के अतिसूक्ष्म स्वरूप का वर्णन, विद्वान् को जानने योग्य का होना, अविद्वान् को अक्षयपन का होना, सर्वत्र आत्मा जान के अहिंसा धर्म की रक्षा, उससे मोह शोकादि का त्याग, ईश्वर का जन्मादि दोषरहित होना, वेद विद्या का उपदेश, कार्य्य कारण रूप जड़ जगत की उपासना का निषेध, उन कार्य कारणों से मृत्यु का निवारण करके मोक्षादि सिद्धि करना, जड़ वस्तु की उपासना का निषेध, चेतन की उदासना की विधि, उन जड़ चेतन दोनों के स्वरूप के जानने की आवश्यकता, शरीर के स्वभाव का वर्णन, समाधि से परमात्मा में धरके शरीर त्यागना, शरीर दाह के पश्चात् अन्य क्रिया के अनुष्ठान का निषेध, अधर्म के त्याग और धर्म के बढ़ाने के लिये परमेश्वर की प्रार्थना, ईश्वर के स्वरूप का वर्णन और सब नामों से "ओम्" इस नाम की उत्तमता का प्रतिपादन किया है। इससे इस अध्याय में कहे अर्थ की पूर्व अध्याय में का अर्थ के साथ संगति है यह जानना चाहिये ।

[शेष पृष्ठ ६ पर]

दीपावली के उपलक्ष में प्रचारार्थ विद्वानों के ट्रैक्ट मंगावें

प्रत्येक का मूल्य -) सैकड़ा ४)

१ मनुष्य बन—ले० स्वामी वेदानन्द सरस्वती ।
२ गायत्री माता—जगदीशचन्द्र विद्यार्थी ।
३ ईश्वर सिद्धि—पं० रामचन्द्र जी देहलवी ।
४ आस्तिक नास्तिक संवाद—महर्षि दयानन्द ।
५ पितृ श्राद्ध विचार—स्वामी दर्शनानन्द ।
६ सुख का साधन--महात्मा आनन्द स्वामी ।
७ ईश्वरोपासना—पं० रामचन्द्र जी देहलवी ।
८ कल्याणी बन— पं० गणेशदत्त 'इन्द्र' ।
९ आर्यों का आदि देश—काशी नाथ जी शास्त्री ।
१० धर्म और अधर्म— पं० रामचन्द्र देहलवी ।
११ स्वामी श्रद्धानन्द—रामगोपाल विद्यालंकार ।
१२ तत्ववेत्ता दयानन्द—स्वामी श्रद्धानन्द जी ।
१३ पं० लेखराम—रामगोपाल जी विद्यालंकार ।
१४ सीता माता—सरस्वती देवी 'प्रभाकर' ।
१५ गौ माता—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
१६ दयानन्द दिग्विजय—श्री हरिशंकर जी शर्मा कविरत्न
१७ चोटी का महत्व—पं० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री ।
१८ गुरु विरजानन्द—रामगोपाल विद्यालंकार ।
१९ मांस खाना छोड़ दो—पायथा गोरस ।
२० मर्यादा पुरुषोत्तम राम—प्रहलाद 'प्रभाकर' ।
२१ देश सुधार होली—अंगनलाल आर्य ।
२२ मूर्तिपूजा विचार—महर्षि दयानन्द ।
२३ भक्ति के लाभ—आचार्य प्रियव्रत ।
२४ आर्य समाज के उद्देश्य—जगदीशचन्द्र ।
२५ वेदमाता ।
२६ श्रद्धामाता ।
२७ धरती माता ।
२८ धर्म की रक्षा करो—ब्र० प्रभुदत्त जी ।
२९ मनुष्य के कर्तव्य—म० नारायण स्वामी ।
३० सत्संग भजन ।
३१ ऋषि दयानन्द कृत वेदभाष्य का महत्व ।
३२ गोपाल दयानन्द ।
३३ भक्तिवाद की रूपरेखा ।
३४ वैदिक भक्तिवाद ।
३५ अंग्रेजी शिक्षा से हानि ।
३६ सत्य की महिमा—स्वामी सर्वदानन्द ।
३७ आर्य समाज की उन्नति का साधन श्री लालचन्द जी
३८ श्यामाप्रसाद मुकर्जी—श्री प्रेमचन्द ।
३९ वैदिक काल में तोप बन्दूक—शिव पूजन सिंह ।
४० पतिव्रत धर्म—एक विदूषी महिला ।
४१ ब्राह्मण समाज और मूर्ति पूजा—राजेन्द्र जी ।
४२ ईश्वरोपासक दयानन्द—भगवत शरण बी. ए. ।
४३ ईश्वरावतार—स्वामी नित्यानन्द जी ।
४४ कर्मयोगी श्री कृष्ण—प्रेमचन्द ।
४५ ईसाइयों का भयंकर षड़यन्त्र ।
४६ सामाजिक व्यवहार—श्री लालचन्द जी ।
४७ शिक्षा का उद्देश्य—श्री पूर्णचन्द जी ।
४८ ब्रह्मचर्य—जगदीशचन्द्र जी विद्यार्थी ।
४९ वर्ण व्यवस्था—स्वामी दर्शनानन्द ।
५० कर्मव्यवस्था " "
५१ वेदज्ञान—विष्णु दयाल जी ।
५२ तुलसी रामायण और आर्य समाज ।
५३ सत्य की खोज—काशीनाथ शास्त्री ।
५४ मुर्दा क्यों जलावें—प्रेम शरण जी ।
५५ स्वामी दयानन्द का उद्देश्य—स्वामा दर्शनानन्द ।
५६ स्वामी दयानन्द का लक्ष्य— "
५७ ब्राह्मण समाज और मृतक श्राद्ध—पं० राजेन्द्र जी ।
५८ श्रेय और प्रेय—प्रि. नित्यानन्द जी एम. ए. ।
५९ सच्ची पूजा—स्वामी सर्वदानन्द जी ।
६० झांसी वाली रानी ।
६१ महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त-रविवर्मा सि. शास्त्री ।
६२ जीवन की समस्यायें—पं० रामचन्द्र देहलवी ।
६३ देवताओं की कहानी—कैलाश बिहारी ।
६४ रोटी और कपड़ा—प्रेमकुमार पाण्डेय ।
६५ धूम्रपान— " "
६६ सिनेमा और हम— " "
६७ दयानन्द कौन—देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ।
६८ कृण्वन्तोस्वयमार्यम—प्रेमकुमार पाण्डेय ।
६९ चाय भयंकर विष—जगदीश चन्द्र ।
७० मुझे मेरा धर्म क्यों प्यारा है—ज. विद्याथा
७१ ईश्वर सब जगह है—विष्णु दयाल जी ।
७२ ईश्वर में अविश्वास क्यों—रामचन्द्र देहलवी ।
७३ चरित्र निर्माण—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
७४ यज्ञोपवीत महत्व—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
७५ सूर्य और चन्द्र ग्रहण—हरिदेव शास्त्री ।
७६ नास्तिकों को सन्देश—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
७७ वैदिक धर्म ही क्यों—हरिदेव शास्त्री ।
७८ विद्यार्थी और सदाचार—पं० रामचन्द्र देहलवी।

गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क देहली—६

स्वाध्याय योग्य उत्तमोत्तम पुस्तकें

बाल्मीकि रामायण	९)
दयानन्द ग्रन्थ संग्रह	३॥)
सृष्टि का इतिहास	१॥)
उपनिषद आर्यमुनि भाष्य	६)
श्वेताश्वरोपनिषद	१)
प्रभुभक्ति (आनन्द स्वामी)	१॥)
प्रभुदर्शन ...	२॥)
तत्वज्ञान ...	३)
आनन्द गायत्री कथा	॥=)
एक ही रास्ता	॥।)
भगवान शंकर दयानन्द	।=)॥
सत्यनारायण व्रतकथा	॥=)
वैदिक गृहस्थाश्रम	५)
ऋषि-गाथा महाकाव्य	४)
स्वाध्याय संग्रह (वेदानन्द)	२)
वेद परिचय ...	।=)
महर्षि दयानन्द (प्रो० इन्द्र)	२)
आर्य समाज का इतिहास	१।=)
ओंकार निर्णय (शिवशंकर)	१॥)
वैदिक प्रार्थना	१॥)
सचित्र योगासन	१॥)
वहिनों की बातें (सिद्धगोपाल)	१।)
दर्शनानन्द ग्रंथ संग्रह पूर्वार्द्ध	२॥)
,, ,, ,, उत्तार्द्ध	२॥)
दयानन्द चित्रावली	२॥)
भारतीय संस्कृति	॥)
आर्षयोग प्रदीपिका	३॥)
कर्तव्य दर्पण (ना० स्वामी)	१।)
वैदिक संध्या रहस्य	।≡)
आर्य समाज क्या है ?	॥)
संध्या, हवन प्रदीपिका	॥)
सन्ध्याविनय	॥)

प्रार्थना प्रदीप	॥)
संस्कार विधि विमर्श	३)
स्त्रियों का स्वास्थ्य और रोग	३)
विवाह और विवाहित जीवन	२॥)
घर गृहस्थी	३॥)
आर्य सिद्धान्त दीप	१।)
गीत श्रद्धांजलि (भजन)	१।)
सत्यहरिश्चन्द्र नाटक	१।)
यज्ञोपवीत मीमांसा	॥।)
आदर्श सुधारक दयानन्द	॥=)
गृहस्थाश्रम (दयानन्द)	॥=)
बाल शिक्षक ,,	।=)
आत्म कथा ऋषि दयानन्द ,,	।=)
आर्याभिविनय ,,	।=)
वेद विरुद्धमत खण्डन	।=)
शिक्षा पत्री ध्वान्ति निवारण	।=)
भ्रान्ति निवारण (दयानन्द)	।=)
भ्रमोच्छेदन ,,	।)
हुगली शास्त्रार्थ ,,	।)
वेदों का महत्व (दर्शनानन्द)	।)
ईश्वर प्राप्ति ,,	≡)
ईश्वर विचार ,,	=)
जीवात्मा ,,	=)
वेदों की आवश्यकता ,,	-)
वेद किस पर प्रकट हुए ,,	-)
बाल शिक्षा, धर्म शिक्षा ,,	≡)
वर्ण व्यवस्था (दर्शनानन्द)	-)
पितृ श्राद्धविचार ,,	-)
दयानन्द का उद्देश्य ,,	-)
,, ,, लक्ष्य ,,	-)
सत्यार्थ प्रकाश शंका समाधान	।)

स्वामी दयानन्द और वेद	
भक्ष्याभक्ष्य विचार	
वैदिक धर्म शिक्षा	
आर्य सत्संग गुटका	
विश्व विज्ञान परमात्म बोध	
अखण्ड भारत (चन्द्र गुप्त)	
मांस मदिरा का निषेध	
गायत्री व्याख्या	
गीता वचनामृत	
गोरक्षा परम कर्त्तव्य	
स्वास्थ्य विज्ञान	
चित्र चित्र चित्र	
धार्मिक मंत्रों के चित्र साईज- १४॥×२२	
सन्ध्या मन्त्र	
प्रार्थना के ८ मंत्र अर्थ सहित	
आर्य समाज के नियम	
जीवन मृत्यु के प्रश्न	
यम नियम व्याख्या सहित	
संगठन सुक्त	
मन्त्रों के चित्र ११×१४	
ऋग्वेद का प्रथम मन्त्र	
यजुर्वेद का प्रथम ,,	
सामवेद का प्रथम ,,	
अथर्ववेद का प्रथम ,,	
दीर्घ जीवन की प्रार्थना	
धर्मंचर, सत्यंवद	
मंत्रों के चित्र छोटे ७।×५॥	
ओ३म्, नमस्ते, स्वागतम्, वि	
निदेव सहनाववतु, धृतिक्षमा,	
शम्भवायच, त्वमेव माता च पि	
नैनंछिन्दति अहिंसा परमो	
आदि आदि।	

महाभारतम् संस्कृत के विद्यार्थियों के लिये श्री आचार्य राजेन्द्र शास्त्री उपाध्यक्ष दयानन्द वेदविद्यालय देहली द्वारा रचित केवल संस्कृत गद्य में मंगाकर संस्कृत में वार्तालाप करना सीखें। मूल्य सजिल्द का ३) रु०

गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, देहली।

गोविन्दराम हासानन्द सम्पादक तथा मुद्रक जैय्यद प्रेस में छपवाकर वेदप्रकाश कार्यालय नई सड़क देहली से प्रकाशित किया।

॥ ओ३म् ॥

वेद प्रकाश

महर्षि दयानन्द स्मारक भवन

दानवीर सेठ श्री नान जी भाई कालीदास मेहता के १॥ लाख रुपये के दान से मौरवी नरेश का टंकारा स्थित खरीदा गया राज प्रासाद, जिसका उद्घाटन लोक सभा के अध्यक्ष श्री अनन्त शयनम् आयंगर ७ मार्च को महर्षि दयानन्द की बोध रात्रि (महा शिवरात्रि) के दिन कर रहे हैं।

★

श्री आनन्द स्वामी जी की नई पुस्तक

'आनन्द भगवत् कथा अर्थात् सत्यनारायण वृत कथा'

पौराणिक पण्डित जो सत्यनारायण की कथा सुनाते हैं उसमें केवल यही सुनाते हैं इस कथा को सुनने से एक आदमी स्वर्ग गया और दूसरा आदमी जिसने नहीं सुनी उसे नर्क मिला। वह सत्यनारायण की कथा क्या है यह नहीं बताते।

श्री स्वामी जी ने वेद पुराण, उपनिषद्, गीता तथा अन्य कई धार्मिक ग्रन्थों को उद्धृत करते हुए सत्यनारायण की असली कथा लिखी है सत्यनारायण कौन है? उस कथा को सुनने से स्वर्ग मिलता है वह क्या है? सत्यनारायण का आदि और अन्त नहीं तब उसकी अनन्त कथा क्या है? यह इस पुस्तक में आपको ऐसे मीठे और आकर्षक शब्दों में मिलेगी कि देर तक उसका चित्र हृदय से न मिट सकेगा। एक प्रति का मूल्य ॥=) मात्र है। १२ प्रतियों के लिए ७॥) मे

लेखक की अन्य पुस्तकें—तत्त्वज्ञान मूल्य ३), **प्रभुभक्ति** मूल्य १॥), **प्रभुदर्शन** मूल्य २॥) **एक ही रास्ता** मू० ॥।), **आनन्द गायत्री कथा** मू० ॥=), **भगवान शंकर और दयानन्द** मू०

गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क देहली

वेदप्रकाश के चार अमूल्य विशेषांक रियायती मूल्य में

१. सचित्र दयानन्द ग्रन्थ संग्रह

जिसमें ऋषि की आत्मकथा सहित २० पुस्तकों का संग्रह है, प्रत्येक पुस्तक के साथ पुस्तक का रचना काल तथा परिस्थितियों का इतिहास भी है। साथ में ऋषि के ७ असली फोटो चित्र भी हैं।

२. सचित्र वाल्मीकि रामायण

धारावाही हिन्दी में मूल संस्कृत सहित प्रक्षिप्त भाग तथा अनावश्यक कथाओं को निकालकर आर्य-मर्यादानुकूल ग्रन्थ का संकलन किया गया है लग-भग ६००० श्लोकों के साथ सरल भाषा में सजिल्द सुन्दर पुस्तक मूल्य. १२) रियायती मूल्य ६) रु० मात्र है।

३. सृष्टि का इतिहास

आर्य पथिक पं० लेखराम कृत 'तवारिखे दुनिया' का हिन्दी अनुवाद। जिसमें सृष्टि उत्पत्ति वेद सत्शास्त्रों का समय निर्धारण करते समय अधुनिक इतिहासकार, पाश्चात्यों का अनुकरण कर भूल करते हैं उनके लिए यह उपयुक्त मार्ग प्रदर्शक उत्तम पुस्तक है मूल्य २) रियायती मूल्य १॥)

४. बृहदारण्यक कथा माला

बृहदारण्यक उपनिषद् ब्राह्मण ग्रन्थ का एक भाग है, उसकी कथाओं के पाठ और श्रवण से वैदिक संस्कृति का अच्छा ज्ञान प्राप्त होगा पढ़ने योग्य उपयोगी पुस्तक है मूल्य ३) रियायती मूल्य है। प्रत्येक वेदप्रकाश के ग्राहकों को रियायती मूल्य में। डाकखर्च अलग।

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क देहली।

❀ ओ३म् ❀

★ वेद प्रकाश ★

सम्पादक—गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष—७ : फाल्गुन २०१५ मार्च १९५९ : वार्षिक मूल्य २॥)

अंक—४ : दयानन्दाब्द १३४ फाल्गुन १८८० शाके : विदेशों से ५ शि०

वेद सुधा

ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वि यौष्ट
संराधयन्तः सधुराश्चरन्तः।
अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत
सध्रीचानां वः संमनसस्कृणोमि ॥

॥अथर्व ३–३०–५॥

पदानि—ज्यायस्वन्तः। चित्तिनः। मा। वि। यौष्ट। सम्राधयन्तः। सधुराः। चरन्तः।

अन्यः। अन्यस्मै। वल्गु। वदन्तः। आ। इत। सध्रीचीनान्। वः। सम्मनसः। कृणोमि ॥५॥

अन्वयः—ज्यायस्वन्तः, चित्तिनः, संराधयन्तः, सधुराः चरन्तः, मा वि यौष्ट। अन्यः अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत। सध्रीचीनान् वः संमनसः कृणोमि ॥

अर्थ—(ज्यायस्वन्तः) श्रेष्ठों के साथ रहते हुए, (चित्तिनः) स्वयं विद्वान् होकर, (सं-राधयन्तः) सम्थक् रीति से कार्य सिद्धि के प्रयत्न में तत्पर रह कर, (धुराः) कार्य की धुरा सिर पर लेकर, (चरन्तः) आगे बढ़ते हुए (मा वि-यौष्ट) जुदा मत होओ। (अन्यः अन्यस्मै) एक दूसरे के साथ (वल्गु) मीठा (वदन्तः) भाषण करते हुए (एत) आगे बढ़ो। (सध्रीचीनान्) एक उद्देश्य से कार्य करने वाले (वः) आपको (संमनसः) उत्तम एक विचार वाले मन से युक्त (कृणोमि) मैं करता हूँ॥

भावार्थ—जो श्रेष्ठ आप्त पुरुष होंगे, उनके साथ रहो, अपने मनों को सुसंस्कारसंपन्न करो, एक कार्य को मिल-जुल कर एक विचार से करो, कार्य का भार अपने सिर पर लेने को सदा उद्यत रहो, आपस में विरोध न खड़ा करो, परस्पर मीठा भाषण करो, एक ध्येय की सिद्धि के लिए तत्परता के साथ लगो, एक मनोभाव से एकता के लिए यत्न करो; यही सत्यज्ञान है, अतः सब को यही ज्ञान दो।

मानव कल्याण के लिये

महर्षि दयानन्द के उपदेश

—★—

१. जैसे मनुष्य गौ से दूध प्राप्त करके अपने कार्य सिद्ध करते हैं, वैसे हो धार्मिक मनुष्य परमेश्वर की उपासना के द्वारा विद्या आदि श्रेष्ठ-गुणों को प्राप्त करके अपने कार्य पूरे करते हैं।

२. सब मनुष्यों को यह योग्य है कि पहले परोपकारी, विज्ञानी, ब्रह्मनिष्ठ पुरुष को जानकर उसी से प्रश्न-उत्तर की रीति से सब शंकायें मिटानी चाहियें। किन्तु जो विद्याहीन हैं, उनका सङ्ग, प्रश्नोत्तर और विश्वास नहीं करना चाहिये।

३. ईश्वर पुरुषार्थी मनुष्य पर कृपा करता है न कि आलसी पर। क्योंकि जब तक मनुष्य स्वयं पूर्ण पुरुषार्थ नहीं करता, तब तक ईश्वर की कृपा से प्राप्त-पदार्थों को रख भी नहीं सकता। अतः मनुष्यों को पुरुषार्थी होकर ईश्वर-कृपा की इच्छा करनी चाहिए।

४. किसी को केवल परमेश्वर की स्तुतिमात्र करने से ही सन्तुष्ट नहीं होना चाहिए। वरन् 'वह परमेश्वर हमें सर्वत्र देखता है' ऐसा मान कर अधर्म से हटते हुए, ईश्वर की सहायता चाहने वाले मनुष्य को सदा उद्योग में लगना चाहिये।

५. जब तक मनुष्य हठ, छल और अभिमान को छोड़ कर प्रीति पूर्वक एक-दूसरे के उपकार के लिये प्रयत्न नहीं करते हैं, तब तक उनकी विद्या और सुख की वृद्धि नहीं होती।

६. ईश्वर पुरुषार्थी मनुष्य का साथी है, न कि पुरुषार्थ-हीन का। अतः सभी मनुष्यों को उद्योगी और आशावादी होना चाहिये।

७. जब तक मनुष्य प्रभु के प्यारे और बलवान् नहीं होते तब तक शत्रुओं को निर्बल करने की शक्ति उनमें नहीं होतीं।

८. ईश्वर सब जीवों पर कृपा करके उनके कर्मानुसार फल देने के लिये सारा कार्य-जगत् रचता है, और पवित्र करता है। इसी हेतु से सब जड़ पदार्थ और सभी जीव पवित्र हैं। जो मनुष्य पवित्र गुण-कर्मों के ग्रहण करते और पुरुषार्थी होकर जगत् के इन पदार्थों से ठीक-ठीक उपयोग लेते हैं, वही पवित्र होकर सुखी होते हैं।

९. ईश्वर जीव को आशीर्वाद देता है कि जब कोई विद्वान् पुरुष परोपकारी होकर नित्य उद्योग करता है तभी सब पदार्थों से उपकार लेकर सब प्राणियोंको सुखी करता है, वही सब सुख प्राप्त करता है न कि कोई दूसरा।

१०. जैसे संसार में पृथिवी सूर्य्यादि रचे हुए पदार्थ हैं, वे सब के सब, सब के कर्त्ता परमेश्वर का बोध करा के उसी का ही प्रकाश करते हैं, वैसे ही इन उपकारों और ईश्वरीय गुणों को जान कर विद्वान् मनुष्य ऐसे ही कर्म में प्रवृत्त होवें।

——

★ टंकारा की सुखद यात्रा ★

[गोविन्दराम हासानन्द]

टंकारा महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्म भूमि है। "जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसि" जननी के साथ जन्म भूमि भी महान् व्यक्ति के जन्म के कारण विशेष आदर व महत्व रखती है।

महर्षि दयानन्द ऋषि श्रेणी का महापुरुष था जिसने हजारों वर्षों के बाद पुण्य भूमि भारत में जन्म ग्रहण किया। किसी कवि ने ठीक ही कहा है:—

धन्य भई उनकी जननी,
जिन भारत आरत के दुःख टारे।
रवि ज्ञान प्रकाश किया जग में,
तब अन्ध निशा के मिटे सब तारे॥
आन उद्धार किया हमरा जो,
गिरें अब भी तो नहीं कोई चारा।
ऐसे ऋषिवर को सज्जनों,
कर जोड़ दोऊ अब बन्द हमारा॥

ऐसे महापुरुष की जन्म भूमि की यात्रा करने की अभिलाषा किस की न होगी कि वहां जाकर ऋषि के स्मारक का मेला देख आवे और अपनी भक्ति के पुष्पों की भेंट चढ़ा आवें।

टंकारा रेलवे स्टेशन है जो मौरवी से १३ मील ब्रांच लैन पर है। देहली से २२) के लगभग रेल किराया है। देहली से रात्रि को १०। बजे अहमदाबाद ट्रेन में यात्रा करनी होती है, वह दूसरे दिन ७ बजे सांय महेसाना जंकशन पर गाड़ी बदलनी होती है। वहां से मौरवी टंकारा को जाने वाली ट्रेन मिलेगी, तीसरे दिन प्रातः टंकारा पहुँचायेगी।

राजकोट जहां कि सर्व प्रथम आर्य समाज स्थापित हुआ बताया जाता है कुछ समय चलकर बन्द हो गयी, इसके बाद बम्बई नगर में स्थापित हुईइसी से सर्व प्रथम समाज स्थापित होने का महत्व काकड़वाड़ी समाज बम्बई को प्राप्त है।

टंकारा में ऋषि का जो जन्म स्थान है वह एक धनी व्यक्ति के हाथ में है। जो कि आर्य समाजी नहीं, किन्तु ऋषि प्रेमी अवश्य है आर्य विद्वानों का सत्कार करता है। इस शिवरात्रि पर ऋषि जन्म स्थान पर भी यज्ञ कराने की योजना ट्रस्टियों के विचार में है। ऐसे ही:—

अजमेर में जिस स्थान पर ऋषि का निर्वाण हुआ है, वह स्थान भी आर्य समाज के आधीन नहीं, एक राजा के हाथ में है, आर्य जगत् की सर्व मान्य सभा वा नेताओं को चाहिये कि उसे भी प्राप्त करने का प्रयत्न करें।

टंकारा की सुखद यात्रा

१८ जनवरी को पोरबन्दर में टंकारा ऋषि स्मारक के ट्रस्टियों की शिवरात्रि पर होने वाले मेले के प्रबन्ध व योजनाओं के सम्बन्ध में मीटिंग थी, उस में ट्रस्टियों के अतिरिक्त इस मेले के सम्बन्ध में प्रेम रखने वाले कुछ व्यक्तियों को भी आमन्त्रित किया गया था। तदनुसार निमन्त्रण पत्र के साथ ट्रस्ट के मंत्री श्री आनन्द प्रिय जी का विशेष आग्रह युक्त पत्र मुझे मिला तदनुसार ता० १७ को मैं सपत्नी पोरबन्दर पहुँच गया। ता० १८ को श्री नान जी भाई कालीदास मेहता जी के सभापतित्व में मीटिंग हुई कुछ ट्रस्टियों के अतिरिक्त निमन्त्रित व्यक्ति भी उपस्थित थे। वहां जो निश्चय हुआ, गत वेद प्रकाश में संक्षिप्त रूप में पाठक पढ़ चुके हैं।

पोरबन्दर में महात्मा गांधी जी के जन्म स्थान पर सेठ नानजी भाई के ५ लाख के दान

से "कीर्ति मन्दिर" स्थापित है जो कि अति सुन्दर व दर्शनीय है।

पोरबन्दर में ही सेठ नानजी भाई ने ४० लाख रुपये व्यय कर के कन्या गुरुकुल व कन्या महा विद्यालय (कालेज विभाग) स्थापित किया है जहां कि ७-८ वर्ष की कन्याओं को प्राथमिक आर्य संस्कृति की शिक्षा देते हुए कालेज विभाग में बी० ए० तक की शिक्षा बम्बई प्रदेश यूनिवर्सिटी की शिक्षा दी जाती है आगामी वर्ष एम. ए. तक की क्लास खुल जावेंगे, कालेज विभाग डिग्री (सनद) प्राप्त संस्था है। दोनों संस्थाओं के भव्य मकान हैं जिसमें सन्ध्या हवन करने के तथा व्याख्यान गृह विशाल व दर्शनीय है। पास में "राजवाड़ी" स्थान है जहां कि ऋषि दयानन्द के नाम पर भवन बन रहे हैं जिस में दर्शनीय वस्तुओं का संग्रह होगा।

पोरबन्दर में "सुदामा पुरी" व समुद्र तट देखने योग्य है। पोरबन्दर से ही द्वारिका पुरी, व सोमनाथ भारत का ऐतिहासिक मन्दिर जो कि यवनों के प्रलोभन का प्रमुख स्थान रहा देखा। जिसे ८०० वर्ष पूर्व मुहम्मद गौरी ने आक्रमण कर खण्डित कर दिया था। तब से खंडहर के रूप में यों ही पड़ा था। स्वतन्त्रता प्राप्त होने के बाद ९ वर्ष पूर्व भारत के गृह मंत्री श्री बल्लभ भाई पटेल की प्रेरणा से उस खण्डित स्थान पर ही सोमनाथ का भव्य मंदिर बन रहा है, देखने का अवसर मिला सोमनाथ से एक मील पर भगवान कृष्ण चन्द्र के निधन का स्थान है वह भी देखा।

सोमनाथ से ३ मील की दूरी पर वरावल रेलवे स्टेशन है वहां से राजकोट आये, राजकोट से टंकारा के लिये बस में १॥) के करीब भाड़ा है। बस में बैठकर टंकारा पहुँचे। ऋषि का भावी स्मारक स्थल विशाल प्रासाद देखा, रात्रि में टंकारा ग्राम के समाज मंदिर में उसकी प्रधाना बहिन चंचल बेन के अतिथि रहे वहां ही रात्रि व्यतीत की।

टंकारा में श्री अम्बालाल जी पटेल जो १०-११ वर्ष के पुराने दिल्ली के ही परिचित मित्र थे राज प्रासाद के स्थान की मरम्मत व सफाई आदि कार्य के लिये अवैतनिक सेवा प्रदान की है, उन से मिलकर आनन्द हुआ, दूसरे ही दिन श्री सेठ नानजी भाई भी टंकारा पधारे स्थानों की सफाई, परिवर्तन तोड़ फोड़ पंडाल तथा यज्ञ वेदी आदि के स्थानों का निर्णय और आदेश दिये तथा ऋषि स्मारक में भव्य मीनार और टावर का स्थान निश्चय करके राजकोट व पोरबन्दर के लिये मोटर में चल पड़े। हम भी उसी समय टंकारा से मोटर बस में बैठकर मौरवी आये—२४ तारीख की रात्रि को मौरवी से रेल में बड़ौदा के लिये सवार होकर वोयेरमगांव जंकशन पर सौराष्ट्र एक्सप्रेस में बैठ २५ ता० का बड़ौदा पहुँचे।

बड़ौदे में आर्य कन्या महा विद्यालय स्थल में श्री आनन्द प्रिय जी के यहां ८-९ दिन विश्राम किया।

२६ जनवरी का स्वाधीनता दिवस

बड़ौदे में धूम धाम से देखने को मिला, प्रत्येक संस्थाओं को सरकारी बसें मिलती हैं। सजाकर सब एक स्थल पर एकत्रित होकर शहर में घुमाते हैं, जिसकी सजावट सुन्दर—आकर्षक होती है उसे सरकार के द्वारा पुरस्कार मिलता है अतः प्रथम पुरस्कार आर्य कन्या महा विद्यालय को ही प्राप्त हुआ, उसने लारी में भूमिदान का दृश्य उपस्थित किया था। अपनी कन्याओं को ग्रामीण वेशभूषा में सजाकर बैठाया था। एक झोंपड़ी में एक कन्या को श्री विनोबा भावे के रूप में सजाकर बैठाया था। एक इनाम तो इस दर्शनीय सजावट पर मिला दूसरा इनाम भी कन्याओं को इस लिये मिला कि उनका मार्च (संगठित रूप से चलना) नियम बद्ध और आकर्षक था। बड़ौदे से बम्बई आये।

हम आर्य क्यों बनें ?

[लेखक :—**जगदीश चन्द्र विद्यार्थी** विद्यावाचस्पति, आर्योपदेशक]

संसार का प्रत्येक व्यक्ति सुख, शान्ति, आनन्द और अभ्युदय चाहता है। यह मानव मात्र की स्वाभाविक कामना है। ब्रह्मचारी हो या गृहस्थी, वानप्रस्थी हो अथवा सन्यासी, युवा हो अथवा वृद्ध, विद्यार्थी हो अथवा अध्यापक, क्लर्क हो अथवा व्यापारी प्रत्येक मनुष्य सुख एवं शांन्ति को खोज में है। सुख और शान्ति की प्रप्ति के लिये ही ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य को धारण करता है और गृहस्थी गृहस्थ को। सुख शांति कीप्राप्ति के लिये ही मनुष्य नाना पन्थों और सम्प्रदायों में भटकता है।

मनुष्य आत्मकल्याण के लिये मतों और सम्प्रदायों की शरण में जाता है, परन्तु वह भूल जाता है कि इन मतों में सुख शांति की प्राप्ति ऐसे ही असम्भव है जैसे बालू के कणों में से तेल निकालने की आशा करना। विभिन्न मतों में आध्यात्म के साथ अभ्युदय की सर्वथा अपेक्षा है, और वास्तविक बात तो यह है कि आध्यात्म केवल एक ढोंग है, अपने स्वार्थों की सिद्धि के लिये। लेखक अनेक आश्रमों में घूमा है और उनका सूक्ष्म निरीक्षण भी उसने किया है। जिधर देखें उधर दुकानदारी और व्यापार ही दृष्टिगोचर होता है। प्रत्येक आश्रम का महन्त अपनी दुकान को अधिक से अधिक चलाने और चमकाने के लिए शिष्यों की भर्ती करने में लगा हुआ है। कान में "काना बाती कुर्र तू चेली मैं गुर्र" कहा और चेली बना ली। एक ओर योगी होने का दम भरते हैं तो दूसरी ओर अपना उच्छिष्ट भोजन खिलाते हैं। इन मतों, सम्प्रदायों और आश्रमों में पाखण्ड, दम्भ और व्यभिचार होता है। आजकल स्थान स्थान पर ब्रह्मकुमारियों के केन्द्र खुल रहे हैं। यहां व्यभिचार का जैसा भीषण ताण्डव नृत्य होता है उसे कहते हुए कलेजा दहलता है, लेखनी थर्राती है और लज्जा को लज्जा अनुभव होती है। इतना सब कुछ होते हुए भी अपने दम्भों पर पर्दा डालने के लिए असत्य और पाप का आश्रय लिया जाता है।

ढोंग, पाखण्ड, छल और कपट के द्वारा अधर्म जन्य अभ्युदय प्राप्त होने पर भी आत्मग्लानि और परलोक में भयानक अन्धकार। और परलोक में ही क्या इस जीवन में भी घोर आपत्ति और कष्ट। इस विषय की एक सच्ची घटना मैं यहां उद्धृत कररहा हूँ :—

१५ अगस्त १९५३ की बात है। मूसलाधार वर्षा हो रही थी और वर्षा से त्राण पाने के लिए रेलवे स्टेशन के प्रतीक्षालय में जनसमुदाय की अपार भीड़ थी। सहसा 'हाय मैं मरा, कोई मुझे अन्दर कर दो" यह आवाज सुनाई दी।

इस क्रंदन को सुनकर एक व्यक्ति ने पीछे मुड़कर देखा कि मैले-कुचैले कपड़ों में लिपटा एक व्यक्ति सहायता की याचना कर रहा था। वह व्यक्ति उसे अन्दर ले आया और उसे पूछा "तुम कौन हो ?" वह बोला, "बाबू जी ! मैं पापी हूं तीर्थ वासी काक हूँ, मैं शिक्षित अवश्य हूँ परन्तु आरम्भ से कामी और क्रोधी हूँ। मेरा मठ था। तीर्थ यात्री मेरे विश्वास पर मेरे पास आते थे परन्तु मैं उनके साथ विश्वासघात करता था। न जाने कितनों की हत्या करके जल में डाला। नीच सेनीच कर्म मैंने किये। भोले भाले यात्रियों को धोका देकर उनका धन तथा सर्वस्व मैंने हरण किया। कोई पाप ऐसा न था जो मैंने न किया हो और अब उसका फल भोग रहा हूँ। शरीर में कुष्ठ हो चुका है अङ्ग-उपाङ्ग विकृत हो चुके हैं और हाहाकार कर रहा हूँ।" यह है आज के मतों का नग्न चित्र ! संसार के लोगो ! ऐसे स्थानों में सुख और शांति कहां ?

यदि सुख और शांति की अभिलाषा है तो वह आपको आर्य बनने पर अथवा वैदिक धर्म की शरण में आने पर ही प्राप्त हो सकती है और कोई मार्ग नहीं है। वैदिक धर्म में प्रेय और श्रेय, अभ्युदय और निश्रेयस् दोनों का समन्वय है। जीवन रूपी रथ के ये दो पहिये हैं अथवा जीवन-रूपी पक्षी के दो पर हैं जिन के द्वारा यह रथ ठीक प्रकार से चलता है अथवा यह पक्षी भलि भांति उड़ता है। वैदिक धर्म में दीक्षित होने पर प्रथम विशुद्ध अभ्युदय की प्राप्ति है फिर आध्यात्म का पावन आलोक है।

आर्य बनने के लिए यह आवश्यक है कि आर्य की परि- भाषा समझ ली जाये। आर्य कौन हो सकता है अथवा आर्य किस को कहते हैं ? महा-भारत में व्यास जी महाराज ने कहा है कि जिस में निम्नलिखित आठ गुण हों वही आर्य है। महर्षि व्यास के अनुसार वे आठ गुण थे :—

शान्तस्तितिक्षुर्दान्तश्च सत्यवादी जितेन्द्रियः।
दाता दयालुर्नम्रश्च आर्यस्यादष्टभिर्गुणैः॥

जो शान्त हो, सहनशील हो, मन को वश में रखने वाला हो, सत्यवादी हो, इन्द्रियों का विजेता हो, दानी हो, दयालु हो और नम्र हो वही आर्य है।

शान्त:—आर्य वह है जो शान्त हो। आर्य की सबसे पहली विशेषता है कि वह शान्त स्वभाव वाला हो, लड़ाकू, झगड़ालू और क्रोधी न हो। तनिक तनिक सी बातों पर उखड़ ने वाला और क्रोध करने वाला न हो। जो व्यक्ति शांत और गम्भीर न हो उसे आर्य नहीं कह सकते।

बात उस समय की है जब कविवर बनारसीदास जी जीवित थे। एक साधु आगरे में पधारे। साधु की कीर्ति आगरे में फैल गई। स्थान स्थान पर उनके गुणों का गान होने लगा। साधु के गुणों की प्रशंसा सुन कर बनारसीदास जी भी दर्शनों के लिये गये और नम्रता पूर्वक साधु जी से बोले, "श्रीमन् ! क्या मैं आप का शुभ नाम जान सकता हूँ।"

"मुझे शीतलप्रसाद कहते हैं।' साधु ने उत्तर दिया।

कविवर नाम सुन कर वहां होने वाली ज्ञानचर्चा में लीन हो गये परन्तु थोड़ी देर पश्चात् अपना भुलक्कड़ स्वभाव बतलाते हुये साधु से फिर नाम पूछ बैठे। साधु ने कुछ रोषपूर्ण स्वर में पुनः नाम बतला दिया। कविवर को सन्तोष नहीं हुआ। वे तो साधु की पूरी परीक्षा ही लेना चाहते थे। थोड़ी देर पश्चात् पुनः नाम पूछने लगे। अब तो साधु जी का पारा पूरे १०४ डिगरी पर पहुँच गया। कड़क कर बोले, अबे तू भी विचित्र मनुष्य

है। कितनी बार तो कह दिया हमारा नाम है शीतलप्रसाद ! शीतलप्रसाद !! शीतलप्रसाद !!! फिर हमारा मस्तिष्क क्यों चाटता है।"

कविवर ने साधु की यह क्रोध मूर्ति देखी तो उठकर चल दिये और जाते जाते बोले, "महाराज ! आपका नाम शीतल प्रसाद नहीं ज्वाला प्रसाद प्रतीत होता है।"

ऐसा अशान्त व्यक्ति आर्य नहीं है। आप महर्षि दयानन्द के जीवन को देखिये। उन्हें कितने कष्ट दिये जाते हैं, कितना अपमानित किया जाता है, ईंट और पत्थर फैंके जाते हैं, विष तक दिया जाता है परन्तु वे शांत हैं, क्रोध नहीं करते। अपकारी का भी उपकार करते हैं। वे थे सच्चे आर्य।

तितिक्षुः—आर्य वह है जो सहनशील हो। मनुष्य के लिये शान्ति और एकाग्रता को भंग करने वाली सम्पूर्ण आन्तरिक और बाह्य परिस्थितियों तथा वातावरण को अपने अनुकूल करना तो सर्वथा असम्भव है। अपनी शान्ति को चिरस्थाई बनाने का एक ही मार्ग है कि मनुष्य को सहनशील बनना चाहिये। "The man who controls himself controls the world." अर्थात् जो अपने ऊपर नियन्त्रण रख सकता है वह संसार पर नियन्त्रण कर सकता है। महर्षि व्यास जी ने कहा है:—

न स्वसुखे वै कुरुते प्रहर्षं,
नान्यस्य दुःखे भवति प्रहृष्टः।
दत्वा पश्चात् न कुरुतेऽनुतापं,
स कथ्यते सत्पुरुषार्यशीलः॥

जो सुख प्राप्त होने पर हर्ष से फूल नहीं जाता, जो दूसरे को दुःखी देख कर प्रसन्न नहीं होता, जो दान देकर फिरपश्चाताप नहीं करता, सत्पुरुष ऐसे व्यक्ति को आर्य कहते हैं। जिस स्थिति और परिस्थिति में हो उसमें ही प्रसन्न हो वही व्यक्ति आर्य कहलाने का अधिकारी है।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम सच्चे आर्य थे। राज्य प्राप्त होने पर उन्हें हर्ष नहीं हुआ और वन को जाते समय उनके मुखमण्डल पर विषाद की रेखा नहीं थी। बाल्मीकि जी ने लिखा है:—

न वनं गन्तुकामस्य त्यजतश्च वसुन्धराम्।
सर्वलोकातिगस्येव लक्ष्यते चित्तविक्रिया॥

वन को प्रस्थान करते समय और धनधान्य से भरपूर नानारत्ना वसुन्धरा का त्याग करते समय हर्ष और शोक से रहित योगियों की भांति श्री रामचन्द्र जी के मुख पर विकार का कोई चिह्न नहीं था। ऐसा सहनशील व्यक्ति ही आर्य है।

दान्तः—आर्य वह है जो मन को अपने वश में रखने वाला हो। मन बड़ा चंचल है, वेद में कहा है :—

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु॥ (यजु० ३४।१)

जो दिव्य गुण युक्त मन जागृत अवस्था में दूर दूर भागता है। कभी आकाश में पहुँचता है, कभी पाताल में, कभी वायु से अठखेलियां करता है, तो कभी सागर की तरंगों से और कभी हिमालय के हिमाच्छादित शिखरों पर जा विराजता है, वही शक्ति शाली मन सोते हुये भी इसी प्रकार घूमता रहता है। जो इन्द्रियों को विषयों की ओर प्रवृत्त करने वाला और ज्योतियों की ज्योति है वह मेरा मन शुभ संकल्प करने वाला हो।

गीता में भी इस मन की चंचलता बताये हुये व्यास जी ने अर्जुन से कहलवाया है :—

चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्॥
(गीता ६।३४)

हे कृष्ण ! यह मन बड़ा चञ्चल, हठीला, बलवान् और दृढ़ स्वभाव वाला है। इसको वश में करना मैं वायु की भांति कठिन समझता हूँ।

निस्सन्देह मन में बड़ी भारी शक्ति है और यह चंचल भी बहुत है परन्तु साधना के द्वारा, निरन्तर अभ्यास से इसे वश में किया जा सकता है। इसे वश में करने के उपाय बताते हुए श्री-कृष्ण कहते हैं :—

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥
(गीता ६।३५)

सचमुच मन बहुत चञ्चल है और कठिनता से वश में होने वाला है परन्तु अभ्यास—बारम्बार प्रयत्न और वैराग्य से इसे वश में किया जा सकता है।

जब अभ्यास और वैराग्य के द्वारा यह मन वश में हो जाता है तो फिर यह कुपथगामी नहीं हो सकता। यह अशुभ संकल्प कर ही नहीं सकता। महर्षि दयानन्द ने इसे अपने वश में किया था। महर्षि दयानन्द एक स्थान पर बैठे थे। एक नवयुवक आया और स्वामी जी से कहने लगा, "स्वामी जी काम के विचार आपके हृदय में आते तो अवश्य होंगे परन्तु आप उन्हें अपनी संकल्पशक्ति से दबा देते होंगे।" स्वामी जी ने गर्दन झुका कर अपने सम्पूर्ण जीवन पर दृष्टि डाली और कहा, "प्रिय नवयुवक ! मेरे सम्पूर्ण जीवन में एक बार भी ऐसा विचार नहीं आया। मुझे इस विषय में सोचने के लिए अवकाश ही नहीं है।" जो व्यक्ति अपने मन पर ऐसा संयम रखता है उसे कदापि कुपथगामी नहीं होने देता वही व्यक्ति आर्य है।

सत्यवादी:—जो व्यक्ति मन, वचन और कर्म से सत्य बोलता है वही आर्य है। सत्य का महत्व बतलाते हुये बाल्मीकि जी ने लिखा है :—

सत्यमेवश्वरो लोके सत्ये धर्मः सदाश्रितः ।
सत्यमूलानि सर्वाणि सत्यान्नास्ति परं पदम् ॥

संसार में सत्य ही ऐश्वर्य है, सत्य से ही धर्म टिका हुआ है। सब का मूल आधार सत्य ही है, सत्य से बढ़कर कुछ नहीं हैं।

सन्त तुलसी दास जी ने भी कहा है:—

सांच बराबर तप नहीं झूंठबराबर पाप।
जा के हृदय सांच है वाके हृदय आप ॥

जो इस सत्य धर्म का पालन करता है वही आर्य है। महाराजा हरिश्चन्द्र सच्चे आर्य थे। उनका यह अटल नियम था:—

चन्द्र टरै सूरज टरै टरे जगत् व्यवहार।
पै दृढ़ श्री हरिश्चन्द्र को टरै न सत्य व्यवहार ॥

अपने सत्य के लिये हरिश्चन्द्र ने अपने पुत्र को बेच दिया, पत्नी को भी बेच दिया और स्वयं भी एक चाण्डाल के हाथों बिक गये, परन्तु अपने सत्य व्रत पर आंच न आने दी। सत्य का दृढ़ता से

[क्रमशः]

★ वेद प्रकाश ★

[फार्म नं० ४ "प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट के अन्तर्गत"]

१—प्रकाशन का स्थान	... ...	दिल्ली
२—प्रकाशित होने का समय	...	मासिक
३—मुद्रक का नाम	...	गोविन्दराम हासानन्द
राष्ट्रीयता	... ...	भारतीय
पता	...	नई सड़क दिल्ली
४—प्रकाशक का नाभ	...	गोविन्दराम हासानन्द
राष्ट्रीयता	... ...	भारतीय
पता	...	नई सड़क दिल्ली
५—सम्पादक का नाम	...	गोविन्दराम हासानन्द
राष्ट्रीयता	... ...	भारतीय
पता	...	नई सड़क दिल्ली
६—पत्र के मालिक का नाम		गोविन्दराम हासानन्द
व पता	...	नई सड़क दिल्ली

मैं गोविन्दराम हासानन्द घोषित करता हूँ कि उपर्युक्त ब्यौरा बिलकुल ठीक है।

—गोविन्दराम हासानन्द।

॥ ओ३म् ॥

न तस्य प्रतिमा अस्ति

[लेखक—श्री "सत्यभूषण" "वेदालंकार" एम० ए०, नई दिल्ली]

यजुर्वेद ३२ अध्याय का तीसरा मन्त्र इस प्रकार है :—

"न तस्य प्रतिमा अस्ती यस्य नाम महद्यशः। हिरण्यगर्भ इत्येष मा मा हिंसीदित्येषा यस्मान्न जात इत्येषः" ॥

इस मन्त्र का अर्थ महर्षि दयानन्द जी ने इस प्रकार लिखा है—हे मनुष्यो ! (यस्य) जिसका (महत्) पूज्य बड़ा (यशः) कीर्ति करने द्वारा धर्म युक्त कर्म का आचरण ही (नाम) नामकरण है, जो (हिरण्यगर्भः) सूर्य, बिजली आदि पदार्थों का आधार (इति) इस प्रकार (एषः) अन्तर्यामी होने से प्रत्यक्ष जिसकी (मा) मुझको (मा, हिंसीत्) मत ताड़ना दे वा वह अपने से मुझको विमुख मत करे (इति) इस प्रकार (एषा) यह प्रार्थना वा बुद्धि और (यस्मात्) जिस कारण (न) नहीं (जातः) उत्पन्न हुआ (इति) इस प्रकार (एषः) यह परमात्मा उपासना के योग्य है (तस्य) उस परमेश्वर की (प्रतिमा) प्रतिमा, परिमाण, उसके तुल्य अवधि का साधन, प्रतिकृति, मूर्ति वा आकृति (न अस्ति) नहीं है।

इस मन्त्र का देवता अथवा विषय हिरण्यगर्भः, परमात्मा है। परमात्मा ही सब का पूजनीय उपास्य देव है। उसका नाम स्मरण यही है, कि हम धर्मयुक्त आचरण करें। केवल तोते की तरह नाम रटने से कोई लाभ नहीं। "शास्त्राण्यधीत्यापि भवन्ति मूर्खाः, यस्तु क्रियावान् पुरुषः स पंडितः। सुचिन्तितं चौषधयातुराणां, न नाममात्रेण करोत्यरोगम्"। कवि का यह कथन उपयुक्त ही है, कि शास्त्र पढ़ कर भी लोग मूर्ख होते हैं, जो शास्त्रों को अपने जीवन में क्रियात्मक रूप देता है, वही पंडित है। औषध का नाम लेने मात्र से किसी रोगी का रोग दूर नहीं होता। "तज्जपस्तदर्थ भावनम्" योग द० समाधिपाद सूत्र २० ओ३म् का जप क्या है, उसके अर्थ की भावना ओ३म् का जाप करते हुए तथा उसका चिन्तन उसके अर्थ पर मनन करके निरन्तर उसे जीवन में चरितार्थ करते हुए ईश्वर भक्ति में चित्त एकाग्र हो जाता है। इस विषय में एक कथा शिक्षा के योग्य है। गुरु द्रोणाचार्य के आश्रम में कौरव और पांडव पढ़ा करते थे। एक बार गुरु जी ने पाठ दिया "सत्य बोलो और क्रोध मत करो।" सब ने पाठ शीघ्र ही सुना दिया, पर मास बीतने के बाद भी युधिष्ठिर ने पूरा पाठ नहीं सुनाया। इस पर द्रोणाचार्य को क्रोध आया। युधिष्ठिर ने उसे सहन कर लिया और केवल यही उत्तर दिया, गुरु जी ! मुझे अभी आधा पाठ याद हुआ है। क्रोध तो मैंने आप के पीटने पर भी नहीं किया, पर सत्य अभी पूरा नहीं बोल पाता। इसे कहते हैं—आचरण।

परन्तु आचरण कैसा हो, धर्मयुक्त, अधर्मयुक्त

नहीं। पाप का आचरण नहीं। "यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धि सधर्म" वै० द०। जिससे हमारी ऐहलौकिक सिद्धि हो, उसे धर्म कहते हैं। धर्माचरण से मनुष्य इहलोक और परलोक दोनों में सफलता प्राप्त करता हैं। स्वर्ग और नरक इसी संसार में हैं। "स्वः" सुख का नाम है **"स्वः सुखं गच्छति यस्मिन् स स्वर्गः" अतो विपरीतो दुःख भोगो नरक इति**। जो संसारिक सुख है वह सामान्य स्वर्ग और जो परमेश्वर की प्राप्ति से आनन्द है वही विशेष स्वर्ग कहलाता है। देखो, सत्यार्थ प्रकाश, ९ म० समुल्लास पृष्ठ १५७ महर्षि दयानन्द जी ने हमें यही बताया है, कि धर्माचरण करने से ही स्वर्ग, सुख प्राप्त होता है, और विषय-तृष्णा में फंसने से ही नरक प्राप्त होता हैं। म० तुलसीदास लिखते हैं :—

"सोचिअ विप्र जु वेद—विहीना,
तजि निज धरमु विषय लव लीना"।

वेद–विहीन और स्वधर्म को छोड़कर विषयों में लीन आसक्त ब्रह्मण को शोक करना चाहिए। वह अन्तर्यामी घट-घट वासी प्रभु, जो सूर्य आदि पदार्थों का आधार है **"तस्य भासा सर्वमिदं विभातिः"** उप०—मुझे अपनी आज्ञा से विमुख मत करे। ईश्वर की आज्ञा पर चलने से ही प्राणिमात्र को सुख प्राप्त हो सकता है, अन्यथा नहीं। सत्कर्मों का आचरण ब्रह्मचर्य, अहिंसा, शौच, सन्तोष, तप आदि यम-नियमों का पालन ही ईश्वरीय आज्ञा है। इसके विपरीत धर्माचरण पाप है।

उस सर्व व्यापी प्रभु की कोई प्रतिमा, परिमाण, प्रतिकृति आदि नहीं। "दियर इज नो कौउन्टर पार्ट ऑफ हिम" "ग्रीफिथ"। **न हि तस्य प्रतिमानं अस्ति** (सायण) प्रभु की कोई मूर्ति नहीं। वह पत्ते पत्ते, कण कण में है।

बोध-प्रहर की लालिमा !

बोध प्रहर की लालिमा, दिव्य पुंज अविराम।
कोटि कोटि जन कर रहे, तुमको कोटि प्रणाम।१।
कोटिन पार उतार कर, दीनी दीप्ति ललाम।
तुमसे जगती धन्य है, धन्य राष्ट्र सम्मान।२।
घोर अंधेरा लखि यहाँ, उदय हुआ रवि-ज्ञान।
कण कण में अज्ञान था, प्रति मन में अभिमान।३।
सभी पुजारी मूर्ति के, भूले थे पथ मूढ़।
तूने स्वयं प्रदीप्त हो, राह बतायी गूढ़।४।
तेरी गरिमा का करे, कौन जगत में गान।
दयानन्द सी देन तब, राष्ट्र पूज्य सम्मान।५।
अणु अणु में नव शक्ति है, प्रति मन में उल्लास।
हर्षित हो हम सोचते, तुझ से ज्ञान प्रकाश।६।
निशा घोर पथ दूर है, और भ्रमित मन यान।
ठौर ठौर अज्ञान गढ़, रवि का दूर निशान।७।
दीप दीप्त स्वर्णिम बने, तेरी भाषा कांत।
थका हुआ जग पा सके, तुझ से मानस शांत।८।
भ्रांत भावना भूल कर, सब जागें अनजांन।
भ्रमित मूर्ति से याचना, छांड़ि करें प्रभु गान।९।
सुषमा ज्योतित उर जगे, लख लख तेरी शान।
तेरी स्मृति से हो पुलक, पुलकित निशा विहान।१०।
नीरस जड़ता जड़ भगे, रहे न अघ का लेश।
जग में ज्ञान-विशान का, दीखे प्राण विशेष।११।
आर्य भावना बल बढ़े, बढ़े वेद अनुराग।
दूर निराशा घन भगें, जग विजयी हो राग।१२।
धन्य धन्य तव नाम है, धन्य धन्य तव काम।
पुनि पुनि ज्ञान बिभा भरे, गुण पूरित वरदान।१३।

"हर जगह मौजू है, पर वह नजर आता नहीं,
योग साधन के बिना उसको कोई पाता नहीं"।

न तस्य प्रतिभा अस्ति" वेद की सही घोषणा है। ईश्वर का यही स्वरूप है।

॥ ओ३म् ॥

सत्यार्थप्रकाश

बड़े अक्षर व बड़ी साइज का टिप्पणियों सहित संस्करण

टिप्पणियों के लेखक—आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् 'आर्य-सिद्धान्त-सागर' के यशस्वी लेखक,

शास्त्रार्थ महारथी श्री डा० अमरसिंह जी आर्य मुसाफिर

स्वनाम धन्य स्वर्गीय श्री स्वामी वेदानन्द जी ने जो टिप्पणियों सहित मोटे अक्षर और बड़ी साइज का सत्यार्थप्रकाश प्रकाशित किया था, वह अब अप्राप्त है।

स्वामी वेदानन्द जी ने अपने प्रकाशित ग्रन्थ में लिखा है कि सत्यार्थप्रकाश के अनेक स्थानों पर टिप्पणियां लिखी जायं तो यह एक प्रकार से सत्यार्थ प्रकाश का भाष्य बन जावेगा। इसलिए सब स्थानों पर (स्वामी वेदानन्द जी ने) टिप्पणियां विस्तार भय से नहीं लिखीं।

पं० अमरसिंह जी ने स्वामी जी द्वारा लिखी टिप्पणियों से लाभ उठाते हुए और भी अनेक स्थानों पर टिप्पणियां लिखी हैं। इसे एक प्रकार से सत्यार्थ प्रकाश का भाष्य समझना चाहिए।

कैसा होगा, क्या साइज व कैसे अक्षर होंगे, कैसी उपयोगी टिप्पणियां होंगी, इसके लिए नमूने की प्रति बिना मूल्य मंगाकर अथवा लेजाकर देख सकते हैं।

निम्न प्रकार की विशेषताएं होंगी

१. अजमेर वैदिक मन्त्रालय द्वारा प्रकाशित वर्तमान संस्करण के अनुकूल कुछ भी परिवर्तन किये बिना मोटे अक्षरों में मूल पाठ छापा जायगा।

२. पाद टिप्पणियों में वेदादि सत् शास्त्र, पुराण, जन ग्रन्थ इंजिल (बायबल) और कुरान के प्रमाणों से ऋषि दयानन्द के दिये वाक्य तथा सिद्धान्तों की पुष्टि की जायेगी। जिससे अनेक शंकाओं का समाधान हो जायेगा।

३. सत्यार्थप्रकाश में दिये प्रमाणों के पते जो ऋषि ने नहीं दिये वह भी यथाशक्ति इस संस्करण में दिये जायेंगे।

४. प्रत्येक विषय का पैराग्राफ अलग २ होगा।

५. प्रत्येक समुल्लासों के विषयों के पैराग्राफ के नम्बर दिये जायेंगे जैसा कि ऋषि दयानन्द ने १३ वें और १४ वें समुल्लासों में दिये हैं जिस से उद्धरण देने में लेखकों तथा व्याख्याताओं को विशेष सहूलियत होगी, क्योंकि जितने भी संस्करण निकले हैं उन सब की पृष्ठ संख्या एक नहीं। इन नम्बरों से विशेष सहूलियत होगी जैसा कि वेद, शास्त्र, मनु० गीता आदि में नम्बर होते हैं।

७. पुस्तक के अन्त में अकारादि क्रम से प्रमाण सूची तथा विषय शब्दानुक्रमणिका दी जायेगी।

८. ऋषि की आत्म-कथा दी जावेगी जो कि उन्होंने पूना में अपने व्याख्यानों में तथा थियासोफिस्ट पत्र में लेखबद्ध कर दी थी।

९. ऋषि के असली फोटो की प्रतिलिपियां भी इसमें विवरण वार जहां जहां ऋषि भक्तों ने ऋषि के फोटो लिये थे देंगे।

१०. मूल्य सर्वसाधारण के सहूलियत के लिए सुगम रहेगा। अर्थात् सुनहरी पूरे कपड़े की पक्की जिल्द का मूल्य १५) रु० प्रति पुस्तक होगा, डाक खर्च व पैकिंग खर्च पृथक् होगा।

जो सज्जन अग्रिम ग्राहक बनेंगे उनसे १३) लिए जा रहे हैं। आप भी १३) भेज कर अपनी प्रति सुरक्षित करा लें। या २) भेज कर अपनी प्रति सुरक्षित करा लें।

प्रत्येक समाज के मंत्री एवं अधिकारी वर्ग से प्रार्थना है कि अपने सदस्यों को इस संस्करण की सूचना देकर ग्राहक बनाकर सहयोग प्रदान करें।

भवदीय—**गोविन्दराम हासानन्द** वेदप्रकाश कार्यालय, नई सड़क, दिल्ली।

गतांक से आगे]

धर्म नगरी

(सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर एक मनोरञ्जक गाथा)

[लेखक–श्री मदनजित् आर्य्य वैदिक धर्म विशारद, फ़िरोजपुर शहर]

जिज्ञासु महोदय के आन्तरिक हृदय में भारतवर्ष की दुर्दशा का चित्र बार बार आ रहा था कि यह मूर्ति पूजा ही से रसातल को गया। अतएव वह आज समय से पूर्व ही सभा मंडप में चला गया और जिस समय धर्मराज जी ने सभापति के आसन को ग्रहण करते हुए यह कहा कि भाइयो! गत अधिवेशन पर मूर्तिपूजा के ऊपर बोल रहा था इस लिए जिस किसी भाई के मन में शंका हो वह यहां पूर्व ही हमें बतादे, जिज्ञासु जी उठ खड़े हुए और हाथ बांधकर कहा कि महाराज! जब ईश्वर निराकार है तो उसका ध्यान करना असम्भव है और इसलिये साकार मूर्ति के सामने हम परमेश्वर का ही स्मरण करते हैं। इस पर महाराज जी ने पं० वेदभानु जी से प्रार्थना की, आप इस प्रश्न का समाधान करें। पं० जी ने कहा कि जब जिज्ञासु स्वयं ही ईश्वर को निराकार कहता है तो उसकी मूर्ति कदापि नहीं बन सकती, साकार पदार्थ के ही चित्रादि बना करते हैं और यदि यह कहो कि इस पत्थर की मूर्ति को भी ईश्वर ने बनाया है तो ईश्वर ने पहाड़, जंगल नदी, सूर्य, चन्द्र भी बनाये हैं। उनको देख करके ही प्रभु का स्मरण कर लिया करो। यदि मनुष्य की बनाई हुई मूर्ति ही के दर्शन से स्मृति जागती है तो जब यह न होगी तो ईश्वर को अनुपस्थित मानकर कुकर्मादि पाप करने लगोगे। अतः उस सर्व व्यापक सर्वान्तिर्यामी ईश्वर को हर समय हर क्षण हर स्थान पर ही मानो तभी पापों से बचोगे। और जो नाम स्मरण करना चाहते हो तो वेदोक्त रीति से स्मरण करो अर्थात् जैसे ईश्वर न्यायकारी है तो उपासक भी स्वयं सब से न्याय करे तो उसका कल्याण हो जायेगा। इतने पर एक और नवयुवती खड़ी हो गई और कहने लगी कि पण्डित जी, यह जो शिव, कृष्ण, राम, गणेशादि के रूप में परमात्मा ने अवतार लेकर जनता का उद्धार किया। इसी कारण उनकी मूर्तियों का ही पूजन हम लोग करती हैं। क्या यह सब बात झूठी हैं? पण्डित जी ने कहा, देवी जी यह सब कुछ झूठा है क्योंकि वेदादि सत्शास्त्रों में ईश्वर को अज, अमर कहा गया है और युक्ति से भी सिद्ध नहीं हो सकता, क्योंकि जो ईश्वर आकाश वत् सर्वव्यापक अनन्त और सुख दुःख से रहित है। वह किस प्रकार एकदेशी होकर जन्म मरण के चक्कर में आवेगा। अब तो स्वयं आप

ने भी स्वीकार कर लिया है कि ये मूर्तियां ईश्वर की नहीं अपितु उन शिव, गणेश, कृष्णादि पुरुषों की हैं। संसार भर में कहीं भी आप चले जायें परमात्मा का कोई मन्दिर नहीं मिलेगा। कृष्ण, राम, शिव, हनुमान, काली दुर्गा, भैरवादि के ही मिलेंगे। कई लोग यह कह देते है कि मूर्ति में भी प्रभु व्यापक है इसलिये हम भावना करके ही पूजा कर लेंगे क्योंकि कहा भी है।

न काष्ठे विद्यते देवो न पाषाणे न मृण्मये,
भावे हि विद्यते देवस्तस्माद्भावो हि कारणम्।

परमेश्वर देव न काष्ठ न पत्थर में न मिट्टी में मौजूद है परञ्च वह जहां कही भी भावना कर लो वहां ही परमेश्वर सिद्ध है। परन्तु यह बात ठीक नहीं है। कारण जब परमेश्वर सर्वव्यापक है तो किसी एक वस्तु में प्रभु की भावना करना अन्यत्र न करना यह ऐसी बात है कि जैसी चक्रवर्ती राजा को सब राज्य की सत्ता छुड़ा के उसको एक छोटी सी झोंपड़ी का स्वामी मानना। जब ईश्वर को व्यापक मानते हो तो पुष्प चन्दनादि में भी व्यापक है, उसको क्यों चढ़ाते हों। इन सब पदार्थों में ईश्वर व्यापक है अतः क्या तुम व्याप्य की पूजा करते हो या व्यापक की यदि यह कहो कि व्यापक की करते हैं तो पाषाणादि लकड़ी पर चन्दन पुष्पादि क्यों चढ़ाते हो? और यदि यह कहो कि व्याप्य की करते हो तो हम परमेश्वर की पूजा करते हैं ऐसा झूठ क्यों बोलते है? सत्य कह दो कि हम पत्थर के पुजारी हैं।

रह गई तुम्हारी बात भावना की, क्या यह सच्ची है व झूठी? यदि सच्ची कहो तो तुम्हारी भावनानुसार ईश्वर बंध जावेगा। और मिट्टी में सोना, रेत में शक्कर तथा जल में घृत की भावना करके क्यों नहीं बना लेते। अतः आग में अग्नि, जल में जल और पत्थर में पत्थर की भावना ही सच्ची भावना और अग्नि में जल, मिट्टी में खांड की भावना अभावना-मिथ्या ज्ञान है। कई भाई मंत्रों के आवाहन से 'प्राण प्रतिष्ठा' करना कहते हैं। यह भी ठीक नहीं। यदि प्राणों का आना स्वीकार करते हो तो मूर्ति चेतन क्यों नहीं हो जाती। सुनो मूर्खो, पूर्ण परमात्मा न तो कहीं आता और न जाता है वह एक रस है। यदि मंत्र बल से परमेश्वर को बुला लेते हो तो अपने सम्बन्धी के प्राण भी मंत्रों से बुला लिया करो। यह सब पोपों की ठग विद्या है। वेदों में स्थान २ पर मूर्तिपूजा का खण्डन मिलता है। यथा **न तस्य प्रतिमा अस्ति, अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते।** इस प्रभु की कोई मूर्ति, प्रतिमा या परिमाण नहीं। जो प्रभु के स्थान पर प्रकृति के उपासक हैं वह घोर अंधकार में गिरते हैं। और मूर्ति पूजा पाप है, पुण्य नहीं, क्योंकि वेद विहित नहीं। और स्थूल के अभ्यास से सूक्ष्म विद्या का अभ्यास जो लोग मूर्ति पूजा को कहते है वह भी ठीक नहीं क्योंकि जड़ मूर्ति से मनुष्यों का ज्ञान नहीं बढ़ सकता अपितु ज्ञानियों की सेवा, स्वाध्याय करने से ही बढ़ता है। मूर्ति पूजा प्रथम सीढ़ी नहीं, खाई है, जिस में गिर कर आयु भर निकल नहीं सकता। सत्य भाषणादि तो साधन हैं। साकार वस्तु में भी कभी मन स्थिर नहीं हो सकता क्यों कि मूर्ति के अवयवों में उसका ध्यान फिरता रहेगा। यदि साकार में ध्यान स्थिर हो जाना स्वीकार कर लोगे तो जगत में मनुष्य, स्त्री, बच्चे सम्बन्धी आदि में सारी आयु फंसा रहता है। किसी का मन स्थिर नहीं होता। इसलिये मूर्तिपूजा करना अधर्म है। दूसरा करोड़ों रुपये मन्दिरों में व्यय करके दरिद्र बनते हैं। तीसरे स्त्री पुरुषों का मेला होने से व्यभिचार, लड़ाई बखेड़ा होता है। चौथा इसी मूर्ति को ही धर्म, अर्थ, काम मोक्ष का साधन मान कर पुरुषार्थ रहित होकर

मनुष्य जन्म अकारथ खोते हैं। पांचवी हानि, नाना प्रकार के मतों की उत्पत्ति से एकता का नाश होता है छटो उसी मूर्ति के भरोसे से शत्रु का पराजय स्वीकार कर और अपना विजय मान बैठते हैं। सातवीं परमेश्वर के नाम पर झूठ मूठ से पत्थर धर कर उसके कोप का भागी बनना आठवीं दुष्ट पुजारियों को धन देते हैं जिस से वह वेश्यादि गमन, मद्य, मांसाहार करते हैं। जिस से दाता के दान का दुरुपयोग कर उनको भी पाप के भागी बनाते हैं। नवमी—माता पिता की अवहेलना करना और मूर्तियों को ही अपना सर्वस्व मानकर कृतघ्नता के दोष का भागी बनना। दसवीं मूर्ति को यदि कोई तोड़ देवे या धनादि के लालच में चुरा ले जावे तब रुदन करना और ग्यारहवीं पुजारी पर स्त्रियों के संग से दूषित होने की सम्भावना भी हो जाती है। बरहवीं जड़ का ध्यान करने से आत्मा बुद्धि भी जड़वत् हो जाता है। तेरहवीं प्रभु के बनाये हुये पुण्य चन्दनादि को मूर्ति पर चढ़ा देने से वह दुर्गन्धयुक्त हो जाते हैं जब कि मूर्ति के ऊपर जल के साथ मोरी में पड़े रहते हैं। अतः किसी प्रकार की भी मूर्ति पूजा नहीं करनी चाहिये। हां, पंच देव पूजा अथवा पंचायतन पूजा इनको करनी चाहिये। (१) माता (२) पिता (३) गुरु आचार्य (४) अतिथि (५) स्त्री के लिये पति और पत्नी के लिये स्त्री ही पूज्य है। इन चेतन देवताओं की पूजा सब स्त्री पुरुषों को अवश्य करनी चाहिये। मूर्ति पूजा को छोड़ देना चाहिये। वस्तुतः यह पुजारी लोग मूर्ति को आगे इसलिये चीजें धरते हैं कि यह जड़ मूर्ति तो कुछ खायेगी नहीं। इसके बहाने से हम ही सब कुछ भक्षण कर जावेंगे। यह स्वार्थ पन है। और यह मूर्तियों के चमत्कार, यथा औरंगजेब बादशाह को लाट भैरव का चमत्कार दिखाना कि भमरे निकल पड़े। यह पाषाण का चमत्कार नहीं अपितु वहां भ्रमरों का छत्ता ही होगा, जिनका स्वभाव ही क्रूर होता है। इसी प्रकार महादेव जी म्लेच्छों को दर्शन न देने के कारण कूप में घुस गये। कितनी अज्ञानता की बात है जिनके उपास्य ही भीरू हों वह अन्यों की क्या रक्षा करेंगे? यह सब पोपमाया है। अब गया में श्राद्ध करने से पितरों के पाप छूटने तथा स्वर्ग में जाने की बात कहते हैं। यह भी सर्वथा झूठ है। अपने २ कर्मों के अनुसार ही मनुष्य दुःख सुख भोग सकता है। यह पिंड लेने की बात भी एक प्रकार की मिथ्या बात है। इसी प्रकार कलकत्ते की काली, जगन्नाथ जी के चमत्कार बताते हैं यह भी सब पोप लीला है।

रामेश्वर में, गंगोत्री को जल चढ़ाते समय लिंग बनना भी निर्बुद्धियों को ठगने की विद्या है। कई लोग कहते हैं कि श्री रामचन्द्र जी ने लंका पर चढ़ाई के समय मूर्ति पूजा की यह भी अशुद्ध है। राम के समय में तो उस लिंग व मन्दिर का नामचिह्न भी न था। अस्तु, यह ठीक है कि दक्षिण देशस्थ राम नामक राजा ने मन्दिर बनवा लिंग का नाम रामेश्वर धर दिया। जब सीता जी को रामचन्द्र जी पुष्पक विमान में बैठाकर अयोध्या ला रहे थे उस समय बाल्मीकि रामायण में लिखा है कि:—

अत्र पूर्वं महादेवः प्रसादमकरोद्विभुः। सेतुबंध इति ख्यातम्।

हे सीते! तेरे वियोग से हम व्याकुल होकर घूमते थे और इसी स्थान पर महादेव (देवों का देव) परमात्मा का ध्यान भी करते थे। उसकी कृपा से हम को सब सामग्री यहां प्राप्त हुई। और देख यह सेतु बांध कर लंका में आकर उस

रावण को मार कर तुझ को ले आये। इतना ही वाल्मीकि मुनि ने अपनी रामायण में लिखा है। दक्षिण में एक कलियाकान्त की मूर्ति है जो हुक्का पीती है। किसी हुक्का पीने वाले का यह ढोंग है। ऐसे २ पाखण्ड मूर्खों को ठगने के लिये बहुत किये जाते हैं। सोमनाथ जी महाराज पृथिवी के ऊपर रहता था, यह बहुत चमत्कार है। यह मिथ्या है। उस मन्दिर की चारों दीवारों में चुम्बक पत्थर लगा हुआ था जिसके आकर्षण से वह मूर्ति खड़ी रहती थी। देखो, महमूद गज़नवी ने उसको तोड़ा वरन् मूर्ति उसका कुछ भी न बिगाड़ सकीं ! हाय क्यों यह पत्थर की पूजा करके सत्यानाश को प्राप्त हुये। क्यों परमेश्वर की भक्ति न की जो म्लेच्छों के दांत तोड़ डालते। यदि मूर्तियों के स्थान पर शूरवीरों की पूजा करते तो यह देश की रक्षा करते।

द्वारिकाधीश ने नर्सीमेहता की हुँडी तारी। ऐसी कपोल कल्पना भी लोगों में जो चली है। यह किसी साहुकार ने दे दी होगी यूँ ही कृष्ण जी का झूठा नाम लगा दिया। ज्वाला मुखी जिसको यह पोप प्रत्यक्ष देवी कहते हैं, आधा प्रसाद खा जातीं है और मुसलमान बादशाहों ने उस पर जल की नहर छुड़वाई, लोहे के तवे जुड़वाये, यह बातें भी असम्भव है। पुजारी लोगों की यह लीला ही है। ऐसी २ लीलायें तो घरों में घृत छोंकने से प्रति दिन ही हो जाती है। अमृतसर का तालाब, रीठे के वृक्ष के फल का मीठा होना और एक दीवार जो नमती तो है परन्तु गिरती नहीं, अमरनाथ में कबूतरों का जोड़ा आदि सब गपोड़े ही हैं। यदि उसका जल अमृत हो तो संसार में उसके जल पीने से कोई भी न मरता। भित्ती की बनावट ही ऐसी होगी जिससे गिरती न होगी। रीठे में कलम के पैवन्दी लगी होगी। कबूतर के जोड़े पालतू होंगे जो आ जाते होंगे। इसी भान्ति बहुत से लोग हरिद्वार में हरकी पौड़ी में स्नान करने से सब पाप के छूटने के लिए कहते हैं। काशी, गुप्तकाशी गङ्गोत्तरी आदि में नारायण के दर्शन तथा स्नानादि से मुक्ति होना स्वीकार करते हैं। यह बातें भी मिथ्या हैं। यह हरकी पौड़ी नहीं अपितु हाडपौड़ी है जहां देश दशान्तर की अस्थियां आकर गिरती हैं। जल में स्नान करने से पाप नहीं छूट सकते। यदि इस प्रकार छूटते हों तो जल के भीतर रहने वाले जीव जन्तु तो स्वर्ग को ही पहुँच जाते होंगे। यह सब कुछ पोपलीला है। स्वार्थवश अपनी जीविकार्थ यह पंडे जी महाराज ऐसी २ लीलायें श्रद्धालु भक्तों को दिखाते रहते हैं। और यह मूर्तिपूजा तथा तीर्थ सनातन काल से नहीं है, आधुनिक तीन चार सहस्रवर्ष से ही चली हैं। वेदादि सत्शास्त्रों तथा ब्राह्मण ग्रन्थों में इनका लेश मात्र भी वर्णन नहीं मिलता। कई अज्ञानियों ने **"गंगा गंगेति यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति"** अर्थात् सौ योजन से भी जो गंगा २ का नाम उच्चारण करते हैं वह सब पापों से छूट कर सीधा स्वर्ग, विष्णुलोक को प्राप्त होते हैं। यह कितनी अज्ञान की बात है ?

यह सब श्लोक पोपों ने स्वार्थसिद्धि के लिए बनाए हुए हैं। इसी प्रकार यह लोग दर्शनों का बहुत महात्म्य बनाते हैं जो कि सर्वथा ही मिथ्या है। वस्तुतः वेदादि सत्य शास्त्रों का पठन पाठन, धार्मिक विद्वानों का सत्संग, परोपकार, धर्मानुष्ठान् योगाऽभ्यास, ब्रह्मचर्य सेवन, परमात्मा की स्तुति प्रार्थना और उपासना आदि ही दुःखों से छुड़ाने वाले तीर्थ हैं। या जल में से तरने के लिये तो नौकादि तीर्थ हो सकते हैं। और प्रभु के नाम का स्मरण करना ही सब से बड़ा **नामस्मरण है। यस्य नाम महत् यशः**, ऐसा यजुर्वेद में लिखा है।

गुरु पूजा

इतने में एक बूढ़े महानुभाव उठ कर खड़े हो गये और कहने लगे कि पण्डित जी महाराज क्या गुरु महात्म्य सच्चा है ? गुरु जी आज्ञा जैसी हो वैसी ही मानना और उनके पांव धोकर पीना और यदि गुरु कामी हो तो कृष्ण के समान, क्रोधी हो तो नरसिंह के सदृश, मोही हो तो राम के सदृश समझना लिखा है। क्या यह बातं ठीक हैं ? पण्डित जी ने कहा यह सब मिथ्या हैं। सब का असली गुरु तो परमात्मा है और ब्रह्मा, विष्णु, महेशादि तो उसी के नाम हैं। और तुमने जो झूठा पानी पीना कहा यह तो पामरपन की बात है। अच्छे गुरु तो माता पिता आचार्यादि हैं जिनकी सेवा करनी और उनसे शिक्षा लेनी, यह कर्तव्य है परन्तु जो गुरु कामी, क्रोधी, लोभी, मोही होगा उसको सर्वथा छोड़ देना चाहिये। जो विद्या रहित यूँ ही कण्ठी, तिलक, वेदविरुद्ध शिक्षा देने वाले गुरु आजकल कहलाते हैं वह तो गडरिये हैं जिन को अपनी भेड़ बकरियों सदृश चेलों से द्रव्य दूध लेना होता है। यह सब पुराणों की कपोल कल्पित बातें हैं।

पुराण

एक अधेड़ आयु के पुरुष ने खड़े होकर पंडित जी से यह प्रश्न किया कि १८ पुराणों का कर्त्ता वेदव्यास जी महाराज हैं। और महाभारत में यह स्पष्टतया लिखा है कि **अष्टादश पुराणानां कर्त्ता सत्यवती सुतः** और **इतिहास पुराणं पञ्चमं वेदानांवेदः** (छान्दोग्य)। पुराण विद्या वेदार्थ के जानने ही से वेद है। अतः पुराणों में चूंकि मूर्ति पूजा भी विहित है तो यह कहां तक सत्य है ? पंडित जी ने प्रसन्नचित्त होकर यह कहा कि जो १८ पुराणों के कर्त्ता व्यास जी होते तो उनमें इतने गपोड़े न होते क्योंकि शारीरिक सूत्र और योग शास्त्र के भाष्य आदि व्यासकृत ग्रन्थों को देखने से विदित होता है कि व्यास जी बड़े विद्वान्, सत्यवादी, धार्मिक तथा योगी थे। वे ऐसी २ मिथ्या बातें कदापि न लिखते। ज्ञात होता है कि साम्प्रदायक और परस्पर विरोधी लोगों ने भागवतादि नवीन कपोलकल्पित ग्रंथ बनाये हैं जिनमें वेद शास्त्र विरुद्ध असत्यवाद बहुत भरा पड़ा है। जो व्यास सदृश विद्वानों की कृति कदापि नहीं हो सकते। शिव, गरुड़ भागवतादि पुराण वस्तुतः पुराण नही ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार **"ब्राह्मण नीति इहासान् पुराणानि कल्पान् गाथा नाराशंसी रिति"** एतरेय, शतपथ, गोपथ ब्राह्मण के ही इतिहास पुराण, कल्प, गाथा और नाराशंसी यह पांच नाम हैं। (इतिहास) जनक याज्ञवल्क्य सिद्धान्त (पुराण)जगदुत्पत्ति आदि का वर्णन (कल्प) वेद शब्दों का निरूपण (गाथा) दृष्टान्त रूप से दृष्टान्त का वर्णन (नाराशंसी) प्रशंसनीय वा अप्रशंसीनीय कर्मो का कथन करना। यह नवीन कपोलकल्पित ग्रन्थ पुराण नहीं हैं। वेदव्यास जी ने तो वेद का प्रचार किया एतदर्थ उन का नाम वेद व्यास पड़ा। चारों वेदों के ज्ञाता व्यास जी ने अपने शिष्य शुकदेव जी तथा जयमिनि जी को पढ़ाये थे। उनका जन्म नाम कृष्णद्वैपायन था। पुराणों में कई बातें सच्ची हैं जो वेद शास्त्रों की हैं और बहुत सी झूठी उनकी अपनी हैं। इन पुराणों में परस्पर विरोध भी बहुत है। सृष्टि नियम विरुद्ध बहुत सी बातें इसमें हैं। गप्पें भी बहुत हैं। इसलिये यह प्रमाणिक ग्रन्थ नहीं है तब महाराज जी ने कहा बस पण्डित जी अब इस प्रकरण की समाप्ति करो। आगामी वार पुनः और विषयों पर विचार चलेगा। सब सभा विर्सजन हो गई। ओ३म् शम् ॥

शास्त्रोक्त दिनचर्या का

एक आदर्श पुरुष !!

[लेखक—श्री आर्य भगवानराव भोसीकर, बी० एस्सी०
आर्यनिवास, कन्धार, जि० नांदेड]

—❀❀❀—

महर्षि दयानन्द-सरस्वती यह एक आदर्श पुरुष हैं जिनकी दिनचर्या अत्यन्त सादी पर शास्त्रोक्त थी। वे प्रातः उठते और शौचमुखप्रक्षालनादि से निवृत होते। वायु सेवन के निमित्त ग्राम अथवा शहर जहां भी वे रहते उससे बाहर आते। इस समय उनके शरीर पर आवश्यक वस्त्र ही रहते। हम जैसा कि पूरा पहनाव धारण करते हैं वैसे वे नहीं धारण करते। उनके शरीर पर केवल कौपीन और एक धोती मात्र रहती। शरीर का ऊपरी भाग खुला रहता। इससे वायु सेवन का सत्य अर्थ सिद्ध होता। ऊपरी भाग को खुला रखने का हेतु शुद्ध वायु और कीटाणुनाशक सूर्यप्रकाश से शरीर को सुदृढ़ बनाना था। नीरोग बनाना था। वे ऐसा कोई भी कर्म न करते कि जिसमें उनको शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति का लाभ सिद्ध न होता हो। वायु सेवन से उनको शारीरोन्नति सिद्ध होती। उनका शरीर सुदृढ़ था, गठा हुआ था। वायु सेवन के पश्चात् वे अपने निवास स्थान पर आते और १५-२० मिनट के लिये कुर्सी पर विश्राम करते। पश्चात् एक ग्लास दूध पीते। आरोग्य की दृष्टि से ऐसा करना परमावश्क है।

मैंने यह देखा है कि बहुत से युवक व्यायाम करने के साथ ही दूध, सीरा आदि का आहार करते हैं। उनकी यह समझ होती है कि व्यायाम से खून दौड़ता है जिसके साथ ही पौष्टिक खाद्य-पेयादि का सेवन करें जिससे वे शीघ्र ही पचेंगे और लाभदायक सिद्ध होंगे। यह समझ आरोग्य की दृष्टि से हानिकर है। किसी खाद्य अथवा पेय के सेवन के पश्चात् तीन घण्टे के पहले और व्यायाम के पश्चात् आधे घन्टे से पूर्व क्रम से व्यायाम और सेवन नहीं करना चाहिये। यदि करें तो वह आरोग्य के नियमों के सर्वथा विरुद्ध हैं। स्वामी जी आरोग्य के नियमों के अनुसार कठोर व्यवहार रखते। आज हमें भी ऐसे ही करना चाहिए। व्यायाम के पश्चात् लगभग आधा घंटा विश्राम करना चाहिए। इससे रक्त शरीर में चारों ओर दौड़ता है और अवयवों में संग्रहीत दूषित पदार्थों मलोत्सर्जन को संस्था द्वारा बाहर निकालता है।

स्वामो जी का व्यायाम केवल चलने का था जो अत्यन्त सादा था। १५-२० मि० का विश्राम पर्याप्त था—काफी था। और यही कारण था कि महर्षि दयानन्द निरोग और आरोग्य सम्पन्न थे। उनकी कान्ति देदीप्यमान अग्नि की जैसी थी। उनके मुखमन्डल से ओज और तेज टपकते थे। मनुष्य तो क्या जानवर भी उस दृष्टि से सहम जाते। किसी समय वे नर्मदा नदी का स्रोत ढूंढते हुए घने जंगलों में से रास्ता काटते जा रहे थे। वहां मानव पदचिन्ह किसी भी ओर नहीं दृष्टिगोचर होता था। केवल हिंस्र पशु ही वहां निवास करते करते थे। ऐसे स्थानों में से कुछ अंदर दूर गए ही होंगे कि उन्होंने एक भयानक रीछ दौड़ता आता देखा। वह रीछ स्वामी जी को आसने के

लिये ही उनकी ओर दृष्टि रखकर रहा था। जब वह स्वामी जी के निकट आया तो स्वामी जी ने जो अब तक निर्भय और शान्त थे मारे शक्ति के स्फुरण के अपना डंडा उठाया और धमकाया। वह रीछ चिंघाड़ता, वन को थर्राता हुआ उलटे पांव भाग निकला। यह थी महर्षि दयानन्द के शरीर की ज्वाला। यह था ब्रह्मचारी का ओज और तेज।

परमहंस दयानन्द दूध का ही सेवन सर्वोत्तम समझते। दूध से बने पदार्थ उनके हृदय का आनंद बढ़ाने वाले थे। व्यायाम के अनन्तर दूध सेवन विधि के पश्चात् वे ठीक आठ बजे वेदभाष्य करने बैठते। वेदभाष्य करते समय उनकी कान्ति दिव्य होती। उनका शान्त मुखचन्द्र अलौकिक प्रभा टपकाता था। उनकी आंखें वेद ऋचाओं पर लगी रहती, मानो कोई निपुण क्षत्रिय धनुष से शिकार को वींध रहा हो। उनका मन निरुक्त और भूतपूर्व भाष्यों के सागर में डूबा रहता और विचारों के आन्दोलनों में से अपने भाष्य के मौक्तिकोंको ऊपर लाता था। प्रत्येक शब्द अर्थरूप मोतियों के झुंड के झुंड सागर से बाहर फेंकता था। उनकी प्रतिभा शक्ति इतनी विशाल और युक्तिसंगत थी कि उनके द्वारा लाए अर्थरूप मोतो के खण्डन की कोई हिम्मत नहीं करता। कोई चाहे कितना भी बड़ा माना हुआ शास्त्री अथवा पंडित हो उनके सामने वह परास्त होता था। इस प्रतिभाशक्ति के उपयोग से वे वेदों के भाष्य रचते। उनकी वह विचार शक्ति प्रतिमा रहित थी—अप्रतिम थो। उनके वेदभाष्य में कोई त्रुटि नहीं निकाल सकता था। निकालते भी तो कैसे? उनके भाष्य उन्होंने मनघडंत नहीं रचे थे—वेदाङ्गों का आश्रय भी तो लिया था!! यही कारण था कि उनके भाष्य का खण्डन नहीं नहीं हो सकता था, न ही अब और भविष्य में ही हो सकता है।

वेदभाष्य करते समय उनकी मुद्रा गम्भीर होती। जब वे मनन करते तो उनके चक्षु अन्तर्मुख हो दिव्य चक्षु का आश्रय लेते और ब्रह्माण्ड में मानो शब्दग्राहक यन्त्र जैसे युक्ति युक्त संकेत रूप अर्थ स्मृतिपटल पर अंकित करते। वे उस समय इस माया से सावधान हो बड़ी गम्भीरता से अपने कर कमलों द्वारा परम पूजनीय वेद का भाष्य लिखते। यही कारण है कि आज भी उन का भाष्य विद्वानों में विश्वासपात्र है। योगी अरविन्द घोष कहते हैं कि वे उनके भाष्य में पूर्ण विश्वास रखते हैं, भूतपूर्व भाष्य अंतिम और सर्वांगपूर्ण चाहे हों परन्तु सच्ची चाबी का आविष्कार केवल स्वामी दयानन्द ने किया है और जिसके लिये हम प्रथममान उन्हें ही देंगे। शिकागो की धर्मपरिषद् में डा० स्काट डी. डी. ने घोषित किया था कि यदि वर्तमान युग में संस्कृत का विद्वान्, साहित्यकार ग्रन्थकार और वेदों के अर्थ को समाज के हित के लिए पोषक दृढ़ता पूर्वक समझने वाला यदि कोई हुआ था तो वह महर्षि दयानन्द सरस्वती ही था। इससे यह निश्चय सिद्ध होता है कि उनका भाष्य अभूतपूर्व था।

भाष्य लिखने का समय प्रातः ८ से ११ पर्यन्त था। ११ वजे वे स्नान करते और भोजन करते। उनका भोजन सादा ही होता था। सादा होते हुए भी परिमित होता था। खाद्यान्न के समस्त पदार्थ मिलाकर डेढपाव तक हो जाते थे। वे अपने शिष्यों (आर्यों) से कहते थे कि मिताहार ही शरीर एवं मन को बलवान् बनाता है। अपने शिष्यों को भोजनयोग्य पदार्थ बनाने की सामग्री स्वयं तोल कर देते थे। शिष्यों को प्रारम्भिक अवसरों पर आश्चर्य होता रहा कि

महाराज सामग्री क्यों तोल कर देते हैं। उनके प्रश्न पूछने पर उन्होंने अपनी शान्त मुद्रा से कहा कि यदि वे तोल कर न दें और उन्हें तोले बिना ही सामग्री दें तो कभी अधिक होगी तो कभी कम। यदि अधिक होगी तो अकारण ही व्यय होगा और कम होगी तो अधपेट उठना होगा। वे यह कहते कि भोजन की न्यूनाधिकता शरीर को अ-स्वस्थ, अशान्त एवं आलस्यवान् बनाती है। यह दोनों, भोजन के न्यूनाधिक अन्न शरीर के लिए हानिकर हैं। परिमित भोजन सुख शान्ति का सिंचन करता है। विद्वान् के लिए मिताहारी होना अत्यन्त आवश्यक है। यदि हम आहार की मात्रा को विद्वान् को पहचानने की कुंजी समझें तो कोई अति शयोक्ति न होगी।

योगाभ्यासी मिताहारी ही जीवन व्यतीत करता है। योगसम्पन्न पुरुष कभी भी मिताहार में प्रमाद करने की प्रवृत्ति नहीं रखता। वह एक विद्वान् ज्ञानी और महात्मा होता है। भगवद्गीता और वेदों में भी मिताहारयुक्त जीवन व्यतीत करने वाले की प्रशंसा की है। महात्मा दयानन्द इसके अनुसार मिताहारी जीवन व्यतीत करते। किसी का विचार चक्र यों घूम सकता है कि मिताहारी शरीर से दुबला पतला होता होगा! पर बात ऐसी नहीं। जिसकी जठराग्नि मन्द है वह भी कम खाने से मिताहारी दीखता है परन्तु वह शरीर और आत्मा से बलवान् नहीं हो सकता। मिताहारी का जठर प्रदीप्त रहता है, शक्तिशाली होता है। वह शरीर और आत्मा से बलवान् होता है। क्योंकि 'नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः।' शरीर और आत्मा से बलवान् मनुष्य ही आत्मतत्व जान सकता है और उसका विलास अनुभव कर सकता है। एक कहावत है, 'कोई भी व्यक्ति पहलवान् पण्डित नहीं हो सकता।' परन्तु शरीर बल से युक्त पहलवान् अपना पाण्डित्य बता रहा हो ऐसा एक व्यक्ति है और वह है आर्यत्वस्य आत्मा महर्षि दयानन्द। उपरोक्त कहावत इस 'असाधारण वैदिक धर्म सेवित' के सामने नतमस्तक होती है—सहस्र खण्डों में पाश पाश हो जाती है। वैदिक धर्म बद्ध व्यक्ति का यही तो दिव्य चमत्कार है! यही तो उसमें की अलौकिकता है। 'असाधारण का साधारण' बनना।

महर्षि दयानन्द आम्रफल को बहुत चाहते थे। उनका चित्त उससे आकर्षित हो जाता था। यदि वे आम्रफल खाने बैठे हों और कोई पास आ बैठे तो उसे भी वह स्वहस्ते देते और खाने का आग्रह करते। कभी यदि उपस्थिति अधिक रहती तो आम को प्रसाद स्वरूप में बाँटते थे। ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त के अनुसार 'समानेन वो हविषा जुहोमि' उनका यह सदाचार था। वे सब में आत्मभाव देखते थे। अन्य जनों को अपनी 'विभूतियां' अपने ही 'स्वरूप' समझते थे। 'आत्मवत् सर्वभूतेषू' के अनुसार उनका जीवन बीतता था। अन्य जनों को अपने समान न मानकर या अपने अंगभूत न मानकर अपने चिताकर्षक खाद्य का सेवन अकेले करना वे महान् पाप समझते थे। आम्रफल महात्मा दयानन्द का एक प्रिय फल था जिसे वे अपने ही अवयवभूत अन्य जनों के लिए समर्पित करते थे। आज हमें भी इसका आदर्श सामने रखना चाहिये—जो वस्तु हमें प्रिय है वह वस्तु दूसरे के लिए भी प्रिय है यह मान कर 'बांटकर खाने की वृत्तिका'।

भोजन के पश्चात् महर्षि दयानन्द कुछ समय के लिए विश्राम करते। भोजन के पश्चात् कुछ समय विश्राम के लिए देना आरोग्य की दृष्टि से हितकर है। विश्राम का अर्थ 'नींदलेना' नहीं। भोजन के पश्चात् नींद लेना शारीरिक स्वास्थ्य की

दृष्टि से अत्यन्त हानिकारक है। केवल 'वामकुक्षी' के अर्थ में ही विश्राम का अर्थ समझना चाहिए। भोजन होते हीं चलना शास्त्रविरुद्ध हैं। कम से कम आधा घण्टा न शारीरिक, न मानसिक ही श्रम करना चाहिए। इस चीज को ध्यान में रख कर महात्मा दयानन्द विश्राम करते और ठीक एक बजे 'सस्कार विधि' आदि पुस्तकों की मुद्रण शुद्धि देखते। इसमें न्यूनाधिकता का संशोधन करते। पत्रों के उत्तरादि देने का कार्य भी इसी समय में किया करते। यह कार्यक्रम तीन बजे तक चलता था। यदि इसी अवधि में परमावश्यक काम का करना है तो वह भी सम्पन्न होता था। तीन से चार पर्यन्त पुनः स्नान करते और मिट्टी रमाया करते। पुनः स्नान करना उष्णता शमनके लिए होता है। इससे उष्णता का दुष्परिणाम नहीं होता। पाचनशक्ति को भी लाभ पहुँचता है। अनावश्यक उष्णता जो रक्त में निर्माण होती है जिससे उसमें दोष आता है निकल जाती है। इस प्रकार पुनः स्नान करने से लाभ होता है तो मिट्टी रमाने से त्वचा बलवान् बनती है। मच्छरादि के डंकों का कोई प्रभाव न पड़े यह इस मृत्तिका लेपन का हेतु था। शास्त्रों की दृष्टि से यह एक उत्तम पद्धति है। इसे सुगमता से अपनाया भी जा सकता है। त्वचा में भीं इससे बल आ जाता है। प्रकृति की प्राकृतिक चिकित्सा का हम इसमें सुन्दर आदर्श देखते हैं। प्राकृतिक आघातों को सहन करने की इसमें शक्ति भी आती है।

महर्षि चार बजे आसन पर विराजमान होते और छः बजे तक परम ओजस्वी भाषण करते। श्रोतागण सुदूर प्रदेश से श्रवण के लिए आते थे। और 'धन्य, धन्य' कर साधुवाद प्रकट करते। उनके भाषण में एक दैवी शक्ति, एक दैवी प्रेरणा ही मानो कार्य करती थी। लोग उनके भाषण को निश्चलभाव से श्रवण करते। श्रोताओं पर मोहनी सी छा जाती है। श्रोताओं के प्राण मोह लेते, खींच लेते थे। श्रोतागण उनके भाषण को श्रवण कर गद्गद् हो जाते थे। यदि किसी को शंका उत्पन्न हो जाए भाषण में तो भी वह उस वाग्विलास की मधुरता और युक्तिसङ्गत उपदेश से चूर्ण हो जाती थी। शङ्का समाधान का समय ६ से ८ स यं होता था। शङ्का समाधान युक्तिसङ्गत और वेदों के आधार पर होता था।

किसी व्यक्ति ने एक समय स्वामी जी से पूछा 'भगवन्! वेद ईश्वर प्रणीत कहते हैं सो वह कैसे?' स्वामी जी ने कहा, जिस प्रकार ईश्वर ने आंखों से देखने के लिये उसकी (पहाड़, नदी, ग्रह आदि) सृष्टि की, कानों से सुनने के लिए ध्वनि की सृष्टि की, नाक से सूंघने के लिए सुगन्धादि की सृष्टिकी तो इसी प्रकार बुद्धि के लिए वेदों की रचना क्यों कर न की होगी?' ऐसा ही उनका सुन्दर, पूर्ण, युक्तिसंगत समाधान रहता। कभी कभी यह शङ्का समाधान का कार्यक्रम १० बजे रात्रि तक चलता था। आप १० बजे के अनन्तर नहीं जागते थे। वह कार्यक्रम वहीं स्थगित करते थे और दूसरे दिन क्रम जोड़ते थे। १० बजे औटाया हुआ एक सेर दूध मिश्री आदि डाल कर लेते। निद्रा उनके इतनी आधीन थी कि चौपाई पर पीठ रखते ही निद्राग्रस्त होते। दिन भर जन जागृति में लगा यह महात्मा लोगों की जागृतअवस्था में स्वयं निद्राधीन होता था।

जैसे सूर्य अन्धकार को नष्ट करता है और छिपी हुई वस्तुओं को प्रकाशमय कर देता है उसी प्रकार यह आलौकिक बुद्धि का परम् सूर्य अज्ञानतिमिर नष्ट करता था और अविद्या से छुपी हुई विद्या को ज्ञान रूप प्रकाश से प्रकाशमय कर देता था। रात्रि में जैसे सूर्यरश्मि द्वारा पर प्रकाशित चन्द्रमा मनोल्हास में वृद्धि करता है उसी प्रकार वे अपने ज्ञान की रश्मियों द्वारा प्रकाशित किये लोगों की बुद्धियों में ज्ञानरूप प्रभाव से प्राप्त मनोल्हास में वृद्धि करते। उनके जीवन का एकमेव हेतु था 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करना'। अन्धकार में भटकते अज्ञानी जीवों को प्रकाश मय जीवन में विचरने लगाना। सत् प्रवृत्त वेदों के ज्ञान से उन्हें सुख शान्ति से सिंचना। वे इस पर कठोर थे। और इसी कारण आज हमारे आप आदर्श पुरुष हैं—एक आदर्श महर्षि हैं।

सैन्ट्रल बोर्ड आफ हायर एजूकेशन नई दिल्ली

आवेदन पत्र भेजने की अन्तिम तिथि १० मार्च १९५९ है

की

धार्मिक परीक्षाओं की पुस्तकें

गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क देहली से मंगावें

पाठ-विधि

साधारण नियम

१. बोर्ड की धार्मिक परीक्षाओं का उद्देश्य विशेषतः भारतीय कुमार कुमारियों को अपना साधारण शिक्षण प्राप्त करते हुए सनातन वैदिक साहित्य तथा पुरातन ग्रन्थों का परिचय कराना तथा साधारणतया सभी परीक्षार्थियों को धार्मिक ग्रन्थो के स्वाध्याय के पथ का पथिक बनाना और उन्हें भारतीयता की ओर आकर्षित करना है।

२. बोर्ड निम्न धार्मिक परीक्षायें वर्ष में दो बार लेता है।

१ विद्यारत्न	(एक प्रश्न पत्र)
२ विद्याभूषण	(दो प्रश्न पत्र)
३ विद्याविचक्षण	(तीन प्रश्न पत्र)
४ विद्यातीर्थ	(चार पश्न पत्र)
५ विद्याधुरीण	(पांच प्रश्न पत्र)

३. कोई भी परीक्षार्थी स्वतन्त्रता पूर्वक इन परीक्षाओं में सम्मिलित हो सकता है।

४. विद्याधुरीण परीक्षा में वही परीक्षार्थी सम्मिलित हो सकेगा, जिसने की बोर्ड की साहित्यरत्न अथवा इसके समकक्ष परीक्षा अथवा बी. ए. हिन्दी विषय लेकर उत्तीर्ण की हो। इस परीक्षा में सीधे बैठने के लिये ६ माह पूर्व विशेष आज्ञा लेनी अनिवार्य होगी।

५. बोर्ड की धार्मिक परीक्षाओं के लिये निम्न प्रकार शुल्क देना होगा।

(१) विद्यारत्न	१) एक रुपया
(२) विद्याभूषण	२) ,,
(३) विद्याविचक्षण	३) ,,
(४) विद्यातीर्थ	४) ,,
(५) विद्याधुरीण	५) ,,

६. कोई भी परीक्षार्थी बिना शुल्क दिये परीक्षा में सम्मिलित न हो सकेगा।

७. परीक्षार्थी आवेदन पत्र के साथ शुल्क का पोस्टल आर्डर भेजें। बिना पोस्टलआर्डर या मनीआर्डर रसीद चिपके आवेदन पत्र स्वीकृत न होगा।

८. यह परीक्षायें प्रति वर्ष जून तथा दिसम्बर मास में हुआ करेंगी, निश्चित तिथि की सूचना उचित समय पर दी जायेगी।

९. किसी भी परीक्षा के छपे हुए आवेदनपत्र कार्यालय से आवश्यकतानुसार प्राप्त हो सकते हैं।

१०. परीक्षा में वही परीक्षार्थी सम्मिलित हो सकेंगे, जिनके आवेदन पत्र परीक्षा शुल्क सहित केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर हो कर कार्यालय में आजायेंगे।

११. आवेदनपत्र नियमानुसार पूरित न होने पर स्वीकृत न होंगे।

१२. आवेदनपत्र पर हस्ताक्षर करने से पूर्व केन्द्राध्यक्ष यह निरीक्षण कर लें कि परीक्षार्थी ने आवेदन पत्र की पूर्ति

नियमानुसार करली है, प्रवेश पत्र पूर्ति भी परीक्षार्थी को स्वयं करनी होगी।

१३. परीक्षा केन्द्र किसी ऐसे स्थान पर जहां कम से कम १० परीक्षार्थी हों, बनाया जा सकता है, जब कि सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त किसी विद्यालय के प्रधानाध्यापक, आर्यसमाज के प्रधान मंत्री व कोई अन्य प्रतिष्ठित सज्जन केन्द्राध्यक्ष बनना स्वीकार करलें।

१४. परीक्षा केन्द्र स्थापित करने के लिये सहसचिव की लिखित स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक है, परीक्षार्थियों के शुल्क सहित १० आवेदन पत्र भरकर भेजने से केन्द्र स्वीकृत समझना चाहिये, प्रतिवर्ष केन्द्र स्वीकृति प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं है।

१५. केन्द्र में परीक्षाओं के संचालन का पूरा दायित्व केन्द्राध्यक्ष पर ही होगा। उनके पास समस्त सूचनायें यथासमय कार्यालय द्वारा पहुंचती रहेंगी।

१६. केन्द्राध्यक्ष महोदय को अपना पूरा पता डाक घर पास का रेलवे स्टेशन(Railway station)व पता आदि स्पष्ट लिखकर पहले ही कार्यालय में भेज देने चाहिये।

१७. परीक्षार्थी को उसी केन्द्र से परीक्षा देनी होगी जिसके अध्यक्ष द्वारा उसका आवेदन पत्र कार्यालय में प्राप्त होगा।

१८. यदि किसी विशेष कारण वश परीक्षार्थी परीक्षा केन्द्र बदलना चाहे तो कारण सहित अपना प्रार्थनापत्र परीक्षाओं से एक मास पूर्व सहसचिव के पास भेजना चाहिये।

१९. सचिव को अधिकार होगा कि वह परीक्षा समय में केन्द्र का निरीक्षण स्वयं अथवा किसी अन्य व्यक्ति द्वारा करायें।

२०. किसी परीक्षार्थी को जो किसी कारण से किसी परीक्षा से निकाल दिया गया हो अगली परीक्षा में बैठने का अधिकार बिना सहसचिव की स्वीकृति के न होगा।

२१. समस्त प्रश्न पत्र हिंदी भाषा में होंगे एवं उत्तर पुस्तकें परीक्षार्थी को देव नागरी लिपि में लिखनी होगी।

२२. धार्मिक परीक्षाओं का प्रत्येक प्रश्न पत्र १०० अंकों का होगा। परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने के लिये कुल योग के ३३ प्रति० अकों का प्राप्त करना आवश्यक है। परन्तु विद्या धुरीण परीक्षा के प्रत्येक प्रश्न पत्र में ३२ और विद्यातीर्थ तथा विद्या विचक्षण परीक्षा के प्रत्येक प्रश्न पत्र में २५ अंक प्राप्त करना भी आवश्यक होगा।

(क) कुल योग में ६० प्रतिशत व अधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रथम श्रेणी में।

(ख) ४५ से ५९ अंक प्राप्त करने वाले द्वितीय श्रेणी में।

(ग) ३३ से ४४ अंक प्राप्त करने वाले तृतीय श्रेणी में।

२३. उत्तीर्ण परीक्षाओं का परीक्षा फल दो मास में घोषित कर दिया जावेगा। प्रत्येक केन्द्राध्यक्ष महोदयों को उनके केन्द्र के परीक्षार्थियों का परीक्षा फल भेज दिया जावेगा।

२४. प्राप्तांक जानने के लिये परीक्षा फल घोषित होने के पश्चात् ००·७५ नये पैसे शुल्क देना होगा।

२५. अनुत्तीर्ण परीक्षार्थी यदि अपनी उत्तर पुस्तकों का पुनः निरीक्षण कराना चाहें तो परीक्षा फल घोषित होने के १ मास की अवधि तक १) शुल्क सहसचिव को भेजकर करा सकते हैं।

२६. यदि कोई परीक्षार्थी बीमारी अथवा अन्य किसी कारण से परीक्षा में न बैठ सकें तो उसका परीक्षा शुल्क नहीं लौटाया जावेगा।

२७. यदि कोई परीक्षार्थी परीक्षा के कुछ प्रश्न पत्रों में उपस्थित होकर किन्हीं कारणों से पूरी परीक्षा में न बैठ सके तो उसे बिना पूरा शुल्क दिये आगामी वर्ष की परीक्षा में बैठने की अनुमति न दी जायगी।

२८. सहसचिव प्रत्येक परीक्षार्थी का प्रवेशपत्र उसके केन्द्र व्यवस्थापक के पास भेज देंगे, यह प्रवेशपत्र परीक्षा आरम्भ की तिथि से पूर्व परीक्षार्थी को केन्द्र व्यवस्थापक से प्राप्त कर लेना चाहिये, बिना प्रवेश पत्र को प्राप्त किये कोई भी परीक्षार्थी परीक्षा में प्रविष्ट न हो सकेगा।

२९. सभी परीक्षाओं में उत्तीर्ण छात्रों को उपाधि पत्र प्रदान किया जावेगा, जिसमें वे उत्तीर्ण होंगे।

३०. सब परीक्षाओं में सर्व प्रथम द्वितीय और तृतीय आने वाले सब परीक्षार्थियों को बोर्ड की ओर से पुरस्कृत किया जावेगा।

३१. महिलाओं में सर्व प्रथम आने वाली परीक्षार्थिनी को विशेष पारितोषिक प्रदान किया जावेगा।

३२. प्रमाण पत्र व पुरस्कार केन्द्राध्यक्ष के पास शुल्क का हिसाब पूरा होने पर ही भेजा जावेगा।

३३. प्रमाण पत्र खोजाने पर अथवा नष्ट हो जाने पर १) शुल्क तथा ००·७५ न. पै. डाक व्यय भेजने पर कार्यालय से पुन, उसकी प्रतिलिपि प्राप्त हो सकेगी, उसके लिये प्रार्थना पत्र में परीक्षा का नाम, केन्द्र, ईसवी सन् तथा क्रम संख्या आदि उल्लेख करना आवश्यक होगा।

३४. केन्द्र का कार्य सुचारु रूप से सम्पादन करने पर केन्द्राध्यक्ष महोदय को बोर्ड की ओर से सुन्दर मुद्रित प्रसन्शा पत्र प्रदान किया जावेगा।

---

(१) विद्यारत्न परीक्षा

पाठ्य पुस्तकें — अंक

(१) आर्य सिद्धान्त दीप (पं० मदनमोहन विद्यासागर) २५
(२) सदाचार पञ्जिका (शारदा प्रभाकर) २५
(३) वैदिक धर्म परिचय (पं० जगदेव सिंहजी शास्त्री) २५
(४) व्यवहार भानु (स्वामी दयानन्द) १०
(५) मित्रों की बातें (सिद्ध गोपाल) १५

नोट:—सदाचार पाञ्जिका परीक्षा के समय केन्द्राध्यक्ष को दे देनी होगी सदाचार पाञ्जिका में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। जिसमें उत्तीर्णांक २५ में से से १५ होंगे।

(२) विद्याभूषण परीक्षा

इस परीक्षा में ३-३ घन्टों के २ प्रश्न पत्र होंगे। प्रत्येक का पूर्णांक १०० होगा।

प्रथम प्रश्न पत्र — अंक

(१) आत्मकथा (महर्षि दयानन्द स्वकथित) २०
(२) पंच महायज्ञ विधि (,, ,, ,,) २०
(३) आर्योद्देश्य रत्नमाला (,,) ५
(४) सत्यार्थ प्रकाश द्वितीय समुल्लास (स्वामी दयानन्द) २५
(५) वैदिक धर्म आर्य समाज प्रश्नोत्तरी (पंडित धर्मदेव) २०
(६) अनमोल मोती (जगदीश चन्द्र विद्यार्थी) १०

द्वितीय प्रश्न पत्र :— अंक

(१) स्वामी दयानन्द और वेद अरविन्द घोष २०
(२) सष्टि का इतिहास (पं० लेखराम) २०
(३) नमस्ते की व्याख्या (पं० सुखदेव वाचस्पति) २०
(४) एक ही रास्ता (आनन्द स्वामी) १५
(५) ब्रह्मचर्य जीवन वीर्य नाश मृत्यु (पं० सत्यव्रत) २५

(३) विद्याविचक्षण परीक्षा

इस परीक्षा में १००-१०० अंक के तीन पश्न पत्र होंगे।

प्रथम प्रश्न पत्र :— अंक

(१) सत्यार्थ प्रकाश पूर्वार्द्ध (दशम समुल्लास तक) ५०
(२) भारतीय संस्कृति के तीन प्रतीक(पं० राजेन्द्र जी) १५
(३) आर्य समाज क्या है (महात्मा नारायण स्वामी) १०
(४) विद्यार्थी जीवन रहस्य (नारायण स्वामी) १५
(५) आर्य समाज के नियमों की व्याख्या (स्वामी सत्यानन्द) १०

द्वितीय प्रश्न पत्र — अंक २०

(१) रामायण दर्पण (स्वा० ब्रह्मानन्द) ,, २०
(२) स्वस्थ्य जीवन (डा० सूर्य देव शर्मा) ,, २०
(३) क्या वेदों में इतिहास है (पं० जयदेव शर्मा) ,, २०
(४) जीवन पथ (स्वामी ब्रह्म मुनि) ,, १५
(५) स्वाध्याय संग्रह (स्वामी वेदानन्द) ,, २५

तृतीय प्रश्न पत्र

(१) सुमन संग्रह (पं० विहारी लाल) ,, २५
(२) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर (कृष्ण चन्द्र विरमानी) ,, ३०
(३) वैदिक आध्यात्म सुधा (प्रियरत्न आर्ष) ,, १५

(४) बाल सत्यार्थ प्रकाश विश्वनाथ विद्यालंकार ,, १५
(५) विरजानन्द चरित्र (घासीराम प्रकाशन विभाग),, १५

(४) विद्यातीर्थ परीक्षा

प्रथम प्रश्न पत्र

इस परीक्षा में चार प्रश्न पत्र १००-१०० अंकों के होंगें।

(१) सत्यार्थ प्रकाश संपूर्ण ,, ४०
(२) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ,, ३०
(३) संस्कार विधि विमर्श (अत्रिदेव गुप्त) ,, १५
(४) स्वाध्याय संदोह (स्वामी वेदानन्द) ,, १५

द्वितीय प्रश्न पत्र

(१) वैदिक आर्य पर्व पद्धति (सार्वदेशिक सभा द्वारा स्वीकृत) ,, २०
(२) दर्शना नंद ग्रन्थसंग्रह (गोविन्दराम हासानन्द) ,, २५
(३) वैदिक संस्कृति (पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय) ,, २५
(४) क्रियात्मक मनोविज्ञान (प्रियरत्न आर्ष) ,, ३०

तृतीय प्रश्न पत्र

(१) उपनिषद् (ईश, केन, कठ, प्रश्न मुण्डक, श्वेताश्वर) ,, ४०
(२) गृहस्थ जीवन रहस्य (नारायण स्वामी) ३०
(३) जीवात्मा (पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय) ३०

चतुर्थ प्रश्न पत्र

(१) मनुष्य का विराट रुप (आनन्दकुमार) ,, १५
(२) मानसिक शक्ति का चमत्कार (सत्यकाम विद्यालंकार) ,, १५
(३) संमार्ग दर्शन (सर्वदानन्द) ,, २५
(४) ओंकार निर्णय (पं० शिव शंकर काव्य तीर्थ) ,, २५
(५) युद्ध नीति और अहिंसा (डा० सूर्य देव शर्मा) ,, ३०

(५) विद्याधुरीण परीक्षा

इस परीक्षा में १००-१०० अंकों के ५ प्रश्न पत्र होंगे।

प्रथम प्रश्न पत्र

(१) दर्शन समन्वय (स्वा० ओमा नन्द) ,, ६०
(२) उपनिषद् प्रकाश (स्वा. दर्शनानन्द) ,, ४०

द्वितीय प्रश्न पत्र

(१) मनुस्मृति (पं० तुलसी राम)
(२) स्वाध्याय सुमन (स्वा० वेदानन्द जी) ,, ३०
(३) वेदों का यथार्थ स्वरूप (पं० धर्मदेव विद्यावाचस्पति ,, २०
,, ५०

तृतीय प्रश्न पत्र

(१) बौद्ध मत और वैदिक धर्म (पं० धर्म देव जी) ,, १५
(२) कम्यूनिज्म (पं० गंगा प्रसाद जी) ,, २
(३) वैदिक गीता (स्वा० आत्मानन्द जी) ,, १५
(४) विश्व शान्ति का वैदिक सन्देश (पं० शिवकुमार शास्त्री) ,, २०
(५) भारत में मूर्ति पूजा (पं० राजेन्द्र) २०
(६) भक्ति दर्पण या कर्तव्य दर्पण

चतुर्थ प्रश्न पत्र

(१) अंग्रेजी साहित्य की रूप रेखा (भगवत शरण उपाध्याय) ,, २५
(२) सांस्कृतिक भारत (,, ,,) ,, २५
(३) शिक्षा में नये प्रयोग (प्रिन्सीपल सूरजभान एम.ए.) २०
(४) आर्य समाज का इतिहास (हरिश्चन्द्र) ,, ३०

पंचम प्रश्न पत्र

(१) भारतीय संविधान (श्री अम्बादत्त पंत) ,, २०
(२) मनुष्य के अधिकार (स्वा. सत्यदेव जी)
(३) मानव सभ्यता का विकास (डा० राम विलास शर्मा) ,, ३०
(४) निबन्ध (राजनैतिक व धार्मिक विषय पर ,, ५०

नोट-प्रत्येक प्रश्न पत्र का समय तीन घन्टे होगा।

बोर्ड की अन्य विभागीय परीक्षाओं के केन्द्र लेकर राष्ट्रभाषा के प्रचार एवं प्रसार में योग दीजिए।

विवरण के लिए लिखिये :—

सचिव

सैन्ट्रलबोर्ड आफ हायर एजूकेशन तिलक नगर, नई दिल्ली।

नवदम्पति को भेंट देने योग्य अनुपम

उपहार

भारतीय स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण व चिरस्थायी बनाने के लिये
आज भारत को कर्मवीर, बुद्धिमान् व शौर्य-सम्पन्न
युवकों की आवश्यकता है। उस आवश्यकता
की पूर्ति आपके हाथों में है।

क्या आप चाहते हैं कि आपकी सन्तान समाज में सम्मान प्राप्त करे यदि हां !
तो उसके लिए प्रयत्न करना आपका कर्त्तव्य है।

किस प्रकार?

यह जानने तथा अनेक कर्त्तव्य से परिचित होने के लिए

इच्छानुसार सन्तानोत्पत्ति

यह पुस्तक मँगा कर अवश्य पढ़िये। पुस्तक पढ़कर आप अनुभव करेंगे कि "पुत्र या पुत्री, धर्मात्मा या पापी, शासक या चोर, जितेन्द्रिय या व्यभिचारी, गौर या श्याम वर्ण की" सन्तान का निर्माण तथा बर्थ कन्ट्रोल अपने ही हाथों में है।

इसकी महत्ता पढ़ने से ही विदित होगी

सजिल्द मूल्य २।।) डाक व्यय पृथक—

लेखक:—
वीरेन्द्र गुप्त

प्राप्ति स्थान—**वीरेन्द्रनाथ अश्विनी कुमार**
प्रकाशन मँदिर, बाजार चौक, मुरादाबाद।

स्वाध्याय योग्य उत्तमोत्तम पुस्तकें

बाल्मीकि रामायण	९)
दयानन्द ग्रन्थ संग्रह	३॥)
सृष्टि का इतिहास	१॥)
उपनिषद आर्यमुनि भाष्य	६)
श्वेताश्वरोपनिषद	१)
प्रभुभक्ति (आनन्द स्वामी)	१॥)
प्रभुदर्शन ...	२॥)
तत्वज्ञान ...	३)
आनन्द गायत्री कथा	॥=)
एक ही रास्ता	।।।)
भगवान शंकर दयानन्द	।=)॥
सत्यनारायण व्रतकथा	॥=)
वैदिक गृहस्थाश्रम	५)
ऋषि-गाथा महाकाव्य	४)
स्वाध्याय संग्रह (वेदानन्द)	२)
वेद परिचय ...	।=)
महर्षि दयानन्द (प्रो० इन्द्र)	२)
आर्य समाज का इतिहास	१।=)
ओंकार निर्णय (शिवशंकर)	१॥)
वैदिक प्रार्थना	१॥)
सचित्र योगासन	१॥)
बहिनों की बातें (सिद्धगोपाल)	१।)
दर्शनानन्द ग्रंथ संग्रह पूर्वार्द्ध	२॥)
,, ,, ,, उत्तर्द्धि	२॥)
दयानन्द चित्रावली	२॥)
भारतीय संस्कृति	॥)
आर्षयोग प्रदीपिका	३॥)
कर्तव्य दर्पण (ना० स्वामी)	१।)
वैदिक संध्या रहस्य	।≡)
आर्य समाज क्या है ?	॥)
संध्या, हवन प्रदीपिका	॥)
सन्ध्याविनय	॥)

प्रार्थना प्रदीप	॥)
संस्कार विधि विमर्श	३)
स्त्रियों का स्वास्थ्य और रोग	३)
विवाह और विवाहित जीवन	२॥)
घर गृहस्थी	३॥)
आर्य सिद्धान्त दीप	१।)
गीत श्रद्धांजलि (भजन)	१।)
सत्यहरिश्चन्द्र नाटक	१।)
यज्ञोपवीत मीमांसा	।।।)
आदर्श सुधारक दयानन्द	॥=)
गृहस्थाश्रम (दयानन्द)	॥=)
बाल शिक्षक ,,	।=)
आत्म कथा ऋषि दयानन्द ,,	।=)
आर्याभिविनय ,,	।=)
वेद विरुद्धमत खण्डन	।=)
शिक्षा पत्री ध्वान्ति निवारण	।=)
भ्रान्ति निवारण (दयानन्द)	।=)
भ्रमोच्छेदन ,,	।)
हुगली शास्त्रार्थ ,,	।)
वेदों का महत्व (दर्शनानन्द)	।)
ईश्वर प्राप्ति ,,	≡)
ईश्वर विचार ,,	=)
जीवात्मा ,,	=)
वेदों की आवश्यकता ,,	-)
वेद किस पर प्रकट हुए ,,	-)
बाल शिक्षा, धर्म शिक्षा ,,	≡)
वर्ण व्यवस्था (दर्शनानन्द)	-)
पितृ श्राद्धविचार ,,	-)
दयानन्द का उद्देश्य ,,	-)
,, ,, लक्ष्य ,,	-)
सत्यार्थ प्रकाश शंका समाधान	।)

स्वामी दयानन्द और वेद	।)
भक्ष्याभक्ष्य विचार	≡)
वैदिक धर्म शिक्षा	≡)
आर्य सत्संग गुटका	।-)
विश्व विज्ञान परमात्म बोध	≡)
अखण्ड भारत (चन्द्र गुप्त)	॥)
मांस मदिरा का निषेध	≡)
गायत्री व्याख्या	।)
गीता वचनामृत	।=)
गोरक्षा परम कर्त्तव्य	॥)
स्वास्थ्य विज्ञान	।-)

चित्र चित्र चित्र

धार्मिक मंत्रों के चित्र साईज– १४॥×२२

सन्ध्या मन्त्र	।-)
प्रार्थना के ८ मंत्र अर्थ सहित	।-)
आर्य समाज के नियम	।-)
जीवन मृत्यु के प्रश्न	।-)
यम नियम व्याख्या सहित	।-)
संगठन सुक्त	।-)
मन्त्रों के चित्र ११×१४	॥)
ऋग्वेद का प्रथम मन्त्र	≡)
यजुर्वेद का प्रथम ,,	≡)
सामवेद का प्रथम ,,	≡)
अथर्ववेद का प्रथम ,,	≡)
दीर्घ जीवन की प्रार्थना	≡)
धर्मंचर, सत्यंवद	≡)
मंत्रों के चित्र छोटे ७।×५॥	-)॥

ओ३म्, नमस्ते, स्वागतम, विश्वानिदेव सहनाववतु, धृतिक्षमा, नमः शम्भवायच, त्वमे माता च पिता, नैनंछिन्दति अहिंसा परमो धर्म, आदि आदि ।

महाभारतम् संस्कृत के विद्यार्थियों के लिये श्री आचार्य राजेन्द्र शास्त्री उपाध्यक्ष दयानन्द वेदविद्यालय देहली द्वारा रचित केवल संस्कृत गद्य में मंगाकर संस्कृत में वार्तालाप करना सीखें । मूल्य सजिल्द का ३) रु०

गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, देहली ।

गोविन्दराम हासानन्द सम्पादक तथा मुद्रक जैय्यद प्रेस में छपवाकर
वेदप्रकाश कार्यालय नई सड़क देहली से प्रकाशित किया ।

॥ ओ३म् ॥

वेद प्रकाश

बलिदान भवन को श्रद्धानन्द स्मारक बनावें

(सार्वदेशिक सभा के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन)

—❀❀❀—

गुरु तेग बहादुर का शीशगंज गुरुद्वारा और धर्मवीर श्रद्धानन्द जी के बलिदान भवन में क्या भेद है ? इस समय तक इसी भवन में सार्वदेशिक सभा का कार्यालय था, अब जब कि सभा ने अपना नवीन भव्य भवन खरीद लिया है वहां कार्यालय चला गया है ऐसी अवस्था में बलिदान भवन को बेचना या किराये पर चढ़ाना अनुचित है।

बलिदान भवन को वीर संन्यासी श्रद्धानन्द स्मारक भवन का रूप देना चाहिये। जिसमें स्वामी श्रद्धानन्द के कार्यों को चित्रों के रूप में जिसमें स्वामी जी द्वारा चलाये शुद्धि आन्दोलन के चित्र, घण्टाघर का गोली काण्ड, जामामस्जिद के स्टेज से भाषण, गुरुकुल सेवा के दृश्य तथा साथ ही धर्मवीर लेखराम जी आदि आर्य महानुभावों के बलिदानों के चित्र होने चाहियें, तथा धर्मवीर लेखराम जी के और स्वामी श्रद्धानन्द जी के लेख और ग्रन्थों के प्रकाशन और प्रचार की योजना रहनी चाहिए।

आशा है इस कार्य में सभा के अधिकारी व स्वामी जी के प्रेमी शिष्य (गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक) मेरे इस प्रस्ताव का जोरदार शब्दों में समर्थन करेंगे। तथा सार्वदेशिक सभा को बाध्य करेंगे कि बलिदान भवन को बेचने तथा किराये पर देने का कुविचार त्याग दें, और धर्मवीरों का स्मारक स्थापित करें।

प्रार्थी—

गोविन्दराम हासानन्द

श्री आनन्द स्वामी जी की नई पुस्तक

'आनन्द भगवत् कथा अर्थात् सत्यनारायण वृत कथा'

पौराणिक पण्डित जो सत्यनारायण की कथा सुनाते हैं उसमें केवल यही सुनाते हैं इस कथा को सुनने से एक आदमी स्वर्ग गया और दूसरा आदमी जिसने नहीं सुनी उसे नर्क मिला। वह सत्यनारायण की कथा क्या है यह नहीं बताते।

श्री स्वामी जी ने वेद पुराण, उपनिषद्, गीता तथा अन्य कई धार्मिक ग्रन्थों को उद्धृत करते हुए सत्यनारायण की असली कथा लिखी है सत्यनारायण कौन है? उस कथा को सुनने से जो स्वर्ग मिलता है वह क्या है? सत्यनारायण का आदि और अन्त नहीं तब उसकी अनन्त कहानी क्या है? यह इस पुस्तक में आपको ऐसे मीठे और आकर्षक शब्दों में मिलेगी कि देर तक उसका चित्र हृदय से न मिट सकेगा। एक प्रति का मूल्य ॥=) मात्र है। १२ प्रतियों के लिए ७॥) में

लेखक की अन्य पुस्तकें—तत्त्वज्ञान मूल्य ३), **प्रभुभक्ति** मूल्य १॥), **प्रभुदर्शन** मूल्य २॥)

एक ही रास्ता मू० ॥॥), **आनन्द गायत्री कथा** मू० ॥=), **भगवान शंकर और दयानन्द** मू०

गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क देहली

वेदप्रकाश के चार अमूल्य विशेषांक रियायती मूल्य में

१. सचित्र दयानन्द ग्रन्थ संग्रह

जिसमें ऋषि की आत्मकथा सहित २० पुस्तकों का संग्रह है, प्रत्येक पुस्तक के साथ पुस्तक का रचना काल तथा परिस्थितियों का इतिहास भी है। साथ में ऋषि के ७ असली फोटो चित्र भी हैं।

२. सचित्र बाल्मीकि रामायण

धारावाही हिन्दी में मूल संस्कृत सहित प्रक्षिप्त भाग तथा अनावश्यक कथाओं को निकालकर आर्य-मर्यादानुकूल ग्रन्थ का संकलन किया गया है लगभग ६००० श्लोकों के साथ सरल भाषा में सजिल्द सुन्दर पुस्तक मूल्य १२) रियायती मूल्य ६) रु० मात्र है।

३. सृष्टि का इतिहास

आर्य पथिक पं० लेखराम कृत 'त्वारिखे दुनिया' का हिन्दी अनुवाद। जिसमें सृष्टि उत्पत्ति वेदों सत्शास्त्रों का समय निर्धारण करते समय जो अधुनिक इतिहासकार, पाश्चात्यों का अनुकरण कर भूल करते हैं उनके लिए यह उपयुक्त मार्ग प्रदर्शक उत्तम पुस्तक है मूल्य २) रियायती मूल्य १॥)।

४. बृहदारण्यक कथा माला

बृहदारण्यक उपनिषद् ब्राह्मण ग्रन्थ का एक भाग है, उसकी कथाओं के पाठ और श्रवण से वैदिक संस्कृति का अच्छा ज्ञान प्राप्त होगा पढ़ने योग्य उपयोगी पुस्तक है मूल्य ३) रियायती मूल्य [illegible] है। प्रत्येक वेदप्रकाश के ग्राहकों को रियायती मूल्य में। डाकखर्च अलग।

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क देहली।

❁ ओ३म् ❁

★ वेद प्रकाश ★

सम्पादक—गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष—७ : चैत्र २०१६ अप्रैल १९५९ : वार्षिक मूल्य २॥)
अंक—९ : दयानन्दाब्द १३४ चैत्र १८८० शाके : विदेशों से ५ शिं०

वेदसुधा

वीर्य=वीर्य, पराक्रम, पुरुषशक्ति, पौरुष, सब शरीर का आधार।

मन्युः—क्रोध, उत्साह, प्रबल, तीव्र इच्छा।

**इयदस्यायुरस्यायुर्मयि धेहि, युङ्ङ-
सि वर्चोऽसि वर्चो मयि धेह्यूर्ग-
स्यूर्जं मयि धेहि॥** वा० यजु० १०।२५॥

पदानि—इयत्। असि। आयुः। असि। आयुः। मयि। धेहि। युङ्। असि। वर्चः। असि। वर्चः। मयि। धेहि। ऊर्ग्। असि। ऊर्जम्। मयि। धेहि॥

अर्थः—(इयत्) इतना बड़ा तू (असि) है। तू (आयुः) आयु है, तू जीवन है, अतः मुझे (आयुः) जीवन (धेहि) दो। तू (युङ्) साथी (असि) है। तू (वर्चः) तेजस्वरूप है, अतः (मयि) मुझ में तेज (धेहि) स्थापन कर। तू (ऊर्ग्) सामर्थ्य है, अतः मुझ में सामर्थ्य स्थापन कर।

भावार्थः—हे ईश्वर ! तू सब से महान् है, तू ही जीवन है, तू ही हमारा सच्चा मित्र है, तू ही तेज का स्वरूप है, तू ही समर्थ है। अतः मुझ में महत्ता, जीवन, तेजस्विता और सामर्थ्य स्थापन कर और इन शक्तियों से मुझे युक्त कर।

★

टंकारा की सुखद यात्रा--२

[गोविन्दराम हासानन्द]

गत मार्च मास के अंक में टंकारा की यात्रा का, बम्बई पहुँचने तक का वर्णन लिखा जा चुका है। बम्बई पहुँचकर टंकारा ऋषि दयानन्द स्मारक सम्बन्ध में प्रचार कार्य तथा पोस्टर और विज्ञापन और छपाने का कार्य करना था। तदनुसार पोस्टर गुजराती तथा हिन्दी भाषा में, 'श्रो सिद्ध लिथो वर्क्स, गीरगांव बम्बई में छपने दिया, और यथा शीघ्र उन्होंने बहुत सुन्दर छाप दिये, वह गुजरात, सौराष्ट्र तथा दिल्ली आदि उत्तर भारत को भेजने के लिये बड़ौदा, श्री आनन्दप्रिय जी को भेज दिये।

बम्बई में एक मास रहने का अवसर मिला, अनेक सज्जनों से मिला, टंकारा विषयक बातें हुई, कुछ सिन्धी भाइयों से ८००) के करीब स्मारक के लिये दान भी प्राप्त किया।

श्री सेठ हरगोविन्द धर्मसी कांच वाले से ऋषि दयानन्द का कांच (शीशे) पर आर्ट किया हुआ सुन्दर एक चित्र प्राप्त किया जो कि ३५०) रुपये मूल्य का है, सेठ जी ने टंकारा स्मारक भवन में रखने के लिये दान में दिया। तदर्थ मैं तथा टंकारा के कार्यकर्ता ट्रस्टी आदि उनके आभारी है।

बम्बई भारतवर्ष का सुन्दर नगर है। वहां का रहन सहन बहुत ही ठाठ बाट का, युरोपिय ढंग का है, और जो कमी है बनती जा रही है। पढ़े लिखे लोग अग्रशी और पाश्चात्य रंग में रंगे जा रहे हैं। उनमें भारतीय संस्कृति का कोई ध्यान नहीं है। आडम्बरी धर्माचार्य का रूप धारण कर अनेक युवतियों को पथ भ्रष्ट कर रहे हैं। वल्लभाचार्य मत के गुंसाई लोग तो पहले से ही अपना अड्डा जमाये बैठे हैं। जो कि अनेक नवयुवतियां का तन, मन, धन, गुंसाई अर्पण का मंत्र अपने शिष्य और शिष्याओं को सुनाते रहते हैं।

देश के बटवारे के बाद पापस्थान कराची सिन्ध से कुख्यात ओंमण्डलो वाले दादा लेखराज जिसको करांची में सुनते हैं कि अपने कुकृत्यों के लिए जेल की सजा हुई थी। बम्बई में मेरीन ड्राइव (समुद्र के किनारे) वेस्टर्न को नामक भवन के छठे मंजिल पर ३ हजार रुपयों के भाड़े का स्थान लेकर प्रेममंडली--या प्रेम कुमारी नाम से मण्डली स्थापित कर खूब जाल बिछा कर नित्य नवयुवतियों को पंजे में फंसाते हैं इस कार्य के लिये अनेक कुटनियों द्वारा सद् गृहस्थों की बहु बेटियों को बहका रहे हैं, पति पत्नियों में फूट और कलह पैदा कर रहा है, उसके जाल में न केवल सिन्धी लड़कियां ही आती हैं पंजाबी और गुजराती युवतियां भी फंसती जा रही है।

भगवत प्रेम और दर्शन की कथिक लच्छेदार कहानियां नित्य "मूर्ली" के नाम से पर्चे डूब्लिकेटर मशीन पर सिन्धी, गुजराती, अंग्रेजी, हिन्दी आदि लीपियों में छाप कर बांटे जाते हैं।

इस भगवत प्रेम और दर्शन के अधिकारी केवल नवयुवतियों को ही आश्रय मिलता है— वृद्धा और प्रौढ़ स्त्रियों को नहीं, पुरुष वर्ग को तो बिलकुल ही नहीं। मैंने इस विषयक कथा और कुछ "मूर्ली" (सिन्धी भाषा के पर्चे) अपने एक आर्य समाजी गुजराती मित्र को दे भी आया हूं उन्होंने इस विषय में उचित कार्यवाही करने का आश्वासन भी दिया है, मैं इस स्थान पर राज्याधिकारियों का ध्यान खींचना चाहता हूं।

बम्बई के एक स्वर्गीय ऋषि दयानन्द के भक्त और प्रेमी की ओर आर्य मात्र का ध्यान खेंचना आवश्यक है। जिसे बहुत कम व्यक्ति जानते हैं, बम्बई के वृद्ध आर्य सज्जन भी बहुत कम जानते हैं।

उसकी कहानी निम्न प्रकार हैं। संवत् १९३० के आस पास जब स्वामी दयानन्द बम्बई पधारे उन दिनों बम्बई में वल्लभाचार्य मत के गुसाईं जी पर "महाराज लायबल केस" के नाम से प्रसिद्ध मुकद्दमा चल चुका था जिसमें गुसांई महाराजों की अनितिपूर्ण कृत्यों का भंडा फूट चुका था उनके विचारक भक्त गुसांई महाराजों से मुँह मोड़ चुके थे और किसी सद्गुरु की प्रतिक्षा में थे ऐसे समय में स्वामी दयानन्द का बम्बई में पदार्पण हुआ उनके सद् उपदेशों से गुजराती के प्रसिद्ध कवि केशवराम भट्ट (केशवकृति) नामक गुजराती कविता पुस्तक रचियता तथा और भी अनेक विद्वान् ऋषि के सम्पर्क में आये। वहां साथ में अनेक धनी व्यक्ति भी ऋषि के सम्पर्क में आये, उनमें स्वर्गीय श्री प्राग जी ठाकरसी मील मालिक भी एक सज्जन थे।

ऋषि की प्रेरणा और संगति से उनमें अपने संस्कृत साहित्य के अवलोकन और स्वाध्याय करने की इच्छा उत्पन्न हुई, और खूब शास्त्र मन्थन किया, ज्योतिष विद्या का ज्ञान प्राप्त करने के लिये उस समय उन्होंने १५ हजार रुपयों की एक दूरबीन विलायत से मंगाकर रात्रि को आकाश गंगा का निरीक्षण करते थे। सारांश यहहै कि हम इस सज्जन को लाहौर के ऋषि भक्त गुरुदत्त की नाईं शास्त्रों का मन्थन करते पाते हैं यह सज्जन भी गुरुदत्त जी की तरह अल्प आयु अर्थात् ३६ वर्ष की आयु में परलोक गमन किया।

सेठ प्रागजी ठाकुरसी ने अपने समय में "सद्धर्म शोधक मण्डली स्थापित की थी इस विषय के प्रचारार्थ मासिक पत्र भी निकाला था। तथा एक स्वाध्याय योग्य पुस्तक गुजराती में रची थी। जिसका नाम है "प्रमाण सहस्री" इस ग्रन्थ रत्न कें ३ प्रकरण हैं, सृष्टि प्रकरण, आचार प्रकरण, और विचार प्रकरण तथा अन्त में गीता का पदानुदाद किया है इन तीनों प्रकरणों में हजारों प्रमाण आर्ष शास्त्रों के दिये हैं उनमें शायद ही कोई प्रमाण ऐसा हो जो ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के सिद्धान्तों के विरुद्ध हो। इस ग्रन्थ का मूल्य ३) था जो कि विद्यार्थी तथा धर्मजिज्ञासु सज्जनों को वे बिना मूल्य वितरण करते थे। अपने जीवन काल में ही इस ग्रन्थ के प्रचार व प्रकाशनार्थ कहते हैं ३० हजार रुपयों का बिल कर गये थे और अपने वसीयतनामे में अपने उत्तराधिकारियों को आदेश लिखा गये थे कि इन रुपयों के व्याज से हर तीसरे वर्ष इस पुस्तक की आवृति प्रकाशित कर प्रचारित की जावे, इनके मृत्यु के बाद इनके सुपुत्र श्री हंसराज प्रागजी ठाकरसी जे० पी० बम्बई के प्रसिद्ध व्यक्ति हो चुके हैं। वे बम्बई कारपोरेशन के मेयर तथा मजिस्ट्रेट भी रह चुके हैं। उन्होंने अपने जीवन काल में अपने पिता की वसीयत के अनुसार इस ग्रन्थ की अनेक आवृतियां प्रकाशित की। अब श्री हंसराज जी की धर्मपत्नि श्री सुन्दर बाई जीवित हैं धार्मिक वृति की हैं। इन्होंने अपने नाम से भी इस ग्रन्थ की १९३३ में नवमी आवृति प्रकाशित की है अब इस ग्रन्थ की वह प्रसिद्धि नहीं जो पहले थी १९३३ के बाद इसकी कोई आवृति नहीं छपी। यदि सेठ प्रागजी ठाकरसी के ट्रस्टियों की तरफ से विद्यार्थियों में बांटने की व्यवस्था होती तो हर तीसरे वर्ष यह प्रकाशित होती रहती। अब इसकी ओर बम्बई के आर्य भाइयों को विशेष ध्यान देना चाहिए। बम्बई फोर्ट एरिया

में "सुन्दर बाई होल" जो है वह इसी सुन्दर बाई के नाम से है जो सेठ प्रागजी ठाकरसी की पुत्र वधु है। वहीं से यह ग्रन्थ मिल सकता है।

इतना लिखने के बाद अब पाठकों को टंकारा की ओर ले जाना चाहता हूँ। बम्बई से ता० ४ मार्च को रेल द्वारा टंकारा चल पड़ा ता० ५ की शाम को वहां पहुँच गया, पहुँचने पर देखा कर्मवीर श्री आनन्द प्रिय जी अस्त व्यस्त रूप में मेले की तैयारी में लगे हुए हैं। बड़ौदे आर्य कन्या विद्यालय की अनेक कन्यायें टंकारा पहुँच चुकी हैं। प्रातः यजुर्वेद पारायण यज्ञ में मधुर स्वर से कन्यायें वेद पाठ करती है, पूज्य ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के नेतृत्व में यज्ञ ता० १ मार्च से आरम्भ हो चुका है दर्शकों का आना आरम्भ हो गया है, सैकड़ों आ चुके हैं, ता० ६ से यात्रियों का सैकड़ों और हजारों की संख्या में आना हुआ देहली, पंजाब, कश्मीर, जम्मू तक के ऋषि प्रेमी आये। सौराष्ट्र और गुजरात के हजारों व्यक्ति आये।

ता० ६ से उत्सव का विशेष आरम्भ था। ता० ७ को विशाल नगर कीर्तन निकला, सर्वत्र उत्साह और नगर वासियों की तरफ से मिश्री और जल से कई स्थानों पर स्वागत हुआ। नगर कीर्तन के बाद श्री मेहरचन्द जी महाजन द्वारा ध्वजा लहराई गई तथा उत्सव की कार्यवाही आरम्भ हुई कांग्रेस के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री उछगराय ढेबर जी, वल्लभ भाई पटेल विद्यापीठ के आचार्य श्री चन्दूभाई पटेल, लोकसभा के अध्यक्ष श्री अनन्त शयनम आयंगर महोदय, भारत के सर्वोच्च न्यायालय के भूतपूर्व न्यायधीश श्री मेहरचन्द महाजन के तथा अनेक प्रसिद्ध आर्य विद्वानों के भाषणों की धूम रही।

व्याख्यान पण्डाल में १५ हजार से अधिक व्यक्तियों का बैठना और व्याख्यान सुनना ऋषि स्मारक की महत्ता को प्रकट करता था।

नित्य बाहर के ३-४ हजार व्यक्ति ऋषि लंगर से बिना मूल्य भोजन करते थे। भोजनालय में प्रातः ७ बजे से दूध चाय तथा नास्ते की धूम-मच जाती थी। उत्सव की कार्यवाही मध्याह्न १ बजे समाप्ति के बाद भोजनालय का घण्टा बजता था जो कि ३-४ बजे तक चलता था, फिर रात्रि को ८॥-९ बजे से आरम्भ होकर ११-११॥ तक चलता था, भोजन में शुद्ध घी की पूरियां नाना प्रकार की नित्य नई मिठाइयां रहतीं, दाल भात रोटियां शाक आदि की व्यवस्था थी। बहुत ही उत्साह और आनन्द पूर्वक उत्सव ता० ८ को रात्रि के प्रायः १ बजे शान्तिपाठ के बाद समाप्त हुआ और यात्री ता० ९ की शाम तक प्रस्थान कर गये। ता० ९ को शहर वालों के लिए रात्रि का प्रोग्राम गुजराती में रक्खा गया, शहर की अनेक जनता स्त्री पुरुषों ने उसमें भाग लिया रात्रि को १ बजे तक धर्मोपदेश, गरबाखेल तथा सामाजिक कुरीतियों के खेल भी देखे।

ग्रामवासियों की एक आवाज थी कि, आज तक किसी ग्राम वासी ने इस राज प्रासाद में पाँव तक नहीं रक्खा आज निसंकोच यहां घूमें, बैठे और सदुपदेश सुने।

महात्मा आनन्द स्वामी की नई पुस्तक

॥ मानव जीवन गाथा ॥

माहात्मा जी के सात दिनों की कथा, मूल्य १)

महर्षि दयानन्द का कुर्सी पर बैठा हुआ चित्र २०×३० आकार पर आफसेट कागज पर छपा हुवा सुन्दर चित्र। प्रत्येक समाजों में चित्र अवश्य होना चाहियें। मूल्य १)

टङ्कारा में श्री ढेबर भाई की महर्षि को श्रद्धाञ्जलि

राष्ट्रविधाता महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि में समग्र भारत से इतनी बड़ी संख्या में लोग इकट्ठे हुए हैं यह देख कर मैं गद्गद् हो रहा हूँ। आज से कितने ही वर्ष पूर्व अपने महर्षि दयानन्द को महा शिवरात्री के पवित्र दिन यहां से विदा दी थी। आज फिर उनको अपने बीच में निमन्त्रित कर रहे हैं।

सौराष्ट्र से कितने ही महापुरुष निकले हैं। कई विदेश व्यापारार्थ गये, कई विद्याभ्यास के लिये गये कोई जगत के कल्याणार्थ निकल पड़े। परन्तु तीन महापुरुष निकले जिन्होंने केवल अपने ही जीवन का कल्याण नहीं किया अपितु समस्त संसार के मानव जाति का कल्याण किया और भारत की मौलिक संस्कृति का निर्माण किया।

भगवान कृष्ण यहां से निकले जिन्होंने "परित्राणाय साधूनाम" को ललकारा, और विश्व में धर्म का नाश होता देख, धर्म की संस्थापनार्थ निकल पड़े। इसके पीछे ऐसे महापुरुष राष्ट्र विधायक, महर्षि दयानन्द को आज के शिवरात्रि के दिन परब्रह्म का ज्ञान हुआ और वे भी संसार के कल्याणार्थ गृह त्याग कर निकल पड़े उनके जीवन का कार्य और ध्येय हम सब जानते हैं। उनके कार्य का प्रभाव आज यहां टंकारा में हजारों की संख्या में देशभर से उपस्थित नर नारियों को देखकर लगाया जा सकता है। उनके पीछे महात्मा गांधी निकले ये सब सौराष्ट्र के गौरव ही नहीं हैं बल्कि भारत की संस्कृति के गौरव हैं। हजारों वर्ष व्यतीत होने पर भी आज अपनी संस्कृति हम लोगों को प्रेरणा दे रही है। भारत के कोने कोने में इस संस्कृति का अमर प्रभाव है। संस्कृति के प्रसार के लिए और संस्कृति की भावना में रंगने के लिए यह तीनों महापुरुष भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक घूमे। कोई भी कोना इनके प्रभाव और प्रेरणा से वंचित नहीं रहा।

आज हम महर्षि दयानन्द को अपने बीच में नहीं देख रहे। किन्तु उनका अमर व्यक्तित्व अपने को प्रेरणा दे रहा है। उनका पुरुषार्थ अमर था और वे आज भी हम में अथाह उत्साह पैदा कर रहे हैं। साधन और साध्य को महर्षि दयानन्द ने अपने प्रकाण्ड पुरुषार्थ से एक कर दिया था। इस महा पुरुष ने अपने जीवन में मां भारती की शील रक्षा के अतिरिक्त और कुछ नहीं विचारा। भारत को उन्होंने नवजीवन और आत्मविश्वास से भर दिया था। हिन्दुधर्म में जो संकीर्णता की भावना व्याप्त थी उसको दूर करने में उन्होंने अपनी जीवन की बाजी लगा दी थी, और देश की जनता में वीरत्व और जीवित रहने की भावना की लहर पैदा कर दी थी।

इस पुण्यविभूति को श्रद्धांजलि देने के लिए हम सब एकत्रित हुए हैं समस्त देश के कोने २ से लोग एकत्रित हुए हैं। यह अपनी अखण्ड एकता का प्रतीक है। इतने अधिक व्यक्ति सौराष्ट्र पहुँच गये यह एक मेरी धारणा में शुभ चिह्न है। ऐसा कहें ठीक होगा कि तो यहां एक छोटा सा भारत आबाद हो गया है एकत्रित हो गया है। टंकारा में भारत की एकता को मूर्तिमान देख कर मैं गौरव अनुभव करता हूं। महर्षि दयानन्द के जीवन का उद्देश्य भारत की एकता को प्रत्यक्ष देखने का था। देश की बिखरी हुई जनता के भेदभाव दूर कर राष्ट्र की एकता के लिये उन्होंने जीवन पर्यन्त कार्य किया। और उस एकता के यहां दर्शन हो

रहे हैं ऋषि दयानन्द के जीवन उद्देश्य की यहां पूर्ति हो रही है। सौराष्ट्र में भारत के दूसरे प्रांतों के बीच जो दीवार थी वह आज दूर हो गई है। यह सब महर्षि दयानन्द और भारतीय संस्कृति का प्रभाव है।

भारतीय संस्कृति जहां पहुँचती है वहां संकेत मिलता है इस एकता का होम हवन यज्ञ माध्यम बना कर स्मरण करते हैं। एक नये और प्राचीन भारत के बीच माध्यम था। प्राचीन भारत का गौरव स्मरण करके ही हम नये भारत का निर्माण कर रहे हैं। प्राचीन और नवीन भारत के बीच महर्षि दयानन्द के जीवन का कार्य एक पुल के समान है। रोम और ग्रीस की संस्कृति आज कहां है? परन्तु अपना परम सौभाग्य है प्राचीन संस्कृति को निचोड़ कर अपने सामने रखने वाले इस देश में पैदा हुए। उनमें से मुख्य महर्षि दयानन्द जी हैं। भारत जब कि भौतिक समृद्धि की ओर अग्रसर हो रहा है। तब प्राचीन संस्कृति छोड़ कर आगे नहीं बढ़ सकते। अपने राष्ट्र नेता पण्डित नेहरू ने भी अभी हाल में अपने प्राचीन संस्कृति को समझ कर और उसको सुरक्षित रखने के लिये आह्वान किया है। प्राचीन इतिहास की जो विशेषताएं हैं उसे अपने हृदय में अंकित कर लेना चाहिये। हमें अन्य देशों के साथ भी चलना है कारण कि संसार के सब देश भारत को देख रहे हैं। जो विशेषता भारत में है वह अन्य कहीं नहीं। इस विशेषता को एक अमूल्य सम्पत्ति की प्रकार सम्भाल है। यहां शान्ति मन्त्र का उद्घोष हुआ है और अन्त में शान्ति की भावना पैदा होनी चाहिए। वैदिक धर्म और वेद हमें शान्ति की दिशा में ले जा रहा हैं हमें सामूहिक और अन्तर्राष्ट्रीय जीवन की भी प्रेरणा दे रहा है।

पुण्य तपश्चर्या करके भारतीय संस्कृति का सत्य अर्थ हमारे सामने महर्षि दयादन्द ने रखा है। इनके चरणों में हम आज श्रद्धाञ्जलि अर्पण कर रहे हैं।

टंकारा ट्रस्टियों से

ऋषिभक्त श्रद्धालु जनता जनार्दन के अथाह उत्साह से टंकारा में स्मारक महोत्सव आशा से अधिक सफलता के साथ सम्पन्न हो गया, इसके लिए परमपिता परमात्मा का आशीर्वाद समझना चाहिये। अब आगे के लिए ऋषि का सब से बड़ा और आवश्यक काम वेद भाष्य को पूरा करना है, गत ७५ वर्षों में ऋषि की उत्तराधिकारी परोपकारिणि सभा को यह काम पूरा करना चाहिए था। आज यदि ऋषि शैली का, चारों वेदों का भाष्य मिलता तो अन्य किसी वेद भाष्य की मान्यता नहीं होती। संसार के विद्वान् महापुरुष, योगी अरविन्द, मैक्समूलम आदि विद्वानों ने ऋषि दयानन्द के वेद भाष्य की उपयोगिता को स्वीकार किया है खेद है कि सम्पूर्ण वेद भाष्य गत ७५ वर्षों में भी परोपकारिणि सभा ने तैयार नहीं करवाया, अब जब कि ऋषि जन्मस्थान सौराष्ट्र के ऋषि दयानन्द के अनन्यभक्त लक्ष्मीपति, दानी महानुभाव श्री सेठ नानजीभाई कालीदास के सात्विक दान से ऋषि जन्मभूमि में ही ऋषि का स्मारक स्थापित हुआ है। जनता ईंट पत्थरों के बने महलों को स्मारक नहीं मानेगी, उसको धूप वरषा के बचाव का छत्रछाया तो मानेगी। असली स्मारक तो ऋषि के कार्य को पूरा करने की ओर अग्रसर होना ही मानेगी आशा है स्मारक के अधिकारीगण (ट्रस्टी) सर्व प्रथम वेद भाष्य को पूरा कराने की ओर ध्यान देंगे।

—गोविन्दराम हासानन्द।

टङ्कारा जयन्ती विषयक

(सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की विज्ञप्ति)

अनेक आर्य समाजों और आर्य भाइयों ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से आगामी बोधोत्सव के समय होने वाली टंकारा जयन्ती के सम्बन्ध में इति-कर्तव्यता का निर्देश चाहा है। आर्य समाजों और आर्य जनता की सूचना के लिए यह विज्ञप्ति प्रकाशित की जा रही है कि इस सभा तथा टंकारा ट्रस्ट के अधिकारियों के मध्य पत्र व्यवहार हो रहा है। यह सभा चाहती है कि यह जयन्ती पूर्ण समारोह के साथ मनाई जाये और इसकी तैतारी में कोई त्रुटि न रहने दी जाए। सार्वदेशिक सभा यह यत्न कर रही है। कि टंकारा ट्रस्ट कुछ व्यक्तियों की ही नहीं, अपितु आर्य जगत् की भावना और पुरुषार्थ इस संस्था के पीछे रहे। और जयन्ती महोत्सव तथा ट्रस्ट की महर्षि दयानन्द स्मारक विषयक योजनाओं की सफलता असंदिग्ध बन जाए।

इसके लिये सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग ने दिनांक १-५-५४ की बैठक में एक प्रस्ताव के द्वारा निम्न लिखित शर्तों की पूर्ति करानी चाही है :—

(१) ट्रस्ट में सार्वदेशिक सभा तथा प्रान्तीय सभाओं का प्रतिनिधित्व रहे।

(२) ट्रस्ट के टूटने की अवस्था में ट्रस्ट की सम्पत्ति की स्वामिनी सार्वदेशिक सभा होगी।

(३) भविष्य में ट्रस्ट पत्र तथा मनोनीत सदस्य संख्या में सभी की स्वीकृति के बिना परिवर्तन न होगा।

(४) आजीवन सलाहकार सम्वतकार ही ही हों ट्रस्ट उनके सलाह को मानने के लिये वाध्य न हों।

यत्न किया जा रहा है कि इन शर्तों की पूर्ति ट्रस्ट के द्वारा शीघ्र ही हो जाय। हमें आशा करनी चाहिये कि ट्रस्ट के वर्तमान ट्रस्टी सभा को न्यायोचित माँग को स्वीकार करने में संकोच न करेंगे कि ट्रस्ट में सार्वदेशिक सभा तथा प्रान्तीय सभाओं का उचित प्रतिनिधित्व रहे जिससे भविष्य में यह ट्रस्ट आर्य समाज के संगठन और सिद्धान्तों के अन्तर्गत ऋषि के मन्तव्यों की पूर्ति करता रहे। यथा समय ट्रस्ट के साथ निर्णय हो जाने पर आर्य जनता को सूचित किया जायेगा।

मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली।

—:o:—

महर्षि दयानन्द स्मारक टङ्कारा का संक्षिप्त इतिहास के अवलोकन से प्रतीत होता है कि, ऋषि स्मारक टङ्कारा के विषय में आरम्भ से ही सार्वदेशिक सभा उदासीन रही है तथा उसका दायित्व अपने ऊपर लेने को उद्यत नहीं रही, संक्षिप्त इतिहास के अवलोकन से प्रतीत होता है कि सेठ नानजीभाई कालीदास के एक मात्र दान से मोरवी राज्य का टङ्कारा स्थित राज्यप्रासाद खरीदा गया है उन्होंने अपनी इच्छा से उसे ट्रस्ट आधीन कर दिया है। जिसमें सब प्रांतीय प्रतिनिधि सभाओं की शिरोमणी सार्वदेशिक सभा के प्रधान तथा ऋषि दयानन्द निर्मित परोपकारिणी सभा के प्रधान को भी ट्रस्टियों में मुख्य स्थान दिया गया है, तथा अन्य जितने भी ट्रस्टी हैं सभी आर्य समाजी

ही हैं, फिर भविष्य की चिन्ता की कोई बात नहीं ।

असल बात यह है कि बम्बई प्रान्त में, बम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के अधि कारियों का बड़ौदा के आर्य कुमार सभा तथा आर्य कन्या महाविद्यालय के मुख्य कार्य कर्त्ता श्री आनन्द प्रिय जी (जो कि श्री मास्टर आत्माराम जी के सुपुत्र हैं और महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट के मन्त्री भी हैं) से कुछ मतभेद है सार्वदेशिक सभा के वर्तमान अधिकारियों पर बम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्य कर्त्ताओं का प्रभाव है इसीलिए सार्वदेशिक सभा लोगों को टङ्कारा में ऋषि स्मारक के विषय में अपनी उदासीनता प्रकट कर रही है। टङ्कारा में गत शिवरात्री पर राज्य प्रासाद में ऋषि के स्मारक का उद्घाटन बड़ी शान के साथ सम्पन्न हो गया, हजारों व्यक्ति भारत के प्रत्येक कोने से पधारे थे सर्वोच्च न्यायालय के भूतपूर्व प्रधान जज श्री मेहरचन्द जी महाजन, काँग्रेस के भूतपूर्व प्रधान श्री ढेबर भाई, लोक सभा के अध्यक्ष श्री आयंगर जी तथा श्री वल्लभ विद्यामन्दिर के आचार्य और आर्य जगत के अनेक साधु संन्यासी विद्वानगण पधारे थे। सब ने ऋषि दयानन्द के प्रति श्रद्धाँजलि तथा आभार प्रदर्शन किया।

ऋषि स्मारक के आधीन ऋषि सिद्धान्तों के प्रचारार्थ अनेक प्रवृत्तियां आरम्भ करने की योजनायें विचाराधीन हैं। जैसे २ साधन उपलब्ध होते जावेंगे कार्य आरम्भ होगा।

—सम्पादक

श्रीमद्दयानन्द स्मारक टंकारा सहायक समिति दिल्ली की स्थापना

ता० २२-३-५९ को आर्य समाज मन्दिर करोलबाग में साय ५ बजे श्री कविराज हरनाम दास जी के प्रधानत्व में महर्षि दयानन्द स्मारक टंकारा सहायक समिति स्थापित हुई, जिसमें उपस्थित आर्य भाइयों ने सदस्य होना स्वीकार किया, सदस्य चन्दा केवल १) वार्षिक रखा गया जो कि उसी समय सदस्यों ने दे दिया तथा समिति का काम चलाने के लिए भी विशेष चन्दा प्राप्त हुआ: कार्य कारिणि के ७ सदस्य निर्धारित हुए।

महर्षि दयानन्द स्मारक दान सूची

(गोविन्दराम हासानन्द द्वारा प्राप्त)

२५१) सेठ भगवानदेव आर्य बम्बई।
२५१) गुप्त दान
१५१) श्री जयदेव जी आर्य (रोंशीराम कम्पनी बम्बई वाले)।
१०१) श्री कमानी आयल मिल्स बम्बई।
५१) श्री गिरधारीलाल देवेन्द्रकुमार पेपरमर्चेंट।
१०१) श्री बहिन सीतादेवी फकीर भाई डाक्टर (सूरत)।
१०१) श्री बहिन हरदेवी जी प्रीतमचंद जी (दिल्ली)।
२५) श्री अमृतकान्ता जी चन्द्रभान जी (दिल्ली)।
१०१) श्री यशोदा देवी गोविन्दराम (दिल्ली)।
१००) श्री राजकुमार रणञ्जयसिंह जी अमेठी भूतपूर्व प्रधान उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा।

टङ्कारा के बाद करतारपुर

गुरुवर स्वामी विरजानन्द की जन्म भूमि में गुरु का स्मारक महोत्सव टंकारा की तरह आयोजित होना आवश्यक है इसलिए आर्य प्रतिनिधि समा द्वारा आयोजन तथा प्रचारकार्य होना चाहिए।

—गोविन्दराम हासानन्द।

॥ ओ३म् ॥

महर्षि दयानन्द स्मारक टंकारा का संक्षिप्त इतिहास

सौराष्ट्र दो विभूतियों की जन्म भूमि है। एक महर्षि दयानन्द और दूसरे महात्मा गांधी। अफ्रीका के आर्य श्रेष्ठि श्री नानजी भाई कालीदास मेहता ने पोरबन्दर में ६ लाख रुपया खर्च करके महात्मा जी के जन्म स्थान पर एक भव्य स्मारक खड़ा कर केन्द्रीय सरकार को अर्पण कर दिया। इस स्मारक का उद्घाटन स्वर्गीय सरदार पटेल ने किया। यह संवाद पत्रों में बड़ी गौरवपूर्ण नीति से छपा। यह संवांद पढ़कर आर्य सन्देश कारेली बाग बड़ौदा के संपादक श्री नाग जी भाई ने आर्य सन्देश में एक अग्रलेख लिखा कि नानजी भाई ऋषि दयानन्द के परम भक्त हैं, अतः उन्हें टंकारा में भी ऋषि दयानन्द का स्मारक रचना चाहिए। इस अग्रलेख को पढ़ कर श्री सेठ नान जी भाई ने पत्र द्वारा आर्य सन्देश कार्यालय को सूचना दी कि वह महर्षि का स्मारक भी टंकारा में करने का विचार रखते हैं। उन्होंने आर्य कुमार महासभा के कार्यकर्ताओं को टंकारा जाकर पोरबन्दर आने को लिखा।

उनके पत्र के अनुसार आर्य कुमार महासभा के उप-प्रमुख श्री चतुर भाई और आर्य कुमार आश्रम के मुख्याधिष्ठाता श्री नाग जी भाई आर्य टंकारा गये। वहां सब परिस्थितियों को देख कर श्री गिरधरलाल गोविन्द जी मेहता, श्रीमती चंचल बहिन पाठक के साथ पोरबन्दर गये और टंकारा का सब वृतान्त कह सुनाया। सेठजी ने उस समय टंकारा में स्मारक के लिए डेढ़ लाख रुपया देने की घोषणा की।

इस घोषणा के अनुसार आर्य कुमार महासभा के उप-मन्त्री पं० चन्द्रमणि जी ने ता० १५-१२-५० के दिन निम्नलिखित परिपत्र छपवा कर सब कार्य समाजियों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं एवं सार्वदेशिक सभा को भेज दिया—स्मरण रहे इस समय आर्य कुमार महासभा के मन्त्री पं० आनन्द प्रिय जी अफ्रीका प्रवास में थे।

परिपत्र की प्रतिलिपि—

॥ ओ३म् ॥

ता० १५-१२-५०

आर्य कुमार महासभा, आर्य कुमार आश्रम, कारेली बाग, बड़ौदा,

श्री मान मान्यवर,

आपको जान कर अत्यन्त ही प्रसन्नता होगी कि ऋषि दयानन्द जी की जन्म भूमि टंकारा में महर्षि जी का स्मारक बनाने की विचारणा चल रही है।

पोरबन्दर के विख्यात आर्य सेठ श्री नान जी भाई कालीदास मेहता १॥ (डेढ़) लाख रुपया खर्च करके वहां कन्या पाठशाला, संन्यास आश्रम, आर्य औषधालय, बाल मन्दिर, व्यायाम मंदिर और एक टावर बना देने के लिए उद्यत हुए हैं। इन संस्थाओं के निर्माण के लिये भूमि इत्यादि जो कुछ लेनी होगी वह भी सेठ जी ले देंगे और असबाब इत्यादि का भी प्रबन्ध कर देंगे।

किन्तु सेठ जी यह चाहते हैं कि इन संस्थाओं के संचालन की जिम्मेदारी प्रतिनिधि सभायें और सार्वदेशिक सभा को लेनी चाहिये। और इसलिए

कम से कम दो लाख रुपये इन सभाओं और समाजों को मिलकर संग्रह करने चाहिये। जिसके व्याज से टंकारा में प्रवृत्तियां स्थिर रूप से चल सकें। सेठ जी चाहते हैं कि इन संस्थाओं के साथ-साथ चार त्यागी संन्यासियों को भी वहां रहने की व्यवस्था होनी चाहिये जो कि घूमते फिरते रहें और प्रचार में लगे रहें।

सेठ जी कहते हैं कि सार्वदेशिक और प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के द्वारा दो लाख रुपये एकत्रित हो जाने पर ही मैं कार्य आरम्भ करूंगा।

आशा है आप इस अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय में विचार करेंगे और अपने ऋषि ऋण चुकाने के कर्तव्य को भली भांति समझेंगे। पत्रोत्तर देने का कष्ट करें।

इस विषय में आप सलाह सूचना और अभिप्राय देने की कृपा करें।

आपका विनीत कृपाकांक्षी:—
चन्द्रमणि
उप-मन्त्री,

सूचना:—आप कितनी सहायता हमें भेज सकेंगे हमें लिखें। सहायता का धन सेठ श्री नानजी भाई कालीदास मेहता, पोरबन्दर (सौराष्ट्र) के नाम से भेजें और इसकी सूचना हमें कर दें जिससे प्रचार में सुविधा हो। सेठ श्री नानजी भाई मेहता, पिछले सप्ताह बड़ौदे आये थे, और उन्होंने इस विषय के लिये हमें पुनः प्रोत्साहित किया था।

इससे स्पष्ट है कि ट्रस्ट निर्माता श्री नानजी भाई की भावना कितनी व्यापक और विशाल थी।

इस परिपत्र के उत्तर में दारस्लाम आर्य समाज ने २०००) रुपया देने का निश्चय किया और किस्मू और नैरोबी की आर्य समाजों ने इस परिपत्र का स्वागत किया। महात्मा आनन्दस्वामी जी अमृतधारा वाले पं० ठाकुरदत्त शर्मा, पं० अलगूराय शास्त्री, पं० नरदेव शास्त्री और स्वामी स्वतंत्रानन्द जी के आशीर्वाद प्राप्त हुए।

इस समय श्री नाग जी भाई आर्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में श्री नानजी भाई की सम्मति से देहली गये और वहां पं० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय जो उस समय अर्थात् सन् ५१ में मंत्री थे, उनसे मिले। इस मुलाकात का परिणाम नागजी भाई के ११-३-५१ के पत्र से जो उन्होंने श्री चतुरभाई को लिखा था—स्पष्ट है—पत्र की प्रतिलिपि निम्नलिखित है।

माननीय चतुरभाई जी, ता० ११-३-५१

सप्रेम नमस्ते !

आशा है आप आनन्द पूर्वक होंगे, बहुत दिनों से आपका कोई समाचार नहीं है, तो लिखें।

दूसरा यह कि टंकारा स्मारक के सम्बन्ध में मैं दिल्ली गया था, और ता० ६ महाशिवरात्रि के दिन सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में श्री पं० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय को मिला था।

सभा की तरफ से हम लोगों ने जो परिपत्र निकाला था, वह उनको बतलाया (पढ़ाया) था। बाद में डेढ़ घण्टे तक भिन्न-भिन्न दृष्टि बिन्दुओं से बातचीत हुई थी।

वे लोग टंकारा स्मारक के सम्बन्ध में कोई जवाबदारी लें, ऐसा कोई चिन्ह नहीं है और उनसे कोई फण्ड इत्यादि भी नहीं हो सकता।

मैंने उनसे यह भी कहा कि हम लोग "आर्य कुमार महासभा बड़ौदा" के कार्यकर्ता दान इत्यादि एकत्र करने की जवाबदारी ले लें तो आप इस कार्य को हाथ में लेंगे ?

इस पर भी उन्होंने कहा कि हम लोग किसी भी जवाबदारी को उठा सकें ऐसा नहीं है।

यदि आप एक स्वतन्त्र समिति बनाकर यह

कार्य उठावें तो हम कोई भी गड़बड़ नहीं करेंगे। ऐसा उन्होंने कहा है।

आपका—नागजी भाई आर्य

इसी समय गुजरात के एक अग्रगण्य आर्य स्नातक सत्यव्रत जी जो कारणवशात् देहली गये थे। श्री गंगाप्रसाद जी उपाध्याय को मिले थे। इनकी आपस में जो बातें हुई उसकी सूचना पत्र द्वारा हमें दी थी जिसकी प्रतिलिपि निम्नलिखित है।

मादुंगा

श्रीयुत पं० चन्द्रमणि जी,

टंकारा स्मारक विषय का आपका हैन्डबिल और कार्ड मिले। टंकारा में स्मारक हो इस काम में प्रत्येक आर्य को मदद करनी चाहिये। इसमें मैं मेरी ओर से टंकारा ट्रस्ट में सौ रुपये दूंगा। मैं १५ दिन पहले पंजाब गया था। वहां से लौटते हुये देहली उतर कर ता० १२ को सार्वदेशिक सभा के मन्त्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय को मिला था। उनके साथ इस सम्बन्ध में मेरी लम्बी चर्चा हुई थी। उसका सार यह है कि उन्होंने श्री नानजी भाई को सूचित किया है कि सब आर्य एकत्र होकर दो लाख रुपया इकट्ठा करें तो बाकी की रकम सेठ जी देंगे, यह बात व्यवहार पूर्ण नहीं है। तथा इस प्रकार कार्य शक्य नहीं है। इसलिये सार्वदेशिक सभा इस कार्य में रस नहीं लेगी। ऐसा स्पष्ट उन्होंने सेठ श्री नानजी भाई को लिख दिया है।

इस अवस्था में प्रतिनिधि सभायें भी रस ले सकें ऐसा शक्य नहीं है।

डा० स्नातक सत्यव्रत

इन दोनों पत्रों से यह बिलकुल स्पष्ट हो जाता है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, इस कार्य में बिलकुल उदासीन थी, और वे इस कार्य में सेठ नानजी भाई का हाथ नहीं बटा सकेंगे, ऐसा स्पष्ट निर्देश उन्होंने कर दिया। सार्वदेशिक सभा का स्पष्ट मत था कि यदि आप स्वतन्त्र कोई भी समिति बनाकर कार्य उठावें तो कोई भी आपत्ति नहीं होगी। इस परिस्थिति में श्री सेठ जी के पास अन्य कोई मार्ग न रहा, और उन्होंने स्वतंत्र रूप से १५-५-५१ को पोरबन्दर में महर्षि दयानंद ट्रस्ट की रजिस्ट्री करा दी।

इस चेष्टा के पूर्व टंकारा में दयानन्द जी का स्मारक बने ऐसा निर्णय महर्षि दयानन्द अर्ध शताब्दि टंकारा के उत्सव में किया गया था। उस समय हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी, महात्मा स्वामी शंकरानन्द जी, महात्मा स्वामी सर्वदानन्द जी आदि अनेक आर्य नेतागण भी उपस्थित थे।

इसके पश्चात् इस दिशा में कोई विशेष कार्य नहीं हुआ। उल्लेखनीय कार्य स्वर्गीय श्री गिरधर लाल गोविंद जी मेहता का है। जिन्होंने टंकारा को अपना कार्यक्षेत्र बना कर ऋषि का स्मारक बनाने का आयोजन किया।

इस कार्य में उन्होंने अपने समस्त जीवन की आहुति दे दी, उनके इस गौरवपूर्ण कार्य के लिये उन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकेगा।

इस कार्य में उनकी सहयोगिनी श्रीमती चंचल बेन पाठक, श्री मती शान्ता बेन को भी नहीं भूल सकते, जिन्होंने गिरधरलाल गोविंद जी के साथ सहयोग देकर पंजाब आदि का दौरा किया, और टंकारा में ऋषि स्मारक बने इसकी चेष्टा की। उनके कथनानुसार सार्वदेशिक सभा के विरोध से वे सफल न हो सके।

फिर भी टंकारा में ऋषि स्मारक रूप में आर्य समाज मंदिर के निर्माण का यश इन त्रिपुटी को है, जिन्होंने अपना तन मन धन टंकारा में आर्य समाज के कार्य में लगा दिया।

श्रीमान् सेठ नानजी भाई ने निम्नलिखित ट्रस्ट के उद्देश्यों की रूप रेखा रखी थी इससे भी आप को सेठ जी की विशाल भावना का आभास मिलेगा।

उद्देश्य:—महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्म-भूमि टंकारा (सौराष्ट्र) में जमीनें लेनी, उसमें ट्रस्टी मण्डल को योग्य लगे उस प्रकार स्मारक को चलाने की (संचालन की) व्यवस्था करनी, उस निमित्त फण्ड (धन) प्राप्त करना।

आर्य सिद्धांतों तथा वैदिक धर्म के अनुकूल जैसा योग्य लगे वैसी तमाम प्रवृत्तियाँ करनी।

सेठ जी ने अपनी प्रदत्त धन राशि के सम्बन्ध में डीड में यह लिखा है।

इस ट्रस्ट में वर्णित हमारी डेढ़ लाख की रकम स्मारक निर्माण में ही खर्ची जानी चाहिये। उसको कार्य संचालन में नहीं लगाया जायेगा। चालू खर्च के लिए दो वर्ष के अंदर ट्रस्टी रकम एकत्र करने का काम करें।

सेठ जी ने इस ट्रस्ट के निर्माण के समय निम्नलिखित ट्रस्टी नियुक्त किये।

१. श्री चांदकरण जी शारदा, अजमेर
२. पण्डित आनन्दप्रियजी आत्मारामजी, बड़ौदा
३. कुमारी सविताबेन नान जी भाई, पोरबंदर
४. श्री अर्जुन कुंवर जी पटेल, राजकोट
५. अर्जुनदेव जी आचार्य, महर्षि दयानन्द महा-विद्यालय चौकी, सोरठ
६. श्रीयुत गिरधरलाल गोविंदजो मेहता, टंकारा
७. प्रधान परोपकारिणी सभा, अजमेर

अधिकारी एवं कार्यालय

इस ट्रस्ट के निर्माण के पश्चात् ट्रस्ट के निम्नलिखित अधिकारी नियुक्त किये गये। प्रधान सेठ श्री नानजी भाई तथा मंत्री कुंवर चांदकरण जी को बनाया गया, और ट्रस्ट की आफिस शारदा भवन अजमेर में रखने की व्यवस्था की गई।

सन् ५१ से ५८ तक ट्रस्ट की क्या व्यवस्था रही उस पर अब हम दृष्टिपात करेंगे।

इस काल में ट्रस्ट को सेठ श्री राजनारायणलाल पित्ती की ओर से ५०००) सेठ श्री अर्जुन कुंवर जी की ओर से २५००) राजा गोविंदलाल जी की ओर से १०००) के उल्लेखनीय दान आये। और भी छोटी मोटी रकमों द्वारा १००००) संग्रह हुआ।

परोपकारिणी सभा ने निर्णय किया कि कार्य आरम्भ होने पर अपने फण्ड में से ५० हजार रुपया अलग रख दिया जायेगा। जिसका व्याज टंकारा स्मारक को मिलता रहेगा।

ट्रस्टीज के अनुसार प्रथम सभा १६-७-५१ को पोरबन्दर हुई और श्री नानजी भाई को प्रधान तथा श्री कुं० चांदकरण शारदा को मन्त्री चुना गया अजमेर के खर्च के लिये रुपया १००) मासिक स्वीकृत किये गये।

ट्रस्ट की दूसरी बैठक २-८-५२ को महर्षि दयानन्द महा विद्यालय चौकी, सोरठ में हुई उसमें सार्वदेशिक सभा के प्रधान को वा हैसियत प्रधान, को ट्रस्टी के रूप में लिया गया। इस सभा में एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव निम्नलिखित था "इस ट्रस्ट के कार्य को वेग देने के लिये और कार्य संचालन के लिये एक समिति बनाई जाय जिसमें सब ट्रस्टी तथा सब प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा आर्य कुमार महासभा के प्रधान सम्मिलित किये जावें यह समिति शीघ्रतिशीघ्र १॥) लाख रुपया एकत्रित करे और ट्रस्ट के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये कार्य में योग और सहायता प्रदान करें।

आगामी सभा की कार्यवाही में कुं० चांद-

करण जी का निम्न निवेदन अर्थ सूचक है। ट्रस्टी मण्डल ने खेद के साथ इस बात की निन्दा की कि सार्वदेशिक सभा तथा अन्य प्रान्तीय सभाओं के उत्तर संतोषजनक प्राप्त नहीं हुए।

ट्रस्ट ने टङ्कारा में नगरपालिका से स्मारक के लिये जमीन खरीदने के प्रस्ताव पर रुपया ५०००) में जमीन प्राप्त की और साथ में टङ्कारा आर्य समाज ने इसी भूमि के समीप उनकी आठ बीघा जमीन देने की घोषणा की।

११-३-५४ की ट्रस्टा सभा ने मंत्री श्री चांद करण शारदा संग्रहार्थ अफ्रीका भेजने का निश्चय किया, और इस कार्य के लिये ३०००) रुपया निश्चय किया गया। श्री शारदा जी ने २३-५-५४ को अफ्रीका के लिये प्रस्थान किया। तथा ५ मास प्रचार कर रुपया ३००००) एकत्रित कर लाये और आते ही हृदय रोग से पीड़ित हो गये। इस अवस्था में ट्रस्टा मण्डल ने श्री पं० आनन्दप्रिय जी को १८-१२-५४ को संयुक्त मंत्री नियुक्त किया। इसी सभा में सेठ श्री नानजीभाई का प्रधान तथा ट्रस्टी पद से त्याग पत्र स्वीकृत हुआ। और उनके स्थान पर नये ट्रस्टी श्री सेठ प्रताप सिंह शूरजीवल्लभदास को नियुक्त किया।

इस दरमियान निम्न लिखित ट्रस्टियों के भी त्याग पत्र स्वीकार किये गये।

१. सुश्री सबिता बहिन नानजीभाई।
२. श्री अर्जुनकुँवर जी पटेल।
३. श्री अर्जुनदेव जी आचार्य दयानन्द महाविद्यालय, चोकी।

नये ट्रस्टी

निम्नलिखित महानुभावों को नये ट्रस्टी के रूप में चुना गया—

१. महाशय कृष्णजी, जो प्रारम्भ से ही परोपकारिणी सभा के प्रधान के रूप में थे।
२. स्वामी ध्रुवानन्द जी, प्रधान आर्य सार्वदेशिक सभा, बाद में उनको व्यक्तिगत रूप में भी ट्रस्टी बना लिया गया।
३. श्री चतुरभाई पटेल, मंत्री आर्य कन्या गुरुकुल, पोरबन्दर।
४. डाक्टर मथुरादास मोगावाले, नई दिल्ली।
५. महाशय हंसराज जी गुप्ता, नई दिल्ली।
६. श्री चंचल बहिन पाठक प्रधान, आर्य समाज टङ्कारा।

(श्री गिरधार लाल जी गोबिन्दराम महेता को पक्षाघात होके के कारण श्री चंचल बहिन की नियुक्ति की गई।

७. श्री मगनभाई वल्लभ भाई पटेल।

इसी समय श्री गोविन्दराम जी ने ट्रस्ट को ५० हजार रुपया पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा देने की घोषणा की, ट्रस्ट ने उनको ट्रस्टी के रूप में भी सम्मिलित किया, ट्रस्ट ने पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा को अभिनन्दन भी दिया परन्तु श्री गोविन्दराम जी अपना वचन पालन न कर सके।

२२-८-५८ की ट्रस्टियों की सभा में टंकारा स्थित मोरवी नरेश का प्रासाद २ लाख में खरीदने का सौदा सभा के ट्रस्टी श्री मगन भाई जोषी (स्पीकर विधान सभा सौराष्ट्र) मोरवी नरेश से मिलकर सौदा कर लें ऐसा निश्चय हुआ।

श्री मान् मगन भाई वल्लभ भाई पटेल को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया।

इस दरमियान सार्वदेशिक सभा के साथ ट्रस्ट का पत्र व्यवहार होता रहा परन्तु दोनों पक्षों की ओर से कोई निश्चित निर्णय न हो सका। इस कार्य के लिये एक सभा महाशय हंसराज जी गुप्त के घर पर बुलाई गई। उस समय के सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री प्रो० इन्द्र जी के साथ अन्य आर्य नेता गणों की उपस्थिति में विचार विमर्श

हुआ, फलस्वरूप प्रो० इन्द्रजी ने प्रधान की हैसियत से ट्रस्ट को सहायता करने की अपील भी निकाली और टंकारा का महल खरीदने के लिये सार्वदेशिक सभा २० हजार का लोन भी दे सकेगो, ऐसा कहा। सार्वदेशिक सभा को ओर से उस समय ३ शर्तें रखी गयीं थीं जिसे लगभग ट्रस्टी मण्डल ने स्वीकार करने में कोई विशेष आपत्ति नहीं बतलाई थी परन्तु बात आगे भी बढ़ पाई।

ट्रस्ट ने २० हजार की लोन मांगी तब सार्वदेशिक सभा की ओर से चार शर्तें पेश हुईं ! जो अभी तक ट्रस्ट के विचाराधीन हैं। ट्रस्ट का उद्देश्य सार्वदेशिक के साथ समन्वय से काम करने का है।

इस सभा में सेठ श्री नान जो भाई द्वारा निर्मित ट्रस्टडीड हिन्दी अनुवाद सुनाया गया। जिससे सबको स्पष्ट हो गया कि ट्रस्ट का निर्माण महर्षि दयानन्द जी के सिद्धान्तों का ही प्रचार करना है।

सुप्रीम कोर्ट के एडवोकेट श्री चरणदास पुरी ने ट्रस्टडीड सुनने के बाद यह सम्मति दी कि ट्रस्टडीड में किसी प्रकार का परिवर्तन ट्रस्ट के उत्पादक ही कर सकते हैं। ट्रस्टी तो ट्रस्ट के इच्छानुसार कार्य चलाने के ही जिम्मेदार हैं।

अतः यदि कोई ट्रस्टी न रहे तो यह सम्पत्ति सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधीन कर दी जाय, यह सुधार ट्रस्टी नहीं कर सकते। इसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान और परोपकारिणी सभा के प्रधान भी हैं। इसलिये भावी में ऐसी आशंका का स्थान नहीं रहना चाहिये।

महाशय कृष्णजी ने स्पष्टीकरण किया कि ट्रस्ट अन्य सभा के रूप में चुनाव की संस्था नहीं है। वैसे ही इन्द्र जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ ट्रस्ट का समन्वय किस प्रकार हो सकता है उसके कुछ व्यवहारिक मार्ग बतलाये।

देहली की सभा में निम्नलिखित प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित हुआ :—

ट्रस्ट सार्वदेशिक सभा के सुझाव और मार्ग-दर्शन पर गम्भीरता पूर्वक विचार करेगा और उसकी नीति ट्रस्ट के हित में सार्वदेशिक के साथ समन्वय से काम करने की होगी।

देहली की सभा में भावी के कार्यक्रम की रूपरेखा जो निश्चित की गई, उसी को तारीख-२२-११-५८ को सभा में दोहराया गया।

प्रथम ये प्रस्ताव ४-१२-५५ में दिल्ली में किया गया था प्रस्ताव इस प्रकार :—

१. टंकारा में एक रिसर्च इन्स्टीट्यूट वैदिक अनुसंधान विभाग खोला जाय और इसके साथ एक उत्तम पुस्तकालय रक्खा जाय और चार विद्वान पंडित रक्खे जांय।
२. आवश्यकतानुसार एक संन्यास आश्रम, बानप्रस्थ आश्रम और विद्यार्थी गृह भी खोला जाये।
३. महर्षि के चित्र एवं ग्रन्थों का संग्रह किया जाय।
४. सत्यार्थप्रकाश को सभी भाषाओं में छापकर सस्ते भाव में प्रचारित कराया जाय।
५. महर्षि के जीवन की झांकी कराता हुआ एक ऐतिहासिक स्तूप तैयार कराया जाय।
६. महर्षि के जन्मस्थान पर एक घंटाघर बनाया जाय।
७. महर्षि के ग्रन्थों का अनुशीलन हो उसके खण्डन-मण्डन के ग्रन्थों का संग्रह किया जाय।
८. संक्षिप्त में महर्षि को स्मृति बनी रहे, ऐसे

सभी प्रकार के कार्य करने की अनुमति दी जाती है।

साथ ही साथ इन कार्यों में आरोग्य-धाम, योग-आश्रम आदि का भी समावेश किया जाय।

ट्रस्ट के निर्माण के समय सबको ऐसी आशा थी कि आर्य जगत सेठ नानजीभाई के दान के पश्चात् एक दम प्रोत्साहित हो सहज में ही डेढ़ दो लाख की धनराशि एकत्रित कर लेगा, कई आश्वासन भी मिले किन्तु संयोगवशात् परिपूर्ण न हो सके, और ट्रस्टी मण्डल में निराशा का कुछ वातावरण उत्पन्न हो गया। धन संग्रह का काम शिथिल पड़ गया। मोरवी राजप्रसाद का सौदा होने पर भी हम उसे खरीद नहीं सके।

अफ्रिका से लौटने पर ट्रस्ट के मन्त्री श्री-कुंवर चांदकरण जी शारदा हृदय रोग से ग्रसित हो गये और दो वर्ष तक रोग शय्या पर पड़े-पड़े भी टंकारा स्मारक बनने की भावना को लेखों द्वारा बल देते रहे। परन्तु परिस्थितियां अनुकूल न हुईं और ट्रस्ट के निर्माण की भावना को लेकर ही चल बसे। उनके निधन और बीमारी से हमारे कार्य में क्षति हुई और सारा बोझ ट्रस्ट के संयुक्त मन्त्री श्री पं० आनन्दप्रिय जी के ही कन्धों पर आ पड़ा।

ट्रस्ट के नये प्रधान स्वनाम धन्य सेठ श्री-प्रतापसिंह जी ने भी ट्रस्ट की परिस्थिति को सुलझाने का प्रयत्न किया। उन्होंने सार्वदेशिक सभा के नेताओं से तथा अन्य प्रमुख आर्य महानुभावों से ट्रस्ट के कार्य में रस लेने के लिए आह्वान किया किन्तु अन्त में आर्य जगत की उदासीनता का अनुभव कर ट्रस्टी और अध्यक्ष पद से त्याग पत्र दे दिया। उनके त्याग पत्र से भी हमारे कार्य को ठेस लगी, इसी बीच मोरवी नरेश का अवसान हो गया और उनके ऐग्जीक्यूटरों ने ट्रस्ट को महल खरीदने के लिए आह्वान किया। और ट्रस्ट के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करने की भी धमकी दी। इधर इस ट्रस्ट के निर्माता सेठ श्री नानजीभाई भी कार्य की मन्थर गति से अकुला उठे। इस परिस्थिति में ट्रस्ट की स्थिति डांवाडोल हो गई।

इसी समय ट्रस्ट के मन्त्री पं० श्री आनन्दप्रिय जी ने बम्बई जाकर एग्जीक्यूटरों से मुलाकात की और उनको दो लाख की जगह डेढ़ लाख में महल देने के लिए समझाया।

श्री मगनभाई जोषी ने जब दो लाख में महल खरीदने का सौदा किया था, तब मोरवी नरेश श्री लखधीरसिंह जी ने कुछ अच्छी रकम दान के रूप में लौटाने को कही थी। ईश्वर के अपार अनुग्रह से एग्जीक्यूटरों ने डेढ़ लाख में महल देना स्वीकृत कर लिया, और सेठ श्री-नानजीभाई ने भी सहर्ष अपनी रकम में से महल खरीद ने की स्वीकृति प्रदान कर दी। ट्रस्ट ने इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए, मन्त्री श्री पंडित आनन्दप्रिय जी, श्री मगनभाई जोषी और श्री नानालाल उपाध्याय को नियुक्त कर दिया। ईश्वर कृपा से इसके पश्चात् हमारे कार्य में नया रक्त संचार हो गया।

ओ३म् ध्वजारोहण

१०-१-५९ के दिन श्री मगनभाई जोषी ने मोरबी की महाराणी के कारभारी से ग्राम लोगों की उपस्थिति में ओ३म् ध्वज लहराकर ट्रस्ट की ओर से महल का कब्जा लेकर इस कार्य को सम्पन्न किया।

ट्रस्ट के व्यवस्थापक के रूप में जैतपुर नगर-पालिका के निवृत्त श्री अंबालाल पटेल ने अपनी अवैतनिक रूप में सेवायें प्रदान की और तत्परता से ही महल के रंग रोगन तथा मरम्मत, स्वच्छता

आदि का काम कर डाला । उनकी सेवायें सराहनीय हैं ।

ट्रस्ट ने मरम्मत आदि के लिए तत्काल पंद्रह हजार रुपये मंजूर कर दिए और महर्षि के आदर्शों के अनुरूप राजमहल का यज्ञशाला आदि से काया कल्प कर दिया ।

ट्रस्ट के निर्माता सेठ श्री नानजी भाई ने अपने दान से घंटाघर बनाने की योजना आरम्भ कर दी है । जो शीघ्र ही तैयार हो जायगा ।

ट्रस्ट ने प्रति वर्ष बोध-रात्रि पर भव्य ऋषि मेला मनाने का आयोजन किया है ।

इस वर्ष का भव्य उद्‌घाटन का बड़े पैमाने पर आयोजन ट्रस्ट ने किया है । इस प्रकार महर्षि के एक ऋषि भक्त ने महर्षि स्मारक भवन का निर्माण कर अपनी ऋषि स्मारक भवन बना देने की प्रतिज्ञा पूर्ण कर दी है । इसमें प्राण प्रतिष्ठा करने का काम आर्य जगत का है ।

ट्रस्टी मण्डल ने भावी के कार्यक्रम का प्रस्ताव किया है उसकी सफलता या निष्फलता आर्य जगत पर निर्भर है । ऋषि ऋण से उऋण होने के लिये महर्षि के सिद्धान्तों का सच्चे अर्थों में प्रसार हो यह हमारी भावना है ।

अभी तो हम केवल स्मारक भवन ही खड़ा कर सके हैं । स्मारक तो ऋषि के ध्येय वाद को कार्यान्वित कर आर्य जगत ही करेगा । ईन्ट पत्थर और स्थल को हम महत्व नहीं देते और नाही ट्रस्ट मण्डल की यह भावना हैं ।

॥ समाप्त ॥

आर्य समाज में नेताओं का पतन हो रहा है

"आर्य जालन्धर के ८ मार्च के अंक में श्री पं० नरदेव जी शास्त्री ने" शिवरात्रि आर्यों का प्रायश्चित दिवस" शीर्षक से एक सुन्दर मनन योग्य लेख लिखा है जिसमें माननीय नेता ने एक स्थान पर लिखा है—

"संस्थायें तप और श्रद्धा का केन्द्र बनती हैं तो सब ढांचा ठीक चलता रहता है" हमारा कहना है :—

"संस्थाएं स्वयं न बनती न स्वयं चलती है संस्थाओं का प्रभावभाली व्यक्ति ही स्थापित करते हैं और व्यक्ति ही चलाते, हैं।" आर्य समाज में कार्य कर्ता व्यक्ति ही गिर गये हैं । समाज में नेता स्वार्थ रहित, धर्म सेवक व नीतिवान हो तो समाज सुधर सकती है ।

"नेता" ही धन परस्त हो गये हैं स्वामी होते जा रहे हैं ।

"नेता" ही स्वार्थ परायण जमाने के पीछे चल रहे हैं ।

"नेता" ही धर्म शक्ति शून्य हो रहे हैं ।

"नेता ही चरित्र हीन बन रहे हैं ।

"नेता" ही सिद्धान्त शून्य इधर उधर स्वार्थ वश भटक रहे हैं ।

"नेता" ही रजो गुणो और तमोगुणी बन रहे हैं ।

"नेता" ही अध्यात्म शून्य बन रहे हैं ।

"नेता" ही गृह कलह को उपजाने वाले बन रहे हैं ।

इसी से गीता में कहा है जिधर बड़े आदमियों का झुकाव रहता है, साधारण जन भी उधर ही बहते हैं । कहावत है "यथा राजा तथा प्रजा" ।

नेताओं को चाहिये सब को देखें, निस्वार्थ भाव से समाज की सेवा करें ।

समाजों में नित्य ऋग्वेद के अंतिम सुक्त का पाठ होता है । संगच्छध्वं, समानोमंत्र समिति समानी : किन्तु आचरण नेताओं के ही विपरीत रहते हैं ।

गतांक से आगे

हम आर्य क्यों बनें ?

[लेखक :—**जगदीश चन्द्र विद्यार्थी** विद्यावाचस्पति, आर्योपदेशक]

पालन करने के कारण वे आज भी सत्यवादी कहकर स्मरण किये जाते हैं। जो महाराजा हरिश्चन्द्र की भांति सब कुछ जाने पर भी अपने सत्य पथ से विचलित नहीं होते, वे सच्चे आर्य हैं।

जितेन्द्रियः—जिस को इन्द्रियां वश में हैं वह आर्य है। जो इन्द्रियों का दास है वह आर्य नहीं। आर्य इन्द्रियों का शासक होता है, वह इन्द्रियों के अनुकूल नहीं चलता अपितु इन्द्रियोंको अपने अनुकूल चलाता है। वह योग और वैराग्य के मार्ग पर चलता है। वह विषयों के पीछे नहीं भागता क्योंकि वह जानता है कि:—

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति ।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाऽभिवर्धते ॥
(मनु० २।९४)

विषय वासनाएं विषयों के भोगने से कभी शान्त नहीं होती अपितु जिस प्रकार अग्नि में घृत के डालने से अग्नि अधिक प्रदीप्त होती है उसी प्रकार कामनाएं बढ़ती हैं।

एक उर्दू के कवि ने मानो इसका अनुवाद करते हुए कहा हैः—

हजारों ख्वाहिशें ऐसी कि हर ख्वाहिश पै दम निकले।
बहुत निकले मेरे अरमान लेकिन फिर भी कम निकले ॥

आर्य इस रहस्य को अच्छी प्रकार जानता है अतः वह भोगों के पीछे नहीं भागता। स्वामी रामतीर्थ जी ने इन्द्रियों पर विजय प्राप्त की थी। वे सच्चे आर्य थे। स्वामी जी अमेरीका गये। योग और वेदान्त पर उनके उपदेश होने लगे। सहस्रों की संख्या में लोग उनके व्याख्यानों को सुनने के लिये आते। जब स्वामी जी व्याख्यान देते तो लोग मन्त्र मुग्ध होकर सुनते। एक दिन कुछ पादरियों ने सोचा हम प्रतिवर्ष सहस्रों पादरियों को भारत में प्रचार के लिये भेजते हैं यदि किसी प्रकार स्वामी रामतीर्थ को ईसाई बना लिया जाये तो यह अकेला व्यक्ति करोड़ों व्यक्तियों को ईसाई बना सकता है। बस यह विचार हृदय में आते ही एक योजना बनाई। एक सौन्दर्य की प्रतियोगिता हुई और उस में प्रथम रहने वाली सुन्दर नवयुवती एम० ए० और कवयित्री को इस कार्य के लिए चुना गया। नवयुवती यौवन के मद में मस्त स्वामी जी के पास पहुंची और स्वामी जी से कहने लगी:—

भारतवर्ष एक दास और निर्धन देश है जहां उष्णवायु चलती है। उस के विपरीत अमरीका एक स्वतन्त्र, सभ्य और धनवान् राष्ट्र। आइये इस देश की सुन्दरतम युवती की प्रण प्रार्थना को स्वीकार कीजिये और इसी देश में जीवन का आनन्द प्राप्त कीजिये।

आज एक सन्यासी की नहीं, भारतवर्ष की सभ्यता और संस्कृति की परीक्षा थी एक क्षण के लिये सन्नाटा छा गया। अंत में मस्त सन्यासी ने नेत्र खोले और कहने लगे:—

"All the women of the world are mydivine mothers, to whom should I marry"

अर्थात् संसार की समस्त स्त्रियां मेरी धर्ममाता हैं। मैं किस के साथ विवाह करूं।

यह सुनना था युवती की उठी हुई गर्दन मुड़ गई और अपने स्वामियों के पास जाकर कहा:—

"He has conquered himself."

उसने अपने आपको जीता हुआ है। जिस व्यक्ति का अपनी इन्द्रियों पर ऐसा अधिकार है वही आर्य है।

दाताः—आर्य वह है जो दानशील हो। आर्य वह है जो धन का, अन्न का, विद्या का दान देने वाला हो।

महाराजा रणजीत सिंह जा रहे थे। मस्तिष्क में एक पत्थर आकर लगा। सिपाही भागे चारों ओर। कुछ बच्चे जामन के वृक्ष के नीचे खड़े हुए पत्थर मार कर जामन तोड़ रहे थे। उन्हीं के द्वारा फैंका हुआ पत्थर महाराज के लगा था। उन बच्चों को पकड़ कर ले गये। महाराज के पूछने पर बच्चों ने बताया कि वे जामन तोड़ने के लिये पत्थर फैंक रहे थे। उन में से कोई पत्थर आप को आ लगा है। महाराज ने यह सुनकर आज्ञा दी कि इनको पांच ग्राम दे दो। सेवकों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उनके आश्चर्य का निवारण करते हुए महाराज ने कहा, "जामन को पत्थर लगने पर उन्हें जामनों की प्राप्ति होती तो क्या मैं जामनों से भी गया बीता हूं। तुलसी दास जी ने बहुत सुन्दर कहा है:—

तुलसी सन्त सुअम्ब तरु फूले फले पर हेत।
इतते ये पातन हने उन ते वे फल देत॥

आर्य वे हैं जो सतत दान देते रहते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम राम आर्य थे, योगेश्वर कृष्ण आर्य थे, महर्षि दयानन्द आर्य थे।

दयालुः—आर्य वह है जो दयालु हो। आर्य के हृदय में दया का सागर हिलोरें मारता हो। दया के अभाव में बाहु बल बुद्धिबल, और धनबल से संसार का कल्याण नहीं होता। दया शून्य बल से अत्याचार, शोषण और उत्पीड़न होता है। एक कवि ने कहा है:—

विद्या विवादाय धनं मदाय शक्ति परेषां परपीड़नाय।
खलस्य साधोर्विपरीतमेतज्ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय॥

दुष्टों की विद्या विवाद के लिये, धन अभिमान के लिये, और शक्ति दूसरों को कष्ट देने के लिये होती है इसके विपरीत आर्य की विद्या ज्ञान के लिये और शक्ति निर्बलों के रक्षण के लिये होती है। सच्चा आर्य वह है जो दूसरे को दुःखी देखकर तड़प उठेः—

कांटा लगे किसी को तड़पते हैं हम अमीर।
सारे जहां का दर्द हमारे जिगर में है॥

महर्षि दयानंद कहा करते थे आप लोगों के और देश के हित चिन्तन ने मुझे दुबला कर दिया है। सच्चे आर्य की यह कामना होती हैः—

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्॥
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्॥

न मुझे चक्रवर्ती साम्राज्य की आकांक्षा है, न स्वर्ग की और न निर्वाण की। मैं तो दुःखी प्राणियों के दुःखों को दूर करना चाहता हूँ।

नम्रताः—आर्य वह है जो नम्र, निरभिमानी हो। नम्रता में ही बड़प्पन, आदर और मान है। एक कवि ने कितना सुन्दर कहा हैः—

सब से लघुताई भली लघुता से सब होय।
जस द्वितीया को चन्द्रमा शीश नवै सब कोय॥

आर्य समझता है कि संसार के जितने भी पदार्थ हैं सब नश्वर और चलायमान है अतः वह धन, बल, शक्ति बुद्धि, विद्या तथा योग्यता किसी भी पदार्थ पर अभिमान नहीं करता। महर्षि दयानन्द जितने विद्वान् थे उतने ही नम्र भी थे। अभिमान उनको छू भी नहीं गया था। एक बार एक भद्र पुरुष ने स्वामी जी से कहा, "भगवन्! आप तो ऋषि हैं।"

महर्षि दयानन्द ने कहा, "ऋषियों के अभाव में आप लोग मुझे ऋषि कह रहे हैं। परन्तु सत्य

जानिये, यदि मैं कणाद् ऋषि का समकालीन होता तो विद्वानों में भी अति कठिनता से गिना जाता।"

जो विनम्र, शालीन, निरभिमानी, निरहंकारी है वह व्यक्ति वास्तव में आर्य है।

ये हैं आर्य के लक्षण। जो उपर्युक्त गुणों को अपने जीवन में धारण करता है वह आर्य है चाहे वह गोरा हो या काला, लाल चमड़ी हो या सफेद चमड़ी का, इंगलैंड का हो या अमरीका का, चीन का हो या जापान का, जर्मनी का हो या फ्रांस का, अफगानिस्तान का हो या तुर्किस्तान का, किसी भी देश जाति या राष्ट्र का हो यदि उसमें आर्य के गुण कर्म और स्वभाव विद्यमान हैं तो वह आर्य है।

लोग प्रायः पूछा करते हैं हम आर्य क्यों बने? हमारे आगे दो मार्ग हैं एक ओर अंधकार है दूसरी ओर प्रकाश, एक ओर छलमय व्यवहार है दूसरी ओर स्पष्टवादिता, एक ओर आत्मोन्नति है दूसरी ओर अभ्युदय। एक ओर दम्भ के पश्चात् कुछ नहीं, दूसरी ओर ऐहलौकिक ओर पारलौकिक सुख एक ओर छल, कपट, धोखेबाजी, मक्कारी, दम्भ, आडम्बर, पाखण्ड और ढोंग है, दूसरी ओर सत्य अहिंसा, दयालुता, नम्रता, एक ओर आसुरी सम्पत्ति है दूसरी ओर दैवी सम्पत्ति, एक ओर रावण और कंस का मार्ग है दूसरी ओर मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगेश्वर आनन्दकन्द श्री कृष्णचन्द्र और महर्षि दयानन्द का पुण्य एवं प्रशस्त पंथ है। दोनों मार्गों में से आप जिसे चाहें चुन सकते हैं। वेद माता ठीक मार्ग का निर्देश करते हुए कहती है:—

मैतं पन्थामनु गा भीम एष येन पूर्व नेयथ तं ब्रवीमि।
तम एतत् पुरुष मा प्रपत्था भयं परस्तादभयं ते अर्वाक्॥
(अ० ८।१।१०)

हे नागरिक! इस (पहले) मार्ग पर मत चल क्योंकि यह भयंकर है। जिस मार्ग से तू पहले लेजाया गया उसे बताता हूँ। इस अंधकार में मत गिर। पिछली ओर भय है और इस ओर अभय है। रावण के मार्ग पर मत चल, राम के मार्ग का अनुसरण कर। आ, अपने पुर्वजों के मार्ग पर चल। आर्य शब्द से डर मत। तेरा वास्तविक नाम आर्य है। तेरे पूर्वज भी आर्य थे, हिन्दु नहीं।

चारों वेद, ब्राह्मण ग्रन्थों; आरण्यको; उपनिषदों; कल्प, व्याकरण, ज्योतिष छन्द और निरुक्त नामक वेदाङ्गों, न्याय आदि दर्शनों, रामायण, महाभारत आदि इतिहास ग्रन्थों, भागवतादि १८ पुराणों, तथा जैन एवं बौद्ध ग्रंथों में सर्वत्र आर्य शब्द का प्रयोग मिलता है हिन्दु शब्द का पता भी नहीं है। रघुवंशादि महाकाव्यों और शकुन्तला आदि नाटकों में भी आर्य ही मिलेगा, हिन्दु नहीं। मुसलमानों के आगमन से पूर्व के ग्रंथों में हिन्दु शब्द ढूंढने से भी नहीं मिलेगा। इससे स्पष्ट सिद्ध है कि हम तो हैं ही आर्य। इस विषय में और भी अनेक प्रमाण हैं कुछ यहां देते हैं:—

(१) संस्कार आदि के अवसर पर संकल्प पढ़ा जाता है उस में "जम्बूद्वीपे, भरतखण्डे आर्यवर्तेकदेशे" ऐसा पाठ है। इस में देश का नाम आर्यवर्त है। यदि हमारा नाम आर्य न होकर हिन्दु होता तो यहाँ भी 'हिन्दु देश' ऐसा पाठ होता।

(२) काशी पौराणिकों का परम पवित्र तीर्थ है। इसमें भी विश्वनाथ का मन्दिर अपना विशिष्ठ स्थान रखता है। उस मन्दिर के द्वार पर शिलालेख है जिसमें यह खुदा हुआ है:—**आर्यधर्मेतराणां प्रवेशो निषिद्धः**।" अर्थात् यहां आर्यों से भिन्न दूसरा कोई व्यक्ति नहीं आ सकता। इससे भी हमारा नाम आर्य सिद्ध है।

(३) सम्वत् १९२७ के श्रावण मास में काशी के ४६ पण्डितों ने एक व्यवस्था पत्र लिखा था कि हमारा नाम हिन्दु नहीं है। इस में सब से अन्त में हस्ताक्षर करने वाले पं० दुर्गादत्त जी ने लिखा था :—

हिन्दु शब्दो हि यवनेष्वधर्मिजन बोधकः।
अतो नार्हन्ति तच्छब्द बोध्यत्वं सकलं जनाः॥

अर्थात् आर्य शब्द मुसलमानों के यहां अधर्मिकों के लिए प्रयुक्त होता है अतः सब मनुष्यों का यह नाम नहीं होना चाहिए। इस व्यवस्था पर स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती और श्री बालशास्त्री जी के भी हस्ताक्षर विद्यमान हैं। इन दोनों ने महर्षि से शास्त्रार्थ करने की ठानी थी। यदि हमारा नाम हिन्दु होता तो वे इसके विरुद्ध व्यवस्था कदापि नहीं देते।

जैनों के तत्वार्थ सूत्र में 'आर्य मलेच्छाश्च' (अ० ३ में) उल्लिखित है। इस से भी सिद्ध होता है कि आर्य शब्द मनुष्यों के विशेष समुदाय के लिये प्रयुक्त होता है।

वैदिक कोष निरुक्त में "आर्यः ईश्वर पुत्रः" कहा गया है। अर्थात् आर्य ईश्वर का पुत्र है।

बालमीकि रामायण में राम को आर्य कहा गया है :—**आर्य सर्व समश्चैव सदैव प्रियदर्शनः।** (वा० रा० १।१।१६)

राम समदर्शी, सुन्दर और आर्य थे।

वेद में कहा है :—

आर्या वृता विसृजन्तो अधिक्षमि।
(ऋ० १०।६५।११)

आर्य वे हैं जो पृथिवी पर सत्य, अहिंसा, परोपकार और पवित्र गुणों को धारण करते हैं। संसार के समस्त मानव अपने जीवनों में दिव्य गुणों को धारण करें इस लिये वेद माता आदेश देती है :—

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। (ऋ० ९।६३।५)

समस्त संसार को आर्य बनाओ।

आइये आप भी अपने पूर्वजों के मार्ग पर चलते हुए :—

बनो आर्य और जहां को बना दो।
जो कहते हो जग को करके दिखा दो॥

॥ इति॥

स्त्रियों का स्वास्थ्य और रोग

(लेखक—पं० अत्रिदेव गुप्त विद्यालङ्कार भिषग्रत्न)

गृहस्थाश्रम में स्त्रियों के स्वास्थ्य सम्बन्धी देख रेख की विशेष आवश्यकता है प्रस्तुत पुस्तक में युवतियों के पढ़ने योग्य, विवाहितों के जानने योग्य प्रायः सभी विषयों पर प्रकाश डाला गया है। डाक्टरों के वर्तने योग्य भी यह एक ही पुस्तक है। इस पुस्तक के विषय में इतना ही कहना पर्याप्त है कि सुधरे उभरे सभ्य विचार वाले स्त्री पुरुषों के लिए सब उपयोगी पहलुओं पर इस पुस्तक में विचार किया गया है। जो लोग चिकित्सा करते हैं उनके लिए क्रियात्मक निर्देश हैं। एक बार पुस्तक हाथ में लेकर समाप्त ही करनी पड़ती है।

सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३) रु०

प्राप्ति स्थानः—गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, देहली।

नवदम्पति को भेंट देने योग्य अनुपम

उपहार

भारतीय स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण व चिरस्थायी बनाने के लिये
आज भारत को कर्मवीर, बुद्धिमान् व शौर्य-सम्पन्न
युवकों की आवश्यकता है। उस आवश्यकता
की पूर्ति आपके हाथों में है।

**क्या आप चाहते हैं कि आपकी सन्तान समाज में सम्मान प्राप्त करे यदि हां !
तो उसके लिए प्रयत्न करना आपका कर्त्तव्य है।**

किस प्रकार?

यह जानने तथा अनेक कर्त्तव्य से परिचित होने के लिए

इच्छानुसार सन्तानोत्पत्ति

यह पुस्तक मँगा कर अवश्य पढ़िये। पुस्तक पढ़कर आप अनुभव करेंगे कि "पुत्र या पुत्री, धर्मात्मा या पापी, शासक या चोर, जितेन्द्रिय या व्यभिचारी, गौर या श्याम वर्ण की" सन्तान का निर्माण तथा वर्थ कन्ट्रोल अपने ही हाथों में है।

इसकी महत्ता पढ़ने से ही विदित होगी

सजिल्द मूल्य २॥) डाक व्यय पृथक—

लेखकः—

वीरेन्द्र गुप्त

प्राप्ति स्थान—**वीरेन्द्रनाथ अश्विनी कुमार**

प्रकाशन मँदिर, बाजार चौक, मुरादाबाद।

स्वाध्याय योग्य उत्तमोत्तम पुस्तकें

बाल्मीकि रामायण	९)
दयानन्द ग्रन्थ संग्रह	३॥)
सृष्टि का इतिहास	१॥)
उपनिषद आर्यमुनि भाष्य	६)
श्वेताश्वरोपनिषद	१)
प्रभुभक्ति (आनन्द स्वामी)	१॥)
प्रभुदर्शन ...	२॥)
तत्त्वज्ञान ...	३)
आनन्द गायत्री कथा	॥=)
एक ही रास्ता	।॥)
भगवान शंकर दयानन्द	।=)॥
सत्यनारायण व्रतकथा	॥=)
मानव जीवन गाथा	।॥=)
वैदिक गृहस्थाश्रम	५)
ऋषि-गाथा महाकाव्य	४)
स्वाध्याय संग्रह (वेदानन्द)	२)
वेद परिचय ...	।=)
महर्षि दयानन्द (प्रो० इन्द्र)	२)
आर्य समाज का इतिहास	१।=)
ओंकार निर्णय (शिवशंकर)	१॥)
वैदिक प्रार्थना	१॥)
सचित्र योगासन	१॥)
वहिनों की बातें (सिद्धगोपाल)	१।)
दर्शनानन्द ग्रंथ संग्रह पूर्वार्द्ध	२॥)
,, ,, ,, उत्तार्द्ध	२॥)
दयानन्द चित्रावली	२॥)
भारतीय संस्कृति	॥)
आर्षयोग प्रदीपिका	३॥)
कर्तव्य दर्पण (ना० स्वामी)	१।)
वैदिक संध्या रहस्य	।≡)
आर्य समाज क्या है ?	॥)
संध्या, हवन प्रदीपिका	॥)
सन्ध्याविनय	॥)

प्रार्थना प्रदीप	।।)
संस्कार विधि विमर्श	३)
स्त्रियों का स्वास्थ्य और रोग	३)
विवाह और विवाहित जीवन	२॥)
घर गृहस्थी	३॥)
आर्य सिद्धान्त दीप	१।)
गीत श्रद्धांजलि (भजन)	१।)
सत्यहरिश्चन्द्र नाटक	१।)
यज्ञोपवीत मीमांसा	।॥)
आदर्श सुधारक दयानन्द	॥=)
गृहस्थाश्रम (दयानन्द)	॥=)
बाल शिक्षक ,,	।=)
आत्म कथा ऋषि दयानन्द ,,	।=)
आर्याभिविनय ,,	॥)
वेद विरुद्धमत खण्डन	।=)
शिक्षा पत्री ध्वान्ति निवारण	।=)
भ्रान्ति निवारण (दयानन्द)	।=)
भ्रमोच्छेदन ,,	।)
हुगली शास्त्रार्थ ,,	।)
वेदों का महत्व (दर्शनानन्द)	।)
ईश्वर प्राप्ति ,,	≡)
ईश्वर विचार ,,	=)
जीवात्मा ,,	=)
वेदों की आवश्यकता ,,	-)
वेद किस पर प्रकट हुए ,,	-)
बाल शिक्षा, धर्म शिक्षा ,,	≡)
वर्ण व्यवस्था (दर्शनानन्द)	-)
पितृ श्राद्धविचार ,,	-)
दयानन्द का उद्देश्य ,,	-)
,, ,, लक्ष्य ,,	-)
सत्यार्थ प्रकाश शंका समाधान	।)

स्वामी दयानन्द और वेद	।)
भक्ष्याभक्ष्य विचार	≡)
वैदिक धर्म शिक्षा	≡)
आर्य सत्संग गुटका	।-)
विश्व विज्ञान परमात्म बोध	≡)
अखण्ड भारत (चन्द्र गुप्त)	।)
मांस मदिरा का निषेध	≡)
गायत्री व्याख्या	)
गीता वचनामृत	।=)
गोरक्षा परम कर्त्तव्य	॥)
स्वास्थ्य विज्ञान	।-)
चित्र चित्र चित्र	
धार्मिक मंत्रों के चित्र साईज- १४॥×२२	
सन्ध्या मन्त्र	।-)
प्रार्थना के ८ मंत्र अर्थ सहित	।-)
आर्य समाज के नियम	।-)
जीवन मृत्यु के प्रश्न	।-)
यम नियम व्याख्या सहित	।-)
संगठन सुक्त	।-)
मन्त्रों के चित्र ११×१४	॥)
ऋग्वेद का प्रथम मन्त्र	≡)
यजुर्वेद का प्रथम ,,	≡)
सामवेद का प्रथम ,,	≡)
अथर्ववेद का प्रथम ,,	≡)
दीर्घ जीवन की प्रार्थना	≡)
धर्मंचर, सत्यंवद	≡)
मंत्रों के चित्र छोटे ७।×५॥	-)

ओ३म्, नमस्ते, स्वागतम, विश्वानिदेव सहनाववतु, धृतिक्षमा, नम शम्भवायच, त्वमे माता च पिता, नैनंछिन्दति अहिंसा परमो धर्म, आदि आदि।

महाभारतम् संस्कृत के विद्यार्थियों के लिये श्री आचार्य राजेन्द्र शास्त्री उपाध्यक्ष दयानन्द वेदविद्यालय देहली द्वारा रचित केवल संस्कृत गद्य में मंगाकर संस्कृत में वार्तालाप करना सीखें। मूल्य सजिल्द का ३) रु०

गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, देहली।

गोविन्दराम हासानन्द सम्पादक तथा मुद्रक ने जैय्यद प्रेस में छपवाकर
वेदप्रकाश कार्यालय नई सड़क देहली से प्रकाशित किया।

॥ ओ३म् ॥

वेद प्रकाश

महर्षि दयानन्द महालय टंकारा की हल चल

महर्षि स्मारक महोत्सव के अवसर पर टंकारा ग्राम में जो सजीव वातावरण था, उसका वर्णन गत वेदप्रकाश में पाठकगण पढ़ ही चुके हैं। वैसे तो टंकारा ग्राम में प्रायः ३५ वर्षों से आर्यसमाज स्थापित हुआ है। अपना समाज मन्दिर भी है, किन्तु स्मारक महोत्सव के पूर्व निर्जीव अवस्था में था। टंकारा उत्सव के बाद, महर्षि महालय में ४-५ आर्य वानप्रस्थियों के निवास से तथा व्यवस्थापक श्री अम्बालाल जी पटेल और कार्यवाहक श्री जीवनलाल जी राठोड़ जो गुजराती भाषा के कवि और लेखक हैं तथा अलीगढ़ के श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी जो आयुर्वेद तथा होम्योचिकित्सक तथा विद्वान् लेखक भी हैं के प्रयत्न से टंकारा में एक जीवन सा आ गया है। नित्य प्रभातफेरी के पश्चात् सम्मलित सन्ध्या, हवन, प्रार्थना उपदेश एवं सायं रात्रि को रामायण आदि की कथा होती रहती है।

स्थाई योजनाओं के विषय में ट्रस्टियों में विचार विमर्श हो रहा है। अजमेर की श्रीमती परोपकारिणि सभा ने २०००) वार्षिक सहायता टंकारा ट्रस्ट को देना स्वीकार किया है। टंकारा ट्रस्ट ने आगामी वर्ष के लिए साहित्य प्रकाशन आदि खर्च के लिए १७३३०) रुपयों का बजट स्वीकार किया है विशेष विवरण आगामी अंक में देंगे।

तीन महान् आर्य नेताओं के भव्य चित्र

महर्षि दयानन्द, धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द तथा महात्मा हंसराज जी के भव्य बड़े २०×३० साइज पर सुन्दर छप कर तैयार हुए हैं। जो कि सब संस्थाओं में तथा घरों में रखने योग्य हैं। मूल्य प्रत्येक का १) मात्र है; तीनों चित्र एक साथ मंगाने पर डाक खर्च १) लगेगा। १२ चित्र एक साथ मंगाने पर वी० पी० डाक खर्च माफ। डाक से चित्रों को सुरक्षित भेजने की व्यवस्था है।

—गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, देहली।

दीपावली के उपलक्ष में प्रचारार्थ विद्वानों के ट्रैक्ट मंगावें

प्रत्येक का मूल्य -) सैकड़ा ४)

१ मनुष्य बन—ले० स्वामी वेदानन्द सरस्वती ।
२ गायत्री माता—जगदीशचन्द्र विद्यार्थी ।
३ ईश्वर सिद्धि—पं० रामचन्द्र जी देहलवी ।
४ आस्तिक नास्तिक संवाद—महर्षि दयानन्द ।
५ पितृ श्राद्ध विचार—स्वामी दर्शनानन्द ।
६ सुख का साधन—महात्मा आनन्द स्वामी ।
७ ईश्वरोपासना—पं० रामचन्द्र जी देहलवी ।
८ कल्याणी बन—पं० गणेशदत्त 'इन्द्र' ।
९ आर्यों का आदि देश—काशी नाथ जी शास्त्री ।
१० धर्म और अधर्म—पं० रामचन्द्र देहलवी ।
११ स्वामी श्रद्धानन्द—रामगोपाल विद्यालंकार ।
१२ तत्ववेत्ता दयानन्द—स्वामी श्रद्धानन्द जी ।
१३ पं० लेखराम—रामगोपाल जी विद्यालंकार ।
१४ सीता माता—सरस्वती देवी 'प्रभाकर' ।
१५ गो माता—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
१६ दयानन्द दिग्विजय—श्री हरिशंकर जी शर्मा कविरत्न
१७ चोटी का महत्व—पं० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री ।
१८ गुरु विरजानन्द—रामगोपाल विद्यालंकार ।
१९ मांस खाना छोड़ दो—पायथा गोरस ।
२० मर्यादा पुरुषोत्तम राम—प्रहलाद 'प्रभाकर' ।
२१ देश सुधार होली—अंगनलाल आर्य ।
२२ मूर्तिपूजा विचार—महर्षि दयानन्द ।
२३ भक्ति के लाभ—आचार्य प्रियव्रत ।
२४ आर्य समाज के उद्देश्य—जगदीशचन्द्र ।
२५ वेदमाता ।
२६ श्रद्धामाता ।
२७ धरती माता ।
२८ धर्म की रक्षा करो—ब्र० प्रभुदत्त जी ।
२९ मनुष्य के कर्तव्य—म० नारायण स्वामी ।
३० सत्संग भजन ।
३१ ऋषि दयानन्द कृत वेदभाष्य का महत्व ।
३२ गोपाल दयानन्द ।
३३ भक्तिवाद की रूपरेखा ।
३४ वैदिक भक्तिवाद ।
३५ अंग्रेजी शिक्षा से हानि ।
३६ सत्य की महिमा—स्वामी सर्वदानन्द ।
३७ आर्य समाज की उन्नति का साधन श्री लालचन्द जी
३८ श्यामाप्रसाद मुकर्जी—श्री प्रेमचन्द ।
३९ वैदिक काल म तोप बन्दूक—शिव पूजन सिंह ।
४० पतिव्रत धर्म—एक विदूषी महिला ।
४१ ब्राह्मण समाज और मूर्ति पूजा—राजेन्द्र जी ।
४२ ईश्वरोपासक दयानन्द—भगवत शरण बी. ए.
४३ ईश्वरावतार—स्वामी नित्यानन्द जी ।
४४ कर्मयोगी श्री कृष्ण—प्रेमचन्द ।
४५ ईसाइयों का भयंकर षड़यन्त्र ।
४६ सामाजिक व्यवहार—श्री लालचन्द जी ।
४७ शिक्षा का उद्देश्य—श्री पूर्णचन्द जी ।
४८ ब्रह्मचर्य—जगदीशचन्द्र जी विद्यार्थी ।
४९ वर्ण व्यवस्था—स्वामी दर्शनानन्द ।
५० कर्मव्यवस्था " "
५१ वेदज्ञान—विष्णु दयाल जी ।
५२ तुलसी रामायण और आर्य समाज ।
५३ सत्य की खोज—काशीनाथ शास्त्री ।
५४ मुर्दा क्यों जलावें—प्रेम शरण जी ।
५५ स्वामी दयानन्द का उद्देश्य—स्वामा दर्शनानन्द
५६ स्वामी दयानन्द का लक्ष्य— "
५७ ब्राह्मण समाज और मृतक श्राद्ध—पं० राजेन्द्र जी
५८ श्रेय और प्रेय—प्रि. नित्यानन्द जी एम. ए. ।
५९ सच्ची पूजा—स्वामी सर्वदानन्द जी ।
६० झांसी वाली रानी ।
६१ महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त-रविवर्मा सि. शास्त्री
६२ जीवन की समस्यायें—पं० रामचन्द्र देहलवी ।
६३ देवताओं की कहानी—कैलाश बिहारी ।
६४ रोटी और कपड़ा—प्रेमकुमार पाण्डेय ।
६५ धूम्रपान— " "
६६ सिनेमा और हम— " "
६७ दयानन्द कौन—देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ।
६८ कृण्वन्तोस्वयमार्यम—प्रेमकुमार पाण्डेय ।
६९ चाय भयंकर विष—जगदीश चन्द्र ।
७० मुझे मेरा धर्म क्यों प्यारा है—ज. विद्याथा
७१ ईश्वर सब जगह है - विष्णु दयाल जी ।
७२ ईश्वर में अविश्वास क्यों—रामचन्द्र देहलवी ।
७३ चरित्र निर्माण—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
७४ यज्ञोपवीत महत्व—जगरीश चन्द्र विद्यार्थी ।
७५ सूर्य और चन्द्र ग्रहण—हरिदेव शास्त्री ।
७६ नास्तिकों को सन्देश—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
७७ वैदिक धर्म ही क्यों—हरिदेव शास्त्री ।
७८ विद्यार्थी और सदाचार—पं० रामचन्द्र देहलवी

गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क देहली—६

॥ ओ३म् ॥

★ वेद प्रकाश ★

सम्पादक—गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष—७ : बैशाख २०१६ मई १९५९ : वार्षिक मूल्य २॥)
अंक—१० : दयानन्दाब्द १३५ बैशाख १८८० शाके : विदेशों से ५ शि०

॥ वेदसुधा ॥

समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समाने
योक्त्रे सह वो युनज्मि । सम्यञ्चो-
ऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः ॥

॥ अथर्व० ३ । ३० । ६ ॥

पदानि—समानी । प्रऽपा । सह । वः । अन्नऽभागः । समाने । योक्त्रे । सह । वः । युनज्मि । सम्यञ्चः । अग्निम् । सपर्यत । अराः । नाभिम्ऽइव । अभितः ॥ ६ ॥

अन्वयः—वः प्रवा समानी । वः अन्नभागः सह । वः समाने योक्त्रे सह युनज्मि । सम्यञ्चः अग्निं सपर्यत । नाभिं अभितः अराः इव ॥

अर्थः—(वः) आप सब की (प्रपा) प्याऊ (समानी) समान-सब की एक हो । (वः) आप सबका (अन्न भागः) अन्नसेवन (सह) साथ साथ मिल कर, ही । (वः) आप सब को (समाने योक्त्रे) एक ही बन्धन से (सह) साथ साथ (युनज्मि) जोड़ता हूं । (सम्यञ्चः) इकट्ठे होकर (अग्निं) अग्नि की (सपर्यत) उपासना करो । (इव) जैसे (नाभिं अभितः) नाभि के चारों ओर (अराः) अरे होते हैं ।

भावार्थ—आप सब का जलपान करने का स्थान एक हो । आप सब साथ साथ बैठ कर भोजन करो । आप सब एक कार्य सिद्ध करने के लिये मिल कर लग जाओ । आप सब एक स्थान पर मिलकर उपासना करो । अग्नि में हवन के लिये अग्नि के चारों ओर ऐसे बैठ जाओ, जैसे नाभि के चारों ओर अरे होते हैं ।

★

गुरुकुल शिक्षा पद्धति

को

तारकेश्वरी सिन्हा की श्रद्धाञ्जलि

भारत सरकार की उप अर्थ मन्त्रिणी, श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा, जो कि कन्या गुरुकुल बड़ौदा की पुरातन छात्रा हैं वे ६ मार्च को बड़ौदा आने पर कन्या गुरुकुल बड़ौदा पधारीं। उसके सम्मान में संस्था की ओर से व्यायाम और सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा गया। उन्होंने संस्था में जहां बचपन बिताया था और शिक्षा ली थी वे कमरे देखे और संस्था के सब विभागों का ध्यान पूर्वक निरीक्षण किया। कार्यक्रम के अन्त में उन्हें धनुषबाण से हार पहनाया गया। तत्पश्चात् भाषण देते हुए उन्होंने कहा कि—

भाषण देना तो मेरा एक कार्य ही हो गया है। परन्तु आज बोलते हुए मैं हिचकिचाती हूँ। जब से बड़ौदा आने के लिए मैं गाड़ी में बैठी तब से मेरे मन में एक ही भावना और विचार आया करता था कि बड़ौदा मेरी मातृ संस्था को मैं जा रही हूँ। जिस संस्था में कि मैंने अपना बाल्यकाल बिताया था। जिस धूल में मैं खेली हूँ और अनेक प्रेरणायें पाकर मैंने अपना जीवन बनाया है, वहां जाकर मैं क्या कहूँगी? कुछ कैसी कैसी भावनायें लेकर मैं यहां आई हूँ। मैं सवेरे से ही यहां आई हूं तब से यही बातें मेरे दिल में आती रहती हैं। मैं गद्‌गद् हो गई हूँ कंठ रुंध रहा है हृदय में भावनायें उमड़ती आती हैं। इस विद्यालय से मेरे जीवन के निर्माण का सम्बन्ध है। यहां से मुझे शिक्षा और जीवन की प्रेरणा मिली है और जीवन की जो धरोहर मिली है वह सदैव ही मेरे पास रहने वाली है।

जिस प्रान्त से मैं आई हूँ उस विहार प्रान्त में महिलायें शिक्षा में और सामाजिक रीति से बहुत पिछड़ी हुई हैं। उस प्रान्त से मैं संसद में गई हूँ और जीवित व्यक्तित्व के साथ गई हूँ। दिल्ली में मेरे व्यक्तित्व से सब आश्चर्य चकित होते हैं। मैं बोलती हूँ तो सब का ध्यान मेरी तरफ केन्द्रित हो जाता है। लोगों को लगता है कि अन्य महिलाओं में और मुझ में कुछ अन्तर है कुछ फरक है। मैं कहना चाहती हूँ कि मुझ में जो कुछ विशेषता है वह इस संस्था की दी हुई प्रेरणा और व्यक्तित्व के कारण है।

सब को पता लग गया कि मैं आर्य कन्या विद्यालय में पढ़ी हूं इसी से मुझ में यह विशेषता है। मेरे जीवन का इसी गुरुकुल में निर्माण हुआ है यहाँ शिक्षा ली है निःसंकोच विचार व्यक्त करने की तालीम ली है उसी का यह परिणाम है। दूसरी और अपनी संस्था के जीवन में भारी अन्तर है। स्कूल और कोलेजों में जीवन का निर्माण नहीं होता। उनका रवैया बनाने के बजाय जीवन बिगाड़ने का है। इस संस्था में रहने वाली लड़कियां कभी ऐसा अनुभव नहीं करतीं कि वे घर से बाहर रहती हैं। इसी से मुझे इस संस्था में से जो चाहिए वह मिला है मैं इस पवित्र संस्था के निर्मल वातावरण में रह कर जो पोषण और व्यक्तित्व प्राप्त कर सकी हूँ वह मेरे जीवन के सौभाग्यों में से एक है। यहां मुझे प्यार मिला, आत्म विश्वास मिला, और मिली यह भावना कि स्त्रियां पुरुषों के समान ही हैं और चाहें तो वे भी

उन सब कार्यों को कर सकतीं हैं जिन्हें कि पुरुष करते हैं।

लोक सभा में भी जब में बोलती हूँ तो लोग आश्चर्य चकित होते हैं तो कहते हैं कि यह कन्या गुरुकुल बड़ौदा की पढ़ी हुई है। देश की बालिकाओं को कोई ऊँचा उठा सकता हो और सच्ची शिक्षा दे सकता हो तो वह गुरुकुल ही है। जो बहेनें यहां से गई हैं और हाल में शिक्षा ले रही हैं वे सब गुरुकुल की शिक्षा को याद रखें। मैंने यहां बचपन में बहुत सी नादानियां करी हैं वे मुझे आज भी याद आती हैं।

इस संस्था में जो महत्त्व की शिक्षा दी जाती है वह यह है कि यहां स्त्री पुरुष के व्यक्तित्व में कोई भेद नहीं है। हमें यहां कोई निर्बलता का पाठ नहीं सिखाया जाता। जीवित व्यक्तित्व की जो शिक्षा मुझे यहाँ मिली है उसका मेरे हृदय में बड़ा स्थान है। इसी के कारण से मेरा व्यक्तित्व खिला है। और लोगों को लगता है कि अन्य स्त्रियों से मुझ में कुछ विशेषता है, मैं बहनों को कहती हूँ कि यहां से शिक्षा लेकर कोई पीछे रह सके नहीं। पुरुष समान अपने को पीछे रखना चाहे तो उसका सामना करने की शिक्षा भी यहीं से मिलेगी।

जिस संयम, आत्मविश्वास और कर्त्तव्य परायणता से श्री पं० आनन्द प्रिय जी आप इस संस्था को चला रहे हैं उससे मैं बहुत प्रभावित हुई हूं। आपके सामने मेरा मस्तक झुक जाता है। समझती हूं कि अनेकों कठिनाइयों में आप इस संस्था की नाव को खेते जा रहे हैं। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि मैं यहां से आपका सन्देश लेकर जा रही हूँ। मेरी सब शक्ति आपके ही लिए बोलेगी और काम करेगी।

यहां भवन निर्माण में भी आपको कठिनाइयां हैं। यह मैं समझती हूं। परन्तु यहां से निकली हुई हजारों बालिकायें आपके भवन हैं। यह न भूलना।

मैंने अनेक स्कूल कोलेजों में शिक्षा ली है परन्तु मुझे फिर २ कहने का मन होता है कि मैंने इस विद्यालय में से जो पाई है वह कहीं भी नहीं पा सकी हूं। यहां के वातावरण और जीवन निर्माण का लाभ अन्य स्थान पर मिल नहीं सकता।

पं० आनन्द प्रिय जी आप आर्थिक कठिनाइयों में हैं और भी अनेकों अड़चनें हैं परन्तु मैं कहना चाहती हूँ कि वह समय अब दूर नही जब कि लोग इस संस्था को समझेंगे। अब तक इसकी उपेक्षा करने वालों को भी यहां आकर प्रेरणा लेनी होगी। चार सौ कन्यायें यहां पढ़ती हैं, वर्षों से संस्था कार्य कर रही हैं, इस व्यक्तित्व को अब पहचानना पड़ेगा। ऐसी उपेक्षा कहां तक चल सकती है? इस संस्था का इतना बड़ा कार्य क्या कोई मजाक है। इससे पहचानना ही पड़ेगा आखिर कहां तक आंखें बन्द रखीं जायेंगी।

मुझे ऐसा पता चला है कि अब सरकार की निगाह भी बदली है। आप पाठ्यक्रम में परिवर्तन करें! सहायता अवश्य मिलेगी। मैं भारत सरकार को और बम्बई सरकार को भी कहूँगी।

कितने ही लोगों को संस्था की शिकायत है। परन्तु मैं इस संस्था की लड़की हूं। मुझे कभी कोई शिकायत नहीं रही। में वर्षों संस्था में रही हूँ और मैं कहना चाहती हूँ कि सारी शिकायतें नासमझी से एक दम निराधार और निःसार हैं।

जीवन में पहली बार मैं मेरी संस्था में आकर गद्गद् हो गई हूँ। मैं बहुत बोल सकती हूँ परन्तु मुझ से अधिक नहीं बोला जाता। मेरे लिये तो

[शेष पृष्ठ ६ पर]

टङ्कारा महोत्सव

में

न्यायमूर्ति श्री मेहरचन्द महाजन का ध्वजारोहण के समय दिया गया भाषण

महर्षि दयानन्द स्मारक टंकारा के उद्‌घाटन के समय शिवरात्रि पर ७ मार्च को जो विशाल जुलूस निकाला वह उत्साह के वातावरण से परिपूर्ण तथा दर्शनीय था। टंकारा नगरी में घूम कर जूलूस महर्षि दयानन्द महालय में आकर पहुँचा तब ओ३म् ध्वज फहराने की क्रिया न्यायमूर्ति श्री-मेहरचन्द महाजन के हाथों सम्पन्न हुई। इस शुभ अवसर पर आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा, आर्य कन्या गुरुकुल पोरबन्दर, दयानन्द कन्या विद्यालय जामनगर, गुरुकुल सूपा, गुरुकुल सोनगढ़ तथा आर्य कुमार आश्रम बड़ौदा के गणवेशधारी ब्रह्मचारी ब्रह्मचारिणियों ने सैनिक वन्दन किया तथा विशाल जन समूह ने ओ३म् ध्वज को मस्तक झुकाया—उत्साह और उमंग भरे वातावरण में ओ३म् ध्वज लहराते समय श्री महाजन ने एक सारगर्भित भाषण देते हुए कहा कि—

मैं यहां पर नेता अथवा कार्यकर्ता के रूप में नहीं आया। वरन् मैं यहां एक ऋषि भक्त के नाते उनकी जन्मभूमि के दर्शन करने आया हूँ। एक यात्री के रूप में आया हूँ। मेरे ऊपर एक कर्तव्य का भार आज रक्खा गया है। इस समारोह के प्राण और महर्षि दयानन्द समारक ट्रस्ट के मन्त्री श्री पं० आनन्द प्रिय जी एक जबर्दस्त और महान् कार्यकर्ता हैं। मुझे उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिये, इसलिये आज ओ३म् का झंडा लहराता हूँ। महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि में मैं यह झंडा फहराता हूँ यह मेरे जीवन का एक पुण्य प्रसंग है। यह ओ३म् का पवित्र झंडा हम को क्या कहता है? इस झंडे की एक समस्या है वह मैं आपके सामने रखता हूँ इस झंडे को ही हम क्यों फहराते हैं? इस झंडे को फहराने के लिए महर्षि दयानन्द ने बड़ा परिश्रम किया था। कारण कि यह वैदिक संस्कृति का चिह्न है। सकल संसार को परमात्मा का मार्ग बताने वाला यह झंडा है। एक समय देश में अनेक देवी देवताओं की पूजा खूब चल निकली थी। उस समय जो महर्षि दयानन्द पैदा न होते तो देश की दूसरी ही दशा होती। सारा पंजाब तो मुसलमान व ईसाई बन गया होता। परन्तु युग विधाता महर्षि दयानन्द ने इस प्रभाव से सारे देश कों बचा लिया। ऐसे महा पुरुष को मैं ध्वजारोहण के इस परम पुनीत अवसर पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

उन्होंने भारत में वैदिक संस्कृति को फिर से जागृत किया। और वेदों का पुनरुद्धार करके जगत् को परमात्मा का मार्ग बताया। सारे संसार के लिये परमात्मा का मार्ग, यह ऋषि दयानन्द का बताया हुआ मार्ग है। इस यात्रा में से कुछ ग्रहण करना हो तो यही है। यही ऋषि का संदेश है। यहां अनाज इत्यादि सब होता है। ऐसा तो सब जगह होता है। हम सब यहां किस लिये आये हैं? स्वामी जी का संदेश ग्रहण करने के लिये आये हैं। उन्होंने यहां जन्म लिया। और छोटी आयु में ही उनके मन में क्रांति की भावना जागृत हो गई। और सारे संसार को झकझोर दिया। चूहा तो सभी देखते हैं परन्तु उस चूहे की घटना में से जो ज्ञान उनके मन में उत्पन्न हुआ उसका एक महान् इतिहास बन चुका है। परमात्मा ने उन्हें मनुष्य जाति और संसार के उद्धार के लिये

भेजा। एक छोटे से शिवालय ने उन्हें ज्ञान दिया और मूलशंकर में से दयानन्द बनने की उन्हें प्रेरणा दी। और संसार को जगाने के लिये आह्वान किया। अपने लिए टंकारा की यह एक महान विशेषता है। आज तो हम मोटरों और विमानों में फिरते हैं परन्तु उस जमाने में जब कि ये साधन न थे तब उन्होने पैदल ही सारे देश को खूंद डाला कोई भी क्षेत्र बाकी नहीं छोड़ा। उन्होंने हम को स्वराज्य का मार्ग बताया और सच्ची राष्ट्रीयता प्राप्त करने के लिए आह्वान किया। और राष्ट्रीय एकता के लिए हिन्दी भाषा का प्रचार किया। अस्पृश्यता को मिटाया और अछूत पन के कलंक से पीड़ित अपने करोड़ों देश-बन्धुओं को अपने गले लगाया। स्त्री और शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार है यह भी सिद्ध कर दिखाया। स्त्रियों को ऊपर उठाया उनको समान अधिकार दिलाकर शिक्षणालय का मार्ग बताया वैदिक संस्कृति का सच्चा स्वरूप समझा कर बताया कि स्त्रियां तो अपनी शिरताज और शोभा है। महर्षि ने कहा कि परदेशी शिक्षण को छोड़ कर देशी शिक्षण प्राप्त करो। और अपने गुरुकुल व विद्यालय खोलने का आदेश दिया। संक्षेप में कहूँ तो ऋषि ने कुछ भी बाकी छोड़ा नहीं। उन्होंने कहा कि जो हिन्दू ईसाई मुसलमान बन सकते हैं तो ईसाई मुसलमान भी हिन्दू बन सकते हैं। उसके लिए उन्होंने शुद्धि की संजीवनी बूटी संसार के सामने रक्खी।

उनके पीछे महात्मा गांधी हुए जिन्होंने महर्षि दयानन्द का कार्य पूरा किया। देश को स्वतन्त्र किया। आर्य समाज के बच्चे-बच्चे ने स्वातन्त्र्य युद्ध में भाग लिया। १८५७ से १९४७ तक महर्षि दयानन्द और उनके अनुयाइयों ने केवल स्वतन्त्रता की लड़ाई में ही भाग नहीं लिया वरन् नेतृत्व भी किया। उसमें अनेकों को फाँसी हुई। और आ-जन्म कालेपानी की सजा पाकर नारकीय यातनायें भोगते रहे।

सौराष्ट्र की भूमि वीर प्रसविनी भूमि है। इस ने देश को नेता दिये हैं। मैं इस भूमि में से एक दूसरा नेता मांगता हूँ। नम्र याचना करता हूँ कि एक ऐसा नेता पैदा करो। इसके लिए आप प्रतिज्ञा करें।

आर्य समाजियों ने "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का जय घोष किया था। परन्तु यह अभी तक पूर्ण नहीं हुआ। अभी तो करोड़ों को आर्य बनाना है। यह प्रतिज्ञा पूर्ण करनी अभी शेष है।

सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ो। महर्षि दयानन्द ने कहा था कि मैं सत्य की खोज में और सत्य का प्रकाश करने निकला हूँ। मैं किसी सम्प्रदाय के दिल को दुखाना नहीं चाहता परन्तु सत्य की खोज करने के लिए कहता हूँ। मैं जो कुछ कहता हूँ उसे यों ही नहीं मान लेना परन्तु सत्य की कसौटी पर कस कर जिसे तुम्हारा हृदय व आत्मा स्वीकार करे उसी को मानना। इस प्रकार दयानन्द ने सब के लिए अपने द्वार खुले रक्खे। दूसरे सम्प्रदायों के समान बन्द नहीं रक्खे। आर्य समाज और दयानन्द ने बहुत कुछ किया। शिक्षा के क्षेत्र में भी बहुत कुछ किया। महर्षि दयानन्द ने वेद भाष्य का जो कार्य अधूरा छोड़ा था उसे आर्य समाज पूर्ण नहीं कर सका, यह अपनी निर्बलता है।

देश की आज सब से बड़ी आवश्यकता क्या है? रोज कारखाने बनते हैं, योजनायें बनती हैं, पैसे का महत्व बढ़ता जा रहा है। चाहे जिस मार्ग से मिले, पैसा मिलना चाहिए। परन्तु आज सत्य नहीं रहा, वैदिक सभ्यता छिन्न भिन्न हो गई है। नैतिक स्तर नीचे चला गया है। स्वराज्य आने पर भी यह दशा है, तो फिर स्वराज्य से अपने को क्या लाभ हुआ? स्वराज्य में तो आत्मा

की उन्नति और चरित्र निर्माण का कार्य सर्व प्रथम होना चाहिए। महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के जो दश नियम बनाये हैं यदि उनके ऊपर आज की सरकार और जनता चले तो देश का कल्याण हो। देश सदाचारी और चरित्रवान बन जाय। देश में फिर से प्राचीन भारतवर्ष आ जाय।

आर्य समाजी चरित्र बल में खूब शुद्ध और चुस्त थे। एक आर्य समाजी के आचारण से अन्य लोग प्रभावित होते थे और डरते थे। इतना ही नहीं परन्तु उनके पवित्र जीवन के प्रभाव से कितने ही लोगों ने शराब छोड़ी। आज आर्य समाजियों को फिर से ऐसा प्रभाव उत्पन्न करने की आवश्यकता है। उन्हें देश के चरित्र निर्माण के कार्य में लग जाना चाहिये।

एक समय था जब कि अंग्रेज अपने से अर्थात् आर्य समाजियों से डरते थे। आर्य समाजियों की विशुद्ध राष्ट्रीयता, कट्टर देश भक्ति, और सिद्धांत चुस्त होने का विश्वास अंग्रेजों को हो चुका था। अपने गुरुकुल, विद्यालय, और शिक्षा संस्थायें स्वराज्य और क्रान्तिकारी आन्दोलनों के गढ़ थे। अपने कार्य अंग्रेजों में भय उत्पन्न करते थे हमें फिर से ऐसे प्रभावोत्पादक कार्यों में पड़ जाना है। मैं फिर से कहता हूँ कि सौराष्ट्र वासिओं एक ऐसा नेता दो जोकि महर्षि दयानन्द का कार्य पूर्ण कर सके।

श्री अनन्त शयनम् आयंगर

समारोह के मुख्य अतिथि श्री अनन्त शयनम आयंगर अध्यक्ष लोकसभा थे उन्होंने महर्षि स्मारक का उद्घाटन करते हुये कहा कि यदि महात्मा गांधी राष्ट्रपिता हैं तो महर्षि दयानन्द राष्ट्रपितामह हैं। ऐसे महा पुरुष के समारक का उद्घाटन करना भी एक गौरव है। यह स्मारक जड़ है इसे प्राणवान बनाओ। यहां वेदों व उपनिषदों का अनुशीलन होना चाहिये। यहां से निकल कर मिशनरी संसार के कोने २ में फैल जाये। महर्षि दयानन्द की बुनियाद पर ही गान्धी जी चले थे। जब कोई सोचता भी नहीं था तब उन्होंने अस्पृश्यता के कलंक को दूर करने की आवाज उठाई। मैं उस महर्षि को अपनी श्रद्धाँजलि अर्पण करता हूँ।

[शेष पृष्ठ ३ का] तारकेश्वरी सिन्हा की गुरुकुल शिक्षा पद्धति को श्रद्धांजलि।

संस्था की एक एक ईंट यादगार बनी है। १९ वर्षों बाद मैं अपनी मातृ संस्था में आकर अपार प्रसन्नता अनुभव करती हूँ। मैं बड़ौदा आऊं और संस्था में न आऊं ऐसा हो ही नहीं सकता। संस्था में आये बिना मुझ से रहा ही नहीं जा सकता।

मैं संस्था में आकर प्रेम की यादगार ताजा करके जाती हूँ। मैं यहां के कार्य से बहुत प्रसन्न हुई हूँ।

श्री पं० आनन्द प्रिय जी ने आभार मानते हुये कहा कि हमारे लिये यह बड़े गौरव का विषय है कि आज हमारी संस्था की एक कुल पुत्री का आगमन हुआ है। हमारी कुल पुत्री आज भारत सरकार की उपमन्त्रिणी बनी, यह हमारे लिये गौरव की बात है। जो भावनापूर्ण व्याख्यान उन्होंने दिया है उससे मेरा हृदय भर आया है, हम तो वनवासी हैं कुल भावना से कार्य कर रहे हैं। प्रभु से इनकी उन्नति चाहते हैं। वे उपमन्त्रिणी से मंत्रिणी बनें, यही हमारा आशीर्वाद है।

गुरुकुल की आचार्या यशोदा बहन ने कहा कि श्री तारकेश्वरी बहन ने जो भावपूर्ण शब्द उच्चारण किये हैं वे हम सब को और यहां की बहनों को आत्म विश्वास और आत्मबल देने वाले हैं। संस्था में से जाकर श्रीमती तारकेश्वरी बहन ने जो कार्य कर दिखाया है वैसा अवसर प्रत्येक बहन को है। विश्वविद्यालय की डिग्री पाने वाले ही आगे बढ़ते हैं, ऐसा कुछ नहीं। अपनी जैसी राष्ट्रीय संस्था में से निकल कर भी बहनें आगे बढ़ सकती हैं।

सब रोगों पर तुलसी

[लेखक—राम एकवाल वर्मा, चतुर्भुज वरांव "शाहबाद" बिहार]

तुलसी की उत्पत्ति एवं विवरण के सम्बन्ध में लिखना व्यर्थ है। कारण, इसका पौधा प्रत्येक हिन्दू जाति के घर में होता है। यह खांसी, विष श्वास, पार्श्वशूल, पित्तकारक, कफ, वायु और दुर्गन्ध को नाश करती है। साथ ही साथ शोल, वायु, रोम विकार, मन्दाग्नि, मलेरिया ब्रकाइटिस न्युमोनिया, हैजा, इन्फ्युलुएंजा आदि रोगों में उपयोगी है।

निम्नलिखित रोगों पर इसका व्यवहार किया जा सकता है—

(१) तुलसी का रस गर्म करके कानों में डालने से दर्द जाता रहता है।

(२) १–३ माशे तक, अवस्थानुसार तुलसी के रस में शहद मिलाकर दें तो श्वास रोग में मुक्ति होती है।

(३) बालकों को दाँत निकलते समय एक आधी रती तुलसी का चूर्ण अनार के शर्बत में दें।

(४) तुलसी का रस शहद में मिला कर चाटें तो सर्दी से बचाव होता है।

(५) लू लगने पर तुलसी का रस चीनी में मिलाकर पीजिये। सफलता मिलेगी।

(६) तुलसी की जड़ का चूर्ण पान में रख कर दें तो आमाशय का रक्त स्राव बन्द हो जाय।

(७) चेचक में तुलसी और अजवायन पीस कर प्रतिदिन सेवन करें।

(८) रक्तस्राव और चक्कर में तुलसी के रस में खांड मिला कर दीजिये। लाभ होगा।

(९) प्रसव पीड़ा में तुलसी का रस देना लाभकारी होता है।

(१०) मूत्र की नली में दाह हो तो तुलसी की पत्ती चबाने से आराम होता है।

(११) वमन पर, तुलसी का रस, छोटी इलायची का चूर्ण और चीनी मिला कर देवें।

(१२) दांत दर्द में तुलसी की पत्ती और काली-मिर्च की गोली बना कर दांतों तले दबायें। अच्छा होगा।

(१३) मुख के छाले पर, तुलसी और चमेली की पत्तियों को चबावें।

(१४) हैजे पर, तुलसी और काली मिर्च की गोली बनाकर देवें।

(१५) घाव पर तुलसी के बीज पीस कर बाधें।

(१६) पेट दर्द में, तुलसी और आदी का रस गर्म करके लें।

(१७) आमाशय दर्द में, तुलसी की चाय पीजिये।

(१८) पसीना लेने के लिए तुलसी का काढ़ा पीवें। अच्छा लाभ होगा।

(१९) खांसी में, तुलसी की मंजरी और आदी का रस शहद के साथ चाटें।

(२०) खांसी में तुलसी और अड़से की पत्ती का रस समभाग मिला कर देवें।

(२१) प्रदर का रोग हो तो तुलसी का रस दो तोला चावल के मांड के साथ सात दिन दें। दूध भात और घी भात खाना चाहिए।

(२२) रतौंधी में, तुलसी का रस दिन में कई बार आंखों में डालें।

(२३) शीघ्र पतन में, तुलसी के दो-चार रत्ती बीजों को पान में खाया करें।

(२४) अंतरियों का बुखार में, तुलसी का रस ३ माशा, काला मिर्च का चूर्ण दो आना-

भर लेकर खावे और ऊपर से गरम पानो पीवें।

(२५) ज्वर और खांसी में, तुलसी का रस सवा तोले, शुद्ध शहद २।। तोले, आदी १० आने भर, सब को मिलाकर रखें। रोज ३०-६० बून्द तक सेवन करें।

(२६) प्लेग में, तुलसी, काली मिर्च, और मिश्री खावें।

(२७) जीर्ण ज्वर में, खांसी और छाती के दर्द में, तुलसी के रस में मिश्री मिलाकर लें।

(२८) ज्वर में घबराहट हो तो तुलसी का शर्बत दें।

(२९) विषम ज्वर में, तुलसी के रस में मिर्च का चूर्ण मिला कर पिलावें।

(३०) जुड़ी बुखार में, तुलसी की पत्ती ६, काली मिर्च दो, एक तोला जल में पीस कर सेवन करें।

(३१) मीठें ज्वर में, तुलसी, पुदीना का रस, उसे ७ रोज तक दें।

(३२) दाद पर तुलसी की पत्ती रगड़ें।

(३३) सिर दर्द में तुलसी नींबू का रस लगावें।

(३४) कुष्ट रोग में, तुलसो की पत्ती खाये और लगाये।

(३५) बवासीर में, तुलसी का बीज दिन में दो बार लें।

(३६) गर्भ स्थिति के लिए, मासिक धर्म के दिनों में, तीन दिन तुलसी का बीज चबालें।

(३७) सर्दी जुकाम में, तुलसी की पत्ती और काली मिर्च, सेंधा नमक का काढा पीवे।

(३८) सिर दर्द में, तुलसी का चूर्ण शहद में प्रातः लिया करे।

(३९) पित्त प्रकोप में, तुलसी और आदी का रस और दोनों के दुगना नींबू के रस मिश्री साथ लें।

(४०) कान पर सुजन हो तो तुलसी मंजरी सहित का रस निकाल कर दो चार बूंद कान में छोड़े।

(४१) दांतों में कीड़े हों तो, तुलसी के रस में थोड़ा कपूर मिलाकर उसमें रुई भिगोकर पींड़ित स्थान पर रखें।

(४२) मुख में छाले पड़ गये हों और मुख से दुर्गन्ध आवे तो तुलसी की पत्ती फांका करे।

(४३) पाचन शक्ति के लिये तुलसी की पती पीस कर पीवें।

(४४) सूजन पर तुलसी की पत्ती का लेप करे।

(४५) चीनस पर तुलसी का रस दिन में कई बार नाक में छोड़े और तुलसी को सूंघनी सूंघें।

(४६) गले में दर्द हो तो तुलसी का रस शहद में चाटे।

(४७) पैर फूलना और अफारा हो तो तुलसी और पान का रस गरम कर पीवें।

स्मरणीय बातें—तुलसी के दो भेद हैं—(१) काली कृष्ण-श्यामा (२) श्वेतरामा। रामा से श्यामा विशेष लाभकारी होती है। अभाव में रामा का भी व्यवहार ही किया जा सकता है। दोनों के गुण प्रायः एक ही समान हैं। (क्रमशः)

अहिंसा परमोधर्मः के प्रचारक

महान् बुद्धदेव के अनुयायी परम पावन दलाई लामा

के भोजन की सामग्री

तेजपुर, १८ अप्रैल। दलाई लामा आज दोपहर को १।। बजे उत्तर-पूर्वी सीमांत रेलवे के वातानुकूलित डिब्बे में सवार हुए और डिब्बे में ही उन्होंने दोपहर का खाना खाया।

एक सम्वादाता ने दलाई लामा के सुरक्षा अधिकारी से पूछा कि खाने में क्या हैं? उत्तर में संवाददाता को खाने की जो सूची मिली उसमें नीचे लिखी चीजें थी—

संतरों का ताजा रस, सूप, मछली, गोश्त, सब्जियां, मुर्गा, पुलाव, दाल, पापड़, चटनियाँ, आमकी आईसक्रीम, रसगुल्ले तथा काफी। -प्रे. ट्र. (नवभारत टाइम्स)

कल्याणमय बचन सुनें

[लेखक—प्रो० वा० बिष्णुदयाल एम० ए०]

ऋषि लोग इस बात से अनभिज्ञ न थे कि सब देशों और सर्व कलाओं में बुरे और अच्छे साथ साथ पाये जाते हैं। इतना तो साधारण जन के भी जानने में है कि किसी समय या किसी देश विशेष में श्रेष्ठ लोगों की संख्या अधिक थी। श्रेष्ठ रहकर निकृष्ट पर दया करना, यह ऋषि गण अपना कर्तव्य बनाते थे। ऋषि दयानन्द ने कहा था कि अपनी उन्नति से सन्तुष्ट नहीं होना चाहिए।

भारत के महापुरुष बड़े होकर छोटों का तिरस्कार नहीं करते थे जैसे पश्चिमी राष्ट्र शक्तिशाली बन कर कमजोर देशों की बेइज्जति करते हैं। भारतीय अपने ही जैसे सब को उच्च बनाने पर तत्पर थे।

दूरदर्शी ऋषि भविष्य का ख्याल करके अपने युग के लोगों को कहा करते थे, तुम लोग हमारे साथ मिल कर कहते रहना।

"भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम भद्रं पश्येमा क्षभिः

—हम कानों से कल्याणमय वचन सुनें, नेत्रों से कल्याण ही देखें।

कान मनुष्य से भिन्न जीवों को भी प्रदान किये गये हैं। वे भी मधुर स्वर से मुग्ध हुआ करते हैं। बांसुरी की तान सुन कर सर्प तक उठ खड़ा होता है।

भेद यह है कि सर्प या अन्य पशु गाये जाने वाले गीतों का अर्थ नहीं समझ पाते।

मधुर स्वर तो नर्तकियां भी सुनाती हैं जिन के संसर्ग में आकर बड़े बड़े मन्त्रियों को आजकल अपार आनन्द होता है।

केवल विवेकी पुरुष समझ पाते हैं कि नर्तकियों के कामोद्दीपक गानों के श्रवणार्थ हमें कर्ण नहीं दिये गये हैं।

रूप लावण्य को देख कर अनर्थ करने के लिये नेत्र नहीं मिले। हमें किसी ज्ञानी से मिलना हो तो हम चलने को शीघ्र उद्यत नहीं होते। हमारा दूषित विचार है कि एक तो वे अर्द्धनग्न रहा करते हैं, दूसरे ऐसी बातें कहते हैं जिन को मान कर हमें तप करना होगा, भोग से मुख मोड़ कर योग की ओर ध्यान देना होगा।

हम सुन्दर महल में वास करना, आधुनिक ढंग की मोटर गाड़ियों में बैठ कर यात्रा करना चाहते हैं, बढ़िया परिधान पहन कर अपनी धाक जमाना चाहते हैं।

जिन्होंने सदुपदेश को ग्रहण किया उन्हें सुख ही सुख मिला।

विगत वर्ष सलेही नामक वयोवृद्ध का पता चला जिन की उम्र १९५ साल की है।

वे १०-१२ मील आसानी से चलते हैं। वे स्वयं बाजार जाया करते हैं और साग, सब्जी, फलादि खरीद कर घर लौटते हैं। उन्होंने कभी मदिरा का स्पर्श तक नहीं किया।

उन से मिलने के लिये लोगों को ईरान के पहाड़ों को लांघना पड़ा; बर्फ के बीच गुजरना पड़ा; नदी, झीलादि बार-बार देखने पड़े।

ऐसों को लोग असभ्य बताया करते थे। आज ज्ञात हो रहा है कि जंगली व असभ्य समझे जाने वालों के पास ही शक्ति रहती है।

ईरान के ये वयोवृद्ध अपनी उपस्थिति से संसार को सजग कर रहे हैं। वे वैदिक परम्परा की उपज हैं।

वैदिक काल में आर्य्य सूर्य्य, चन्द्रमा, विशाल मैदान, नदी, तालाब, पहाड़, वन से प्रीति का नाता जोड़ते थे। वे प्रकृति के पुत्र थे, अतः जीवन के आनन्द अनुभूत करने में समर्थ थे।

सभ्यता हमें प्रकृति से दूर लेजा कर फेंक देती है। हमारा जीवन कृत्रिम हो जाता है।

कृत्रिमता को दूर करना है तो हमें पुराने उपदेश में, यौवन, ताजगी पाकर उसके अनुकूल आचरण करना चाहिए।

ऋषि का नाम लेकर कई भाई इस युग की सभ्यता का शिकार बन रहे हैं, उन्हें लोगों को वेद की ओर झुकाना चाहिये था। वे ही वह रहे हैं, विद्या प्रचार या ज्ञान प्रसार के लिये उन्हें धन की आवश्यकता होती है वे मीना बाजार लगाते हैं। ऐसा बाजार विदेशी लगाते हैं जिससे वे हमारे समाज की गिरावट ला सकें। अब हम खुशी खुशी हमारे ही लिये रचे षड्यन्त्र को सफल होने में स्वयं हाथ बटाते हैं।

हम अपने को पुरानी लकीर का फकीर होना इस "दोष" से मुक्त करने के लिये विदेशी और भटकते हुये स्वदेशी का पदानुसरण करते हैं। हम जो वेद प्रचार करने निकले थे इस बात को दोहराने लगे हैं कि विज्ञान का युग अभी आया है, युग के अनुकल चल कर हमें आगे बढ़ना है।

जिन ऋषियों के पास अपार ज्ञान था वे विज्ञान वेता भी थे। मद्रास यिश्वविद्यालय के प्राध्यापक श्री डा० राघवन् ने हमारे प्राचीन ग्रन्थो का हवाला दे कर सिद्ध किया है कि रामायण के युग में यन्त्र ध्वजा; उपलयन्त्र जिससे वाण फेंके जाते थे; महाभारत काल में मत्स्य यन्त्र; अश्मयन्त्र जिससे पत्थर प्रक्षिप्त किये जाते थे। अर्थशास्त्र के जमाने में यन्त्रयुक्तसोपान; भोज के दिनों में उड़न रथ; सिकन्दर के आक्रमण के समय में वायव्यास्त्र; जैन सूत्रों के युग में अश्व रहित रथ—इन का निर्माण होता था। यही नहीं, चीनियों के एक पुराने ग्रंथ में लिखा मिलता है कि भारतीय उड़ती सीढ़ियों से काम लेते थे। ६वीं १०वीं शदी वाले बुद्ध स्वामी ने आकाश यन्त्र का उल्लेख किया था। रानी विजया एक वार मयूरयन्त्र में बैठी थी जो उड़ पड़ा था। क्षेमेन्द्र ने ऐसे विमान का वर्णन किया है जिसमें हजार यात्रियों के लिए जगह थी। प्रसिद्ध लेखक फिलोस्ट्रेटस ने कई बार अपने ग्रन्थ में ब्राह्मणों का नाम लिया था और बताया था कि वे यन्त्र बनाना जानते थे। कुछ यूरपीयों ने यहां तक लिखा है कि बारूद पहले चीन में नहीं प्रत्युत भारत में बनी थी। यन्त्र न होता तो गीता में कैसे यह श्लोक आता :—

"ईश्वरः सर्व भूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया॥

सब युग समान नहीं रहते। उत्थान के बाद पतन आया। इस साल समस्त संसार में स्मरण कराया जायेगा कि आगामी नवम्बर मास में पूरे १०० साल होंगे जब डार्विन का युगान्तकारी

ग्रन्थ निकला था जिसमें विकासवाद को चर्चा की गई है।

आमतौर पर माना जाता है कि पहले मनुष्य मनुष्य के रूप में न थे, अतः उसका विकास हुआ। इससे यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि यह बात मिथ्या है कि लोग पहले सभ्य थे, बाद में उनकी गिरावट हुई।

अन्धे बन कर कई शिक्षित भारतीय विकासवादी बन गये। वे यह मानने को तैयार नहीं होते कि प्राचीन भारत की जो सभ्यता थी वह उच्चकोटि की थी। खोज होती रही और पिछले दिनों में पता चला कि "वेसल में प्राकृतिक इतिहास के संग्रहालय के क्यूरेटर प्रो० जोहोस हरजल ने मानव का १ करोड़ २० लाख वर्ष पुराना ढाँचा खोजा है। अभी तक मानव के इतने पुरातन होने का कोई प्रमाण नहीं मिला था। यह ढांचा २ अगस्त को ग्रो सेटो के समीप वैसिनाली में कोयले की खान की गैलरी में भूमि से ६०० फुट नीचे मिला।

प्रो० महोदय ने कहा कि मानव-शरीर-विज्ञान के क्षेत्र में यह खोज बहुत महत्वपूर्ण है और इससे मेरा यह कथन सिद्ध हो जाता है कि प्रारम्भ में भी मानव मानव ही था कभी भी बन्दर नहीं था। मानव का प्रारम्भ १० लाख वर्ष से नहीं हुआ जैसा समझा जाता है, अपितु इससे बहुत पहले हुआ है।

डार्विन का कहना है कि बलवान बलहीन को पछाड़ता है। करोड़ों वर्ष से एक दूसरे को नष्ट करता आ रहा है। अभी तक तो एक भी बलहीन का अस्तित्व होना ही नहीं चाहिए था। हम तो यह देखते हैं कि कमजोर से कमजोर जीव भी विद्यमान हैं।

नास्तिकों को विकासवाद को पाकर नास्तिकता का प्रचार करने का अभूतपूर्व अवसर मिला। डार्विन तो नास्तिक न थे जैसे फ्रेंच लेखक वोल्तेर नास्तिक न थे। चेले गुरु से एक कदम आगे बढ़े।

अंग्रेज का भारतादि देशों में राज्य था। विदेशी शासकों को डार्विन से पुष्टि मिली। विकासवाद का प्रचार हो तब तो अत्याचारी कह सकते हैं कि हम बल हीन लोगों की रक्षा कर रहे हैं।

डार्विन और उनके अनुयायियों ने कहा कि यदि किसी प्राणी का कोई अंश विशेष घिसने लग जाय तो कुछ समय में वह अंग उसके शरीर में नहीं रहेगा।

बहुतों ने चूहो की अनेक पीढ़ियों की पूंछ काटी, पर असंख्य पीढ़ियों के बाद भी चूहों की पूंछ लुप्त न हुई। प्रमाण के न मिलने पर भी विकासवादी हठ कर रहे हैं। लोग अन्धविश्वासी बन कर विकासवाद की प्रशंसा करते हैं, धर्म से दूर होते हैं और शुभ संकल्प करना व्यर्थ मानते हैं।

पश्चिमीयों का अन्धाधुन्ध अनुकरण करने वाले भारतीय यह वैदिक प्रार्थना नहीं करते।

"वेद वाणी हमें पवित्र करे (ऋ० १।३।१०)

जब ऋषियों ने कहा था कि शरीर के अंग-अंग से उत्तम कार्य किया जाय उन्होंने यही कहना चाहा कि मुँह मिला तो उससे उत्तम वाणी निकले, ऐसा न हो तो मनुष्य मुँह वाला होने पर भी गूंगा रहेगा; कर्ण रख कर भी वह वेद वाणी जैसी उत्तम वाणा न सुने तो उससे जो बहिर है वह अच्छा है; पांव के होते हुए ो श्रेष्ठ कार्य में जाकर सम्मिलित न होता तो अच्छा होता कि वह पंगु होता; नेत्र वाले होकर भी जो देखने लायक दृश्य को न देख कर नर्तकियों को नाचते, गाते, नखरे करते देखना चाहता है और उस समारोह में शरीक होना जहाँ इन्हें पदकादि देकर सम्मानित किया जाता है, वह अन्धा है। ज्ञान और कर्मेन्द्रियां हमें इस लिये नहीं दी गईं कि हम उनका दुरुपयोग करें।

धर्म नगरी

[ले०—श्री मदनजित आर्य वैदिक धर्म विशारद फिरोजपुर]

हमारे जिज्ञासु महोदय के हृदय में आज बड़ा कोलाहल हो रहा है वह यह विचार कर रहा था कि आया पुराणों में सारी बात झूठी हैं अथवा कुछ सच्ची भी हैं अतः वह इसी सोच विचार में निमग्न होता हुआ सभा मण्डप में पहुँचा। वहां आज अधिक भीड़ थी और पण्डित वेद भानु जी इसी पुराणों का ही खंडन कर रहे थे। पंडित जी ने कहा कि जो पुराणों में थोड़ी बहुत सच्ची बातें भी हैं वह वेदादि सत्य शास्त्रों की हैं। इन पुराणों में परस्पर बहुत विरोध है और एक दूसरे की निन्दा भी है। सृष्टि उत्पत्ति का विषय भी प्रत्येक पुराण में मिला है। शिव पुराण तथा भागवत इत्यादि पुराणों में तो **सृष्टि नियम विरुद्ध** उत्पत्ति भी लिखी हुई है यथा पक्षी, सर्प, कुत्ते इत्यादि की मनुष्यों से उत्पत्ति होना लिखा है। श्री मद्‌भागवत में भगवान कृष्ण सदृश योगीराज पर वस्त्र हरण का दोष आरोपण किया। बाराह को असंभव कथा भी यह लिखी है कि वह पृथिवी को चटाई के समान लपेट कर सिरहाने धर सो गया। विष्णु ने बाराह का स्वरूप धारण करके उसके सिर के नीचे से पृथ्वी को मुख में धर लिया। कैसी सृष्टि नियम विरुद्ध बातें हैं पृथिवी क्या चटाई सदृश है?

प्रहलाद की कपोल कल्पित कथा लिखी है कि हिरण्य कश्यप उसको पाठशाला में पढ़ने के लिये भेजता था और वह अपने गरु को यह कहता था कि मेरी पट्टी पर राम राम लिख दो। पिता क्रुद्ध हुआ बहुत कष्ट दिये खम्बा गरम किया और पुत्र को कहा कि यदि तेरा इष्ट देव सच्चा है तो इसको पकड़ ले। प्रहलाद मन में डर गया पुनः नारायण ने उस खम्बे पर छोटी २ चींटियों की पंक्ति चलादी और जब उसको निश्चय हुआ तो खंभे को पकड़ लिया उसमें से एक नृसिंह निकला जिसने उसके बाप को फाड डाला और प्रहलाद को चाटने लगा और पुनः जब वर देने लगा तो कह दिया कि तेरे इक्कीस पुरुष सद् गति को गये। अब इस गपोड़े को भी देखो। गरम खंभे के ऊपर चींटी क्यों न जली तथा भीतर नृसिंह क्यों न जला। और क्या मनुष्य के शरीर पर सिंह का मुख लग सकता है यह सब गपे ही हैं। इसी प्रकार अक्रूर जी ने चार कोस का फासला सारा दिन में पूरा किया पूतना का शरीर छः कोस चौड़ा और लम्बा लिखा है। अजामिल की ऊट पटांग कथा अर्थात् नारायण पुत्र का नाम मात्र लेने से सदगति का होना सब कपोल कल्पित बातें हैं।

श्री कृष्ण जी

देखो ! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण कर्म स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश हैं जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा और इस भागवत वाले ने अनुचित मन माने दोष लगाये हैं, दूध दही माखन आदि की चोरी लगाई, कुब्जादासी से समागम, पर स्त्रीयों से रास मंडल में क्रीडा आदि मिथ्या दोष लगाये हैं। इसको पढ़ पढ़ा सुन सुना अन्य मत वाले श्री कृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं जो यह भागवत न होता तो श्री कृष्ण के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा फिर क्यों होती। इतने पर एक तिलक लगाये हुए बूढ़े ने खड़े होकर प्रश्न किया कि महाराज जी यह पुराण तो शूद्र और स्त्रियों के लिये बनाये हैं क्योंकि उनको वेद पढ़ने का अधिकार नहीं। पंडित जी ने कहा कि यह बात मिथ्या है क्योंकि सामर्थ्य तो पढ़ने पढ़ाने से ही होता है। और प्रभु की इस सृष्टि में उस के प्रत्येक पुत्र और पुत्री का सामान्य अधिकार है। देखो उपनिषदों में गार्गी आदि विदुषी देवियों का उल्लेख मिलता है।

इतने पर एक देवी जी ने कर वद्ध प्रार्थना की महाराज यह जो ग्रह है इनका फल क्या होता है पंडित जी ने कहा कि ग्रहों का फल जैसे यह ज्योतिषी पौराणक लोग मानते हैं वैसा तो नहीं होता। हां सूर्य चन्द्र की किरणों से उष्णता, शीतलता आदि होते हैं भला यह तो सोचो कि क्या यह सूर्य चन्द्र किसी विशेष मनुष्य के लिये कोई दुःख सुख उत्पन्न करते हैं या किसी विशेष व्यक्ति के ऊपर यह चढ़े हैं। यह सब बातें व्यर्थ की हैं। यह सब पापों के ठगने की विद्या है। सच तो यह है कि यह सूर्यादि जड़ पदार्थ है। हां गणित विद्या ज्योतिप शास्त्र के अंतर्गत होने से सत्य है जिससे सूर्य ग्रहण इत्यादि का होना पाया जाता है।

इसो प्रकार गरुड़ पुराण भी मिथ्या है जिसमें वेतरणी नदी और गोदानादि का महात्म लिखा है। यह पोप जो स्वार्थ के लिये ही सब ढोंग रचते हैं। इन पौराणिकों ने कल्पित स्वर्ग और नरक भी बता दिये हैं जो वेद शास्त्रों के विरुद्ध हैं। वस्तुतः यम नाम वायु का है। शरीर छोड़कर सब जीव वायु के साथ अतंरिक्ष में रहते हैं। और न्याय कर्ता धर्म राज सब जीवों को कार्यनुसार फल देता रहता है। और दान भी सुपात्रों को देना चाहिये कुपात्रों को कभी नहीं देना चाहिये। दाता भी तीन प्रकार के होते हैं उत्तम मध्यम और निकृष्ट। इनका फल भी अलग २ होता है। दान का फल इस लोक तथा परलोक दोनों में होता है।

इसी प्रकार इन पापों ने एकादशी आदि तिथियां उपवास के लिये बना दी है। और कपोल कल्पित मन गढन्त कथा भी बना दी है कि एकादशी के व्रत करने वाले स्वर्ग को जाते हैं। इनका नाम 'पुत्रदा' निर्जला तथा "धनदा" भी लिखा है परन्तु आज तक किसी को भी यह वस्तुएं इस कारण नहीं मिली।

इतने में एक अधेड़ आयु का व्यक्ति खड़ा हो गया और प्रश्न करने लगा। कि पं० जी महाराज वेदों की आप भी ११३१ शाखायें मानते हैं उसमें बहुत सी इस समय लोप हो गई हैं अतः इन लोप हुई शाखाओं में भी मूर्ति पूजन का विधान होगा। इस कारण मेरी शंका निवारण कीजिये। पंडित जी ने कहा कि भाई साहिब जैसे शाखा जिस वृक्ष की होती है उसके गुण इत्यादि उसी सदृश ही होते हैं विरोध नहीं होता। अतः जब कि मूलवेद में प्रतिमा आदि पूजन का निषेध

है तो शाखा में कहाँ से हो सकता है। पुराणों में तो संसारिक जनों के इतिहास लिखे हैं जो कि वेदों में बिलकुल नहीं हैं। इन पौराणिकों की विचित्र लीला देखो कि सीता तथा रुक्मिणी लक्ष्मी आदि जो महारणियां थी पुजारी लोग इन के नाम पर भीख मांगते हैं कि सेठानी जी इनके लिये आभूषण बना दो, वस्त्र का दान करो इत्यादि और जब यह मूर्ति को कोई दुष्ट तोड़ देता है तो यह रुदन करते हैं। यह हमारे पूर्वजों की पूजा नहीं कर रहे किन्तु उपहास करते हैं। अतः जब तक भारतवर्षीय इस मूर्ति पूजा को न छोड़ेंगे तो प्रति दिन अधिक से अधिक हानि होती जायेगी। और यह वाम मार्गी लोग तो इससे भी बुरा व्यवहार करते हैं जो मारन, मोहन, उच्चाटन, विक्षेपण, वशीकरण आदि प्रयोग करते रहते हैं सो मन्त्र से तो कुछ नहीं होता हां क्रिया से अवश्य ही सब कुछ करते हैं। कई २ बार वह मांस तथा विष का भी प्रयोग करते रहते हैं। इन वाम मार्गियों में एक चोली मार्गी दूसरे बीज मार्गी होते हैं। चोली मार्ग वाले गुप्त स्थान पर नर और नारी एकत्रित होकर मांस, शराब, व्यभिचार आदि कुकर्म करते रहते हैं और बीजमार्गी स्त्री पुरुष समागम कर उनके रज वीर्य को पानी में डाल कर पीने को ही मुक्ति आदि के साधन मानते हैं जो पामर पन की बातें हैं। इसी प्रकार सब मत वालों ने अपनी पृथक लीलायें रच ली हैं और इन में भी कई भिन्न २ मत प्रचलित हो गये हैं।

इसी भांति वैष्णाव जी अपने आपको चक्रांकित करते रहते हैं वह ललाट में नारायण के चरणारविन्द के सदृश तिलक और बीच में पीली रेखा लगाते हैं इसको वह श्री का चिन्ह मानते हैं परन्तु भिक्षा घर घर से मांगते रहते हैं। इनका एक भक्त परिमाल था जो पूरा डाकू था और लूट मार का सब कुछ वैष्णवों के अर्पण कर देता था अब यह उस चोर की मूर्ति मन्दिरों में रख कर पूजा करते हैं। इन में बहुत से खाकी बन जाते हैं जो पढ़ने लिखने को बहुत बुरा बताते हैं। वे बस गुरु की पूजा करना ही श्रेयस्कर मानते हैं। यह रात दिन लकड़ी जलाते रहते हैं जिससे लोगों में यह श्रद्धा उत्पन्न हो जावे कि हम बड़े ही महात्मा है परन्तु वस्त्र थोड़े से रुपयों के न पहन कर सैंकड़ों रुपये की लकड़ी फूंक जाते हैं। यदि धूनी तपाने से ही कोई तपस्वी हो जावे तो जंगली मनुष्य इस से भी अधिक तपस्वी माने जायेंगे।

कबीर पन्थी

सभा मंडप में कई कबीर पंथी भी विद्यमान थे। उनमें से एक महानुभाव उठकर कहने लगा कि महाराज हम कबीर पन्थी बहुत अच्छे हैं क्यों कि हम मूर्ति पूजा नहीं करते और हमारे गुरु कबीर पुष्पों से उत्पन्न हुए तथा उनमें ही लीन हुये तथा वेद शास्त्र भी जिस बात को स्पष्ट नहीं कर सके वह सत्य नाम का ज्ञान हमको कबीर जी महाराज से हुआ इत्यादि। पं० जी ने हंस कर उत्तर दिया कि भाई साहिब यह तुम्हारी मूर्ति पूजा न करना तो ठीक है परन्तु तुम लोग कबीर जी की अन्य वस्तुएं यथा पलंग, तकिया, खड़ाऊं, आदि को पूजते हो यह भी वैसी ही मूर्ति पूजा ही है। और जो आप फूलों से उत्पत्ति तथा लीनता मानते हो क्या वह कोई भंवरा था। उनकी जन्म की कथा तो और प्रकार से कही जाती है। कि कोई सद्य जन्म बालक नदी में फूलों की टोकरी में एक जुलाहे को मिल गया उसने उसका पालन पोषण किया वह विशेष पढ़े हुए नहीं थे इस लिये साधारण भाषा में कुछ कविता बनाई।

नानक जी महाराज

इतने में एक सिख भाई उठ कर खड़े हो गये और कहने लगे कि हमारे गुरु नानक देव जी महाराज तो एकेश्वर वादी, मूर्ति पूजा के विरोधी, सद् गृहस्थी तथा यवनों से हिन्दुओं को बचाने वाले रक्षक थे। हमारे गुरु मन्त्र में स्पष्ट ओम् की महिमा का वर्णन है। अतः वह तो अच्छे हैं। पंडित जी ने कहा कि गुरु नानक जी का आशय तो अच्छा था पर संस्कृत के विद्वान नहीं थे। अतः कहीं २ स्थान पर उनके बनाये हुए स्तोत्रों में संस्कृत व्याकरण के अनुसार अशुद्धियां हैं। और कहीं २ उन्होंने वेद के विरुद्ध तथा कई स्थानों पर स्तुति भी कर दी है ताकि सब प्रकार के लोगों में मान बढ़े। यथा वेद पढ़त ब्रह्मा मरे चारों वेद कहानि। साध की महिमा वेद न जाने नानक ब्रह्म ज्ञानी आप परमेश्वर। इस प्रकार वेदों को निन्दा की है जो उचित नहीं था यह वस्तुतः बात ऐसी थी यदि ऐसा न करते तो अपना पन्थ न चला सकते। और उनके स्वर्गवास होने पर उनके शिष्यों ने उनके विषय में बहुत कुछ बढ़ा चढ़ा कर बातें लिखी यथा उनके विवाह पर सोने चांदी हीरे मोती का कोई पारावार न था। यह सब चेलों का दोष ही था। उनके पीछे ९ गुरु हुए और दसवें गुरु श्री गुरुगोविन्द सिंह जी महाराज हुए। उन्होंने सब गुरुओं तथा अन्य कबीर आदि के रचित श्लोक सब मिलाकर एक ग्रंथ बनाया जिसको आज कल सिख "गुरू ग्रन्थ साहब" कहते हैं। गुरु गोविन्द सिंह जी ने उस समय अति बुद्धिमता तथा शूर वीरता से हिन्दु कौम की रक्षा की। उन्होंने अपने अनुयायियों के लिये पञ्च ककार का निर्माण किया। अर्थात् केश, कंगण (कड़ा) कच्छ, कंघा, कृपान। यह युद्ध के आयुध हैं। मूर्ति पूजा यद्यपि नहीं करते परन्तु ग्रन्थ साहिब को वैसे ही पूजते हैं। यह बहुत अच्छी बात हो यदि वह वेद मत के अनुसार चलें। (शेष आगामी मास)

आर्य विद्वानों के लिखे ३० ट्रैक्टों का संग्रह

मूल्य सजिल्द २) मात्र

१. मनुष्य बन
२. गायत्री माता
३. ईश्वर सिद्धि
४. आस्तिक ना० सम्वाद
५. पितृ श्राद्ध विचार
६. सुख का साधन
७. ईश्वरोपासना
८. कल्याणी बन
९. आर्यों का आदि देश
१०. धर्म और अधर्म
११. स्वामी श्रद्धानन्द
१२. तत्त्ववेत्ता दयानन्द
१३. पण्डित लेखराम
१४. सीता माता
१५. गो माता
१६. दयानन्द दिग्विजय
१७. चोटी का महत्त्व
१८. गुरु विरजानन्द
१९. मांस खाना छोड़ दो
२०. मर्यादा पुरुषोत्तम राम
२१. देश सुधार-होली
२२. मूर्ति पूजा विचार
२३. भक्ति के लाभ
२४. आर्यसमाज के उद्देश्य
२५. वेद माता
२६. श्रद्धा माना
२७. धरती माता
२८. धर्म की रक्षा करो
२९. वैदिक संध्या
३०. सत्संग भजन

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, देहली।

महर्षि दयानन्द का महान उपकार

[लेखक—वीरसिंह आर्य्य सुवाना जिला करनाल]

घोर निन्द्रा में सोए हुए देश की, बन के सेवक था वह जगा के गया।
अविद्या का जग से किया खात्मा, सद् विद्या में हम को लगा के गया॥
समझे बैठे थे ईश्वर को पाषाण में, भ्रम दिल का यह सबके मिटा के गया।
प्रभु सर्वान्तर्यामी, निराकार है, स्तुति करनी उसी की सिखा के गया॥
श्राद्ध मृतिक पितरों का थे हम कर रहे, जीवितों की सेवा में उल्टा के गया।
बैठे थे आश्रय जो प्रारब्ध के, पुरुषार्थ का करना समझा के गया॥
फलित ज्योतिष को सच्ची थे माने हुए, निश्चय झूठा यह बिल्कुल भुला के गया।
था वशी भूत कर रखा इस देश को, जाल सारे मतों के जला के गया॥
हम तो जाति जन्म से थे सब मानते, वर्ण व्यवस्था कर्म से जिता के गया।
ब्राह्मणोस्य है अंकित यजुर्वेद में, अध्याय ३१ में हम को दर्शा के गयो॥
जिससे विधवाएं बढ़ती थीं इस देश में, उस बीमारी को भी वह हटा के गया।
अल्पायु में होती थी जो शादियां, इस कुरीति को जग से छुटा के गया॥
होता अपमान अबलाओं का दर बदर, उनका आदर पुनः कर करा के गया।
बनती कुटनी थी कितनी ही घर लक्ष्मी, देकर उपदेश देवी बना के गया॥
दुखिया गौओं का रोना सुना देव ने, गऊ पूजा की प्रथा चला के गया।
रक्षार्थ गोकरुणा निधि त्यार की, गऊ शाला रिवाड़ी खुला के गया॥
अनाथ रोते थे आर्य्यवर्त में अधिक, गोदी अपनी में उनको बिठा के गया।
अछूत दलितों को अहंकारी थे कह रहे, भेद भाव यहां से उठा के गया॥
मद्य आदि नशों में ग्रस्त हो रहै, सब विकारों से हम को बचा के गया।
परस्पर झगड़ते थे हम सब के सब, पाठ शान्ति व एकता पढ़ा के गया॥
ठगु ठगते थे निर्दयता से हमें, पाखण्ड उनका यहां से भगा के गया।
ठेकेदार जो थे बने धर्म के, कुरान उनकी की धज्जी उड़ा के गया॥
डरते मुर्दों से जीवित सभी थे यहाँ, जादू झाड़े का फंदा कटा के गया।
यही कारण था होती वृद्धि यवनों की, करके शुद्धि यह वृद्धि रुका के गया॥
भेष मृगराज का किये श्रृङ्गाल थे, उनकी भांति न बाण लजा के गया।
वेद ईश्वर की आज्ञा का पालन किया, और सत्यार्थ से ग्रन्थ को रचा के गया॥
दीन दुखिया थे कितने विधर्मी बने, उनके उपनयन और शिखा रखवाके गया।
वेद भानु से प्रकाशित किया जग सकल को, समाज रूपी तरु एक उगा के गया॥
विदेशियों का अधिकार था देश पर, उनके शासन की जड़ को हिला के गया।
सत्य पूछो तो ऋषि दयानन्द ही, इस भारत को स्वाधीनता दिला के गया॥
"आर्य्य,, कहता है हम ने ही विष दे दिया, वेद सुधा प्याली वह हम को पिला के गया।
और जाते जहां पर ऋषि महर्षि, वह योगी भी निकट उस पिता के गया॥

संस्कृति रक्षार्थ मैदान में आ जाओ !

बम्बई में घूमते २ हम भारत, पाकिस्तान, बर्मा और सीलोन आदि स्थानों के लिए बायबल प्रकाशन तथा प्रचार करने वाली संस्था की एक दुकान में गये।

वहां भारत की प्रायः सभी मुख्य भाषाओं में बायबल को अनुवादित पुस्तकें देखीं।

उनकी प्रचार पत्रिकायें देखीं।

उनकी साहित्य प्रकाशन की योजनायें देखी बायबल का व्यापक प्रचार कैसे हो उसका प्रसार कैसे किया जावे इत्यादि साधिकार किन किन साधनों का उपयोग किस प्रकार प्रकार किया जावे। यह सब योजनायें देखीं।

पांच, दस रुपये वार्षिक चन्दा देकर ईसाई बन्धु बायबल समिति के मेम्बर बनते हैं, अथवा सौ रुपये देकर आजीवन सदस्य बनते हैं।

इस दुकान में आकर्षक ट्रेक्ट, भिन्न भिन्न रूपरंग की सजिल्द बायबल पुस्तकें आदि देखकर कौन आकर्षिक हुए बिना रह सकता है।

आज गोरखपुर का गीता प्रेस पौराणिक साहित्यक पुस्तकें इसी उमंग और उत्साह से प्रकाशित कर रहा है।

अपने टंकारा में महर्षि का स्मारक स्थापित किया है

जनता की मांग है कि आज जब कि भौतिकवाद और नास्तिकवाद का प्रसार हो रहा है।

जब कि ईसाई मिशनरी लोग करोड़ों रुपये पानी की तरह बहाकर अपना साहित्य प्रकाशित कर प्रचार कर रहे हैं।

जब कि "सोलोमेन माइन्स" जैसी फिल्मों द्वारा ईसाइयत की श्रेष्ठता का प्रदर्शन कराकर ईसाई मत का प्रचार कर रहे हैं। ऐसे समय में वैदिक संस्कृति के हामी हम आर्य क्या कर रहे हैं ? जब कि 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का हमारा ध्येय है।

यह प्रश्न केवल योजना बनाने मात्र से हल नहीं हो सकती।

अब तो टंकारा से विश्व की समस्त भाषाओं में, वेदों के अनुवाद प्रकाशित करने का आयोजन करना होगा। ऐसी भावना प्रत्येक आर्य की बननी चाहिये, ऐसी हमारी प्रार्थना है।

जिस प्रकार बायबल समितियों को लाखों रुपयों को सहायता उनके अनुयायी देते हैं। उसी प्रकार वेदादि ग्रन्थ प्रकाशन के लिये प्रत्येक आर्य को एक मुश्त, मासिक, वार्षिक सहायता करके लाखों का फंड संग्रहित करना होगा।

टंकारा से वैदिक साहित्य के प्रकाशनार्थ शीघ्र से शीघ्र व्यवस्था करनी होगी। बड़े पैमाने पर करनी होगी।

आज अन्ध श्रद्धावादि जन अपने २ मन्दिर, मठों पर जैसे लाखों रुपये बहा रहे हैं। अन्ध-श्रद्धालुओं की धकमपेल हो रही है।

आर्य समाज ही वैदिक संस्कृति का रक्षक है वही रक्षा कर सकता है। वही ऋषि दयानन्द की कृपा से वैदिक साहित्य को शुद्ध रूप में संसार को दे सकता है।

हमारा ध्येय है कि हम टंकारा से वैदिक साहित्य को प्रकाशित कर घर घर पहुँचा देवें।

वैदिक संस्कृति के रक्षकों हमारे टंकारा यज्ञ में आहूति प्रदान करिये।

—आनन्द प्रिय पण्डित

दयानन्द ने

[स्नातिका—प्रभावती देवी आर्योपदेशिका]

घोर नींद के अन्दर सोता देश जगाया दयानन्द ने ।

जो मुख फाड़े हुये थे आर्य जाति के खा जाने को,
जो जी में लपलपा रहे थे कच्चा इसे चबा जाने को ।
उन अधर्मियों विधर्मियों से इसे बचाया दयानन्द ने ।
देश जगाया दयानन्द ने० ॥

बिछुड़ गये थे कभी किसी दिन हम से जो अपने ही भाई,
तज कर वैदिक धर्म बने थे परवश हो मुस्लिम ईसाई ।
उन्हें प्रेम से पुनः हृदय के साथ लगाया दयानन्द ने ।
देश जगाया दयानन्द ने० ॥

आंसू पोंछे विधवाओं के विधर्मियों से उन्हें बचाया,
उठा अनाथों और अछूतों को छाती से साथ लगाया ।
अभय दान दे सब को भय का भूत भगाया दयानन्द ने ।
देश जगाया दयानन्द ने० ॥

जगद्गुरु इस आर्य जाति ने फिर से अपने को पहचाना,
थे हम कौन ? हुए हैं क्या अब ? और बनेंगे क्या यह जाना ।
अपने भूले हुये रूप का ज्ञान कराया दयानन्द ने ।
देश जगाया दयानन्द ने० ॥

दम्भ पाप पाखण्ड अविद्या के गढ़ पर की गोलाबारी,
पा सत्यार्थ प्रकाश त्याग भ्रम आर्य बने लाखों नर नारी ।
निर्भय होकर जग में वैदिक नाद बजाया दयानन्द ने ।
देश जगाया दयानन्द ने० ॥

लाखों बुझे हुए दीपों में अपनी पावन शुभ्र ज्योति भर,
भारत की इस तमसावृत रजनी को फिर यों आलोकित कर ।
ठीक दिवाली को निज जीवन दीप बुझाया दयानन्द ने ।
देश जगाया दयानन्द ने० ॥

दुखदाई पैने शूलों को समझा फूल समान उन्होंने,
प्रसन्नता से हँसते २ स्वयम् किया विषपान उन्होंने ।
किन्तु हजारों लाखों को पीयूष पिलाया दयानन्द ने ।
देश जगाया दयानन्द ने० ॥

तज कर सब सुखसाज तपस्वी त्याग औ संन्यासी बन कर,
सह कर संकट कष्ट अनेकों और मृत्यु को आलिंगन कर ।
लाखों मृतकों को जीवन दे पुनः जिलाया दयानन्द ने ।
देश जगाया दयानन्द ने० ॥

महाविद्यालय स्वर्ण जयन्ती में पं० नेहरू का दीक्षान्त भाषण

१३ अप्रैल को नव स्नातकों को उपदेश देते हुए भारत के प्रधान मन्त्री श्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने प्राचीन और नवीन विचार धाराओं में समन्वय की प्रेरणा की।

धर्म क्या है और जीवन की दैनिक समस्या-के समाधान में उसका कैसे व्यावाहारिक उपयोग किया जाना चाहिये, यह शाश्वत प्रश्न है, और युग के अनुसार हमें इस प्रश्न का समाधान ढूंढना चाहिये। प्रत्येक युग का एक धर्म होता है, धर्म के मूल सिद्धान्तों पर दृढ़ रहते हुए भी देशों और जातियों को युग धर्म की खोज करते रहना चाहिये।

भारत के पास अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर थी और है, पर हम अति हीन हो गये हैं अतः हमारे पतन की कहानी आरम्भ हुई; हमारी कमजोरियों के कारण विदेशी आक्रान्ता हम पर हावी हो सके। आज हमनें अंगड़ाई ली है, हम से युग को महान् आशायें हैं, यदि हम युग-धर्म के प्रश्नों का उत्तर न दे सके तो हम कभी प्रगति न कर सकेंगे। जो देश युग से सम्बद्ध न रहेंगे वे विनष्ट हो जायेंगे।

आज के युग में एक संघर्ष चल रहा है, कुछ प्राचीनता में ही सर्व सुख समझते हैं, वहां एक सामाजिक, सांसारिक संघर्ष से दूर भागने की भावना है। साथ ही दूसरी ओर विज्ञान के उपासक विज्ञान के ऐश्वर्य से पराभूत हैं, और चन्द्रलोक की चिन्ता में हैं पर मानवता और पृथ्वी को नष्ट करने में संलग्न हैं, क्योंकि कोई मूल सिद्धान्त उन्हें रोक नहीं पाता। आज मानवता को बचाने के लिये धर्म और विज्ञान, प्राचीन और नवीन के समन्वय की अत्यधिक आवश्यकता है। आशा है, महाविद्यालय के स्नातक इस भारतीय दृष्टिकोण का प्रसार अपने व्यावहारिक जीवन से करने में सफल हो सकेंगे। मैं उनके सफल जीवन की और महाविद्यालय की उन्नति की कामना करता हूँ।

श्रद्धानन्द बलिदान भवन के सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा का पत्र

चैत्र सम्वत् २०१६ के 'वेद प्रकाश" के टाइटल पर 'बलिदान भवन' को श्रद्धानन्द स्मारक बनाने शीर्षक से आपका नोट प्रकाशित हुआ है। इस नोट में आपने एक ऐसी बात लिखी है जिसका कोई आधार नहीं है और वह यह कि सभा बलिदान भवन को वेचने का विचार रखती है। भवन को बेचने का सभा का कभी विचार नहीं हुआ है! और न है। इस समाचार से जनता में बहुत भ्रम फैल सकता है। इसके अतिरिक्त यह समाचार सभा को प्रतिष्ठा के लिए भी घातक है ऐसी अवस्था में आप इस समाचार का खेद पूर्वक प्रतिवाद कर देवें अन्यथा आप के पास ऐसा कोई प्रमाण हो जिससे यह स्पष्ट होता हो कि सभा भवन को बेचना चाहती है तो वह यहां भेज देवें। नोट लिखने से पूर्व यदि आप सभा से निश्चित जानकारी प्राप्त कर लेते तो अच्छा होता।

सभा बलिदान भवन के कमरे को स्मारक का रूप ही दे रही है। कमरे के फर्श और जीने को ठीक कराने में लगभग ४०००) व्यय कर चुकी है. बलिदान में उपदेशकों का एक प्रशिक्षण केन्द्र लगने वाला है। सभा को स्वयं इस भवन की पवित्रता और महत्ता का ध्यान है।

आपके अन्य सुझाव ठीक हैं और वे वही सुझाव हैं जो सभा के समक्ष बहुत पूर्व से हैं।

भवदीय—रामगोपाल सभा मन्त्री

नोट—श्रद्धानन्द बलिदान भवन के सम्बन्ध में सभा भवन को बेचने के सम्बन्ध में तथा भवन को पवित्रता और महत्ता को ओर सभा अधिकारियों को ध्यान है न तदर्थ धन्यवाद

भवन को किराये पर चढ़ाना भी तो अनुचित है। —सम्पादक

आर्य साहित्य मण्डल लिमिटेड, अजमेर की कुछ

प्रसिद्ध पुस्तकें

चारों वेद सरल हिन्दी अनुवाद सहित—सम्पूर्ण १३ जिल्दों में, मूल्य ११२) रुपये उत्तम छपाई, बम्बई निर्णय सागर टाइप, सफेद चिकना कागज, डबल क्राउन १६ पेजी के सुलभ आकार में।

सामवेद १ जिल्द, ८) रु०, अथर्ववेद ४ जिल्द ३२) रु०, यजुर्वेद २ जिल्द १६) रु०, ऋग्वेद ७ जिल्द ५६) रु०, प्रत्येक जिल्द पूरे कपड़े की बन्धी हुई सुनहरी अक्षरों सहित है।

(१) **महर्षि जीवन चरित्र**—श्री बाबू देवेन्द्रनाथ जी मुखोपाध्याय द्वारा संग्रहित व श्री पं० घासीराम जी एम० ए० एल० मेरठ द्वारा अनुदित, दोनों भाग सजिल्द अनेकों घटनापूर्ण चित्रों से युक्त, कवर पर महर्षि का तिरंगा चित्र आर्ट पेपर पर। मूल्य ६) रु० प्रति भाग, दोनों भाग १२) रु०

(२) **क्या वेद में इतिहास है ?**—लेखक पण्डित जयदेव जी शर्मा विद्यालंकार। इस विषय पर युक्ति एवं खोजपूर्ण प्रामाणिक ग्रन्थ अभी तक नहीं था। उसी विषय की महान् पूर्ति को विद्वान लेखक ने पूर्ण किया है। मूल्य २॥) रु०

(३) **कर्ममीमांसा**—लेखक आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री। इस पुस्तक में नीति के मूल तत्व, आपद्धर्म कर्त्तव्य और अधिकार, नीति और विधान, नीति और सौन्दर्यभूति, कर्म-विपाक भाग्य और पुरुषार्थ आदि पर मौलिक तथा सारगर्भित सामग्री नवीन तथा संशोधित संस्करण। मूल्य ३।)

(४) **सन्मार्ग दर्शन**—ले० स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज। लेखक की हिन्दी में लिखी हुई यही एक मात्र पुस्तक है, शेष सभी पुस्तक उनके व्याख्यानों तथा उपदेशों के संग्रह मात्र हैं, बुक-साइज ६०० पृष्ठ, सजिल्द मूल्य केवल ४) रु०

(५) **वेदांग-प्रकाश के शुद्ध संस्करण**—संधि विषय १), आख्यातिक ४), धातुपाठ ॥=), वर्णोच्चारण शिक्षा ≡), नामिक ॥।), सौवर ।=), पारिभाषिक ॥।), गणपाठ ॥=), अव्ययार्थ ।), कारकीय ॥=), सामासिक ॥=), उणादिकोष आदि अन्य भाग भी छप रहे हैं।

(६) **दयानन्द वाणी**—ले० रमेशचन्द्र शास्त्री, भूमिका लेखक पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज। इस पुस्तक में लेखक ने महर्षि के वचनों व उपदेशों को उत्तमोत्तम ढंग से संग्रहित किया है। टाइप बड़ा, कवर दो रंगों का, पृष्ठ संख्या २४०, मूल्य केवल ॥)

(७) **दयानन्द वचनामृत**—ले० महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती। सुललित भाषा में, महर्षि के जीवन की अद्‌भुत झांकी तथा उनके सुन्दर वचनों के संग्रह के साथ २ कवर पर सुन्दर तिरंगा चित्र मूल्य ।=)

भारतवर्षीय आर्य विद्या परिषद की विद्या रत्न, विद्या विशारद, विद्या वाचस्पति आदि परीक्षायें हमारे मण्डल के तत्वावधान में प्रतिवर्ष होतीं हैं। इन परीक्षाओं की समस्त पुस्तकें अन्य पुस्तक विक्रेताओं के अतिरिक्त हमारे यहाँ से भी मिलती हैं।

प्रकाशक—**आर्य साहित्य मण्डल लिमिटेड, अजमेर**

वेद व अन्य आर्ष ग्रन्थों का सूचीपत्र तथा परीक्षाओं की पाठ्यविधि मुफ्त मंगायें।

नवदम्पति को भेंट देने योग्य अनुपम

उपहार

भारतीय स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण व चिरस्थायी बनाने के लिये आज भारत को कर्मवीर, बुद्धिमान् व शौर्य-सम्पन्न युवकों की आवश्यकता है। उस आवश्यकता की पूर्ति आपके हाथों में है।

क्या आप चाहते हैं कि आपकी सन्तान समाज में सम्मान प्राप्त करे यदि हां ! तो उसके लिए प्रयत्न करना आपका कर्त्तव्य है।

किस प्रकार?

यह जानने तथा अनेक कर्त्तव्य से परिचित होने के लिए

इच्छानुसार संतानोत्पत्ति

यह पुस्तक मँगा कर अवश्य पढ़िये । पुस्तक पढ़कर आप अनुभव करेंगे कि "पुत्र या पुत्री, धर्मात्मा या पापी, शासक या चोर, जितेन्द्रिय या व्यभिचारी, गौर या श्याम वर्ण की" सन्तान का निर्माण तथा बर्थ कन्ट्रोल अपने ही हाथों में है।

इसकी महत्ता पढ़ने से ही विदित होगी

सजिल्द मूल्य २॥) डाक व्यय पृथक—

लेखक:—

वीरेन्द्र गुप्त

प्राप्ति स्थान—**वीरेन्द्रनाथ अश्विनी कुमार**

प्रकाशन मँदिर, बाजार चौक, मुरादाबाद।

स्वाध्याय योग्य उत्तमोत्तम पुस्तकें

- बालमीकि रामायण ९)
- दयानन्द ग्रन्थ संग्रह ३॥)
- सृष्टि का इतिहास १॥)
- उपनिषद आर्यमुनि भाष्य ६)
- श्वेताश्वरोपनिषद १)
- प्रभुभक्ति (आनन्द स्वामी) १॥)
- प्रभुदर्शन ... २॥)
- तत्त्वज्ञान ... ३)
- आनन्द गायत्री कथा ॥=)
- एक ही रास्ता ॥।)
- भगवान शंकर दयानन्द ।=)॥
- सत्यनारायण व्रतकथा ॥=)
- मानव जीवन गाथा ॥=)
- वैदिक गृहस्थाश्रम ५)
- ऋषि-गाथा महाकाव्य ४)
- स्वाध्याय संग्रह (वेदानन्द) २)
- वेद परिचय ... ।=)
- महर्षि दयानन्द (प्रो० इन्द्र) २)
- आर्य समाज का इतिहास १।=)
- ओंकार निर्णय (शिवशंकर) १॥)
- वैदिक प्रार्थना १॥)
- सचित्र योगासन १॥)
- बहिनों की बातें (सिद्धगोपाल) १।)
- दर्शनानन्द ग्रंथ संग्रह पूर्वार्द्ध २॥)
- ,, ,, ,, उत्तर्द्धि २॥)
- दयानन्द चित्रावली २॥)
- भारतीय संस्कृति ॥)
- आर्षयोग प्रदीपिका ३॥)
- कर्तव्य दर्पण (ना० स्वामी) १।)
- वैदिक संध्या रहस्य ।≡)
- आर्य समाज क्या है ? ॥)
- संध्या, हवन प्रदीपिका ॥)
- सन्ध्याविनय ॥)
- प्रार्थना प्रदीप ॥)
- संस्कार विधि विमर्श ३)
- स्त्रियों का स्वास्थ्य और रोग ३)
- विवाह और विवाहित जीवन २॥)
- घर गृहस्थी ३॥)
- आर्य सिद्धान्त दीप १।)
- गीत श्रद्धांजलि (भजन) १।)
- सत्यहरिश्चन्द्र नाटक १।)
- यज्ञोपवीत मीमांसा ॥)
- आदर्श सुधारक दयानन्द ॥=)
- गृहस्थाश्रम (दयानन्द) ॥=)
- बाल शिक्षक ,, ।=)
- आत्म कथा ऋषि दयानन्द ,, ।=)
- आर्याभिविनय ,, ॥)
- वेद विरुद्धमत खण्डन ।=)
- शिक्षा पत्री ध्वान्ति निवारण ।=)
- भ्रान्ति निवारण (दयानन्द) ।=)
- भ्रमोच्छेदन ,, ।)
- हुगली शास्त्रार्थ ,, ।)
- वेदों का महत्व (दर्शनानन्द) ।)
- ईश्वर प्राप्ति ,, ≡)
- ईश्वर विचार ,, =)
- जीवात्मा ,, =)
- वेदों की आवश्यकता ,, -)
- वेद किस पर प्रकट हुए ,, -)
- बाल शिक्षा, धर्म शिक्षा ,, ≡)
- वर्ण व्यवस्था (दर्शनानन्द) -)
- पितृ श्राद्धविचार ,, -)
- दयानन्द का उद्देश्य ,, -)
- ,, ,, लक्ष्य ,, -)
- सत्यार्थ प्रकाश शंका समाधान ।)
- स्वामी दयानन्द और वेद ।)
- भक्ष्याभक्ष्य विचार ≡)
- वैदिक धर्म शिक्षा ≡)
- आर्य सत्संग गुटका ।-)
- विश्व विज्ञान परमात्म बोध ≡)
- अखण्ड भारत (चन्द्र गुप्त) ॥)
- मांस मदिरा का निषेध ≡)
- गायत्री व्याख्या ।)
- गीता वचनामृत ।=)
- गोरक्षा परम कर्त्तव्य ॥)
- स्वास्थ्य विज्ञान ।-)

चित्र चित्र चित्र

धार्मिक मंत्रों के चित्र साईज- १४॥×२२

- सन्ध्या मन्त्र ।-)
- प्रार्थना के ८ मंत्र अर्थ सहित ।-)
- आर्य समाज के नियम ।-)
- जीवन मृत्यु के प्रश्न ।-)
- यम नियम व्याख्या सहित ।-)
- संगठन सुक्त ।-)
- मन्त्रों के चित्र ११×१४ ॥)
- ऋग्वेद का प्रथम मन्त्र ≡)
- यजुर्वेद का प्रथम ,, ≡)
- सामवेद का प्रथम ,, ≡)
- अथर्ववेद का प्रथम ,, ≡)
- दीर्घ जीवन की प्रार्थना ≡)
- धर्मचर, सत्यंवद ≡)
- मंत्रों के चित्र छोटे ७।×५॥ -)॥

ओ३म्, नमस्ते, स्वागतम, विश्वानिदेव सहनाववतु, धृतिक्षमा, नमः शम्भवायच, त्वमे माता च पिता, नैनंछिन्दति अहिंसा परमो धर्म, आदि आदि ।

महाभारतम् संस्कृत के विद्यार्थियों के लिये श्री आचार्य राजेन्द्र शास्त्री उपाध्यक्ष दयानन्द वेदविद्यालय देहली द्वारा रचित केवल संस्कृत गद्य में मंगाकर संस्कृत में वार्तालाप करना सीखें । मूल्य सजिल्द का ३) रु०

गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, देहली ।

गोविन्दराम हासानन्द सम्पादक तथा मुद्रक ने जैय्यद प्रेस में छपवाकर
वेदप्रकाश कार्यालय नई सड़क देहली से प्रकाशित किया ।

❀ ओ३म् ❀

वेद प्रकाश

★ आगामी वर्ष का विशेषाँक ★

आगामी वर्ष के लिए बहुत ही उपयोगी सब के लिए शिक्षाप्रद पुस्तक

महर्षि दयानन्द के पूर्व का भारत

आर्य जगत के माननीय नेता तथा विद्वान लेखक स्व० श्री राजरत्न आत्माराम जी अमृतसरी की लिखी हुई यह पुस्तक खोजपूर्ण एवं ज्ञातव्य है। वेदप्रकाश को इस बात का गौरव है कि आर्य समाज के गौरवकाल की पुस्तकें यह अपने पाठकों को समय समय पर देता रहता है। उसी शृङ्खला की प्रस्तुत पुस्तक एक कड़ी बन गई है।

इस पुस्तक में लेखक ने महर्षि के पूर्व के भारत के इतिहास को दो भागों में विभक्त किया है वैदिक और अवैदिक। जब तक भारतीय वेदों, उपनिषदों तथा दर्शन शास्त्रों के आधार पर अपना जीवन व्यतीत करते रहे उस समय तक वैदिक काल चला। जहां इनमें गिरावट आई उसी समय से अवैदिक काल आरम्भ हो गया। इस इतिहास में वेदों में क्या २ ज्ञान है उसका विस्तार से वर्णन है। इस पुस्तक में ऋषि के आगमन के पूर्व जो भारत की अवस्था थी उसका दृश्य आँखों के सामने चित्र के समान आ जाता। इससे अनेक अर्वाचीन तथा तत्कालीन धार्मिक सामाजिक व राजनैतिक अवस्था का ज्ञान होगा विद्वान्, उपदेशक तथा सभी जिज्ञासु पाठकों के काम की पुस्तक है।

बड़े साइज के १५० पृष्ठों में यह पुस्तक पूरी होगी। बड़े साइज की १५० पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल १॥) है। इस पर भी वेद प्रकाश के ग्राहकों को केवल ॥।) में मिलेगी। यह अङ्क श्रावणी पर्व पर (अगस्त में) प्रकाशित होगा। इसी महीने से वेदप्रकाश का ८ वां वर्ष आरम्भ होगा। अपना वार्षिक मूल्य २॥) तथा ॥।) विशेषांक के मिला कर ३।) आज ही भेज कर विशेषांक सुरक्षित करालें। विशेषांक सीमित संख्या में छापा जा रहा है। बाद में कहीं निराश न होना पड़े।

आर्य बन्धु 'वेदप्रकाश' के ग्राहक बने तथा अधिक से अधिक अपने मित्रों को ग्राहक बना कर सहयोग प्रदान करें।

निवेदक—

—गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, देहली।

महर्षि दयानन्द स्मारक एक स्वप्न

वर्षों से महर्षि का टंकारा एक स्वप्न बना रहा। विशेष करके ८ वर्ष पूर्व से जब कि सेठ नान जी भाई कालीदास ने १।। लाख रुपये इस कार्य के लिये दान की घोषणा इस शर्त पर की कि २ लाख रुपये आर्य जगत् कार्य संचालन के लिये एकत्रित करे, किन्तु आर्य नेताओं की विशेषकर सार्वदेशिक सभा के कार्यकर्त्ताओं की उदासीनता से रुपये एकत्रित न हो सके। फिर भी—

गत जनवरी १९५९ में टंकारा स्थित मोरबी नरेश का राज्यप्रासाद सेठ जी के १।। लाख के दान से ही खरीद कर शिवरात्रि के शुभदिवस पर लोक सभा के अध्यक्ष श्री अनन्त शयनम् आयंगर के कर कमलों से उद्घाटन कर प्राणप्रतिष्ठा की गई।

मैं भी एक स्वप्न लेकर उद्घाटन महोत्सव को सफल पूर्वक देखने के लिए २ मास पूर्व देहली से टंकारा चला गया था। उद्घाटन तो सफलतापूर्वक समाप्त हुआ। उत्सव के समय ऋषि दयानन्द कृत तथा अन्य आर्य ग्रन्थों की प्रदर्शनी की योजना, कार्यकर्त्ताओं की व्यस्तता के कारण प्रदर्शनी नहीं लग सकी, यद्यपि ग्रन्थ टंकारा पहुँच गये थे।

अब मैं पुनः टकारा दो योजनायें आरम्भ कराने के विचार से पहूंच गया हूँ, एक वैदिक साहित्य का प्रकाशन दूसरा गोसदन का कार्य कराने के लिए। ईश्वर मेरे यह दोनों स्वप्न पूरा करायेगा।

—गोविन्दराम हासानन्द

आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा

आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा का नवीन सत्र जून ता० १६ से आरम्भ होता है। नया प्रवेश ता० १६ जून से ३० जून तक चालू रहेगा। कन्याओं को प्रविष्ट कराने के लिए प्रवेश पत्र मंगा लें और शीघ्र ही स्वीकृति प्राप्ति करलें।

प्रवेश शुल्क ६०) रु०, मासिक शुल्क ४०) रुपये लिया जाता है।

निवेदिका —यशोदाकुमारी आचार्या।

महात्मा आनन्द स्वामी जी की धर्म अर्थ काम मोक्ष प्रदायक

॥ पुस्तकें ॥

प्रभुदर्शन...	२।)
तत्वज्ञान...	३)
प्रभुभक्ति...	२।।)
आनन्द गायत्री कथा... ...	।।=)
एक ही रास्ता...	।।।)
भगवान शंकर—दयानन्द... ...	।=)।।
आनन्द भगवत कथा अर्थात् सत्य नारायण व्रत कथा... ...	।।=)
मानव जीवन गाथा (महात्मा जी की नई पुस्तक)	१)

आर्ष योग प्रदीप

लेखक—श्री स्वामी ब्रह्ममुनि जी

स्वामी वेदानन्द जी की सम्मति

स्वामा ब्रह्ममुनि जी स्वयं एक विद्वान अभ्यासी हैं। इससे उनके प्रस्तुत ग्रन्थ की उपयोगिता समझी जा सकती है। स्वामी जी ने इस ग्रन्थ में महर्षि पतंजलि जी के योग सुत्रों का अर्थ और उनकी व्याख्या के साथ सुत्रों पर सर्व सम्मत प्रमाणिक व्यासकृत भाष्य का भाषानुवाद दे दिया है। इससे पूर्व यद्यपि व्यासभाष्य का एकाध भाषानुवाद प्रकाशित हो चुका है पर उसमें सूत्रव्याख्या की उपेक्षा को गई है स्वामी जी को सुत्रव्याख्या भाष्यार्थ समझने में अच्छी सहायता देती है। यह अनुवाद की एक विशिष्ठ विशेषता है। भाष्य का अनुवाद भी कई विशेषताओं से युक्त है जो पाठकों को प्रतीत होगी। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३।।)

मिलने का पताः—गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, देहली।

★ वेद प्रकाश ★

सम्पादक—गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष—७ : जेष्ठ २०१६ जून १९५९ : वार्षिक मूल्य २।।)
अंक—११ : दयानन्दाब्द १३६ जेष्ठ १८८० शाके : विदेशों से ५ शि०

॥ वेदसुधा ॥

प्रियं श्रद्धे ददतः प्रियं श्रद्धे
दिदासतः । प्रियं भोजेषु यज्व-
स्विदं म उदितं कृधि ॥२॥४५२॥

पदानि—प्रियं । श्रद्धे । ददतः । प्रियं । श्रद्धे । दिदासतः । प्रियं । भोजेषु । यज्वऽसु । इदं । मे । उदितं । कृधि ॥२॥

अन्वयः—हे श्रद्धे ! ददतः प्रियं, हे श्रद्धे ! दिदासतः प्रियम् । भोजेषु यज्वसु प्रियम् । मे इदं उदितं कृधि ॥

अर्थः—हे श्रद्धे ! (ददतः) दान देने वाले का (प्रियं) प्रिय कर । हे श्रद्धे ! (दिदासतः) दान देने की इच्छा वाले का प्रिय कर । (भोजेषु) भोजन कराने वाले और (यज्वसु) यज्ञ करने वालों का भी प्रिय कर और (मे) मेरा (इदं) यह (उदितं कृधि) कहा हुआ सफल कर ।

★

बुद्धि प्रखर कैसे हो ?

[लेखक—प्रि० नित्यानन्द वेदालंकार एस० ए०, महिला कालेज, पोरबन्दर]

मानव का शृंगार बुद्धि है ।
बुद्धि का सदुपयोग देवत्व है, दुरुपयोग पशुता है ।
बुद्धि का दुरुपयोग ही बुद्धि—नाश है ।
बुद्धि—नाश ही असली नाश या आत्म—नाश है ।
आत्मा का नाश सम्भव ही नहीं, वह अमर है ।
शरीर का नाश कोई नाश नहीं, वह मरण-धर्मा है ।
मनुष्य स्वर्ग रचे या नरक में पड़े, वह स्वतन्त्र है ।

(१)

आचार्य चाणक्य की आकांक्षा है—

ये याताः किमपि प्रधार्य हृदये पूर्वं गता एव ते
ये तिष्ठन्ति भवन्तु तेऽपि गमने कामं प्रकामोद्यताः।
एका केवलमर्थसाधनविधौ सेना शतेभ्योऽधिका
नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्यमहिमा बुद्धिस्तु मा गान्मम ॥

मुद्राराक्षस—१. २७.

किसी अभिलाषा के कारण जो मेरे साथी संगी चले गये, वे तो चले ही गये, जो बचे हैं, वे भी भले ही साथ छोड़ कर जाने को उद्यत हो जावें । अपने लक्ष्य सिद्ध करने में सैंकड़ों सेनाओं से भी अधिक सामर्थ्यवती केवल मेरी बुद्धि, [illegible] महिमा नन्द-वंश के उन्मूलन से प्रत्यक्ष [illegible] हो चुकी है, मुझे छोड़कर न जावे ।'

[illegible] चाणक्य के उपर्युक्त वचन से बुद्धि [illegible] भली भांति समझा जा सकता है । यदि बुद्धि [illegible] समृद्ध प्राप्त की जा सकती है, साम्राज्य फिर से स्थापित किया जा सकता है, स्वर्ग और मोक्ष सिद्ध किये जा सकते हैं। बुद्धि गई तो धर्म गया' तेज गया, शौर्य गया, ऐश्वर्य गया; सदाचार गया, सर्वस्व गया । बुद्धि ही मनुष्य का सार है, शृङ्गार है, सर्वस्व है ।

बुद्धि के चले जाने का अर्थ क्या ? धन, सम्पत्ति आदि आज हमारे पास हैं, कल वे हमें छोड़ कर किसी दूसरे के पास चले जाते हैं। परवेश्वर की कृपा है, बुद्धि को उन्होंने ऐसा चंचल नहीं बनाया । वह हमें परित्याग कर किसी दूसरे का आलिङ्गन करने जाती हो, ऐसी निर्मम नहीं है । ऐसी अवस्था में बुद्धि के जाने का अर्थ है उसका अपने कार्य को ठीक प्रकार से करने में असमर्थ हो जाना ।

बुद्धि का कार्य है निर्भ्रान्त रूप से निर्णय करना । वस्तु के स्वरूप को भली भांति परखना दोनों ओर की दलीलों के बलाबल को बराबर समझना, योग्यायोग्य का विचार करना, उलझन सुलझाना, सब परिस्थिति को लक्ष में लेकर अपू

निर्णय देना, मार्गभ्रष्ट होते हुए को ठीक ठीक मार्गदर्शन करना। भगवान् कृष्ण ने बुद्धि के कार्यों का निम्न रूप से निर्देश किया है:—

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये।
बन्धं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी॥
गीता १८–३०

"प्रवृत्ति, निवृत्ति, कार्य अकार्य, भय अभय, बन्ध मोक्ष का भेद जो बुद्धि उचित रीति से जानती है वह सात्त्विक बुद्धि है।"

जो बुद्धि धर्म अधर्म का, कर्तव्य अकर्तव्य का योग्य अयोग्य का यथावत् निर्णय नहीं कर पाती, वह शिथिल-प्रभ है। अंधकाराच्छादित जो बुद्धि अधर्म को धर्म और अयोग्य को योग्य समझती है वह मूर्छित है, हतप्रभ है या तामस है। ऐसी बुद्धि है तो क्या, और नहीं हैं तो क्या?

बुद्धि क्यों जाती रहती है? वह मूर्छित क्यों हो जाती है? उसकी प्रखरता कुण्ठित क्यों हो जाती है? अपने कर्तव्य कर्म करने में वह असमर्थ क्यों हो जाती है? इन प्रश्नों का उत्तर भगवान् कृष्ण ने निम्न शब्दों में दिया है:—

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि।
गीता २—६७

"विषयों में भटकने वाली इन्द्रियों के पीछे जिसका मन दौड़ता है, उसका मन जैसे वायु नौका को जल में खींच ले जाती है, वैसे ही उस की बुद्धि को जहाँ चाहे खींच ले जाता है।"

इन्द्रियां और बुद्धि के बीच में मन है। जब मन, मनमाने रूप से विषयों में भटकने वाली इन्द्रियों के पीछे चलने लगता है तो फिर बुद्धि सही सलामत नहीं रह पाती है। वह असहाय और अकेली पड़ जाती है। इन्द्रियां और मन मिलकर प्रबल और प्रचंड हो जाते हैं। वे ऐसा बवण्डर खड़ा करते हैं कि बुद्धि विचारी भौंचक रह जाती है। उसकी आंखों में धूल भर जाती हैं। उसे सही मार्ग सूझता ही नहीं। अपने कर्तव्य करने में वह असमर्थ हो जाती है। मन उसे फुसलाने लगता है। विवश बनी वह उसके इशारों पर नाचने लगती है। कुतर्क करती है, उलटे सुलटे मार्ग सुझाती है। जीवन नौका पथ-भ्रष्ट हो जाती है। सब रंग ढंग बदलने लगता है, व्यवहार अयोग्य होने लगता है। मंजिल पर पहुंचना अब असम्भव हो जाता है।

इन्द्रियों के पीछे पीछे फिरने वाले मन के चक्कर में पड़ी बुद्धि विषयों के रस का विचार करने लगती है। इसे अधिक से अधिक मात्रा में कैसे प्राप्त किया जाय, भोग की अभिलाषा भी पूर्ण हो और समाज में प्रतिष्ठा भी बनी रहे, इन्हीं सब छलछन्दों के सोचने में बुद्धि विचारी व्यस्त हो जाती है। इस विषय-व्यवस्था के कारण अचूक निर्णय देने के अपने विशाल सामर्थ्य से वह वंचित हो जाती है। शैतान के चक्कर में पड़ी वह किस मुंह से परमेश्वर के पास पहुँचेगी? जो अपने सेवक की मीठी मीठी बातों मे आकर फिसल पड़ी वह अयोध्या पुरी के राजा से परिणय की आशा कैसे रख सकती है? धर्माधर्म का योग्य विचार करते हुये, दिन-प्रतिदिन सतेज और उज्जवल बनते हुए जो बुद्धि आत्मा के समीप पहुँच सकती थीं, वह जाने किस उधेड़बुन में उलझ गई।

सरल शब्दों में विषयों के वात्याचक्र में पड़ा मन बुद्धि को हर लेता है। इन्द्रियों के विषयों में स्वच्छन्द विचरण से विषयों का ध्यान और चिन्तन होने लगता है। उससे मन में विविध विषयों को प्राप्त करने की इच्छा (काम) राग

द्वेष आदि उत्पन्न होते हैं। राग-द्वेष अपने साथ तृष्णा, लोभ, स्वार्थ, क्रोध, मोह, मद आदि विकारों को बुला लेते हैं। एक दूसरे की सहायता पाकर रागद्वेषादि विकार खूब प्रबल और प्रचण्ड हो जाते हैं। प्रगाढ़ बने विकारों, वृत्तियों और विकल्पनाओं के रंग बुद्धि पर चढ़ने लगते हैं। द्वेष का रंग बुद्धि चढ़ने से बुद्धि द्वेष-बुद्धि हो जाती है, स्वार्थ का रंग चढ़ जाने से स्वार्थ-बुद्धि। अनेक प्रकार के विकारों से रंगी बुद्धि वस्तु के स्वरूप को अपने रंग में रंगकर ही देखती है। इससे वह वस्तु के अपने रूप को ठीक देख ही नहीं पाती। अचूक निर्णय वह क्या दे सकेगी ?

जो बुद्धि तटस्थ रहती है, जिस पर विकारों और विकल्पनाओं का रंग नहीं चढ़ता, वही वस्तुओं का यथायोग्य विवेचन कर सकती है और ठीक ठीक मार्गदर्शन के अपने काम में समर्थ होती है।

'मनसस्तु परा बुद्धिः'। गीता३—४२

बुद्धि का तो मन पर राज्य होना चाहिए था। हाथ जोड़कर बुद्धि की सेवा में मन को हाजिर रहना चाहिए था, परन्तु यह सब उलट कैसे हो गया ? मन इतना महाबली और मनोरम कैसे हो गया कि बुद्धि उसकी दासी बन गई ?

इन्द्रियों के साथ मिलकर ही मन बलवान् हो जाता है। अपने आप में वह बुद्धि से बलवान् कहां है ? विषयों में स्वतन्त्र विचरण करने वाली इन्द्रियां ही मन में राग, द्वेष, काम, क्रोध आदि विकारों को उभाड़ती हैं। नित्य प्रति रसीले और स्वादिष्ट पकवान लाकर ये ही इन्हें पालती पोषती और पुष्ट करती हैं। इन्हीं की प्रेमपूर्ण परिचर्या से रागद्वेषादि विकार एक दिन विशालकाय, व्यूढोरस्क और वृषस्कन्ध हो जाते हैं। सालवृक्ष जैसे विशाल रूपधारी इन विकारों के सामने बुद्धि सहम जाती है। वह लाचार हो जाती है, इनके पीछे चलने को रजामन्द हो जाती है, उनकी अशुभ वासनाओं को तृप्त करने को भी विवश होती है। प्रौढ़ उमर के और विकराल रूप धारण कर गये इन विचारों से मन कितना बलिष्ठ हो जाता है यह आसानी से समझा जा सकता है।

वस्तुतः मन इन विकारों से अलग कोई वस्तु नहीं। संकल्प, विकल्प, विकार और वासनाओं के गट्ठड़ का नाम ही मन है। विकार और कामनाएं प्रचण्ड हैं तो फिर मन के क्या पूछने ? वह ऐंठने और इतराने लगता है। बुद्धि के निर्णय के अनुसार अमल करने की अपनी मर्यादा का उल्लंघन करता है। बुद्धि के निर्णय करने के कार्य में दखल देने लगता है। परिणामतः गड़बड़ होती है। बुद्धि सारासार विचार में और योग्य निर्णय में असमर्थ हो जाती है। जज के सामने सोने चांदी का ढेर लगा दिया जाय तो वह कब तक बच बच कर चलेगा ? रूपहली और सुनहली चमक से आंखें चुंधियायेंगी। चकाचौंध से भरी आंखें क्या देख सकती हैं ? जज का न्याय और निर्णय अब क्या होगा, यह समझना क्या कठिन है ?

ऊपर के विवेचन से यह स्पष्ट है कि बुद्धि तटस्थ रहकर हिताहित का अचूक निर्णय कर सके, इसके लिए यह आवश्यक है कि वह राग, द्वेष, स्वार्थ, आसक्ति, आग्रह आदि मनोविकारों से आच्छन्न और आविष्ट न हो। राग-द्वेषादि प्रबल और प्रचण्ड होंगे तो बुद्धि आच्छन्न होगी ही। अतः बुद्धि को तटस्थ और स्वकार्य-समर्थ रखने के लिये यह सिद्ध हुआ कि राग द्वेष को क्षीण किया जाय। इनके क्षीण होने पर ही मन बुद्धि का अनुसरण करने लगता है।

बुद्धि के अनुसरण का अर्थ है कि मन अंडबण्ड कामनाएं न सेवे। बुद्धि जिस कामना को अयोग्य कहे, उसे बिना चू चपड़ किये छोड़ दे और जिसे वह योग्य कहे, उसे पूर्ण करने के प्रयत्न में संपूर्ण शक्ति से तत्पर हो जाय। अयोध्या नगरी में राज्य बुद्धि का रहे। कानून बुद्धि पास करे, मन उनका उत्साह और प्रीति से पालन करे तथा इन्द्रियां आदि शेष प्रजा से यथावत् पालन करावे। यदि यह हो सके तो अयोध्या स्वर्गपुरी या देहपुरी बन सकेगी।

—:o:—

(२)

मुख्य प्रश्न यही है कि राग-द्वेष क्षीण कैसे किये जाय? मनुष्य के सब से बड़े दुश्मन यही हैं—

इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ।
तयो र्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ॥
गीता ३—३४

हमारी इन्द्रियां हर समय यह चाहिये, वह चाहिए करती हुई विषयों के पीछे दौड़ती हैं। जो चाहिये उसके प्रति द्वेष मन में उत्पन्न हो जाता है। धीमे धीमे राग, द्वेष बढ़ने लगते हैं और संपूर्ण मन पर छा जाते हैं। श्रेयार्थी प्रबल शत्रुरूप इन राग-द्वेष के चक्कर में न पड़े।

यह कहना चाहिये कि राग-द्वेष आदि मनोविकारों को मार डालना संभव ही नहीं है। राग-द्वेष आदि मनोविकार मनुष्य के स्वभाव के अंग हैं। स्वभाव का उच्छेद कैसे हो सकता है? फिर राग-द्वेष छोड़कर मनुष्य रहता ही क्या है? भावना-शून्य मनुष्य और पत्थर में विशेष अंतर ही क्या है? इसलिये राग-द्वेष को नष्ट करने के धर्मध्वजियों के सब उपदेश पाखण्ड हैं। वे लाख चिल्लावें, कितना ही गला फाड़ें, जब तक दुनियां हैं राग-द्वेष तो रहेंगे ही।

फिर क्रिया-प्रवर्तक तो राग-द्वेष आदि भाव या मनोविकार ही हैं कानून पास कर देने मात्र से उसका अमल नहीं हो जाता। कानून अच्छा है, बुद्धि सम्मत है इस ज्ञान मात्र से क्रिया में कौन प्रवृत्त होता है? क्रिया प्रवृत्त होने के लिये मन में कुछ वेग आना आवश्यक है। कानून की किसी बात से अथवा उसके पालन के परिणाम स्वरूप मिलने वाले किसी फल से उल्लास, हर्ष, प्रीति, रुचि, राग, उत्साह आदि की भावनाएं उमड़नी चाहियें। इन भावनाओं द्वारा जब मन में वेग आता है तभी बुद्धि के कानून का उत्साह और उमंग से परिपालन होता है। इससे यह स्पष्ट है कि राग-द्वेष आदि भावनाओं को मार डालने के सब उपदेश न केवल अस्वाभाविक ही हैं परन्तु सर्वथा अयोग्य भी है।

देश के प्रति राग, सत्य के प्रति आग्रह, धर्म के प्रति प्रीति, कर्तव्य के प्रति आस्था, कला के प्रति प्रेम, महापुरुषों के प्रति श्रद्धा, पिता माता के प्रति भक्ति, अधर्म के प्रति द्वेष, गन्दगी के प्रति घृणा, पाप से नफरत आदि भी राग-द्वेष के ही विभिन्न रूप हैं। बुद्धि के आदेश के अनुसार ये आबद्ध किये गये हैं। इनका विरोध कौन कर सकता है? कहने का तात्पर्य इतना ही है कि राग-द्वेष आदि का परिमार्जन और परिष्कार करना जरूरी है। वे अस्थान पर न हों, बुद्धि नियंत्रित हों; योग्य स्थान पर हों। राग-द्वेष क्षीण करने का यही अर्थ है। राग का अभाव जड़ता है। योग्य स्थान पर आबद्ध राग, शोभा है, भक्ति है, मानवता है, मुक्ति है।

राग-द्वेष आदि मनोविकार के परिष्कार में साहित्य के अध्ययन से बहुत सहायता मिल सकती है। श्रेष्ठ साहित्य का चरम लक्ष्य रोगों का परिष्कार ही है। परन्तु आध्यात्मिक चर्चा

के प्रसंग में यह चर्चा शायद विषयान्तर ही हो। भगवान् ने जिन साधनों की ओर संकेत किया है, हम उन्हीं का यहाँ उल्लेख करेंगे।

विषयों में इन्द्रियों के स्वच्छन्द और सतत भटकते रहने से उनके प्रति हमारे मन में राग, द्वेष, आसक्ति और आग्रह आदि दृढ़ हो गये हैं। इन्हें शिथिल करना है। इसके लिये कैसी सीधी और सरल युक्ति है—

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्यप्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥
गीता २—५८

कछुआ जहां खतरा मालूम होता है, अपने अंगों को समेट लेता है, उसी प्रकार अशुभ विषयों से अपनी इन्द्रियों को समेट लेना चाहिये। दुनिया में शुभाशुभ सभी कुछ है। जहां तक हो सके, कामोद्दीपक दृश्यों से, अश्लील उपन्यासों से नशीले द्रव्यों से, गन्दे गानों से, वैभव विलास से, बनाव ठनाव से, विलासी वीरांगनाओं से दूर ही रहना चाहिये। कोयले की कोठरी में जाते रहने से कालस न लगे यह कम ही संभव है। कीचड़ में पत्थर फेंकने से पास में खड़े हुओं के कपड़ों पर दाग न लगे यह कब संभव है। इसलिये सब आग्रह और अहंकार व्यर्थ है।

हम ईश्वर नहीं हैं। वह भला बुरा सब कुछ देखता है, फिर भी अनासक्त बने रहता है। उसी की यह सामर्थ्य है कि वह कांचनवर्णी कामिनी के अनावृत रूप को फिर फिर निहारे और राग शून्य बना रहे। मानव में यह शक्ति कहाँ? कबि शिरोमणि ने 'ज्ञातस्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः' में इसी बात का संकेत किया है। इसलिये दूर रहना ही ठीक है। यदि फिर भी सब कुछ देखने को हम हठ करेंगे तो आँखें फूट जावेंगी और सिर चकरा जावेगा। इसलिये विलास उभाड़ने वाली सब बातों से नम्रतापूर्वक दूर रहना ही सुरक्षित और श्रेयस्कर है। इस प्रकार अयोग्य स्थान पर बँधा राग शिथिल और क्षीण होने लगा।

हृदय में गुदगुदी उत्पन्न करने वाली बातों से इन्द्रियों को दूर रखना कोई कठिन बात नहीं है। वस्तुतः आग में हाथ न डालने जैसी नैसर्गिक बात है। फिर भी, यदि न देखने योग्य को देखने की खोटी आदत दृढ़ हो गई हो तो बुद्धि उसे सुदृढ़ संकल्प की सहायता लेकर दूर कर सकती है। बुद्धि का यह बड़ा समर्थ मित्र है।

"इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः"
गीता २-६०

सच है इन्द्रियां बड़ी हठीली हैं, वे मन को भी घसीट ले जाती हैं। परन्तु मनुष्य भी ऐसा कमजोर नहीं जैसा वह अपने को समझता है। भगवान् ने मनुष्य को बुद्धि के साथ दृढ़ संकल्प की अद्‌भुत शक्ति भी दी है। विवेक द्वारा संकल्प को जागृत कर वह जो चाहे सिद्ध कर सकता है। वह विद्वान् बन सकता है, विस्तृत वैभव प्राप्त कर सकता है, बड़ी से बड़ी विजय प्राप्त कर सकता है।

मनुष्य ने अपने दृढ़ संकल्प को जागृत कर के और तदनुकूल पुरुषार्थ द्वारा दुनियां में क्या कुछ सिद्ध नहीं किया है? कौन सी ऊंचाई है जहां वह चढ़ा नहीं है? कौन सी गहराई है जहां वह पैठा नहीं है? भौतिक और आध्यात्मिक सभी क्षेत्रों में उसकी सिद्धि अद्‌भुत और अनुपम है। फिर वह दीन हीन क्यों बने? प्रभु ने उसे पृथ्वी का शृङ्गार बनाया है।

"मनुष्य को आत्मा की अपनी शक्ति का भान नहीं है, इसी कारण वह मानता है कि इन्द्रियाँ वस में नही रहतीं, या मन नहीं रहता, बुद्धि

काम नहीं करती । आत्मा की शक्ति का विश्वास होते ही दूसरा सब आसान हो जाता ।"

अनासक्ति योग—गांधीजी

आरोग्य स्थान पर बंधे राग को शिथिल करने की यह बात हुई । यह निषेधात्मक साधना है । राग को कहीं समाश्रय भी मिलना चाहिए । नहीं तो इन्द्रियों को बलपूर्वक रोकने पर मन ही मन विषयों का सेवन होने लगता है, जो कम भयंकर नहीं है । बनी बनाई खेल इससे बिगड़ सकती है । इसी से निर्देश है :—

'तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः ।'

गीता २—६१

'युक्तिपूर्वक, विवेक और संकल्प के बल से, इन्द्रियों को अशुभ विषयों से रोक कर मनुष्य मत्परायण होकर रहे ।' राग को कहाँ स्थिर करना चाहिए इसी का यहां निर्देश है । भगवान् कृष्ण जैसे अवतारी पुरुषों के शील और चरित्र के श्रवण, मनन और अनुकरण में अनुरक्ति उत्पन्न करना उपयोगी है ।

अज्ञात, अनन्त और अरूप परमेश्वर की बात हम करने लगें तो यह किसे सुहायेगा ? धरती की बात छोड़, क्षितिज के उस पार की जब तब चर्चा करना बहुत बार दम्भ और पाखंड ही तो होता है । अज्ञेय और अनन्त की चर्चा साधु सन्तों के लिए छोड़ देना अधिक श्रेयस्कर है । हमारे लिए तो भगवान् कृष्ण की जाह्नवी जैसी पावन जीवन-गाथा ही बस है । उनकी बाल-क्रीड़ा में, गोचारण में, घोड़ों में खुद खुर्दा करने में, निश्छल प्रेम में, सुहृद्भाव में, शास्त्र-ज्ञान में, कला में, बुद्धि प्रखरता में, नम्रता में, नीतिनिपुणता में, मन को आकर्षित करने और रमाने की अनन्त सामग्री है । भगवान् की ही यह सब प्रत्यक्ष विभूति है ।

यदि मन यहाँ न रमे तो फिर अपने दैनिक व्यवसाय में, स्वधर्माचरण में, सच्छास्त्र में, काव्य में, संगीत में, ज्ञानार्जन में, अन्याय निवारण में, सद्वृत्तियों के विकास में, दुःखितों की सेवा सहायता में, मन को अधिकाधिक पिरोना उपयोगी है । राग के लिए बुद्धि-सम्मत यह विशाल क्षेत्र है । सद्गुणों और सत्कर्मों में वही एक झांकता है । यहां उससे मिलते जुलते रहना कितना आसान है । रोज मिलने-जुलने से परिचय और प्रेम हो ही जाता है । उससे अनुराग हो गया तो सब काम सिद्ध ही है ।

प्रकृति हमें चारों ओर से घेर कर खड़ी है । मनुष्य के समस्त सुख-दुःखों में यह अपना स्वर मिला रही है । ऋतु-ऋतु में यह नवीन उमंगों से उल्लसित होती है । प्राणों के कम्पन प्रदर्शित करती है । तरह-तरह की भाव-भंगियों, ध्वनियों और रूप-वैचित्र्य द्वारा हमें आकर्षित करती है, और उसकी ओर मौन परन्तु सशक्त संकेत भी करती है ।

नक्षत्रों भरे आसमान में बिखरे पड़े उसके वैभव का, हँसते फूलों में उसके सौन्दर्य का, उमड़-घुमड़ कर बहती नदियों में उसका करुणा का, हिमाच्छादित पर्वत शिखरों का, अतलस्पर्शी समुद्रों में उसकी गहराई का, पक्षियों के कलरव में उसके सुरीले स्वरों का, स्पर्श से पुलकित करने वाले पवन के झकोरों में उसके प्यार का सहृदय लोग दर्शन कर सकते हैं । यदि हम प्रकृति के पृष्ठों पर लिखी इस भाषा को न पढ़ सकें तो भी सौन्दर्य-भरे ये दृश्य नयनों और हृदय को कुछ कम तृप्त करने वाले नहीं हैं । मन यहां खूब रम सकता है ।

जरा दृष्टि बदलने की जरूरत है । पहले थोड़ा परिश्रम पड़ता है, फिर तो धीमे धीमे सत्पुरुषों

के प्रसंग में यह चर्चा शायद विषयान्तर ही हो। भगवान् ने जिन साधनों की ओर संकेत किया है, हम उन्हीं का यहाँ उल्लेख करेंगे।

विषयों में इन्द्रियों के स्वच्छन्द और सतत भटकते रहने से उनके प्रति हमारे मन में राग, द्वेष, आसक्ति और आग्रह आदि दृढ़ हो गये हैं। इन्हें शिथिल करना है। इसके लिये कैसी सीधी और सरल युक्ति है—

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्यप्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥
गीता २—५८

कछुआ जहां खतरा मालूम होता है, अपने अंगों को समेट लेता है, उसी प्रकार अशुभ विषयों से अपनी इन्द्रियों को समेट लेना चाहिये। दुनिया में शुभाशुभ सभी कुछ है। जहां तक हो सके, कामोद्दीपक दृश्यों से, अश्लील उपन्यासों से नशीले द्रव्यों से, गन्दे गानों से, वैभव विलास से, बनाव ठनाव से, विलासी वीरांगनाओं से दूर ही रहना चाहिये। कोयले की कोठरी में जाते रहने से कालस न लगे यह कम ही संभव है। कीचड़ में पत्थर फेंकने से पास में खड़े हुओं के कपड़ों पर दाग न लगे यह कब संभव है। इसलिये सब आग्रह और अहंकार व्यर्थ है।

हम ईश्वर नहीं हैं। वह भला बुरा सब कुछ देखता है, फिर भी अनासक्त बने रहता है। उसी की यह सामर्थ्य है कि वह कांचनवर्णी कामिनी के अनावृत रूप को फिर फिर निहारे और राग शून्य बना रहे। मानव में यह शक्ति कहाँ? कवि शिरोमणि ने 'ज्ञातस्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः' में इसी बात का संकेत किया है। इसलिये दूर रहना ही ठीक है। यदि फिर भी सब कुछ देखने को हम हठ करेंगे तो आंखें फूट जावेंगी और सिर चकरा जावेगा। इसलिये विलास उभाड़ने वाली सब बातों से नम्रतापूर्वक दूर रहना ही सुरक्षित और श्रेयस्कर है। इस प्रकार अयोग्य स्थान पर बँधा राग शिथिल और क्षीण होने लगा।

हृदय में गुदगुदी उत्पन्न करने वाली बातों से इन्द्रियों को दूर रखना कोई कठिन बात नहीं है। वस्तुतः आग में हाथ न डालने जैसी नैसर्गिक बात है। फिर भी, यदि न देखने योग्य को देखने की खोटी आदत दृढ़ हो गई हो तो बुद्धि उसे सुदृढ़ संकल्प की सहायता लेकर दूर कर सकती है। बुद्धि का यह बड़ा समर्थ मित्र है।

"इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः"
गीता २-६०

सच है इन्द्रियां बड़ी हठीली हैं, वे मन को भी घसीट ले जाती हैं। परन्तु मनुष्य भी ऐसा कमजोर नहीं जैसा वह अपने को समझता है। भगवान् ने मनुष्य को बुद्धि के साथ दृढ़ संकल्प की अद्भुत शक्ति भी दी है। विवेक द्वारा संकल्प को जागृत कर वह जो चाहे सिद्ध कर सकता है। वह विद्वान् बन सकता है, विस्तृत वैभव प्राप्त कर सकता है, बड़ी से बड़ी विजय प्राप्त कर सकता है।

मनुष्य ने अपने दृढ़ संकल्प को जागृत कर के और तदनुकूल पुरुषार्थ द्वारा दुनियां में क्या कुछ सिद्ध नहीं किया है? कौन सी ऊंचाई है जहां वह चढ़ा नहीं है? कौन सी गहराई है जहां वह पैठा नहीं है? भौतिक और आध्यात्मिक सभी क्षेत्रों में उसकी सिद्धि अद्भुत् और अनुपम है। फिर वह दीन हीन क्यों बने? प्रभु ने उसे पृथ्वी का शृङ्गार बनाया है।

"मनुष्य को आत्मा की अपनी शक्ति का भान नहीं है, इसी कारण वह मानता है कि इन्द्रियाँ वस में नहीं रहतीं, या मन नहीं रहता, बुद्धि

काम नहीं करती। आत्मा की शक्ति का विश्वास होते ही दूसरा सब आसान हो जाता।"

अनासक्ति योग—गांधीजी

आरोग्य स्थान पर बंधे राग को शिथिल करने की यह बात हुई। यह निषेधात्मक साधना है। राग को कहीं समाश्रय भी मिलना चाहिए। नहीं तो इन्द्रियों को बलपूर्वक रोकने पर मन ही मन विषयों का सेवन होने लगता है, जो कम भयंकर नहीं है। बनी बनाई खेल इससे बिगड़ सकती है। इसी से निर्देश है :—

'तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः।'

गीता २—६१

'युक्तिपूर्वक, विवेक और संकल्प के बल से, इन्द्रियों को अशुभ विषयों से रोक कर मनुष्य मत्परायण होकर रहे।' राग को कहाँ स्थिर करना चाहिए इसी का यहां निर्देश है। भगवान् कृष्ण जैसे अवतारी पुरुषों के शील और चरित्र के श्रवण, मनन और अनुकरण में अनुरक्ति उत्पन्न करना उपयोगी है।

अज्ञात, अनन्त और अरूप परमेश्वर की बात हम करने लगें तो यह किसे सुहायेगा? धरती की बात छोड़, क्षितिज के उस पार की जब तब चर्चा करना बहुत बार दम्भ और पाखंड ही तो होता है। अज्ञेय और अनन्त की चर्चा साधु सन्तों के लिए छोड़ देना अधिक श्रेयस्कर है। हमारे लिए तो भगवान् कृष्ण की जाह्नवी जैसी पावन जीवन-गाथा ही बस है। उनकी बाल-क्रीड़ा में, गोचारण में, घोड़ों में खुद खुर्दा करने में, निश्छल प्रेम में, सुहृद्भाव में, शास्त्र-ज्ञान में, कला में, बुद्धि प्रखरता में, नम्रता में, नीतिनिपुणता में, मन को आकर्षित करने और रमाने की अनन्त सामग्री है। भगवान् की ही यह सब प्रत्यक्ष विभूति है।

यदि मन यहाँ न रमे तो फिर अपने दैनिक व्यवसाय में, स्वधर्माचरण में, सच्छास्त्र में, काव्य में, संगीत में, ज्ञानार्जन में, अन्याय निवारण में, सद्वृत्तियों के विकास में, दुःखितों की सेवा सहायता में, मन को अधिकाधिक पिरोना उपयोगी है। राग के लिए बुद्धि-सम्मत यह विशाल क्षेत्र है। सद्गुणों और सत्कर्मों में वही एक झांकता है। यहां उससे मिलते जुलते रहना कितना आसान है। रोज मिलने-जुलने से परिचय और प्रेम हो ही जाता है। उससे अनुराग हो गया तो सब काम सिद्ध ही है।

प्रकृति हमें चारों ओर से घेर कर खड़ी है। मनुष्य के समस्त सुख-दुःखों में यह अपना स्वर मिला रही है। ऋतु-ऋतु में यह नवीन उमंगों से उल्लसित होती है। प्राणों के कम्पन प्रदर्शित करती है। तरह-तरह की भाव-भंगियों, ध्वनियों और रूप-वैचित्र्य द्वारा हमें आकर्षित करती है, और उसकी ओर मौन परन्तु सशक्त संकेत भी करती है।

नक्षत्रों भरे आसमान में बिखरे पड़े उसके वैभव का, हँसते फूलों में उसके सौन्दर्य का, उमड़-घुमड़ कर बहती नदियो में उसका करुणा का, हिमाच्छादित पर्वत शिखरों का, अतलस्पर्शी समुद्रों में उसकी गहराई का, पक्षियों के कलरव में उसके सुरीले स्वरों का, स्पर्श से पुलकित करने वाले पवन के झकोरों में उसके प्यार का सहृदय लोग दर्शन कर सकते हैं। यदि हम प्रकृति के पृष्ठों पर लिखी इस भाषा को न पढ़ सकें तो भी सौन्दर्य-भरे ये दृश्य नयनों और हृदय को कुछ कम तृप्त करने वाले नहीं हैं। मन यहां खूब रम सकता है।

जरा दृष्टि बदलने की जरूरत है। पहले थोड़ा परिश्रम पड़ता है, फिर तो धीमे धीमे सत्पुरुषों

के चरित्र के श्रवण, मनन में आनन्द आने लगता है। उनके असंख्यों उपकार, प्रीति, अनुकम्पा, उदारता आदि का स्मरण कर रोमांच होने लगता है, आंख सजल होने लगती है। प्रेरणा और उत्साह मिलता है। नवजीवन का संचार होता है। धर्म का पथ आलोकित हो उठता है। फिर तो धृति दृढ़ चरणों से क़दम बढ़ाने लगती है।

इसे सात्विक रस कहिए या भगवल्लीलावगाहन का रस कहिए जब तक मन ने यह रस चखा नहीं तभी तक वह रस या उस विषय का रस लेने को छटपटाता है। परन्तु जब असली रस मिल गया, सच्चाई मन में बैठ गई, तो फिर वह क्यों भटकेगा ?

'रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते।'
गीता २—५९

जिसे ईश्वर-साक्षात्कार का रस लग जाता है, वह दूसरे रसों को भूल ही जाता है।'

राग द्वेषादि भावनाओं को बुद्धि के आदेशानुसार तथा संकल्प की सहायता से अयोग्य स्थान के शिथिल कर और योग्य स्थान पर स्थिर करने से उनका आवश्यक परिष्कार हो गया। मन में अब विकारों का अंधड़ नहीं। बुद्धि की आंखें अब धूल से भर भर नहीं जातीं। वह पूर्ण प्रभा से चमकती है। निर्भ्रान्त रूप से वह पथ देख रही है। सात्विक शृङ्गार किये वह आत्मा के समीप चली है। मन उसके वस्त्रादि प्यार पूर्वक संभालते हुए पीछे पीछे चल रहा है। क्या सुनहला दृश्य है ! !

★ अभिलाषा ★

देव तुम्हारे चरणों को
पूजा में किस विध कर पाऊं।

मेरे सूने मन मन्दिर में,
नूपुर की झंकार नहीं:
स्वर-लहरी की तान नहीं,
कोई मंजुल कोमल गान नहीं;

फिर भी अभिलाषा है मन की
मैं तेरे दर्शन कर पाऊं॥

पूजा की मैं विधि न जानती,
लाई पुष्पों का हार नहीं;
मंगल आरति के दीप नहीं,
अक्षत कुंकुम फल फूल नहीं;

फिर भी श्रद्धा अन्तस्तल की
अपने प्रभु को पा जाऊं॥

—प्रो० सुभद्रा एम० ए०,

महर्षि स्मारक टङ्कारा पत्रिका

क्रमांक—१ ता० ३०-४-५९

टंकारा में महर्षि स्मारक के उदघाटन ने आर्य जगत में एक नया युग खड़ा कर दिया है। आर्य जगत टंकारा के समाचारों से परिचित होने को लालायित रहे यह स्वाभाविक है। अतः ट्रस्ट की ओर से हमने समय समय पर पत्रिकाओं को छपवाकर बटवाने का आयोजन किया है।

वर्तमान में टंकारा ट्रस्ट में पन्द्रह ट्रस्टो हैं। ट्रस्ट के प्रधान श्री मेहरचन्द महाजन है। ट्रस्ट में सार्वदेशिक सभा के प्रधान वहेसियत प्रधान और परोपकारिणी सभा के प्रधान बहे-प्रधान ट्रस्टी हैं। इस समय निम्नलिखित महानु-भाव ट्रस्टी हैं।

(१) श्री मेहरचन्द महाजन प्रधान
(२) श्री अभेदानन्द जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिध सभा
(३) महाशय कृष्ण जी प्रधान परोपकारिणी सभा।
(४) स्वामी ध्रुवानन्द जी
(५) महाशय हंसराज जी गुप्त देहली
(६) डा० मथुरादास जी पावा देहली
(७) श्री आनन्द प्रिय जी मन्त्री
(८) श्री बाल जी नथवाणी संयुक्त मंत्री
(९) मगनभाई वल्लभभाई पटेल कोषाध्यक्ष
(१०) श्री मगनभाई जोशी
(११) श्री नानालाल उपाध्याय
(१२) श्री बालकृष्ण शुक्ल
(१३) श्री चंचल बहिन पाठक
(१४) श्री भगवान देव जी आर्य बम्बई
(१५) चतुरभाई बाबर भाई पटेल

ट्रस्ट में छः ट्रस्टी देहली के प्रतिष्ठित आर्य नेता है। बाकी के ९ सब के सब आर्य समाजी हैं। ट्रस्ट का निर्माण सेठ श्री नान जी भाई कालीदास मेहता ने रु० डेढ़ लाख की धन राशि से किया और उसका रजिस्ट्री पोरबन्दर में १५-५-५१ को हुई। ट्रस्टडीड में ट्रस्ट का उद्देश्य निम्नलिखित है।

"महर्षि दयानन्द जी की जन्मभूमि टंकारा सौराष्ट्र में जमीनें लेनी उसमें ट्रस्टी मण्डल को योग्य लगे उस प्रकार स्मारक को चलाने (संचालन) की व्यवस्था करनी, उस निमित्त फण्ड (धन) प्राप्त करना।"

आर्यं सिद्धान्तों तथा वैदिक धर्म के अनुकूल जैसा योग्य लगे वैसी प्रवृत्तियाँ करना।

ट्रस्ट के लिए कुंवर चांदकरण जी शारदा प्रथम मंत्री ने अफ्रीका से तीस हजार ला दिया था। राजा नारायणलाल जी पीत्ती ने ट्रस्ट को रु० पांच हजार का दान दिया। श्री अर्जुन कुंवर जी पटेल ने २५०० का दान दिया। अन्य छोटे मोटे दान लगभग पन्द्रह हजार रुपया और भी एकत्रित हुआ।

स्मारक के लिए टंकारा स्थित मौरवी नरेश का रु० १० लाख का भव्य राजप्रासाद सेठ श्री नान जी भाई के डेढ़ लाख के दान से खरीद लिया गया! १०-१-५९ के दिन महल पर हमारे ट्रस्टी और सौराष्ट्र विधान सभा के भूतपूर्व स्पीकर श्री मगन भाई जोशी ने ओ३म् ध्वज फहराकर कब्जा लिया। इसका भव्य उदघाटन समारोह ता० ६-७-८ के दिनाकों में समस्त आर्यजगत के

सहयोग श्री अनन्त से शयनम् आयंगर के कर कमलों द्वारा हो गया।

महल के बाहरी मकानों की मरम्मत तथा प्रारम्भिक लिपाई पुताई पर ट्रस्ट ने १५ हजार खर्च किये। उत्सव पर पन्द्रह हजार खर्च किये। वर्तमान में ट्रस्ट ने वार्षिक १८ हजार का बजट बनाया है।

ट्रस्ट ने पं० युधिष्ठर जी मीमांसक के अधिष्ठाता पद में वेद अनुसंधान कार्य का श्री गणेश १ जून से प्रारम्भ करने का निश्चय कर दिया है। शीघ्र ही एक पुस्तकालय बनाने का काम प्रारम्भ होगा।

अनुसंधान कार्य के लिये पंडित मिमांसक जी अपने सहायक स्वयं नियुक्त कर सकेंगे। ट्रस्ट के प्रकाशनों का समन्वय परोपकारिणी सभा के साथ मिलकर होगा।

परोपकारिणी सभा अजमेर ने रु० पचास हजार का ४ प्रतिशत ब्याज वार्षिक दो हजार गत शिवरात्रि से देना स्वीकार कर लिया है।

ट्रस्ट का इस वर्ष का अनुमानिक वजट दो हजार मासिक का है। ट्रस्ट के पास इस समय स्थिर कोष में कोई भी रकम नहीं है। अभी तो आर्य जगत के फुट कर दान से ही मासिक दो हजार का वजट पूरा किया जावेगा।

देहली के कविराज हरनामदास जी ने उपदेशक विद्यालय का आयोजन करने का स्वीकार किया है।

गुजराती में ट्रैक्ट श्री गोविन्दराम हासानन्द जी टंकारा में आफिस रख प्रकाशित करावेंगे। और भी अनेक योजनायें हमारे सामने है। पर धनाभाव के कारण शनैः शनैः ही कार्य हाथ में ले सकेंगे। ट्रस्ट के कार्य में अनेक महानुभावों ने अपनी सेवायें प्रदान की है। उनके समय २ पर प्रकाशित करते रहेंगे।

प्रतिवर्ष बोधरात्रि के अवसर पर टंकारा में बृहत आर्य मेला होगा ही। टंकारा ट्रस्ट अपने कार्य के लिये दस लाख की धन राशि एकत्र करने को कृत संकल्प है।

सार्वदेशिक सभा के साथ समन्वय के कार्य को ट्रस्ट ने प्रधान श्री महेरचन्द जी महाराज तथा देहली स्थित ट्रस्टियों को सौंप दिया है। इस कार्य का संयोजन श्री हंसराज जी गुप्त करेंगे।

ट्रस्टी मण्डल ने ट्रस्ट के कार्य को चलाने के लिए एक पोषक मण्डल का निर्माण किया है। उसमें दानदाता निम्न प्रकार से दान दे सकेंगे। १००० देनें वाले महानुभाव संरक्षक कहलायेंगे। ५०० उपसंरक्षक २५१ देने वाले शुभेच्छक १२५ सहायक दस वर्ष तक रु० १० वार्षिक देने वाले महानुभाव सभ्य कहलायेंगें।

आज तक टंकारा स्मारक कोष में निम्न रकमें जमा हो चुकी हैं।

१॥ लाख सेठ श्री नान जी भाई का दान.
३० हजार—अफ्रीका दान कुंवर चांदकरण जो द्वारा संग्रहित—
५ हजार—राजा नारायण लाल पोत्ती जी द्वारा दान—
२५००—एक सद्गृहस्थ
२५००—अर्जुन कुंवर जी पटेल दान
१०००—राजा गोविन्दलाल जी
१०००—श्री चन्दुलाल मणेक जी शर्मा
१०००—,, जया बहिन बम्बई
१०००—,, ज्ञान मित्र जो राही
१५०००—फूटकर रकमों द्वारा प्राप्त उत्सव के समय तथा पूर्व प्राप्त——

आप का दान आप निम्न पते पर भेजने की कृपा करें।

आनन्द प्रिय, मंत्री
टंकारा महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट
कारेली बाग बड़ौदा।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी श्री अभेदानन्द जी

टंकारा ट्रस्टडीड को पढ़ने की कृपा करें

बहुत समय से महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट के सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा की ओर से परिपत्र निकलते रहते हैं। उन परिपत्रों के सम्बन्ध में ट्रस्ट ने अभी तक मौन रखा है।

अजमेर की ट्रस्टी मंडल की सभा ने ट्रस्ट के प्रधान श्री मेहरचन्द महाजन को अधिकार दिया है कि वह सार्वदेशिक सभा के साथ बातचीत कर समन्वय का मार्ग निकालें। इसकी सूचना सार्वदेशिक सभा को पत्र द्वारा और मीटिंग्स की नकल द्वारा दी जा चुकी है।

३ मई को आर्य मित्र में सार्वदेशिक सभा के प्रधान पू. श्री स्वामी अभेदानन्द जी के हस्ताक्षर से पूज्य महाशय कृष्ण जी की कोई उनके वीर अर्जुन के लेख के सम्बन्ध में प्रत्युत्तर दिया है। उसकी निम्न पंक्तियां भ्रम मूलक हैं। कारण पूज्य प्रधान जी ने सेठ नानजी भाई द्वारा निर्मित ट्रस्टडीड जिसकी हिन्दी प्रतिलिपि सार्वदेशिक सभा को भेज दी गई है। नहीं पढ़ी।

पूज्य स्वामी जी लिखते हैं और उसको आर्य मित्र के सम्पादक महोदय ने अंडर लाईन किया है।

"सार्वदेशिक सभा ट्रस्ट को जहां सार्वदेशिक रूप देना चाहती है। वहां ट्रस्ट से इस आश्वासन की इच्छुक है कि वह ट्रस्ट आदि से अन्त तक आर्य सभा सदों के ही हाथ में रहेगा। मैं इस बात को स्वीकार करता हूं कि वर्तमान में लगभग सभी ट्रस्टी गण अच्छे प्रतिष्ठित आर्य सभासद हैं परन्तु इन में से किसी अवस्था में किसी ट्रस्टी का स्थान रिक्त हो। जाने पर आर्य सभासद ही ट्रस्टी बन सकेगा, इसके नियमों में कोई गारन्टी नहीं है। परिणाम स्वरूप यह सम्भव है कि किसी दिन यह ट्रस्ट पूर्णत गैर आर्य समाजियों के हाथ में चला जाय और ट्रस्ट के अन्तर्गत आर्य समाज के सिद्धान्तों के विपरीत कार्यक्रम चलने लगे।"

स्वामी जी ने दो बातें इसमें स्थापित की हैं। (१) भविष्य में वर्तमान ट्रस्टी आर्य समाजी को ही ट्रस्टी बनाये ट्रस्टीडीड कोई गारन्टी नहीं।

पूज्य महात्मा स्वामी जी ट्रस्टीडीड की निम्न लिखित पंक्तियां आप अपने दफ्तर से मंगा कर पढ़ें।

"ट्रस्टी मंडल के रिक्त स्थान पर शेष ट्रस्टी गण किसी आर्यसमाजी को बहुमति मे नियुक्त कर सकेंगे।"

ट्रस्टडीड की यह गारन्टी स्वामी जी किस प्रकार पर्याप्त नहीं? कृपया स्पष्टीकरण करें।

दूसरी आप को संभावना है कि भविष्य में ट्रस्ट के अन्तर्गत आर्यसमाजी के सिद्धान्तों के विपरीत कार्यक्रम चलने लगेगा।

इसकी भी संभावना ट्रस्टीड के अनुसार है ही नहीं कारण ट्रस्टडीड में स्पष्ट लिखा उद्देश्य निम्न है महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्मभूमि टंकारा (सौराष्ट्र) में जमीन लेनी उसमें ट्रस्टी मंडल को योग्य लगे उस प्रकार स्मारक का चलाने की (संचालन की) व्यवस्था करनी, उस निमित्त फंड (धन) प्राप्त करना।

आर्य सिद्धान्तों तथा वैदिक धर्म के अनुकूल जैसा योग्य लगे वैसी तमाम प्रवृत्तियां करनी"

ट्रस्टडीड में इतने स्पष्ट उल्लेख होने पर पूज्य स्वामी जी को भ्रम क्यों हो गया यह समझ में नहीं आता स्वामी जी के अन्य स्थापनाओं के सम्बन्ध में मौन रखना ही उचित समझता हूँ। कारण सार्वदेशिक सभा के कार्यालय को हम ट्रस्टडीड भेज चुके हैं। वहां उसके आधार पर हमारे प्रधान श्री मेहरचन्द जी से मिलकर मार्ग ढूंढ निकाले बाकी भ्रममूलक स्थिति खड़ी कर दलील बाजी का कोई काम नहीं।

निवेदक आनन्द प्रिय मंत्री
महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा

"प्यारे ओ३म्"

(ले० सत्यभूषण, वेदालंकार, एम० ए०) नई दिल्ली

ओ३म् तू कहां हैं । नदी, नद, पर्वत, वन, कन्दरा सर्वत्र तुझे ढूंडा पर तू न मिला । योगियों ने कहा, तू मन में है, पर वहां भी खोजने पर तेरा दर्शन न कर सका, करूं भी कैसे, पापों की गठरी सिर पर लाद रखी है, काम, क्रोध, लोभ, मोह अहंकारों के पाशों ने कसकर बांध रखा है, "पाप गठरिया सिर पर भारी पग नहीं आगे जाते हैं" । फिर तू कैसे मिले ।

तुझे पाने के लिए तो सर्व प्रथम मन को शुद्ध करना पड़ता है, "नावरितो दुश्चरितान्ना-शान्तो नासभाहितः, नाशान्त मन सो वापि प्रज्ञाने-नैन माप्नुयात् ।" मैं तो अभी पाप पङ्क में लिप्त हो रहा हूँ, मन अशान्त है, इन्द्रियों पर मन की लगाम नहीं, आत्मा रथी शरीर रूपी रथ को संभाल नहीं पा रहा। मेरे प्यारे ओ३म् फिर मैं तुझे कैसे पाऊं ।

महाराज दयानन्द ने बताया, कि तू सर्वत्र है, सर्वव्यापक है । नदी, नद, पर्वत, वन, उपवन कन्दरा, निर्झर पत्र पुष्प सब में तू है । तू कहां नहीं है । राजा में तू रंक में तू, चींटी में तू हाथी में, कण कण में तू । फिर मैं तुझे ढूंढू कहां ?

हाय ! मैं कितना अभागा हूँ । इस हीरे के समान अमूल्य मानव-जन्म को पाकर कौड़ियों में गंवा दिया है । मेरे ओ३म् तू तो सर्वत्र है । सब वेद तेरे ही पद को स्वीकार करते हैं, तेरे ही कारण सब तप करते हैं, तेरी ही इच्छा करते हुए ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं । सर्वे वेदा यत्पद-भामनन्ति । तपा सि सर्वाणिच यद्वदन्ति यदि-च्छन्तो ब्रह्मचर्य चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीम्यो-भित्येतत् ।

तू इतना महान् है, पूजनीय है, आराध्य है । तुझे छोड़कर मैं कहां जाऊं । प्यारे ओ३म् । अब बहुत हो चुका, तू ही मुझे संभाल । तू ही मेरा अनुपम धन है, परम पालक पिता है, स्नेह मयी माता है, सर्वहितकारी बन्धु है, सखा है सर्वोत्तम विद्या है, सर्वस्व है, सब कुछ है परम देव है ।

"त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव ।"

तू ही सबका रक्षक है (अवतीत्योम्), गति-मान है, कान्तिमान है, सर्वाधिक प्रीति करने वाला, तृप्ति करने वाला वृद्धि करने वाला क्रिया करने वाला दान देने वाला सुख प्राप्त कराने वाला भी तू ही है । तू ही सर्वत्र व्यापक है प्रकृति और जीवव्याप्य हैं तू उनमें व्यापक है । इस प्रकार व्याप्य व्यापक सम्बन्ध होने से तू ही सब का सखा है सर्वत्र प्राप्त है ।

तू अव्यय है, अविनाशी है । विराट, अग्नि, विश्व, हिरण्यगर्भ, वायु, तैजस, ईश्वर, आदित्य, प्राज्ञ तू ही है । जीव (उ) प्रकृति (म्) से भी ऊपर (अ) स्वतन्त्र रूप में ब्रह्मवाची होकर तू ही विराजमान हो रहा है । तू ही इन में व्यापक है ।

सब वेद मंत्रों से पूर्व तेरा ही उच्च स्वर से ज्ञान किया जाता है । तू ही अक्षर अविनाशी है।" ओ३म् इति एतद् अक्षरं उद्गीथमुपासीत, ओ३म् इति हि उदगायति (छां–प्र० १ खं० १ मं—१—३) अ, उ, म," ये तेरी चार मात्राएं हैं । अन्त में ओ३म् "का गुणानुवाद इन पंक्तियों में करता हूँ ।"

ओ३म् सबहिं सों उत्तम नामा ।
सफल होंहि जासों सब कामा ॥
ओ३म् सकल दुःख नाशन हारा ।
जोगी तपी जपत जग सारा ॥
ओ३म् एक अक्षर अविनाशी ।
पूर्ण सच्चिदानन्द प्रकाशी ॥

सेठ रमनलाल की सौजन्यता

सेठ रमनलाल का देश विदेश में कई जगह कारोबार था बड़ी बड़ी नावों में माल भर कर देश से विदेश भेजा जाता था और विदेश से यहाँ लाया जाता था। रमनलाल अत्यन्त साधु स्वभाव के भक्त पुरुष थे भगवान में उनका अगाध विश्वास था श्रीमद्भगवद्गीता के बड़े विश्वासी थे, नित बड़े आदर से भगवद्गीता का मनन करते थे उनकी धर्मपत्नी चम्पाबाई बड़ी ही भक्तिमती थी। दोनों पति पत्नी भक्ति भाव से भगवान का स्मरण पूजन करते। उनकी दिनचर्या थी ६ घण्टे कारोबार की देखभाल, चार घण्टे शौच स्नान भोजन और अतिथि सत्कार आदि में लगाते चार घण्टे सोते बाकी १० घण्टे यज्ञ हवन स्वाध्याय आदि में लगाते उनके यहां के सैंकड़ों मुनीम गुमास्ते और नौकर चाकरों की तो बात ही क्या दूर दूर के लोग भी बड़े सन्तुष्ट थे जो भी उनके सम्पर्क में आता वही उनसे प्रेम और सत्कारपूर्ण हित भरे व्यवहार से मुग्ध हो जाता वे बड़े व्यवहारकुशल और हिसाब किताब के साफ थे उनकी व्यवहारकुशलता में कहीं भी छल कपट या पर हक हरन की कल्पना भी नहीं थी वे कभी किसी पर गुस्सा नहीं करते थे सदैव हंसमुख और नम्र रहते थे।

एक बार रसोईये से भूल से हलवे में खांड की जगह नमक का पानी पड़ गया और शाक में नमक की जगह खाँड पड़ गई। रसोईया अपनी पत्नी की बीमारी के कारण रात भर का जगा हुआ था पत्नी की बीमारी के कारण चिन्ता भी थी इसी कारण से भूल हो गई सेठ रमनलाल भोजन करने बैठे तो उन्हें हलवा नमकीन और भाजी मीठी और बिना नमक की मालूम हुई उन्होंने रसोईया के चेहरे की तरफ देखा उसका चेहरा उदास था सेठ ने हार्दिक सहानुभूति के स्वर में उसे पूछा। महाराज आज उदास कैसे हो रसोईये ने जवाब दिया ब्राह्मणी बीमार है इसी से चेहरे पर कुछ मलीनता आ गई होगी उसने रात भर जागने की बात नहीं कही। पर सेठ उसकी आँखों को देखकर समझ गये उन्होंने कहा रसोईया जी जल्दी घर चले जाओ ब्राह्मणी अकेली है उसे संभालो। यहां दूसरा आदमी काम करेगा, तुम ऐसी हालत में आये ही क्यों भला फिर भैया तुम्हारे घर में दूसरा कोई है भी नहीं तुम रात भर जगे भी होंगे मैं एक आदमी भेजता हूँ वह बीमार के पास बैठेगा तुम कुछ देर आराम कर लेना। रसोईये को मालिक की सहानुभूति के प्रेम भरे शब्दों से बड़ी शान्ति मिली व मन ही मन में आशीर्वाद देता चला गया।

रसोईया के चले जाने पर सेठ रमनलाल ने अपनी पत्नी को धीरे से कहा देखो बेचारा डर के मारे स्त्री को बीमार छोड़कर काम पर आ गया। रात की नींद थी और ब्राह्मणी की चिन्ता थी इसी से भूल में हलवे में नमक और शाक में खांड पड़ गई अगर इन चीजों को घर के सब लोग नौकर चाकर आदि खायेंगे तो बेचारे ब्राह्मण की हंसी उड़ायेंगे और उसे भारी दुख भी होगा। अतएव यह चीजें गऊशाला में ले जा कर गऊओं को खिलाकर और जल्दी से दूसरी बार हलवा शाक आदि बना लो जिस में रसोईया की भूल का पता भी न लगे। पत्नी ने वैसा ही किया बात

बहुत छोटी भी परन्तु सेठ रमनलाल और उनकी पत्नी की विशाल हृदयता का पता लगता है कुछ दिनों बाद एक दिन पत्नी ने रसोईया में हंसते २ उस दिन की भूल की रसोईया से कह दी वह बेचारा सुनकर हक्का बक्का हो गया उसने सेठ के पास जाकर क्षमा माँगी सेठ ने प्यार करते हुए इस से कहा पण्डित जी तुम्हारी जगह हम होते तो ऐसी हालत में हम से तो कोई दूसरा काम भी नहीं बन पड़ता तुम ने अपनी ड्यूटी पर आकर सारी रसोई बना दी नमक खांड में उलट-पुलट हो गया तो इसमें अपराध क्या हो गया जो क्षमा मांगते हो तुम्हारी नियत तो बुरी नहीं थी रसोईया का हृदय कृतज्ञता से भर गया उसने विनय के साथ कहा सेठ जी मैं जानता हूँ आप बड़े दयालु हैं पर आपने मुझे भूल बताई क्यों नहीं। सेठ रमनलाल फिर बोले भैया उस दिन तुम पहले ही दुखी थे तुम्हारी भूल बता कर मैं तुम्हारा दुख ही बढ़ाता। फिर सच्ची बात तो यह है कि मुझ से कभी भूल न हुई हो तो मैं तुम्हारी भूल की चर्चा करूं जब मैं खुद अनेकों भूल करता हूँ अच्छी हालत में भूल हो जाती है। तब तुम से एक विशेष परिस्थिति में हुई मामूली भूल की चर्चा चलाकर नई भूल क्यों करता। दूसरे की भूल पर बुरा मानने का अधिकार उस को हो सकता है जिस से जीवन में कभी भूल न हुई हो।

जब ये ५६ साल के हुये तब पत्नी सहित नर्वदा तट पर जाकर त्याग पूर्ण साधु जीवन बिताते हुए अखण्ड यज्ञ करने लगे।

आर्य विद्वानों के लिखे ३० ट्रैक्टों का संग्रह

मूल्य सजिल्द २) मात्र

१. मनुष्य बन	१६. दयानन्द दिग्विजय
२. गायत्री माता	१७. चोटी का महत्त्व
३. ईश्वर सिद्धि	१८. गुरु विरजानन्द
४. आस्तिक ना० सम्वाद	१९. मांस खाना छोड़ दो
५. पितृ श्राद्ध विचार	२०. मर्यादा पुरुषोत्तम राम
६. सुख का साधन	२१. देश सुधार-होली
७. ईश्वरोपासना	२२. मूर्ति पूजा विचार
८. कल्याणी बन	२३. भक्ति के लाभ
९. आर्यों का आदि देश	२४. आर्यसमाज के उद्देश्य
१०. धर्म और अधर्म	२५. वेद माता
११. स्वामी श्रद्धानन्द	२६. श्रद्धा माता
१२. तत्त्ववेत्ता दयानन्द	२७. धरती माता
१३. पण्डित लेखराम	२८. धर्म की रक्षा करो
१४. सीता माता	२९. वदिक संध्या
१५. गो माता	३०. सत्संग भजन

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, देहली।

साहित्य-परिचय

मानव-जीवन गाथा

या

जीवन-गीत

व्याख्याता—श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज

अनुवादक—जगदीश चन्द्र जी विद्यार्थी

प्रकाशक—गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क देहली

पृष्ठ संख्या १७२, मूल्य १)

प्रस्तुत "मानव जीवन गाथा" नामक पुस्तक में श्री विद्यार्थी जी ने महात्मा आनन्द स्वामी जी के सात भिन्न विषयों पर दिये गये उपदेशों को संग्रहीत किया है। स्वामी जी ने अपने उद्देश्य को "त्वं हि नः पिता वसो।" वेद मन्त्र से प्रारम्भ कर सर्व प्रथम जगदुत्पादक प्रभु के प्रति अपने कृतज्ञता के भाव व्यक्त किये हैं, जिसका आज के युग में सर्वथा अभाव होता जा रहा है। इस पुस्तक में संग्रहीत प्रत्येक उपदेश, आज के उन्मार्गगामी मनुष्यों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने में समर्थ हो सकेंगे ऐसी आशाकी जाती है। ईश्वर की सत्ता को व्यापक मानते हुए मनुष्य को किस प्रकार शुद्ध आहार द्वारा अपने शरीर को प्रगति-पथ पर अग्रसर करना चाहिये, किस प्रकार एक मनुष्य सद्विचारों का धनी बन सकता है, आत्म-दर्शन के उपाय क्या क्या हैं, और कैसे आत्मदर्शन हो सकता है? इन सभी जटिल समस्याओं का समाधान स्वामी जी ने अनेक मान्य ग्रन्थों के प्रमाण एवं लौकिक उदाहरणों द्वारा उपस्थित कर दिया। आशा है आज की नानामार्गों में भ्रमित जनता, इस पुस्तक के अध्ययन से अपने सद्भावनाओं को स्थान देती हुई उन्नति के विशाल पथ की पथिक बन सकेगी।

पुस्तक की भाषा बड़ी सरल और हृदयग्राही है। पाठक को ऐसा प्रतीत होता है कि मानो आमने-सामने बैठ कर जीवन की गहन समस्याओं पर बातचीत की जा रही हो। स्वामी जी ने वेदमन्त्रों और शास्त्र वचनों के अतिरिक्त लोक-भाषा की उक्तियों को भी समाविष्ट किया है। विशेष रूप से फारसी और पंजाबी बोली की उक्तियां हृदय स्पर्शी सिद्ध होती हैं। जो सज्जन धार्मिक तत्त्व ज्ञान को एक रहस्य समझ कर उससे दूर भागते हैं उनके लिये ये रोचक उपदेश धर्म के रहस्य को स्पष्ट करने में बहुत सहायक सिद्ध होंगे।

पुस्तक की छपाई सुन्दर और 'गेटअप' आकर्षक है। १७२ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य १) अधिक नहीं है।

"आर्यमित्र" से उद्धृत

'वैदिक एज पर एक समीक्षात्मकदृष्टि'

लेखक—श्री शिवपूजन सिंह कुशवाहा 'पथिक' बी. ए.

प्रकाशक—जयदेव ब्रदर्स, बड़ोदा, पृष्ठ संख्या ८०,

मूल्य ७५ नये पैसे।

प्रस्तुत पुस्तक, भारतीय विद्या भवन, बम्बई

द्वारा प्रकाशित "वैदिक एज" नामक बृहद् आंग्ल भाषा की आलोचना है। आर्यों पर "वैदिक एज" में पर गो मांस भक्षण, वेदों पर आक्षेप, अथर्ववेद में जादू टोना, प्रभृति दोषा रोपण किये गए हैं जिन-का उत्तर लेखक ने सप्रमाण युक्तियुक्त दिया है। ऐसी पुस्तक का घर में प्रचार होना चाहिये। पाश्चात्य सभ्यता के अनुगामियों की आंखें खोल देने वाली अपूर्व पुस्तक है।

हमारी आँखें—लेखक डा० एम० एस० अग्रवाल : प्रकाशक—डा० अग्रवाल आई इंस्टी-ट्यूट १५ दरियागंज देहली। पृष्ठ संख्या ३०४, मूल्य सजिल्द ५)

इस पुस्तक में नेत्रों के अनेक रोगों की एलो-पैथिक, आयुर्वैदिक तथा प्राकृतिक पद्धति द्वारा चिकित्सा करने के सरल उपाय बताये गये हैं। प्रस्तुत पुस्तक में प्राकृतिक पद्धति द्वारा चिकित्सा करने पर किस प्रकार ऐनक से छुटकारा पाया जा सकता है का भी विस्तृत उल्लेख है।

पुस्तक चार भागों में विभक्त है। पहले भाग में आँखों के रोगों का वर्णन है दूसरे में नेत्र रोगों को बढ़ने न देने के उपाय बताये हैं। तीसरे भाग में नेत्र रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा तथा चौथे भाग में आँखों का हमारे कार्यों का, हमारे रहन सहन का, हमारे भोजन का क्या असर पड़ता है बताया गया है।

नेत्र सुधार:—लेखक डा० आर० एस० अग्रवाल : प्रकाशक उपरोक्त। पृष्ठ संख्या १५४। मूल्य ३) रु०।

नेत्रों में पानी आना, नेत्रों में जलन होना आदि अनेक शिकायतें सुनने को मिलती हैं। रोगी छोटे २ रोगों में थोड़ी सी नेत्र परीक्षा के बाद ऐनक प्रयोग में लाते हैं। ऐनक से दृष्टि में तो परिवर्तन आ जाता है पर रोग दूर नहीं होते। थोड़े समय बाद फिर ऐनक बदलनी पड़ती है।

प्रस्तुत पुस्तक में मुख्य रूप से नेत्र दृष्टि के रोगों को ठीक करने के प्राकृतिक साधनों पर अधिक ध्यान दिया गया है प्राकृतिक चिकित्सा बहुत प्राचीन है उसी को जीवित रखने के लिये प्रस्तुत पुस्तक लिखी गई है।

तीन महान् आर्य नेताओं के भव्य चित्र

महर्षि दयानन्द, धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द तथा महात्मा हंसराज जी के भव्य बड़े २०×३० साइज पर सुन्दर छप कर तैयार हुए हैं। जो कि सब संस्थाओं में तथा घरों में रखने योग्य हैं। मूल्य प्रत्येक का १) मात्र है; तीनों चित्र एक साथ मंगाने पर डाक खर्च १) लगेगा। १२ चित्र एक साथ मंगाने पर वी० पी० डाक खर्च माफ। डाक से चित्रों को सुरक्षित भेजने की व्यवस्था है।

—गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, देहली।

॥ टङ्कारा पत्रिका नं० २ ॥

टंकारा के सम्बन्ध में कुछ लेख मालायें पक्ष और विपक्ष में उत्तर भारतीय पत्रों में निकल रही हैं। इन लेख मालाओं का आशय अभी तक हम समझ नहीं पाये—

एक दानवीर ने महर्षि दयानन्द जी की जन्म-भूमि टंकारा में ऋषि स्मारक निर्माण करने के लिए एक ट्रस्ट बना कर उसको काम करने के लिये एक सुन्दर स्थल और भूमि प्रदान कर दो और वहाँ स्मारक का रूप क्या हो इस कार्यभार को आर्य जगत् पर छोड़ दिया।

इस स्मारक का उद्घाटन बड़े समारोह से श्री अनन्त शयनम् आयंगर अध्यक्ष लोक सभा के कर कमलों द्वारा हो गया।

ट्रस्टी मंडल ने प्रतिवर्ष बोध रात्रि पर टंकारा में मेला लगे इसका बृहद् आयोजन कर दिया है।

ट्रस्टिओं ने पहली जून से श्री युधिष्ठिर जी मीमांसक के अधिष्टाता पद में वेद अनुसन्धान का कार्य प्रारम्भ कर देने का आयोजन कर दिया है।

प्रारम्भिक कार्य मासिक दो हजार का बजट बना कार्यारम्भ करने का आयोजन भी किया है।

ट्रस्ट के निर्माता ने यह स्पष्ट रूप से ट्रस्टडीड में लिख दिया है कि इस ट्रस्ट का उपयोग महर्षि द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तों के निरुपण एवं प्रचार में ही हो।

वर्तमान में १५ ट्रस्टी हैं, जो सब के सब आर्य समाजी है। इनका स्थान कारणवशात् रिक्त हो तो उन्हें स्पष्ट आदेश है कि वह आर्य-समाजी को ही चुने।

ट्रस्टी मंडल में परोपकारिणी सभा अजमेर और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के प्रधान बहैसियत प्रधान ट्रस्टी रहेंगे।

ट्रस्ट का सार्वदेशिक सभा से समन्वय हो इस कार्य के लिए ट्रस्टी मंडल ने अपने ट्रस्टी श्री-हंसराज जो गुप्ता के संयोजकत्व में एक समिति बना दो है। जिसमें ट्रस्ट के प्रधान श्री मेहरचन्द जी महाजन, ट्रस्टी महाशय कृष्ण जी तथा डा०-मथुरादास जी मोगावाले हैं। सार्वदेशिक सभा की चार माँगें ट्रस्टडीड के अनुसार कहां तक अनुषांगिक है इस पर विचार यह समिति और सार्वदेशिक सभा के नेता परस्पर कर लेंगें।

वर्तमात ट्रस्टी मण्डल ट्रस्ट बनाने का वा परिवर्तन करने का अधिकार नहीं रखता उसे तो ट्रस्टडीड के अनुसार केवल काम करने का ही अधिकार है। ट्रस्ट कोई सभा वा चुनाव संस्था नहीं है। यह हमें नहीं भूलना चाहिए।

इन परिस्थितियों में ट्रस्ट के सम्बन्ध में जो चर्चा प्रारम्भ हुई है वह अकारण है ऐसा हमारा नम्रमत है।

जो कार्य अब तक नहीं हुआ था वह अब होने जा रहा है उसमें अपने अशीर्वाद बरसाइये मार्गदर्शन करिये पर रोड़े मत अटकाइये।

आर्य जगत् को सुन कर प्रसन्नता होगी कि बम्बई के टिम्बर मर्चेन्ट श्री लाला गंडाराम जी ने पुस्तकालय के लिये ट्रस्ट को पांच हजार रुपये देना स्वीकार किया है। उनकी भावना है यदि आर्थिक परिस्थिति अनुकूल रही तो वह प्रतिवर्ष पांच हजार रुपये स्मारक को देते रहेंगे। श्री-लाला गंडाराम जी स्वयं भी वानप्रस्थी के रूप में टंकारा वास करने का सुविचार रखते हैं।

हमारे ट्रस्टी श्री भगवान देव जी आर्य (सिंधी) जो कपड़े के व्यापारी हैं उन्होंने ट्रस्ट के कोष के लिये पच्चीस हजार धनराशि एकत्र करने का जून महीने में वचन दिया है।

ट्रस्ट के मन्त्री पं० आनन्द प्रिय जी उक्त दोनों महानुभावों को मिल कर भावी धनसंग्रह की योजना बना रहे हैं।

हमें प्रसन्नता है कि आर्य समाज देहरादून ने स्मारक कार्य के लिए चन्दा एकत्र करने का

[शेष पृष्ठ २० पर]

★ वैदिक साधनाश्रम-तपोवन-देहरादून ★

वार्षिक साधनाशिविर

—:※※—

वैदिक साधना आश्रम अनेक वर्षों से स्थापित है। किन्तु वहां जाने का हमें प्रथम बार ही सौभाग्य प्राप्त हुआ।

कहां जायें, कोई तो ऐसा स्थान होना ही चाहिये जहां पहुँच कर अशान्त मन शान्त हो सके, जहां राजनीति के, धड़े बन्दी के, पार्टी बाजी के, और नाना प्रकार की कला-बाजियों झगड़े न हों, जहां मन का दुखड़ा सुनने वाला, घबराये चित्त को संतोष देने वाला कोई हो।

जहां मन की चंचलता मिटाने के साधन मिल सकें, योग की सरल सीधी साधनायें सीखी जा सकें जिनके द्वारा चित्त वृतियों का निरोध हो सके।

जहां संसारी उलझनों और संतापों से सन्तप्त लोग पहुंच कर कुछ तो मानसिक शीतलता अनुभव कर सकें।

जहां एकान्त, शान्त, निस्तब्ध स्थान हो, बन हो, जंगल हो फिर भी सत्संग, स्वाध्याय और साधना का सुभीता हो।

इन्हीं बातों को समक्ष रख कर देहरादून रेलवे स्टेशन से लगभग तीन मील परे पूर्व की ओर एक सुन्दर आश्रम बना हुआ है, कैसे बना यह आश्रम, इसकी भी एक सुन्दर गाथा है—सुनिये।

महात्मा खुशहाल चन्द जी मालिक मिलाप ने अपना सब कुछ त्याग कर, भरा भराया घर छोड़ कर, मोह ममता पर लात मार कर चौथे आश्रम में प्रवेश किया और अपना पहला नाम भी परे फेंक कर नया नाम महात्मा आनन्द स्वामी धारण किया तो संन्यास ग्रहण करते ही सर्वथा मौन होकर तपोबन के जंगल में चले गये, कहीं पत्तों की झोंपड़ी बना कर मौन हो गये, अभी मौन पूर्ण नहीं हुआ था, तो अमृतसर के विख्यात दानी और श्रद्धालु भक्त श्री बाबा गुरुमुख सिंह जी तपो बन में पधारे और कहने लगे कि यह जंगल अपना है, सरस्वती जी तो मौन थे कुछ बोले नहीं जिस दिन मौन पूर्ण हुआ तो देहरादून सुभाष नगर, प्रेम नगर, करणपुर, रायपुर और आस पास के ग्रामों को सहस्रों नर नारी वहां पहुँच गये, एक मेला सा लग गया, तब बावा गुरुमुख सिंह जी ने वहां नब्बे लाख आहुतियों का बृहद यज्ञ प्रारम्भ कराया, जिसे निरन्तर एक वर्ष तक २५ विद्वान पंडित कराते रहे, इस तपो वन के सम्बन्ध में पता लगा कि यहां हजारों वर्षों से तपस्वी लोग तपस्या करते रहे हैं, पांच हजार वर्ष पूर्व श्री द्रोणाचार्य यहीं कौरव पांडवों को सैनिक शिक्षा दिया करते थे, मसूरी तथा देहरादून के इतिहास में ऐसा ही लिखा है। यह जंगल एक दम शान्त है, नगर से बहुत दूर भी नहीं और निकट भी नहीं, स्रोत का जल बड़ा लाभप्रद है इसी बन के नीचे एक सुन्दर आश्रम बनाया जाने लगा, जिसका नाम वैदिक साधन आश्रम रखा गया, इस आश्रम से पर्वत पर कुछ ऊपर अलग अलग कुटियायें बनायीं गई महात्मा जी तो कहते ही रहे कि इतने अधिक मकान जंगल में न बनाओ, परन्तु मकान बनते ही चले गये, आश्रम से एक मील चढ़ाई चढ़कर

घने जंगल में कुछ और कुटियायें बन गईं हरे भरे साल वृक्षों का यह तपोवन इतना रमणीक और ध्यानियों के लिये इतना सहायक तथा उपयोगी है कि इन्हीं सुन्दर कुटियाओं में श्री स्वामी आत्मानन्द जी, श्री स्वामी प्रभु आश्रित जी, योगनिष्ठ ब्रह्मचारी श्री स्वामी व्यास देव जी, जैन मुनि श्री जी, तथा अन्य कितने ही महात्मा और साधक यहां योग की साधनायें करते और कराते रहे हैं, महात्मा आनन्द स्वामी जी का तो यह साधना स्थल है ही। बिना किसी प्रोपेगण्डा के तपोवन का आकर्षण बढ़ता गया, तब तो योग साधना में रुचि रखने वालों ने मांग की कि वर्ष में एक दो बार ऐसा सुभीता दिया जाये जब महात्मा आनन्द स्वामी भी यहां हों और योग साधना की शिक्षा का भी प्रबन्ध हो, इसी मांग को दृष्टि में रखकर प्रतिवर्ष योग साधना शिविर, गायत्री महायज्ञ, भजन कीर्तन, कथा, सत्संग का आयोजन होता है।

अब के यह समारोह १६ से २६ अप्रैल तक ग्यारह दिन निरन्तर जारी रहा, दूर दूर से साधक और सत्संगी पधारे हुए थे, कलकत्ता धनबाद, देहली, मोगा के कुछ परिवार अपने मोटरों पर ही तपोवन पहुंचे थे, बम्बई, काशी, इलाहाबाद, लखनऊ, आगरा, सौराष्ट्र, हैदराबाद, मेरठ, बिहार, उड़ीसा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश से भी साधक पहुँचे, लगभग तीन सौ सत्संगी तपोवन आश्रम ही में निवास करते थे।

प्रातः तीन बजे घण्टी बज जाती, एक घंटा में साधक तथा साधकायें नहा धो कर योग-साधना के लिये नियत स्थान पर एकत्र हो कर अपने २ आसन पर बैठ जाते, महात्मा जगन्नाथ जी उन्हें साधना में लगाते, चित्त वृत्तियों के निरोध का ढंग बतला कर फिर क्रियात्मिक रूप से उन्हें ध्यानावस्थित कराने का यत्न करते। एक घण्टा योग-साधना में व्यतीत होता, फिर प्राणायाम तथा योग-आसनों की शिक्षा ब्रह्मचारी सतीशचन्द जी देते और तत्पश्चात् श्री महात्मा आनन्द भिक्षु जी यज्ञ की रूखी सुखी क्रिया में ऐसा रस भरते हैं कि सब नर नारी दत्त चित्त होकर इस में भाग लेते हैं। प्रातः ८ बजे तक यज्ञ होता, अब के इस गायत्री महायज्ञ के प्रधान यजमान कलकत्ता के सेठ देवी प्रसाद जी मस्करा थे, जो परिवार सहित पधारे हुए थे, यज्ञ के पश्चात् एक घण्टा महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती गायत्री मंत्र की कथा करते, जिसे लोग ध्यान मुग्ध हुए सुनते रहते, एक घण्टा बोलकर जब महात्मा जी कहते कि एक घण्टा हो गया बाकी बातें कल कहेंगे, तो कितने ही लोग यह कह उठते कि अभी तो १०-१५ मिनट ही हुए हैं। तब भक्त महेश जी तथा महाशय ताराचन्द जी के भजन होते। दूध चाय यज्ञ शेष लेने के पश्चात् लोग स्वाध्याय तथा गायत्री जप में लग जाते, भोजन का प्रबन्ध ऋषि लंगर में था, देवियां बड़े उत्साह तथा श्रद्धा से लंगर में भाग लेती, विशेष रूप से श्री बावा गुरुमुख सिंह जी की पत्नी तो लंगर की पूरी देख भाल करतीं, ताकि सब को सुन्दर अनुकूल भोजन मिले। २॥ बजे फिर सत्संग प्रारम्भ हो जाता है, देवियों के मीठे गीत महाशय ताराचन्द जी तथा भक्त महेश जी के मन ग्राही भजन होते और फिर कविराज हरनाम दास जी, या ब्रह्मचारी सतीश चन्द्र जी, या स्वामी विश्वानन्द जी सरस्वती या श्री डा० मिलखी राम जी के प्रवचन होते, और फिर १॥ घण्टा गायत्री महायज्ञ होता। सायं ७॥ से ८ बजे तक भजन होते, और फिर पौन घण्टा श्री पं० ऋषिराम जी बी० ए० का भाषण होता, रात के नौ बजे से प्रातः तीन बजे तक निद्रा और फिर प्रातः वही

योग साधना निद्रा के घन्टों के अतिरिक्त शेष १८ घन्टे, साधना, यज्ञ, कथा, कीर्तन, आत्म चिन्तन, आत्म निरीक्षण तथा सत्संग ही में व्यतीत होते। महात्मा आनन्द स्वामी जी की पीपल वाली कुटिया में साधक लोग पहुंच कर अपनी कठिनाइयां दूर कराने का यत्न करते, वहां तो भक्तों, सन्तों, साधकों का तांता ही बंधा रहता था। एक सुन्दर सुहावना वातावरण बना हुआ था, हृदय शान्ति सन्तोष अनुभव करता था, बड़े ही भाग्यशाली लोग थे, जिन्होंने इस सत्संग से लाभ उठाया, बाबा गुरुमुख सिंह जी की नम्रता तथा श्रद्धा देखकर लोग गदगद हो जाते थे इस अवसर पर सात सज्जनों ने वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण किया और दो पुरुषों तथा एक वृद्धा देवी ने संन्यास आश्रम में प्रवेश किया और एक बड़े महत्व का कार्य यह हुआ कि तपोवन देहरादून में एक "भिक्षु शिक्षा केन्द्र" जारी कर दिया गया ताकि पढ़े लिखे विद्वान वानप्रस्थियों संन्यासियों तथा ब्रह्मचारियों को दो वर्ष शिक्षा देकर उन्हें वैदिक धर्म अर्थात् मानव-धर्म के प्रचारक वनाकर प्रचार की कमी को पूरा करने का यत्न किया जाये।

तपोवन देहरादून में केवल शिविर ही के दिनों में यज्ञ इत्यादि नहीं होता, अपितु सारा वर्ष यह कार्य जारी रहता है। प्रति दिन दोनों समय गायत्री-यज्ञ ब्रह्मचारी सतीश चन्द जी कराते हैं, महात्मा जगन्नाथ जी इस वर्ष से दोनों समय साधकों को साधना में बिठाते हैं, सत्संग कथा कीर्तन भी होता रहता है। तपोवन देहरादून एक ऐसा सुन्दर स्थान बन गया है जिस के द्वारा आर्य समाज क्षेत्र की एक बड़ी भारी त्रुटि दूर हो गई है, तपोवन आश्रम में कमरों इत्यादि का कोई किराया नहीं लिया जाता, लंगर जारी है, सत्संग होता रहता है, आध्यात्मिक उन्नति का पूरा साधन मिलता है। उठा लो लाभ इस तपोवन से।

—गोविन्दराम हासानन्द

[टंकारा पत्रिका नं० २ का पृष्ठ १७ का शेष]

शिवसंकल्प किया है। हम उन्हें रसीद बही भेज चुके हैं। आशा है देहरादून के आर्यबन्धु अच्छी धनराशि भेज कर ऋषि ऋण से उऋण होंगे।

नागपुर के श्री विश्रामभाई पटेल ने लगभग २५०) की रकम हमारी रसीदवही पर एकत्र करने का संकल्प पूरा कर लिया है।

टंकारा कार्य के लिये पोषकमण्डल बनाया है। इस मण्डल का क्रियात्मक परामर्श हमें उपयोगी सिद्ध होगा।

१०००) के दाता संरक्षक कहलायेंगे।
५००) ,, ,, उप संरक्षक बनेंगे।
२५१) ,, ,, शुभेच्छक।
१२५) ,, ,, सहायक।

तक वार्षिक १०) देने वाले सभ्य कहलायेंगे।

पोषक मंडल के अधिकार और कर्तव्य सम्बन्धित नियम विचाराधीन हैं।

ट्रस्ट में दान देने वाले महानुभावों को इनकम टेक्स से मुक्ति मिले, तदर्थ पत्रव्यवहार हो रहा है।

ट्रस्ट के गुजराती उपदेशक श्री जीवन लाल राठौर सौराष्ट्र में दौरा कर धन संग्रह कर रहे हैं।

देहली से महाशय श्री कृष्ण जी द्वारा श्री-सीताराम एण्ड सन्स तथा श्रीमती कौशल्या देवी जी द्वारा एक हजार दान में मिला है। हम उनके अनुगृहीत हैं।

श्री मगनभाई वल्लभ भाई पटेल जो हमारे कोषाध्यक्ष हैं उन्होंने भी एक हजार दान पूर्व से ही दिया है।

टंकारा ट्रस्ट को अभी निम्नलिखित धनराशि प्राप्त हुई है जो धन्यवाद पूर्वक स्वीकार की जाती है।

१. १०१) श्री जशराज जग्गा एडवोकेट।
२. २००) गुरुकुल विद्यालय फिरोजपुर।
३. ६०) लाला किशनचन्द खन्ना।
४. ५०) आर्य समाज अहमदाबाद।
५. ५०) परमेश्वरी देवी जालंधर सीटी।
६. ३८।=)॥ प्रधान आर्य समाज मंडी हिमाचल प्रदेश।

निवेदक :
आनन्द प्रिय मन्त्री,
महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट

नवदम्पति को भेंट देने योग्य अनुपम

उपहार

भारतीय स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण व चिरस्थायी बनाने के लिये
आज भारत को कर्मवीर, बुद्धिमान् व शौर्य-सम्पन्न
युवकों की आवश्यकता है। उस आवश्यकता
की पूर्ति आपके हाथों में है।

**क्या आप चाहते हैं कि आपकी सन्तान समाज में सम्मान प्राप्त करे यदि हां !
तो उसके लिए प्रयत्न करना आपका कर्त्तव्य है।**

किस प्रकार?

यह जानने तथा अनेक कर्त्तव्य से परिचित होने के लिए

इच्छानुसार संतानोत्पत्ति

यह पुस्तक मँगा कर अवश्य पढ़िये। पुस्तक पढ़कर आप अनुभव करेंगे कि "पुत्र या पुत्री, धर्मात्मा या पापी, शासक या चोर, जितेन्द्रिय या व्यभिचारी, गौर या श्याम वर्ण की" सन्तान का निर्माण तथा वर्थ कन्ट्रोल अपने ही हाथों में है।

इसकी महत्ता पढ़ने से ही विदित होगी

सजिल्द मूल्य २॥) डाक व्यय पृथक—

लेखक:—
वीरेन्द्र गुप्त

प्राप्ति स्थान—**वीरेन्द्रनाथ अश्विनी कुमार**
प्रकाशन मँदिर, बाजार चौक, मुरादाबाद।

स्वाध्याय योग्य उत्तमोत्तम पुस्तकें

बाल्मीकि रामायण	६)
दयानन्द ग्रन्थ संग्रह	३॥)
सृष्टि का इतिहास	१॥)
उपनिषद आर्यमुनि भाष्य	६)
श्वेताश्वरोपनिषद	१)
प्रभुभक्ति (आनन्द स्वामी)	१॥)
प्रभुदर्शन ...	२॥)
तत्त्वज्ञान	३)
आनन्द गायत्री कथा	॥=)
एक ही रास्ता	।॥)
भगवान शंकर दयानन्द	।=)॥
सत्यनारायण व्रत कथा	॥=)
मानव जीवन गाथा	१)
वैदिक गृहस्थाश्रम	५)
ऋषि-गाथा महाकाव्य	४)
स्वाध्याय संग्रह (वेदानन्द)	२)
वेद परिचय ...	।=)
महर्षि दयानन्द (प्रो० इन्द्र)	२)
आर्य समाज का इतिहास	१।=)
ओंकार निर्णय (शिवशंकर)	१॥)
वैदिक प्रार्थना	१॥)
सचित्र योगासन	१॥)
बहिनों की बातें (सिद्धगोपाल)	१।)
दर्शनानन्द ग्रंथ संग्रह पूर्वार्द्ध	२॥)
,, ,, ,, उत्तरार्द्ध	२॥)
दयानन्द चित्रावली	२॥)
भारतीय संस्कृति	॥)
आर्षयोग प्रदीपिका	३॥)
कर्तव्य दर्पण (ना० स्वामी)	१।)
वैदिक संध्या रहस्य	।=)
आर्य समाज क्या है ?	।॥)
संध्या, हवन प्रदीपिका	॥)
सन्ध्याविनय	॥)

प्रार्थना प्रदीप	॥)
संस्कार विधि विमर्श	३)
स्त्रियों का स्वास्थ्य और रोग	३)
विवाह और विवाहित जीवन	२॥)
घर गृहस्थी	३॥)
आर्य सिद्धान्त दीप	१।)
गीत श्रद्धांजलि (भजन)	१।)
सत्यहरिश्चन्द्र नाटक	१।)
यज्ञोपवीत मीमांसा	।॥)
आदर्श सुधारक दयानन्द	॥=)
गृहस्थाश्रम (दयानन्द)	॥=)
बाल शिक्षक ,,	।=)
आत्म कथा ऋषि दयानन्द ,,	।=)
आर्याभिविनय ,,	॥)
वेद विरुद्धमत खण्डन	।=)
शिक्षा पत्री ध्वान्ति निवारण	।=)
भ्रान्ति निवारण (दयानन्द)	।=)
भ्रमोच्छेदन ,,	।)
हुगली शास्त्रार्थ ,,	।)
वेदों का महत्व (दर्शनानन्द)	।)
ईश्वर प्राप्ति ,,	≡)
ईश्वर विचार ,,	=)
जीवात्मा ,,	=)
वेदों की आवश्यकता ,,	–)
वेद किस पर प्रकट हुए ,,	–)
बाल शिक्षा, धर्म शिक्षा ,,	≡)
वर्ण व्यवस्था (दर्शनानन्द)	–)
पितृ श्राद्धविचार ,,	–)
दयानन्द का उद्देश्य ,,	–)
,, ,, लक्ष्य ,,	–)
सत्यार्थ प्रकाश शंका समाधान	।)

स्वामी दयानन्द और वेद	।)
भक्ष्याभक्ष्य विचार	≡)
वैदिक धर्म शिक्षा	≡)
आर्य सत्संग गुटका	।–)
विश्व विज्ञान परमात्म बोध	≡)
अखण्ड भारत (चन्द्र गुप्त)	॥)
मांस मदिरा का निषेध	≡)
गायत्री व्याख्या	।)
गीता वचनामृत	।=)
गोरक्षा परम कर्त्तव्य	॥)
स्वास्थ्य विज्ञान	।–)

चित्र चित्र चित्र

धार्मिक मंत्रों के चित्र साईज– १४॥×२२

सन्ध्या मन्त्र	।–)
प्रार्थना के ८ मंत्र अर्थ सहित	।–)
आर्य समाज के नियम	।–)
जीवन मृत्यु के प्रश्न	।–)
यम नियम व्याख्या सहित	।–)
संगठन सुक्त	।–)
मन्त्रों के चित्र ११×१४	॥)
ऋग्वेद का प्रथम मन्त्र	≡)
यजुर्वेद का प्रथम ,,	≡)
सामवेद का प्रथम ,,	≡)
अथर्ववेद का प्रथम ,,	≡)
दीर्घ जीवन की प्रार्थना	≡)
धर्मंचर, सत्यंवद	≡)
मंत्रों के चित्र छोटे ७।×५॥	–)॥

ओ३म्, नमस्ते, स्वागतम, विश्वानिदेव सहनाववतु, धृतिक्षमा, नमः शम्भवायच, त्वमेव माता च पिता, नैनंछिन्दति, अहिंसा परमो धर्म, आदि आदि ।

महाभारतम् संस्कृत के विद्यार्थियों के लिये श्री आचार्य राजेन्द्र शास्त्री उपाध्यक्ष दयानन्द वेदविद्यालय देहली द्वारा रचित केवल संस्कृत गद्य में मंगाकर संस्कृत में वार्तालाप करना सीखें। मूल्य सजिल्द का ३) रु०

गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, देहली ।

गोविन्दराम हासानन्द सम्पादक तथा मुद्रक ने जैय्यद प्रेस में छपवाकर वेदप्रकाश कार्यालय नई सड़क देहली से प्रकाशित किया ।

वेद प्रकाश

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट (टङ्कारा) अंक

★ सौराष्ट्र के भामाशाह ★

सेठ श्री नानजी भाई कालीदास मेहता
महर्षि दयानन्द स्मारक टंकारा ट्रस्ट के निर्माणकर्ता

न्यायमूर्ति श्री मेहरचन्द जी महाजन सर्वोच्च न्यायालय
के भूतपूर्व न्यायधीश, टंकारा ट्रस्ट के प्रधान

कर्मवीर श्री आनन्द प्रिय जी पंडित
मन्त्री, महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा।

वेदप्रकाश का अमूल्य विशेषांक
महर्षि दयानन्द से पूर्व का भारत

वेदप्रकाश का ७वां वर्ष इस अंक के साथ समाप्त हो रहा है। ८वें वर्ष में प्रवेश यह एक विशेष उत्साह के साथ कर रहा है। आठवें वर्ष का पहला अंक **"महर्षि दयानन्द से पूर्व का भारत"** नामक १५० पृष्ठों का विशेषांक अपने ग्राहकों को बिना अतिरिक्त मूल्य लिए दे रहा है। इससे पूर्व नीचे विज्ञापित विशेषांक भी वेदप्रकाश ने समय-समय पर छाप कर अपने पाठकों को दिए हैं। परन्तु उस समय उनका मूल्य वेदप्रकाश के मूल्य से अतिरिक्त रहा। इस वर्ष से यह योजना आरम्भ की है कि वेदप्रकाश के ग्राहकों को बिना मूल्य विशेषांक दिया जाया करे।

इस विशेषांक के लेखक हैं **स्व० राजरत्न श्री आत्माराम जी अमृतसरी**। लेखक ने महर्षि से पूर्व के भारत को दो भागों में विभक्त किया है वैदिक और अवैदिक। इस अंक में वेदों में क्या २ ज्ञान विज्ञान है उसका विस्तार से वर्णन है। ऋषि के आगमन से पूर्व जो अवस्था प्राचीन तथा तात्कालिक भारत की थी उसका दृश्य आंखों के सामने चित्रवत् आ जाता है। उस समय के धार्मिक सामाजिक व राजनैतिक अवस्थाओं का भी ज्ञान प्राप्त होता है।

वेदप्रकाश का वार्षिक मूल्य नये वर्ष से ३) कर दिया गया है। बड़े साइज के १५० पृष्ठ के विशेषांक का मूल्य १॥) होगा। पर जो ३) भेज कर वेदप्रकाश के ग्राहक बन जावेंगे उन्हें ३) में ही विशेषांक तथा वर्ष भर तक वेदप्रकाश मिलता रहेगा। शीघ्र ही ३) रु० भेजकर वेदप्रकाश के ग्राहक बनिये तथा विशेषाँक सुरक्षित करा लीजिये। विशेषाँक सीमित संख्या में छापा जा रहा है।

वेद प्रकाश कार्यालय, गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क देहली।

वेदप्रकाश के चार अमूल्य विशेषांक रियायती मूल्य में

१. सचित्र दयानन्द ग्रन्थ संग्रह

जिसमें ऋषि की आत्मकथा सहित २० पुस्तकों का संग्रह है, प्रत्येक पुस्तक के साथ पुस्तक का रचना काल तथा परिस्थितियों का इतिहास भी है। साथ में ऋषि के ७ असली फोटो चित्र भी हैं। मूल्य ४॥) रियायती ३॥)

२. सचित्र बाल्मीकि रामायण

धारावाही हिन्दी में मूल संस्कृत सहित प्रक्षिप्त भाग तथा अनावश्यक कथाओं को निकाल कर आर्य मर्यादानुकूल ग्रन्थ का संकलन किया गया है।

मूल्य १२) वेदप्रकाश के ग्राहकों से ९)

३. सृष्टि का इतिहास

ले०—पंडित लेखराम आर्य पथिक। जिसमें सृष्टि उत्पत्ति वेदादि सत्शास्त्रों का समय निर्धारण करते समय जो आधुनिक इतिहासकार, पाश्चात्यों का अनुकरण कर भूल करते हैं उनके लिए यह उपयुक्त मार्ग प्रदर्शक उत्तम पुस्तक है मूल्य २) रियायती मूल्य १॥)

४. बृहदारण्यक कथा माला

बृहदारण्यक उपनिषद् ब्राह्मण ग्रन्थ का एक भाग है, उसकी कथाओं के पाठ और श्रवण से वैदिक संस्कृति का अच्छा ज्ञान प्राप्त होगा पढ़ने योग्य उपयोगी पुस्तक है मूल्य ३) रियायती मूल्य २॥) है। सब का डाक खर्च अलग लगेगा।

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क देहली।

टंकारा के लिये हमें दस लाख रुपये दीजिये

—❊❊❊—

महर्षि दयानन्द स्मारक उद्घाटन के पश्चात् ट्रस्ट ने मासिक तीन हजार का बजट बना कार्य प्रारम्भ कर दिया है।

टंकारा ट्रस्ट के कोष में दस लाख रुपये एकत्र करना आवश्यक है। इस शिवरात्री तक आर्य ज ्त इस राशी को पूर्ण करने की हमें शक्ति दे।

वर्तमान में निम्नलिखित कार्य टंकारा में प्रारम्भ हो गया है। श्री मीमांसक जी के अधिष्ठाता पद में वेद अनुसंधान का कार्य प्रारम्भ हो गया है।

होम्योपैथिक धर्मार्थ औषधालय स्वामी ब्रह्मानन्द जी के नेतृत्व में काम कर रहा है।

अतिथिओं के एवं वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों के लिए भोजनालय चालु हो गया है।

साधनाश्रम में इस समय आठ साधक भिन्न-भिन्न रूप से अपनो सेवायें दे रहें हैं। इसमें वानप्रस्थी, गृहस्थी संन्यासी सब हैं।

दयानन्द ब्रह्मचर्याश्रम प्रारम्भ हो गया है।

सरकार मान्य महर्षि दयानन्द हाई स्कूल मैट्रिक तक प्रारम्भ हो गया है। इसके मकान तथा साधन सरकार ने दिये हैं। इसको ९० प्रतिशद ग्रांट भी मिलेगी।

महर्षि दयानन्द आर्ट गेलरी में महर्षि के जीवन से सम्बन्ध रखते हुए चित्रों का निर्माण प्रारम्भ हो गया है।

महर्षि दयानन्द विक्रय पुस्तकालय प्रारम्भ हो गया है।

महर्षि दयानन्द पुस्तकालय के लिए पुस्तकें तथा आलमारियां आनी प्रारम्भ हो गई हैं। आलमारियों के आर्डर गोदरेज फर्म को दिए हैं।

मासिक पत्रिका हिन्दी में प्रारम्भ की जाय इसकी प्रारम्भिक व्यवस्था हो गई है।

अनुसंधान विभाग के ग्रन्थ वैदिक यंत्रालय में छपे इसका आयोजन हो रहा है।

गुजराती उपदेशक आसपास के प्रदेश में प्रचार करे इसकी व्यवस्था कर दी गई है। इसी प्रकार उद्घाटन के तीन मास के भीतर ही ट्रस्ट ने टंकारा महालय को अनेक प्रवृत्तियों का केन्द्र बना दिया है।

हमें टंकारा स्मारक कार्य के लिये स्थिर कोष में दस लाख रुपये चाहियें। इसके छः प्रतिपद व्याज से हो भावी का कार्य करने का हमारा ध्येय है। दस लाख का व्याज साठ हजार रु. होगा। टंकारा कार्य के लिए मासिक पांच हजार तो चाहिए।

चालू काम के उपरान्त हमें वहां के कार्यों के लिए निम्न साधन और सामग्री चाहिए।

(१) गोदरेज की स्टील के रेक्स आलमारियां १०,००० रु०।
(२) सरकारी स्कूल भवन जो मिला है, इसमें कमरे दान के लिये १०,००० रु०।
(३) महर्षि दयानन्द स्कूल को सायंस लेबेरोटरी के लिये ४००० रु०।
(४) महालय में एक दर्जन स्नानगृह तथा शौच गृह बनाने के लिए पांच-पांच हजार।
(५) अन्य छोटे मोटे परिवर्तन तथा समानादि के लिए ५०००।
(६) पुस्तकालय की पुस्तकों के लिये दस हजार प्रतिवर्ष चाहिये।

काम अनेक हैं। योजनायें अनेक है। आर्य जगत् को चाहिये। टंकारा को सच्चे अर्थों में महर्षि का स्मारक बना दे।

निवेदक—

कारेली बाग
बड़ोदा

आनन्द प्रिय मन्त्री
महर्षि दयानन्द स्मारक
टंकारा

ट्रस्टी श्री नानालाल जी उपाध्याय जिनकी सेवायें ट्रस्ट को उपयोगी हुई है।

निवृत्त मुख्य न्यायमूर्ति श्री मेहरचन्द जी महाजन ध्वजोत्तालन कर रहे हैं।

महर्षि दयानन्द महालय के कार्यकर्तागण ता० ३७-६-१९५९ को लिया गया फोटो

१. ऊपर की पंक्ति में बायें से सर्वश्री रघुनाथ जी पहरेदार, स्वामी ब्रह्मानन्द जी चिकित्सक पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक अनुसंधानाध्यक्ष, इन्दूलाल मोतीलाल मुख्यकर्मचारी।

२. दूसरी पंक्ति में—सर्वश्री प्रभुलाल गढ़िया सहायक अध्यापक, लल्लूभाई तुलजाभाई व्यवस्थायक, जीवनलाल राठोड़।

३. तीसरी पंक्ति में—सर्वश्री मुकुन्दराय त्रिवेदी बी. एस. सी. बी. टी. मुख्याध्यापक, गोविन्दराम हासानन्द, महर्षि प्रदर्शनी (आर्ट गेलेरी) के संयोजक, नानालालभाई उपाध्याय वकील जामनगर (ट्रस्टी)

४. चौथी पंक्ति में—विद्यार्थी रसिकलाल, अनिलकुमार, प्रवीणकुमार और वासुदेव रसोईया।

★ वेद प्रकाश ★

सम्पादक—गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष—७ : आषाढ़ २०१६ जुलाई १९५९ : वार्षिक मूल्य २॥)
अंक—१२ : दयानन्दाब्द १३६ आषाढ़ १८८१ शाके : विदेशों से ५ शि०

महर्षि दयानन्द स्मारक टंकारा

प्राक्कथन

टंकारा के महर्षि स्मारक उद्घाटन समारंभ का यह एतिहासिक अंक आपकी सेवा में प्रस्तुत करते हुए हमें परम हर्ष होता है। इसे हम हिन्दी भाषा में प्रकाशित कर रहे हैं। जिससे अखिल भारतीय आर्य जगत् टंकारा स्मारक से परिचित हो जाए।

यह अंक वेद प्रकाश के विशेष अंक के रूप में प्रकाशित हो रहा है। अतः इसके प्रकाशन में तथा सम्पादन में हमें श्री गोविन्दराम जी हासानन्द से उचित मार्ग दर्शन प्राप्त हुआ है। प्रारम्भिक परिच्छेद उन्ही की सत्प्रेरणा के कारण इसमें सम्मिलित किये गये हैं।

इससे पूर्व हम टंकारा ट्रस्ट के निर्माण का इतिहास छाप चुके हैं। इस अंक में उद्घाटन समारंभ से पूर्व स्मारक निर्माण की दिशा में जो भी कोई आन्दोलन हुए उनका भी वर्णन कर दिया है। इस अंक में महर्षि दयानन्द के परम भक्तों ने किस प्रकार अदम्य उत्साह एवं प्रेम से महर्षि की जन्म भूमि टंकारा में उनके स्मारक के निर्माण में भाग लिया, उसका वर्णन है।

हमने चेष्टा तो की है, कि उन सब महानुभावों तथा संस्थाओं के नाम जिन्होंने सहयोग दिया, आ जावे पर पूरी जानकारी के अभाव के कारण किन्हीं व्यक्तियों वा संस्थाओं के नाम वा काम रह जाये तो आशा है वे हमें क्षमा प्रदान करेंगे।

हम आर्य जगत् के एक एक व्यक्ति और संस्था के आभारी हैं। जिन्होंने परोक्ष वा प्रत्यक्ष रूप में सहयोग प्रदान किया।

टंकारा का महर्षि दयानन्द स्मारक समस्त आर्य समाज की संपत्ति है। ट्रस्ट आर्य जगत की चिर मनोवांच्छित इच्छाओं को पूर्ण करने के लिये सेवक रूप में खड़ा है। ऋषि के परम भक्त सेठ श्री नान जी भाई ने महर्षि दयानन्द जी की जन्म भूमि टंकारा में ऋषि स्मारक निर्माण करने के लिये एक ट्रस्ट बनाकर उसको काम करने के लिये सुन्दर स्थल और सम्पत्ति प्रदान कर दी। और वहाँ स्मारक का रूप क्या हो, इस कार्य भार को आर्य जगत् पर छोड़ दिया।

टंकारा स्मारक आर्य समाज में एक नया युग प्रारम्भ कर दे, ऐसी हमारी भावना है। परम देव विभु के आशीर्वाद इस कार्य पर बरसते रहें, यहीं शुभ कामना है।

निवेदक

आनन्द प्रिय पंडित

मंत्री

ऋषि की जन्मभूमि टंकारा

जब १६२६ में टंकारा में श्री मद्दयानन्द जन्म शताब्दी महोत्सव मनाया गया था, उस समय महर्षि की जन्म भूमि टंकारा ही है, इसका निर्णय आर्य जगत में भली भांति कर लिया था। इसका प्रमाण हमें पंडित विजयशंकर मूलशंकर द्वारा प्रकाशित टंकारा शताब्दी तथा दयानन्द जन्म स्थान निर्णय, श्री कृष्ण शर्मा आर्य मिश्नरी द्वारा टंकारा (महर्षि का वंश परिचय सहित) नाम की पुस्तक से तथा श्री त्रिभुवन दास दामोदर दास गढ़ीआ लिखित "स्वामी दयानन्द सरस्वती नां जन्म स्थानादिनो निर्णय" (स्वामी दयानन्द सरस्वती के जन्म स्थान आदि के निर्णय) की पुस्तिका से मिलता है।

श्री कृष्ण शर्मा आर्य मिश्नरी द्वारा महर्षि का वंश परिचय तथा प्रादुर्भाव नाम का जो परिच्छेद लिखा गया है, वह सामुहिक होने से हम यहां उद्धृत करते हैं।

स्वर्गीय श्री बाबू देवेन्द्रनाथ जी ने महर्षि दयानन्द की वंशावली का पता लगाने में बड़ा ही सराहनीय परिश्रम किया है। उन्होंने अपनी छानबीन के पश्चात् निर्णय किया है कि महर्षि श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज के पूर्वज कच्छ से काठियावाड़ में आकर बसे थे और कच्छ में वे लोग सिद्धपुर (गुजरात) से पहुँचे थे। कहते हैं आज से लगभग १००० वर्ष पूर्व अनहीलवाड़ा के महाराजा मूलराज सोलहवीं तीर्थ यात्रा के लिये एक बार उत्तर भारत पधारे और जब वह वहां से वापस लौटे तो कन्धार, कुरुक्षेत्र, स्थाण्यशिवर, कान्यकुब्ज तथा नैमिषारण्य इत्यादि तीर्थों के आस पास से लगभग एक हजार ब्राह्मणों को अपने साथ लाये और उन ब्राह्मणों को विपुल धनादि सामग्री दे अपनी राजधानी के शहर सिद्धपुर में बसा दिया। उदीची अर्थात् उत्तर देश से आने तथा संख्या में एक सहस्र होने से ये लोग यहां औदीच्य सहस्र (ब्राह्मण) कहलाने लग गये, जो अब तक वहां इसी नाम से पुकारे जाते हैं।

परम्परा से यह प्रसिद्ध है कि इन ब्राह्मणों में से कुछ ब्राह्मण यहां से तीर्थ यात्रा के लिये भुज (कच्छ) पधारे, वहां उस समय कच्छाधिपति एक बृहदयज्ञ में संलग्न थे। जब ये ब्राह्मण दर्शक रूप से उस यज्ञ समारंभ में पहुँचे तो उन में से एक विद्वान् ने कच्छ नरेश का ध्यान यज्ञ सम्बन्धी कुछ त्रुटियों की ओर आकर्षित किया। महाराजा कच्छ ने जब सचमुच उनके कथन में सचाई अनुभव की, तो वह उन ब्राह्मण देवता पर बहुत प्रसन्न हुए। यज्ञ की समाप्ति पर उन्हें बाग, बगीचा, ग्राम, भूमि तथा धनादि बहुत कुछ दक्षिणा दी, उस दक्षिणा को पाकर ये ब्राह्मण लोग वहीं बस गये तथा आगे चलकर उनकी वंश वृद्धि हो गई।

ईसा का सौलह वीं शताब्दी के अंत में कच्छ राज्य परिवार के लोग काठियावाड पर बड़े जोरों के आक्रमण कर रहे थे, उन्हीं आक्रमणों में से एक आक्रमण फलस्वरूप सन् १७०२ ई० में जाम नगर राज्य की स्थापना हुई। सोराष्ट्र के इतिहास से यह बात प्रसिद्ध है कि इस गद्दी के संस्थापक श्री जामरावल के साथ कच्छ से कुछ ब्राह्मण भी आये थे। उन ब्राह्मणों में औदीच्य ब्राह्मण भी थे। इतना ही नहीं, अपितु रायगढ़ जी के पुत्र रेवाजी के साथ भी कच्छ से कुछ ब्राह्मण आये थे, उन्हीं रेवाजी ने १७४३ विक्रमी से ११ वर्ष तक जिला कलेक्टर की हैसियत से

मौरवी में शासन किया था। जामरावल के साथ आने वाले ब्राह्मण जामनगर में तथा रेवाजी के साथ आने वाले मौरबी में बस गये। स्वामी दया नन्द जी महाराज के पूर्वज जामनगर के निवासी सिद्ध होते हैं। क्योंकि जामनगर राज्य में जोडिवा नामक ताअल्लुका के केशिया नामक ग्राम में मिली हुई जागीर पर स्वामी दयानन्द जी की बहिन प्रेमबाई के वंशधर श्री पोपट लाल रावल का आज दिन तक अधिकार है। खोज करने पर पता चला है कि जामनगर से वे लोग मोरवी राज्य के "वरसामेडी" नामक ग्राम में आकर आबाद हुए। वहां पर उनके दो दल आबाद थे, उनमें से एक तो टंकारा में जाकर आबाद हो गया। तथा दूसरा पडाल में जाकर आबाद हुआ। टंकारा वाले दल में एक व्यक्ति मेघ जी त्रिवेदी हुए। उनके दो पुत्र हुए। एक का नाम विश्राम जी तथा दूसरे का नाम डोसा जी था। विश्राम जो जीवापुर में जाकर रहने लगे और डोसा जी जो संस्कृत के एक उद्भट विद्वान् थे, उनके पास संस्कृत ग्रन्थों का भी अच्छा संग्रह था, वह टंकारा में ही बने रहें। इन डोसा जी के एक पुत्र का नाम कंवर जी था। और कंवर जी के पुत्र वेलाजी हुए। स्वर्गीय श्री देवेन्द्र बाबू का कथन है कि टंकारा के श्री पोपट लाल रावल की बुआ श्री वेणीबाई के मुख से हमें यह मालूम हुआ है कि यह वेलाजी या तो स्वामी जी के चचेरे भाई थे। स्वामी दयानन्द जी के पितामह अर्थात् कर्षन जी के पिता का नाम मूलजी त्रिवेदी था। इन्हीं कर्षन जी मूलजी त्रिवेदी के घर आश्विन वदी सप्तमी संवत् १८८१ वि० को भगवान श्री दयानन्द जी का प्रादुर्भाव हुआ था।

इसी टंकारा में श्री कुबेरनाथ जी के शिवालय में शिवरात्री के दिन बालक मूलशंकर को सच्चे शिव की खोज करने का बोध हुआ।

टंकारा में जिस स्थान पर महर्षि का जन्म हुआ था, उस का चित्र टंकारा शताब्दी तथा दयानन्द जन्म स्थान निर्णय की प्रकाशित पुस्तिका में दिया गया है। इसी पुस्तक में शताब्दी समारोह के समय स्वामी जी के बाल साथी १०३ वर्ष के इब्राहीम ने जो भाषण दिया, उस का सारांश दिया है।

श्री इब्राहीम ने बतलाया कि मैं बाल्यकाल में मैं बालक मूल जी के साथ खेला करता था। जिस मकान में महाशय पोपट लाल जी (जो महर्षि की सगी बहिन की तीसरी पीढ़ी की संतान है) रहते हैं, और अब वह मकान उनके भाई प्राण शंकर के पास है, वही स्वामी जी का जन्मगृह है। तथा शिव मंदिर भी वही मंदिर है जिसमें दयानन्द जी के पिता कर्षन जी बालक मूल जी के साथ लम्बी चौड़ी उपासनायें किया करते थे।

इसी उत्सव में महर्षि के संबंधी श्री पोपट लाल जो ने घोषणा की कि महर्षि का जन्म टंकारा में हुआ था, और प्रमाण में उन्होंने कहा कि जिस घर में स्वामो जी का जन्म हुआ था, वह आज भी हमारे पास हैं, और जिस मंदिर में उन्हें बोध हुआ था। वह भी हमारे कुल द्वारा स्थापित हुआ था।

इस प्रकार टंकारा में ही ऋषि को जन्मभूमि प्रमाणित मान ट्रस्टी मंडल ने मोरवी नरेश का १० लाख का राजप्रसाद स्मारक कार्य के लिये खरीद लिया है।

टङ्कारा का इतिहास और भूगोल

जिस समय टंकारा में श्री स्वामी दयानन्द जी का जन्म हुआ था, उस समय टंकारा व्यापार का उत्तम केन्द्र था। कहते हैं, उस समय इसकी आबादी ८००० तक पहुँच चुकी थी काठियावाड गाजटियर पृष्ठ ६६३ से पता चलता है कि सन् १८८१ ई० में इसकी आबादी लगभग ५७२४ की थी।

गुजरात के सुप्रसिद्ध कवि सम्राट श्री नाना लाल दलपतराम कवि स्वामी दयानंद सरस्वती जी के जन्म स्थान आदि का निर्णय नाम की पुस्तक में लिखते हैं कि एक समय टंकारा महल बड़ौदा के महेराल कुटुम्ब के पास गिरवी रखा हुआ था। उस समय टंकारा और जिवापुर के बीच में हरे वृक्षों की घटाएं इस प्रदेश को अति सुन्दर बना रही थीं। १८९६ में जब श्री नाना लाल कवि टंकारा पहुंचे थे उस समय डेमि नदी के किनारे पर स्थित टंकारा बड़ा ही मनोहर और सस्य श्यामल प्रतीत होता था। उस समय यहां की बस्ती भी अधिक थी। और लोग विद्वान् तथा समृद्ध थे। स्वयं मोरवी के महाराजा यहां आकर रहते थे। परन्तु आज टंकारा सब प्रकार से सत्वहीन हो गया है। टंकारा व्यापार तथा व्यवसाय के प्रसिद्ध था। यदि किसी को २०० मन तेल या १०० मन घी की एक दम आवश्यकता होती थी तो वे टंकारा के बाजार से क्षण भर में प्राप्त कर सकते थे। जो वस्तु मोरवी में उपलब्ध न हो सकती थी वह टंकारा में अनायास ही प्राप्त हो जाती थी। मोरवी शहर में जो पदार्थ बड़ी कठिनता से प्राप्त होता था वह टंकारा में स्थान स्थान पर मिल सकता था। मोरवी यद्यपि राजधानी था, तथापि व्यवसाय तथा चहल पहल में टंकारा ने उसे मात किया हुआ था।

इसके अतिरिक्त टंकारा शहर बहुत सुन्दर था। सौराष्ट्र देश के अनुकूल स्वच्छ, सुन्दर तथा स्वास्थ्यप्रद गृह उसमें यत्र तत्र सर्वत्र सुशोभित थे। वापी कूप तथा तडागों की शोभा अपूर्व होती थी। जलाहरणाथ आने जाने वाली टंकारा वासिनी महिलाओं से इनके तट सदा मुखरित और हास्य भरित रहते थे। उनके गृहों में रमणीय पुष्पवाटिकाओं और फलभरित द्रुमों की शोभा से टंकारा की श्री और भी द्विगुणित होती थी। स्थान स्थान पर श्रुति की पावन ऋचाओं के सस्वर मधुर गान और अशुचि विनाशक, प्रकृति मोहक यज्ञ के सुरभित धूम से वहां का वातावरण सदा स्वच्छ और निर्मल बना रहता था। बालक और बालिकायें अकुलोमय भाव से हरे भरे खेतों में, वन पर्वतों में, वन बिहारी पखेरुओं के साथ खेला करते थे। गोपाल अपनी श्यामल दूर्वा चरती हुई दुग्धवती धेनुओं के साथ-साथ निश्शंक होकर बनों में संगीत गाया करते थे। स्वर्ग से उतरती हुई चांदनी रातें कलख कारिणी डेमो नदी की नीलधाराओं में सहस्त्रधा बिखर कर नाचा करती थी। उमड़ घुमड़ कर घिरे हुए श्यामल मेघ क्षेत्रों, अरण्यों तथा उच्चावच भूमियों को प्रति ध्वनित करते हुए श्रावण और भाद्र पद की शोभा को आनन्द विकम्पित कर देते थे। उन दिनों ऐसी दिव्य शोभा टंकारा की थी।

विक्रम संवत् १७७८ में श्रीयुत जीवा महत्ता ने इस टंकारा नगरी के चारों तरफ एक सुदृढ़ कोट खिंचवा दिया था। जिसकी पुष्ट दीवारें

आक्रमणकारी दल की वीरता पर हास्य किया करती थी। इस कोट के चार सुदृढ़ मुख्य द्वार थे जिनके नाम ये हैं।

(१) जामनगर दरवाजा

(२) मौरवी दरवाजा

(३) राजकोट दरवाजा

(४) वांकानेर दरवाजा

इसी रमणीक शहर में ऋषि दयानन्द का जन्म हुआ था। क्या ये लक्षण किसी ग्राम के हो सकते हैं? अतः यह स्पष्ट है कि टंकारा एक शहर था।

नवीन प्रांतों की रचना के पश्चात् टंकारा मध्य सौराष्ट्र में सौराष्ट्र प्रदेश मुंबई राज्य में मिला दिया गया है। इस समय टंकारा मौरवी तालुका का एक ग्राम है। इस समय इसकी जन संख्या ४००० है। जिसमें ५०० के लगभग मुसलमान है। बाकी अधिकांश जैन और वैष्णव हैं।

टंकारा आने के मार्ग

टंकारा तीन मार्गों से आप आ सकते हैं।

(१) राजकोट से,

(२) वांकानेर से,

(३) मौरवी से,

टंकारा मोरवी से १४ मील है। राजकोट से ?७ मील है और वांकानेर से २० मील है। राजकोट से, मोरवी से, और वांकानेर से स्टेट ट्रांसपोर्ट की बसें चलती हैं।

वांकानेर से मीटरगेज के द्वारा आप मोरवी भी जा सकते हो। और मोरवी से नैरोगेज के द्वारा रेलगाड़ी से टंकारा आ सकते हैं।

मोरवी से नैरोगेज १४ मील की टंकारा तक है।

दिल्ली से आने वालों के लिये सुलभ मार्ग यहां है कि वह दिल्लो से मीटरगेज में मेहसाना, विरमगाम, होते हुए, वांकानेर आवें और वांकानेर से मोरवी की गाड़ी में बैठें। और मोरवी से टंकारा की गाड़ी में। दिल्ली से चलने वाली अहमदाबाद मेल में जामनगर का एक डिब्बा रहता है उसमें बैठने से मेहसाना में गाड़ी बदलने का झंझट नहीं रहता। वांकानेर बदलना होता है इस डिब्बे में सीट रिजर्व भी कराई जा सकती है।

दूसरा मार्ग यह है कि वह मेहसाना, वीरम गाम होते हुए राजकोट पहुँचें और राजकोट से सीधे मोटर बस द्वारा टंकारा आयें।

बम्बई से आने वालों को बड़ी लाईन से वीरम गाम आना चाहिये। और फिर वीरम गाम से गाड़ी बदल कर मोरवी वा राजकोट आना चाहिये। वीरमगाम में नौलखी के डिब्बे में बैठने से मोरवी पहुंच सकते हैं।

टंकारा में पोस्ट आफिस तार घर और टेलीफोन की व्यवस्था है।

इस समय स्मारक महालय में यात्रियों को ठहरने की सब प्रकार की सुविधा है। जब कभी कोई यहां आना चाहे वह आगमन की सूचना, व्यवस्थापक महर्षि दयानन्द महालय को अवश्य देंगे।

टंकारा का ऋतु बड़ा सुहावना है। पानी पाचक है। न तो अत्यधिक सर्दी होती है और न अत्यधिक गर्मी, वर्षा की भी उचित मात्रा ही रहती है।

उन्नीस सौ छब्बीस का टङ्कारा जन्म-शताब्दी-महोत्सव

तथा

टंकारा आर्यसमाज की स्थापना

टंकारा में महर्षि का स्मारक बने इस दिशा में संगठित कार्य सर्व प्रथम १९२६ में हुआ जब मथुरा की 'महर्षि जन्म-शताब्दी के अवसर पर टंकारा में भी शताब्दी मनाने की घोषणा की गई।

इसी लक्ष्य को उद्देश्य रखकर तारीख २३-८-२५ के शुभ दिवस में आर्य समाज मुंबई में कच्छ काठियावाड़ निवासी, महर्षि के अनेक भक्तों की एक महती सभा बुलाई गई। इस सभा ने एक के बाद एक अपने चौदह अधिवेशन किये और अन्त में टंकारा शताब्दी के मनाये जाने का निश्चय कर एक "महर्षि दयानन्द जन्म भूमि शताब्दी सभा" स्थापित की। इसके साथ ही साथ कार्य-कारिणी सभा, आर्थिक विभाग और प्रकाशन विभाग इत्यादि अनेक उपसमितियें भी कायम की गई और जन्मशताब्दी को तारीखें माह नवमी से शिवरात्रि तक तदनुसार ७ फरवरी से ११ फरवरी सन् १९२६ तक निश्चित की गई।

शीघ्र संचालकों ने टंकारा महोत्सव के लिए सात हजार रुपया धन संग्रह कर लिया और ७ फरवरी से ११ फरवरी सन् १९२६ तक टंकारा में महर्षि जन्मशताब्दी महोत्सव 'धूमधाम से मनाया गया। इसमें सम्मिलित होने के लिए हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज राजगुरु श्री स्वामी शंकरानन्द जी महाराज, महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज, श्री स्वामी स्वतन्त्रता नन्द जी महाराज, स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज, स्वामी ओंकार सच्चिदानन्द जी महाराज, स्वामी अखंडानन्द जी महाराज, श्री स्वामी विचारानन्द जी महाराज प्रभृत प्रभृत संन्यासी तथा आचार्य श्री रामदेव जी श्री पं० महाराणी शंकर जी, श्री युत भयाशंकर जी, राजरत्न महात्मा आत्माराम जी अमृतसरी पं० अयोध्या प्रसाद जी, पं० वंशीधर जी विद्यालंकार, पं० विश्वामित्र जी कौशिक, पं० द्विजेन्द्र नाथ जी शास्त्री पं० आनन्दप्रिय जी, श्री कृष्ण शर्मा, तद् उपरान्त हिज हाइनेस महाराजा साहेब श्री लखधीर सिंह जी बहादुर मोरवी नरेश, हिज हाइनेस महाराजा साहबे श्री हम्मीरसिंह जी वीरपुर नरेश, ठाकुर साहेब श्री केसरीसिंह जी मोगर स्टेट, श्री भूरेलाल जी व्यास शाहपुर, दीवान रणछोड़लाल जी पटवारी (मोरवी), चूड़ा- समा श्री मनुभा साहेब चेर मानवन्ता श्री नेहरूभा साहेब भावनगर, ठाकुर साहेब गांगड, डाक्टर कल्याण दास जी बम्बई, महाशय परधूभाई जी बम्बई, सेठ शिवदास चांपसी बम्बई, स्नातक सत्यव्रत, अमृतलाल सेठ, श्री ककलभाई कोठारी, छगनलाल भवानी शंकर, पंडित मयाशंकर जी, इत्यादि महानुभावों की उपस्थिति ध्यान आकर्षित करती थी। उत्सव में महिला सम्मेलन राजपूत सम्मेलन, कच्छ-काठियावाड आर्य सम्मेलन, आर्यन कान्फ्रेंस, तथा भव्य नगर कीर्तन इत्यादि कार्यक्रम रहे।

इस सब कार्य का आयोजन बम्बई के पंडित विजय शंकर मूलशंकर जी ने किया था।

इस सम्मेलन के परिणाम स्वरूप टंकारा में आर्य समाज की स्थापना की गई। उसमें निम्न-लिखित पदाधिकारी चुने गये। प्रधान रामचरन,

मन्त्री श्री चतुर्भुज शिवजी त्रिवेदी, और कोषाध्यक्ष नारायण भाई कान जो पंचाल चुने गये।

इसके पश्चात् टंकारा में एक संस्कृत पाठशाला दयानन्द धर्मार्थ औषधालय तथा एक कन्या पाठशाला की स्थापना हुई। संस्कृत पाठशाला का खर्च नेत्रवैद्य डा० मथुरादास जी (मोगा) देते रहे। बाद में श्री गिरधर लाल जी गोविंद जी महेता ने आकर कार्यभार संभाल लिया। आरम्भ में सेठ राघव जी परशोत्तम की आर्थिक मदद मिलती रही। श्री गिरधरलाल गोविन्द जी मेहता में सहायता के लिए बाद में श्रीमती चंचलबेन पाठक और श्री शान्ताबहिन शाह आ गईं।

इस समय टंकारा में महर्षि के स्मारक का रूप आर्यसमाज की स्थापना ने ही ले लिया। टंकारा आर्यसमाज का अपना भवन बने इसकी चिन्ता आर्य जगत् करने लगा। इसी समय श्री कृष्ण शर्मा आर्य मिश्नरी टंकारा में महर्षि का अखिल भारतीय स्मारक बने इसका प्रचार करते रहे। श्रीमती चंचलबेन और श्रीमती शान्ताबेन महर्षि के स्मारक रूप में टंकारा में आर्यसमाज मंदिर बने तदर्थ पंजाब का दौरा करने गये।

बम्बई आर्यसमाज, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा दयानन्द मिशन, श्री गिरधर लाल जी गोविन्द जी मेहता, श्री कृष्णशर्मा, श्री चंचलबेन पाठक, सब अपनी दृष्टि से टंकारा में कुछ कार्य हो इसमें लग गये।

श्री मद्दयानन्द पुत्री पाठशाला जिसका जन्म १९२७ में हुआ था १९३५ में धनाभाव के कारण शिथिल पड़ गये श्री चंचल बेन ने अवैतनिक रूप से उसको संभाल कर ४२ तक चलाया। श्री गिरधर लाल जी गोविन्द जी कन्या ब्रह्मचर्याश्रम कुछ समय तक चलाते रहे पर धनाभाव के कारण सब संस्थाएं बन्द हो गई। इसकी स्थापना श्री राघव जी पुरषोत्तम ने की थी।

टंकारा में महर्षि का भौतिक स्मारक बनाने का प्रश्न भी टंकारा शताब्दी पर उपस्थित हुआ था उसके दो रूप थे:—

(१) महर्षि की प्रस्तर मूर्ति की स्थापना की जावे।

(२) आर्य समाज मन्दिर बनाया जावे।

प्रथम रूप का आर्यो ने बहिष्कार किया; क्योंकि उसमें मूर्ति पूजा का भय था। द्वितीय रूप स्वीकार किया गया अर्थात् महर्षि का भौतिक स्मारक टंकारा में आर्य मन्दिर के रूप में बनाने निश्चिय हुआ। डाक्टर मथुरादास मोगा ने महर्षि की जन्मभूमि का गृह खरीद कर वहां टावर बनवाना चाहा पर महर्षि के भान्जों ने मकान के ५ हजार मांगे। सौदा न हो पाया। और आर्य जगत ने श्रीकृष्ण आर्यमिश्नरी के शब्दों में "उस स्थान पर भवन बनाने का इरादा ही छोड़ दिया इसके बाद टंकारा के अन्य स्थान में भवन के लिए जगह लेने के लिए प्रयत्न किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज को, आर्यमित्र २१ फरवरी सन् १९३५ की एक विजप्ति से पता चला कि रेलवे स्टेशन के पास महाराजा साहेब मोरवी ने भवन के वास्ते भूमि प्रदान करने का वचन भी दे दिया था; पर सार्वदेशिक सभा तथा बम्बई आर्य समाज के मध्य कुछ ट्रस्टियों की संख्या के सम्बन्ध में मतभेद पड़ जाने से उस कार्य की प्रगति एक दम रुक गयो और उक्त दोनों शक्तियां इस दिशा से एकदम उपेक्षा वृत्ति सी धारण कर बैठीं।

स्वर्गीय श्री पंडित बंसीधर जी ने "आर्यमित्र" में तथा श्री कृष्ण शर्मा आर्यमिश्नरी ने टंकारा में आर्य मन्दिर की ओर आर्य जगत् की उदासीनता को देख कर दुःख प्रकट किया। और लेख लिखे। उस समय शर्मा जी को सार्बदेशिक सभा

के प्रधान म० नारायण स्वामी जी ने आदेश दिया "टंकारा में आर्य मन्दिर बनाने का काम बम्बई आर्य समाज को सुपुर्द किया जा चुका है। अतः तुम उनके साथ मिलकर बनवाने का प्रयान करो। इसी समय दयानन्द साल्वेशन के प्रधान पं० देवीचन्द जी ने भी टंकारा के आर्य जगत् सहायता देगा ऐसा आश्वासन दिया।

८ वर्ष तक सार्वदेशिक सभा का आदेश होने पर भी बम्बई आर्य समाज टंकारा में मन्दिर न बना सकी। कारण बम्बई समाज अपनी झमेलों में थी। इसलिए स्वतन्त्र रूप से समाज मन्दिर बनाने का कार्य प्रारम्भ किया गया। श्रीमती चंचल बेन पंजाब में टंकारा का डेपुटेशन बनाकर घूमने लगी। उस समय सार्वदेशिक सभा ने श्री कृष्ण शर्मा के शब्दों में निम्न लिखित विज्ञप्ति प्रकाशित की। "टंकारा में महर्षि स्मारक के नाम से जो देवियां धन संग्रह कर रही है, उन्होंने सभा से आज्ञा प्राप्त नहीं की है। अतः महर्षि स्मारक से और उस धन संग्रह से कोई सम्बन्ध नहीं है। महर्षि स्मारक का तो विशाल कार्य है। अतः सभा उसे विशाल रूप से ही उठायेगी।"

इस प्रकार श्री चंचल बेन स्मारक का कार्य करने में कठिनाइयों में पड़ गईं।

बाद में सार्वदेशिक सभा ने विशाल कार्य की दृष्टि से टंकारा स्टेशन के पास जमीन लेकर एक लाख का स्मारक भवन बनाने का आयोजन किया।

८ दिसम्बर १९०५ की सार्वदेशिक सभा की अन्तरग सभा में निश्चय हुआ। "(क) बम्बई आर्य समाज को लिखा जाय कि तीन मास के भीतर वह टंकारा में भूमि प्राप्त करके स्मारक न बनवा सकी तो सभा अपने ढंग से वहां स्मारक बनायेगी। (ख) प्रस्ताव के 'क' भाग की नकल भेज कर पंडित श्री कृष्ण जी को लिखा जावे कि वह चन्दा देने के लिए लोगों को उत्साहित तो करें पर अभी धन संग्रह न करें।"

हर्ष का विषय कि टङ्कारा में ऋषि के स्मारक रूप में श्री गिरधर लाल गोविन्द जी महेता, श्री चंचल बेन पाठक, तथा श्री शान्ता बेन शाह के प्रयत्न से १९३६ में टङ्कारा आर्य समाज मन्दिर तो बन गया। और तब से आज तक इनके प्रयत्नों से आर्य समाज के कार्यों का दीपक जगमगाता रहा।

सार्वदेशिक की विशाल योजना और बम्बई आर्य समाज का सहयोग टङ्कारा में कोई मूर्त रूप न ले सका। ऐसा प्रत्यक्ष है। १९५१ में सेठ श्री नान जी भाई कालीदास मेहता ने टङ्कारा ट्रस्ट की रचना कर फिर से महर्षि का टङ्कारा में स्मारक बने इस प्रश्न को आर्य जगत् के सामने उपस्थित किया। और गत शिवरात्री पर १९५९ में महर्षि का अखिल भारतवर्षीय स्मारक बन सका।

महर्षि का जन्म स्थान का मकान श्री सेठ चक्कु भाई सुन्दर जो ने खरीद लिया है। और उस स्थान पर अपने रहने के लिए सुन्दर भवन बना लिया है। अब उस स्थान पर कोई स्मारक खड़ा करना सम्भव नहीं। श्री चक्कु भाई ने एक कमरे में महर्षि जी का चित्र रखा है। जो आने वालों को महर्षि के जन्म स्थान को बताता है।

आर्य समाज ने निष्क्रियता में इतने वर्ष खो दिये। १९२६ में तो महर्षि के भानजे अधिक पैसा मांगते थे, उस स्थान को लेना ही नहीं ऐसा निश्चय हुआ था। वीरपुरा के महाराज के द्वारा मोरबी नरेश से स्टेशन के पास जमीन प्राप्त कर वहां स्मारक बनाना ऐसा निश्चय हुआ था। अब मोरबी का राज प्रसाद खरीदने से उनकी इस स्थान में इच्छा पूर्ण हो गई है। ऐसा हम मानते हैं।

श्री मगन भाई जोषी

श्री गीरधरलाल जी गोविंद जी

श्री चंचल बहिन पाठक

श्री शांताबेन शाह

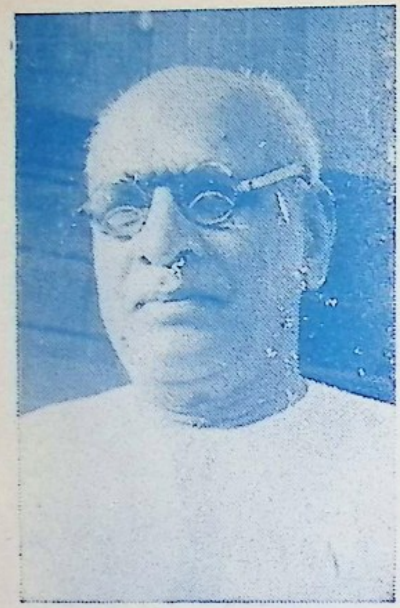

श्री गोविन्दराम हासानन्द

यजुर्वेद पारायण यज्ञ में श्री अनन्त शयनम् आयंगर।

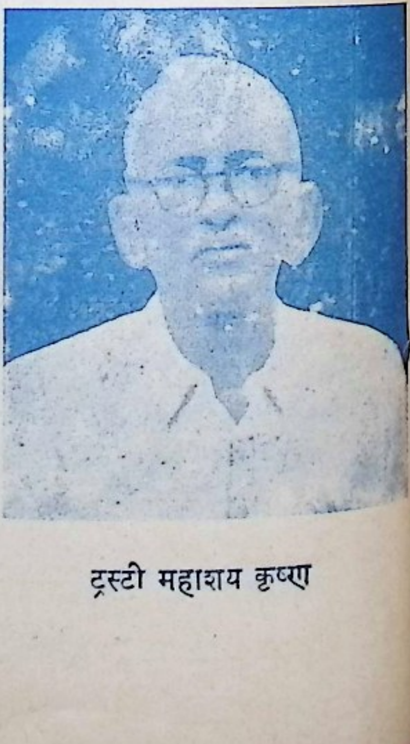

ट्रस्टी महाशय कृष्ण

पंडित श्री आनन्द प्रिय जी सेठ श्री नानजी भाई, अध्यक्ष श्री आयंगर जी।

सेठ श्री नानजी भाई, श्रीं उछरंगराय जी ढेबर, बालकृष्ण जी शुक्ल।

ध्वजोत्तालन के समय पर सेठ श्री नानजी भाई, मेहरचन्द जो महाजन ट्रस्ट के वर्तमान प्रधान

सेठ श्री नानजी भाई मेहता भाषण दे रहे है।

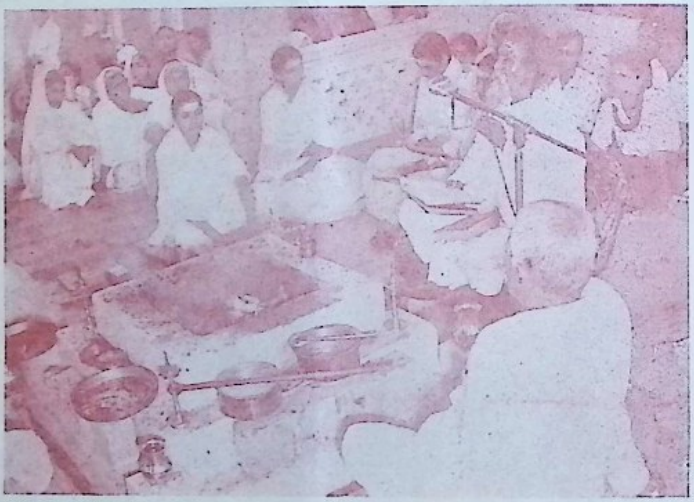

यजुर्वेद पारायण यज्ञ का एक दृश्य।

संस्था सम्मेलन के प्रमुख स्थान से श्री मेहर चन्द जी महाजन भाषण दे रहे हैं।

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट की उत्पत्ति का इतिहास

तथा

गुजराती ट्रस्टडीड का हिन्दी भाषा अनुवाद

महर्षि दयानन्द स्मारक टंकारा के उद्घाटन समारोह के समय ट्रस्ट की ओर से वर्तमान ट्रस्ट की उत्पत्ति का संक्षिप्त इतिहास प्रकाशित किया गया था। उसके लम्बे छपे हुए विवरण में न जाकर यहां इतना कहना ही पर्याप्त है कि ऋषि के परम भक्त सेठ श्री नानजी भाई ने जिन्होंने ६ लाख रुपया देकर महात्मा गांधी की जन्म स्थान में कीर्ति मन्दिर बनाया था। उन्होंने टंकारा में महर्षि के जन्म स्थान में भी स्मारक बनना चाहिए इस बात का अनुभव कर अपनी ओर से स्मारक कार्य के भवनों आदि के निर्माण के लिये डेढ़ लाख रुपये देने की घोषणा की उन्होंने यह भी अपेक्षा रखी कि आर्य जगत डेढ़ लाख रुपये यहां कार्य संचालन के लिये एकत्र कर दे। भवन निर्माण का कार्य वह तभी करेगें, जब आर्य जगत के डेढ़ लाख का आश्वासन उन्हें प्राप्त होगा।

इस निमित्त उन्होंने अपने प्रस्ताव को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सन्मुख रखा। उस समय के मंत्री श्री पं० गंगाप्रसाद उपध्याय ने इसे व्यवहार पूर्ण नहीं माना। और सार्वदेशिक सभा इसमें कुछ नहीं करेगी ऐसा स्पष्ट कहा तब सेठ जी ने पोरबन्दर में १५-५-५१ को महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक टङ्कारा ट्रस्टडीड रजिस्टर करवा दिया।

मूल ट्रस्टडीड गुजराती भाषा में है। हम इसका हिन्दी अनुवाद यहाँ अविकल रूप से दे रहे हैं।

पांच रुपया

स्टेम्प वेन्डर पोरबन्दर

खरीदने वाले-सेठ श्री नानजी भाई कालीदास मेहत्ता पोरबन्दर

		रु०	आ०	पा०
तारीख १५-५-५१	फीस मिली वह			
अनुक्रम संख्या ६४८	रजिस्ट्री करवाई	३८५	०	०
ईस्वी सन् १९५१ की मई की	नकल की लगत	२	८	०
पंद्रहवीं तारीख को	फोलियो (टिप्पणी)	०	८	०
		३८८	०	०
मध्यान्ह १ से २ के बीच	कुल योग			
	कमीशन फी	५	०	०
पोरबन्दर		३९३	०	०

सेठ श्री नान जी भाई कालीदास मेहता के बंगले पर स्वस्तिक बंगला पोरबन्दर हस्ताक्षर स्वयं श्री नानजी भाई कालीदास मेहता तथा खीम जी भाई नानजी भाई के मुख्त्यार की हैसियत से।

ह०—सबरजिस्ट्रार

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक टङ्कारा ट्रस्ट "ट्रस्टडीड"

हम नीचे हस्ताक्षर करने वाले सेठ श्री नान जी भाई कालीदास मेहता निवासस्थान पोरबन्दर तथा खीमजी भाई मेहताफिलहाल जीनिवा स्वीटजरलैंड, इस प्रकार निम्न लिखित ट्रस्ट करते हैं।

इस ट्रस्ट फंड के लिये रु० १००,०००) (शब्दों में एक लाख रुपया) हम ट्रस्ट करने वालों में से नानजी भाई कालीदास मेहता की ओर से और रु० ५०,०००) (शब्दों में रुपये पचास हजार) पूरे खीम जी भाई नानजी भाई मेहता की ओर से दिये गये हैं। इस प्रकार से इस ट्रस्ट के लिये फिलहाल कुल रुपया डेढ़ लाख की रकम मिलती है। यह धनराशि तथा भविष्य में और भी जो राशि इसमें मिले उन सबके लिए यह ट्रस्टडीड किया जाता है।

उद्देश्य—महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्म भूमि टंकारा सौराष्ट्र में जमीनें लेनीं, उसमें ट्रस्टी मण्डल को योग्य लगे इस प्रकार स्मारक की रचना करनी तथा उस स्मारक को चलाने की (संचालन की) व्यवस्था करनी उस निमित्त फंड (धन) भेजना (प्राप्त करना) आर्य सिद्धान्त तथा वैदिक धर्म के अनुकूल जैसा योग्य लगे वैसी तमाम प्रवृत्तियां करनी।

स्मारक के मुख्य अंगों में बाल मंदिर, पाठशाला, संन्यास आश्रम, पुस्तकालय, बाग, टावर क्रीडागंण व्यायाम शाला इत्यादि जो जो आवश्यक प्रतीत हों और ट्रस्ट में से जितना शक्य हो उतना ऊपर के उद्देश्यों के अनुकूल सार्वजनिक हित तथा सुखकारी की तमाम प्रवृत्तियां करनी।

इस ट्रस्ट का नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा रखने में आता है।

ट्रस्ट फंड और विनियोग :—

ऊपर लिखित फिलहाल रुपये डेढ़लाख की राशि इस ट्रस्ट निमित्त निकालने में आती है (आई है)। उसमें से स्मारक के लिए संस्थाओं की रचनादि करनी है। वर्तमान में शीघ्र जमीन खरीदने के लिए जो रकम खर्च करना आवश्यक हो वह रकम इस ट्रस्ट की राशि में से ट्रस्टी मंडल उपयोग कर सकेगा। संस्थाओं के निर्माण के लिए ट्रस्टियों को अधिक धन (फंड) एकत्रित करना होगा। और कम से कम एक लाख रुपये अधिक एकत्रित हों तत्पश्चात् ट्रस्ट की वर्तमान धन राशि में से स्मारक की रचना आदि का कार्य आरम्भ हो सकेगा (किया जा सकेगा)। इस ट्रस्ट की उपरोक्त दर्शाई हुई प्रारम्भिक रुपये डेढ़ लाख की रकम स्मारक की रचना में ही व्यय करने की है। उसमें से कोई भी रकम निर्वाह निमित्त फंड में ले जाना नहीं। वर्तमान (चालू) खर्च के लिए ट्रस्टिओं ने दो वर्ष के अंदर फंड एकत्रित कर व्यवस्था करनी।

इस ट्रस्ट के संचालन तथा सुव्यवस्था निमित्त निम्न प्रकार ट्रस्टी मंडल (बोर्ड) की नियुक्ति की जाती है।

(१) कुँवर चांद करण जी शारदा अजमेर।

(२) पं० आनन्द प्रिय जी आत्माराम बड़ौदा।

(३) नान जी भाई मेहता पोरबन्दर।

(४) श्रीयुत अर्जुन भाई कुँवर जी पटेल राजकोट।

(५) श्रीयुत अर्जुन देव जो आचार्य महर्षि दयानन्द विद्यालय चौकी।

(६) गिरधर लाल गोविन्द जी मेहता टंकारा।

(७) श्रीयुत प्रमुख परोपकारणी सभा अजमेर (जो जिस समय प्रधान हो वह पद के अधिकार से)।

उपरोक्त ट्रस्टीओं में से प्रधान तथा मुख्य ट्रस्टी का, ट्रस्टी मंडल के एक सभ्य बहुमति से चुनाव कर सकेंगे। और इस ट्रस्टी मंडल के एक सभ्य के रूप में सेठ श्री नान जी भाई कालीदास महेता के वंश में से एक व्यक्ति सदैव के लिए रहेगा। ट्रस्टी मण्डल के रिक्त स्थान पर शेष ट्रस्टीगण किसी आर्य समाजी को बहुमति से नियुक्त कर सकेंगे। किसी समय भी ट्रस्टीमण्डल की कुल संख्या पांच से कम न रहनी चाहिए।

इस ट्रस्ट की कारवाई (कार्यक्रम) सुव्यवस्थित रूप से चलाने के लिए ट्रस्टी मण्डल नियम उपनियम बनायेगा और तदनुसार अपनी कार्यवाही करेगा। उन नियमों में आवश्यकतानुसार समय-समय पर हेरफेर करना तथा नये नियम आदि बनाने का कुल अधिकार ट्रस्टीओं को रहेगा।

यदि कोई ट्रस्टी दिवालिया हो गया हो, या चालू बीमार रहता हो, या काम करने की अशक्ति या अनिच्छा रखता हो इत्यादि आवश्यक कारणों से मुक्त किया जा सकता है और इसके रिक्त स्थान पर दूसरा ट्रस्टी नियुक्त किया जा सकेगा।

इस ट्रस्ट के उद्देशों में किसी प्रकार बाधक न हो इस प्रकार का परिवर्तन मूलभूत उद्देश्य कायम रखते हुए संशोधन परिवर्तन करने का अधिकार ट्रस्टी मण्डल की बहुमति पर निर्भर रहेगा। इसी प्रकार इस ट्रस्ट के मुख्य उत्पादकों (निर्माता) में से सेठ श्री नानजी भाई कालीदास महेता को संशोधन परिवर्तन करने का अधिकार रहेगा।

सेठ श्री नान जी भाई कालीदास महेता इस ट्रस्ट के कायमी सलाहकार रहेंगे और उनकी सूचना तथा मार्ग दर्शन अनुसार कार्यवाही की जायेगी।

इस ट्रस्ट की सम्पति को गिरवी, बख्शीश (पुरस्कार) या इसी प्रकार की कोई भी व्यवस्था से रिक्त रखा जावेगा। इसी प्रकार इस ट्रस्ट की सम्पत्ति पर किसी प्रकार का लियेन कर्ज—बोइज—चार्ज उत्पन्न नहीं किया जा सकता। और किसी ट्रस्टी के लेनदारों का इस सम्पति पर कोई अधिकार या बोइज माना नहीं जावेगा। इसी प्रकार ट्रस्टीओं के व्यक्तिगत लेन देन से इस ट्रस्ट की सम्पत्ति से कोई सरोकार नहीं रहेगा।

यह ट्रस्टडीड नियमानुसार रुपये पन्द्रह के जनरल स्टेम्प पर लिखना चाहिये तदनुसार प्रत्येक ५) रु० वाले स्टेम्प सं० १२४६-१२४७-१२४८ ता० १५-५-५१ वाले स्टेम्प पर लिखा गया है।

यह ट्रस्ट-डीड हमने स्वेच्छा से और अक्ल होशियारी से किया है जो हमें तथा हमारे वंश के उत्तराधिकारियों को मान्य है और रहेगा।

आज संवत् २००७ की वैशाख शुक्ला ९वीं और मंगलवार ता० १५-५-५१ के दिन पोरबन्दर स्थान पर हमने हस्ताक्षर किये हैं। और साक्षी करवाये हैं।

हस्ताक्षर

श्री नानजी भाई कालीदास महेता स्वयं खुद तथा खीमजी भाई नानजी भाई महेता। श्री सेठ जी राजरत्न नानजी भाई कालीदास महेता वर्ष ६५ उद्यम व्यापार स्थान पोरबन्दर दस्तावेज लिखने वाले यह दस्तावेज किया है स्वीकार करते हैं।

साक्षी

श्री मोहनलाल एन भगदेव नानजी भाई कासीदास के स्वयं कहने से।

श्री केशवलाल मूलजी भाई पटेल की साक्षी हस्ताक्षर खुद सेठ नानजी भाई के कहने से।

श्री चांदकरण शारदा की साक्षी।

,, अर्जुन कुँवरजी पटेल की ,,

,, अर्जुनदेव जी की ,,

श्री आनन्दप्रिय आत्माराम पंडित की साक्षी

सबरजिस्ट्रार

जिन्हें सबरजिस्ट्रार स्वयं जानते हैं। और लिखवालों को स्वयं पहचानते हैं। उसकी पहचान देते हैं।

सर्टिफीकेट

४ नवम्बर की बुक में संख्या ६१ की, पृष्ठ ३०४ से ३०८ तक वोल्यूम अंक में प्रविष्ठ (लिखा) किया गया।

सबरजिस्ट्रार,

ता० २-६-५१

इस ट्रस्टडीड से निम्नलिखित बातें स्पष्ट हैं।

(१) इस ट्रस्टडीड का निर्माण आर्य सिद्धांतों तथा वैदिक धर्म के अनुकूल जैसे योग्य लगे वैसी तमाम प्रवृत्तियां करनी।

(२) वर्तमान ट्रस्टियों का रिक्त स्थान शेष ट्रस्टी आर्य समाजी में से ही बहुमति से कर सकेंगे।

प्रारम्भ में ट्रस्टडीड के अनुसार निम्न लिखित सात ट्रस्टी रखे गये थे।

(१) श्री चांदकरण जी शारदा, अजमेर।

(२) पंडित आनन्दप्रिय जी आत्माराम जी, बडौदा।

(३) कुमारी सविता बेन नानजी भाई पोरबंदर।

(४) श्री अर्जुन कुँवर जी पटेल, राजकोट।

(५) श्री अर्जुन देव जी आचार्य, महर्षि दयानन्द महाविद्यालय चोकी, सोरठ।

(६) श्रीयुत गिरधर लाल गोविन्द जी मेहता, टङ्कारा।

(७) प्रधान परोपकारिणी सभा, अजमेर।

इन सात ट्रस्टियों में से श्री कुँवर चांदकरण

जी शारदा तथा श्री गिरधर लाल गोविन्द मेहता का निधन हो गया। कुमारी सविता बेन नानजी भाई ने, श्री अर्जुन देव जी आचार्य ने त्यागपत्र दे दिये।

ट्रस्ट के निर्माण के पश्चात् सेठ श्री नानजी भाई ट्रस्ट के प्रधान रहे और कुँवर चांदकरण जी शारदा मन्त्री तथा पंडित आनन्दप्रिय जी संयुक्त मंत्री रहे। इसका कार्यालय अजमेर में रहा।

सेठ श्री नान जी भाई के त्याग पत्र देने के पश्चात् सेठ श्री प्रताप सिंह जी शूरजी भाई प्रधान बनाये गये और कुँवर चांदकरण जी के निधन के पश्चात् पंडित आनन्दप्रिय जी मन्त्री बनाये गये। सेठ श्री प्रताप सिंह जी के त्याग पत्र के पश्चात् वर्तमान में ट्रस्ट के प्रधान सुप्रीम कोर्ट निवृत मुख्य न्यायाधीश श्री मेहरचन्द महाजन नई दिल्ली हैं। इस समय ट्रस्ट के वर्तमान १५ ट्रस्टी हैं। जो सब के सब ख्यातनामा आर्य समाजी हैं।

(१) श्री मेहरचन महाजन, देहली।
(२) श्री परोपकारिणी सभा के प्रधान महाशय कृष्ण जी।
(३) सार्वदेशिक सभा के प्रधान बाबू पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट।
(४) डा० मथुरा दास जी मोगा वाले, नई दिल्ली।
(५) श्रीं हंसराज जी गुप्त, नई दिल्ली।
(६) श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती।
(७) पंडित आनन्द प्रिय जी मन्त्री बड़ौदा।
(८) श्री बालजी नथवानी, संयुक्त मन्त्री राजकोट।
(९) श्री मगन लाल जी जोषी, जामनगर।
(१०) श्री नानालाल जी वकील, जामनगर।
(११) श्री चतुर भाई बावर भाई पटेल, पोरबन्दर।
(१२) श्री मंगन भाई वि पटेल बम्बई कोषाध्यक्ष।
(१३) श्री बालकृष्ण शुक्ल एडवोकेट, राजकोट।
(१४) श्रीं चंचल बेन पाठक, टङ्कारा।
(१५) श्री भगवान देव जी आर्य, बम्बई।

इन में बाबू पूर्णचन्द जो एडवोकेट बा-हैसियत प्रधान सार्वदेशिक सभा और महाशय कृष्ण जो बा हैसियत प्रधान परोपकारिणी सभा अजमेर है।

वर्तमान ट्रस्टो ट्रस्ट बनाने का व परिवर्तन करने का अधिकार नहीं रखते। उन्हें तो ट्रस्ट-डीड के अनुसार केवल काम करने का हो अधिकार है। ट्रस्ट कोई सभा या चुनाव संस्था नहीं है।

अनेक परिस्थितियों का सामना कर ट्रस्ट ने सेठ नानजी भाई की ट्रस्टडीड में लिखित शर्त के अनुसार उनको रकम में से मोरवी महाराजा का १० लाख की कीमत का राजमहल डेढ़ लाख में खरीद लिया है। और १०-१-५९ के दिन हमारे ट्रस्टी श्री मगन भाई जोषी ने ओ३म् ध्वज फहरा कर स्मारक के कार्य के लिए राज प्रासाद का कब्जा लिया।

ट्रस्ट ने इसके पश्चात् मुरम्मत आदि के लिए रंग रोगन आदि के लिए और यज्ञशाला के निर्माण के लिए रुपये :५ हजार मंजूर कर महल को नया रूप दे दिया।

मौरवी का राज प्रासाद जिसका नाम महर्षि दयानन्द महालय रखा गया है, डेमी नदी के तट पर स्थित है। राज प्रासाद बहुत हो विशाल और भव्य है। सब दृश्य बड़ा मनोहर एवं भव्य है। टङ्कारा ग्राम का एक तिहाई भाग रोका हुआ है।

ट्रस्ट के अन्तर्गत म्युनिसपलटी से खरीदी हुई और जमीन भी है जिसके ऊपर चार दीवारें हैं। भविष्य में इस स्थान का उपयोग आर्य धर्मशाला बनाने में, महर्षि गो सदन बनाने में अथवा हाई स्कूल के बनाने में हो सकता है।

ट्रस्ट को दूसरी ९ वीघा जमीन भी आर्य समाज टङ्कारा की ओर से मिली हुई है, जिससे महर्षि दयानन्द उद्यान और वेद मन्त्र के स्तूप बनाने का विचार है।

सेठ श्री नान जी भाई महर्षि दयानन्द घण्टा घर अपने खर्च से बना देने वाले हैं।

महर्षि महालय के भवनों में बड़ा ही शानदार उद्घाटन ता० ५, ६, ७, मार्च के दिनों को में श्री अनन्त शयनम् आयंगर के कर कमलों द्वारा विराट आर्य समूह की उपस्थिति में हो गया।

महर्षि दयानन्द स्मारक उद्घाटन समारम्भ का आयोजन

स्थान प्राप्त करने के पश्चात् ट्रस्टी मंडल ने अपनी २२-११-५८ की सभा में उद्घाटन समारम्भ तथा मेला भरने का निश्चय किया। और १८-१-५९ की सभा में समारम्भ की भिन्न-भिन्न समितियें बना दी।

प्रारम्भ में उद्घाटन कार्य के लिये अनेक नाम प्रस्तुत हुए। और श्री अनन्त शयनम आयंगर इस कार्य के लिए हमें प्राप्त हो सके।

उत्सव निमित्त, यज्ञ समिति, भोजन समिति, अतिथि सत्कार समिति, प्रकाशन समिति और स्वयं सेवक समिति बनाई गई।

उद्घाटन समारभ के साथ अनेक सम्मेलन भी करने का निश्चय हुआ। और उत्सव कार्य के लिए १५ हजार रुपये मंजूर किये गए।

इन कार्यों के लिए श्री देव प्रकाश पतंजल शास्त्री, श्री नाना लाल वकील, श्री मगन भाई जोशी, श्री वालजी भाई नथवानी, श्री मधुभाई आर्य, श्री मगन भाई आर्य, श्री चंचल बेन पाठक श्री शान्ता बेन, श्री बुद्धदेव जी, श्री मान चतुर भाई पटेल, आचार्या यशोदा बेन इत्यादि की सेवाओं का लाभ मिला।

उत्सव के कार्य के लिए श्री गोविन्दराम हासानन्द जी, तथा श्री विजयकुमार जी की सेवाएं भी प्राप्त हो गईं।

आर्य समाज के सुप्रसिद्ध नेता महाशय कृष्ण जी ने अपने पत्रों में टंकारा के उद्घाटन समारंभ को सफल बनाने के लिए अपने पत्र वीर अर्जुन और प्रताप ने धूम मचा दी। उन्हीं ने प्रचार से उत्तर भारतीय आर्य जनता में उत्साह उत्पन्न हुआ। गुजरात में मन्त्री पण्डित श्री आनन्द प्रिय जी ने कुंवर जोरावर सिंह जी ने स्नातिका प्रभावती देवी ने पत्रिका और भाषणों द्वारा प्रचार की धूम मचा दी। इस प्रकार हम टंकारा में शानदार उद्घाटन समारम्भ करने को समर्थ हुए।

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट के अनुसंधान विभाग द्वारा

आर्य ज्योति

पत्रिका निकाली जाने वाली है। वार्षिक मूल्य ६) अधिक जानकारी के लिए व्यवस्थापक महर्षि दयानन्द महालय टंकारा (सौराष्ट्र) को लिखें।

महर्षि दयानन्द उद्घाटन समारोह पर एक दृष्टि

[ले० श्री कुंवर जोरावर सिंह आर्योपदेशक बड़ौदा]

महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी मथुरा और उसके पश्चात् जन्म शताब्दी टंकारा में आर्य नेताओं ने महर्षि की जन्म भूमि टङ्कारा में महर्षि का एक स्मारक बनाने का जो शुभ संकल्प किया था, वह ३५ वर्षों बाद नव साकार रूप ले सका है। और शिवरात्रि पर उसका उद्घाटन लोक सभा के अध्यक्ष श्री अनन्त शयनम् आयंगर के हाथों बड़े ही उल्लास और उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हो चुका है। भूतपूर्व कांग्रेस अध्यक्ष श्री ढेबर, सुप्रीम कोर्ट के भू० पू० न्यायाधीश श्री मेहर चन्द श्री महाजन आनन्द विश्वविद्यालय के कुलपति भाई लाल भाई, तथा आर्य समाज के अनेकों गण मान्य नेताओं सन्यासियों विद्वानों उपदेशकों प्रचारकों व जनता ने युग स्रष्टा महर्षि दयानन्द को इस समारोह पर अपनी श्रद्धांजलियां अर्पित की। गुजरात, सौराष्ट्र, कच्छ, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पंजाब, काश्मीर व आन्ध्र सभी स्थानों से ऋषि भक्त बड़ी संख्या में आये थे। तीन दिनों के लिए छोटी सी टङ्कारा नगरी महर्षि दयानन्द के जय घोषों वेद मन्त्रों के मधुर गानों अमृतमय उपदेशों व जोशीले गीतों से गूंजें उठी। टङ्कारा वासी कहते सुने गये कि ऐसा समारोह उनके जीवन में अभूतपूर्व है।

महर्षि दयानन्द सौराष्ट्र में उत्पन्न हुए थे और उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र बनाया था पंजाब को। और महर्षि दयानन्द स्मारक का निर्माण एक पंजाबी और एक सौराष्ट्रवासी के सम्मिलित प्रयत्न का फल है। यों तो स्मारक के निर्माण में बहुतों का सहयोग है परन्तु उसके मूल में मुख्य दो ही व्यक्ति हैं, एक ट्रस्ट के मन्त्री श्री पण्डित आनन्द प्रिय जी और दूसरे ट्रस्ट के निर्माण कर्ता सेठ श्री नान जो भाई कालीदास मेहता। इसी प्रकार इस समारोह में जनता तो सभी प्रान्तों से आई थी परन्तु मुख्य दो ही प्रान्तों के आर्य थे पंजाब और सौराष्ट्र। और मुझे तो ऐसा लगता है कि इस स्मारक को शक्ति विशेष भी इन्हीं दो प्रान्तों से मिलेगी। यों सहयोग तो सभी प्रान्तों का रहेगा।

गुजरात व सौराष्ट्र में आर्य समाज के कार्य के साथ पंजाब का बहुत बड़ा सम्बन्ध रहा है। पंजाब के एक विद्वान् और तेजस्वी सन्यासी श्री स्वामी शंकरानन्द ने जो अपने जीवन का एक बहुत बड़ा भाग ही सौराष्ट्र में बिताया। और उनकी उपस्थिति में आर्य समाज के कार्य को बड़ा वेग मिला, परन्तु उनकी मृत्यु के पश्चात् यह कार्य ठण्डा पड़ गया। इस प्रदेश में ठोस और व्यापक कार्य करने का श्रेय जाता है स्वर्गीय श्री मास्टर आत्माराम जी अमृतसरी को। अपनी जन्म भूमि पंजाब को छोड़कर गुजरात में जो आर्य समाज की ज्योति जलाई थी उसे उनके सुयोग्य पुत्र श्री पण्डित आनन्द प्रिय जी ने द्विगुणित उत्साह से अपनी जीवन की आहुति देकर प्रज्वलित रखा है। जगत् गुरु ऋषि दयानन्द का ऋण चुकाने के लिये उन्होंने जो संस्थायें गुजरात में खड़ी की हैं अथवा उनकी प्रेरणा से से खड़ी हुई हैं, यदि उन्हें निकाल दिया जाय तो शेष कुछ नहीं बचता। उन्हीं की बुद्धिमत्ता परिश्रम व प्रेरणा का फल है जो टङ्कारा में इतना शानदार स्मारक बन सका है। इस कार्य में बड़े बड़े विघ्न आये असहयोग और विरोध का बवंडर उठा, परन्तु वे आगे बढ़ते ही गये और मंजिल पर पहुँच कर ही दम लिया। उनको जितना धन्यवाद दिया जाय थोड़ा है।

आर्य जगत् के सब से अधिक धन्यवाद के पात्र हैं आर्य समाज के भामाशाह सेठ श्री नानजी भाई कालीदास मेहता। पूर्व अफ्रीका व गुजरात में आर्य समाज के कार्यों के लिए उन्होंने पचास लाख रुपये से अधिक दान दिया है। दुःख की बात है कि आर्य समाज उन्हें अभी तक समझ नहीं सका है। और समझा है तो केवल पंडित आनन्दप्रिय जी ने। सेठ नानजी भाई के कार्यों में जहां उनकी अपनी महर्षि दयानन्द के प्रति भक्ति कारण है वहां उनमें श्री पं. आनन्द प्रिय जी का भी बहुत बड़ा हाथ है। और महर्षि दयानन्द के स्मारक के लिए मौरवी महाराजा का १० लाख रुपये का मूल्य का विशाल और सुन्दर राजमहल खरीद कर वास्तव में सेठ श्री नानजी भाई ने आर्य समाज के इतिहास में अपना नाम अमर कर लिया है। सेठ जी के उद्‌गार हैं कि टंकारा विश्व के आर्यों का काशी बनेगा। उद्‌घाटन समारोह के उत्साह को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि यदि उस यज्ञ में कुछ पवित्र जीवनों की आहुतियां पड़ सकीं तो सचमुच ही टंकारा से फिर वेदों की टंकार होगी, जो कि भारत ही नहीं वरन् सारे संसार में दिग्‌दिगन्त में फैल जायेगी।

यजुर्वेद परायण महायज्ञ समारोह को एक विशेषता थी जो कि एक सप्ताह हुआ। महर्षि दयानन्द ने जिस नारी जाति को वेद पढ़ने का अधिकार दिलाने का प्रबल आन्दोलन किया था आज वही नारी जाति उन्ही महर्षि की जन्मभूमि पर यज्ञवेदी पर बैठी वेद मन्त्रों का उच्चारण कर रही थीं। यज्ञ के ब्रह्मा श्री पंडित ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के साथ कन्या गुरुकुल बड़ौदा की पीत वस्त्र धारिणी ब्रह्मचारणियां यज्ञ करती हुई प्राचीन ऋषियों के तपोवनों की याद ताजा करा रहीं थीं। नारी जाति के विषय में यह युग परिवर्तन का स्पष्ट संकेत था। उनके शुद्ध मन्त्रोच्चार को सुनकर जन समूह ही नहीं वरन् विद्वत्मण्डल भी मुग्ध हो रहा था। कट्टर पंथी भी आश्चर्य चकित से नतमस्तक हो रहे थे।

इस अवसर पर शिवरात्रि के दिन जो भव्य और विशाल जलुस निकला वह भी दर्शनीय था। कन्यागुरुकुल बड़ौदा, कन्यागुरुकुल पोरबन्दर, दयानन्द कन्या विद्यालय जामनगर, गुरुकुल सोनगढ़, गुरुकुल सूपा तथा आर्यकुमार आश्रम बड़ौदा तात्पर्य यह कि गुजरात की सभी आर्य संस्थाओं के ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारणियां गणवेश में अपने अपने बेन्डों व बोर्डों के साथ गीत गाते पंक्तिबद्ध चल रहे थे। आर्य संन्यासी व वानप्रस्थी, महिलायें, नेता व कार्यकर्ताओं की टोलियां अलग २ थीं, सब से पीछे जनता का विशाल समूह था। जिसमें स्थान स्थान पर संस्थाओं के नामों के बोर्ड व ओ३म् पताकायें लहरा रही थीं। जुलूस में कहीं वेद मन्त्रों का गान हो रहा था तो कहीं उपदेशों के साथ घोषणा हो रही थी। कहीं पंजाबी में तो कहीं हिन्दी में कहीं गुजराती में तो कहीं सिन्धी में भजन गाये जा रहे थे। इन गीतों तथा महर्षि दयानन्द का वैदिक धर्म के जय घोषों से सारी टंकारा नगरी गूंज रही थी। रही थी। जोश का एक सागर चारों ओर उमड़ रहा था। कांग्रेस नेता श्री ढेबर के शब्दों में वहां भारत की एकता के दर्शन हो रहे थे।

जिस शिवालय में महर्षि दयानन्द को बोध हुआ था तथा जिस घर में उनका जन्म हुआ था वहां झुण्ड के झुण्ड नर नारी आते थे। भावावेश के कारण अनेकों को लोगों की आँखों में प्रेमाश्रु छलछला रहे थे। लोग गद्‌गद् हो रहे थे। श्री ढेबर ने तो वहां की मिट्टी का उठा कर अपने मस्तक पर रख कर अपने को धन्य माना।

ट्रस्ट की ओर से ऋषि लंगर का प्रबन्ध अत्युत्तम था। इसमें बड़े जन समूह का दिन में

संयुक्त मन्त्री श्री बाल जी भाई नथवाणी, ट्रस्टी श्री बालकृष्ण शुक्ल, और मन्त्री श्री पंडित आनन्दप्रिय जी श्री अनन्त शयनम् अयंगर जी को बड़ौदा की कन्यायें गार्ड आफ ओनर दे रही हैं।

स्मारक उद्घाटन दृश्य यज्ञ वेदी पर उद्घाटन हो रहा है।

स्मारक के कर्ता सेठ श्री नानजी भाई के साथ श्री अनन्त शयनम् आयंगर जी।

टंकारा उद्घाटन समारम्भ में टंकारा ट्रस्ट के मन्त्री श्री पंडित आनन्दप्रिय जी स्वागत भाषण दे रहे हैं।

शिव मन्दिर जिसमें महर्षि को ज्ञान प्राप्त हुआ था।

संसद के अध्यक्ष माननीय श्री अनन्त शयनम् आयंगर जी उद्घाटन भाषण दे रहे हैं।

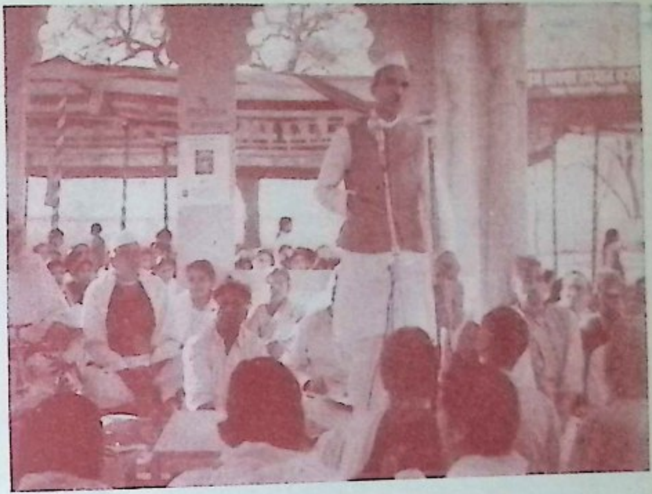

अखिल भारतवर्ष के भूतपूर्व कांग्रेस अध्यक्ष श्री माननीय उछरंगराय ढेबर प्रवचन कर रहे हैं।

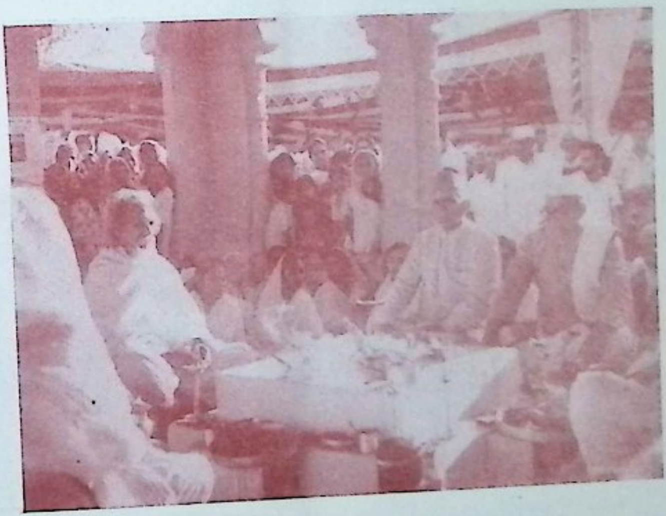

यजुर्वेद पारायण यज्ञ में श्री पंडित आनन्द प्रिय जी, सेठ श्री नानजी भाई श्री अनन्त शयनम् आयंगर जी।

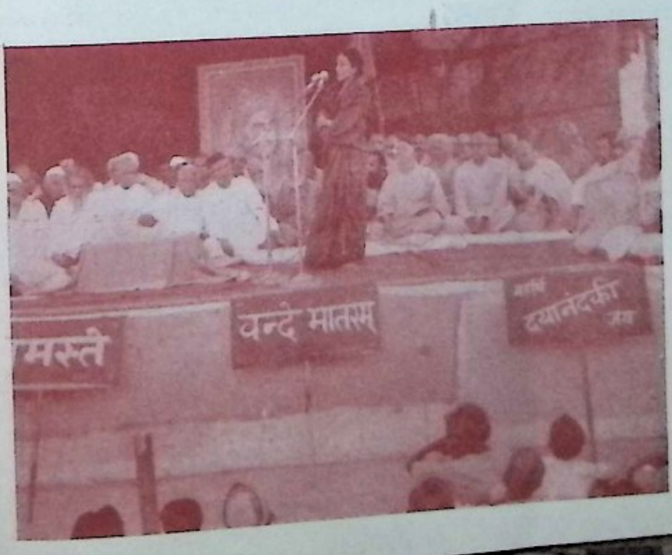

सुश्री स्ना० सविता बहिन नानजी भाई मेहता प्रवचन कर रही हैं।

सेठ श्री नानजी भाई मेहता पंडित आनन्द प्रिय जी का आभार मान रहे हैं।

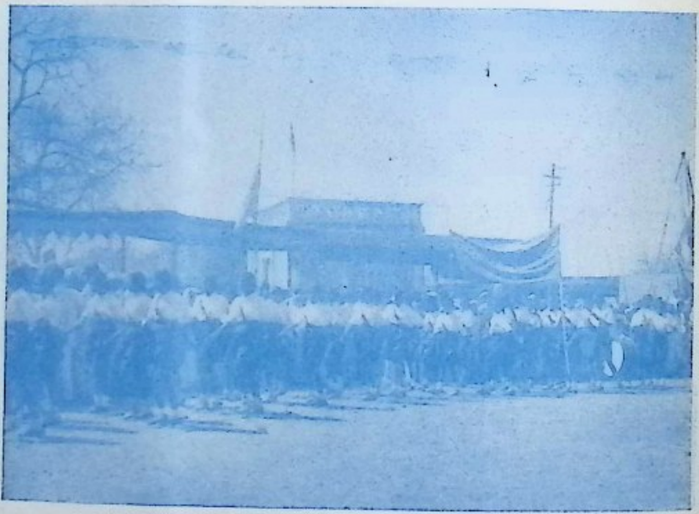

मार्च पास्ट करती हुई आर्य कन्या महाविद्यालय की ब्रह्मचारिणियां।

श्री अमीन जी स्नातिका यशोदा बहिन जी आचार्य आर्य कन्या विद्यालय बड़ौदा पंडित श्री आनन्द प्रिय जी, संसद अध्यक्ष श्री- आयंगर जी, श्री मगन भाई पटेल।

संस्थाओं के प्रतिनिधि आये थे। परन्तु विचार विनिमय की दृष्टि से यह सम्मेलन सफल रहा। एक प्रकार से इस प्रयत्न को आर्यसमाज की संस्थाओं के संगठन की भूमिका कहा सकता है। श्री मेहरचन्द महाजन एक ऐसे आर्य नेता हैं। जिनके ऊपर आर्य समाज गर्व कर सकता है। उन्होंने ऐसे उत्तम विचार दिये जिन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। और जिन से आर्य समाज का बडा लाभ है। श्री महाजन के अतिरिक्त इस सम्मेलन में श्री ब्रह्म दत्त जिज्ञासु, श्री स्वामी वृतानन्द जो श्री पं० वैद्यनाथ शास्त्री, श्री पं० धमदेव जी विद्या वाचस्पति, विद्यामार्तण्ड, श्री चन्दू भाई पटेल भू. पू. विद्याधिकारी गोडंल राज्य, श्री भाई लाल भाई निर्माण कर्ता आनन्द विश्वविद्यालय, श्री यशोदा कुमारी आचार्या कन्या गुरुकुल बड़ौदा, श्री कुमारी सविता आचार्या कन्या गुरुकुल पोरबन्दर श्री पं० आनन्द प्रिय जी व श्री देव प्रकाश पातञ्जलि ने अपने विचार प्रगट किये।

आर्य युवक सम्मेलन आर्य जगत को युवक शक्ति को आह्वान करने को किया गया था। चारों ओर यही सुनाई पड़ता है कि आर्यसमाज में युवक नहीं आ रहे हैं। अतः इस सम्मेलन के महत्व से कोई इंकार नहीं कर सकता। इसका संयोजक तो लेखक स्वयं था और प्रधान थे श्री भगवती प्रसाद जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान। वक्ताओं ने इस समस्या पर विभिन्न दृष्टिकोणों से विचार किया व सुझाव दिये। अभी तो इस आन्दोलन को आगे बढ़ाने के लिये एक काम चलाऊ समिति बनादी गई है। यह सत्र है कि यदि आर्यसमाज को जीवित रहना है तो युवक शक्ति संगठन के कार्य को आगे बढ़ाना पड़ेगा।

आर्य नेताओं के अतिरिक्त आर्य समाज से बाहर के व्यक्तियों में भूतपूर्व कांग्रेस अध्यक्ष श्री ढेबर का भाषण बड़ा महत्वपूर्ण था। उन्होंने टंकारा में भारत की उस सच्ची एकता के दर्शन किये जिसका महर्षि दयानन्द ने स्वप्न लिया था। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द ने प्राचीन संस्कृति की आधार शिला पर नवभारत का सृजन किया है। मैं उनके चरणों में श्रद्धांजलि अर्पण करता हूँ।

श्री आयंगर मद्रासी है श्री ढेबर गुजराती तथा श्री महाजन पंजाबी। तीनों ही अंग्रेजी के भी विद्वान हैं। परन्तु तीनों ही ने तथा सभी विद्वानों ने अपने विचार राष्ट्र भाषा हिन्दी में ही प्रगट किये। इस की सभी ने प्रशंसा की।

बहुत समय बाद आर्यों में इतना उत्साह देखने में आया कितने ही विद्वानों व संन्यासियों ने टंकारा में रहकर स्मारक को प्राणवान बनाने का व्रत लिया, कितनों ने ही धन दिया। सेठ नान जी भाई के शब्दों में आशा यही है कि टंकारा आर्यों का काशी बनेगा। महर्षि दयानन्द को धरती आज पुकार पुकार कर कह रही है कि आर्यों! निराश को तज कर एक बार फिर उठो। और अपने गुरु के "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के मधुर स्वप्न को पूरा करने को तैयार हो जाओ।

—:०:—

आर्यों से ★

(रचियता श्री कुंवर जोरावर सिंह जी आर्योपदेशक)

आर्यों हो जाओ तैयार।
दयानन्द की धरती कहती, आज पुकार पुकार।
निद्रा त्यागो जागो आर्यों हो जाओ तैयार॥

: १ :

दयानन्द ने तुम को निद्रा से झक झोर जगाया था,
कर सत्यार्थ प्रकाश हृदय का तम अज्ञान मिटाया था,
अपने गौरव मय अतीत का दर्शन दिव्य कराया था,
वेदों का शुभ शान्ति प्रदायक सच्चा मार्ग बताया था,
आंख खोलकर किन्तु सो गये फिर तुम पांव पसार।
दयानन्द की धरती कहती आज पुकार पुकार॥

: २ :

मन्दिर बने ठगों के अड्डे दम्भों पाखण्डों के धाम,
ले ईश्वर का नाम हो रही, धन की पूजा आठों याम,
सन्त महन्त मठों में पुजते ईश्वर का तो है बस नाम,
अधर्म का साम्राज्य वहां है नहीं धर्म का कोई काम,
नाम धर्म का लेकर के होता काला बाजार।
दयानन्द की धरती कहती आज पुकार पुकार॥

: ३ :

जिसने भारत देश कभी औरों का दास बनाया था,
जिसने भारत में भाई भाई के साथ लड़ाया था,
विदेशियों को विधर्मियों को जिसने यहां बुलाया था,
बीज फूट का बोकर जिसने अपना नाश कराया था,
जात पांत का भूत रहा फिर आज यहां किलकार।
दयानन्द की धरती कहती आज पुकार पुकार॥

: ४ :

धर्म एक आदर्श एक है और एक जिनकी जाती,
ले भाषा का नाम लड़ रहे यहां मराठे गुजराती,
अपनी सम्पति स्वयम् जलाते बनकर स्वयम् राष्ट्रघाती,
देख देख जिनकी करतूतें मानवता भी शरमाती,

इस संकुचित प्रान्तीयता का कौन करे प्रतिकार।
दयानन्द की धरती कहती आज पुकार पुकार ॥

: ५ :

मायावी गोरों ने फिर भारत में माया फैलाई,
हरिजन भोल बन रहे लाखों की संख्या में ईसाई,
अंग्रेजी भाषा व 'सभ्यता' फिर दूने बल से आई,
निर्धन धनी अशिक्षित शिक्षित नरनारी सब पर छाई,
कौन करेगा इस माया से भारत का उद्धार।
दयानन्द की धरती कहती आज पुकार पुकार ॥

: ६ :

जिससे गान्धी दयानन्द सी विभूतियाँ जग ने पाईं,
अपनाई भगवान कृष्ण ने इतनी उनके मन भाई,
वही काठियावाड़ भूमि ले रही आज फिर अंगड़ाई,
उसके एक धनी बेटे के मन में ज्योति जगमगाई,
जो वेदों पर चला लुटाने अपना धन भंडार।
दयानन्द की धरती कहती आज पुकार पुकार ॥

: ७ :

बना दयानन्द स्मारक तो कितना सुन्दर भव्य महान,
है निर्जीव किन्तु यह इसमें अभीं डालने होंगे प्रान,
ऋषि ऋण से हो उऋण जगत में करने को अपना कल्यान,
बोलो ! कौन कौन देता है अपना पावन जीवन दान,
सफल करे जीवन जों अपना निज तन मन धन वार।
दयानन्द की धरती कहती आज पुकार पुकार ॥

: ८ :

उठो ! आर्य वीरो तुम बदलो स्वयम् जमाने को बदलो,
दूर निराशा अंधकार कर बनकर आशा दीप जलो,
ओम् पताका और वेद कर में लेकर घर से निकलो,
दयानन्द के सन्देशों को फैलाते जग बीच चलो,
टंकारा से ही फिर होगा वेदों का टंकार।
दयानन्द की धरती कहती आज पुकार पुकार ॥

—:※—※:—

टङ्कारा में श्री ढेबर भाई की महर्षि को श्रद्धाञ्जलि

राष्ट्रविधाता महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि में समग्र भारत में इतनी बड़ी संख्या में लोग इकठ्ठे हुए हैं यह देख कर मैं गद्गद् हो रहा हूँ। आज से कितने ही वर्ष पूर्व अपने महर्षि दयानन्द को महा शिवरात्री के पवित्र दिन यहां से बिदा दी थी। आज फिर उनको अपने बीच में निमन्त्रित कर रहे हैं।

सौराष्ट्र से कितने ही महापुरुष निकले हैं। कई विदेश व्यापारार्थ गये, कई विद्याभ्यास के लिये कोई जगत के कल्याणार्थ निकल पड़े। परन्तु तीन महापुरुष निकले जिन्होंने केवल अपने ही जीवन का कल्याण नहीं किया अपितु समस्त संसार के मानव जाति का कल्याण किया और भारत की मौलिक संस्कृति का निर्माण किया।

भगवान कृष्ण यहां से निकले जिन्होंने "परित्राणाय साधूनाम" को ललकारा, और विश्व में धर्म का नाश होता देख, धर्म की संस्थापनार्थ निकल पड़े। इसके पीछे ऐसे महापुरुष राष्ट्र विधायक, महर्षि दयानन्द को आज के शिवरात्री के दिन परब्रह्म का ज्ञान हुआ और वे भी संसार के कल्याणार्थ गृह त्याग कर निकल पड़े उनके जीवन का कार्य और ध्येय हम सब जानते हैं। उनके कार्य का प्रभाव आज यहां टंकारा में हजारों की संख्या में देश भर से उपस्थित नर नारियों को देखकर लगाया जा सकता है। उनके पीछे महात्मा गांधी निकले ये सब सौराष्ट्र के गौरव ही नहीं हैं बल्कि भारत की संस्कृति के गौरव हैं। हजारों वर्ष व्यतीत होने पर भी आज अपनी संस्कृति हम लोगों को प्रेरणा दे रही है। भारत के कोने कोने में इस संस्कृति का अमर प्रभाव है। संस्कृति के प्रसार के लिए संस्कृति की भावना में रंगने के लिये यह तीनों महापुरुष भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक घूमे। कोई भी कोना इनके प्रभाव और प्रेरणा से वंचित नहीं रहा।

आज हम महर्षि दयानन्द को अपने बीच में नहीं देख रहे। किन्तु उनका अमर व्यक्तित्व अपने को प्रेरणा दे रहा है। उनका पुरुषार्थ अमर था और वे आज भी हम में अथाह उत्साह पैदा कर रहे हैं। साधन और साध्य को महर्षि दयानन्द ने अपने प्रकाण्ड पुरुषार्थ से एक कर दिया था। इस महा पुरुष ने अपने जीवन में मां भारती की शील रक्षा के अतिरिक्त और कुछ नहीं विचारा। भारत को उन्होंने नवजीवन और आत्मविश्वास से भर दिया था। हिन्दुधर्म में जो संकीर्णता की भावना व्याप्त थी उसको दूर करने में उन्होंने अपनी जीवन की बाजी लगा दी थी, और देश की जनता में वीरत्व और जीवित रहने की भावना की लहर पैदा कर दी थी।

इस पुण्यविभूति को श्रद्धांजलि देने के लिए हम सब एकत्रित हुए हैं समस्त देश के कोने २ से लोग एकत्रित हुए हैं। यह अपनी अखण्ड एकता का प्रतीक है। इतने अधिक व्यक्ति सौराष्ट्र पहुँच गये यह एक मेरी धारणा में शुभ चिन्ह है। ऐसा कहें तो ठीक होगा कि तो यहां एक छोटा सा भारत आबाद हो गया है एकत्रित हो गया है। टंकारा में भारत की एकता को मूर्तिमान देखकर मैं गौरव अनुभव करता हूँ। महर्षि दयानन्द के जीवन का उद्देश्य भारत की एकता को प्रत्यक्ष देखने का था। देश की बिखरी हुई जनता के भेदभाव दूर कर राष्ट्र की एकता के लिये उन्होंने जीवन पर्यन्त कार्य किया। और उस एकता के यहां दर्शन हो रहे हैं ऋषि दयानन्द के जीवन उद्देश्य की यहां पूर्ति हो रही है। सौराष्ट्र में भारत के दूसरे प्रांतों के बीच जो दीवार थी वह आज दूर हो गई है। यह सब महर्षि दयानन्द और भारतीय संस्कृति, का प्रभाव है।

(शेष पृष्ठ २३)

टङ्कारा महोत्सव में

न्यायमूर्ति श्री मेहरचन्द महाजन का ध्वजारोहण के समय दिया गया भाषण

महर्षि दयानन्द स्मारक टंकारा के उद्घाटन के समय शिवरात्रि पर ७ मार्च को विशाल जुलूस निकाला वह उत्साह के वातावरण से परिपूर्ण तथा दर्शनीय था। टंकारा नगरी में घूम कर जुलूस महर्षि दयानन्द महालय में आकर पहुँचा तब ओ३म् ध्वज फहराने की क्रिया न्यायमूर्ति श्री मेहरचन्द महाजन के हाथों सम्पन्न हुई। इस शुभ अवसर पर आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा आर्य कन्या गुरुकुल पोरबन्दर, दयानन्द कन्या विद्यालय जामनगर, गुरुकुल सूपा, गुरुकुल सोनगढ़ तथा आर्य कुमार आश्रम बड़ौदा के गणवेशधारी ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणियों ने सैनिक वन्दन किया तथा विशाल जन समूह ने ओ३म् ध्वज को मस्तक झुकाया—उत्साह और उमंग भरे वातावरण में ओ३म् ध्वज लहराते समय श्री महाजन ने एक सारगर्भित भाषण देते हुए कहा कि—

मैं यहां पर नेता अथवा कार्यकर्ता के रूप में नहीं आया। वरन् में यहां एक ऋषि भक्त के नाते उनकी जन्मभूमि के दर्शन करने आया हूं। एक यात्री के रूप में आया हूं। मेरे ऊपर एक कर्तव्य का भार आज रक्खा गया है इस समारोह के प्राण और ऋषि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट के मन्त्री श्री पं० आनन्द प्रिय जी एक जबर्दस्त और महान् कार्यकर्ता हैं। मुझे उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए, इसलिए आज ओ३म् का झंडा लहराता हूं। महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि में मैं यह झंडा फहराता हूं यह मेरे जीवन का एक पुण्य प्रसंग है। यह ओ३म् का पवित्र झंडा हम को क्या कहता है? इस झंडे की एक समस्या है वह मैं आपके सामने रखता हूं इस झंडे को ही हम क्यों फहाराते हैं? इस झंडे को फहराने के लिए महर्षि दयानन्द ने बड़ा परिश्रम किया था। कारण कि यह वैदिक संस्कृति का चिह्न है। सकल संसार को परमात्मा का मार्ग बताने वाला यह झंडा है। एक समय देश में अनेक देवी देवताओं की पूजा खूब चल निकली थी। उस समय जो महर्षि दयानन्द पैदा न होते तो देश की दूसरी ही दशा होती। सारा पंजाब तो मुसलमान व ईसाई बन गया होता। परन्तु युग विधाता महर्षि दयानन्द ने इस प्रभाव से सारे देश को बचा लिया। ऐसे महा पुरुष को मैं ध्वजारोहण के इस परम पुनीत अवसर पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

उन्होंने भारत में वैदिक संस्कृति को फिर से जागृत किया। और वेदों का पुनरुद्धार करके जगत् को परमात्मा का मार्ग बताया। सारे संसार के लिए परमातमा का मार्ग, यह ऋषि दयानन्द का बताया हुआ मार्ग है। इस यात्रा में से कुछ ग्रहण करना हो तो यही है। यही ऋषि का संदेश है। यहां अनाज इत्यादि सब होता है। ऐसा तो सब जगह होता है। हम सब यहां किस लिए आये हैं? स्वामी जा संदेश ग्रहण करने के लिये आये हैं। उन्होंने यहां जन्म लिया। और छोटी आयु में ही उनके मन में क्रांति की भावना जागृत हो गई। और सारे संसार को झकझोर दिया। चूहा तो सभी देखते है परन्तु उस चूहे की घटना में से जो ज्ञान उनके मन में उत्पन्न हुआ उसका एक महान् इतिहास बन चुका है। परमात्मा ने उन्हें मनुष्य जाति और संसार के उद्धार के लिये भेजा। एक छोटे से शिवालय ने उन्हें ज्ञान दिया और मूलशंकर में से दयानन्द बनने की उन्हें प्रेरणा दी। और संसार को जगाने के लिए आह्वान किया। अपने लिए टंकारा की यह एक

महान विशेषता है। आज तो हम मोटरों और विमानों में फिरते हैं परन्तु उस जमाने में जब कि ये साधन न थे तब उन्होंने पैदल ही सारे देश को खून्द डाला कोई भी क्षेत्र बाकी नहीं छोड़ा। उन्होंने हम को स्वराज्य का मार्ग बताया और सच्ची राष्ट्रीयता प्राप्त करने के लिये आह्वान किया। और राष्ट्रीय एकता के लिए हिन्दी भाषा का प्रचार किया। अस्पृश्यता को मिटाया और अछूत पन के कलंक से पीड़ित अपने करोड़ों देश-बन्धुओं को अपने गले लगाया। स्त्री और शूद्रा को वेद पढ़ने का अधिकार है यह भी सिद्ध कर दिखाया। स्त्रियों को ऊपर उठाया उनको समान अधिकार दिलाकर शिक्षणालय का मार्ग बताया वैदिक संस्कृति का सच्चा स्वरूप समझा कर बताया कि स्त्रियां तो अपनी सिरताज और शोभा है। महर्षि ने कहा कि परदेशी शिक्षण को छोड़ कर देशी शिक्षण प्राप्त करो। और अपने गुरुकुल व विद्यालय खोलने का आदेश दिया। संक्षेप में कहूँ तो ऋषि ने कुछ भी बाकी छोड़ा नहीं। उन्होंने कहा कि जो हिन्दू ईसाई मुसलमान बन सकते हैं तो ईसाई मुसलमान भी हिन्दू बन सकते है। उनके लिए उन्होंने शुद्धि की संजीवनी बूटी संसार के सामने रक्खी।

उनके पीछे महात्मा गांधी हुये जिन्होंने महर्षि दयानन्द का कार्य पूरा किया। देश को स्वतन्त्र किया। आर्य समाज के बच्चे-बच्चे ने स्वातन्त्र युद्ध में भाग लिया। ८५७ से १९४७ तक महर्षि दयानन्द और उनके अनुयाइयों ने केवल स्वतन्त्रता की लड़ाई में ही भाग नहीं लिया वरन् नेतृत्व भी किया। उसमें अनेकों को फांसी हुई। और आ-जन्म कालेपानी की सजा पाकर नारकीय यातनायें भोगते रहे।

सौराष्ट्र की भूमि वीर प्रसविनी भूमि है। इस ने देश को नेता दिये हैं। मैं इस भूमि में से एक दूसरा नेता ंगता हूँ। नम्र याचना करता हूँ कि एक ऐसा नेता पैदा करो। इसके लिए आप प्रतिज्ञा करें।

आर्य समाजियों ने "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का जय घोष किया था। परन्तु यह अभी तक पूर्ण नहीं हुआ। अभी तो करोड़ों को आर्य बनाना है। यह प्रतिज्ञा पूर्ण करनी अभी शेष है।

सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ो। महर्षि दयानन्द ने कहा था कि मैं सत्य की खोज में और सत्य का प्रकाश करने निकला हूँ। मैं किसी सम्प्रदाय के दिल को दुखाना नहीं चाहता परन्तु सत्य की खोज करने के लिये कहता हूँ। मैं जो कुछ कहता हूँ उसे यों ही नहीं मान लेना परन्तु सत्य की कसौटी पर कस कर जिसे तुम्हारा हृदय व आत्मा स्वीकार करे उसी को मानना। इस प्रकार दयानन्द ने सब के लिये अपने द्वार खुले रक्खे। दूसरे सम्प्रदायों के समान बन्द नहीं रक्खे। आर्य समाज और दयानन्द ने बहुत कुछ किया। शिक्षा के क्षेत्र में भी बहुत कुछ किया। महर्षि दयानन्द ने वेद भाष्य का जो कार्य अधूरा छोडा था उसे आर्य समाज पूर्ण नहीं कर सका, यह अपनी निर्बलता है।

देश की आज सब से बड़ी आवश्यकता क्या है? रोज कारखाने बनते हैं, योजनायें बनती है, पैसे का महत्व बढ़ता जा रहा है। चाहे जिस मार्ग से मिले, पैसा मिलना चाहिये। परन्तु आज सत्य नहीं रहा, वदिक सभ्यता छिन्न भिन्न हो गई है। नैतिक स्तर नीचे चला गया है। स्वराज्य आने पर भी यह दशा है, तो फिर स्वराज्य से अपने को क्या लाभ हुआ? स्वराज्य में तो आत्मा की उन्नति और चरित्र निर्माण का कार्य सर्व प्रथम होना चाहिये। महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के जो दस नियम बनाये हैं यदि उनके ऊपर आज की सरकार और जनता चले तो देश का कल्याण हो! देश सदाचारी और चरित्रवान बन जाय। देश में फिर से प्राचीन भारतवर्ष आ जाय।

आर्य समाजी चरित्र बल में खूब शुद्ध और चुस्त थे। एक आर्य समाजी के आचरण से अन्य लोग प्रभावित होते थे और डरते थे। इतना ही नहीं परन्तु उनके पवित्र जीवन के प्रभाव से कितने ही लोगों ने शराब छोड़ी। आज आर्य समाजियो को फिर से ऐसा प्रभाव उत्पन्न करने की आवश्यकता है। उन्हें देश के चरित्र निर्माण के कार्य में लग जाना चाहिए।

एक समय था जब कि अंग्रेज अपने से अर्थात् आर्य समाजियों से डरते थे। आर्य समाजियों की विशुद्ध राष्ट्रीयता, कट्टर देश भक्ति, और सिद्धांत चुस्त होने का विश्वास अंग्रेजों को हो चुका था। अपने गुरुकुल, विद्यालय, और शिक्षा संस्थायें स्वराज्य और क्रान्तिकारी आन्दोलनों के गढ़ थे। अपने कार्य अंग्रेजों में भय उत्पन्न करते थे हमें फिर से ऐसे प्रभावोत्पादक कार्यों में पड़ जाता है। मैं फिर से कहता हूँ कि सौराष्ट्र वासिओं एक ऐसा नेता दो जोकि महर्षि दयानन्द का कार्य पूर्ण कर सके।

श्री अनन्त शयनम् आयंगर

समारोह के मुख्य अतिथि श्री अनन्त शयनम आयंगर अध्यक्ष लोकभा थे उन्होंने महर्षि स्मारक का उद्घाटन करते हुये कहा कि यदि महात्मा गांधी राष्ट्रपिता हैं तो महर्षि दयानन्द राष्ट्रपितामह हैं। ऐसे महा पुरुष के स्मारक का उद्घाटन करना भी एक गौरव है। यह स्मारक जड़ है इसे प्राणवान बनाओ। यहा वेदों व उपनिषदों का अनुशोलन होना चाहिये। यहां से निकल कर मिश्नरी संसार के कोने २ में फैल जाये। महर्षि दयानन्द की बुनियाद पर ही गांधी जी चले थे। जब कोई सोचता भी नहीं था तब उन्होंने अस्पृश्यता के कलंक को दूर करने की आवाज उठाई। मैं उस महर्षि को अपनी श्रद्धांजलि अर्पण करता हूँ।

(शेष पृष्ठ २० का)

भारतीय संस्कृति जहां पहुँचती है वहां संकेत मिलता है इस एकता का होम हवन यज्ञ माध्यम बना कर स्मरण करते हैं। एक नये और प्राचीन भारत के बीच माध्यम था। प्राचीन भारत का गौरव स्मरण करके ही हम नये भारत का निर्माण कर रहे हैं। प्राचीन और नवीन भारत के बोच महर्षि दयानन्द के जीवन का कार्य एक पुल के समान है। रोम और ग्रीस की संस्कृति आज कहां है? परन्तु अपना परम सौभाग्य हैं प्राचोन संस्कृति को निचोड़ कर अपने सामने रखने वाले इस देश में पैदा हुए। उनमें से मुख्य महर्षि दयानन्द जी हैं। भारत जब कि भौतिक समृद्धि की ओर अग्रसर हो रहा है। तब प्राचीन संस्कृति छोड़ कर आगे नहीं बढ़ सकता। अपने राष्ट्र नेता पण्डित नेहरू ने भी अभी हाल में अपने प्राचीन संस्कृति को समझ कर और उसको सुरक्षित रखने के लिये आह्वान किया है। प्राचीन इतिहास की जो विशेषताएं हैं उसे अपने हृदय में अंकित कर लेना चाहिये। हमें अन्य देशों के साथ भी चलना है। कारण कि संसार के सब देश भारत को देख रहे हैं। जो विशेषता भारत में है वह अन्य कहीं नहीं। इस विशेपता को एक अमूल्य सम्पत्ति की प्रकार सम्भालना है। यहां शान्ति मन्त्र का उद्घोष हुआ है और अन्त में शान्ति की भावना पैदा होनी चाहिए। वैदिक धर्म और वेद हमें शान्ति की दिशा में ले जा रहा है हमें सामूहिक और अन्तर्राष्ट्रीय जीवन की भी प्रेरणा दे रहा है।

पुण्य तपश्चर्या करके भारतीय संस्कृति का सत्य अर्थ हमारे सामने महर्षि दयानन्द ने रखा है। इनके चरणों में हम आज श्रद्धांजलि अर्पण कर रहे हैं।

हमारा वर्तमान सञ्चालन और कार्य की रूप रेखा

ट्रस्टडीड में सेठ श्री नान जी भाई ने ऐसा लिखा है कि स्मारक के मुख्य अंगों में बाल मंदिर, कन्या पाठशाला, संन्यास आश्रम, पुस्तकालय, बाग, टावर, क्रीडांगन, व्यायाम शाला इत्यादि जो जो आवश्यक प्रतीत हो और ट्रस्ट में जितना शक्य हो उतना ऊपर के उद्देश्यों के अनुकूल सार्वजनिक हित तथा सुख कार्य की तमाम प्रवृत्तियां करनी।

इसके उपरांत उन्होंने लिखा है कि आर्य सिद्धान्त तथा वैदिक धर्म के अनुकूल जैसा योग्य लगे वैसी तमाम प्रवृतियां करनी।

इन उद्देश्यों को सामने रखते हुए महर्षि दयानन्द स्मारक की एक सभा नई दिल्ली में श्री हंसराज गुप्त के निवास स्थान बीस (२०) बारा खम्बा रोड़ पर ता० ४-१२-५५ को हुई थी। उस समय निम्नलिखित महानुभाव उपस्थित थे।

(१) सेठ श्री प्रताप सिंह जी शूरजी भाई
(२) श्री म० कृष्ण जी
(३) ,, म० हंसराज जी गुप्त
(४) ,, डा० मथुरादास जी मोगा वाले
(५) ,, प्रो० इन्द्र जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
(६) श्री पं० आनन्द प्रिय जी बड़ौदा
(७) ,, मं. गोविन्द राम जी।

प्रधान पद श्री प्रताप सिंह जी ने ग्रहण किया। विशेष आमंत्रण से निम्नलिखित महानुभाव उपस्थित थे।

(१) श्री ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु
(२) ,, आचार्य विश्वश्रवा जी
(३) ,, डा० मंगल देव जी शास्त्री
(४) ,, चरणदास जी पुरी एडवोकेट
(५) ,, विष्णु चन्द जी
(६) ,, चितरंजन जी अजमेर

उस समय ट्रस्ट का भाविक क्या रूप हो, इस सम्बन्ध में निम्न लिखित प्रस्ताव किया गया है।

(१) वहां एक रिसर्च इनस्टीट्यूट वैदिक अनुसंधान विभाग।
(२) एक पुस्तकालय खोला जाय और चार विद्वान् पंडित रक्खे जायें।
(३) आवश्यकतानुसार एक संन्यास आश्रम, वानप्रस्थाश्रम और विद्यार्थी गृह भी खोला जाय।
(४) महर्षि के चित्रों एवं ग्रन्थों का संग्रह किया जाय।
(५) सत्यार्थ प्रकाश को सभी भाषाओं में छाप कर सस्ते भाव में प्रचारित किया जाय।
(६) महर्षि के जीवन की झांकी कराता हुआ एक एतिहासिक स्तूप तैयार किया जाय।
(७) महर्षि के जन्म स्थान पर एक टावर हो।
(८) महर्षि के ग्रन्थों का अनुशीलन हो उनके खण्डन-मंडन के ग्रन्थों का संग्रह रखा जाय।

ट्रस्टियों ने इसी प्रस्ताव को २२-११-५८ की सभा में दुहराया है। और इसमें इतना और पारित किया।

(१) संक्षिप्त में महर्षि की स्मृति बनी रहे, ऐसे सभी प्रकार के कार्य करने की अनुमति दी जाती है।

साथ ही साथ इन कार्यों में आरोग्य धाम, योग-आश्रम आदि का भी समावेश किया जाय।

इस प्रस्ताव के अनुसार ट्रस्ट ने वेद अनुसंधान विभाग का कार्य प्रारम्भ कर दिया है। श्री युधिष्ठिर जी मीमांसक, श्री धर्मदेव जी विरूक्ताचार्य, और श्री धीवेन्द्र जी शर्मा इस विभाग में काम कर रहे हैं।

श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी होम्यो मिशन द्वारा स्थापित, धर्मार्थ होम्योपैथिक औषधालय चला रहे हैं। स्वामी जी प्रथम संन्यासी है। जो महर्षि महालय में रहने आये हैं।

जैतपुर म्युनिसीपलटी के निवृत्त प्रधान श्री अंबालाल जी पटेल जो एक पुराने कर्मठ आर्य हैं, अपनी अवैतनिक सेवाएं दे रहे हैं। ट्रस्ट ने महालय की सर्व व्यवस्था का उन्हें व्यवस्थापक बनाया है।

श्री नाना लाल उपाध्याय वकील जो हमारे ट्रस्टी हैं, अवैतनिक रूप से अनेक रूप में सेवाएं देते रहते हैं और समय समय पर टंकारा में रह कर कार्य में मार्ग दर्शन देते हैं।

सादी के श्री लल्लु भाई पटेल भी वानप्रस्थी के रूप में अपनी सेवाएं देने आ गये हैं। वह सब कार्यों में योग दान देते हैं। हिसाबी और आफिस का काम भी देखते हैं।

दिल्ली के श्री गोविन्दराम हासानन्द जी सपत्नी गुजराती में ट्रेक्ट प्रकाशन के लिये आ गये हैं। उनकी उपस्थिति से सब कार्यों को बल प्राप्त होता है।

श्री जीवन लाल राठौर गुजराती के लेखक और उपदेशक के रूप में ट्रस्ट की ओर से नियुक्त किए गये हैं। और सुन्दर सेवाएं दे रहे हैं।

श्री इन्दुलाल पटेल भी अनेक सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

इसके उपरान्त टंकारा आर्यसमाज के श्रीमती शान्ता बेन, श्री राम जी भाई, मोरबी के श्री लक्ष्मण भाई और राजकोट के श्री मधु भाई आर्य तथा मगन भाई भी अपनी सेवाएं अवैतनिक रूप से देते रहते हैं इसके उपरान्त पानी, बिजली, रसोई स्वच्छता तथा रखवाली और बाग बानी के लिये अनेक सेवक नियुक्त किये गए हैं। ट्रस्ट का इस पर लगभग २००० रु० मासिक खर्च हो रहा है।

टंकारा ग्राम में महर्षि दयानन्द हाई स्कूल भी स्थापित हो चुका है। जिस पर ट्रस्ट की छाया तो रहेगी, पर संचालन स्वतन्त्र है।

ट्रस्ट का बैंक एकाउन्ट देना बैंक पोरबंदर तथा स्टेट बैंक आफ सौराष्ट्र टंकारा में है।

पोरबन्दर का खाता ट्रस्ट की ओर से ट्रस्टी श्री चतुर भाई पटेल तथा मन्त्री श्री पंडित आनन्द प्रिय के नाम है उनके संयुक्त हस्ताक्षर से ही पैसा निकाला जा सकता है।

टंकारा का खाता श्री मगन भाई जोषी ट्रस्टी, श्री नाना लाल वकील ट्रस्टी, तथा श्री अंबालाल पटेल व्यवस्थापक के नाम पर है। उनमें से दो के हस्ताक्षर से पैसा निकाला जा सकता है?

टंकारा में एक कमरे में महर्षि के जीवन से स्पर्श करते हुए चित्रों का निर्माण सौराष्ट्र के सुप्रसिद्ध चित्रकार श्री नाना भाई टांक वैतनिक रूप में कर रहे हैं।

इस प्रकार ट्रस्ट ने अल्प काल में ही सुन्दर कार्य आरम्भ कर दिया है।

—:o—

टंकारा समाचार

टङ्कारा में महर्षि दयानन्द स्मारक उद्घाटन के पश्चात् अनेक विधि कार्यों का आरम्भ टंकारा से हो सका है।

(१) उद्घाटन उत्सव के पश्चात् महर्षि दयानन्द धर्मार्थ होमियो पैथिक औषधालय का काम स्वामी ब्रह्मानन्द जी कर रहे हैं। अभी तक ४०० से अधिक रोगी लाभ उठा चुके हैं।

(२) सिन्ध प्रांत के वितरागी श्री स्वामी सत्यानन्द जी ब्यावर से टंकारा में आए हैं, वे अपने खर्च से ही महालय में रहेंगे तथा टंकारा के आसपास के ग्रामों में प्रचार कार्य करेंगें।

(३) पंडित युधिष्ठिर जी मीमांसक वेद अनुसंधान विभाग के कार्य के लिए निजी ५०० पुस्तकों के साथ आ गये हैं। उन्होंने अपना कार्य आरम्भ कर दिया है। सर्वप्रथम पंजाब की शास्त्री परीक्षा में नियुक्त ऋषि दयानन्दकृत वेद भाष्य के मन्त्रों का संग्रह करके ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित किया जायगा।

(४) महाशय गोविन्दराम जी सपत्नीक महर्षि महालय टंकारा में रहने आ गये हैं। उनकी अध्यक्षता में आर्य साहित्य बेचने के लिये ट्रस्ट की ओर से पुस्तक विक्रय विभाग आरम्भ हो गया है। उनकी ओर से गुजराती भाषा में ट्रैक्ट निकालने की भी व्यवस्था हो गई है। तथा भोजनालय की व्यवस्था भी उनके आधीन करदी गई है।

(५) महालय में चार कमरे पुस्तकालय के लिए निर्धारित कर लिये गये हैं। वैदिक साहित्य की पुस्तकें मंगाई जा रही हैं। पुस्तकों के लिए बम्बई गोद्रेज कम्पनी से स्टील-रेक्स मंगवाने का प्रबन्ध हो रहा है।

(६) टंकारा ग्राम में ट्रस्ट से स्वतन्त्र रूप में महर्षि दयानन्द हाई स्कूल को स्थापना १६ जून से हो गई है। इसके अनुसांगिक महर्षि दयानन्द ब्रह्मचार्याश्रम (छात्रालय) भी खुल जायेगा। हमारे ट्रस्टी श्री नानालाल वकील इन कार्यों कोदेख रहे हैं।

(७) ट्रस्ट के अनुसंधान विभाग की ओर से द्वै मासिक "आर्यज्योति" नाम की पत्रिका निकल रही हैं। इसका वार्षिक शुल्क ६) रु० रहेगा।

(८) महालय में सायंकाल सन्ध्या हवन के समय प्रतिदिन वेद मन्त्रों पर विद्वानों के प्रवचन होते रहते हैं। आर्य समाज टंकारा में प्रति रविवार सप्ताहिक सत्संग में सब प्रेमपूर्वक भाग लेते हैं।

(९) महालय की ओर से आर्य पारिवारिक सत्संग का आयोजन किया गया है। भिन्न-भिन्न स्थलों में ६ पारिवारिक सत्संग हो चुके हैं। इसमें टंकारा ग्राम में ठीक जागृति आ रही है।

(१०) महालय स्थित ट्रस्ट के सबकार्य कर्ताओं ने तथा टंकारा आर्यसमाज के सदस्यों ने प्रति मास प्रीतिभोजन आयोजन किया है। इससे परस्पर सम्बन्ध बढ़ेगा। और प्रचार कार्य को वेग मिलेगा। प्रीतिभोज का खर्च सब आपस में बांट लेंगे।

(११) टंकारा में महर्षि के भक्तों का साधक आश्रम खुल गया है। जो भी ऋषि भक्त किसी भी रूप में अवैतनिक सेवा दे सके वे साधक बन कर आ सकता है। साधकों से उनकी योग्यतानुसार हर कोई काम लिया जावेगा।

(१२) बड़ौदा के श्री लल्लुभाई पटेल वानप्रस्थी साधक बन कर रहने आ गये हैं। वे आफिस हिसाब तथा ब्रह्मचार्याश्रम में योग दान दे रहे हैं।

(१५) हमारे बम्बई के ट्रस्टी श्री भगवानदेव आर्य ने प्रकाशन कार्य के लिए ट्रस्ट को मासिक २००) रुपये देना स्वीकार किया है। धन्यवाद

(१४) महालय के एक कमरे को (आर्टगेलिरी) ऋषि दयानन्द के जीवन घटनाओं के चित्रों से सुशोभित किया जावेगा यह कार्य भी एक सुयोग्य चित्रकार द्वारा कार्य आरम्भ हो गया।

निवेदक—आनन्दप्रिय मन्त्री

टङ्कारा स्मारक ट्रस्ट के दान दाताओं की सूची

२५००) सर्व श्री एक गृहस्थ गुप्त दान
१००१) ,, जयाबेन गिरधरलाल
गोविन्द जी मेहता मौरवी
१००१) सेठ पी० एम० शर्मा मद्रास
६००) स्वामी कृपानन्द हापुड़
५०१) गुरुकुल सोनगढ़ के ब्रह्मचारी गण सोनागढ़
५०१) गुरुकुल सूपा
५००) डा० मथुरादास पाहवा दिल्ली
३४५) देहली के आर्य भाईयों के द्वारा देवदत्त
जी दिल्ली
३१५) आर्य समाज गंगानगर (राजस्थान)
२०१) ,, ,, भावनगर (सौराष्ट्र)
२००) बृहत् सौराष्ट्र आ. प्रा. सभा जामनगर
२००) वीरपुर वाले महन्त जलाराम जो
१५१) रुक्मणिबेन बम्बई
१०५) डा० एम. बी. ठाकुर
१०५) कृष्ण दुलारी बिहारी लाल दिल्ली
२३१।।।=) एन. एल. मोरजारिया नैरोबी

१०१) के दान दाता

सर्व श्रीं सुतराम जी सोनी अहमदाबाद
लल्लु भाई तलजा भाई पटेल सादी
कालूराम जी तोषनी व्यावर
आर्य समाज दिव (गोवा)
देवराज गुप्ता दीनानगर
श्री कमानी आइल मिल्स कम्पनी बम्बई
दामोदर दास पी. देसाई सोनागढ़
आर्य कन्या गुरुकुल पोरबंदर की शिक्षिकायें
पोरबन्दर
श्रीमती व लाला मानकचन्द जी बजाज १०२) दिल्ली
मंत्री जी लाजपत नगर आर्य समाज १०२) दिल्लो
सर्व श्री रामदेव जी दिल्ली

कविराज हरनामदास जी दिल्ली
मेंडूराम जोधानी जैतपुर
श्री कृष्णदत्त मेरठ
श्री मती अमृतबेन गिरधर लाल मौरवी
श्री नारायण दास मेलूमल जैतपुर
सावन राम जी आहूजा बम्बई
सीतादेवी फकीर भाई सूरत
ठाकुर साहब वीरपुर
नान जी भाई कालीदास सवानी राजकोट
मूल जी भाई पाल जी भाई सूचक राजकोट
गोपीचन्द ओम् प्रकाश राजकोट
डा० नवनीतलाल प्राणलाल वीरमगांव
श्री मती यशोदा देवी गोविन्दराम दिल्लो
श्री रामबली मेहता मंत्री आ० स० दानापुर
आर्यसमाज बावला

१००) के दान दाता

सर्व श्री कान्तीलाल एम. पटेल पाटन
माधव जी खटाऊ बम्बई
जड़ाव बेन सोमाभाई इटोला
महाशय कृष्ण जी देहलो
चरणदास जी पुरी देहली
द्वारा महाशय कृष्ण जी देहली
चौधरो संग्राम जी आर्य करनाल
श्री रंगवाले लाहौर
सरस्वती बेन पंडित टांगा (अफ्रीका)
हंसराज कपूर 'रामलाल कपूर एण्डसंस' अमृतसर
राजकुमार श्री रणञ्जयसिंह जी एम. एल. सी.
अमेठी
मेहरचन्द जी महाजन दिल्ली
चोहरमल जी नाथा जी बड़ौदा
शान्तिदत्त जी मंत्री आ० स० गुरदासपुर

मामरा सिंह जी रायपुर
श्री मती हरदेवी जी प्रीतमलाल दिल्ली

५१) के दान दाता

सर्व श्री राय साहब चौधरी करनाल
रामदास जी रंगवाले दिल्ली
केशवलाल प्रेमचन्द मेहता वीरमगांव
डा० जेठालाल केशवलाल टंखेड़ा
जे० आर० मेहता बम्बई
आर्य समाज जरीफटका कोलोनी नागपुर
साधूराम वसुमल वास्वानी बड़ौदा
गुलजारीलाल आर्य बम्बई
टेकचन्द क्षेत्रपाल इन्दौर
माव जी भाई कालीदास एण्ड को सोनगढ़
जे० आर० आर्य राजकोट
रमेशचन्द्र डी० आर्य अहमदाबाद
सुशीला बेन गणपतराम आर्य बम्बई
आर्य समाज गोविन्द भवन दिल्ली

५०) के दान दाता

सर्व श्री ओम प्रकाश जी भाटापाड़ा
खुशालचन्द लुधियाना
दयाल जी भाई भीमभाई देसाई सोनगढ़
माता आनन्द कुमारी कल्याण
पोपटलाल पी. मिस्त्री मौरवी
रामा ट्रेडिंग कम्पनी भावनगर
वेद पथिक धर्मवीर झण्डाधारी दिल्ली
सेठ श्री वाला वक्स एण्ड बिड़ला कम्पनी भरुच

४०) के दान दाता

ओं साइकल मार्ट देहली
आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर
३६) आर्य समाज मौरवी

२५) के दान दाता

चो० रामचन्द्र जी भाटिया करनाल
बेलीराम जी भाटिया ,,
मगनलाल प्रीतमदास बम्बई
पन्ना लाल जी दिल्ली
मेलाराम जी आगरा
खेमराज सोनी करनाल
ईश्वर प्रकाश जी ,,
प्रतापचन्द्र जी सेठी ,,
देवदत्त जी दिल्ली
आर्य समाज लक्ष्मणसर अमृतसर
नारायण भाई मावजी भाई राजकोट
पार्वती बेन करसन जी देसाई मझगांव
हर गोविन्द जी हीरजभाई जूनागढ़
परमानन्द घनश्याम लाल बुटानी जेतपुर
हरलाल जी मिस्त्री २६) अजमेर
मुन्नालाल जी बड़ौदा
किशोर चन्द्र रतीलाल रावल भावनगर
जमनादास नानचन्द कन्ट्रेक्टर ,,
प्रकाश कश्यप सिंगारनगर
किरिट सिंह रणजीत सिंह सोनगढ़
धर्मवीर जीवाभाई ,,
बन्सीलाल अग्रवाल दिल्ली
टीलूमल नेभनदास बम्बई
नामदार ठाकुर साहब, सांपला
दीवान चन्द्र जी चौपड़ा तिलहर

१५) के दान दाता

सर्व श्री गुप्त दान
आर्य समाज खोड़ापीपड़
डा० फकीर चन्द करनाल
कोहीली ब्रादर्स नागपुर
आर्य समाज गांधीधाम (कच्छ)
प्राग जी राजा परमार बड़ौदा
आर्य समाज जूनागढ़
ध्रागन्ध्रा आर्य समाज ध्रागन्ध्रा
जवनदामल देहली

३१) के दान दाता

श्री दीवान टहेलचन्द जी करनाल
आर्य समाज टंकारा

३०) के दान दाता

श्री भगतराम हरकिशन इन्दौर
हीर जी भाई मोती भाई परधरी
गोकलदास पूंजा भाई वीरमगांव

१०) के दान दाता

सर्व श्री चौ० नत्थालाल जी हिसार
हीर जी भाई कालीदास दिव
दीवाली बेन राजकोट
नागजी भाई विठ्ठल भाई भरुच
एक गृहस्थ वीरमगांव
भीमसेन काछूमल भाटापाड़ा
वेद प्रकाश हेमराज आर्य ,,
दमयन्ती बहन वल्लभ भाई ननसार
दिव्यात्मा मणि गौरी जी नर्मद जिज्ञासु सूरत
लाला गोविन्द राम करनाल
भीमसेन जी आर्य ,,
पुरुषोतम बी. गोहिला भरुच
ज्योति प्रकाश ओं प्रकाश शिमला
गोविन्द दास जी नई देहली
विष्णुदत्त जी पंजाब
मिस्त्री नाग जी देव जी राजकोट
प्रीतम देव जी सनलाल दिल्ली
मालोमल मूलचन्द अहमदाबाद
तानचन्द जी भटिंडा
डा० दुर्गादास कानपुर
वेद प्रभा देवी जी बड़ौदा
श्री मती आशाराम दिल्ली
नटवर लाल तलजा भाई इटोला
टोकरसी भाई बम्बई
डा० ज्योत्सना बेन ,,
श्री कुमार पटेल ,,
सौ. प्रमिला पटेल ,,
चन्दूलाल आई शाह ,,
बलजीत राय कोहली नागपुर
नर्मदाशंकर जिज्ञासु सूरत
इन्द्र सेन जी देहली
सीताराम बुकसेलर अम्बाला
मदनजीत आर्य फिरोजपुर
भग्गुभाई बी रेठरिया रतलाम
परसराम शर्मा कोटकपूरा
श्री वीरसेन शर्मा जहाँगीरपुर
तुलसीदास आर्य कानपुर
विनोद कुमार गणपतराय आर्य बम्बई
सोमपाला जी बरेली
खुशाल भाई के० पटेल देवगढ़ वाड़िया
धीरजलाल माणेकलाल शाह जोरावरनगर
वेदवती बहिन फगवाडा
डा० चन्द्रदेव वानप्रस्थी रोहतक
जगत नारायण जी झांसी
बोधराम साहनी ,,
जैराम जी देहली
मेहलूराम जैतपुर
गोकल भाई मूल जी जामनगर
भाईलाल भाई रोध
आर्य समाज गोंडल
रामस्वरूप गुप्त नई देहली
रामनारयण आर्य अहमदाबाद
मेराम नारायण भाई जालिया
टोपन दास पमनदास अहमदाबाद
मेघराज तागाराम ,,
मोहनलाल गोपाल जी राजकोट
साधुराम कलवानी बड़ौदा
गुप्तदान ,,
चौ० किशल लाल रोहतक
खुशाल भाई रणछोड़ भाई भरुच
अन्तोला भाई जोड़ा भाई ,,
नगीन भाई हरिवल्लभदास ,,
खुशाल भाई देवजी भाई ,,
छोटालाल मोतीलाल ,,
नागजी भाइ विठलदास ,,

छोटालाल परशोतम दास भरुच
दयाराम कपूरचन्द ,,
चतुरभाई सोमाभाई ,,
नगीनदास मणिक चन्द हांसोठ
महेन्द्रनाथ कालीदास वेदालकार ,,
श्री खुशाल भाई आर्य वाघोड़िया
रश्मी बेन वड़ोदरा
सुरेश ,,
भट्ट एण्ड कम्पनी ,,
डाह्याभाई चतुर भाई ,,
जगमोहन दास अक्रूवाला ,,
हरि भाई वरनभाई रोपा
अरुण इलेक्ट्रोक कम्पनी बड़ौदा
अरुण मिस्त्री ,,
अपिलभाई वी० पटेल ,,
सहदेव प्राग जी देसाई ,,
हरि भाई फकीर भाई दाहोद
शान्तिभाई रणछोड़ भाई ,,
दुलीचन्द जी सोनी लिमोड़ा
जयन्तीलाल माधव जी दाहोद
चन्दू भाई हीरा भाई ,,
मोतीभाई सोभाभाई ,,
पं० विठलेश जी वड़ौदा
रणवीर सिंह जी बम्बई
ठाकरसी रघुनाथ राजकोट
सुमित्रा देवी पटेल सुचित्रा
झीणा भाई हरिप्रसाद जलालपुर
नटवरलाल भगवानलाल वड़ौदा
कृष्ण बेन ,,
सुखदेव जी ,,
सुमित्रा देवी जी ,,
बल्लभ भाई पी० पटेल मम्बासा (अफ्रीका)
बच्चूभाई शाम जी भाई अन्जार
वेला जी हरजो कन्ट्रक्टर जूनागढ़
रणछोड़ भगवान ,,
गोहिल ब्रादर्स ,,
कानजी भगवान ,,

श्री मोहन लाल आर्य वेवल (मैन)
जगदीश जी लक्ष्मणराव बड़ौदा
चिम्मन लाल मनसुखराम ,,
काड़िया देव जी जयराज देव
कालीदास लल्लूभाई सूरत
रामचन्द्र डाह्याभाई और धीरभाई डाह्याभाइ परव
चुन्नीलाल अम्बाराम वीरमगांव
लल्लूभाई आत्माराम ,,
परमानन्द चुन्नीलाल ,,
मनुभाई भगवान जी ,,
जगदीश चन्द्र विद्यार्थी दिल्ली
विद्याप्रसाद जी आर्य बरोली
मास्टर कोदूराम जी दिल्ली
ठाकुर रत्न सिंह जी नई दिल्ली
राजाराम जी आर्य देहली
बसन्त गोपाल आर्य गोरखपुर
आर्य समाज शाहदरा
श्री मुन्शीलाल रूपकान्ता देवी जी आगरा
विजयकुमार गोविन्दराम देहली
यशोदा देवी गोविन्दराम ,,
एच० के० चौपड़ा इन्दौर
डा० कैलाशचन्द्र जी रुदौली
मनोहरलाल सुगनाराम उपलेटा
हंसराज देवराज जेतपुर
चुन्नीभाई विठलभाई सोलन की भावनगर
मोहन लाल अर्जुन भाई ,,
दौलतराम सरदाना देहली
अम्बालाल जी आर्य बम्बई
एस० आर० गलियानी मोदीनगर
दौलतराम जी हेड मास्टर रोहतक
गोरधनदास जी देहली
शिवदास ज्ञानी गाजियाबाद
श्री लक्ष्मी नारायण देहली
देवराज आर्य मेरठ
भगवती देवी देहली
कृष्ण जी भाई मेहता भण्डारी

कान्तीलाल नागरदास पाटन
करसन बेचरदास आटकोट
स्वामी सत्यानन्द जी ब्यावर
मंत्री आर्य समाज नरेला
जे० आर० मीरानी बहरीन

११) के दान दाता

श्री रघुनाथ राय देहली
वी० आर० ठक्कर झरिया
गुप्तदान मौरबी
मंत्री आर्य समाज सदर बाजार झांसी
वेणीलाल जी शिवाजी अलमाड़ा
श्री आर्य समाज कोटला नई देहली
चुन्नी लाल जी सेठी देहली
हीरालाल जी सोनी ब्यावर
अनन्तराम जी गुप्ता ,,
चतुर्भुज सोनी ,,
घुलचन्द जी भूतड़ा ,,
श्री मती प्रीतम देवी जी करनाल
महात्मा आनन्द भिक्षु जी रोहतक
किशोर चन्द्रपाल देहली
ताराचन्द जी देहली
जगदीश प्रसाद शर्मा कोटकपूरा
आर्य स्त्री समाज करनाल
धर्मचन्द्र जी नई देहली
आर्य समाज कोसली
बिहारी लाल ,,
मंत्री आर्यसमाज शिवगंज
रणजी भाई माधन जी जैपुर
नन्द कुंवर बाझारेजा राजकोट
दयाल जी जोगी भाई वशी विजलपुर
रणधीर भाई झीणाभांई ,,
लीलावती मल बम्बई
आर्य स्त्री समाज ,,
आर्य समाज लूडवा
श्री शान्ती देवी टोहाना
बद्रीनाथ शुक्ल कांडला कच्छ
केशव लाल जड़िया इन्दौर

विशन दास आनन्द सोनीपत
पुरुषोत्तम भाई अम्बालाल पटेल झड़िया
डा० लक्ष्मीचन्द एन पारेख भावनगर
लक्ष्मी दास मणिकचन्द ठकर टंकारा
रतीलाल हीरालाल शाह सोनगढ़
मुन्शी नारायण दास अहमदाबाद

५) के दान दाता

जमनालाल जी गुप्ता ब्यावर
चिम्मन लाल पंजाबी ,,
ब्रजराज आर्य ,,
गुप्त दान
लधाराम तुलसीराम मौरवी
किशनसिंह विजयसिंह दौलतपुर
मास्टर झंडूराम गुसरपुर
रामदयाल आर्य देहली
दिलमणि राव रणछोड़ दास सूरत
पुरी बेन राजकोट
परमानन्द प्राणजीवन दास वीरमगांव
बालाराम भाटापाड़ा
हेमराज आर्य ,,
यशपाल हेमराज आर्य ,,
सूर्य देव गुजराल मल ,,
डा० बी० ए० वास्वानी ,,
कीमतराय खानचन्द ,,
रणछोड़ भाई प्रभुभाई हलधरू
मोना भाई गणेश जी मोरया
मोनदास मूल जी भाई लिम्भोई
देवदत्त जी शर्मा ज्वालापुर
टीकम भाई पुरुषोत्तम सुनाव
वैद्य नारायण दत्त करनाल
,, परमानन्द ,,
लाला किशोरी लाल ,,
बाबू अमृतलाल कोसली
रतुभा काकूभा चुड़ासमा, बादडी
ओं भण्डार मैनपुरी
दयाचन्द मानचन्द देहरादून
डा० खानचन्द करनाल
खेमराज आर्य ,,

हरीराम जी देहली
मदनलाल त्रिभुवन जोतुवाड़ा
नागर भाई जयसिंह भाई जोरावर नगर
श्री उज्जमसिंह मोतीभाई मोरवी
बनवारी लाल गौड़ आजमगढ़
चक्कू लाधा नान रामपुरा
बंशीधर जी नई दिल्ली
खुशीराम जी हरिद्वार
रामानन्द पटवारी दिल्ली
मुकट लाल जी बुलन्दशहर
डा० कमलसिंह उज्जैन
जगदीश प्रसाद जी हैदराबाद
आर्य स्त्री समाज बरेली
तेजराम भगवानदास करनाल
हरिकृष्ण प्रेमराज अहमदाबाद
बुधमल भैया दिल्ली
मानवन्त महारानी साहिबा सापला
सुधाकर जी वकील सहसवाण
वसन जी मोती भाई टंकारा
त्रिभुवन माधव जी शर्मा भावनगर
बिहारीलाल गणपत राम बबेहाल
बुद्धमल कृपादेवी देहली
रामप्यारी भाटिया ,,
हरकान भाई वैद्य ५।) टंकारा
प्रभातीलाल जोशी अजमेर
भेदूराम जोधाणी जेतपुर
किशनलाल आर्य वीरमगांव
मलिकलाल परमाल रोहतक
डाह्या शंकर धामोरीकर बम्बई
डाह्याभाई नीछा भाई ,,
दौलतराम जी मास्टर जमनानगर
मोहनसिंह जीवनसिंह मोरवी
गुलाब चन्द जी रायपुर
ला० धीरज लाल कल्याण जी उपलेट
त्र्यंबकलाल मू‍ळशंकर रामपुर
मंत्री आर्य समाज डिस्सा
बाई पारवती अम्बालाल भरुच
,, रुकमणी नाग जी भाई ,,

वेदभूषण देहली
लक्ष्मी नारायण वर्मा ,,
सर्व श्री रसिक भाई अमृतलाल शाह सोनगढ़
कानजीभाई महादेव भाई ,,
जयन्तीलाल नारसिंह ,,
हीरालाल शान्तिमेहता ,,
डाह्याभाई रणछोड़भाई ,,
विनूभाई मथुरादास पटेल ,,
नटवर सिंह केशूभाई ,,
नानालाल चून्नीलाल मेहता ,,
मयाशंकर लीलाधर सेवक ,,
महेन्द्रनाथ वेदालंकार ,,
गुप्त दान ,,
नट्टूभाई वाघ जो पटेल ,,
बबाभाई मथूरभाई पटेल ,,
भानूमती बेन मणिलाल ,,
अम्बाभाई अर्जुनभाई राजकोट
परमानन्द कानजी वीरमगांव
ठाकरसी रघुनाथ भाई राजकोट
विद्यावती बहन दिल्ली
द्वारकाप्रसाद आर्य बेवर
चन्दूलाल नागजी भरूंच
एस० एस० परसार मारबी
प्रकाशलाल जी देहली
साधूराम पनमल ,,
उमेशदत्त गंगापुर
पीताम्बर माधवजी राजकोट
पंचाल माणेकलाल परशोत्तम अहमदाबाद
पं० धर्मदेव जी देहली
नन्दलाल शंकरलाल देहली।
हरिनारायण आर्य अजमेर
गुप्तदान
केवल भाई छगनभाई सूरत
हरिराम बलदेव भाई बम्बई

भीखूभाई अम्बालाल बावला
सरोजनी देवी पानेथा
श्रीपंचाल बुलाखीदास नारायणदास बावला
,, महीपतलाल अम्बाला
देशमुख जरताभाई आपर
रघुभाई पोलाभाई बरेली
ओंप्रकाश ,,
जवाहरलाल गाजियाबाद
विशनदास रणवीर सिंह जम्मू
मनजी धरमसिंह राजकोट
सुन्दर जी त्रिकम जी अहमदाबाद
शोभराज बिशनदास भटिंडा
चिम्मनलाल विट्ठलदास जोरावर नगर
धनजीभाई रामजीभाई राजकोट
सीताराम जी
विशम्भर दयाल राजकोट
रामजी जैरामभाई ,,
रामस्वरूप कानजीभाई अहमदाबाद
धनकोर देवो रोहतक
मनो देवी जी बिजनौर
ओंमप्रकाश जी खोसला लीम्बड़ी
वेलजी त्रिकम और मानसिंह जी चौकड़ा
कानजीलाल परशोत्तम और रमणिकलाल राजकोट
हीरालक्ष्मी हीरजी भाई दिव
जिज्ञासु जी गाजियाबाद
झाला रणजीत सिंह प्रभात सिंह अडवाल
गोपालजी गिरधर वेदानुरागी सायला
तुलसीदास गांडाभाई सीहोर
आर्य पारिवारिक सत्संग समाज राजकोट
वेदव्रत प्रज्ञाचक्षुजी बड़ौदा

२) रु० देने वाले दानदाता

सर्व श्री चन्द्रभान जी रेवाड़ी
स्वामी सेवकानन्द गाजियाबाद
चुन्नीलाल जी बाबू ब्यावर
प्रताप जी सोनी ,,
गुप्तदान
मुकुट लाल जी बुलन्दशहर
नानजी मेघजी मोरबी
शान्ताबेन परक
कृष्णदेव मोतीराम हलधरू
त्रिकमभाई प्रागजी मोरथा
कृष्णलाल गणे कोटकपूरा
शनाभाई भाईलाल भूराकोट
देवराज शर्मा दिल्ली
देवराज जी ,,
पुष्पावती जी ,,
जयराम भगवान जो नागर, बड़ौदा
डा० जोगीराम दिल्ली
गोपालदास अन्याराम अहमदाबाद
खीमजी वेल जी जूनागढ़
ओधकजी भगवान जी राजकोट
तुलसीदास रणछोड़ अहमदाबाद
ओंमप्रकाश जी बरेली
गुप्तदान
हनुमान देव
गोपाल अमरसिंह
उदयसिंह परमार सोनगढ़
अभिमन्यु मूलशंकर राजकोट
ओधव जी प्रेम जी वलसार
जुगल किशोर ,,
डा० ब्रह्मप्रकाश बरेली
हृदय नारायण ,,
श्री राम जी ,,
नारायण भाई राजाभाई जूनागढ़
श्री रामस्वरूप जी वानप्रस्थो बरेली
नारायण सहाय जवेरी ,,
श्याम बिहारीलाल ,,

छोटालाल बाबूभाई पाटन
प्राणलाल मंगलदास कंलारा पाटन
सत्यानन्द जी वानप्रस्थी
केशवजी चक्कूभाई राजकोट
धर्मदेव जी भटिंडा
गुप्तदान
रामजीवन जोशी
सत्नामसिंह मोहनलाल बावला
भगवती देवी जामनगर
मोहन जी मोतीराम वर्मा जोडिया
ननजी जीवा सायला
जगदीश कुमार तुलसीदास टंकारा
जयन्तीलाल भाणजी राजकोट
ईश्वरलाल भीणाभाई सुरत
एक गृहस्थ
राममोहन मित्रा मिश्रा टंकारा
शानीइन्द्रवदस २।) भावनगर

२१) रु० दानदाता

सर्वश्री डी० आर० सूद अहमदाबाद
रामचन्द्र जी वाहेली सावर
रामस्वरूप जी २२) इन्दौर
हिन्दुस्तान मोटर कम्पनी सम्बलपूरा
चाननदास लालाराम इन्दौर
वैदिक भक्ति आश्रम रोहतक
अमृत कान्ता जी देहली
यशपाल गुहा जगतपुर
किशनलाल जी जगाधरी
कुमार श्री दिग्विजय सिंह जी खडैरी
गणपतराय आर्य बम्बई

२०) रु० दानदाता

सर्वश्री रामनाथ पावन देहरादून
कृष्ण कुमारी गाजियाबाद
ओंमवती जी शास्त्री लश्कर
मनूभाई रत्न जी हांसोटक
भीखाभाई मणिकलाल शाह वीरमगाव
मामराज मुसद्दीलाल देहली
विठलजी हरजीभाई, किसूमू (अफ्रीका)

२५१) रु० दानदाता

श्री भगवान देव जी आर्य बम्बई
गुप्तदान (सुगरमारकेट)
आर्य कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियें पोरबन्दर
सेठ श्री जसवन्तराय प्रभुलाल भावनगर
आर्य समाज जामनगर २५०)

१) रु० दान दाता

श्री लाला केवलराम भटिंडा
मदनलाल बिहारपुर
भालजी भवना जीवापुर
रमेश डी, संघही जेतपुर
रणजीत चावला ,,
ओंप्रकाश बदायूं
शामजी देवराज खोडा पीपड़
साहब दयाल
चुन्नीलाल जैशंकर लीबड़ी
गुप्तदान
अविनाशचन्द्र कोटकपूरा
करतार देवी दिल्ली
यशपाल जी ,,
खैरातीलाल ,,
कमल नयन ,,
कमला देवी ,,
बाबूभाई सुन्दर जी मोरबी
जयन्तीलाल जमनादास ठकर मुम्बई
स्वामी जी
जे० जे० टोडरमल पोरबन्दर
अम्बालाल लल्लूभाई आर्य पाटन
भूजंगीलाल सोमनाथ जोशी पाटन
राजेन्द्र करसनदास ,,

विश्वप्रेमी जी अलवर
लक्ष्मण राम जी मोरबी
दामजी चक्कू ,,
बाबूराम जमनालाल जमुनानगर

१।) के दान दाता

श्री दयालजीमावजी टंकारा
चुन्नीलाल मगनलाल पेटलाद
दीवानचन्द्र देहली

३) के दान दाता

श्री रामचन्द्र डाह्या भाई वैद्य परक
मैनेजर पंजाब नेशनल बैंक करनाल
मोहन सिंह जी राजकोट
डाह्याभाई बेचरभाई मोरबी
मोहनभाई सोनाभाई राजकोट
आत्माराम इच्छाराम बलसार
जयन्तीलाल मूल जी राजकोट
४) सरस्वती देवी अहमदाबाद
४) ईश्वरलाल जी देहली
४) गिरधरलाल जी भटिंडा

७) के दान दाता

श्री बोधराज शर्मा जालन्धर
ईश्वरलाल प्रेम जी जूनागढ़
बोधाभाई भगूभाई सोनगढ़
८) भीमसेन जी उरलाना
८) हंसराज मुरादाबाद
७) बेचरभाई गणेश मोरवाना
७) वीरमसिंह लक्ष्मणसिंह वेलण
६) ८५ नये पैसे, पोहूमल एण्ड सन्स मोगा
१३) द्वारा म० मामराज रायपुर
२८) आर्यपारिवारिक सत्संग राजकोट
६६) एन० एल० गोरधारिया नेरोबी (अफ्रीका)
६७) मन्त्री सार्य समाज झांसी
५२) आर्य समाज कालेज विभाग हिसार

१०००) के दान दाता

श्री कौशल्यादेवी सीताराम एण्ड सन्स दिल्ली
,, सान मित्र जी राहो
२५०) नरणलाल कंसारा नवसारी
४२५)६: श्री आर्य समाज दारेसलाम (अफ्रिका)
१५१) गिरधरलाल मोतीलाल कोन्ट्राक्टर डभोई
१००) श्री डी० खंडुभाई भीमभाई देसाई नवसारी
१००) ,, सेठ सी० डी० आरवानी सुरत
१०१) ,, अंटोलभाई जांराभाई निकोश
१०१) ,, डा० धर्मचन्द्र श्याल अखलपुर
१०·) ,, ठाकुरदत्त जी शर्मा देहरादून
१०१) ,, नारणदास चाहवाला बम्बई
१००) ,, विश्वनाथ जे कपूर ,,
१००) ,, सदानन्द आर्य अम्बाला कैंट
१०१) ,, जशराज जग्गा ऐडवोकेट फिरोजपुर कैंट
१००) ,, गुरुकुल शिल्पविद्यालय भटिंडा
१०१) ,, कुमारी विद्या आनन्द एम. ए. जालंधर
५०) श्री नाथालाल बबुभाई कंसारा विसनगर
५०) ,, मेनावेन नाथालाल ,, ,,
५०) ,, सांकलचद्र कालीदास पटेल ,,
५०) ,, इच्छादेवी महाराणीशंकर शर्मा जूनागढ़
५०) ,, राजेन्द्रकुमार शांतिप्रियजी पंडित बम्बई
५०) ,, इजीणा भाई भाई गणदेवी
६०) ,, लाला किशनचन्द्र जी खन्ना अहमदाबाद
५०) ,, परमेश्वरी देवी जालन्धर
५१) ,, सुमित्रावेन आत्माराम शर्मा बम्बई
५०) ,, आर्य समाज भटिंडा
५०) ,, स्त्री आर्य समाज करनाल
२५) ,, लालचन्द भोजराज सिंह जोरावर नगर
२५) ,, सुखदेवभाई कमनजीभाई मजीगांम
२५) ,, मणीभाई गुलाबभाई ,,
२५) ,, ललुभाई परषोत्तम कंसारा नवसारी
२५) ,, सेठ श्री ठाकुरदास जमनादास सुरत
२५) ,, गुलाबदास त्रिकमदास सरैया ,,

२५) श्री भगवानदास ललुभाई सुरत
२५) ,, डा० अमीचन्द्र सी शाह ,,
२५) ,, विनुभाई सोमेश्वर जरीवाला ,,
२५) ,, विनायकदास दामोदर दास ,, ,,
२५) ,, मगनलाल प्रभुदास लाकडाला ,,
२५) ,, भगुभाई जरीवाला ,,
३०) ,, आई० वी० चौधरी बड़ौदा
२०) ,, सीताराम जैसींगभाई वारोट विसनगर
३०) ,, त्रिकमलाल शिवलाल पंचाल ,,
२५) ,, वीरेन्द्र हांडा जबलपुर
३८) ४० न. पै. आर्य समाज मण्डी (हि० प्रदेश)
१०) श्री जडीबेन खेताभाई दवे विसनगर
१०) ,, कृष्णाबेन लक्ष्मण जी ,,
१०) ,, सोमाभाई खेमचन्द भावसार ,,
१०) ,, चीक्रन छगनलाल गंगाराम ,,
१०) ,, ओछवलाल मणीलाल जानी ,,
१०) ,, शांतिप्रिय जी पं. आत्माराम बड़ौदा
१०) ,, जयन्ती भाई मगनलाल शाह ,,
१०) प्रभुदास कालीदास आर्य ,,
१०) ,, रामचन्द्र व. स्नातक ,,
१०) ,, यशोदादेवी रामचन्द्र पंडित ,,
१०) ,, भारतीबाला रामचन्द्र ,,
१०) ,, वेद प्रभा रामचन्द्र ,,
१०) ,, अनन्तकुमार पटेल ,,
१०) श्री वल्लभ भाई भूलाभाई ननसाड
१०) ,, मकरंद शर्मा वैद्य वराठा
१०) ,, देवसी माधव जी नैरोबी (अफ्रीका)
१०) ,, बेला भाई जादव जी सावज जागीडा
१०) ,, लाला जगतनारायण चौपड़ा जालन्धर
१०) ,, काशीबेन फूलाभाई वाघोड़ीया
१०) ,, भीखाभाई रणछोड़दास बड़ौदा
१०) ,, तानुभाई नतयिराम गणदेवी
१०) ,, ललिताबेन ईश्वर भाई चीखली
१०) ,, ईश्वरलाल डाह्याभाई ,,
१०) ,, डा० मदनजीत दुर्कम जी वलसांड
१०) ,, मधुकान्ताबेन रसिकलाल सूरत
१०) ,, लल्लूभाई जीजो भाई कुवादर
१०) ,, लाल भाई नारणभाई पटेल एथुका
१०) ,, बेधल भाई छगन भाई सूरत
३) ,, छोटाभाई देसाई वाघोडीया
५) ,, धूला भाई रघाभाई ,,
५) रवीशंकर भणी शंकर द्विवेदी चिखली
२) ,, घीरभाई भीमभाई ,,
२) ,, रामभाई हरिभाई ,,
३) ,, जैकिशन नारायण दास पंचाल वापी
३) ,, रतन जी मकन जी ,, ,,
३) ,, ईश्वरलाल नागर जी भाई ,,

धन संग्रह की योजना

महर्षि दयानन्द सर. स्मारक ट्रस्ट की योजनाओं को पूर्ण करने के लिए हमारी धन संग्रह की योजना जिसको प्रारम्भ कर दिया है वह यह है कि प्रत्येक आर्य अपने घर में महर्षि गुरु दक्षिणा पात्र रखे। हम ऐसे पात्र आपका पत्र आने पर भेजने का प्रबन्ध करेंगे। इस पात्र में प्रत्येक आर्य प्रतिदिन कम से कम एक पैसा अपने परिवार के प्रति सदस्य के नाम डालें। जैसे यदि मेरे परिवार में ५ सदस्य हैं तो मैं प्रतिदिन कम से कम ५ नये पैसे (और अधिक डाल सकें तो अत्युत्तम है), इस पात्र में अवश्य डालूं। महीने में १५० न. पै. हुए। और वह १॥) स्मारक ट्रस्ट को भेज दें हम व्यवस्था करेंगे जहां १०० पात्र हो जावें वहां एक संग्राहक नियुक्त कर दें और वही इकट्ठा करके भेज दे। हम २५ हजार पात्र आरम्भ में दे रहे हैं।

ट्रस्ट में आप पोषक मण्डल के सदस्य १०००) ५००) २५०) अथवा १०) वार्षिक देकर बन सकते हैं।

—मन्त्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट आत्माराम रोड बड़ौदा।

॥ ओ३म् ॥

सत्यार्थप्रकाश

बड़े अक्षर व बड़ी साइज का टिप्पणियों सहित संस्करण

टिप्पणियों के लेखक—आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् 'आर्य-सिद्धान्त-सागर' के यशस्वी लेखक,

शास्त्रार्थ महारथी श्री डा० अमरसिंह जी आर्य मुसाफिर

स्वनाम धन्य स्वर्गीय श्री स्वामी वेदानन्द जी ने जो टिप्पणियों सहित मोटे अक्षर और बड़ी साइज का सत्यार्थप्रकाश प्रकाशित किया था, वह अब अप्राप्त है।

स्वामी वेदानन्द जी ने अपने प्रकाशित ग्रन्थ में लिखा है कि सत्यार्थप्रकाश के अनेक स्थानों पर टिप्पणियां लिखी जायं तो यह एक प्रकार से सत्यार्थप्रकाश का भाष्य बन जावेगा। इसलिए सब स्थानों पर (स्वामी वेदानन्द जी ने) टिप्पणियां विस्तार भय से नहीं लिखीं।

पं० अमरसिंह जी ने स्वामी जी द्वारा लिखी टिप्पणियों से लाभ उठाते हुए और भी अनेक स्थानों पर टिप्पणियां लिखी हैं। इसे एक प्रकार से सत्यार्थ प्रकाश का भाष्य समझना चाहिए।

कैसा होगा, क्या साइज व कैसे अक्षर होंगे, कैसी उपयोगी टिप्पणियां होंगी, इसके लिए नमूने की प्रति बिना मूल्य मंगाकर अथवा लेजाकर देख सकते हैं।

निम्न प्रकार की विशेषताएं होंगी

१. अजमेर वैदिक यन्त्रालय द्वारा प्रकाशित वर्तमान संस्करण के अनुकूल कुछ भी परिवर्तन किये बिना मोटे अक्षरों में मूल पाठ छापा जायगा।

२. पाद टिप्पणियों में वेदादि सत् शास्त्र, पुराण, जैन ग्रन्थ इंजिल (बायबल) और कुरान के प्रमाणों से ऋषि दयानन्द के दिये वाक्यों तथा सिद्धान्तों की पुष्टि की जायेगी। जिससे अनेक शंकाओं का समाधान हो जायेगा

३. सत्यार्थप्रकाश में दिये प्रमाणों के पते जो ऋषि ने नहीं दिये वह भी यथा-शक्ति इस संस्करण में दिये जायेंगे।

४. प्रत्येक विषय का पैराग्राफ अलग २ होगा।

५. प्रत्येक समुल्लासों के विषयों के पैराग्राफ के नम्बर दिये जायेंगे जैसा कि ऋषि दयानन्द ने १३ वें और १४ वें समुल्लासों में दिये हैं जिस से उद्धरण देने में लेखकों तथा व्याख्याताओं को विशेष सहूलियत होगी, क्यों कि जितने भी संस्करण निकले हैं उन सब की पृष्ठ संख्या एक नहीं। इन नम्बरों से विशेष सहूलियत होगी जैसा कि वेद, शास्त्र, मनु० गीता आदि में नम्बर होते हैं।

७. पुस्तक के अन्त में अकारादि क्रम से प्रमाण सूची तथा विषय शब्दानुक्रमणिका दी जायेगी।

८. ऋषि की आत्म-कथा दी जावेगी जो कि उन्होंने पूना में अपने व्याख्यानों में तथा थियोसोफिस्ट पत्र में लेखबद्ध कर दी थी।

९. ऋषि के असली फोटो की प्रतिलिपियां भी इसमें विवरण वार जहां जहां ऋषि भक्तों ने ऋषि के फोटो लिये थे होगें।

१०. मूल्य सर्वसाधारण के सहूलियत के लिए सुगम रहेगा। अर्थात् सुनहरी पूरे कपड़े की पक्की जिल्द का मूल्य १५) रु० प्रति पुस्तक होगा, डाक खर्च व पैकिंग खर्च पृथक् होगा। जो सज्जन अग्रिम ग्राहक बनेंगे उनसे १३) लिए जा रहे हैं। आप भी १३) भेज कर अपनी प्रति सुरक्षित करा लें। या २) भेज कर अपनी प्रति सुरक्षित करा लें।

प्रत्येक समाज के मंत्री एवं अधिकारी वर्ग से प्रार्थना है कि अपने सदस्यों को इस संस्करण की सुचना देकर ग्राहक बनाकर सहयोग प्रदान करें।

भवदीय—**गोविन्दराम हासानन्द** वेदप्रकाश कार्यालय, नई सड़क, दिल्ली।

श्रीमद्दयानन्द चित्रावली

[लेखक—रामगोपाल विद्यालंकार]

महर्षि दयानन्द की जीवन घटनाओं से सम्बन्धित बड़ी साइज के ३० रंग विरंगे चित्रों से सुसज्जित, ऋषि के प्रभावशाली उपदेशप्रद जीवन घटनाओं का वर्णन भी बड़े अक्षरों में दिया गया है जिससे ऋषि के जीवन चरित्र को सुगमता से हृदयङ्गम किया जा सकता है। पाठशाला में विद्यार्थियों को पुरस्कार में देने योग्य तथा विवाह इत्यादि में देने योग्य सुन्दर पुस्तक है।

यह पुस्तक का छटा संस्करण है तीन रंगों का अनोखा आवरण, सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥) मात्र।

ऋषि गाथा महाकाव्य

[रचियता—श्री विमलचन्द्र शर्मा बिमलेश]

अनेक आकर्षक चित्रों सहित महर्षि दयानन्द का काव्यमय जीवन चरित्र। अनेक विद्वान् नेताओं की सम्मतियों से कुछ सम्मतियां।

महात्मा आनन्द स्वामी—श्री विमलेश की काव्य शक्ति में ओजस्विता है। और ऋषि दयानन्द जैसे उस्ताद महात्मा की जीवनी में इसका प्रयोग अत्यन्त ही सुरम्य हो गया है।

वास्तव में पुस्तक का मूल्य तो ६) है। पर हम चाहते हैं इसका अधिक से अधिक प्रचार हो इसीलिए इसका मूल्य घटाकर ४) कर दिया गया है।

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क देहली।

महात्मा आनन्द स्वामी जी की धर्म अर्थ काम मोक्ष प्रदायक

॥ पुस्तकें ॥

प्रभुदर्शन...	२॥)
तत्वज्ञान...	३)
प्रभुभक्ति...	२॥)
आनन्द गायत्री कथा... ...	॥=)
एक ही रास्ता...	॥।)
भगवान शंकर–दयानन्द... ...	।=)॥
आनन्द भगवत कथा अर्थात् सत्य नारायण व्रत कथा... ...	॥=)
मानव जीवन गाथा (महात्मा जी की नई पुस्तक)	१)

आर्ष योग प्रदीप

लेखक--श्री स्वामी ब्रह्ममुनि जी

स्वामी वेदानन्द जी की सम्मति

स्वामी ब्रह्ममुनि जी स्वयं एक विद्वान अभ्यासी हैं। इससे उनके प्रस्तुत ग्रन्थ की उपयोगिता समझी जा सकती है। स्वामी जी ने इस ग्रन्थ में महर्षि पतंजलि जी के योग सुत्रों का अर्थ और उनकी व्याख्या के साथ सुत्रों पर सर्व सम्मत प्रमाणिक व्यासकृत भाष्य का भाषानुवाद दे दिया है। इससे पूर्व यद्यपि व्यासभाष्य का एकाध भाषानुवाद प्रकाशित हो चुका है पर उसमें सूत्रव्याख्या की उपेक्षा की गई है स्वामी जी की सुत्रव्याख्या भाष्यार्थ समझने में अच्छी सहायता देती है। यह अनुवाद की एक विशिष्ठ विशेषता है। भाष्य का अनुवाद भी कई विशेषताओं से युक्त है जो पाठकों को प्रतीत होगी। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३॥)

मिलने का पता:—गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, देहली।

स्वाध्याय योग्य उत्तमोत्तम पुस्तकें

बाल्मीकि रामायण १२)
दयानन्द ग्रन्थ संग्रह ४॥)
सृष्टि का इतिहास २)
उपनिषद आर्यमुनि भाष्य ६)
श्वेताश्वरोपनिषद १)
प्रभुभक्ति (आनन्द स्वामी) १॥)
प्रभुदर्शन ... २॥)
तत्त्वज्ञान ... ३)
आनन्द गायत्री कथा ॥=)
एक ही रास्ता ।॥)
भगवान शंकर दयानन्द ।=)॥
सत्यनारायण व्रत कथा ॥=)
मानव जीवन गाथा १)
वैदिक गृहस्थाश्रम ५)
ऋषि-गाथा महाकाव्य ४)
स्वाध्याय संग्रह (वेदानन्द) २)
वेद परिचय ... ।=)
महर्षि दयानन्द (प्रो० इन्द्र) २)
आर्य समाज का इतिहास १।=)
ओंकार निर्णय (शिवशंकर) १॥)
वैदिक प्रार्थना १॥)
सचित्र योगासन १॥)
बहिनों की बातें (सिद्धगोपाल) १।)
दर्शनानन्द ग्रंथ संग्रह पूर्वार्द्ध २॥)
,, ,, ,, उत्तरार्द्ध २॥)
दयानन्द चित्रावली २॥)
भारतीय संस्कृति ॥)
आर्षयोग प्रदीपिका ३॥)
कर्तव्य दर्पण (ना० स्वामी) १।)
वैदिक संध्या रहस्य ।=)
आर्य समाज क्या है ? ।॥)
संध्या, हवन प्रदीपिका ॥)
सन्ध्याविनय ॥)

प्रार्थना प्रदीप ॥)
संस्कार विधि विमर्श ३)
स्त्रियों का स्वास्थ्य और रोग ३)
विवाह और विवाहित जीवन २॥)
घर गृहस्थी ३॥)
आर्य सिद्धान्त दीप १।)
गीत श्रद्धांजलि (भजन) १।)
सत्यहरिश्चन्द्र नाटक १।)
यज्ञोपवीत मीमांसा ।॥)
आदर्श सुधारक दयानन्द ॥=)
गृहस्थाश्रम (दयानन्द) ॥=)
बाल शिक्षक ,, ।=)
आत्म कथा ऋषि दयानन्द ,, ।=)
आर्याभिविनय ,, ॥)
वेद विरुद्धमत खण्डन ।=)
शिक्षा पत्री ध्वान्ति निवारण ।=)
भ्रान्ति निवारण (दयानन्द) ।=)
भ्रमोच्छेदन ,, ।)
हुगली शास्त्रार्थ ,, ।)
वेदों का महत्व (दर्शनानन्द) ।)
ईश्वर प्राप्ति ,, ≡)
ईश्वर विचार ,, =)
जीवात्मा ,, =)
वेदों की आवश्यकता ,, -)
वेद किस पर प्रकट हुए ,, -)
बाल शिक्षा, धर्म शिक्षा ,, ≡)
वर्ण व्यवस्था (दर्शनानन्द) -)
पितृ श्राद्धविचार ,, -)
दयानन्द का उद्देश्य ,, -)
,, ,, लक्ष्य ,, -)
सत्यार्थ प्रकाश शंका समाधान ।)

स्वामी दयानन्द और वेद ।)
भक्ष्याभक्ष्य विचार ≡)
वैदिक धर्म शिक्षा ≡)
आर्य सत्संग गुटका ।-)
विश्व विज्ञान परमात्म बोध ≡)
अखण्ड भारत (चन्द्र गुप्त) ।।)
मांस मदिरा निषेध ≡)
गायत्री व्याख्या ।)
गीता वचनामृत ।=)
गोरक्षा परम कर्त्तव्य ॥)
स्वास्थ्य विज्ञान ।-)

चित्र चित्र चित्र

धार्मिक मंत्रों के चित्र साईज— १४॥×२२

सन्ध्या मन्त्र ।-)
प्रार्थना के ८ मंत्र अर्थ सहित ।-)
आर्य समाज के नियम ।-)
यम नियम व्याख्या सहित ।-)
संगठन सुक्त ।-)

मन्त्रों के चित्र ११×१४

ऋग्वेद का प्रथम मन्त्र ≡)
यजुर्वेद का प्रथम ,, ≡)
सामवेद का प्रथम ,, ≡)
अथर्ववेद का प्रथम ,, ≡)
दीर्घ जीवन की प्रार्थना ≡)
धर्मंचर, सत्यंवद ≡)
मंत्रों के चित्र छोटे ७।×५॥ -)॥
ओ३म्, नमस्ते, स्वागतम, विश्वानिदेव सहनाववतु, धृतिक्षमा, नमः शम्भवायच, त्वमेव माता च पिता, नैनंछिन्दति, अहिंसा परमो धर्म, आदि आदि ।

महाभारतम् संस्कृत के विद्यार्थियों के लिये श्री आचार्य राजेन्द्र शास्त्री उपाध्यक्ष दयानन्द वेदविद्यालय देहली द्वारा रचित केवल संस्कृत गद्य में मंगाकर संस्कृत में वार्तालाप करना सीखें । मूल्य सजिल्द का ३) रु०

गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, देहली ।

गोविन्दराम हासानन्द सम्पादक तथा मुद्रक ने महालक्ष्मी प्रेस में छपवाकर वेदप्रकाश कार्यालय नई सड़क देहली से प्रकाशित किया ।

श्रावणी पर्व पर प्रचारार्थ विद्वानों के ट्रैक्ट मंगावें

प्रत्येक का मूल्य –) सैकड़ा ४)

१ मनुष्य बन—ले० स्वामी वेदानन्द सरस्वती ।
✓२ गायत्री माता—जगदीशचन्द्र विद्यार्थी ।
३ ईश्वर सिद्धि—पं० रामचन्द्र जी देहलवी ।
४ आस्तिक नास्तिक संवाद—महर्षि दयानन्द ।
५ पितृ श्राद्ध विचार—स्वामी दर्शनानन्द ।
६ सुख का साधन—महात्मा आनन्द स्वामी ।
७ ईश्वरोपासना—पं० रामचन्द्र जी देहलवी ।
८ कल्याणी बन—पं० गणेशदत्त 'इन्द्र' ।
९ आर्यों का आदि देश—काशी नाथ जी शास्त्री ।
१० धर्म और अधर्म—पं० रामचन्द्र देहलवी ।
११ स्वामी श्रद्धानन्द—रामगोपाल विद्यालंकार ।
१२ तत्ववेत्ता दयानन्द—स्वामी श्रद्धानन्द जी ।
१३ पं० लेखराम—रामगोपाल जी विद्यालंकार ।
१४ सीता माता—सरस्वती देवी 'प्रभाकर' ।
✓१५ गौ माता—जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
१६ दयानन्द दिग्विजय—श्री हरिशंकर जी शर्मा कविरत्न
१७ चोटी का महत्व - पं० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री ।
१८ गुरु विरजानन्द—रामगोपाल विद्यालंकार ।
१९ मांस खाना छोड़ दो—पायथा गोरस ।
२० मर्यादा पुरुषोत्तम राम—प्रहलाद 'प्रभाकर' ।
२१ देश सुधार होली - अंगनलाल आर्य ।
२२ मूर्तिपूजा विचार—महर्षि दयानन्द ।
२३ भक्ति के लाभ—आचार्य प्रियव्रत ।
✓२४ आर्य समाज के उद्देश्य—जगदीशचन्द्र विद्यार्थी ।
✓२५ वेदमाता ।
✓२६ श्रद्धामाता ।
✓२७ धरती माता ।
२८ धर्म की रक्षा करो—ब्र० प्रभुदत्त जी ।
२९ मनुष्य के कर्तव्य-म० नारायण स्वामी ।
३० सत्संग भजन ।
३१ ऋषि दयानन्द कृत वेदभाष्य का महत्व
३२ गोपाल दयानन्द ।
३३ भक्तिवाद की रूपरेखा ।
३४ वैदिक भक्तिवाद ।
३५ अंग्रेजी शिक्षा से हानि ।
३६ सत्य की महिमा-स्वामी सर्वदानन्द ।
३७ आर्य समाज की उन्नति का साधन-श्री लालचन्द जी
३८ श्यामाप्रसाद मुकर्जी-श्री प्रेमचन्द ।
३९ वैदिक काल में तोप बन्दूक-शिव पूजन सिंह ।
४० पतिव्रत धर्म-एक विदूषी महिला ।
४१ ब्राह्मण समाज और मूर्ति पूजा—राजेन्द्र जी ।
४२ ईश्वरोपासक दयानन्द-भगवत शरण बी. ए. ।
४३ ईश्वरावतार-स्वामी नित्यानन्द जी ।
४४ कर्मयोगी श्री कृष्ण—प्रेमचन्द ।
४५ ईसाइयों का भयंकर षड़यन्त्र ।
४६ सामाजिक व्यवहार—श्री लालचन्द जी ।
४७ शिक्षा का उद्देश्य—श्री पूर्णचन्द जी ।
✓४८ ब्रह्मचर्य—जगदीशचन्द्र जी विद्यार्थी ।
४९ वर्ण व्यवस्था—स्वामी दर्शनानन्द ।
५० कर्मव्यवस्था " "
५१ वेदज्ञान—विष्णु दयाल जी
५२ तुलसी रामायण और आर्य समाज ।
५३ सत्य की खोज—काशीनाथ शास्त्री ।
५४ मुर्दा क्यों जलावें—प्रेम शरण जी ।
५५ स्वामी दयानन्द का उद्देश्य—स्वामी दर्शनानन्द ।
५६ स्वामी दयानन्द का लक्ष्य— "
५७ ब्राह्मण समाज और मृतक श्राद्ध—पं० राजेन्द्र जी ।
५८ श्रेय और प्रेय—प्रि. नित्यानन्द जी एम. ए. ।
५९ सच्ची पूजा-स्वामी सर्वदानन्द जी ।
६० झांसी वाली रानी ।
६१ महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त-रविवर्मा सि. शास्त्री ।
६२ जीवन की समस्यायें पं० रामचन्द्र देहलवी ।
६३ देवताओं की कहानी-कैलाश बिहारी ।
६४ रोटी और कपड़ा-प्रेमकुमार पाण्डेय ।
६५ धूम्रपान— " "
६६ सिनेमा और हम— " "
६७ दयानन्द कौन—देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ।
६८ कृण्वन्तोस्वयमार्यम-प्रेमकुमार पाण्डेय ।
✓६९ चाय भयंकर विष-जगदीश चन्द्र ।
✓७० मुझे मेरा धर्म क्यों प्यारा है-जगदीश विद्यार्थी ।
७१ ईश्वर सब जगह है-विष्णु दयाल जी ।
७२ ईश्वर में अविश्वास क्यों-रामचन्द्र देहलवी ।
✓७३ चरित्र निर्माण-जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
✓७४ यज्ञोपवीत महत्व-जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
७५ सूर्य और चन्द्र ग्रहण-हरिदेव शास्त्री ।
✓७६ नास्तिकों को सन्देश-जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।
७७ वैदिक धर्म ही क्यों-हरिदेव शास्त्री ।
७८ विद्यार्थी और सदाचार-पं० रामचन्द्र देहलवी ।
७९ दयानन्द की महानता—नेताओं की सम्मतियाँ ।
✓८० आर्य क्यों बने ?-जगदीशचन्द्र विद्यार्थी ।
✓८१ श्राद्धमीमांसा-जगदीश चन्द्र विद्यार्थी ।

गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क देहली —६

उपनिषद्-आर्ष-भाष्य

पण्डित आर्य मुनि जी के उपनिषद् भाष्य आर्य सिद्धान्तों की दृष्टि से विशेष माननीय है। भाष्य की शैली सरल तथा रोचक है। मायावादी-नवीन वेदान्तियों के भ्रममूलक विचारों की आलोचना भी पढ़ने में आनन्द आता है।

इस भाष्य में प्रारम्भ की आठ उपनिषदों का भाष्य है। जिल्द बन्धी सुन्दर पुस्तक का मूल्य ६) है पृष्ठ संख्या ७५०, अलग-अलग पुस्तक का मूल्य इस प्रकार है–ईश ।=) केन ।≡) कठ १।) प्रश्न ।।।) मुण्डक ।।=) माण्डूक्य ।-) ऐतरेय ।।) तैत्तिरीय १।)

विवाह और विवाहित जीवन

[लेखक—पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय]

सार्वदेशिक मासिक लिखता है.—

"आधुनिकता के रंग में रंगा हुआ व्यक्ति विवाह के उद्देश्य के सम्बन्ध में घने अन्धकार में भटक रहा है। उसे प्रकाश दिखाने व शंकाओं का निवरण करने के लिए प्रस्तुत पुस्तक लिखी गई है। विवाह और विवाहित जीवन के जितने पहलू हैं उन सब का ही इस पुस्तक में समावेश हैं। आधुनिक तथा प्राचीन दोनों ही दृष्टिकोण से उन पर विचार करते हुए बड़े-बड़े पाश्चात्य एवं पौर्वात्य ग्रन्थकारों की सम्मितियों के प्रकाश में विषय का प्रतिपादन किया है। पुस्तक विवाह आदि अवसरों पर भेंट देने योग्य है।"

सुन्दर छपाई, बढ़िया कागज सुन्दर आवरण मूल्य २।।)

ओंकार निर्णय

[लेखक–स्वर्गीय श्री पं० शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ]

पुस्तक में ओ३म् नाम की जिस सरल ढंग से व्याख्या की गई है अवर्णनीय हैं। वेदों के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती ने इसका सम्पादन करके इसकी उपयोगिता में वृद्धि कर दी है स्वर्गीय काव्यतीर्थ जी का जीवन परिचय उनके मित्र श्री स्वामी अभेदानन्द जो सरस्वती प्रधान आर्य सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा देहली ने लिखी है : अक्षर मोटे, कागज उत्तम और छपाई शुद्ध एवं सुन्दर है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।।) मात्र।

दर्शनानंद ग्रंथ संग्रह दोनों भाग

वैदिक धर्म के सिद्धान्तों को पूरी तरह समझने के लिए स्वामी दर्शनानन्द जी के ग्रन्थों को पढ़ना आवश्यक है। इनमें स्वामी जी ने युक्ति युक्त और तर्कसम्मत शैली में आर्यसमाज के ५० प्रमुख सिद्धान्तों एवं अन्य महत्वपूर्ण विषयों की सुन्दर, स्पष्ट विवेचना की है। स्थान-स्थान पर वेदों, शास्त्रों और उपनिषदों द्वारा अपने कथन की पुष्टि की है। उपदेशकों और प्रचारकों के लिए तो बहुत ही उपयोगी ग्रन्थ है। मूल्य ५)

वैदिक गृहस्थाश्रम

[लेखक—प्रो० विश्वनाथ विद्यालंकार]

स्व० श्री स्वामी वेदानन्द जी की सम्मति—

"प्रो० विश्वनाथ विद्यालंकार वेदों के अच्छे विचारक विद्वान हैं आप जो कुछ लिखते हैं बहुत सुलझा कर लिखते हैं। वैदिक गृहस्थाश्रम उनके परिपक्व वेदानुशीलन का परिणाम है। वैदिक सूक्तों के प्रायः ३०० मन्त्रों की शृंखला वद्ध व्याख्या द्वारा इसमें गृहस्थ सम्बन्धी प्रायः सभी कर्तव्यों का निर्देश किया गया है। नये पुराने सभी गृहस्थों के लिए यह अत्यन्त उपयोगी है।"

मूल्य ५)

मिलने का पता—गोविन्दराम हासानन्द ४४०८, नई सड़क, देहली।

समाज, मन्दिर, स्कूल घर आदि में लगाने योग्य

तीन बृहदाकार सुन्दर चित्र

महर्षि दयानन्द सरस्वती

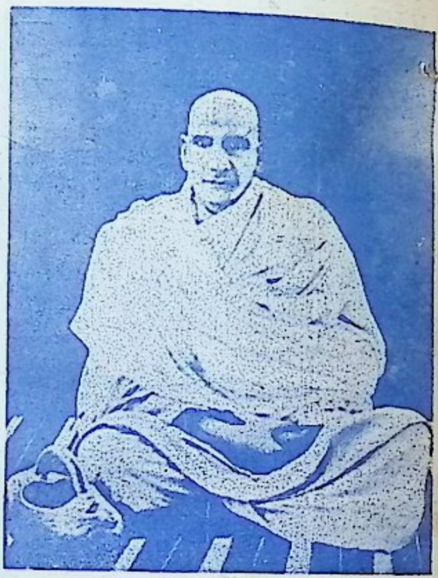

धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द

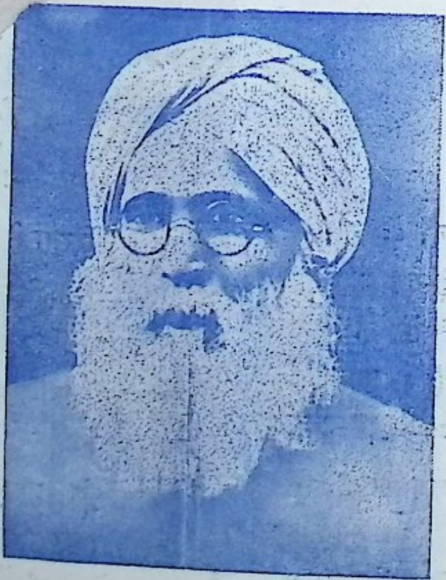

महात्मा हंसराज जी

ये तीनों [illegible] २०x३० आकार के बढ़िया मोटे आफसेट कागज पर छपे हैं। छपाई रूप रंग आदि बहुत ही सुन्दर है। सभी आर्य नेताओं ने तीनों चित्रों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। आप भी तीनों चित्र मंगा कर समाज, मन्दिर, स्कूल-कालिज तथा अपने घरों को सजाइये। विवाह आदि में भेंट देने योग्य निराली वस्तु है।

प्रत्येक चित्र का मूल्य १) रुपया है। तीनों चित्र एक साथ मंगाने पर डाक-खर्च १) रुपया आता है। १२ चित्र एक साथ मंगाने पर डाकखर्च नहीं लिया जाता।

प्राप्तिस्थान—गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, देहली।